THE BOOK WAS DRENCHED

TIGHT BINDING BOOK

Uneven Numbers Within The Book Only

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182889
UNIVERSAL
LIBRARY

Nagari-Pracharini Granthmala Series N. 4-6.

THE PRITHVÍRÁJ RAŚO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XVII. TO XXIV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व - १७ से २४ तक।

PRINTED AT THE MEDICAL HALL PRESS AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA
BENARES

1906

Issued 16th March 1906. [Price Re 1.

Checked 1969

Checked 1969

सूचीपत्र ।

(१७) भूमि सुपन प्रस्ताव	...	...	पृष्ठ	५७७	से	५८८	तक।
(१८) दिल्लीदान प्रस्ताव	...	...	,,	५८९	,,	६०१	,,
(१९) माधो भाट कथा	...	...	,,	६०३	,,	६३०	,,
(२०) पद्मावती समय	...	...	,,	६३१	,,	६४१	,,
(२१) प्रिथाब्याह वर्णन	...	...	,,	६४३	,,	६७०	,,
(२२) होलीकथा ...	...	...	,,	६७१	,,	६७३	,,
(२३) दीपमालिका कथा	...	...	,,	६७४	,,	६७९	,,
(२४) धनकथा (अपूर्ण)	...	...	,,	६८१	,,	७०४	,,

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ॥

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुँअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त ॥ कुंअरप्पन प्रथिराज । राज आषेटक षिल्लहि ॥
जोव्वने मझ रवन । थूल पच्छिम दिसि मिल्लहि ॥
भालि बीर वाराह । चक्क बज्जी चावहिसि ॥
मुक्कि थान पंचांन । मिले सूर संघ्रह धसि ॥
लोचांन बीर आजान भुअ । लोहा लंगर धाइया ॥
इह थांन चुक्कि अपथांन मुकि । पंचां नन रव छाइया ॥ छं० ॥ १ ॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

दूहा ॥ एंष सबद गुंजत सुगज । चै चींसत सद स्वानं ॥
गिर गुंजत परसद बहु । सद न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त ॥ सद्दपति संभरिय । कांन मंडे रव संभलि ॥
ज्यों षल बयन प्रसंत । विप्र षेजै निगंम मिलि ॥
गुन अवगुन कुल बधू । सती पति इसा मानि मन ॥
नाग अंग चंपयौ । किसार अग्गै फुल्यौ मन ॥
षिझ्यौ एम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुलिय ॥
द्रिग षोलि द्रिष्ट मगया सकल । तेज अंग कायर चलिय ॥ छं० ॥ ३ ॥
दूहा ॥ कांनन सद्दन संभरत । कूह कलह आषेट ।
थह सूनो बर जग्गयौ । सिसु दंपति घटि पेट ॥ छं० ॥ ४ ॥
कवित्त ॥ दिष्ट राज अंमरिय । सरित संभरिय सँपत्ते ।

के हंके चक्काइ। केक चावहिसि धन्ने ॥
के पाइल बर बान। भूल धारी उठि नठ्ठे ॥
के असवार करार। छीन कादर छै नठ्ठे ॥
के गए मुक्कि पाइल भगय। धीर छंटि तक्कर परत ॥
दिष्पयौ संग लंगावली। बियौ न कोइ धीरज धरत ॥ छं ॥ ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना।

सुनिय सूर बर चक्क। धक्क बज्जौ चावहिसि ॥
नरन सद्द कानन प्रसद्द। सिंघ किन्नो सु क्रोध असि ॥
बीरा रसु बिडुरिय। पुंछि सिर झारि झपहिय ॥
दीप नयन प्रज्जरिय। संग दिसि लगें लपहिय ॥
बल अतुल तोल तोलंत पय। बुल्यौ मन सद्दह गुहिर ॥
फटिय धरकि मानहु गगन। सिस सनेह संगन बचन ॥ छं० ॥ ६ ॥
दूचा ॥ आषेटक दरसे सकल। सिसु सिंघनी बिच सिंघ ॥
स्वान देषि मुहु रव करत। ओलंबे नरसिंघ ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना।

कवित्त ॥ सबै सेन अवसान। मुक्कि लग्गयौ बर तामस ॥
तब पंचानन चक्कि। धक्कि चहुआनां पामिस ॥
लै कमान बिय बांन। पंचि नंष्यौ बिय चुक्कौ ॥
समर सिंघ सब सथ्थ। तथ्थ चावहिसि हंक्कौ ॥
डंमरिय उचकि बिज्जुल लचकि। पग कब्यौ सोमेसजा ॥
चंप्यौ नरिंद अवसान तकि। पंडो डारिय चथ्थसा ॥ छं० ॥ ८ ॥
चंपि स्वामि बिडुरिय। लोह संजुरि नग मुक्यौ ॥
लोहा लंगर राइ। बीर अवसान न चुक्यौ ॥
स्वांमि सथ्थ परिबथ्थ। रुंड धर बर उथ्थारे ॥
रुहिर अंग झंझरिय। सिंघ पारिय अथ्थारे ॥
बन राय बीर बन चित्त रष। सूर स्वांमि भ्रंमं सुरसि ॥

चर नंग बीर तन बज्जय। सुबर जोर जम दक्कसि ॥ छं० ॥ ९ ॥
दूहा ॥ लंगे लोह उचाइ करि। अरु चावहिसि चाहि ॥
दच्छ आइ कर तोन दृढ। बर कमान कर साहि ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ दृढ कमान मुट्ठिय प्रमान। गह्यौ तकि तोन जोर कर ॥
बरकि बरकि बंगाल। चित्तन चंचल सु बोलि गुर ॥
गुंजि गरज भूभांन। जंग देवत्त रत्त जुअ ॥
नचि निवेस तजि बाल। सिंघ सम बीर इक्क हुअ ॥
आषेट तजिय चक्कियं सुभर। बिबिध सिंघ दिष्पन दिसा ॥
सम बीर बीर एकत्त भए। तहां दिष्यौ सोमेस जा ॥ छं० ॥ ११ ॥
षेध लग्गि कुटि बीर। सुबर दिषि बीर अष्ट क्रम ॥
सोमेसर सुअ सूर। लयौ पर तौजिम रषितम ॥
मुष्टि दिष्टि मरदां मरद्द। मिले पँचानन सूरं ॥
पिता जात बेबंध। द्रव्य अधो अध पूरं ॥
चय भाग तक्किय सिंघह सुचय। तुला मूल लंगी चढ्यौ ॥
उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यौं। सुबर बीर देषी दढ्यौ ॥ छं ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना।

छंद पद्धरी ॥ आषेट रमन प्रथिराज रंग। गिरवर उतंग उद्यांन दंग ॥
उत्तंग तरुन छाया अकास। अनेक पंषि क्रीडहिं हुलास ॥
सुब्बा सरास कुट्टे सुगंध। तहां भ्रमत भोर बहु बास अंध ॥
फल फूल भार नमि लगी साष। नासा सुगंध रस जिह्व चाष ॥ छं० ॥ १३ ॥
पन्नग प्रचंड फूंकर फिरंत। देषंत नरह्व ते करत अंत ॥
अनेक जीव तहां करत केलि। बट बिटपि छांह अवलंबि बेलि ॥
इक घाट बिकट जंगल दुअर। तहां बीर मूल पिथ्थल कुंआर ॥
बामंग अंग चामंड राय। चूकै न मुंठि सौ काल घाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
दाहिनि दिसा कन्हा सुजोध। सम अग्ग सस्त्र सम साहि क्रोध ॥
लोहांन पिट्ठि बैठो प्रचंड। जंनार जोर जम देन दंड ॥

ढिग कन्ह बैठि पुंडीर धीर। आजान बाह बज्जी सरीर॥
चामंड अंग कैमास काल। जीवार जोध पसु घरनि घाल॥
तिन अग्ग आइ पज्जून राइ। सब षेल निपुन पसुहार घाइ॥ छं०॥ १५॥
दुअ ओर और सामंत जूह। षेदानि जोर करि करी कूह॥
कर जोरि सेन साहं सहस सथ्थ। उड्डंत पंषि गहि लेंइ हथ्थ॥
जुर बाज कुद्धी तुर मती धारि। उड्डंत जीव ते लैहि पार॥
सच लैंहि स्वांन ते रौझ झुम्मि। पिष्पियै जु करंक बिन मंस भूम्मि॥ छं०॥ १६॥
सकल अनेक उठ्ठे वराह। बट बंटि मंसनह तुहि थाह॥
सा मरन सूर परि बथ्थ लेहि। ते बंटि बंटि सब सथ्थ देहिं॥
षरगोस स्वांन नह लहत बांटि। फिरि चढ़े जीव ते ओठ चांटि॥
खगमाल पवन उठि चले भागि। तिन परसु तीर सरवसि आगि॥ छं०॥ १७॥
अनजीव जीव बध्यांन कीन। सिकार लग्गि इन चाल छीन॥
सब सथ्थ नथ्थ हुअ एक जुहि। गज्यौ सु सिंघ जनु गगन फुहि॥
धपि चल्यौ बीर प्रथिराज धीर। लंगरिय लोह तह इक्क तीर॥
दिष्यौ सुजाइ सिंघनिय बाल। अवतार धरिय जनु पुहमि काल॥ छं०॥ १८॥
गरु राइ गुंग गज्यौ गहर। उच्चाइ पुक्क मनु पुहमि चूर।
चथ्थांन चथ्थ चाकंत ष्याल। दहुरनि दौरि मनोह बटि व्याल॥
आकास सीस दहै प्रचंड। जम रूप जीव ताडंत तुंड॥
चक्यौ सुराइ संजम कुंआर। छुट्यौ सु तेज जनु तीर तार॥ छं०॥ १९॥
भए सथ्थ बथ्थ नर जीव जोध। नृप अग्ग केलि जनु मल्ल क्रोध॥
गल बांह घल्लि दब्यौ सुसूर। फाट्यौ सु उदर जम दंड पूर॥
चथ्थाह एक केहरिय कीन। पय चथ्थि अंघ्रि करि कंन छीन॥
आये सु दौरि सब सथ्थ जांम। लंगा सधन्नि इम कहिय स्वांम॥ छं०॥ २०॥

संजम राय के बेटे का वीरता दिखलाना।

दूहा॥ संजम राइ कुमार बल। करि संजम नृप भ्रंम॥
इक्क मिक्क एकत भए। अप्प चर्म्म पसु चर्म्म॥ छं०॥ २१॥
गजनि कुंभ जिमि सथ्थ चनि। फारि चीर धर डार॥

संजम राइ कुमार सौ। बथ्थन मारि पछारि ॥ छं० ॥ २२ ॥
रीछ रोझ बाराह घनि। दट्ठन बट्ठे कोरि ॥
तिते जीव उर मभ्भतें। कढि जम दट्ठे फोरि ॥ छं० ॥ २३ ॥
गिरि परवत नद षोह सर। लंघत लगी न बार ॥
लंगा इक्कन लंघयौ। अनी धार धर धार ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना।

कवित्त ॥ भौ प्रसन्न प्रथिराज। बोल बुल्ल्यौ सुलंगरिय ॥
इत्तौ देजं प्रचंड। पंच जो मद्दि मोचि जिय ॥
अद्धा राज सु अद्ध। पाट अद्धा तंबूलं ॥
अद्धा बेस सुदेस। करौं आदर संमूलं ॥
बोलंत बैन प्रथिराज सुनि। जीव लज्जि नीची नजरि ॥
लगाइ कंठ ठुकि पिठ्ठ कर। भलौ भलौ सब सथ्थ करि ॥ छं० ॥ २५ ॥
दूहा ॥ जब दैवत्त दिवाइहै। तब सच्चा मुझ बैन ॥
घिग तिस्सा ज्यों देषियै। प्यास न बुझ्झै नैन ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुपनंतर की प्यास ज्यों। भजै मही किहि भंति ॥
जब दैहौं तब पूजिहै। जो मन मझ्झह षंति ॥ छं० ॥ २७ ॥

सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना।

इह कहि करि अग्गें चले। मिले सूर सब संग ॥
तब दिष्यौ इक सगुन बन। भए सबन मन पंग ॥ छं० ॥ २८ ॥

शकुन को देख कर सब को आश्चर्य होना।

बत्त कहत प्रथिराज ने। पिष्यौ सगुन नृपत्ति ॥
सकल साथ अचरिज भयौ। देषत इहै चरित्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

एक सर्प को नाचते हुए देखना।

वेत्त ॥ अहि सुरंग मनि दुत्ति। देवि मंडै तंडव गति ॥
बालमीक बिल अग्र। इक्क फनि कुटिल क्रोध मति ॥
इक्क चक्क बिच विचथ। थांन उंचौ रवि संझौ ॥

बर संमल उर चंपि। तेज आजुलि सुचिन्हौ।
आचिज्ज देषि प्रथिराज दिष। चक्कारौ पामर सुघर॥
धावर सु कन्ह चहुआंन कौ। बोलि बीर चषिग मघर॥ छं०॥ ३०॥
मघर कघर करिवार। भार जिन जुद्ध कन्ह बर॥
नरनाहां बर गढ। गाढ गिर दीह दुअन धर॥
मति जोतिग सुघदेव। सगुन आगम गम जांनै॥
प्रबल मैवासन मारि। उथपि थप्प थिर थांनै।
बिर दैत दमित आजांन भुअ। उर किंवार वर बज्ज जुअ॥
कुट्ट न किमघ जै क्रोध तजि। दुअ मघिष निवारै भुजनि दुअ॥ छं०॥ ३१॥

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना।

छंदपद्धरी॥ आयौ सुमघर मघरन नरेस। जिघि सुनत चढि भगि जात देस॥
उन्निद्द अंग उत्तंग कंध। बर बाहु बज्ज अरि धर असंध॥
बेघथ कलाइय घथ्थ जाहि। पग दौरि बियन बर रघ्घौ गाहि॥
मघिषी सु उभय पय टांसि जाइ। कलहंत क्रोध दिघ्घय बलाइ॥ छं०॥ ३२॥
रघ्घत सु निजरि सब अग्ग पघ्घ। चुक्कवै चोट घनि तुच्छ तघ्घ॥
छल छेद भेद तस करन राव। पर भूमि अघ्घ डस धरै दाव॥
दुअ सहस मघर जिन संग जोध। कमनैत काल अनमी अबोध॥
बहु बृषभ गाय मघिषीन तुंग। छेली छयल्ल गडरत्न पुंग॥ छं०॥ ३३॥
घुंमत मथांन जिन घरन घोर। आगम अषाढ जनु घटा सोर॥
बेपार दुग्ध जिन घरन घर्च। अनभंग बुद्धि जिन समर चर्च॥
बिरदैत एक बांने न धार। चमरैत एक इक सबल तार॥
सिर बचै बिदर पग पघ्घ देन। ट्रिग समर देषि सिर लगत गैन॥ छं०॥ ३४॥
गुज्जर अघीर असि जाति दोइ। तिन लीह लोपि सक्कै न कोइ॥
चाचिग चजूर कुंम्मार आइ। करियै हुकंम सिर ल्यौं चढाइ
बुल्ले सुबैन चहुआंन राउ। कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ॥ छं०॥ ३५॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा।

दूहा॥ मघर कघर गति बैन कहि। ज्यों बुल्लै दुजबैन॥
घरी एक सन्हौ रहै। तौ लभै नृप चैन॥ छं०॥ ३६॥

कुंडलिया ॥ मंने संभरि बार सुनि। दुह अपुब्ब गति दुच्छ ॥
मभभ छंदन घरि दक्क मैं। आवै भूमि रु लच्छि ॥
आवै भूमि रु लच्छि। पंषि माना दुह सारी ॥
दल जित्ते घुरसांन। कित्ति जग ज्यों विसतारी ॥
दुन सगुननि चहुआंन। तुच्छ दुष अतिचि अभन्नौ ॥
बिन जुद्धहु दुह लग्ग। द्रव्य निकसै आभन्नौ ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ कुटिल दिष्ट तिन चिन्त करि। कही मद्दर इक बात ॥
सो ब्रह्मा नन जांनई। बात भविष्यत घात ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है।

कवित्त ॥ संभलि पिथ्थ कुमार। व्योम दिष्यौ स्रप सारिय ॥
अद्धौ बंबी मध्य। अद्ध उँचौ अधिकारिय ॥
ता फनि ऊपर मनि प्रमांन। देवि चावहिसि नंचै ॥
दिष्यो दुक मन मंडि। राज दिसि सगुनह संचै ॥
आवै न पच्छ तथ्थह निजरि। नृपति हियं अत्यंत सुष ॥
जंपयौ मद्दर धावर धनू। सगुन बीर जांनै सरुष ॥ छं० ॥ ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना।

दूहा ॥ इतें देवि उडि बैठि अँब। चंच गिरादय साग ॥
दौरि मद्दिर तब हथ्थ लिय। लै नरिंद तुअ भाग ॥ छं० ॥ ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़जाना।

सर्प आंनि सर्पिनि मिलिय। भषु दीनौ तिन षाइ ॥
निय आसन थल छंडि कै। अन्न स्थल उड़ि जाई ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दुह अचिज्ज पिष्षिय सकल। चाचिग पुछि फिरि बत्त ॥
तुम जांनो सब फल सगुन। मद्दर कहर मत तत्त ॥ छं० ॥ ४२ ॥

इस शुभ शकुन का फल वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ तत बत्त मद्धर तिन कही बत्त। या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ। ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तुम जैत होइ भग्गो षलांन। धन जुद्ध लाभ लभ्भै बलांन ॥
इह लग्न महूरत इसो देख। षल भूमि अप्पि तो करै सेव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
संसार कित्ति चहु चक्क होइ। बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब। प्रमुदित्त मन चहुआंन तब्ब ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जिम मेह मोर आनंद होइ। राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल। जिम सिद्ध सेव धिय हरत सूल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जिम मंच सक्ति साधक लहंत। रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराध वंत। प्रमदा मुदित जिम आइ कंति ॥ छं० ॥ ४७ ॥
तिम भयौ सुष्प प्रथिराज अंग। बजि पंच सब्द बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना।

दूहा ॥ पंच सबद बाजित्र बजि। तजि म्रगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय। किन्नौ कुअर मिलांन ॥ छं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी।

छंद नाराचा ॥ कच्यौ मिलांन राजयं। बरंनि कब्बि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी। जरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुवंन वंस राजतं। उभे सुमभ्भ मभ्भतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं। अजब्ब जेव जग्गतं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
गिरिह डोरि रेसमं। सुपंच रंगयं भ्रमं।
तने तानव तंबुअं। करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
बिछाइ कैदुली चयं। धरे प्रजंक वीचयं ॥
सवारि सेज पथ्थरं। सुगंध फूल विथ्थरं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
गरम्म रुम तोसयं। ढक पलंग पोसयं ॥
कनंक मै सिंघासनं। अछादितं सुवासनं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

धरे सुपिट्ठ तक्किए। अतल्ल संत ढक्किए॥
अगें अबन्नि अंगनं। सिका करै किरक्कनं॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंमकुमा गुलाबयं। सुनेक छंटि आबयं॥
तहां सु बैठि पिथ्थयं। करै अषेट कथ्थयं॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं। पढै बिरद्द छंदयं॥
सामंत सब्ब नम्मियं। मिलांन अप्प क्रम्मियं॥ छं० ॥ ५७ ॥
सें हथ्थ चाहुआनयं। दए कपूर पानयं॥
षवास पास वानयं। हजूर उभ्भ आनयं॥ छं० ॥ ५८ ॥
बिरष्प बद्द जंबुअं। षिरन्न जद्द अंबुअं॥
गयंद बंधि अंदुअं। झरंत मद्द बिंदुअं॥ छं० ॥ ५९ ॥
करंत केलि सारसी। मलप्प ते मद्दारसी॥
बिरद्द नेंक बोलते। पलक्क चष्प षोलतें॥ छं० ॥ ६० ॥
मद्दावतं पुकारतें। हठं न लै अहारतें॥
पियंत नीर षों गरें। गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें॥ छं० ॥ ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते। चबेल सुंड झल्लते॥
गिलोल चोट लग्गतें। बिरष्प ओट भग्गतें॥ छं० ॥ ६२ ॥
दिपंत दंत उज्जलं। पचार पंति कज्जलं॥
दुरद्द हद्द बेसकें। दियें गनेस भेस के॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं। चरष्पि गड्ड षुभ्भयं॥
करे तुरंग काद्दजं। भरें अमंन बाद्दजं॥ छं० ॥ ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं। पलान दूरि कीनयं॥
न्हवाद्द नष्प सिष्पयं। अछादि कंध रष्पयं॥ छं० ॥ ६५ ॥
रतब्ब दै ब्रहासयं। करे चपत्त घासयं॥
ता पच्छ जाद्द साहनी। अरांम पंड वाभनीं॥ छं० ॥ ६६ ॥
कहूं करं भलारयं। भरी रषत्त भारयं॥
अनूचरं उतारयं। संभारि ढार ढारयं॥ छं० ॥ ६७ ॥
हुलास सेन उप्पजै। भोज्जंन भष्प निप्पजैं॥ छं० ॥ ६८ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना।

दूहा ॥ करि मिलांन मध्यांन हुअ। त्रिपति भोज छह भंति ॥
एकत मिलि आहार हुअ। रही न मन कछु पंति ॥ छं० ॥ ६८ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे।

मादक में नउ दीप किय। बछि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे ग्रहन। जित तित भूपन भार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना।

चढि करि संभरि वार चलि। ग्रेह सपत्नौ जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा। भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत वसन आरुहिय। रत्त तिलकावलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल। अलक गुँथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध। पास नग सेत रत्त बिच ॥
मनों कनक साषा प्रचंड। गहै काली उप्पंम रुच ॥
मनो सेम सहायक राह छोइ। कोटि भांन सोभा गही ॥
अदभूत द्रव्य ससि अहि गल्यौ। साष सुरंग भनावही ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यों आई हो।

दूहा० ॥ सुरंग चिया सोभा नृपति। वचन सुपन कहि लाल ॥
का तूं सुंदरि किन बरन। क्यों जभी इहि काल ॥ छं० ॥ ७३ ॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस अवती हूं।

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती। बीर भोगी वर चाहीं ॥
दाई भाइ कटाच्छ। बीर बीरां तन साहीं ॥

वीरां थी पद्धरी। विना वीरां वर बंकिय॥
हुं दिव्य नारी एह। सुरां असुरांनह संकिय॥
मिष्टांन पांन बहु भोग रस। रस सुगंध वीरन द्रअौं॥
अनभंग वीर जोद्धित्त वरि। रस अनेक निहचै अअौं॥ छं० ॥ ७४॥

गाथा॥ पंक जनय नीवामं। सुपनंतर राज दिट्ठायं॥
जानिज्जै रति अंगं। कामं उक्काह दीपयं मालं॥ छं० ॥ ७५॥

राजा का विचार में मग्न होना।

कवित्त॥ मन लगौ बिसमित विचार। राज चिंता उप्पंनिय॥
भेमि बयन मन मभ्भ। सु कर वर गहि कर लिन्निय॥
सुभ लच्छिन उत्तंग। अंग अंग गुन पिन्निय॥
ता समांन छवि वांम। आंन करतार न किन्निय॥
मानीक वंस दानव कुलह। भेमि चरन्न निवास करि॥
जै जया सबद सुरपुर भयौ। करै केलि कलि इंद्र सर॥ छं० ॥ ७६॥

पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्टू बन में अगनित धन है।

दूहा०॥ कहै भूमि प्रथिराज सों। सुनि दै करि मन सुद्धि॥
बसै द्रव्य अगनित सगुन। षट्टू पुर बन मद्धि॥ छं० ॥ ७७॥

अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा है॥

कवित्त॥ अजैपाल चक्कवै। द्रुग अजमेर द्वापरह॥
तिहि बानिक पुर सिद्ध। लिषिय संजीत अपारह॥
हेम कोटि चा हून। दून देवर धर मंभह॥
घरी आदू दुक पहर। देव देवी तन सुभ्भह॥
अन्नांन काल पूजादि वह। तहं पत्तौ दुज राज बर॥
अप्पी असीस मंगी लक्खिय। कांम कह्यौ दुजराज नर॥ छं० ॥ ७८॥
दुक्क सहस अपि द्रव्य। फेरि विप्रह अप्रमानं॥
सुनी सलक्षि बर बिप्प। दई सुमद्दा बर थांनं॥
फिरि पत्तौ तहां राज। दियौ तब आप दुज्जबर॥

अप्प भयौ सुद्द राज। रचै धन रष्पि गद्यौ धर॥
मो मति द्रव्य तिद्दि थांन रचि। तास मोह राजन करै॥
षायौ न कोद्द षैद्दै न को। यों अरत्त अर्जुन फिरै॥ छं० ॥ ७९ ॥
दूद्दा॥ को गड्डै षायौनि को। को विलसै करि भेव॥
माया छाया मध्य दिन। ज्यों विषया बल देव॥ छं० ॥ ८० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ १७ ॥



अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा ॥ दिय पची कैमास कर । अनँगपाल कहि दूत ॥
बर बंची सामंत सत । बिंमत अष्पर नूत ॥ छं० ॥ १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥
पुची पुच पबिच पथ्थ अधनौ । षिची सवं तावनं ॥
मा दृट्ठा दुष्ट बिट्ठ तप्प सरनं । बद्री निवर्तं तनं ॥
आभूमं पुर ग्रांम हय गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ छं० ॥ २ ॥

पत्र पढ़कर सब का बिचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा ॥ बंचि पच कैमास कर । नृप सामंत समंत ॥
आइ दूत दिल्ली पुरह । सुबर बिचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुंआरि का व्याह रावल समरसिंह के साथ करना चाहिए ।

चौपाई ॥ इक कहै दिलिय चलि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥
इक्क कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चिचंग सुराइय ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर नरिंद । चिच चिचंग देव दुति ॥
तिन सगपन संमुहौ । राज जानंत राज गति ॥
कै दिल्ली दिसि चलहि । बाल सेवर अधिकारिय ॥
सोमेसर पितु-सुतं । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

आवै न मंत वियं बंध हत। अनँगपाल संमुह चलिय॥
ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रथ। देवमत्त व्याहं षुलिय॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतो को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए।

सित सामंत रु नृप्प। बैठि सब सथ्थय मंतर॥
कैमासह चामंड। राय रामह बड गुज्जर॥
दाहुलि राय हमीर। सलष पांमार जैत सम॥
कह्यौ राज हम मान। तात अप्पी दिल्ली तम॥
पुंडीर राइ दूम उच्चरै। करौ सकल आदर सुधर॥
उप्पाइ अनँत महि लिज्जियै। आदि ध्रंम अमर असुर॥ छं० ॥ ६ ॥

चंद बरदाई का मत पूछना।

चौपाई ॥ सब भट पूछि पूछि कवि चंदह। तुम बरदाइ लच्छौ बुधि कंदह॥
किम अप्पै पितमात धरंनिय। सब बिरतंत कहौ मन करनिय॥ छं० ॥ ७ ॥

चंद ने ध्यान कर के देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा।

तब बरदाइ सुद्ध मन कीनौ। सुमरिय सकति ध्यांन मन लीनैन॥
देवी आइ कह्यौ बर तंतं। सो अप्पै प्रथिराज सुमंतं॥ छं० ॥ ८ ॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपेगा।

कवित्त ॥ पुब्ब कथा वरतंत। कही व्यासह ज्यों चंदह॥
सही भविष्यित बात। सुनी सो छोइ नरिंदह॥
तोंअर बद्री जाइ। पथ समप्पै चहुआंनं॥
तपैं तेज रवि जेम। कहीं सरसें परवानं॥
दूध मत्त सत्त मत्तौ मनह। अरु पुब्बह मंची सपुन॥
सामंत सिन्ह धर ध्रंम रत। सेां पुब्बहु सबहु अपुन॥ छं० ॥ ९ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ।

दूहा ॥ दूत हजूर बुलाइ करि। पुछत पिथ्थ कुंआर ॥
क्यों मातुल हुअ धर अरत। सेा कहेा सत्त विचार ॥ छं० ॥ १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा।

गाथा ॥ दिल्ली अनंग नरिंदं। दंदं दहन दुअनं दलनायं ॥
चिगुन तेज सुअंगं। पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ छं० ॥ ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन।

दूहा ॥ बंक नृपति इक अंक लौ। मिटत करभ्भर पांन ॥
इम इच्छै अवनी अटल। सचु न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ गज गज्जत दरवार। घुरत दमंम बह धुअ ॥
बज्जत चय घुर तार। गाल गुज्जत सु डंट मय ॥
तंत तान झंझार। भमर गुंजार बास रस ॥
मुकट बंध राजान। लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अवनि इंद्र तूंअर तपै। कँपै रोर मौजन मनह ॥
चव बरन सरन सुष्पह रसहि। दुष्प न[1] किहि दिष्पिय तनह ॥ छं० ॥ १३ ॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन।

अनँगपाल तोंअर सुढाल। सेाज वासंत दिल्लीय बर ॥
धर सुढार कासिंद पार। अट्ठार वंन थर ॥
वर विहार प्रकार। विपन वाटिका बिराजिय ॥
ग्रिह उतंग वतंग। गोष जाली उच साजिय ॥
सब लोक असोक अनंद में। अप्प अप्प रह उद्धरिय ॥
जाजंन जाप अद्धा परषि। होम धोम धू विथ्थुरिय ॥ छं० ॥ १४ ॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं।

अति तोंअर परिवार। वृद्ध बहु रिद्ध अनूपं ॥
भ्रंम क्रंम बहु रीति। चली सब लोक सु कूपं ॥

(१)—प्रो०—दुषन।

बीर सेन सुत बीर । पाल बहु काल धरंत्रिय ॥
मन लग्गौ बैराग । करत क्रत जंत्र करन्त्रिय ॥
निसि मध्य सुपन पिष्यिये दुरय । सब तूंअर दक्षिन चल्लै ॥
आरक्त माल कंठह कुसुम । दूरि मग्ग षेानी मिल्लै ॥ छं० ॥ १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ।

अनँगपाल पहु सुपन । देषि अप्पन चल चित्तह ॥
हरि हरि हरि हरि चवै । दुष्ट फुनि भून विहत्तह ॥
निसा जांम इक सेष । अप्प सुपनौ फुनि पिष्यिय ॥
अप्प तरुनि सम उट्ठि । तिष्थ थानक तप दिष्यिय ॥
दुह लष्यि चित्त चंमकि नृपति । पांनी पाय अँदोलि अप ॥
नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक । सुत पुन नहीं पवित्त वप ॥ छं० ॥ १६ ॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया ।

घटिय उभै निसि सेष । नाम सुपनौ फुनि पिष्यहि ॥
तट कालिंदी तीर । सिंघ क्रीडत दिव दिष्यहि ॥
नाम समै इक सिंघ । पार उत्तरि जल आयौ ॥
उभै सिंघ सेा मिल्या । नेह क्रीड़ा दरसायौ ॥
बैठेा सुसिंघ हथ मंडि करि । बैठि सनंमुष सिंघ दुअ ॥
जग्गायौ बीर सिंघह सुतन । नाम सुपिष्यौ प्रात हुअ ॥ छं० ॥ १७ ॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रश्न करना ।

तब तूंअर चित चक्कत । उट्ठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिह जग जोति । बोलि दैवग्य तथ्थ हुअ ॥
दिय आसंन तमोर । बचन आभासि भाव दिय ॥
कहौ सुपन विरतंत । आदि अंत कारंन तिय ।
संभलें सुपन मन दुज दुमन । देषि राज बुल्यौ न हसि ॥

किन कहौं सब छंडौ दुमय। सब त्रिम्मान सुकाल बसि ॥ छं० ॥ १८ ॥

व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो।

तब दैवग्य विचारि। एक एकन मुष लोकिय ॥
सब गंठी त्रिम्मान। एक कारन चित दो किय ॥
कहैं सुनौ सुत बीर। दिल्लि चहुआंन निवासं ॥
ज्यौं दिष्यौ तुम सिंघ। मिलै तूअर सम तासं ॥
तप सद्धि तुमह सद्धौ सरग। जो दुष्यौ उद्धुन अपन ॥
तूअर बिनास अग्गह अतुल। सब भविस्य कारन सुपन ॥ छं० ॥ १९ ॥

इस भविष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए।

दूहा ॥ सबैं भविस्य बिचार मन। पुचि पुच चहुआंन।
तिहि अप्पों दिल्लिय सुदत। पसरै कित्ति प्रमांन ॥ छं० ॥ २० ॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय करलेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनबास करना चाहिए।

कवित्त ॥ बालप्पन पन ज्यांन। गतह त्रिद्धप्पन आयौ।
एक समे एकंत। चित्त परब्रह्म लगायौ ॥
पुत्र होइ संसार। भूमि रष्यै बल षंडै ॥
बढै वंस बिसतार। कित्ति दसहूं दिसि हंडै ॥
अब करौं जोग जंगम जुगति। भुगति मुगति मंगो हरिय ॥
पुत्तीय पुत्त अप्पों पुहमि। इम चिंतन मन में धरिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना।

छं० पद्धरी ॥ बोलेति मंत मंत्री प्रमांन। स्वामिंत भ्रम जे अंग जांनि ॥
रामह सुराज चिंतै सदाय। धुर धंम्म रूप बांनी बदाइ ॥ छं० ॥ २२ ॥
एकंत मद्धल राजन बयठ्ठ। गुदराइ बोलि दरबांन तठ्ठ ॥

संसार विरत मन दिष्पि राज। चीकह कुंभ जल बूंद आज ॥ छं० ॥ २३ ॥
अग्यांन चित्त ज्यों दिढ्ढ ग्यांन। लोभीय चित्त ज्यों हरि न ध्यांन ॥
कुलटा सुनैंन नहिं लज्ज जेम। कपटीय मनह नहि प्रेम नेम ॥ छं० ॥ २४ ॥
बांनिक बनिज नहि प्रीति अंग। दिष्यौ सराज इन परि बिरंग ॥
बुल्ले सु बिनय करि बैंन एव। कहु दुचित अज्ज मन लगत देव ॥ छं० ॥ २५ ॥
प्रति बात कहिय अब हमहिं ईस। बिन पुत्र सचु संसार दीस ॥
नृप वंस अंस जो पुत्र होइ। अवनीय अप्प रष्येति सोइ ॥ छं० ॥ २६ ॥
पुत्री सपुत्र चहुआंन पिथ्य। तिन हेंउं राज मो सरन तिथ्य ॥
मंचीन मंत तब कहिय राज। चव जुगनि जुगति जे भूमि काज ॥ छं० ॥ २७ ॥
जिहि जियत जीय धर रमै ओर। तिहि नृप नहीं कहि लोक ठौर ॥
जनमंत पुत्र जिन तप्प होय। करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
धर पाइ राइ धर भ्रंम बट्ठि। धर भ्रंम क्रम सुरलोक चट्ठि ॥
जो गंग जुगति कल कठिन कांम। कहु षंगधार बिश्रांम ठांम ॥ छं० ॥ २९ ॥
हम सीष मांनि अनंगेस राइ। भूमिय सु तजै सुष कित्त जाइ ॥
मंचीन राज तब कहीय बत्त। मानों कि बैर गहि गुंग गत्त ॥ छं० ॥ ३० ॥

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए।

अरिल्ल ॥ ते मंची जंपिय नृप बत्त। किहि गुन राज भूमि अनुरत्त ॥
गत्ति अगत्ति जिन धर पर अष्षी। तिहि धरपति धर कबंधु न रष्षी ॥ छं० ॥ ३१ ॥
कवित्त ॥ जो धरपति धर छंडि। भ्रम्यौ नल राय हेत चिय ॥
जो धरपति धर छंडि। गौ राम रष्षी न सीयनिय ॥
जो धरपति छंडि। भ्रमिय सुत पंड षंड बन ॥
धर कारन विक्रंम। कियौ कग्गामिष भष्षन ॥
धर मंडि न छंडि अनंग नृप। तिथ्थ भ्रमन राजिंद नन ॥
धर काज राज धर षंडियै। चिंत न दिष्पहि राज मन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना।

अरिल्ल ॥ कहिय मंच नह मनिय राय। लिषि कागद अजमेर पठाय ॥

सुनि बत्ती नृप भर किय कानं। राका चंद उदधि परमानं ॥ छं० ॥२३॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना।

दूहा ॥ सुनिय राज कवि चंद कथ। उर आनंद अपार ॥
पित मातुल मिहन नृपति। कियो सुगवन विचार ॥ छं० ॥ २४ ॥

कैमास का भी यही मत होना।

थपिय मत्त कैमास सोइ। धरनि धरत्तिय तथ्थ ॥
चढ़ि चहुआन सुसंचरिग। पुर दिल्लीय सँपत्त ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ सुनहि राज तूअर नरेस। एक बर बुद्धि विचारिय ॥
एक बनिक पाधार। सु बय अंगह तिह सारिय ॥
नाहि बाल बय नन्ह। सील दृत दुल्लभ लीनौ ॥
क्रंम काल मन हुल्यौ। चित्त मति संत उपन्नौ ॥
अंनगेस राज तोंअर प्रगट। उच सुमत्ति जिन लेइ उर ॥
मम भूमि मुक्कि राज्यंद सुनि। धंम धुरा रष्पै न धर ॥ छं० ॥ २६ ॥

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना।

दूहा ॥ कही दूत सारो विचरि। आदि अन्त जो बत्त ॥
चढि चहुआंन सु संचरिय। जुग्गिनि पुर लै बत्त ॥ छं० ॥ २७ ॥

चौपाई ॥ लै सम सूर चल्यौ चहुआंनं। जगत सूर देव प्रति मानं ॥
सगुन सकल संमुह बनि आए। गयौ राज दिल्ली समचाए ॥ छं० ॥ २८ ॥
गयौ राज दिल्ली परिमानं। मिले सूर अनंगेस निधानं ॥
देषि भूमि दिसि थांन प्रामानं। राजा मुष बल्यौ चहुआंनं ॥ छं० ॥ २९ ॥

अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया।

दूहा ॥ मातुल पित भिट्यो सु पहु। मिलि अति उच्छव कीन ॥
बासुर सुर रवि चंद बल। लिषि दिल्ली पुर दीन ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन।

छंद उधोर ॥ पयो धर पाइ पाइह अंत। दह जुग मत्त रत्त गुरंत ॥
भाषंत चंद छंद उधोर। प्रति षग कही पन्नग जोर ॥ छं० ॥ ४१ ॥
लिषि वर धटी महूरत मत्त। दुज घन वेद विद्यव सत्त ॥
आसन हेम पट्ट सुढार। मांनिक मुत्ति दुत्ति उजार ॥ छं० ॥ ४२ ॥
मंडित कलस विप्र विनोद। राजन अनिहि मानि यो[1] मोद ॥
धुनि वर विप्र मंडत वेउ। माननी सकल साजत तेउ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
बज्जहि बहुल बज्जन भार। गांनहि मांन ग्रांम सुतार ॥
नचि चिय पाच भरह सुभाव। गांनहि सिंघ विक्रम साव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
सज्जित सघन सिंदुर दंति। कच सु पुहप सोभत पंति ॥
धवलें चढिय निरषति नारि। गौषन रंध्र सुराजकुँ आरि ॥ छं० ॥ ४५ ॥
दमकत दसन हंस विराज। मानहु तडित अभ्र अग्राज ॥
वसनह रसमि रज्जित कोर। सजि सित सघन वासव जोर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
राजत श्रवन रवनि नाटंक। राका मनहु सोभ मयंक ॥
सोभत लाल कुंडल कंति। मनु बधू इंद इंद मिलंत ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढि सु पहु सोहत दंति। मनों इंद्र ऐरापंति ॥
मांडत विप्र वेद सुवेद। जग्यहि जपति भेदहि भेद ॥ छं० ॥ ४८ ॥
पटहि पुत्ति पुत्त अरोहि। विंजत नृप्प चामर सोह ॥
मांडत मुकुट उत्त सुमंग। रचि बहु धात मौल सुरंग ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दुति कलस करिय तास। मारिच कोटि इंद उहास ॥
धुअ सम मंडि कच अजेर। मनों हरि बाल बिंब सुमेर ॥ छं० ॥ ५० ॥
तिलकह जटित रंजित भाल। झल हल करहि दीप उजाल ॥
चरचहि मुत्ति कुंदन थाल। पूरति सुपहु पूजति बाल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
चरचति सुकर अनंगपाल। सोहति कंठ मोतिन माल ॥
दुज वर चवै असिष बेद। मांननि गांन तन सु अषेद ॥ छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) सो०-मानत।
(२) सो०-भाल।

चय गय चथ दिल्लिय देस। समप्पहि पुत्ती पुत नरेस॥
बेाडस दांन पूरन मांन। अप्पे विप्र धेन सुआंन॥ छं० ॥ ५३ ॥
थप्प विप्र गेव सुग्यांन। ग्रहन सुतप्प तप्पिय थांन॥
बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन। ..... ॥ छं० ॥ ५४ ॥
तजि ग्रह मोह माया जाल। सज्जिय जोग बंचिय काल॥
रचिय बांन प्रस्थह रुप। क्रमि रह तप्प तप्पित भूप॥ छं० ॥ ५५ ॥
चय गय तहनि द्रव्य सुदेस। तिन वर तजिय राज नरेस॥
संवत ईस तीस रु अट्ठ। चलि नृप हेम गहि कर कट्ठ॥ छं० ॥ ५६ ॥

कवित्त॥ एकादस संबतह। अट्ठ अग्ग चति तीस भनि॥
प्रथि सुरति तहां हेम। सुद्ध मगसिर सुमास गनि॥
सेत पष्य पंचमीय। सकल वासर गुर पूरन॥
सुदि मृगसिर सम चंद। जोग सहहि सिध चूरन॥
पहु अनंगपाल अप्पिय पहुमि। पुत्तिय पुत्त पवित्त मन॥
छंड्यौ सुमोह सुष तन तहनि। पति बद्री सज्जे सरन॥ छं० ॥ ५७ ॥

शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना।

छंद पद्धरी॥ सुभ लगन दीन दिल्लिय नरिंद। तुम करहु राज जनु पहुमि चंद॥
सुनि श्रवन सह आनंद अंग[1]। राका रयन जनु दधि तरंग॥ छं० ॥ ५८ ॥
बुल्लाइ फेरि दुज बर प्रमांन। थपि लगन मगन अंम्रत समांन॥
जिन बचन व्यास मिहै न कोइ। स बजह कहंत मुष सिद्ध होइ॥ छं० ॥ ५९ ॥
मंडप्प मंडि सुतधार बांनि। रचि व्याह लग्ग रुकमनि मानि॥
उच्छव अनंत बाजंत बाज। जिन घुमर घोर रव गयन लाज॥ छं० ॥ ६० ॥
नृत्यंत नृत्य पातर प्रवीन। तिन रष्य अंग मुनि मन अधीन॥
सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत। कैलास विपन बांनिक बसंत॥ छं० ॥ ६१ ॥
आरास सुब्रन बनिकाच छोह। देषंत नैंन मुनि मगन मोह॥
बहुरंग ब्रंन चित्रित अवास। साला सुरंग गौषन उजास॥ छं० ॥ ६२ ॥

(१) प्रा-कंद।

अंगन अनंग दिषि रचत भूलि। चिगुन निवास सुरवास फूलि॥
जाजिंम पट्ट जरकस जराव। अवनीस दिष्षि जकि धरत पाव॥ छं० ॥ ६३॥
कुहंत तार सहजच्च सुरंग। भृंगीन भ्रंग भय भ्रमत अंध॥
नव ग्रंथी वास सुर वास साज। तहां बैठि आंनि अनगेस राज॥ छं० ॥ ६४॥
बुल्लाय सब्ब अप भर समान। द्रिगपाल जोर तन तेज भान॥
लघु बेस तरुन के वृद्ध वीर। कक्ष वाच साच वज्जंग श्रीर॥ छं० ॥ ६५॥
इंद्रान मोह जिन अंग भंग। संग्राम रंग जनु कप्पि पंग॥
मच्छर हुलास जिन अंग सोह। चित जरत उठ्ठि सिर समय कोह॥ छं० ॥ ६६॥
नव रस विलास निय नारि रंग। अनिषरत रंग भीषम प्रसंग॥
षग दान मान परिमान जोइ। कवि कहै व्रंन जो आंनि होइ॥ छं० ॥ ६७॥
कुल रीति नीति हिंदून राह। दारुन्न दुसह दुभ्भर दुवाह॥
अस बैठि भूप सब समा आंनि। सुर इंद्र कोटि तेतीस जांनि॥ छं० ॥ ६८॥
तहां धरिय सिंघासन कनक कांति। जिन हीर लाल पीरोज पंति॥
मानिक्क चूनि मनिमुक्ति भंति। चक्कचोंध दिष्ट बुधि भूलि जंति॥ छं० ॥ ६९॥
नृमान लषिन पुष्पच्च उपाइ। तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ॥
आसन्न आसु तहां धीरय आंन। सुरजंपि तथ्थ जै जया बांन॥ छं० ॥ ७०॥
प्रथिराज बोलि बैठाय पाठ। धुनि करत बेद तहां विप्र ठाठ॥
बिय कंध पच्छ बिय चमर ढार। रजि रूप जांनि अश्विनि कुमार॥ छं० ॥ ७१॥
धरि कनक दंड सिर छत्र सीस। सिर चंद कांति कैलास ईस॥
गायंत गांन कामिनि उतुंग। कलयंठ कंठ सुर करत भंग॥ छं० ॥ ७२॥
मुसकत हसंत अंडत अलोल। सहजन कटाच्छ छंडत सलोल॥
रस भरिय एक आलसय भंग। मुनि देषि अंग मति होत पंग॥ छं० ॥ ७३॥
इक अलसि फेरि अंठति अलोल। छंडंत असित सित श्रवन कोर॥
अंगन अवास सालानि चूरि। जालोन गौष भरि रचौ पूरि॥ छं० ॥ ७४॥
बंदीन ठाठ बिरदच्च बुलंत। नव रस विलास रसना तुलंत॥
सधि लग्न मुहूरत दुज प्रवीन। अनगेस राज तब तिलक कीन॥ छं० ॥ ७५॥
बजि सबद पंच बाजे बजंत। तिन सोर घोर दरिया लजंत॥
जित तित्त अत्ति उच्छव रजंत। बरषाह पाइ जनु जग गजंत॥ छं० ॥ ७६॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना।

छं० भुजंगी ॥ तहां बैठयं राज दिल्ली प्रमानं। सिरं आतपत्रं सु दीनो निधानं ॥
बजै दुंदुभी भीत[1] आकास थानं। ..... ॥ छं० ॥ ७७ ॥
मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं। जिनै आदरं राइ दीनौ सरीरं ॥
भनक्केति ताजी किनक्कै करीनं। मदामत्त दीसै सुमत्ती सुभीनं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दूहा ॥ करि जुहार भट सुभट थट[2]। प्रजा महाजन आइ ॥
सब काहू मन यौं भयौ। ज्यों जलचर जल पाइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना।

सत छथ्यो दस सित छुअस। मानक मुत्तिय लाल ॥
सवा लष्ष सोवन महुर। गनै और को माल ॥ छं० ॥ ८० ॥
चढन जोग छथ्थी तबैं। मंगवायौ मदमंत ॥
जनु घन बद्दल पवन बसि। बग पंकति ता दंत ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जो रावर जंजीर बसि। पवन न पावै जांन ॥
अग्ग मंडि डारै प्रबल। साथर अजा समांन ॥ छं० ॥ ८२ ॥
छंद पद्धरी॥ आरूढ इंद्र सम गज गरूर। ज्वालाति जोति जनु किरन सूर ॥
जरकस जराव औकार मंडि। सुरराज विपन सोभात षंडि ॥ छं॥ ८३ ॥
रेसम रास नारी बनाइ। घुघ्घर घमंक कंचन जराइ ॥
आरूढ राज आसन अनंद। सुर पुफ्फ विष्टि दुअ दीन बंदि॥ छं०॥ ८४॥
लंगरी राव पच्छैं अरोह। कर कनक दंड सिर छत्र सोह ॥
बिय बांह चमर दर गाह धारि। रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि॥ छं०॥ ८५॥
तिन पच्छ पंति दंतीन साजि। सामंत सूर सब चढ़े गाजि ॥
तिन पच्छ तुरी तत्ते निवानि। बर पवन रूढ मन भए जानि ॥छं०॥ ८६ ॥
छत्तीस बज्ज बज्जे सु बाज। विरदैत बिरदै चंद राज ॥
अवधारि मध्य बाजार बीच। केसरि कपूर तहँ अगर कीच ॥ छं० ॥ ८७॥
जित तित गिरंत जारीन फूल। छबि छल्लै छैल नवला अभूल ॥
मन मगन मुक्त अष्पित उछार। जलजात मनों बसि ओस भार ॥छं०॥८८॥

१) प्रो०—घोस।
(२) छ० को० ए०—भर सुभट सब।

सब परज अरज प्रभु करत एह। इक भूमि ग्रेह थिर राज देह॥
नर नारि निरषि मनु मुदित मोह। लगि चंद सूर चिरचीव होह॥छं०॥८८॥
षट दरस दरसि आसिष्य देत। प्रथिराज बंदि सिर झेलि लेत॥
फिरि राज आइ अंदर अवास। जहं रहत मुग्ध मध्या सुवास॥छं०॥८९॥
सनमान कीन रनिवास राइ। जस मन्नि सत्त सत सिद्ध पाइ॥छं०॥९१॥

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना।

दूहा॥अन्य न्रपति गन सुंदरिन। मधि अंगन रनिवास॥
दिष्पत छबि छक्की सकल। मिल त्यंजन[1] दिन तास॥छं०॥९२॥
कनक किउ कुंदेरनह। भरत कि भरिता अंग॥
जलज नैन मुष कर चरन। जनु धरि अंग अनंग॥छं०॥९३॥
मधुर कंति मुष मधु मुदित। उदित अर्क आकार॥
तोरि चंन तरुनिय कहत। धरनि सहौ तुम भार॥छं०॥९४॥
गाथा॥ बनिता बिनय सुकरियं। धरियं ध्रंम केन अंगायं॥
के छबि छकित छलीयं। भइयं ववसि पिष्पि पिष्पायं॥छं०॥९५॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना।

दूहा॥ जुग्गिनिपुर चहुआंन दिय। पुचीपुच नरेस॥
अनँगपाल तोंअर तिनिय। किय तीरथ परवेस॥छं०॥९६॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना।

कवित्त॥ सुनि सोमेसर सूर। हियै बढिय आनंद सुष॥
अति अनंद त्रिंमलय। धनि सो पुच दीह रुष॥
बर बांने बंधियै। मिले सामंत सूर सब॥
सरित समुद्द प्रमांन। मिलिय आइत्त वीर सब॥
गोधूर लग्न चहुन न्रपति। बाल चंद कल न्रपति हुअ॥
मांननिय मांन जानै सकल। नृप परतीत समत्त धुअ॥छं०॥९७॥

(१) क-सुभ मध्यंजन।

छंद पद्धरी ॥ बंदहि विवेक अविवेक पाइ । विंभहि मुकुट सेां मुकट वाइ[1] ॥
नग नगन जरहि किरनी जराइ । जाने कि अगनि अनहित्त वाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

छंद चोटक ॥ भयभीत सुनंत चढंत कला । जनियै गुरदेव सुमंग मला ॥
बर बज्जि निसान दिसान धुअं । नृप राज सुकाज ज्यौं भ्रंम सुअं ॥ छं० ॥ ९९ ॥
प्रगटी जनु कांमय कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुमंत मला ॥
बिसरे द्रगपाल दसेां दिसयं । प्रगटी जनु काम कला ससियं ॥ छं० ॥१००॥
रन नंकिय पाइ कमल्ल भुअं । छिति मित्त छिपाधिप चित्त धुअं ॥
प्रगटे प्रथुपालक पंच कलं । तिनमें प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० ॥ १०१ ॥
परधानति भीम कुंअार तिनं । नृप सेवत जास सुपाइ गनं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

दूहा ॥ अत छत्तिय नृपराज नपि । ढिल्ली ह्वै घन साज ॥
जानिज्जै जंगल नृपति । मन उदद्वि गुन पाज ॥ छं० ॥ १०३ ॥

आशीर्वाद ।

सित छ अग्ग सामंत सजि । बजि त्रिघेाष सुनंद ॥
सेामेसर नंदन अटल । ढिल्ली सुबासि नरिंद ॥ छं० ॥ १०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल दिल्ली दान नाम अष्टदशमेा प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥



(१) मेा-चाइ ।

अथ माधो भाट कथा लिष्यते ॥

(उन्नीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कवित्त ॥ किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआंन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन । बलि दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस मच्छिष । किल[1] सहु नयर दीन बलि ॥
अवर देव पुज्जै सु सेव[2] । नैवेद्द धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ । अथ पंषि दीय चंडरस ॥
कंपै सुसीम तहां राषि भट । जस जु प्रग्गट्यौ दिसि विदिस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कवी कब्बिचंदं सुमाधौ नरिंदं । सुरंतान भद्दं मधू माद इंदं ॥
कवी एक भंडी भिडिंभी प्रमानं । किते तार झंकार बिद्या सुजानं ॥ छं० ॥ २ ॥
विधं मंच पची पढ़ै वेद बानी । तिनं भद्द कोनं जु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसट्ठि विद्या । तिनं रूप के भेद चौरास सद्या ॥ छं० ॥ ३ ॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडस प्रमानं । इते छंद विच्छंद छंदे कलानं ॥
मद्या रूप रंगंति गंगा प्रकारं । तिनं बाइकं भद्द बोलंत सारं ॥ छं० ॥ ४ ॥

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

छंद चोटक ॥ दिषि भद्द सुथांनक दिल्लि धरं । जमना जल राजत पापहरं ॥
तिह भ्रंम सुतं त्रिप भित्त दई[3] । सोइ दिल्लिय राजस राज भई[4] ॥ छं० ॥ ५ ॥
इंद पथ्थ सु पूरब नाम धरं । इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
चव पंथ पती पति पाप हरै । रवि की तनया तन तेज दुरै ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो-किल ।
(२) मो-पुज्जेति सेव ।
(३) मो-दिष्यतरं ।
(४) मो-गई ।

दूतनी विधि देषत थान गयौ। अग लोक समान सु तेज तयौ ॥ छं० ॥ ७॥
दूहा ॥ इहि बिधि दिष्पिय सकल द्रिग। पुर ढिल्ली उनमांन ॥
थांन बीर चहुआंन कौ। प्रति कैलास समांन ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन।

इंद रूप ढिल्लिय नृपति। इंद्रासन पुरि ढिल्ल ॥
सचीवा इंछिनि सुव्रत। सुहृत दत्त गुन किल्ल ॥ ९ ॥
सुरपति सम सामंतपति। अति अनूप मति सार ॥
कनिष्ट आंन हिंदुवांन सब। इह गरु अत्तें भार ॥ छं० ॥ १० ॥
इह चरित्त दिष्पित नयन। गयौ भट्ट नृप थांन ॥
मय[1] मनुं सुमन सुरष्पि कै। रच्यौ ग्रथी पर आंन ॥ छं० ॥ ११ ॥

माधो भाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना।

कवित्त ॥ दिषि भट्ट माधौ नरिंद। राजधांनी चहुआंनी ॥
दूत भेद अनुसरै। दूत लग्यौ परिमानी ॥
हिंदु भाष षट रस। मेछ पारसी उच्चारै ॥
जहां अक्किर कोइ कहै। थांन तैहीं विधि मारै ॥
भाषा कवित्त नाटिक सकल। गीत छंद गुन उच्चरै ॥
जानंत तर्क वितर्क सब। राग बिरागह अनुसरै ॥ छं० ॥ १२ ॥
गाथा ॥ हिंदू हिंदू अवचने। रचने मेछायं मेछयौ बयनं ॥
जं जं जेम समुझ्झै। तं तं समुझायं माधवं भट्टं ॥ छं० ॥ १३ ॥

भ्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना।

कवित्त ॥ भ्रंमाइन कायथ सुरंग। मिल्यौ बर भट्ट प्रमानं ॥
जू कछु भेद चहुआंन। दियौ निच्चै सुरतानं ॥
बिभ्रम सुभ्रम विसाल। कहो निभ्रम परिमानं ॥
कग्गद मंत चलाइ। मंत मग्गी चहुआनं ॥
दै लेइ दांन संभरि धनी। रोर सतम करभांन बर ॥
मय मंत मंत चिंतान करि। दयौ दांन इच्छोति नर ॥ छं० ॥ १४ ॥

(१) मो-बह।

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना।

दूहा ॥ दस हथ्थी मै मत्त करि। भर मंडन मुष अग्ग ॥
अरि षंडन मंडन फवज। लेहु बीर बहु बग्ग ॥ छं० ॥ १५ ॥
कवित्त ॥ दस हथ्थी सत एक। एक कंजी कंमानं ॥
कंजी तौनति पंच। वांन सोचै परिमानं ॥
दियौ साह सुरतांन। भट्ट दीने परधानिय ॥
छह मोती बर माल। कनक इक तोल सुजानिय ॥
दिय प्रथिराज सुराज बलि। द्रव्य सुबर चतुरंग बिधि ॥
माधव सुभट्ट रंजे नृपति। चंद कही असतुति समधि ॥ छं० ॥ १६ ॥
दूहा ॥ हेमरु है गै अंबरह। सरसैं बुद्धि गंभीर ॥
सत्त सुमति आमित्त गति। माधौ भट्ट सुबीर ॥ छं० ॥ १७ ॥

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना।

कवित्त ॥ दियौ दान बर भट्ट। मास रष्यै दिल्लीधर ॥
बहु भोजन प्रति स्वाद। इंद इंद्रास देव गुर ॥
मन लीनौ नृप छथ्य[1]। भट्ट स्रप[2] इंद प्रमान्यौ ॥
गए दरिद्र जनमंत। चिंत्य चिंता घट भान्यौ[3] ॥
अप्यै सु दांन सामंत सब। सुहृत मत्त दत्तह सुधरि ॥
मै पूर पूर पूरन कली। जा चंग्या भागी सुउरि ॥ छं० ॥ १८ ॥
दूहा ॥ जात जात जे जात है। गए गवन किन कीन्ह ॥
दत्तय बन पूरन नहीं। मत्ति गरुअ तन चीन्ह ॥ छं० ॥ १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का ग़ज़नी लौट आना।

अरिल्ल ॥ जै सुदांन गज्जन पुर आयौ। इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥
मट्टादांन विद्या परकारं। दियौ राज[4] चौहांन विचारं ॥ छं० ॥ २० ॥

---

(१) मो-बरभट्ट। (२) मो-बप बर।
(३) मो-जान्यौ। (४) मो-दान।

माधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ गरु अत्त मत्त कविराज राज। शृंगार शास्त्र अद्भुत विराज ॥
तिहि जादु कीन नृप किर्त्ति बैन। तिम तिम सुहाय सुरतान चैंन॥ छं०॥२१॥
संभरिय वत्त उभरि उरत्त। सुरतान बेन गोरी बिरत्त ॥
मातुलह वंस चहुआंन राज। दै गयौ सकल दिल्लीस काज ॥छं०॥२२॥
है गै भँडार बिन किर्त्ति भूमि। क्यौ बाज मार आवति कूमि ॥
दैवत्त करै इह मनुक लोइ। क्यौ बाज जनम आवत सोइ ॥छं०॥२३॥
अनगेस राज तजि तिष्य जादु। सामंत सूर वर मिले आदु ॥
अजहूंनि सेन इक मनी नष्य[1]। गोरी सहाब इह घात तष्य ॥ छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ फुहिय बत्त प्रथम सब। वसि दिल्लिय चहुआंन ॥
बंदिन माधौ आय कहि। सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ २५ ॥
है गै दिल्लिय देस सब। अरु जु अबर द्रब अप्प ॥
सो सब दै चहुआंन को[2]। अनँगपाल गय तप्प ॥ छं० ॥ २६ ॥

अनंगपाल के बनबास का वर्णन।

लै चल्यौ संग निज तरुनि। दै दिल्लिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बद्री चल्यौ। साधन जोग जोगेस ॥ छं० ॥ २७ ॥

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना।

सुनत सटप्पट लग्गि मन। उर गोरी बर बीर ॥
पल पल षिन जुग जात जिय। बढिय बिषम षल पीर ॥ छं० ॥२८॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज़ की शोभा वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ चल्यौ मंगि सुरतांन साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी ॥
बरं बासनं रत्तहेमं हमेलं। मनो मुत्तिमाला बनी लष्य जेलं[3] ॥छं०॥ २९॥

---

(१) मो-सष्य। (२) कृ-सो समपय प्रिथराज कूं।
(३) मो-सेलं।

जरं हेम कुंभं सुभं सोभ सीसं। उवं लाल थंभं सिरं सूर दीसं॥
अगे लक्करी लाख दो सहस सोहं। जिनं आइ जक्की सहं कोइ कोहं॥छं०॥३०॥
अगें साहि गोरी निसूरत्ति षानं। लग्यौ बंदि माधौ पढै ब्रिहवानं॥
दिसा दाहिनी षांन तत्तार गोरी। दिसं षां षुरासांन रजि वांम जोरी॥छं०॥३१॥
उभै पुठ्ठि मम रेज मुलतांन षांनं। सुतं साहि महमंद सोहित्त षांनं॥
मुषं अग्ग बेतं उसे रत्न साहं। सितं चौर बांने सितं गज्ज गाहं॥छं०॥३२॥
कही बत्त गोरी तिनं सों सबांही। कहैं जेव जब्बाब पुछंत सांही॥
अपं सेन सथ्थं सहं सूर सथ्थें। तिनं जाति बांने कहै कोंन कथ्थें॥छं०३३॥
चले आइ सो सेषची मन्न थानं। दयं छंडि दरबार साहाब तानं॥
दरं रष्पि दरवन अप मभिभ्क आयं। सबै बोलि उमराति सब अप्प भायं॥
छं०॥३४॥

दूहा॥ ओर रोकि अप मभ्भक गय। नमि पय सेष चिमंन॥
अप्प प्रसंसिय विवह परि। बैठि पयंधरि पंन॥छं०॥३५॥
सीष सु पुच्छिय सेस पहु। बोलि पंचदस षांन॥
आसन छंडिय अप्प तिन। दिय आदर सनमांन॥छं०॥३६॥

शहाबुद्दीन का तातारख़ां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना।

छंद पद्धरी॥ गोरी तत्तार गुरलज्ज भार। षुरसांन षांन मति सिंधुसार॥
निसुरत्ति षांन जेषांन मीर। ममरेज षांन बल लाज नीर॥छं०॥३७॥
आजांन षांन सेरन बितंड। मुलतांन षांन मुहबत्ति बंड॥
माहत्त मीर जमुनह सुमीर। साहाब षांन गरुअत गंभीर॥छं०॥३८॥
रुस्तंम षांन षल संक जास। गज्जनी षांन रिन साहि आस॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज। महमुंद मीर अरि तेज भंज॥छं०॥३९॥
गोरीय व्रंन काबी बलाइ। मृगराज जेम मृग अरि पलाइ॥
साहब सलाम सब करी आइ। चीमंन सेष नमि परिस पाइ॥छं०॥४०॥
बठ्ठे सु सब कर कर समुठ्ठि। षिन एक बैठि साहाब उठ्ठि॥
गयौ सेष बाग तह चंप नूप। बैठक्क तथ्थ चौरा अनूप॥छं०॥४१॥

आसंन मंडि बैठो सु साहि। बैठक्क दई उमराव नाहि॥
उच्चरयौ बीर गोरी सु संच। पुच्छिय जु सब मंचह प्रपंच॥ छं० ॥ ४२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना।

कवित्त॥ कहिय साहि साहाब। षांन तत्तार सुनौ सब॥
बसि दिल्लिय चहुआंन। कही माधौ जु चंड कब॥
अनगपाल गय तप्प। देस दै गै सु द्रव्य सह॥
सेा समप्पि चहुआंन। अप्प सज्यौ सुबंन रह॥
अरि मत्त अग्ग बर जोर हुअ। अरु लंभी चतुरँग क्रिया॥
सधियै बैगरन षेत षल। जौ लौं जोर न बंधिया॥ छं० ॥ ४३॥

तातारख़ां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षांन तत्तार। साह साहाब चित्त धरि॥
अरि अनंत बर जोर। याहि सधियै सनद्ध करि॥
तब दिष्यौ दल जोर। सूर सामंत सुमथ्थं॥
अन्त तेज मत अनँत। बेग रन बद्दै सुहथ्थं॥
दल जोर जोर भंडार घन। करि सुचित्त भर एक मन॥
भरहथ्थ जीव दिल्लिय सहर। मम करि अरि सद्धन सयन॥ छं० ॥ ४४॥

तातारख़ां की बात का सब लोगों का सकारना, रुस्तमखां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवै।

छंद पद्धरी॥ षुरसांन षांन कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपौ सुढार॥
दल मेलि बेग सद्धौ सुमंत। बंधीय बंधान अरि करिय अंत॥ छं० ॥ ४५॥
जेहांन बीर जंपे तमंकि। तुम उरौ मीच कुद्दौ न अंक॥
सद्धियै दोरि करि रुचु सथ्थ। नन होइ कांम दष्यौ सुहथ्थ॥छं०॥४६॥
जंपी सु षांन निसु रत्ति तब्ब। बिन बंध बत्त डिंभ ह गब्ब॥
चहरन देषि चहुआंन तुम्ह। जंपौ सबत्त मंतह गुरंम्म॥ छं० ४७॥ ॥

उच्चरिय षांन साहाब सक्क । वै दृढ भएं भय बुद्ध जक्क ॥
झंपियै जुद्ध पावक्क पाइ । बंध्यौ विराम ना निजरि आइ ॥ छं० ॥ ४८ ॥
बल तुच्छ अरिय सद्दौ सु साहि । षल दुष्ट जोर बंध्यौ न जाइ ॥
मुलतांन षांन हसि कहिय बत्त । मम रेज षांन दाषौ विगत्त ॥ छं० ॥ ४९ ॥
एंजाब गरुव छंड्यो गुमांन । धन मह मंत वयची प्रमांन ॥
कालिंग पुल्लै जिम जुध पुलाइ । गह अत्त साहि साहाब जाइ ॥ छं० ॥ ५० ॥
उक्कसें षांन सेरन विनंड । विकसे कहिय कर षग्ग मंड ॥
गोरिय अवनि तुम गनौ गत्ति । भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति ॥ छं० ॥ ५१ ॥
बिनसंत काज क्यों पातिसाह । पूछै सुमंत अच्छै सुभाह ॥
जंपयौ बत्त काली बलाइ । मो बिना सेन गोरी पलाइ ॥ छं० ॥ ५२ ॥
काल ग्रहंत मन आइ मुभ्भ । मंडयौ जुद्ध मो बिन अबुझ्झ ॥
तमस्से मीर तब फते जंग । पुज्जेन सेन पंषी कुलंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
सम वरन साज सज्जै न संग । हरि तेज तेज दिष्षै अभंग ॥
अरि सार जैत जांनौ न भेव । उचरौ मंत गुन सुबर गेब ॥ छं० ॥ ५४ ॥
तब मीर जमन गज्जनी षांन । महमुह मीर मारुत्त षांन ॥
उठे सुच्चार तम तेग झारि । बुल्ले बिहँसि मत्ते विचारि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
थिर जुद्ध मंत रद्धौ सु सब्ब । बैठनह सूर नहि भ्रंम अब्ब ॥
कीयौ हुकंम साहाब जब्ब । ग्रहि तेग चलै प्रथिराज तब्ब ॥ छं० ॥ ५६ ॥
रुत्तंम कही साहाब अज्ज । मुक्कलौ दूत जुध करौ कज्ज ॥
लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त । तब लग्गि सेन सज्जौ सुदृत्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥
मंन्यौ सुमंत सब चित्त सार । मंड्यौ सुमंत बर चरन चार ॥
रुत्तंम वाह धरि चवत दीठ । बुल्लाइ सिंघ बर चर गरीठ ॥ छं० ॥ ५८ ॥

छंद भुजंगी ॥ स्वयं भेद प्रकार भेदं प्रमानं । सुनौ षांन तत्तार षांनं सुमानं ॥
स्वयं साहि साहाब साहाब सूरं । मनो भेद बंभान कुथ्था कहूरं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
घानं तेज तेजं प्रकारंत न्यारे । कही कब्बि चंदं उपम्मा उचारे ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ कहत चंद बर भट्ट फुनि । सकल कथा परिमांन ॥
जु कछू भट माधौ कही । सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ ६१ ॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चरयौ चंद बरदाइ मंडि । सुरतांन षांन आरज्ज छंडि ॥
बर बीर धीर तत्तार षंडि । काली बलाइ सेरन बितंडि ॥ छं० ॥ ६२ ॥
छबसी दुजाब षुरसांन बंध । पीरोज षांन निज बंध सिंध ॥
पर दार पैरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर सुभ्भि थांन ॥ छं० ॥ ६३ ॥
तिन ब्यंटि सभा दिष्पी नरिंद । मनों जामिनी तेज रवि सबर चंद ॥
बंदै न चंद तत्तार षांन । पीरोज बंध छबसी समांन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
षुरसांन षांन जल्लाल बीर । सेरन बितंड माधौ सरीर ॥
दुस्सेन सूर भद्दी प्रकार । साहै जु साहि ज्यौं चंद सार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
बैरंभ षांन जमनेस जोर । जमजोर बहै तिन बल सुथोर ॥
पीरोज षांन माही मरद्द । सोभंत तेज सम्हि बर सरद्द ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उब्बेग षांन गाभरू मीर । बेधंत सत्त धातह सु तीर ॥
तुम तेज षांन ममरेज मीर । षुरसांन लज्ज निज मुष्प नीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
फतूह मीर तुंगी तुरांन । पुज्जै न तास तम तेग पांन ॥
नव नेह षांन मैदांन मीर । रुम्मी रुहिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
ढिल्ली बढाल ढाहन प्रकार । संभरे मुष्प भए रत्त भार ॥
पारष्पि रष्प पावंग जांन । जानहि जु स्वांमि भ्रम प्रमांन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
फिरि पूछि जादू दूत सबनि कह्द । उच्चरै बत्त चहुआंन यह्द ॥
भय भीत रीत माधव सुभह्द । हों देषि आइ इह तथ्य घह्द ॥ छं० ॥ ७० ॥
सोमेस सूर तस पुत्तमांन । मारन समीर जाने गियान ॥
दातार जोर पोहचे न दान । दै गयौ अनंग दिल्ली निधांन ॥ छं० ॥ ७१ ॥
बर राज अनँग तिथ्थह जु जादू । दै गै सु लष्पि दोचित्त पादू ॥ छं० ॥ ७२ ॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना।

दूहा ॥ साह बदी सुरतांन तब । माधौ कह्यो न मांन ॥
भद्द जाति जीवं गुनी । दूत सु पठय प्रमांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन।

कवित्त ॥ कं जांनी कंमांन । अंक रेषम प्रति भासै ॥
दस धीराक तिय तोन । साहि गोरी मुकि जासै ॥

दूत भेद अनुसरै । लषि छिद्रवांन चरितं ॥
मो मत्तह सुरतांन । थांन मो कलि दस रत्तं ॥
दूत के दूत मंचह सुपन । सब सु चरित अंषिन लषै ॥
उच्चरै बत्त सांची सुहृत । सुविधि विधि अमृत भषै ॥ छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ दूत मुक्कलि उन सथ्थ बर । दिसि ढिल्ली परिमांन ॥
माधौ भट्ट सु तथ्थ कहि । दूत पठय सुरतांन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाहुआंन सुरतांन बर । करन जुद्ध परिमांन ॥
मिलन पुब्ब पछिम हुतैं । बीरा रस उत्तांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ सें बुझैं सुरतांन । अप्प गज्जन बलवांनं ॥
आषेटक भ्रम करहिं । दूत मुक्के अगिवानं ॥
जु कछू भेद अनुसरै । तत्तग्यांनं परिजानिय ॥
भय भयंक भ्रम षंड । काल कलहं गुन ठानिय ॥
जं कछौ जादू मद्दमुंद षां । सेरन षांन षितंड बर ॥
छबसी हुजाब मुक्कलि नृपति । सुबर बीर मत्ते गद्दर ॥ छं० ॥ ७७ ॥
भेद दुग्ग भंजियै । भेद दुरजन धरि छिज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि लिज्जै ॥
भेद पष्प मत नथ्थ । भेद बिन कंक न षोई ।
भेद गुरुअ गुरु ग्यांन । भेद बिन तात न जोई ॥
अहत्त भेद वर रंजियै । गुन सज्जन सज्जन बरन ॥
सुरतांन दीन साहाब दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गाथा ॥ षुरसांनं प्रति षांनं । पीलं नथ नथियं पानं ॥
पुंगी नथ्थ प्रमानं । वरचं नथ्थ सस्त्रयो बलयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
औ गजनो नरिंदं । बुलयौ बीराइ बीर साहसं ॥
बिन जग्गत जग्गायं । तौ जितै निश्चयं षलयं ॥ ८० ॥

दूहा ॥ बिन जग्गत जो जग्गियै । षग्ग साह बिन हाथ ॥
मेछ पिच्छ किर सान गुर । बिषरि गुरज्जन साथ ॥ छं० ॥ ८१ ॥
पातसाहि बिची सुछिति । मति रष्यन परिमांन ॥
जौ भंजै चौहान तूं । कहै दूत सोइ ठांन ॥ छं ॥ ८२ ॥

अरिल्ल ॥ माधौ बत्त सुसत्त प्रमानिय। तऊ दूत मुक्कलि गुन ठानिय ॥
नव नव नव घन मध्य प्रमानं। कह्यो मंत गोरी सुविधानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना।

छंद पद्धरी ॥ करि मंत साह गोरी अचंभ। आरंभ चक्क भुज दंड अंभ ॥
जल थल तिण्यखत करि प्रमांन। उनम्यो[1] मेरु जनु मध्य भांन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
गगन मगन पुर षेह छाय। सुझै न भांन मिटि पंथ वाय ॥
अरुझे सुकमल[2] संकुचि सकोर। रुठी सु बदन अलि किसल थोर ॥छं०॥८५॥
चक्कवी चक्क चक चकी भूमि। रस ताल वितन तल कछि तूमि ॥
तिन बननि[3] तुहि कर करत नीर। प्रज्जरै पंथ सादूर गंभीर ॥ छं० ॥ ८६ ॥
तन[4] करै पवन गवनं प्रकार। उरझंत धजा गज चलत लार ॥
बाजत टमंक तबलं कठोर। नाचंत ईस जनु गंग सोर ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सुझै न नैन दिसि विदिसि थांन। मन क्रंम सुद्धि नट्ठी प्रमांन ॥ छं० ॥ ८८ ॥
दूहा ॥ चाहुआंन चतुरंग दिसि। सजि सुमंत साधव्व ॥
जुक्कु मंत गुन उच्चरिय। बर कोविद माधव्व ॥ छं० ॥ ८९ ॥
मति माधव कोविद सुबर। कही बत्त गुन जुत्त ॥
तऊ साहि गोरी नृपति। फेरि मुक्कले[5] दुत्त ॥ छं० ९० ॥
बोलि दूत चवं[6] अग्ग लिय। दिय कागर धृमांन ॥
सुद्धि सिंध अरु सोम बर[7]। दिय दूनांम अब्बांन ॥ छं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना।

चल्यौ दूत दिल्ली दिसा। लिए साह फुरमांन[8] ॥
भेष सुसोभिय तन्न सजि। चित्त अचिंतिय मांन ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) को-उभस्यौ। (२) मो-सतकमल।
(३) मो-बनह। (४) छ-नन।
(५) मो-मुकाहिय। (६) मो-बचन।
(७) मो-सब।
(८) मो. में यह तुक नहीं है।

दूत को दिल्ली पहुंचकर अनंगपाल के बनबास और पृथ्वीराज के न्यायराज का समाचार विदित होना।

गाथा ॥ दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देषंत न्याव नृप नैरं ॥
षट्ट धृमांन सुग्रेहं[1] । दिन्नं बर पच्च पथ धृमानं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
षबरि अब धृमानं । दिन्नं नृप आदि सूर सामंतं ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ९४ ॥

धृमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत को बतलाना।

कवित्त ॥ विवरि षबरि धृमांन । कही चहुआंन सेन वर ॥
पष्यौ[2] सत्त राजांन । सुवास कीन पिथ्थपुर ॥
पष्य पंच कैमास । राव चावंड पष्य चव ॥
बसि वित्ते दिन अठ्ठ । पष्य लोहांन रसे सब ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । बसिय बास दिन पंच हुअ[3] ॥
सामंत अवर आगम इछै । सबन[4] वास चहुआंन रय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

धृमान का सब समाचार लिखकर भेजना।

दूहा ॥ लषि करि इह बंधी विवरि । राज धृम्म चहुआंन ॥
दिय कागर तसु दूत कर । बर कागर धृमान ॥ छं० ९६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना।

षबरि सबै लीनी नृपति । चलिय दूत निज मग्ग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सौफी वे सह जग्ग ॥ छं० ॥ ९७ ॥
अरिल्ल ॥ दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजधान जुग्गिनि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यौ चहुआंनं । रहे षट दीह फिरे तिन थानं ॥ छं० ९८ ॥

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाईं।

दूहा ॥ रहे दूत षट दीह बर । लषि चरित्त षट मास ॥
जु कछु चरित षट मास कै । कहै विवरि सुद्ध[5] भास ॥ छं० ॥ ९९ ॥

(१) मो-गेहं। (२) मो--परक। (३) मो-भय। (४) मो-रसन। (५) मो-सुधि।

क्रम ढिल्ली ढिल्ली बयर। ढिल्ली नृप चहुआंन ॥
गौ तीरथ बन सज्जिकैं। प्रगटि दिसांन दसनां ॥ छं० ॥ १०० ॥
प्रथीराज चहुआंन बर। लै ढिल्लीपति बृंद ॥
जानत सकल जिहनां बर। बजि निर्घोष सुदंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावों की तयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ साह बदीं सुरतनां। आइ गज जुद्ध निरष्पिय ॥
अगड मध्य चौगांन। बीस गजमत्त [1]सज्जकिय ॥
सहस एक गज झुंड। मंडि मंडल अविधानिय ॥
तहां गोरी बर बीर। दंति चक्कै दिन मांनिय ॥
गज एक सेत निज रोहि बर। चढिय पिठ्ठ तत्तार षां ॥
सुरतांन षांन निसुरत्ति षां। चढि सुगज्ज बांई रुषां ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दिसि दष्पिन साहाब। साहिजादा चढि दंतिय ॥
अबर सब्ब उमराव। चढे गज बंधि सुपंतिय ॥
लाल झंड सम सिंघ। हेम रज्जंत साहि सिर ॥
हैदल पैदल अबर। गनिक को गनै गहब्बर ॥
महमंदचंद महावत्त सौं। बोलि साह पुर मांन दिय ॥
गज भूत सिंघ गज मुष्प है। आंनि सुअगडह अडु किय ॥ छं० ॥ १०३ ॥

दूहा ॥ इहा कहत तिन चर चवन। दिय दुवाह सुरतान ॥
निरषि साह उची निजरि। बे बुल्ले षुरसान ॥ छं० ॥ १०४ ॥
बारुन बर बानै विविधि। असु अैनप आलोल ॥
ठाढा कोतूहल कवल। करत दांन नव[2] लोल ॥ छं० ॥ १०५ ॥

छंद उधौर ॥ मंडित उतंग उत्तिम छंद। भूरध सोभा सोमच नंद ॥
छच विसाल बर दुति सीस। बाल विसाल उडगन ईस ॥ छं० ॥ १०६ ॥
आसन सिंघ मंडौ राज। सामंत सूर भर कारि साज ॥
राज चहुआन प्रथी नरेस। मंडिय चंद देव सुरेस ॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) को—क० ए—गमंत। (२) मो—करशानन।

मास बित्तिय मंडी रेर। नह निसांन थांनह भेर॥
है गैगुंजि नाना भंति। कच विराज कचनि मंति॥ छं० ॥ १०८ ॥
मिलिभर जहां तहां भरि भीर। सूर समत्थ जुद्ध सधीर॥
जित तित दिष्पि रंग सरंत। आगम जांनि फूलि बसंत॥छं०॥१०८॥
बसन विराजि दसन कुआरि। लोल कलोल सुंदर नारि॥
गावति हसति अलि अलि रासि। दृग दुति कमुद किरनि प्रकासि॥छं०॥११०॥
जब लगि बढै वीर जराइ। तब लगि गहिन साहि बधाइ॥
जब लगि बढत बर जर जांम। तब लगि करन मत्तन कांम॥ छं० ॥ १११ ॥
सुनि उर लग्गि अग्गि उदार। परति न षिनक चैन दुवार॥
बरु चर चवत चारु बिचार। सिर दुह वार नंमि उदार॥ छं० ॥ ११२॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना।

दूहा॥ सुनत बत्त पुरसांन[1] बर। बोले दूत हजूर॥
पुछै साहि सुचित्त करि। बिवरि षबरि संभूर॥ छं० ॥ ११३ ॥

बचनिका॥ सुरतांन सु विहांन सुलतान साहाब दीन॥
करि करतार कि जोर। जासु कित्त जै अरु दल की जोरि जोरि॥
जनु दरियाव की हिलोर। मिलते सेां मुह जोरै॥
अन मिलत सेां षल षंचि कढोरै[2]। सुरतांन सुचिर दुतांन॥
आंनि कही कायथ धृमांन। दिल्ली की षबरि विवरि लिषि दीनी॥
अनंगपाल तूंअर बन बास लीनी॥
देस है गै कोस पुची पुच प्रिथीराज कौ दीनी॥
पष्प सत हुए वास कीनें। तहनि पुच परिवार सुष चैन॥
पष्प पच्च कैमास कों भए आएं। मास दून दिन अठ्ठ भए चावंड बसाएं॥
तीन मास लोहांन बीतें। बीस रोज कंन्ह चहुआंन हूतें॥
और सब सामंतकी बसही आंनी। कितेकों आंननै मांनी॥
चौहांन वास की आग्या दीनी। सब सामंत सीस नांमि लीनी॥
रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे। पडि पतंग जग्गि सानंगे॥

(१) मो०—सुरतांन। (२) मो०—षंचि कै तारै।

जबलगि न बैरी जराइ। तब लगि साह मारि करि आइ ॥ छं० ॥ ११४ ॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चयौ दूत प्रति गज्जनेस। चहुआंन तेज दिष्यो असेस ॥
अनगेस राज तजि तिथ्य जाइ। सामंत सूर सब मिले आइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥
संकुरे सकल भुम्मिया भयांन। सेवंत आन दरबांन थांन ॥
इक भजत भोमि तजि गहन ग्रेह। निय नारि रंभि सक्के न नेह ॥ छं० ॥ ११६ ॥
इक मिलत आंनि तजि एंड अंग। पल पग्ग षंडि षेसें जु जंग ॥
अजहूं सुसेन इक मनी नथ्य। गोरी सहाब इह घत्त तथ्य ॥ छं० ॥ ११७ ॥

संवत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सें अडतीस भनि। भौ ढिल्ली प्रथिराज ॥
सुन्यौ साहि सुरतान वर। बज्जे बज्जि सु बाज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

अरिल्ल ॥ ग्यारह से अडतीसा मानं। भो ढिल्ली नृपरा चहुआनं ॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं। तपे राज प्रथिराज कहूरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिजुग अरु द्वापर की संधी। साको धंम्म सुतह बल बंधी ॥
ता पच्छै विक्रम वर राजा। ता पच्छै दिल्ली नृप साजा ॥ छं० ॥ १२० ॥
कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय। सब गुन साह बिवेकत जानिय ॥
सुबैं चरित्त कहे प्रति भट्टं। सोइ दूत अप्पै[1] प्रति घट्टं ॥ छं० ॥ १२१

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासान ख़ां आदि से मत पूछना।

छंद वैअप्परी ॥ दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं। हेम सु छै गै मुद्रित मानं ॥
तपै राज दिल्ली चहुआनं। नाकरधू नागेंद्र प्रमानं ॥ छं० ॥ १२२ ॥
एक बराह थिरं बेराहं। सकल छत्य सुरराज समाहं ॥
को अग्या भंजै न[2] विराजं। अप्प लज्ज सम सामँत लाजं ॥ छं० ॥ १२३
मुष कुट्टै जो बैन प्रमानं। तो घल्लै अगि जुलित नथानं ॥
सुनौ साहि गोरी सुरतानं। एक अंग एकं मन ठानं ॥ छं० ॥ १२४ ॥
पुब्ब लोइ दालिद्री नासं। सबै सुक्र तब टंक विलासं ॥
दंड छथ्य जोगिंद सुदिष्यौ। नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिष्यौ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) मो-अगें। (२) मो-नह राजं।

दुज उच्छिष्ट नह उष्टं अक्षी। छीन लंक कोइ छीन न भक्षी॥
कटिन कक्कुच चिया प्रकारं। कोइ न कठिन दुअन अधिकारं॥ छं०॥ १२६॥
कसै हेम सोनार सुधीरं। कोइ न कसी दरिद्र सरीरं॥
मै निरमै संसार सुजानं। सुनि सुनि राज वृत्त सुरतानं॥ छं०॥ १२७॥
मोहत अहत सुहत गुन जांनी। कहै दून बिधि विधि परिमांनी॥
सोहै मझ अहत्त अभिलाषं। मोज प्रवाह सुभंत बैसाषं॥ छं०॥ १२८॥
यों आवै बद्धै कवि मन्नं। इतौ राज अप्पै प्रति दिन्नं॥
सेन सुमंत सुमंतह सारी। भो मुष मंद मंद अभिसारी॥ छं०॥ १२९॥
यों जंपिय चहुआंन सुमंतं। त्यों अभिलाष गई मति तंतं॥
बोलि षांन तत्तार प्रकारं। कहौ मंत सो किज्ज सारं॥ छं०॥ १३०॥
अनँगपाल गौ तिथ्य सुनिज्जै। चाहुआंन दिल्ली प्रति रज्जै॥ छं०॥ १३१

तातार ख़ां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना।

दूहा॥ कहै षांन तत्तार वर। अहत चरित्त सुनंत॥
जे चरिच दिल्लिय नृपति। कहि गोरी गुनमंत॥ छं०॥ १३२॥

कवित्त॥ कहै षांन तत्तार। सुनहि गोरी सुरतांनं॥
मोहि मत्त जो किजियै। सजियै सेन परमानं॥
कही बत्त माधौ सुभट्ट। सोइ लिषि कायथ कग्गर॥
सोइ दून कहि बत्त। सुत बोलैं न झट्ट बर॥
धरमांन नाम काइथ सुघर। तेनु चरित लिष्पे सबैं॥
अप्पै सुहथ्थ बंदीन ते। सुहत बीर बीरह तबै॥ छं०॥ १३३॥

तातारख़ां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना।

दूहा॥ मानि मंत तत्तार बर। मति गोरी सुरतान॥
लिषि धरमानह कग्गरह। सुविधि विद्धि परिमान॥ छं०॥ १३४॥

गाथा॥ माधवं कोविदं भट्टं। गीतं काव्यं रसं गुनं॥
नट्टं चित्तं मद्दा विद्या। पिंगलं भरहं तथं॥ छं०॥ १३५॥

छंद मोतीदाम॥ निरंजन भट्ट सुमाधव वीर। कही तिन बत्त सुसक्ति सधीर॥
दूहै कहि मत्त सुमत्त प्रमांन। सजो चतुरंगिनि सेन निधांन॥ छं०॥ १३६॥

कवित्त ॥ सेन साजि चतुरंग । लिषे कागर परिमानं ॥
थांन थांन प्रति जांन । साहि कढ्ढे फुरमानं ॥
आइ सेन सजि थट्ट । सक्क सबै उमरावं ॥
चढिहै कंधै झपटि । जांनि उलट्यौ दरियावं ॥
विधि रूप दैव गोरी नृपति । गरुअ मत्ति भंजन सयन ॥
तत्तार षांन षुरसांन षां । करे मत्त सच्चे बयन ॥ छं० ॥ १३७ ॥
गाथा ॥ सुनि श्रवनं चर बत्तं । बज्जानं घाव नीसानं ॥
निज दै वर आरोहं । चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं० ॥ १३८ ॥
कहि तत्तार गहि बग्गं । बसो छरोज अजर षो ग्रेहं ॥
रोज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिंघ चहुआंनं ॥ छं० ॥ १३९ ॥
कहिब साहि बर बत्तं । सुनि तत्तार सह तुम साजं[1] ॥
अरि आघात समथ्थं । सहि सुसिद्धि निह कज्जायं ॥ छं० ॥ १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

छंद पद्धरी ॥ चढि तमकि चल्यौ गोरी सहाब । उल्लट्यौ जांनि सायरन आब ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन । विधि विधि प्रवाह सर भरि जलेन ॥ छं० ॥ १४१ ॥
द्वादसह कोस किन्नौ मुकांम । डेरा सुदीन नारौल गांम ॥
मिलि पुठि आइ सब सेन भार । दै लष्ष मीर गरुअत्त गार ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बाजिच बीर बज्जत बिसाल । नारह नंचि तिन भ्रुकुटि ताल ॥
बिल्ली चियाम उग्गयौ सूर । दल चल्यौ सत्त जनु सिंधु पूर ॥ छं० ॥ १४३ ॥
संक्रमन सेन हूअौ हुलास । चलि विषम सुषम वेराह भास ॥
षुर धूरि पूरि धूंधरिय भांन । गहबर सुबत्त सुनियै न कांन ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दर कूच कूच उत्तरिय सिंध । दल विषम दत्त उर साहि विद्ध ॥
किन्नौ मुकांम आगार आर । डेरा सुदीन दल उंच ठार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
झंडे अनंत गडि विविध रंग । फुल्ल्यौ बसंत बनराइ चंग ॥
चर चले धरनि दिल्ली सुथांन । दल कहै चरित षुरसान षांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
दूहा ॥ कहै चरित सुरतांन सौं । जे देषे तिन दूत ॥
घुरि निसांन भद्दव भरिय । दूम दिष्पिय अदभूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥

(१) मो-सारं ।

छंद भुजंगी ॥ घुरै नह नीसांन उग्गंत सूरं। बरं बीर बाजिच बज्जे कमरं ॥
घनं पष्परे बाज दंती सयन्नं। दलं रुज्जि रुन्नाहयं अब्बयन्नं ॥छं०॥१४८॥
रहियं पौज भरं हों कठ्ठ साहं। तहां चौर मौरं गुरं गज्ज गाहं ॥
तहां बिहियं दंति जमत्त मत्तं। तहां छच रंगं चियंगे ढरंतं ॥छं०॥१४९॥
तहां बीर माही उमाही सुरानी। तहां ढाल बहु रंग अंगी दुरानी ॥
दिसा बांम तत्तार गोरी सु अन्नी। दिसा दाहिनी षांन पुरसांन रन्नी॥छं०॥१५०
मुषं अग्ग बेतंड सेरंन षांनं। रतं बैरषं रत्त गज गाह ठानं ॥
तिनै रत्त उच्छारि कारत्त ढारं। रजं रत्त झंडं तरं ताल ढालं ॥छं०॥१५१॥
अनी साहि पुठ्ठें विचें साहि साजं। अगें अग्ग बाजी हथं नारि साजं ॥
अगें बांन गीरं सजे जुद्ध सारं। ....मुषै मारमारं ॥छं०॥१५२॥
सुरं दीन दीनं कलिं कूक फुट्टी। भरं आइ कालं भरी जुद्ध घट्टी ॥
उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं। बरं बाज आघात बज्जे कहूरं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना।

दूहा ॥ गज्जनेस सब सेन जुरि। आयौ सिंधु उलंघि ॥
कूच कूच आतुर षरिग। दोइ लष्ष दल संघि ॥ छं० ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना

कवित्त ॥ सुनिय बत्त पृथिराज। बोलि कैमास मंच बर ॥
कंम्ह काइ[1] चहुआंन। विरदि बज्जैति[2] नाद नर ॥
रा पज्जून पवित्त। सलष पमार जैत सम ॥
जांम देव जहों जुबान। पर संग राव प्रम ॥
पुंडीर सेन चंदत्त सुमति। लोहांनौ आजांन भुअ ॥
मिलि सकल मंत पूछिय प्रथुक। सनमांनिय सोमेस सुअ ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोकें।

कहिय मंत कयमास। सुनौ सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयौ सु सज्जि। सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उभ्भार। सुन्यौ उत्तार सिंधु नद ॥
सिंध मंत सुभ रच्यौ। फौज चंपी न होइ हद ॥

(१) मो-कक्क। (२) मो-कज्जेति।

आयौ सुराव चावंड तब । कहा विरम रच्यौ सयल ॥
दुह मंत सिनह सज्जे मचलि । चढि रन चंपहु दुष्ट पल ॥ छं० ॥ ११६ ॥

इस मत को सब का मानना ।

दूहा ॥ मांनि मंत सामत सब । हरषि राज प्रथिराज ॥
बत्त परठ्ठिय ग्रेह गय । अप्प अप्प जुस साज ॥ छं० ॥ ११७ ॥

पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनोदै बैरां विहसि । बज्जि निसांन निहाइ ॥
चढ्यौ राज चहुआंन तब । चिंति अप्प जुध चाइ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

कवित्त ॥ तषत सुरंग सुरंग । सुरन भ्रंमांन हथ्थ निषि ॥
सांम दांन अरु भेद । दंड निरनै बिसेष सिषि ॥
दूहत काल दूह घरिय । साहि सज्जे चतुरंगिय ॥
सुनि अवाज सुरतांन । हिंदू करिहै रन जंगिय ॥
प्रति कूच कूचनि करि प्रसति । चाहुआंन न करै बिषम ॥
मो मत्ति मांनि माधव सुकथ । सुबर वीर बज्जे सुषम ॥ छं० ॥ ११९ ॥
चढ्यौ राज प्रथिराज । करन मुक्क्यौ प्रति साजिय ॥
बाहू गंठि बंधईय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥
मंच बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निडुर ॥
अहत बत्त सज्जए । सूर सामंत तत्त गुर ॥
विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बत्तह सुबर ॥
संग्राम सूर साधै सकल । षग भिल्ल बज्जी सुकर ॥ छं० ॥ १२० ॥

दूहा ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज बर । सजि सुभट्ट अप्पांन ॥
विकसे अंबुज बीर बर । कादूर कंपत प्रान ॥ छं० ॥ १२१ ॥

कवित्त ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुसाजिय ॥
षिचिय जानि सुभांनि । हेम नग साक्कंत साजिय ॥
बंधि सत्त सैं तोन । बांन तीषे सुभाल जल ॥
बोलि कन्ह चहुआंन । मंच कैमास बुद्धि बल ॥
बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सथ्थें सयन ॥
आए सुराज आग्या सुसजि । चले जुद्ध सिर सजि गयन ॥ छं० ॥ १२२ ॥

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन।

छंद चोटक ॥ चढि राज चल्यौ सब सेन सजं। उड़ि धेह रजं रुकि अंब रजं ॥
सुर चंबक रोर नदंच हयं। सहनाइय सिंधु बसंन छियं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
बिकसे अरुबिंद जुबीर उरं। किन नंकिय कातर नारि नरं ॥
दल संग जु ग्रिद्ध पयांन सजं। हरषै नचि जुग्गिनि जुद्ध रजं ॥ छं० १६४॥
दह सत्त सहं सदलं मिलियं। नव कोस सुनम्म मिलान दियं ॥
अनि कूचह कूच दलं धरियं। जल पंथह जादु सु उत्तरियं ॥ छं०॥१६५॥

युद्धारंभ होना।

दूहा ॥ कूच कूच गोरी सयन। जकि आयौ जल पंथ ॥
सुदि वैसाष सुगा भृगु दसै। सुज्यौ जुद्ध समंथ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
दिष्पि रेन डंबर डहर। चढिय चादू चहुआंन ॥
सुर आनंद अनंद किय। कादर कंपि पुलांन ॥ छं० ॥ १६७ ॥

युद्ध वर्णन।

छंद मुकुंद डामर ॥ ढलकंतिय ढाल निसांन नचि सिय चंचल सूर चढे कसियं ॥
चक टोप सद्धप रँगा दह हथ्थल जोप सनाह विधिं जरियं ॥
रुस मंस उकंसत मुंछ तिरछिय दंत सगानत न्हान कियं ॥
नचि नारद तुंमर अंबर आनंद ईस सु सिंगिय नद दियं ॥ छं० ॥१६८॥
चढि अच्छरि ईसय सीस निरष्पन बीर जु जुद्ध बिनोद नचं ॥
सुर रचिय रथ्थ अयास सुबासिय गोद चवठ्ठिय मांनि सचं ॥
नृप रचिय फौज सुपंच प्रपंचिय गज्जिय गेंन सिरं धरियं ॥
भरमंनिय अप्प सु जैत प्रकासिय बंदि बिरद्द प्रती परियं ॥ छं० ॥ १६९ ॥
बर सांइय सुभ्भर जीव कलप्पिय मंनि अनंत सु सोस भुअं ॥
पल वारि पलद्धर ओन सकत्तिय डिंभु अगिद्धिय चित्त धुअं ॥
सुष नैंन मुरत्तिय ओन सुरत्तह मुंछह भोंह उभं धुकजं ॥
नृप दिष्पिय सुभ्भर सूर अनंदिय के कसि बीरति फौज सजं ॥छं०॥१७०॥

कवित्त ॥ दूत रचिग सेन सामंत। जुद्ध माह रा भष्पन ॥
मोर ब्यूह आकार। अप्प दुर्जन दल दग्गन ॥

एक पंष निडुर नरिंद । सथ्थ कैमास रांम भर ॥
दुतिय पंष अत ताइ । बलिय बलिभद्र सार भर ॥
दिंड पाइ नष राज हुअ । रचइ पुंक पज्जून भर ॥
पुंडीर चंच कीनो नृपति । मचन रंभ मच्यौ सुथर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
दछिन दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
च्यार सहस सेना सजंत । नील फर हर ढल रज्जिय ॥
सकट व्यूह सजि सुभर । कग्ग चामंड अग्ग करि ॥
मंच राज ढंढरिय । ठंठ मारू महंन धरि ॥
चंदैल माल भींदा सुभर । उभय चक्क सज्जे उभय ॥
प्रथिराज अनी दछिन दिसा । विषम बीर सउज्यौ सुरय ॥ छं० ॥ १७२ ॥
अवर अनी सामंत । धरे नष बीय महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन विंभहू सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । हीर पम्मार सहथ्थं ॥
सुवर बीर अवसांन । करन प्राक्रंम अकथ्थं ॥
पंम्मार दोइ सिंघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
बघेल भीम लष्मन सुअन । रांम वांम दय चभ्भरन ॥ छं० ॥ १७३ ॥
बांई दिसि चहुआंन । कंन्ह सउज्यौ दल बहल ॥
सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अठ्ठबल ॥
हर सिंघह बर सिंघ । हभ्भ हंमीर गंभीरह ॥
मंडली कमल नाल । भांन भट्टी बर नीरह ॥
उदिग पगार बिरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
सिर कन्ह कुच सज्यो नृपति । भार सयंनह जुद्ध भर ॥ छं० ॥ १७४ ॥
मुष अग्गौ पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
लोहांनौ आजान । तिन मद्धि विरज्जिय ॥
सहस पंच सेना समथ्थ । पंम्मार सिंघ सम ॥
मध्य सूर सामलौ । भीम चालुक्क पर जम ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । धवल जसह लोहांन सुअ ॥
लोहांन बंध केसरि समथ । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ छं० ॥ १७५ ॥

मध्य भाग प्रथिराज। सहस सेना सु च्यारि सजि॥
चंद्र सेन पुंडीर। राइ पर सिंघ सिंघ गजि॥
बिंझ राज लष्यन बघेल। राइ रामह कनकू सम॥
कूरंभह पज्जून। भीम चहुआन भीम क्रम॥
भाषरह दास मंधे समथ। चाहुआंन नृप कन्ह सुअ॥
गोइंद राव भुज हथ्थ नृप। जुद्ध पथ्थ जै वज्ज भुअ॥ छं० ॥ १७६॥
जांम देव जहां जुवांन। नृप पुट्ठि सु रज्जिय॥
स्याम चमर पष्परह। स्यांम गज ढाल सु सज्जिय॥
लंगी लंगर राव। अल्ह परिहार सूर बर॥
अचल अटल चहुआंन। सिंह बारड अभंग भर॥
जंघाल राइ भीमह सुवर। सागर गुर रिन भूरि बल॥
सामंत सकल सज्जे समथ। कज्ज राज प्रथिराज दल॥ छं० ॥ १७७॥
उत गोरी सुरतांन। सज्जैं सेन अध चंद्रं॥
अर्द्धचंद्र तत्तार। षांन पुरसान सु इंदं॥
अर्द्धचंद्र बर सार। षान पीरोज स इंदं॥
मधि कलंक जल्लाल। बीर रस बीर समंदं॥
उज्जल निसंक दोउ कोर बर। तेज ताप सुरतांन डर॥
चहुआंन राह लग्गन फिर्यौ। पूरन पुनिमासी सगुर॥ छं० ॥ १७८॥
छंद भुजंगी॥ इसी लीन जो गिंद जो गिंद भासै। उड़ी गिद्ध पच्छै मनों मोन भासै॥
कहै नह नंदीं सुनारह बीरं। मनों जोग जोगाधि को अंत नीरं॥छं०॥१७९॥
करक्कैंत बानं धरक्कैंति बेनं। गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं॥
मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै। तिनं देषते इंद्र के चित्त लोभै॥छं०॥१८०॥
झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं। बलाकंति पंती बगं मेघ सारं॥
झरं डंमरं रेन रुकि भूर नभ्भं। कलापंत पंतीन की सत्त सभ्भं॥छं०॥१८१॥
दूहा॥ दिषिय रैंन डंमर डहर। चढ्यौ चाय चहुआंन॥
सूर अनंद अनंद किय। कायर कंपि परान॥ छं० ॥ १८२॥
सज्यौ सेन जंगल सु पहु। जिम बद्दल आकास॥
ढलकि ढाल ढिल्ली मिली। बिषम बीर रस रास॥ छं० ॥ १८३॥

घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना ॥

छंद भुजंगी ॥ ढलक्कों मिली ढाल ढालं दुसेनं। चढे देव देषै रचै रथ्थ गेनं ॥
हकै हक्क बज्जी गजै तार[1] नारं। मचा जुद्ध लग्गौ उठ्यौ धोम धारं ॥ छं० ॥ १८४ ॥

कुटै बांन हच्चा[2] अप्पार भारं। जगी दामिनी इंद्र भादों सुढारं ॥
मिली कन्ह अन्नी षुरासान अन्नी। मचा षेत मत्तौ गजं गाह रन्नी ॥ छं० ॥ १८५ ॥

कुटै बांन कम्मान रुक्यौ सुगेनं। उवं जुद्ध दिट्ठं न प्राचार नेनं ॥
उभै जुद्ध मंड्यौ मचा भार भारं। भरं दून भग्गे धरं धार धारं ॥ छं० ॥ १८६ ॥

गिरें उत्तमंगं धरं सूर नंचै। भरं सीस कंमालियं माल संचै ॥
करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं। पियें स्रोन धारं अपारं सुधीरं ॥ छं० ॥ १८७ ॥

मिले षेत षुरसांन षां कन्ह धायौ। उरं झारि सींगी अपुट्ठं गिरायौ ॥
पर्‌यौ झूंमि षुरसांन पांनं सुघाए। अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए ॥ छं० ॥ १८८ ॥

परे सहस दो षांन कढि षेत साजं। बजी जैत देषी प्रथीराज राजं ॥
भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं। कुप्यो साहि षुरसांन किय नेंन लालं ॥ छं० ॥ १८९ ॥

फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना।

दूहा ॥ भगी फौज सुरतांन दिषि। कोप्यौ साहि सहाब ॥
बहुरि मिलत जनु मेघ घुरि। सावन बहल आब ॥ छं० ॥ १९० ॥

सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना।

कवित्त ॥ चक्कि सूर सुरतान। साहि बंध्यौ बल भारी ॥
अग्गै चौरंग। राज रष्यन अधिकारी ॥

(१) मो०—नारि।
(२) मो—हवाय।

सुनै साहि सुरतान। साहि जीवन सुरतानं॥
सुबर वीर हिंदवान। कलह चंपै हिंदवानं॥
दीजै न दान दुर्जन घरह। दइ दुवाह जंभौ नृपति॥
मुरि भग्यौ साहि सुरतांन कौं। साल रहै जीवत सुपति॥ छं०॥ १९१॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय।

तब कही षांन तत्तार। साह मंनी परिमानं॥
रुष्यौ साहि नरिंद। साहि पुरसांन सबानं॥
घरी एक आबइ। बीर बीरह रस सध्या॥
षेत परे तत्तार। साह गोरी गई सत्या॥
मुह मेल साह चहुआंन हुअ। हैथप्परि दौरे असुर॥
चामंड राइ दाहर तनय। जै सबद उचरंत उर॥ छं०॥ १९२॥

दूहा॥ दंतिपत्ति चल्लिय विहर। जलद कि पब्बय पाइ॥
बाइ सहाई कै अनल। कै ग्रीषम लगि लाइ॥ छं०॥ १९३॥

छंद माधुर्य॥ दव दवरि दवरित सेंन डंमरित गज्ज गहरित सद्दयं।
बिरहंत भद्दव जलद चद्दव कीच मच्चित भद्दयं॥ छं०॥ १९४॥
गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि बाय बेग करि करें।
देषंत मन गति हेत पंगुर दांन बरषत गिरि झरें॥ छं०॥ १९५॥
गज पंति दंतिन कंति उज्जल बग्ग पंति कि राजए।
रवि किरन बद्दल मध्य मानहु अन्य सोभ सु साजए॥ छं०॥ १९६॥
बर करत अनतह षग्ग षुल्लत उडत किरच सुषंडि कै।
दल चंद मांनहु कोपि उडगन अद्ध रयनीय कंडि कै॥ छं०॥ १९७॥
चल मलिय चै दल दलित पैदल सैल सिषरह फट्टियं।
गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उचट्टियं॥ छं०॥ १९८॥

दूहा॥ गज्जन समवर रोस रस। बज्जिग मार अपार॥
षेालि षग्ग सैंभरि बलिय। जनुपाइक पुंतार॥ छं॥ १९९॥

छंद रसावला॥ करी मत्त भारो बचै सार धारी। दुहथ्थं करारी। तुटै दंत जारी॥
छं०॥ २००॥

रदं किच्च झारी। मांने मच्छ वारी॥ लगें बांन भारी। गिरं टिड्डि चारी॥
छं० ॥ २०१ ॥
लगें संग भारी। मनों ब्रज्ज तारी॥ उठें छंद धारी। मनों धूम झारी॥
छं० ॥ २०२ ॥
लगें केक टारी। धनुं चंद्र धारी॥ लगी दंति अंती। म्रिनाली सुहंती छं०॥२०३॥
भरंके उक्कारैं। बकें मार मारें॥ ढहै गज्ज जारी। गिरं अंग सारी॥छं०॥२०४॥
दूहा॥ गज्जन गज गज्जै सुभट। रहै रोकि रन रंग॥
छिति छज्जै छिची इसे। जिसे भीम अनभंग॥ छं० ॥ २०५ ॥
छंद पद्धरी॥ अति उद्ध जुद्ध अनवद्ध सूर। बलवंत मंत दीसै कहूर॥
झलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥छं०॥२०६॥
दल स्यांम हृदय सोभै प्रमांन। मानों कि पंचमो भाग भांन॥
बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमांन। कर स्यांम राह सुभ्भै समांन॥छं०॥२०७॥
मानों कि राह ग्रहि ससिय आइ। कुद्दी कि किरन बद्दल नचाइ॥
किरवांन बंक बट्ठी बिसाल। ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल॥छं०॥२०८॥
सिप्पर सुस्यांम हेमह सुहंत। मांनो कि चक्र हरि धरिय संत॥
लै संगि अंग है हनि उठाइ। उप्पमा चंद जंपै सुभाइ॥ छं० ॥ २०९ ॥
मांनो कि हथ्थ हथिनापुरेस। पंचै सु बलिय बलिभद्र भेस॥
प्रथिराज करिय करि संग सुद्ध। लांगल भेस दीसंत उद्ध॥ छं० ॥२१० ॥
मांनों कि रांम कांमह प्रमान। पंचैति द्रोन हनमंत जांन॥
ढहि पस्यो गज्ज वर षेत भूमि। मांनो सुअ सुरनिय अंत भूमि॥छं०॥२११॥
दूहा॥ चक्र रूप दोइ दीन दल। बल अभूत बलवंत॥
जांनि जुगंतह जम लरैं। करन प्रथीपुर अंत॥ छं० ॥ २१२ ॥
छंद विअष्पी॥ पूरन ससि सुरतांन नरिंदं। भारथ राह भिरैं भर दंदं॥
चींदू सेन चढे रिन षेतं। जित्तन दल पुरसान सुहेतं॥ छं० ॥ २१३ ॥
डोंरु हथ्थ डबै कर डाबै। सींधू राग अबै सुर गावै॥
नंचै बर बेताल चिघाइ। नारद नद्द करै किलकाई॥ छं० ॥ २१४ ॥
सुर रत्तं सुर बीर प्रमानं। उडै उक्कंग अरिन निद्धानं॥
दाहिम्मौ दाहिर अधिकारी। गहन साह गोरी षग रारी॥ छं० ॥ २१५ ॥

जंपै मेछ कुसाद कुसादे। पारसीय मीरं रसवादे॥
षां ततार षुरसांन पषानं। गहैं सूर संमुह रन वानं॥ छं० ॥ २१६ ॥
पंच बांन वह ते अधकोसं। सह्यो नाह नरिंद सरोसं॥
रुद्धौ दिष्पि साहि सब षानं। गहिय तेग अनमित्त जुवानं॥"छं०॥ २१७॥

दूहा॥ मिले खेत रन रंग रस। षां ततार कैमास॥
विषम रुद्र रत्तौ बिहसि। मनों तेग रस रास॥ छं० ॥ २१८ ॥

छंद मोतीदाम॥ मनों रस रासय तेगय तार। करकर बज्जिय रीठ करार॥
चलंतह बांन सुभांन कुवान। निरष्पत अच्छरि व्योम विमांन॥छं०॥२१९॥
कुटै गज बाज अनंदिय जात। मनों लगि गोम उदोत उदात॥
भिरैं भय धोम सु धूंधय भार। लषै न को सूरति एक दुरार॥छं०॥२२०॥
फिरैं धर वज्जिय झार करार। ठिलें नठिलाइ न मन्निय हार॥
नटं भति जोगिनि नंचिय बीर। मिटी सिर मालह संकर पीर॥छं०॥२२१
मिले कयमास ततार सुअंग। छन्यो कयमासह जांनुय संग॥
फुटी जुग जंग तुरंग समेत। पर्यौ हय मुच्छ ततार सुषेत॥ छं० ॥ २२२॥
बिना सिर नंचिय सठ्ठि कमंध। चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध्र॥
बिलै विक मंध कमंध सुबीर। सहस्सह पंच परे रन मीर॥छं०॥ २२३॥
भगी रन फौज सु चंडह साहि। जिते रन हिंदुअ ठट्ठ सुठाहि॥ छं०॥२२४॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना।

दूहा॥ भगी अनी तत्तार लषि। दल परमारह चंप॥
धप्यौ राज प्रथिराज तब। लेहु लेहु मुष जंप॥ छं॥ २२५॥

छंद पद्धरी॥ धप्यौ सुराज प्रथिराज चक्कि। उर रोहि सेन उप्परें धक्कि॥
मिलि फौज अठ्ठकिय एक ठांम। आघात रीठ मत्ती उरांम॥छं०॥२२६॥
किलकार चक्क बज्जी करार। आवद्ध तुद्द मुष धार धार॥
चंप्यौ पटाटि चामुंड राव। हल हल्ल हूक मते हलाव॥ छं०॥ २२७॥
बीभच्छ मंत बिय भर अहुर। आबद्ध जांम मच्यौ कहुर॥
संगें सुसंग असि असी घाइ। पट्टा सुपट्ट बज्जे निघाइ॥ छं०॥ २२८॥
जम दट्ठ दट्ठ जुद्धें विरांम। कुलिका सुधाव जुद्धे सुजांम॥

पाटू सुढींक परहार पार। मिले लथ्थ बथ्थ झुंझे झुझार ॥ छं० ॥ २२९ ॥
कर केस केस एकह्व अलुझ्झ। कुरिका सञ्जनि बाहें सुलझ्झ ॥
तुट्टंत अंत चंपंत पाइ। तुट्टंत सीस जनु विषम वाइ ॥ छं० ॥ १३० ॥
किन नतं परत दंती सभार। है परें विहँड षंडै सधार ॥
है गै परंत धर पूरि पारि। घन ओन अंब पूग्यौ सवारि ॥ छं० ॥ २३१ ॥
लग्गे ससंग नेजा सुढाल। सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
कच्छपह सीस गजराज नूप। धर परे हय गय मगर रूप ॥ छं० ॥ २३२ ॥
तुट्टे सुबांह मनुं मीन पांन। सोहंत मीन वर विविध जांन ॥
सोहंत सीस अंबुजह सूर। से वाल चिकुर रज्जे बिहूर ॥ छं० ॥ २३३ ॥
विगसंत नेंन सुरंगी न दिट्ठ। अंबुज निसांनि मधुकर बयट्ठ ॥
षप्पर सुभरै कालिका वारि। विन हंस सूर उड्डै उभारि ॥ छं० ॥ १३४ ॥
पहाटि पग्यौ चामंड घाइ। विहरंत विषम बज्यौ सुघाइ ॥
दिष्यौ सुघाइ साहाब दिट्ठ। आवइ मंत मत्ती सुरिट्ठ ॥ छं० ॥ २३५ ॥
मिल्ल्यौ सुघाइ चामंड राइ। हय हये उंन उन्नं उनाइ ॥
हय परै बथ्थ लग्गेव सूर। थल घाव रिट्ठ मत्ती कहूर ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चंपे सुमीर उप्परह धक्कि। सामंत सूर लग्गे विहक्कि ॥
धर परे षेत तहां दस्स मीर। सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं० ॥ २३७ ॥
धरि लियो साहि चामंड राइ। नव सहस मीर तुट्टे सुघाइ ॥
चामंड राव हय दिय षवास। साटूल नाम पावार तास ॥ छं० ॥ २३८ ॥
भग्गौ सुषेत सुरतान सेन। जै जया सद्द सुर सद्द गेंन ॥
जे परे मीर सामंत षेत। वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ पग्यौ भीम चहुआंन। बंध भाषरह मल्लभर ॥
सांमदास चय बंध। सुतन चहुआंन नाह नर ॥
पग्यौ षेत जस धवल। सुअन लौहान समथ्थं ॥
केसर केहरि रूप। बंध लौहांन सुतथ्थं ॥
रन परे पंच सामंत वर। षेत रीठ मत्ती भरन ॥
चामंड राइ दाहर तनय। गहत साहि पष्पल सुरन ॥ छं० ॥ २४० ॥

पय्यो षांन सेरं न्न । वितंड मुलतांन षांन धर ॥
मारू मीर सुभीर । मीर जेहांन महाभर ॥
मीर जमुन गजनीय । षांन महमुंद मीर वर ॥
फतेजंग मीरह सुभीर । हासंन रु अंनर ॥
काली बलाइ विरदैत बर । मीर अवन्न सुजुझ्झ मन ॥
दस परें षेत वानेत तब । गहत साहि पय्यल सुरन ॥ छं० ॥ २४१ ॥

अवर अनी सांमत । परे रन मीर महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन वीझह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । सुतन सागरह समथ्थं ॥
मडंन बंध षसंग । हीर पामार सु हथ्थं ॥
पामार नीरध्वज सिंधु सुअ । सुत प्रसंग सागर सुअन ॥
बघेल भीम लष्यन सुबन । राम वाम दुइय डरन ॥ छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ सहस एक हिंदू अवर । परे याइ रिन षेत ॥
सहस आठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ छं० ॥ २४३ ॥

सहस सात हय षेत रहि । परे पंच से दंति ॥
लुथ्थि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइल अंति ॥ छं० ॥ २४४ ॥

षेचर भूचर हंसचर । पलचर रुधिचर चार ॥
न्रप आनंदिय राजकहुं । चलि जै जंपि उचार ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सूरन सीस जु ईस जुरि । सुर रज्जे बर रथ्थ ॥
रजि अच्छरि आसिष्य दिय । बर लद्धे बर हथ्थ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना।

कवित्त ॥ बंधि साह चामंड । दियौ प्रथिराज सुहथ्थह ॥
राज मांनि पतिसाह । आनि मुष्यासन तथ्थह ॥
कियौ दंड पतिसाह । सहस अठ्ठह हय सुब्बर ॥
सोइ अद्ध प्रथिराज । दियौ चामंड महाभर ॥

मुक्यौ सुराज सुरतांन गहि। रोहि सुवासन पठय घर॥
जित्यौ सुराज प्रथिराज रिन। जय जै सद्दय सुर अमर॥ छं०॥ २४७॥

सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना॥

बंधि साह सुरतांन। राज ढिल्लीपुर पत्तौ॥
दंड मंडि सुबिहान। राज जस जस गुन रत्तौ॥
चामर छत्र रषत्त। सकल लुट्टे सुरतानं॥
मास एक बर बीर। रष्यि मुक्यौ सुविहानं॥
जय जय सुमत्त कित्तिय कवित। डोला राज नरिंद बर॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। भयौ न को रवि चक्क तर॥ छं०॥ २४८॥

दूहा॥ माधौ भट्ट सुमंत कथ। सुमत चित्त परमांन॥
सुबर साहि गोरी नृपति। बंधि छंडि उनमांन॥ छं०॥ २४९॥

इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना।

बँटि बधाय दिल्ली सहर। जीते आवत राज॥
द्रव्य पटंबर विविध दिय। बज्जा जीत सु बाज॥ छं०॥ २५०॥
दुजिय सुबद्दिय प्रति दुजद्द। प्रिथ्या व्याह विगत्ति॥
किमि फिर बंध्यौ साह रिन। किम धन लद्द सुमत्ति॥ छं०॥ २५१॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधौ भाट कथा पातिसाह ग्रहन राजाविजय नांम उनविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ १९॥



अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वदिशा में समुद्रशिषर गढ़ के यादवराजा विजयपाल का वर्णन ।

दूहा ॥ पूरब दिस गढ गढनपति । समुद सिषर अति दुग्ग ।
तहँ सु विजय सुर राज पति । जादू कुलह अभग्ग ॥ छं० ॥ १ ॥
दसम दुयग्गय देस अति । पति सायर मज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिं सकल । धुनि निसाँन बहु साद ॥ छं० ॥ २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन ।

कबित्त ॥ धुनि[1] निसान बहु साद । नाद सुरपंच बजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंष गजपतिय । मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्यह ॥
दस पुत्र पुचिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर डमर[2] ॥
भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर ॥ छं० ॥ ३ ॥

कुँअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा ॥ पदम सेन कूंवर सुघर । ता घर नारि सुजांन ॥
ता उर इक पुची प्रगट । मनहुँ कला ससिभांन ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ मनहुँ कला ससिभांन । कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल बेस ससिता समीप । अंम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल स्रिग भमर । बैन षंजन मृग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
छचपति गयंद हरि हंस गति । बिह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पदमावतिय । मनहु कांम कामिनि रचिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) धु-घन । (२) डो-झमर ।

दूहा ॥ मनहु काम कामिनि रचिय। रचिय रूप की रास ॥
पसु पंछी सब[1] मोहनी। सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ॥ ६ ॥
सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजांन ॥
जानि चतुर दस अंग षट। रति वसंत परमांन ॥ छं० ॥ ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे में रक्खा।

सषियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास ॥
कीर इक्क दिष्यिय नयन। तब मन भयौ हुलास ॥ छं० ॥ ८ ॥
कवित्त ॥ मन अति भयौ हुलास। विगसि जनु कोक किरन रवि ॥
अरुन अधर तिय सधर। बिंब फल जानि कीर छवि ॥
यह चाहत चष चकित। उचकु तक्किय झरपि झर ॥
चंच चहुटिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर ॥
हरषत अनंद मन महि हुलस। लै जु महल भीतर गई ॥
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्यत भई ॥ छं० ॥ ९ ॥

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती।

दूहा ॥ तिही महल रष्यत भइय। गइय षेल सब भुल्ल ॥
चित्त चहुटयौ कीर सों। रॉम पढ़ावत फुल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥

पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिलै तो ठीक है।

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि। नष सिष लौं यह रूप ॥
करता करी बनाय कै। यह पदमिनी सरूप ॥ छं० ॥ ११ ॥
कवित्त ॥ कुहिल केस सुदेस। पौह परचियत पिक्क सद ॥
कमल गंध वय संध। हंस गति चलत मंद मद ॥
सेत वस्त्र सोहै सरीर। नष स्वाति बुंद जस ॥

(३) छ-मृग।

भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव। मकरंद वास रस॥
नैन निरषि सुष पाय सुक। यह सदिन सुरति रचिय॥
उमा प्रसाद हर हेरियत। मिलहि राज प्रथिराज जिय॥ छं०॥ ११॥

पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है।

दूहा॥ सुक समीप मन कुँवरि कौ। लग्यो बचन कै हेत॥
अति विचित्र पंडित सुआ। कथत जु कथा अमेत॥ छं०॥ १३॥
गाथा॥ पुच्छत बयन सुबाले। उच्चरिय कीर सुद्ध सद्धाये॥
कवन नाम तुम देस। कवन यंद करै परवेस॥ छं०॥ १४॥

सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूं वहां का राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है।

उच्चरिय कीर सुनि बयनं। हिंदवान दिल्ली गढ अयनं॥
तहँ इंद अवतार चहुवांनं। तहं प्रथिराजह सूर सुभारं॥ छं०॥ १५॥

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना।

छंद पद्धरी॥ पदमावतिहि कुँवरी सँघत्त। दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त॥
हिंदवांन थान उत्तम सुदेस। तहँ उदत दुग्ग दिल्ली सुदेस॥ छं०॥१६॥
संभरि नरेस चहुआंन थांन। प्रथिराज तहां राजंत भांन॥
बैसह बरीस षोडस नरिंद। आजानबाहु भुअ लोक यंद॥ छं०॥१७॥
*संभरि नरेस सोमेस पूत। देवंत रूप अवतार धूत॥
सामंत सूर सब्बै अपार। भूजांन भीम जिम सार भार॥ छं०॥ १८॥
जिहि पकरि साह साहाब लीन। तिहुं बेर करिय पानीप हीन॥
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जँजीर। चुक्कै न सबद बेधंत तीर॥छं०॥१९॥
बल बैन करन जिम दाँन पान। सत सद्दस सील हरिचँद समान॥
साहस सुक्रंम विक्रम जुवीर। दाँनव सुमत्त अवतार धीर॥ छं०॥ २०॥
दिस च्यार जांनि सब कला भूप। कंद्रप्प जांनि अवतार रूप॥छं०॥२१॥
दूहा॥ कामदेव अवतार हुअ। सुअ सोमेसर नंद॥
सद्दस किरन झल हल कमल। रिति समीप वर विंद[1]॥ छं०॥ २२॥

* को० ब्र-में यह तुक नहीं है। (१) को—चिंदं।

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुन कर पद्मावती का मोहित हो जाना।

सुनत श्रवन प्रथिराज जस। उमग बाल बिधि अंग॥
तन मन चित चहुवान पर। बस्यौ सु रत्तह रंग॥ छं०॥ २३॥

कुँवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना।

बेस बिनी ससिता सकल। आगम कियौ बसंत॥
मात पिता चिंता भई। सोधि जुगति कौ कंत॥ छं०॥ २४॥

राजा का बर ढूँढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना।

कवित्त॥ सोधि जुगति कौ कंत। कियौ तब चित्त चहौं दिस॥
लयौ विप्र गुर बोल। कही समझाय बात तस॥
नर नरिंद नर पती। बड़े गढ़ दुग्ग असेसह॥
सीलवंत कुल सुद्ध। देहु कन्या सुनरेसह॥
तब चलन देहु दुज्जह लगन। सगुन बंद दिय अप्प तन॥
आनँद उछाह समुदह सिषर। बजत नह नीसाँन घन॥ छं०॥ २५॥

पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना।

दूहा॥ सवालष्य उत्तर सयल। कमऊँ गढ दूरंग॥
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग॥ छं०॥ २६॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया।

नारिकेल फल परठि दुज। चौक पूरि मनि मुत्ति॥
दई जु कन्या बचन बर। अति आनँद करि जुत्ति॥ छं०॥ २७॥

कुमोदमनि का बड़ी धूम से ब्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना।

छंद भुजंगी॥ बिचिसितवरं लगन लिन्नौ नरिंदं। बजी दार दारं सु आनंद दुंदं॥
गढंनं गढं पत्ति सब बोलि नुंत्ते। आइयं भूप सब कटु बंस जुत्ते॥ छं०॥ २८॥

चले दस सहस्सं असव्वार जानं। पूरियं पैदलं तेतीसु थानं॥
मंत मद गलित सैं पंच दंती। मनों सौंम पाहार बुग पंति पंती॥छं०॥२८॥
चलै अग्गि तेजी जु तत्ते तुषारं। चौवरं चौरासी जु साकत्ति भारं॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं। रँगं पंच रंगं ढलकंत ढालं॥छं०॥३०॥
पंच सुर साबद्द बाजिच बाजं। सहस सहनाय स्रिग मोद्दि राजं॥
समुद सिर सिषर उच्छाद छाद्दं। रचित मंडपं तोरनं स्रीयगाद्दं॥छं०॥३१॥
पदमावती विलषि बर बाल बेली। कही कीर सों बात तब छोड़ केली॥
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेसं। बरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं॥छं०॥३२॥

सुग्गे से संदेसा कहलाना गौरी और चिट्ठी देना कि रुक्मि की तरह मेरा उद्धार कीजिए।

दूहा॥ आनो तुम्ह चहुवांन बर। अरु कहि इहै सँदेस॥
सांस सरीरहि जो रहै। प्रिय प्रथिराज नरेस॥छं०॥३३॥
कवित्त॥ प्रिय प्रिथिराज नरेस। जोग लिषि कग्गर दिन्नौ॥
लगु नव रग रचि सरब। दिन द्वादस ससि लिन्नौ॥
सैं अट्ठग्यारह तीस[1]। साष संवत परमानह॥
जोविची कुल सुद्ध। बरनि वर रष्यहु प्रानह॥
दिष्पंत दिष्ट उच्चरिय[2] वर। इक पलक बिलंब न करिय॥
अलगार रयन दिन पंच मद्धि। ज्यों रुकमनि कन्हर वरिय॥छं०॥३४॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना।

दूहा॥ ज्यों रुकमनि कन्हर वरी। ज्यों धरि संभरि कांत॥
स्रिव मंडप पक्किक्रम दिसा। पूजि समय स प्राँत॥छं०॥३५॥

सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुँचना।

लै पची सुक यों चल्यौ। उड्यौ गगनि गद्धि वाव॥
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर। अट्ठ जाँम में जाव॥छं०॥३६॥

(१) को—अनुतीस।
(२) को—वह घरिय।

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना।

दिय कग्गर नृप राज कर। षुलि बंचिय प्रथिराज॥
सुक देखत मन में हँसे। कियौ चलन कौ साज॥ छं०॥ ३७॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना।

कवित्त॥ उद्दै घरी उद्दि पलनि। उद्दै दिन बेर उद्दै सजि॥
सकल सूर सामंत। लिये सब बोलि बंब बजि॥
अरु कविचंद अनूप। रूप सरसै बर कच्छ बहु॥
और सेन सब पच्छ। सहस सेना तिय सष्यहु॥
चामंड राय दिल्ली धरच्छ। गढपति करि गढ़ भार दिय॥
अलगार राज प्रथिराज तब। पूरब दिस तब गमन किय॥ छं०॥ ३८॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला।

जा दिन सिषर बरात गय। ता दिन गय प्रथिराज॥
ताही दिन पतिसाह कौं। भइ गज्जनै अवाज॥ छं०॥ ३९॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी।

कवित्त॥ सुनि गज्जनै अवाज। चढ्यौ साहाब दीन बर॥
षुरासाँन सुलतान। कास काविलिय मीर धुर॥
जंग जुरन जालिम जुझार। भुज सार भार भुअ॥
धर धमंकि भजि सेस। गगन रवि लुप्पि रैन हुअ॥
उलटि प्रवाह मनौं सिंधु सर। रुक्कि राह अड्डौ रचिय॥
तिहि घरिय राज प्रथिराज सौं। चंद वचन इहि विधि कथिय॥ छं०॥ ४०॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गौष आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना।

निकट नगर जब जानि। जाय वर विंद उभय भय॥
समुद सिषर घन नद्द। दुंद दुहुँ ओर घोर गय॥
अगिवानिय अगिवान। कुँअर बनि बनि हय सज्जति॥
दिष्पन को चिय सबनि। चढ़ि गौष छाजन रज्जति॥
विलषि अवास कुँवरि वदन। मनौं राह छाया सुरत॥
झंषति गवष्षि पल पल पलकि। दिषत पंथ दिल्ली सुपति॥ छं०॥ ४१॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुँचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीरान के साथ घोर युद्ध होना।

छं० पद्धरी॥ दिषत पंथ दिल्ली दिसँान। सूष भयौ सुक जब मिल्यौ आंन॥
संदेस सुनत आनंद नैंन। उमगिय बाल मन मथ्थ सैन॥ छं०॥ ४२॥
तन चिकट चीर डाल्यो उतारि। मज्जन[1] मयंक नव सत सिंगार॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप। सजि सेन मनौं मनमथ्थ भूप॥ छं०॥ ४३॥
सोवन्न थार मोतिन भराय। झल[2] हल करंत दीपक जराय॥
संगह सषिय लिय सहस बाल[3]। रूकमनिय जेम मज्जत मराल॥ छं०॥ ४४॥
पूजिय गवरि शंकर मनाय। दक्छिनै अंग कर लगिय पाय॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज। हस मुद्ध मुद्ध धर पट्ट लाज॥ छं०॥ ४५॥
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय। [4]चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय॥
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय। पदमावतीय हरि लीय जाय॥ छं०॥ ४६॥

(१) ए० ब्र०-मंडान। (२) को-कल। (३) को-यह रस बाल। (४) ब्र०-दुरि।

बाजो सुबंब हय गय पलांन। दौरे सुसज्जि दिस्सह दिसांन॥
तुम्ह लेहु लेहु मुष जंपि जोध। चम्मह सूर सब पहरि क्रोध॥ छं०॥ ४७॥
अग्गें जु राज प्रिथिराज भूप। पक्कै सु भयौ सब सेन रूप॥
पहुंचे सुजाय तत्ते तुरंग। भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग॥ छं०॥ ४८॥
उलटी जु राज प्रथिराज बाग। थकि सूर गगन धर धसत नाग॥
सामंत सूर सब काल रूप। गहि लोह छोह वाहै सु भूप॥ छं०॥ ४९॥
कम्मांन बांन कुहहि अपार। लागंत लोह इम सारि धार॥
घमसान घान सब बीर षेत। घन ओन बहत अरु रुकत रेत॥ छं०॥ ५०॥
मारे बरात के जोध जोह। परि रुंड मुंड अरि षेत सोह॥ छं०॥ ५१॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना।

दूहा॥ परे रहत रिन षेत अरि। करि दिल्लिय मुष रुष्प॥
जीति चल्यौ प्रथिराज रिन। सकल सूर भय सुष्प॥ छं० ५२॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना।

पदमावति इम लै चल्यौ। हरषि राज प्रिथिराज॥
एतें परि पतिसाह की। भइ जु आनि अवाज॥ छं०॥ ५३॥

अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना।

कवित्त॥ भई जु आनि अवाज। आय सहाबदीन सुर॥
आज गहौं प्रथिराज। बोल बुल्लंत गजत धुर॥
क्रोध जोध जोधा अनंत। करिय पंती अनि गज्जिय॥
बांन नालि हथनालि। तुपक तीरह अब सज्जिय॥
पवै पहार मनों सार के। भिरि भुजांन गजनेस बल॥
आये हकारि हंकार करि। घुरासान सुलतान दल॥ छं०॥ ५४॥

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना।

छं० पद्धरी॥ पुरासान मुलतान षंधार मीरं। बलक सेा बलं तेग अचूक तीरं॥
रहंगी फिरंगी हलंबी समानी। टटी टह बल्लोच ढालं निसानी॥ छं०॥ ५५॥
भँजारी चषी मुष्प जंबक्क लारी। हजारी हजारी इकैं जोध भारी॥
तिमं पष्परं पीठ हय जीन सालं। फिरंगी कती पास सुकलात लालं॥छं०॥५६॥
तहाँ बाघ बाघं महरी रिछोरी। घनं सारसंमूह अरु चौंर भोरी॥
एराकी अरब्बी पटी तेज ताजी। तुरकी महाबांन कम्मांन बाजी॥ छं०॥ ५७॥
ऐसे असिष असवार अग्गेल गोलं। भिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं॥
तिनं मद्धि सुलतांन साहाब आपं। इसे रूप सेाँ फौज वरनाय जापं॥ छं०॥५८॥
तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर नीसांन बाजं॥ छं०॥५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना।

कवित्त॥ बज्जिय घोर निसाँन। राँन चौहाँन चिहौ दिस॥
सकल सूर सामंत। समरि बल जंच मंच तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज। बाग मनेां लग्ग वीर नट॥
कढ़त तेग मनेाँ बेग। लगत मनेां बीज झट्ट घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन। रगन मगन भइ ओन धर॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस। हुरव रंगि नव रत्त वर॥ छं०॥ ६०॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई।

दूहा॥ हुरव रंग नव रंत वर। भयेा जुद्ध अति चित्त॥
निस वासुर समुझि न परत। न को हार नह जित्त॥ छं०॥ ६१॥

युद्ध का वर्णन्।

कवित्त॥ न को हार नह जित्त। रहेइ न रहहि सूरवर॥
धर उप्पर भर परत। करत अति जुद्ध महाभर॥
कहैाँ कमध कहैाँ मथ्थ। कहैा कर चरन अंत रुरि[1]॥
कहैाँ कंध वहि तेग। कहैाँ सिर जुट्टि फुट्टि उर॥

(१) क०—दुरि।

कहौं दंत मंत्त चय पुर पुपरि। कुंभ असुंडह रुंड सब॥
छिंदवान रान भयभांन मुष। गहिय तेग चहुवांन जब॥ छं०॥ ६२॥

पृथ्वीराज की बीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना।

छंद भुजंगी॥ गही तेन चहुवांन छिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं॥
करे रुंड मुंडं करी कुंभ फारे। बरं सूर सामंत धुकि गर्ज भारे॥छं०॥६३॥
करी चीह चिक्कार करि कलप भग्गे। मदं तजियं लाज[1] जमंग मग्गे॥
दौरि गज अंध चहुआंन केरो। घेरियं[2] गिरहं चिद्यो चक्क फेरो॥छं०॥६४॥
गिरहं उडी भांन अंधार रैनं। गई सूधि सुझै नहीं मभ्भि नैनं॥
सिरं[3] नाय कम्मांन प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगवाजं॥
छं०॥ ६५॥
लै चल्यौ सिताबी करी फारि फौजं[4]। परें मीर सै पंच नहँ षेत चौजं॥
रजंपुत्त पंचास झुझ्झे अमोरं। बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं॥ छं०॥६६॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना।

दूहा॥ जीति भई प्रथिराज की। पकरि साह लै संग॥
दिल्ली दिसि मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग॥ छं०॥ ६७॥

पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना॥

बर गोरी पद्मावती। गहि गोरी सुरतांन॥
निकट नगर दिल्ली गये। चभुजा चहुआंन॥ छं०॥ ६८॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना।

कवित्त॥ बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुध घरी परट्ठिय॥
चर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय॥
ब्रह्म वेद उच्चरहिं। होम चौरी जु प्रत्ति वर॥
पद्मावति दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर॥

---

(१) कृ०-जाल। (२) कृ०-करीयं।
(३) को०-तब। (४) को०-में "ले चल्यो निकसि सब फारि फौजं" लिखा है।

मंडयौ[1] साह साहाबदी। अट्ठ सहस्स है वर सुवर॥
दै दाँन माँन षट भेष कौ। चढ़े राज द्रुग्गा हुजर॥ छं०॥ ६९॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना।

कवित्त॥ चढ़िय राज प्रथिराज। छाड़ि साहाबदीन सुर॥
त्रिपत सूर सामंत। बजत नीसाँन गजत धुर॥
चंद्र वदनि मृग नयनि। कल ले सिर सनमुष्प जुष॥
कनक थार अति बनाय। मोतिन बँधाय सुष॥
मंडल मयंक वर नार सब। आनँद कंठह गाइयव॥
ढोरंत चवर किक्कर करहि। मुकट सीस तिक जु दियव॥ छं०॥ ७०॥

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना।

दूहा॥ चढ़े राज द्रुगह त्रिपति। सुमत राज प्रथिराज॥
अति अनंद आनंद सैं। छिंदवांन सिर ताज॥ छं०॥ ७१॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके श्री प्रिथीराज समुद सिषर गढ़ पद्मावती पाँणि ग्रहणं जुद्ध पश्चात पाति-साह प्रिथीराज जुद्धं श्री प्रिथीराज जुद्ध विजय पाति-साह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव संपूर्णम्॥



(१) क-छंदयौ।

अथ प्रिथा व्याह वर्णनं लिष्यते ॥

(एक्कीसवां समय ।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के बिबाह की सूचना ।

कवित्त ॥ चित्र कोट रावर नरिंद । सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेसर संभरिय । राव मानिक सुभग्ग कुल ॥
मुष मंची कैमास । पांन अवलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि । ऐन उत्तर दिसि हिंडिय ॥
सुक्रवार सुकल तेरसि घरह । धर लिग्नै तिन बर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर । समर सिंघ रावर बरह ॥ छं० ॥ १ ॥

सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह को देने का विचार करके पत्र भेजना ।

दूहा ॥ उत्तर दिसि आहुठ कौं । दे कग्गद लिषि बत्त ॥
सोमेसर कीनौ मतौ । भगिनि दिये प्रथु पुत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

समरसिंह के गुणों का वर्णन ।

चौपाई ॥ प्रवत्तवै[1] पहुमी बल राजं । अरु जोगिंद सबन सिरतांज ॥
समर सिंघ रावर चिंत्तिज्जै । पुचि प्रिथा चिचंग सुदिज्जै ॥ छं० ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ बर प्रब्बत बैराज । नरब उत्तिम चिचंगी ॥
बर आहुठ नरेस । समर साहस अनभंगी ॥
बर मालव गुज्जर नरिंद । सार बंधौ बर अड्डौ ॥
उंच सग्गपन कियै । पुत्त आवै घन अड्डौ ॥
बर बीर धीर जाजुलति तप[2] । शिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रिथकज्ज अज्ज मन संभरौ । सुनि संमर कीजै बरह ॥ छं० ॥ ४ ॥
दूहा ॥ सोमेसर नंदन मतौ । पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि भ्रंम धर पंथ ए । छिंदवान कुल भान ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) सो०—पब्बयपति । (२) को०—ए०—पत ।

कवित्त ॥ हिंदवान कुल भान। भ्रंम रष्यन सुबेद बर ॥
लै मुंजांनी ढाल। जुभ्भ संग्राम सार गुर ॥
सो चिचंग नरिंद। प्रिथा दीनी प्रथिराजं ॥
हेम हयं गय अथ्थि। देन दिक्षीय सब साजं ॥
गढ अत्त बत्त गहिलौत गुर। सिंगी नाद निसांन बर ॥
कालंक राहु कुष्पन बिरद। मद्दन रंभ चाहंत धर ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ सो भगिनी दीनी प्रिथा। सकल रूप गुन लच्छि ॥
चिचंगी रावर समर। अंगन अद्दत सु अच्छि ॥ छं० ॥ ७ ॥

पत्र लेकर गुरूराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना।

कुंडलिया ॥ बाल बेस भगिनी प्रिथा। अद्द समर केलि चिचंग ॥
राज गुरु गुरराम सम। ताजी तेरह तुंग ॥
ताजी तेरह तुंग। मुत्ति नग माल सुरंगी ॥
बर दाहिम कैमास। बीर बंधव मुकि रंगी ॥
नृप कग्गद गहि हथ्थ। कन्ह अग्गा बर एसं ॥
नर उत्तिम चिचंग। दई बर बाल सुवेसं ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथा कुँअरि के रूप का वर्णन।

दूहा ॥ बर बरनत भगिनी प्रिथा। कहि न परै कवि चंद ॥
मानौ रति कौ रूप लै। धरि आई मुष इंद ॥ छं० ॥ ९ ॥

चौपाई ॥ सुफल दियौ फल लद्धौ नांहि। इंद्र सुबल बलि नवला बांहि ॥
सीस सूर मुष अगनि कुबेर। इन समांनद्द सुंदर हेर ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथा कुँअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन।

कवित्त ॥ स्वाहा ज्यों अग्ग अगनि। सीय अग्ग राम काम रति ॥
नल दमयंत संयोग। द्रुपद कन्या अरजुनपति ॥
इंद्र सची वा जोग। जोग गवरिय अरु शंकर ॥
भांनर नास्तिनि कन्ह। सोम रोहिनी नारि घर ॥

फल अप्प इच्छ्य सेा दीन नृप। लच्छि सहज लच्छी सुतन ॥
दुज राज राम ग्रह लगन लिषि। सद्धि महूरत चिंति मन ॥ छं० ॥११॥
इंद्र जेाग पंचमी। सुबर पंचमि अधिकारी ॥
भेाम बीय नृप थान। सूर ग्रह केत उचारी ॥
इम सुमंत ग्रह लगन। व्याह दंपति दंपति गन ॥
और सबै सुभ जेाग। होइ सुष जात धान धन ॥
इक मास लगन बर थप्पि कै। दिल्ली वै दिल्ली गयेा ॥
सुरतांन दंड लीनेा सुकर। सुकर भ्रंम कारज ठयेा ॥ छं० ॥ १२ ॥

लग्न का शोधा जाना।

दूहा ॥ थप्पि सु लगनह राज ग्रह। सेाधि पुरान उरान ॥
बाजपेय मुष उद्धरे। प्रिथा व्याह उनमान ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनेगा उठा न रक्खूंगा।

बहुत मेाहि कहत न बनै। बरनत कबिन कठोर ॥
गुन मैं षेारिन अप्पि हैां। कछु बरनिहैां सुथोर ॥ छं० ॥ १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन।

कवित्त बिधानजाति ॥ अहि ससि सन उतंग। पिक्क उर केहरि करिवर ॥
अलक बयन चष चंच। जीह कटि जघन बराबर ॥
किस्न सकल चल अचल। अदिठ अलसंत चलंतह ॥
चंदन नभ वन भवन। अंब गिरि व्यंभ बसंतह ॥
सुमनि सरद भय भीत निसि। रति पति लंघत मंदगति ॥
अबला सुअंग ओपम दुतिय। कही चंद दून परि विगति ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ को कबि ओपम बाल की। कहिबे कों समरथ्थ ॥
सब संयेाग बनाइ कै। काम चह्यौ मनुरथ्थ ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथा कुँअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन।

छंद मेातीदाम ॥ बरनेां ससि जुब्बन की वय संधि। तिनं उपमा बरनी बल बंधि ॥
मिली सिसरं रिति राजह जोर। चंप्यौ न ननं विपनं नह कोर ॥ छं० ॥१७॥

कवै चलि चंचलता चलि जाइ। धरै कबहूं धन धीरज पाइ॥
तिनं उपमा बरनी कबिचाई। पढ़ावत कांम नई गत ताई॥ छं० ॥ १८॥
करं सिर ठंकि सँवारत बार। सिषावत कांम मनों चट सार॥
दुती उपमा बरनै कबि चंद। चलै घट रूप दिषावत इंद॥ छं० ॥१९॥
चती उपमा बरनी कबि चाह। लरैं दुअ कोर मनों ससि राह॥
उठे थन थोर बिराजत बाम। धरैं मनु चाटक सालिग राम॥ छं० ॥२०॥
किधों फल तिंदुअ कंचन जान। धरे मनु भृंग सुधा रस पान॥
तुकं द्रुम राजिय राजत बाम। पपीलकि सोवन षंभ बिश्राम॥ छं० ॥ २१॥
जु बंकिय भोंह न तुच्छ गहूर। उठे मनु मच्छ धनंक अँकूर॥
सुबालय उष्टत मोर सुदीस। मिले जनु मंगल है ससि रीस॥ छं० ॥२२॥
कहूं उठि लागित मोर सुसीर। उठे मनु अंकुर कांम सरीर॥
तुकं द्रग सोभत कज्जल तास। चढ़े जनु बाहन बल्लिय काम॥ छं० ॥ २३॥
दुहूं कुच बीच सरोमय तह। लगी मृग मद्दय छीन सुगह॥
तिनं उपमा बरनी कबि रंग। पिये जनु कालिय के सुतभृंग॥ छं० ॥२४॥
कबै मिलि श्रोंन द्रिगस्सुतु लेहि। मनों सिसु जुब्बन तारिय देहि॥
स विभ्रम चाइ उभारित चक्क। इमं द्रिग इष्प कटाच्छ सुवक्क॥ छं०॥२५॥
इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल। करी मनों काम सिरी रति माल॥
भई जब बाल चढंतय बेस। दई तब पिथ्थ नरिंद गिरेस॥ छं० ॥ २६॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन।

दूहा॥ नर नरिंद जोगिंद पति। मुंजी ढाल बिरह॥
उडगन निकट नरिंद बिय। सेवत रहत गिरह॥ छं० ॥ २७॥*

कवित्त॥ सिंगी रा अवधूत। बीर चिचंग नरिंदं॥
कमल पानि सारथ्थ। अहन तेज कहि चंदं॥
बर कप्पन कालकं। बिरद साहन सुरतानं॥
बर प्रब्बत बैराज। भोग जोगह बड़ दानं॥
सो मद्दन रंभ आरंभवै। एक रंग रत्तौ रहै॥
कलिकाल घाम छिप्पै नहीं। झलहलंत दुज्जन दहै॥ छं० ॥ २८॥

* यह दोहा मो. में नहीं है।

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस संबन्ध से अपने को बड़ भागी मानना।

दूहा ॥ फल श्रीफल दुज हत्थ कै। जादू सँपतौ देव ॥
आज हनंदे पाप हम। मिलि चिचंगी सेव ॥ छं० ॥ २८ ॥
भोजन भाव अनंत किय। दिसि उत्तर ग्रह रष्पि ॥
पाप जन्म चहुआन कौ। गय दुज राज सु इष्पि ॥ छं० ॥ २० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुंचकर बसंत पंचमी को तिलक देना।

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप। समर संमुह ग्रह भग्गे ॥
वय अक्कंम मन नट्ठए[1]। क्रंम सुक्रत[2] फल जग्गे ॥
पंच दिवस रहि थांन। जंपि दुज राज सु आइय ॥
बर बसंत बैसाष। लगन पंचमि थिर पाइय ॥
चतुरंग लच्छि चिचंग दिय। कुयन राम बिप्रह सुतह ॥
जाने कि अग्गि समसान की। देषि सुतन लग्गे सु जंह ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन।

बाजपेय राज सू। होइ कलजुग्ग धंम्म गुर ॥
और जगनि ना होइ। व्याह मंड्यो सुधंम धुर ॥
रथ चौसठ्ठि प्रमान। रथ बर जोग प्रमानं ॥
बार बार पर बाज। बीर सज्जे उनमानं ॥
सा दुक्क दुक्क कर ना किरनि। सत्त सत्त सो बेद[3] बिधि ॥
चिचंग राव रावर सुधंम। करन मनौ प्रिथिराज सिधि ॥ छं० ॥ २२ ॥
हेम हयं गय जुगति। सचे मिष्टान पान बर ॥
बर कुबेर लभ्भैन। पार प्रथिराज राज नर ॥
चाव हिसि बर गांन। दांन चाव हिसि अप्पै ॥
ब्रह्म बेद कम छेद। सूर नहि सोरथ थप्पै ॥
जे जोग भोग जोगिंद नव। सो उग्गत महि भुल्लई ॥
प्रथिराज राज राजन बली। बलिन जग्ग सम तुल्लई ॥ छं० ॥ २३ ॥

(१) क. मो.—अक्कंम नट्ठए। (२) को. क. ए.—अक्रत। (३) मो.—देव।

दूहा ॥ धरम सुथिर राजन बली। देव दैव दुनि चाव ॥
चाव हिंसि सेा देषियै। लच्छि मेाख लषि भाव ॥ छं० ॥ ३४ ॥

छंद मेातीदाम ॥ जयं जय छंद जयं गुन रूप। कटावत हेम सु बारह भूप ॥
दिसं दिसि पूरि न्हपं न्हप थांन। मनेां विधि जग्ग किं देवन थांन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
रसं रस तेारन बंधत बार। मनेा नट वत्त कला गुन चार ॥
सुभै अति सेाभ सुभद्रच हेम। मनेां बर मेर बिराजत तेम ॥ छं० ॥ ३६ ॥
सबै बर बीर फिरै जिहि पास। मनेा बर भांन कलान प्रकास ॥
कढ़ै गर सुंदरि नान प्रकार। मनेां ससि भांन उगे इक बार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
बिराजत मुत्तिन बंदरवार। मनेां भुअ आंन मयूष प्रचार ॥
अहं अच्च उंच सु पंति विसाल। मनेां कयलासय सेाभति चाल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कथा कविचंद सु उप्पम थेार। बिराजत पंतिय कंतिय चेार ॥
धरैं धर अंबत पंच प्रकार। जचें तिन देत सँतेाष अचार ॥ छं० ॥ ३९ ॥
टगं टग लग्गिय दिष्ट प्रकार। दिषे चहुआंन कलाधर सार ॥
भली विधि रूप प्रकार प्रकार। सुभै जनु इंद्र सु जानिच द्वार ॥ छं० ॥ ४० ॥

कवित्त ॥ नच्चिन हेम पर भास। लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥
थांन थांन नवनिद्ध। देव जंपै सुदेव मन ॥
अनिम महिम गरिमास। लभि देवात महिधिय ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि। राज द्वारच बर बंधिय ॥
जीतिय जितीक सुरतांन निधि। प्रिथा व्याह न्निंमत करै ॥
धंनि धंनि धंन नव षंड भुअ। लंक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानेा इन्द्रपूरी है।

साटक ॥ हिंम हेमय द्वार दारुन गनं[1]। दीसंत लच्छी बरं ॥
पंच दून सु च्यारि रत्न गुन ए। सिद्धांत सारं गुरं ॥
संभया बारुन तारु नैव तनयं। धन पैार संधं गुनं ॥
जानिज्जै सुर लेाक इंद्र उदितं। धामं सचीवं बरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ह. मो.—नग।

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना।

छंद चनूफाल॥ धनि भ्रंम धनि प्रथिराज। गुन दच्छि लच्छि विराज॥
मधि जमुन मैं यों धांम। सुर नाक सुर विश्रांम॥ छं० ॥ ४३ ॥
धज दूंच फरहर रूप। सुरतान पठ्ठय भूप॥
चैलोक न्योतैं काज। मनो देव ब्याह विराज॥ छं० ॥ ४४ ॥
विधि वरन वरन सु धाम। कुब्बेर बरषिय काम॥
बर भ्रंम जग्गि प्रकार। सम दांन विनयह सार॥ छं० ॥ ४५ ॥
फिरि राज राजन चाल। लच्छि देव एवति पाल॥
षट पाल कै प्रथु पाल। .....॥ छं० ॥ ४६ ॥
मति भ्रंम भूपति साज। आनंद उछव विराज॥
जग्गि जोग जुग्गनि नैर। उच्छाह घर घर कैर॥ छं० ॥ ४७ ॥
बिधि भांन सुरपति भांन। चहुआंन तिन सम मांन॥
नव नेह ग्रह ग्रह दान। कवि करै कौन बषान॥ छं० ॥ ४८ ॥
बर जीह फनपति होइ। चहुआन ब्याहक जोइ॥ छं० ॥ ४९ ॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन।

छंद दृढ्नाराच॥ परठ्ठि सेन सज्जि बीर बज्जए निसानयं॥
नाराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं।
गजं गजं हिलं मलं चलं चलं गरिठ्ठयं॥
कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिठ्ठ उठ्ठयं॥ छं० ॥ ५० ॥
पच्छौ सुभीम भार सेा वराह कंध उच्चयं॥
चले सयन्न वंधि भूप चंद जंपि बोलयं॥
मनों दसंति काज सेन मेलि इंद्र तोलयं॥
दुरंत चोंर गज्ज सीसना सिंदूर राजयं॥ छं० ॥ ५१ ॥
मनों चिजाम कंठ सूर चंद बंधि लाजयं॥
.....
फिरंत डोरि कुंडली सुबाज राज दिप्पहीं॥

कै छप्प भेर चंद कब्बि ना थमंत पिष्पहीं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सु नष्पई सुरंग धाप बाज ताज उट्ठहीं ॥
मनों कि डोरि चक्करी सुछप्प छथ्थि नष्पहीं ॥
सुबीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रहई ॥
मनोकि तार नभ्भतेय काल तेज तुट्टई ॥ छं० ॥ ५३ ॥
सजै भजै मनं गतीय पुब्बता[1] कबी कहै ॥
सु अंषिका कुरंग गत्ति भांन देषिता रहै ॥
रजं रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥
उपम्म चंद कब्बिता कही तहां उतावलं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ पंच राइ पंचाल । लिअ वैराट बद्द वर ॥
जैत सींह भोंचा भुआल । का कन्ह नाह नर ॥
रा पज्जून नरिंद[2] । पांन ठंठरिय सिंघनग ॥
दह रावत आजांन । बाह बंधव सुवज्ज अग ॥
बंधन सुमीर मेवार पति । अति उछाह आनंद धरि ॥
संजुरिय[3] जांन छचन सहस । सहस अद्ध बज्जन सुघरि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ जस वेली वर छप्प वै । फल पुच्छै चित रंग ॥
बर सोमेसर छप्प दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ छं० ॥ ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन।

आयो बर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥
बाल बेस बनिता बनी । मनों संग रति मार ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सूर रूप रावर समर । बेस बाल सत पच ॥
प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित[4] रत्त ॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) छ. मो.—पुब्बका।
(२) छ. ए.—रा पजून पूरंन।
(३) मो.—संमिलिय।
(४) मो.—हितसत्त।

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का वर्णन।

छंद मोतीदाम॥ चढ़ी घर जाहिन बाल[1] बिसाल। रही लघुबेस लगी चिचसाल॥
तनं सुध बालय अंचल लेहिं। चषं चपला कुलटा गति केहिं॥छं०॥५९
चलावत चंचल अंचल नारि। मनों विधि देंहि कटाच्छन गारि॥
बंधे सुर नारि कयं सुर रंग। उरिं निरखें घन विद्युत अंग[2]॥छं०॥६०॥
झमं झम झेाइ सुझेम किरन्न। ससी पर झेाड़ मयूष अरुन्न[3]॥
मची बर बीरन पीकह[4] कीच। बरष्प कि मंगल सूर सु बीच॥छं०॥६१॥
झमं झम झेात करं नष पान। परी छवि झेाड़ रवी ससि जानि॥
तिनं मुष थीं नष में झलकाइ। न दिष्पहि उंच रहै ललचाय॥छं०॥६२॥
दिपै नग चीर चिराकन बांम। रचै जनु दीपक कामय स्यांम॥
सु उज्जल भेांन चिराकनि जेाति। फिरै तहां बाल जराइन केाति॥छं०॥६३॥
उदै जनु लिच्छमी कंति [5]बिगास। किधौं तप तेज किराज विलास॥
कहै कवि चंद उधम्म प्रकास। बन्यौ जनु प्रप्पन[6] तेज विलास॥छं०॥६४॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना।

कवित्त॥ बर कलस्स बर बंदि। बंदि तहनिय सर लिन्नौ॥
ग्रह सुरंग कवि चंद। तहां उप्पम बर दिन्नौ॥
घन चंदन बर पट्ठ। सिद्धिय सेाभा सुफटिक मनि॥
घन प्रबाल घुंभिय बिलास[7]। सिर सेाभ सुरंग फुनि॥
उत्तरिय बीर रावर समर। बर जेागिंद नरिंद गति॥
स्रृंगार बाल भूषन कहौं। जु कछु चंद बरदाइ मति॥छं०॥६५॥
दूहा॥ स्यांम बेस नन बालभय। घटि न कछूअ किसेार॥
दोष बाल बरनत कवियं। भयौ भेर घर चेार॥छं०॥६६॥
बर सुबस्त्र तजि बाल नें। सैसव[8] मिस सुंडारि॥
अब भूषन जब ग्रह करहि। जोवन चढत सवारि॥छं०॥६७॥

---

(१) मो०—बाम। (२) ए० ह्र० को०—दुरि देखत मेघ तड़ित्त सु अंग।
(३) मो०—अरंग। (४) मो०—बीरह पीकन।
(५) ए०—विपास। (६) मो०—दर्प्पन।
(७) मो०—विसाल। (८) मो०—शेाशव।

शृंगार का वर्णन।

छंद चोटक ॥ तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली। प्रगटी जनु कंद्रप जोति कली ॥
जुसँवारिय केस सुरंग सुगंध। तिनं बर गुंथि प्रसून सु बंधि ॥ ६८ ॥
तिनं उपमा सु कवै कवि सुद्ध। लग्यौ ससि राहु अभ्रंमय[1] जुद्ध ॥
चलें अलकें अलि चंचल घट्ट। लगी जुनु कालिय नागिनि पट्ट ॥छं०॥६९॥
जग्यौ ससि फूल भयौ मनिबद्ध। उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध॥
बियं उपमा कबरी सु अलप्प। चढे मनु[2] मेर ससी लय अप्प॥ छं०॥७०॥
सी मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि। तिनं उपमा बरनी सु विचारि ॥
परी रवि चौड मयूषन तार। भए जनु सिद्ध उधातम धार ॥ छं० ॥ ७१ ॥
बनी कबरी बर पुत्तरि बांम। अध्धातम पाठि पढावत कांम ॥
धस्यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ। मनों ससि रोहिनि आनि मिलाइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥

मनों ससि बीयक तीय समान। तिनं सिरसाइ लिलाट सुजांन[3] ॥
दुती दुतियं बरनो कवि चंद। दुयौ छबि देखि सरद कौ इंद ॥ छं० ॥ ७३ ॥
बनी बर भोंह सु बंकिय एह। मनों धनु कांम धरं विन जेह ॥
कहौं वर नासिक ओपम एह। सु काम भवन्न कि दीपक तेह ॥ छं० ॥ ७४ ॥
द्रगं उपमा दुति यौं दमकै। सु मनों सुत षंजन के चमकै ॥
जु दिषै बर भाइ दुलोचन कोर। मुचावत कांम कमान के जोर ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाटंकन की उपमा इतनी। जु कही कवि चंद सुरंग घनी ॥
जु सुन्यौ रवि राहु ग्रह्यौ ससि चै। सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै ॥छं०७६॥
उपमा सु कपोलन की चिलकै। जु मनों ससि ह्वै रवि में झलकै ॥
जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की। तिनकी उपमा कवि नै मनकी ॥ छं॥ ७७ ॥
दुअ पास कपोलन तेज कुयौ। मनों तारक सै ससि उग्गि उयौ ॥
जु चिबुकन की उपमा चिलज्यौं। मनों भंग सुता सितपच तज्यौं ॥
छं० ॥ ७८ ॥

(१) मो०—अधर्म्मय।
(२) मो०—मनौं।
(३) ए० ब०—सुजानि।

कल ग्रीव विवच्छिय रेष वनं। सु अछौ मनु कन्धर पंच जनं॥
विय बाल सुमालन लाल सजै। सुध सी जनु भारति नभ्भ तजै॥ छं०॥७८॥
गुँथी पट स्यांम सु मुत्तिय माल। भयौ जनु तीरथ राज विसाल[1]॥
उठी पट कुहिय कंचुकि वांम। कि जीवन कों चिपुरं चलि कांम॥
छं०॥ ८०॥
कछू छवि छत्तिय की बरनं। सु रछौ मनों कांम तिनं सरनं॥
बर लंकिय लंकय सिंघ कितौ। वर मुंहिय मांहि समाइ तितौ॥ छं०॥ ८१॥
* पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै। * मृगतिस्नह देषि मनौं सु चुकै॥
कटि मेषल उप्पम एह धरं। मनों नौग्रह सिंघ सहाइ बरं॥ छं०॥ ८२॥
सुभंत समुपित अंगुरि तच। मिले गुरु मंगल हस्तनि षच॥
बनी कर पैंचिय पहय स्यांम। तिनं उपमा बरनी बर ताम[2]॥ छं०॥ ८३॥
लटकै बर अंग सु फूंदन लाष। झुलैं मनुं नागिनि चंदन साष॥
बरनों मनि बट्टि बढंत नितंब। सुभै जनु उज्जल है रवि बिंब॥ छं०॥ ८४॥
सकोमल जंघ सु रंग सुढार। भ्रमी मन चित षरादिय मार॥
सजे बहु वार सिंगार सुरत्ति। चली तब हंस उथप्पन गत्ति॥ छं०॥ ८५॥
सु एडिय उप्पमता कवि एह। रची जनु कौरिय कुंद नरेह॥
बरने नख की उपमा कविता। सुजरे मनुं कुंदन मुत्तियता॥ छं०॥ ८६॥
†जल बूंद पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति। †कि तारकि तेज कि हीर प्रभत्ति॥
बर गोप्प सुगंध सुजांनियनं। प्रगटै बर बास सदेव घनं॥ छं०॥ ८७॥
षट दून चवग्गुन में बरनं। सिनगार अभूषन ए कहनं॥
तब सज्जिय बालत मोर मुषं। उपमा कविचंद कही सुरुषं॥ छं०॥ ८८॥
दून भाइ सुमुत्तिय गुंज[3] बहोइ। द्रिगं अधरं प्रतिबिंब सजोइ॥
करैं रंगरत्त दुकूल सु ओर। झुलै मुष जरध पाइ झकोर॥ छं०॥ ८९॥
बन्यो मनवंछ मनोरथ जंम। करे जच चंद जु धूरिक क्रम्म॥
मिले कि कंहू अधरा रस पांन। कहै कविचंद सु जीरन जांनि॥ छं०॥ ९०॥

(१) को०—प्रयाग।
* ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं।
(२) मो०—कवित्तांम।
† ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं।
(३) मो०—गज।

सु देषि कह्यौ कविरूप अभ्यास। मनों उठई मकरंद सुवास॥
सजे षट दून अभूषन बाल। मनों करि कांम करी रति माल॥ छं०॥८१॥
सु लज्ज सु संकर सों मन अंध। मनों अरनांमद अग्ग सुबंध॥
धस्यो तन कौरव वस्त्र कुंआरि। मंडी जनु संभ मनंमथ रारि॥छं०॥८२॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समरसिंह का मंडप में आना।

कवित्त॥ सय सुपंच वर विप्र। बेद मंचं अधिकारिय॥
उभय सहस कोविद्द। छंद तक्कह[1] अनुसारिय॥
सहस एक मागध सु। सिस्त पैरांन पविचिय[2]॥
सहस अठ डाढालगत। गाइन सुर जित्तिय॥
उडिरेन धेन गोधूल कह। सहस दोष कहन घरिय॥
संभरिय ग्रेह[3] आहुठ्ठ पति। मिलि विधान[4] मंडप भरिय॥ छं०॥ ८३॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन।

छंद नाराच॥ विधांन धान मंडपं। जवांन जग्ग[5] पत्रयं॥
विपष्प चारि कित्तनं। समर्ध दैव रत्तनं[6]॥ ८४॥
धुनह धुंम्म सालियं। अषंड खंन वालियं॥
प्रजान पुन्य पानयं। सु पंच कोटि दानयं॥
सभूत भेम लच्छिनं। अभूत दांन दच्छिनं॥ छं०॥ ८५॥
दमित्त काम संवरं। कलंक कित्ति रावरं॥ छं०॥ ८६॥
भ्रमेंन भूमि भारियं। ग्रहंत पांनि धारियं॥
कुसंभ चीर गंठियं। प्रथा प्रसंग पठ्ठियं॥ छं०॥ ८७॥
सु सद्दियं जयं जयं। सु सद्द विप्रयं लयं॥

---

(१) ए० को० छ०—तक्कं।
(२) मो०—पवित्तिय।
(३) मो०—एह।
(४) ए०—विधान।
(५) मो०—जग।
(६) यह तुक मो० में नहीं है।

अरुन्नयौ सु उद्दयं। सिकार सद्दयं सयं॥ छं० ॥ ९८ ॥
अचिज्ज सिद्ध चारनं। विचार बार बारनं॥ छं० ॥ ९९ ॥
दूहा॥ परनि बीर रावर समर। बहुत कहूं रस जोइ॥
कवि वर बरनत ना बनत। और सुभष बहु होइ॥ छं० ॥ १०० ॥
करे चंद बरदाइ दुहुं। बार बार मनुहार॥
राज राज ढिग ढिग फिरै। मनों समहु रविसार॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां बिवाह मंडप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है।

कवित्त॥ चौहानन के ग्रेह। इंद्र जचि[1] होय अग्नि बर॥
अष्ट देव सत सील। नाम[2] संतोष मंच बर॥
सहस गयन बर राज। धीर ढिल्ली अधिकारिय॥
जच्छ देव गंधब्ब। जयति जै जै उच्चारिय॥
दिव देव लगन आवै घरी। तिम तिम बाढै पेम रस॥
ज्यौं चढे समुद्द चिल्लोर बर। तिम सु बीर बहुति जस॥ छं० ॥ १०२ ॥
दान सकल सामंत। न्यांत अग्गै अधिकारिय॥
इंद्र साज कुब्बेर। इंद्र वासम न विचारिय[3]॥
बचन रचन सचि कहहि। देव सचि कहै ग्यान सधि॥
अष्ट जोग भुल्लै सभोग। निरषंत सकल सिाध॥
जे जे नरिंद संभरि धनी। संभरि विधि संभरि चरित॥
भूपाल बीर दरबार बर। तिहिन देव लागे सुगत॥ छं० ॥ १०३ ॥

सांमतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन।

छंद भुजंगी॥ प्रथंमं सुकन्हं निवंत्यौ सु राजं। कही उप्पमा चंद कब्बीति साजं
प्रतं[4] एक बाजी करी पंच दूनं। दियौ राज कन्हं निवंतौ स ऊनं॥ छं० १०

(१) मो०—जब। (२) ए०—नांम।
(३) मो०—प्रति में "दान बरषत जलधारिय" पाठ है।
(४) को० छ० ए०—सितं।

लक्खी वस्त्र हेमं नगं पारि पारं। तिनं देषते देव गत्ती विचारं॥
दियं निडुरं राइ रट्ठौर राजं। भुजंगादि भुल्लै कवै सब्ब साजं॥ छं०॥१०५॥
दियं बंध राजं सलष्षं पधारं। धनं राइ कुब्बेर लभ्भै न पारं॥
मद्दा दंत दंतीन की पंति बंधी। दरब्बार मानों नगं जोति संधी॥ छं०॥१०६॥
दियौ जाम जहों सु वहो जुवानं। सवस्सं दसं हेम गज एक पानं॥
दियौ राज षीची प्रसंगंति बीरं[1]। उभै दून छष्षी छयं सुत्त सूरं॥ छं०॥१०९॥
रजक्की सु वस्त्रं अनेकं प्रकारं। दिषै बीर बीरं मद्दा बीर सारं॥
दियौ राज गौदूंद आदुट्ठ राजं। दियं तीस छष्षी मद्दातेज साजं॥ छं०१०८॥
दुकं माल मुत्ती उतंगं सरूपं। तिनं देखतें भांन कंनं न भूपं॥
अनत्ताइ दीयौ लियौ नाहि राजं। हुतौ ईस भक्तं उदै देव साजं॥ छं०॥१०९॥
चिया रूप आगें मद्दा पाप लच्छी। तिनं राज राजं निरष्षी अनक्खी॥
दियौ राम राजं रघुब्बंस बीरं। तिनें पार कुब्बेर लभ्भ न तीरं॥ छं०॥११०॥
उभै सुत्त बाजी उभै सुत्त छष्षी। तिनं सष्ष एकं किरन्नी बिरष्षी॥
उऐ एक राजं दियौ एक भानं। दसं तेज राकी पराकी प्रमानं॥ छं०॥१११॥
दियं सुत्त बंधं कनक्कू बिराजं। उभै सहस हेमं दुकं बाज राजं॥
कियौ राज न्यौंतै अजम्मेर बीरं। सदा सागरं गौरयं लाज नीरं॥ छं०॥११२॥
दिए पंच बाजी सुरंगं तुरक्की। जिने धावतें वाइ की गत्ति थक्की॥
दियौ राज चंदं पुंडीरं सु बीरं। मद्दा हेम सहसं उभै बाज तीरं॥ छं०॥११३॥
दियौ राज कैमास न्यौतौ नरिंदं। घरं पंचमौ भाग लच्छी स व्यंदं।
जितौ राज राजं दरब्बार हेमं। तितौ पंचमौ भाग अप्पौ सु तेमं॥ छं०॥११४॥
दियौ चाइ चामंड लच्छि प्रकारं। नवं निद्धि सिद्धं सुलभ्भै न पारं॥
रह्यो एक वस्त्रं उभै पंच बाजी। दियौ राजराजिंद राजिंद साजी॥ छं०॥११५॥
दियौ अल्हनं अंग दुत्तौ प्रकारं। तिए तात के नग्ग सिज्जे सुधारं॥
छयं हेम रूपं गयदं सु लच्छी[2]। जिनं देषतें इंद्र वौ अब्ब गच्छी॥ छं०११६॥
दियौ दान सूकम्म[3] सादस्स मोरी। दुकं बाज बीरं रजं पंच कोरी॥
दियौ राज चंदेल भोंचा विचारं। तिनं न्यौंत कौ कोइ लभ्भै न पारं॥ छं०११७॥

(१) को०—धीरं। (२) ए० ओ० ब्र०—में "तिनं अंग अंगं विरष्षं सुलच्छी" पाठ है।
(३) ए० को० ब्र०—सूकस्स।

नगं पंच मुत्ती इसी अट्ठ माला। जिनें द्रव्व कौ छेद आवै न पाला॥
बँधे साहि गोरी लही तस्स बीरं। दई राज चौहांन न्योतें सरीरं छं॥११८॥
सतं पंच बाजी सतं अद्ध हथ्थी। तिनं देखतें तेज कुब्बेर नथ्थी॥
दियौ राज जंधाल जहां नरिंदं। तिनें नांम भीमं महातेज कंदं॥छं०॥११९॥
दसं बाज पंचं इकं[1] मुत्ति मालं। तिनं तेज आइत्त रवि किरन झालं[2]॥
चसं मीति च्यारं सयं समरकंदी। गुरं राम दीयौ मनौं राज इंदी॥
छं०॥१२०॥
लियौ ना सुराजं कछू नाहिं रष्यौ। पछै धर्मं राजं सु राजं बिसष्यौ॥
दियौ बीर चालुक्क बाहार बीरं[3]। सिरं काज राजं सुभारथ्थ भीरं॥
छं०॥१२१॥
नृपं हथ्थ देतं सु सेवक्क मंडै। महा छत्र छत्री न छत्रीन षंडै॥
चल्यौ राज प्रथिराज दै हथ्थ तारी। तिनं भारती कौन आवै प्रकारी॥
छं०॥१२२॥
दियौ टांक चाटा चपल्ल प्रकारं। इकं बाज तेजं मनौं अग्नि सारं॥
दियौ वग्गरी देव देवाधि दानं। सहस्संत बाजी दियं बाहु पानं॥छं०॥१२३॥
दियं अंबरं छाव सै पंच दूनं[4]। तिनं तेज आइत्त देषंत भूनं॥
डुल्यौ सर्व सामंत कौ गर्भ भारी। पकें दौन सीसं दियं हथ्थ तारी॥
छं०॥१२४॥
दियौ राज हम्मीर चाहुत्थि इंदं। तहां कब्बि चंदं उपम्मा सु छंदं॥
मृगं नाभि कप्पूरयं गुंट बाजी। दियौ मुद्ध[5] मुष्टं तनं तेज साजी॥
छं०॥१२५॥
इकं कास मीरं पची संनी षंभं। इकं भद्र जातो सु हथ्थी अचंभं॥
सबं सट्ठि हज्जार भारं प्रमानं। दियौ चारके कष्ट सोभिनं दानं॥छं०॥१२६॥
दई एक मालं सुमुत्ती सुरंगं। दिनं एक कौ मौल आवै सुभंगं॥
दियौ नीति रायं सुषिचीय दानं। षिभ्यौ राज चहुवान घल्यौ न पानं॥
छं०॥१२७॥

(१) मो०—नगं। (२) को०—जालं। (३) ए० ब०—बीजं।
(४) ए०—पूनं।
(५) मो०—धुमीज।

दई भांन भट्टी निधी ताप कारं। उभै एक बाजी तुछं द्रव्य धारं॥
दियौ बीर पाचार न्यौतौ प्रमानं। तिनं दांन कैमास कों आद्द थानं॥
छं० ॥ १२८ ॥

मुरं दोइ बाजी सु तत्तं प्रकारं। दई लष्ष दूनं अधं तानि तारं॥
दियं अल्हनं दानयं भत्ति घट्टी। इकं बाज रूपं अधं सद्दस पट्टी॥ छं०॥१२९॥
इतौ अब्ब सामंत दीनौ प्रमानं। सगा रथ्थदानं करै को बषानं॥छं०॥१३०॥

कवित्त॥ जालंधर बर बाइ। बीर थट्टा मुलतानी॥
बंग तिलंगी तुच्छ। कारनट्टी निद्धानी॥
बर गोतम दिसि गंग पार। परबत दिसि राजं॥
माद्द मालव राज। बीर बीरद्द गति राजं॥
कुंकुन सकुंच कालिंग दिसि। कंदलेस कछ अच्छु गति॥
नृपराज राज राजन बली। सुबर बीर जा बीर मति॥ छं० ॥ १३१ ॥

पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा।

कवित्त॥ बलिय राज प्रथिराज। सुभ्रत सगपन सु द्रष्ट[1] गति॥
बब्बल कौ बल राद्द। सबर बीरद्द सुबीर मति॥
सुत्त मत्त रजपूत। फिरे चाव दिसि धारं॥
अंग अंग तनु कुल्लै। क्रम्म सा क्रम्मय सारं॥
मति गरुव राज राजन बली। धरैं अंभ लभ्भ सुधर॥
चिचंग राव रावर बली। उंच सगपन तत्त बर॥ छं० ॥ १३२ ॥

कवित्त। अति उदार पहु पंग। सुनिय जग बत्त अवत्तं॥
बलिय भाव आदरन। पर्व सम पवित्त समत्तं॥
बहुरि गरुअ तौ अर चिनेत। मानव मातुल गुर॥
तिद्दित राज चिंतयौ। भ्रंम मूरति बिवाद्द धुर॥
इक मात पुत्र आनंग वर। दै भगनी दै पुत्र जनि॥
संसार संभरिय राज गुर। भए सलष या परि सुभनि॥ छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो०—दृष्ट।

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन।

अनग पाल तोंअर सु। धम्म धारन उद्धारन॥
बंस बीय मातुलह। भए दै बीर सुभारन॥
कलि तारन अरि देह। जुगनि कित्ती विस्तारन॥
चाहुआंन कमधज्ज। बंस मातुल गुर पारन॥
प्रथीराज दिल्ली नृपति। चिचंगी बर चिंतयौ॥
पंचमि विवाह पंचमि घरिय। भले मुहूरत में भयौ॥ छं० ॥ १३४ ॥

कवित्त॥ व्याह मद्धि करनेस। जग्य मधें चित डोले॥
दूनौ पाप कविबंध। देव देवासुर बोले॥
ज्यौं चारन घर[1] निंद। जाइ भुक्तै अनुधारी॥
सा सुरिंद संग्रहै। दोष लग्गै जुग भारी॥
ग्यार सें अंन भषह सुहृत। मद्दा दोष अति ही सुबर॥
बडबंध छोडू निग्रह घरन। लघु बंधष हुअ नरक पर॥ छं० ॥ १३५ ॥

विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दाम दहेज देना।

छंद पद्धरी॥ तिन मध्य विराजत राज राज। निर्मलिय कला रवि तेज साज।
ज्यूं जुगनि जूबवर करन भोग। आए सु राज राजन सुभोग॥ छं० ॥ १३६॥
आए सुराज तिस्सुत नरिंद। हाडाल क्रंन क्रन्नह सुभ्यंद॥
पंचाल देस सोमेस सूर। झलकंत मुष्य चमल सनूर॥ छं० ॥ १३७॥
आए सु बीर किन्नाट कर्न। धूंमह सुदेव धूम्मह सुपंन॥
एलची देस भंडेर बीर। आए सु कोटि मुष तिनह नीर॥ छं० ॥ १३८॥
देवत्य व्याह चहुआंन कीन। दंध्यं सु व्याह सम बरह चीन्ह॥
अप्पी सु पुचि सिवरह सु ग्रेह। कल बढी कला जिन लीन देह॥ छं०॥१३९॥
अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमांन। आवन्न व्याह दुग्गह निधान॥
मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन। सिंगार सार सत सहस दीन॥ छं० ॥ १४०॥
हुअ व्याह जनक सीता प्रकार। मिलि जग्य राज राजन सुभार॥
संभरि नरेस सोमेस पुत्त। रस मांनि बीर अब धूत धुत्त॥ छं० ॥ १४१॥

(१) सो०-धर।

साटक ॥ ऐ सोमेस सुब्रंन संभरि जयं । तारंग सूरं बरं ॥
सा दुज्जं दुज भ्रंम्म देवति धरा । आई अहंजं षलं ॥
तामध्यं नृप अंस सोम नृपयं । नामं नरिंदं धुरं ॥
प्रिथ्थू नाथ सनाथ जग्य करनं । राज्यंद राजं गुरं ॥ छं० ॥ १४२ ॥

व्याह के पीछे दर्बार में आना ।

कवित्त ॥ दलन मंच सब राज । आइ दरबार सु इंदं ॥
ज्यों नछित्र विंटयौ । सरद सोहै अति इंदं ॥
कनक पंति नग व्यंट । भांन विंध्यौ सुमेर बर ॥
जस विंध्यौ बल लोई । ईस विंध्यौ सु जटद्धर ॥
यों विंध्यौ राइ सेमेस सुत्र । सबल राज राजन गरुअ ॥
आरत्ति बीर देषति नृपति । भांन चंद लग्गै चरुअ ॥ ॥ छं० ॥ १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा ॥ चरुअ सु लग्ग सु अर गिरि । गरुअ लगै प्रथिराज ॥
चावहिसि लक्खी सु जन । काजन मुक्किय काज ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा ॥ लयौ जनम या कज्ज नृप । धर धर धरपति कांम ॥
चाव हिसि भूपति सुभे । जु ककु भूमि पर षांम ॥ छं० ॥ १४५ ॥
छन्द पद्धरी ॥ जो ककू राज राजन नरिंद । सो भये कांम प्रथमीस इंद ॥
नर वर नृपत्ति दीसै प्रमांन । उज्जले गंग ज्यों भ्रंम ध्यांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
बर सुबर बीर पग मुक्कि धीर । बहु द्रव्य इंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि अंग ग्रह ग्रह प्रमांन । उच्छाह लोइ मंडै निधान ॥ छं० ॥ १४७ ॥
कनबज्ज बीर मुक्की सु लच्छि । तिहि देषि इंद्र कौ ग्रब्ब गच्छि ॥
कुब्बेर कोपि अंतह निरष्पि । सो ब्रंन धार ग्रह ग्रह बरष्पि ॥ छं० ॥ १४८ ॥
बहु बंधि संधि मनु देव काज । मंगल सु जोर नीसांन बाज ॥ छं० ॥ १४९ ॥

राबल का रनिवास में जाना ।

दूहा । बर बंदे सुंदरि सकल । चावहिसि फिरि पंति ॥
मनुं अंग अंग अनंगनह । रति बर राजति कंति ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) सो०-बलं ।

कवित्त ॥ वरनि चारु उप्पर। उनंड अच्छित मुत्ताहल ॥
ससि उप्पर ससि किरनि। धीर सुषे गुन चाहल ॥
चावहिसि अंगनां। अंगनं मित गुन मंडहि ॥
एक एक कों मिलत। एक लज्या तन षंडहि ॥
प्रिथा दिष्पि झंषि चिचंगपति। अच्छित मंचह विक्रति ॥
ओडंत ओट ओटन कियैं। अंनयं नारि नंषै सुहत ॥ छं० ॥ १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना।

छंद भुजंगी॥ वियं अंग अंगंति अंगं तिरंगं। बुले बेद बेदं सुजं मचं भंगं ॥
कला की अनेकं प्रकारंत व्याहं। टरै लग्न साहं महं मंत राहं ॥छं०॥१५२॥
दियं हस्त थालं तिलक्कंति राजं। तहां चंद कब्बी उपम्माति साजं ॥
मनों क कमोदंत ज्यौं इंद साजं[1]। मिल्यौ आइ चंदं सु मुत्तीति पाजं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
दिसा देव मंचं अमंचंति धारैं। नृपं भ्रंम सोधै विधी देव टारैं ॥
बुले बिप्र अंगं सु विद्धी सुबेदं। मनों देवता अग्ग भूले सषेदं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
नृपं राह दिट्ठं कहरंति टारै। फिरैं भावरी भांन सुम्मेर सारै ॥ छं० ॥ १५५ ॥

ऋषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरा फिरे।

कवित्त ॥ श्री पति साह सुजांन। देस थंभह सँग दिन्नो ॥
अरु प्रोहित गुर रांम। ताहि अग्या नृप किन्नो ॥
रिषिकेस दिय ब्रह्म। ताहि धनँतर पद सोहै ॥
चंद सुतन कवि जल्ह। असुर सुर नर मन मोहै ॥
कवि चंद कहै बर दाय बर। फिरि सुराज अग्या करिय ॥
करि जोरि कह्यो पीथल नृपति। रावर सत भावरि फिरिय ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दोहा ॥ निगम बोध गोतंम रिष। थिरि जेहि दिल्ली थांन ॥
दास भगवती नांम दे। प्रिथीराज चहुवांन ॥ छं० ॥ १५७ ॥
रिषीकेस अरु राम रिष। बहु विध देकर मांन ॥
प्रिथा कुंवरि परनाय कै। संगि चलायै जांन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

(१) मो०—छाजं।

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना।

कवित्त॥ एक फिरत भांवरी। साठि मेवात गांम दिय॥
दुतीय फिरत भांवरी। दुरद दस एक अग्गरिय॥
चितिय फिरत भांवरी। दयौ संभरि उदक्क कर॥
चौथी भांवरि फिरत। द्रव्य दीनौ अनंत बर॥
चहुवांन चतुठ चावहिसा। हिंदवान बर भांन बिधि॥
गुन रूप सहज लच्छी सुबर। सहज बीर बंधी जु सिधि॥ छं०॥ १५९॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन।

छंद भुजंगी॥ अनेकं अनेकं प्रकारंत सब्बी। करै राज धम्मं सुतं धम्म कब्बी॥
मिले सर्व छिची इते व्याह राजं। तिलभ्भै नहीं नेक राजं सुसाजं॥छं०॥१६०॥
मद्दं भाजनं रंग रामं प्रकारं। कला अट्ठ मांनों सु चष्यं पसारं॥
रतं नील रेनं किते स्याम सेतं। तहां ओपमा चंद बरनै सहेतं॥ छं०॥ १६१॥
गुरं भांन चंदं अरी राह राजै। मनों एक नषिच सज्जे बिसाजै॥
उडंतं अबीरं घनं सार रंगं। तिनं देवता बास भूलंत भ्रंगं॥ छं०॥ १६२॥
किते भेद भेदंत मिष्टांन रूपं। तिनं बास देवं लगै सोम भूपं॥
बिधं कुंड मंडप्प मंडे उतंगं। तिनं बास झौरं अली भूलि संगं॥ छं०॥ १६३॥
जिती विद्द चिचंग गावै अपारं। दियै विप्र गारी सबं भक्ति सारं॥
तुमं मद्दि छिची न जानंत तत्तं। तिनं बंस कोनं सु पुक्कै अभीतं॥ छं०॥१६४॥
रसं रच्चि छच्छी बडी पग्ग डट्ठी। तिनं डुंढि ढंढात नीके लिपट्टी॥
बडे राज देवत्त बं सल्ल नारी। सराधार भारं बनी सचु चारी॥ छं०॥ १६५॥
तुमें चित्त चिचंग चित्तं बिचारं। तुमं ब्रह्म बंसं धरें सचु भारं॥
दियौ राज चारीत रिषं प्रमानं। कयौ तप्प एकं गए कंग थानं॥ छं०॥ १६६॥
सिवं लिंग बिम्भे तुष्यो सो अघाटं। तिनं ठांम नामं धयो मेद पाटं॥
रमै विप्र साथं सु चारीत रिष्यं। करै सेव बालं स आइत्त सिष्यं॥ छं०॥ १६७॥
किते छेद भेदं किते गान गावै। किते देवता सेव पुष्पं चढ़ावै॥
करै रष्षि तप्पं दिनं गंग न्हावै। तहां उज्जलं गंगपं नीर धावै॥ छं०॥ १६८॥
करै अंग कष्टं सधै पंच अग्गी। महा तेज छीनं तनं पंच नग्गी॥
कियं पूरनं तप्प तथ्थं स अग्गं। लियं लष्प चारी अचारी सु मग्गं॥छं०॥१६९॥

जिती काल बेसं वचै बाल पत्या। तिनं देषिकैं सद्द जाजुल्य गत्या॥
रिषं उंच तेनं षिनं मोल चायं। नहीं मुष्य मंद्यौ लियौ भेलि पायं॥छं०॥१७०॥
चल्यौ अद्ध सीसं किये उद्ध पायं। मद्दा तेज दुःष्पं दिष्यौ रिष्य रायं॥
नमो मंच मंची नमो घोसपालं। दियौ राज बंसं जमं कौ बिसालं॥छं०॥१७१॥
रयं मंच प्रम्मान दिष्यौ सुरिष्यं। दई भूमि जुग्गं जुगंतं विसष्यं॥
तिनं बंस चिचंग चिचं सु राजं। परं नीति बीरं प्रिथा बाल काजं॥छं०॥१७२॥

छंद गीता मालती॥ ढलकंत बेंनिय बाल सेंनिय मृग्ग नेनिय गावहूँ।
मधुरं सबद्दं रचसि बद्दं चद्द चद्दं भावहूँ॥
बै स्यांम सेारं गुनति गेारं चिच सेारं सेाहहूँ।
गुज्जंत[1] थेारं उठे केारं बेस भेारं मेाहहूँ॥ छं०॥ १७३॥

बिवाह की शोभा का वर्णन।

कवित्त॥ विधि शृँगार रस बीर। हास करुना तन चारिय॥
रुद्र भयानंक मंत। करी करुना ता वारिय॥
करुना तजि रस अट्ठ। भयौ नृप राज बिवाहं॥
सुष सनेह धन ग्रेह। राज जोगिंदनि साहं॥
सुष व्याह सजन सम वृत रवन। गई नट्ठि चय जांम निसि॥
सद्ददेव देव देषन चलद्द। भुगति मुगति धन राज बसि॥ छं०॥ १७४॥

दूहा॥ सा सुंदरि सुंदरि सुकथ। रस[2] दरसन परिमांन॥
मनों देव देवाल बजि। बर दुंदभी निसांन॥ छं०॥ १७५॥

छंद भुजंगी। बजे दुंदभी भेरि देवाल थानं। करे युक्ति रुपं अनेकं प्रमानं॥
न्रिपं भीर जैसीं दरब्बार थानं। मिले षंड षंडं सुराजान जानं॥ छं०॥ १७६॥
प्रिथा रूप आगैं प्रथी कौन जैसी। जनक्कं सुदारं सिया रूप कैसी॥
भुगत्ती मुगत्ती चितं तादृ कारं। सबै दिष्षियं राज राजं दुआरं॥ छं०॥ १७७॥
मद्दा भेाजनं ते प्रकारं विलासं। तिनं स्वाद तें देव छंडै न पासं॥
रचै अग्नि स्वादा सुदेपत्ति सेाऊ। मद्दा जग्य जापं अहूतंत सेाऊ॥
छं०॥ १७८॥

(१) ब्र०—उजेत। (२) को० ब्र०—सर।

छिन छिन्न लंका सपत्तौ विराजै। दिनं अष्ट ग्रेहं रचै द्वार साजै॥
सुई राज लच्छी न पूजै सुकंती। जये देवता जग्ग में जीमवंती॥ छं०॥१७९॥

कवित्त॥ बहुत मंसधन सार। असन बलमीन समंछत॥
अनँग जोग फल अनत। पान मिष्टान असंछत॥
छिति छिची विधि सजहि। देइ लछी लछि रुपं॥
रंक रंक गति छंति। होइ राजिंद सुभूपं॥
नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु। चाहुआन रंजे सुभर॥
जानियै राज राजंन कै। सुरा थान माया सुघर॥ छं०॥ १८०॥
अग्र दीप धनसार। बंटि मृगमइ पान रस॥
बहुत सरस रस राज। दिष्पि प्रतिब्यंब अप्प जस॥
अरति व्यंद अरबिंद। कमल कैरव ससि सागर॥
भुगति मुगति संग्रहै। मुकति भंजै अति आगर॥
मय मंत कूअ[1] अप्पा अषम। लषिन बतीस सुवंधि गुन॥
तिहि काज भोज राजन करत। उक्कहं प्रथिराज मन॥ छं०॥ १८१॥

दूहा॥ माया मोष[2] सु देषि कैं। गति भूले चालाहि[3]॥
मानें मंच सुमंति[4] गति। बर ब्रह्मा वस भांहि॥ छं०॥ १८२॥

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन।

कवित्त॥ एक एक रन जोग। गरुअ हरुअत्त चित्त बिधि॥
सांम दांन लघुमंति। कंति मग्गीति संति सिधि॥
अबलि बाज गज एक। उभै अप्पै नर वस्त्रं॥
हेम हीर रजकीय। पार पावै ना मंतं[5]॥
गरुअत्त गरुअ भय भ्रत्त हों। सत हथ्थिय करनिय जुगति॥
प्रथिराज राज राजन वलिय। देव दांन राजन भुगति॥ छं०॥ १८३॥

कवित्त॥ राज दांन विधि देत। लग्गि आचिज्ज थांन चिय॥
नाग लोक सुर लोक। रवी मंडल नर नर हिय॥

---

(१) मो०—कुआ। (२) मो०—सोभ। को०—सोख।
(३) मो० कु० को०—चलाहि:।
(४) ए०—को०—कु०—मंत। (५) मो०—मत्रं।

छयति कंति कंतियति। छथ्थ पंतिय रवि राजै॥
सु कवि चंद बर दाइ। देषि देवाधि सु लाजै॥
बदि राज धांन संभरि धनी। किहि बिधि लछी लछैं गुनी॥
बेंढ सुगंग उड़गनति नभ। पत्त तरोवर गिर घनौं॥ छं०॥ १८४॥

दूहा॥ दांन मांन निरमांन गुन। भगति रत्ति नृप जोर॥
कहा दिष्पि कोइ लेइ निधि। भयौ भरे[२] घर चोर॥ छं०॥ १८५॥

दूहा॥ तन अग्गै मन चलत है। मन अग्गे तन जाइ॥
जिहि बिधि दांन सु उच्चरै। तिहि विधि पाप सु जाइ॥ छं०॥ १८६॥

दूहा॥ कम्मसु अति विधिनां रची। अंग रोर सिर पान॥
तिन भंजन सोमेस सुअ। धनि संभरि चहुआन॥ छं०॥ १८७॥

चौपाई॥ दिसि दिसि पूरिय छय गय राज। प्रिथीराज सुरपुर सम साज॥
बाजै पंच सबद बनि रंग। रहबनि द्वादस सूर अभंग॥ छं०॥ १८८॥

कवित्त॥ एक दीह निद्धरह। राज रष्यो चिचंगी॥
* दुतिय दीह सामंत। गरुअ गोविन्द अभंगी॥
तितिय दीह पज्जन। बस्सि कूरंभ सुधारी॥
चतुर दीह नर नाह। कन्ह कीनी किति भारी॥
पंचमै दिवस कैमास बनि। बलि सुराइ सम जग्ग किय॥
छहैं सु दीह पुंडीर धनि। धीर रष्यि कीरत्ति लिय॥ छं०॥ १८९॥

कवित्त॥ सत्तम दिन रघुवंस। राम करनी कर मेरं॥
जिहि नंदी पुर भंजि। समर मनुहारि सुबेरं॥
अट्ठम दिन अचलेस। अचल कीरति जिन रष्यी॥
नवम दिवस पाहार। जगत दारिद्द सु नंषी॥
दसमें पँवार धाराधि पति। सलष सु लषि पूरन्न विधि॥
दिन एक एक रष्ये सवन। पंच च्यार लुहाय निधि॥ छं०॥ १९०॥

---

(१) ए॰ क्ष॰ को॰—उड़नति। (२) मो॰—भस्यो।

* एं॰ को॰ क्ष॰ प्रति में "दुतिय गोविन्द सु दीह। गरुअ सामंत अभंगी" पाठ है।

रावल का बारह दिन तक बारह सामतों ने अपने अपने यहां नेवता किया।

कुंडलिया ॥ रष्पि उभय षट[1] बीर बर। बर जंघारो भीम ॥
जिहि ओलें प्रथिराज की। को अरि चंपे सीम ॥
को अरि चंप्प सीम। देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यौ चिचंग। समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधान न्हिमान। द्रव्य अर्चन करि चष्यौ ॥
रावर समर नरिंद। ज्योति द्वादस दिन रष्यौ ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना।

दूहा ॥ षट बीय द्यौस रषौ सु नृप। भर सु भांति बहु राज ॥
दिन बारह चिचंग पति। बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० ॥ १९२ ॥

कवित्त। बजि बाजन अनुराग। सबर उच्छव बर धारिय ॥
नूर धूप नें अक्क। पंड इथिनापुर सारिय ॥
हुअ उक्काह दिल्लीस। बंधि गुड्डिय ग्रह[2] धारं ॥
मनौ सेाम कल कोट[3]। करिय कच्च बल बिस्तारं ॥
धन ग्रहनि ग्रेह उच्छाह हुअ। चाहुआन रवि वहयौ ॥
बेनिय[4] सुजस्स पुरषातनह। बल अनंत घट चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ १९४ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन।

छं० मोतीदाम ॥ इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार। सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन चार। इसेा गुन पिंगल नाम उचार ॥ छं० ॥१९५॥
दसेां दिहि पूरि नृपत्तिय सेन। बिराजय राज अनंद सु जैन ॥
सुधिं सुधि बीर प्रकार प्रकार। चलें संग दंपति ज्यों रति मार ॥ छं० ॥१९६॥
ठनंकिय घंटनि हथ्थिय पूर। किनं किय बाजिय साजिय सूर ॥
इकं इक हथ्थिय दासिय पंच। इसी सरसं गुन रच्चिय संच ॥ छं० ॥ १९७॥

---

(१) ए०—ड्ड०—धर। (२) मो०—घर द्वारं।
(३) मो०—कोटि। (४) ए० ड्ड०—विलिय।

विधिं विधि पूरन पत्तिय सोम। तिनं किय उज्जल सज्जल व्योम॥
रहं रह राजत साजत सेन। मनों दिव देव दिवाधिय तेन॥ छं० ॥ १९८ ॥
तुरंगनि तुंगनि की प्रति चींस। लगै तिन मंद सुछंदह ईस॥ छं० ॥ १९९ ॥

दूहा॥ ईस मंद संकर उदित। ब्रह्म ध्यान सिव पान॥
संभरि घर चिचंगपति। को सन मानन जान॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त॥ बर सु बुद्धि साधन सरीर। जोगह अधिकारी॥
कर अदग्ग जग दग्ग। सरन रष्यन जुगचारी॥
माया सों नहिं लिपत। नीर नीरज समान बर॥
यों चिचंग नरिंद। चतुर विद्या कोविद नर॥
गोरी सु बंध सुरतान रन। जस लेयन जै जैति बर॥
सा लच्छि रूप भगनी प्रिथा। परनि राज पत्तौ सुघर॥ छं० ॥ २०१ ॥

दूहा॥ जहां परनि चिचंगपति। करी उलटि बिपरीति॥
सिर अप्पौ जुग्गिनि नृपत। देव लोक दिवजीति॥ छं० ॥ २०२ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना।

कवित्त॥ बाजे बीर सु बाजि। राज बज्जा सो बज्जा॥
जस बज्जा बज्जासु। अग्ग रंगं चित रज्जा॥
सम न कोई चिचंग। गरुअ गहिलोत गरुअ मति॥
धनि सुधम्म अरु दान। दियौ दिल्लीस बहु भँति॥
झर संडि बीर बुट्ठ दिक्ख। सत अट्ठ अरु पंच भति॥
अग्गरें बांन बर काम दग्ग। इक्क बार घट्टह सुगति॥ छं० ॥ २०३ ॥

रोला[1]॥ जो दिन रची दिल्ली प्रति मांनिय देव गति॥
रति संपति सुख भेद भार आर अति
दुहुं तन सुमन निरष्यिय सोइ बर॥
मानों सची सँजोग सुरपति आपु धर॥ छं० ॥ २०४ ॥

दूहा॥ जनक क्रीड सुष्पे जयति। रतिन कहै कवि चंद॥
बर जानै कै दंपती। कै[2] दीपक कै चंद॥ छं० ॥ २०५ ॥

(१) ए०—ब्र०—को०—चौपाई। (२) ए० को०—को।

कवित्त। मति मध्या भय बाल। बिनौ प्रौढा अधिकारी॥
लच्छी सोज सहज्ज। रूप रति बरन सु सारी॥
धीरं तन सिय सार। विरह मंदोदरि नारी॥
पति सु वृता रुकमनी। गिनी[1] रूँधिनि अधिकारी॥
सा प्रथीराज भगनी प्रिथा। देव जग्य सम जग्य किय॥
आनंद रूप आनंद कथ। सोम नंद जस बंद लिय॥ छं०॥ २०६॥

कवित्त॥ अरुन तरुन उदयंत। सिद्ध सिक्कर फिक्कारिय॥
दिसि उत्तर ईसान। दिसा दस दसन उक्कारिय॥
बिमल नाग वल्लिय विनोद। केलिय अखिलंडिय॥
बागवान दरिमीय। रवन राजन कर संमिय॥
संचार सुमन सौरभ्भ बर। भ्रमर रोरि रंगिय करिय॥
आगम अरंभ बर बरष फल। जगति जोति व्यासह धरिय॥ छं०॥ २०७॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी।

कहत व्यास जगजोति। नयर नागोर वसंतह॥
जोइ नंदै सोइ नंद। हसै सो रचौ हसंतह॥
इंद्रपथ्थ पुर आदि। राज राजन चहुआनह॥
अमर बेलि कीरति। अछेह साधन सुरतानह॥
आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक। हमल हेल हल्लै भुअन॥
प्रथमंग पुब्ब पच्छिम पथिर। होत बत्त गंधव्व सुअन॥ छं०॥ २०८॥

कवित्त॥ रुधिर अकद्दित न्हान। कच्च पुब्बह पच्छिम पर॥
कोलाहल कमिनिय। कज्ज हारम्य देव हरि॥
समर सून्य[2] मँडलीय। अमर विचार बार[3] किय॥
द्रुपद राय पंचाल। दुसह द्रोपदिय चीर लिय॥
* सोइ समय वरष इकईस मय। हरषवंत जुग्गनि कहिय॥
बंचै विचार हिंदू तुरक। इक्क अचल कीरति रहिय॥ छं०॥ २०९॥

---

(१) ए०—को०कृ०—गिनि।
(२) ए०—सुन्य। (३) मो०—सार।
* मो० प्रति में "सोई समय अमय षठ विय वरष" पाठ है।

सभों का अपने अपने घर लौटना ।

कवित्त । * "अप अप ग्रेह गुरंभ्य" । राज राजन संपत्ते ॥
भेरा राव भिमंग । बत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
पांमारिय प्रारंभ । सेार संभरि[1] आहानह ॥
सा रुंडै सोमेस । पुत्त बंधन सुरतानह ॥
हेला हमीर हम्मीर सों । विजय राज कमधज्ज किय ॥
अच्छर अचम्भ[2] गल्हां गरुअ । धरनि पंच चहुआन लिय ॥ छं० ॥ २१० ॥

कवित्त ॥ धरनि पंच चहुआनि । आनि फेरिय कर जित्तौ ॥
ता पक्ष हिंदू तुरक । सबै[3] बीनक ज्यौं वित्यौ ॥
धीर मीर संग्रहिग । भीर भंजिय भिरि राजन[4] ॥
जै जै तन चहुवान । देव दुंदुभि घन बाजन ॥
जिहि ग्रहन पानि रावर समर । इअ आगम जोतिग कहै ॥
अप अप्प क्रंम केलिय कहत । लिष लिलाट तित्तौ लहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग करि । रज गज अप्प प्रहास ॥
लीन सगोरी दंड धपि । षट सित्त पंचास ॥ छं० ॥ २१२ ॥

शाह गोरी का रावल को दहेज देना ।

कवित्त ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग । बीर गज राज सु अप्पिय ॥
ते लीनों सुरतान । साहि गेरी गोरी किय ॥
पंच सित्त पंचास । एक सौ तुंग तुरंगम ॥
सौ दासी चतुरंग । सत्त ढोलिय अचंभम ॥
चतुरंग लछ्छि चिचंग दे । बर सोमेसर थप्पियै ॥
बुल्लाइ[5] सजन रावर समर । पंच कोस मिलि जंपियै ॥ छं० ॥ २१३ ॥

---

* मो० प्रति में यह पंक्ति नहीं है ।

(१) ए० को० छ०—संभि ।
(२) ए०—अबंध ।
(३) ए० को० छ० प्रति में नहीं है ।
(४) ए० को० छ०—रावन ।
(५) छ०—बोलाई ।

पृथा व्याह की फल स्तुति।

सुनै ग्रहै उग्रहै। बत्त बिय सम उच्चारै॥
लिषै दिषै अरु सुनै। सुद्ध मंची सुद्धारै॥
प्रथा व्याह संभरै। पंच भौ अंचन लग्गै॥
सेस फनंमित सुभट। काल पंसी नन लग्गै॥
साधवी सीय भगनी प्रिथा। प्रथा बरन चिचंग पर॥
इन सम न कोइ भुवनह भयौ। नन ह्वैहै रवि चक्क तर॥ छं० ॥ २१४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिथा विवाह वर्णनं नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ २१ ॥



अथ होली कथा[1] लिप्यते ॥

[बाइसवां समय ।]

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ इक दिन प्रिथु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्या गई । फागुन मास मझार ॥ छं० ॥ १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष । बुल्लैं बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं । निकसैं टोला टोल ॥ छं० ॥ २ ॥
च्यार वरन इक्कत्त मिल । कलह रूप कलहंत ॥
पाधि अपाधि न जानहीं । ज्यों मन[2] नहिं विलसंत ॥ छं० ॥ ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं । छिय छरप्प सुषदाय ॥
जु कछु भयौ सु कहौ तुम । तुम बानी बरदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥

चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढुंढिका थी ।

ढुंढा नाम राषस हुतौ । चहुवाना कुल मझिझ ॥
तस लघु भगिनी ढुंढिका । जोवन रै सुप संझि ॥ ५ ॥

ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता ।

ढुंढि गयौ बानारसी । सत्त वरस तप किन्न ॥
तब ढुंढी सुनकैं गई । रही भ्रात सुप चिन्ह ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो॰ और को॰ प्रति में यह (होली) समय नहीं है । (२) ए॰—माहि ।

ढुंढै तन मन जग्य मैं। बाल कियौ भसमंत ॥
प्रिथीराज चहुवान भय। भए सूर सामंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
तब ढुंढी पैरी रची। सत्त बरष जग जान ॥
पवन खाय सेवा करै। ताको सुनौ बषान ॥ छं० ॥ ८ ॥

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय। मँगि ढुंढी बरदान ॥
छम सहै तब सह करनि। भष्यि करै नर जान ॥ छं० ॥ ९ ॥

ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं।

बाल वृद्ध भष्यन करौं। छम को दै महमाय ॥
यह बानी सुनि रूसही। रष्या करनी राय ॥ छं० ॥ १० ॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके।

तब गिरिजा पति सौं कह्यौ। ढुंढी रष्यसु वत्त ॥
ढुंढी नर भष्यन करै। सोय विचारौ मत्त ॥ छं० ॥ ११ ॥
गिरिजा सिव मिलि यौं कहै। एक अपूरब वत्त ॥
जोगी जंगम बाहुरैं। मे राषे नित नित्त ॥ छं० ॥ १२ ॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकें, गदहे पर चढ़ें, तरह तरह के स्वांग बनावें उनको छोड़ और जिसको पावे वह भक्षण करे।

विहल विकल बानी असुर। बोलहिं बोल अनन्त ॥
एता नर मारीत जवि। अवरनि कौ करि अंत ॥ छं० ॥ १३ ॥
सिव अग्या पवनह दई। प्रिथमी घर सह अंग ॥
फागुन मासह तीन दिन। करौ अनेरौ रंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहिं। सूप सीस धर लेहु ॥
गोसा बंधे गनि फिरै। हो हो सबद करेहु ॥ छं० ॥ १५ ॥

ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया।

ढुंढी आइ जहां तहां। दिष्पे लोग अजान॥
हो हो करि रासभ चढ़ैं। ए कवि कहै बखान॥ छं० ॥ १६॥
चटक चटक दिन प्रति भषैं। मद मादक अप्रमान॥
नर नारी सब मति गई। ए पन मन अनुमान॥ छ० ॥ १७॥
सिंधू राग बजावहीं। गावहिं नवला गीत॥
हो हो करि हा हा करैं। ए मंडी विपरीत॥ छं० ॥ १८॥
घरि घरि अगनि प्रजारहीं। अभिछ छार अरु राष॥
नाचैं गावैं परस्पर। चिथा दिपावत काष॥ छं० ॥ १९॥
इहि विधि बाउ जवाविउ। फगुन मास मों भाव॥
लज्ज भज्ज विघ्घन गई। भावै पाव सुपाव॥ छं० ॥ २०॥

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया।

इहि विधि दुरित निवारिउ। मिट्यौ दुबी उर दंद॥
आयौ चैत सुहामनौ। गृह गृह भयौ अनंद॥ छं० ॥ २१॥

जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं।

श्लोक॥ गतेनु पार समये। वसंते च समागमे॥
होलिका प्रज्ज पूज्जंते। ढुंढा देवी नमोस्तु ते॥ छं० ॥ २२॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नांम बावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्।

अथ दीपमालिका कथा लिष्यतँ ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथिराज नृप । कहो चंद कवि सब्ब ॥
चौतु सुकातिक मास महिं । दीप मालिका प्रब्ब ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उतिपत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतहत राजसय । प्रन्य दिषादौ देव ॥
तासुत सोमेसर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ छं० ॥ ३ ॥
बहुत पुष्प पालै प्रजा । रिद्ध सिद्ध मंडान ॥
च्यार वर्न चंहु आश्रमहि । दान मान परिथान ॥ छं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रह तहि ॥
बारी बाग बिचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घहि ॥ छं० ॥ ५ ॥
तहां बसे सतप्रेम द्विज । वेदवंत बल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी । ताहर नाहीं रिद्धि ॥ छं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रष्य सम। त्रिथा जीव तुम कंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
विष्या जीवन मनुष कौ। जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[1] उपचार कर। करै रहै बन वास ॥ छं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया।

तब सतिश्रम आदर करिय। ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम विथा गयो। पाप उदय तन देखि ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ सपनो अष्य विहूनौ। सेवेरने न भाषयो दीनौ ॥
मंगह मरन मह गोन। बीक्कि नेम न मानि कित ॥ छं० ॥ १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है।

दोहा ॥ सक्ति सरम सत बरष लो। सेये विष्णु नरंत।
विष्णु बतायौ ब्रह्म कौं। ताको पार न अंत ॥ छं० ॥ ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय। रुद्र बतायौ नाम ॥
रुद्र कह्यौ माया बरहु। करै हमारौ काम ॥ छं० ॥ १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ॥

चियन बरस चिय मास दिन। चीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी। दिय चौदहौ रतन्न ॥ छं० ॥ १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है।

तब सतिश्रम ऐसी कही। कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवौ नरपति नाह कों। एह बातएहु तिद्ध ॥ छं० ॥ १४ ॥
दिन पद्धर बुधि उप्पजी। दिन विहस्सि बुधि जाइ ॥

(१) क०—का।

दीप दिपायौ बुद्धि वर। बभै दीप लछि जाइ ॥ छं० ॥ १५ ॥
गाहा। को कौन पथीयौ। को कौन जचीयौ ॥
कह कहन नामियं सीस। दुभर[1] गअर चक्क अै किन्नयं किन कायवं ॥
छं० ॥ १६ ॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है।

दोहा ॥ बंभन बुद्धि विलास हुइ। तहं दिष्यै लछिवास ॥
कार्तिक मावस सोम दिन। लछि आवहि तिहि पास ॥ छं० ॥ १७ ॥
लच्छी जल निधि ही वसी। निकसि तिहू दिन दिन्न ॥
अगर कपूर सुदीप दर। जहां पान उर पिन्न ॥ छं० ॥ १८ ॥

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग।

बंभन राजा सेवौ। बरस भये दुअ च्यार ॥
तब राजा वरदान दिय। मंगौ मन्नि विचार ॥ छं० ॥ १९ ॥

ब्राह्मण ने दीपदान वर माँगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले।

तब बंभन ऐसी मँगी। दीपहु दान विचारि ॥
कार्तिक मास समुद्द दिन। दीप नवै संसारि ॥ छं० ॥ २० ॥
अच्छे लोयन अछि तहां। अच्छे लोयन निपान ॥
नर नारी उद्दिम रहै। पीक परी तिहिपान ॥ छं० ॥ २१ ॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या माँगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ।

कहा मँगी तुम देवता। पश्चिम बुद्धी विप्र ॥
अन धन गांव गंमार मगि। घर जाओ तुम विप्र ॥ छं० ॥ २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई।

(१) ए०—उभर।

अपने घर तब आय करि। तेज लियौ मन एक॥
रुई सेर सवा लई। इह तन की जु विवेक॥ छं० ॥ २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए।

कार्तिक आयौ कन्यतरु। विप्रह भयौ उछाह॥
मंग्यो चहौ सु देउ प्रभु। पड़ह बाज बहु नाय॥ छं॥ २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले।

तब आयस नरपति कियौ। कोय न बालै दीप॥
आज्ञा भंग जो को करै। ताहि बँधाऊं चीप॥ छं० ॥ २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अंधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए।

लच्छि समंदं निस्सरी। आई नगरहु तथ्थ॥
अंधारौ अहि पूरजे। सु दीपक दिट्ठौ जथ्थ॥ छं० ॥ २६ ॥
बंभन कै घरि दिप्पि करि। आइ सची दरबार॥
अह निसि वासै हम वसै। लच्छी कहै विचार॥ छं० २७ ॥
लच्छी बच्छी क्या करै। दारिद्र दहि मुहि मत्त॥
तू पाजा घर थान रहि। सदा दुचित्तै चित्त॥ छं० ॥ २८ ॥
मो संगि सथ्थि जु निरबचौ। नदी पवनि गिर दंद॥
रात दिट्ठ वासौ वसों। सं छंड्यौ मति दंद॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुइ। कहे रोर करंक॥
सात जनम तुरि घर वसौं। एक वसत अकलंक॥ छं० ॥ ३० ॥

तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा।

तब दारिद्र जु भजि चल्यौ। बंभन पकस्यौ धाय॥

इक कोरी तुम पुब्ब सों। लच्छिक देव न जाय ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा।

तब दरिद्र वाचा दई। मो कूं तूं दे जान।
बहुरि न आऊँ इह पुरी। ऐसो कहौं बषान ॥ छं० ॥ ३२ ॥

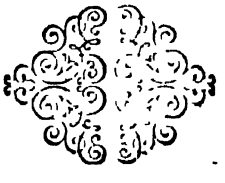
उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली।

घरि लच्छी आनंद मन। छय गय मान महंत ॥
दीपमालिका तद्दिन तैं। एह चली महि वंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है। यह कथा कवि चन्द ने कह सुनाई ॥

पुब्ब पछिम उत्तर दक्किन। दीपमालिका मान ॥
षान पान परिमान मन। काम मनोरथ थान ॥ छं० ॥ ३४ ॥
कही चंद आनंद सौं। पुच्छी नृप प्रिथीराज ॥
दीपमालिका प्रगट हुइ घरि घरि मंगल साज ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथीराज रासके दीपमालिका पर्ब्ब कथा समय नाम तेवीसमों प्रस्ताव संपूरणम् ॥



अथ धन कथा लिप्यते ।

(चौबीसवां समय ।)

खद्दू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ।

दूहा ॥ षद्दू आषेटक रमैं । महिम मुरस्थल[1] थांन ॥
नागौरै गोरी ग्रहन । सथ त्रिमल परधांन ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त ॥ मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥
तूं मंची मंचंग । मंच जानहि सुभ लच्छन ॥
सांम दांन अरु भेद । डंड निरनै करि लष्यै ॥
बहु मंचह उप्पाद्द । राज मंचह करि रष्यै ॥
मंचह सुमंच मन अनुसरै । अरु मंच भेद जानै सकल ॥
अद्भुत चरित्त पाषांन लिषि । बंचिन किन आवै अकल ॥ छं० ॥ २ ॥
तू मंची कयमास । मंच पय पय उप्पावहि ॥
तू मंची मंचंग । मंच मंचीन दिपावहि ॥
तू मंची सामंत । * स्यांम धम्मं विचारै ॥
धर सम्मह संग्रहै । मंच करि अरिन बिडारै ॥
तुम जोग मंच मंची न कोइ । मन्ह बत्तन उच्चार कैं ॥
संसार सार मंचह प्रवन । कहौ मंच विचारि कैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो ।

---

(१) मो०—महस्थल क०—मुरस्थल ।
* मो प्रति में "सामि धृम्म सुविचारै" पाठ है ।

कवित्त ॥ मलिल सुबर पाषांन ; [illegible] पूतली अचंभं ॥
मलिल मक्त तन ला निस्चल । उच्चम रिस रंभं ॥
ता उप्पर लिय नाम । प्रगट प्राकार उचारै ॥
भूलि भूलि अमि लोइ । मुद्ध मनसा करि डारै ॥
वंचै सु वीर कैमास तुम । त्रियौ वंच नाची बनिय ॥
भूतच्छ भविष्ण वर्त्तमान । इह अपुब्ब मैं कथ सुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिलै सिर रहने से धन जाय"।

दूहा ॥ सिर कट्टे धन संग्रहै । सिर सज्जै धन जाइ ॥
सो मंत्री कैमास कूं । मंत्रहि करै उपाइ ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना।

कवित्त ॥ श्रवन राज हग रत्त[1] । श्रवन जानहि परिमानन[2] ॥
भेद छिद्र देषै सु । भेद अभेद सु ग्यानन ॥
पमुष्ष नयन पारषहि । धनह परिभांन सु लष्यइ[3] ॥
विपति लोइ संसार । दार द्रिग इक्क्य दिष्पइ ॥
मंत्र न छिद्र मंत्र तनी । मंत्र भेद अनुसर मरति ॥
ब्रमांन[4] वीर जांने सकल । मूढ ग्यांन प्रौढ़ह सुमति ॥ छं० ६ ॥
कवित्त ॥ तिष्ण तरंगन पत्यौ[5] । मंत्र तारक हरि सुहरि ॥
बहरि[6] अंध कलार । राज दंडह लिय उहरि ॥
मारंप्प जक्क जीव । नहन छिद्दाघात धात जुरि ॥
चलिल अंपटक भूमि । डुल्लि जब चित्त मित्त परि ॥
भुजहि सुदान छिम्मान गति । मरन मंत्र[7] नहि लिप्पवै ॥
मंत्री न मंत्र भुल्लै तबै । विधि विचार विधि दिप्पवै ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो०—रम।
(२) मो०—को प्रति में "अव जानन परि मानन" पाठहै (३) मो०—लष्यहि।
(४) ग—वमान। (५)-मो—पर्यो। (६) मो० कु०—वहरि।
(७) मो—मन।

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्धन मरैगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है।

छंद पद्धरी॥ अब कहौं मंत्र तुम पुच्छ लोइ। मनि अहौं नेम जिन करौ सोइ॥
पाषान अंक में लिषे राइ। वृत्तंत सोइ सब कहु सुनाइ॥ छं॰॥ ८॥
बाहन सुबीर कोइ भयौ राइ। तिहि पाप ब्रंम जोनी उपाइ॥
संसार सकल तिहि दुष्य दीन। सेवकन देवनिहु द्रव्य कीन॥ छं॰॥ ९॥
प्रज पीड़ मान संग्रह्यौ कोरि। भरि जन्म मढ़ भंडार जोरि॥
संसार सकल तिन दुष्य पाइ। सब आप दीन इह अगनि जाइ॥ छं॰॥ १०॥
विन ब्रंम इंम इह तजै देह। इम प्रजा सकल कहि आपलेह॥
कितनेक दिवस तिन तप्यौ और। भंडार पाहि यह सुनौ बीर॥ छं॰॥ ११॥

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं।

अप पास कहूं नहिं जाइ राइ। चित्रंग राव लिज्जै बुलाइ॥
मिलि सुभट तास कहुं भंडार। तिन बिना हंद मचै अपार॥ छं॰॥ १२॥
कनवज्ज राव जैचंद देव। नर अमी लष्य तिन बारन देव॥
गज्जन नरेस साहाब साह। इम लष्य लेक्ख देवंन ताह॥ छं॰॥ १३॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव। तिन लष्य अज्ज परिअंक केव॥
छिल्लीम तेज तूंअर नरिंद। तस बल्लो देर उपजै सु हंद॥ छं॰॥ १४॥
अप तुच्छ कैन इह मत्त मानि। मिलि समर लष्य पुंछि लच्छवानि॥ छं॰॥ १५॥

पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना।

चौपाई॥ राजा ढिग कैमास बुलाइय। पहराइय सुउच्च सिरपाइय॥
बगलि अप्प आरोहन बाजन। करी सपारस सुमर कि राजन॥ छं॰॥ १६॥

(१) ए०—अच्छ। (२) भा०—उपज्यो।

दूहा ॥ हरषि राज प्रथिराज कहि । मति कैमास दै नाम ॥
मति कैमास[1] कैमास तुम । सकल सुमति के धाम ॥ छं० ॥ १७ ॥
दूहा ॥ जां मंचह पूछत नृपति । सांई अंग सु कांम ॥
समर सिंघ रावर मिले । धन काढ़ै अभिरांम ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना।

मांनि मंच चहुआंन इह । बोलिय चंद पुँडीर ॥
समर सिंघ रावर दिसा । दै कग्गद मति धीर ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना।

दूहा ॥ दस हैवर इक बग्ग वर । अरु दिय सिंगिनि पांनि ॥
कहि जुहार विधि जंपियो । नृप पुच्छिय कुसलांनि ॥ छं० ॥ २० ॥

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं।

कवित्त ॥ लै कग्गद प्रथिराज । बीर पुंडीर सँपन्नौ ॥
सुबर जोर साहाब । मंडि गोरी धर थन्नौ ॥
बर भोरा भीमंग । चंपि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिंद । सेन लष्यां असि दग्गा ॥
आषंड द्रव्य दिल्ली धरां । सुनि चढ्ढे द्रिगपाल सजि ॥
कढ्ढियै मंच मंची अपुन । वर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० ॥ २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर नरिंद । समर सद्द संभर जित्तन ॥
अरु जोगिंद नरिंद । चित्त जोगिंद समत्तन ॥
कमल मान सो भत्ति । चंद लिल्लाट बीय दुति ॥

(१) मो०—कैलास।

नयन रंभ आरंभ। जोग पारंभ सिंभ मति॥
मुंजीय ढाल जीपन विरद। नाग मुषी सिल्लार बनि॥
सा चिच कोट ओटह नृपति। मद्दन रंभ मंडहि मुनति॥ छं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है।

दूहा॥ बंचि बीर कग्गद नृपति। हसिय चित्त बर बंक॥
कहु लज्जा सगपन सु हित। रष्य पुंडीरां संक॥ छं० ॥ २३ ॥

कवित्त॥ हसि जोगिंद नरिंद। वत्त सें मुष उद्धारिय॥
*एक ग्रध्र संग्रह। मंस लद्धौ पल डारिय॥
अन्य ग्रिद्ध विटटौ। मंस चप्पौ जै कारिय॥
तव सुमंत उप्पनौ। मंस लद्धौ गहि डारिय॥
भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ। कोइक पढ़ कोइ लभ्भवै॥
दैवान दुसंकह दैवगति। जो निम्मान सु निम्भवै॥ छं० २४॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए।

कवित्त॥ सुनि हुवत्त पुंडीर। बत्त जंपी सुतत्त जोइ॥
तुम जोगिंद नरिंद। मत्त जंपौ सुतत्त होइ॥
सुअ सोमेस नरिंद। सुवत सगपन मिस पुच्छिय॥
तुन चहुआना[1] गरुअ। मुष्य कहौ किम ओछिय॥
सामंत नाथ सामंत बल। मेर ठेलि दच्छिन धरहि॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर। इंद फुनिंद न सो डरहि॥ छं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए।

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है।
(१) मो० को०—लहुआना।

कवित्त ॥ अग्गैइ राइर समर । करन साहस चहुवानिय ॥
हलहल्ल अग्ग प्रचंड । संभ सोभै गर बानिय ॥
*अग्गौं अग्ग जुगिंद । अरिग लग्गै विरुझांनिय ॥
आग सिंध निडुर नरिंद । उट्ठ चंपै परवांनिय ॥
अग्गे व काल सुनियै दुसट्ठ । रुह पिच्छै फिरि टट्ठुयौ[1] ॥
चिचंग राव रावर समर । संभरि वै दिसि चट्ठुयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन।

रिंग्यो सबर[2] नरिंद । सज्जि चै गै चतुरंगिय ॥
चय गय दल चतुरंग । जंपि माहा भर जंगिय ॥
महा सुभर गज्जंत । धूंदि धुरधर आहुट्टिय ॥
सेस रुहस फन फट्टि । सकिलि[3] सल्ल मलि साहुट्टिय ॥
फट्यौ सु सेस फन चंद कहि । तब फूंकर करि जग्गयौ ॥
फन छिन्न उड्ड कुंडल करिय । तब सु सेस बल भग्गयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥ वरं विंटियं समर साहस नरिंदं । मनों विंटियं उड्डगनं अभ्र चंदं ॥
किधो इंद्र पासं सचं देव राजे । किधों मेरतीरं सु पच्चै विराजे ॥ छं० ॥ २८ ॥
उथ्यौ छत्र सीसं विराजै कला की । मनों इंद्र इंदी वरं चंद[4] जा की ॥
दुतीया उपम्मा कवी का बषानं । मनों हेम के दंड पर चंद जानं ॥ छं० ॥ २९ ॥
कहू स्यांम पाटं विराजै करारी । मनो कट्टई मेघ कालेक कारी ॥
मयंमट्ट गज्जं सबद्दं सु उट्ठै । वरष्पंत दानं मनो मेघ वुट्ठै ॥ छं० ॥ ३० ॥
बजै ता जंजीरं अनेकं सबद्दं । मनों बुम्बियं भिंगुरं साम भद्दं ॥
धजं धज्ज चालै विराजै फिरंती । मनों मंडियं बग्ग घन मंभिझ पंती ॥ छं० ॥ ३१ ॥
गजं उप्परं ढाल सोहै ढलक्कैं[5] । मनों केलि उग्गी गिरं कज्जलक्कैं[6] ॥

---

* यह पंक्ति मो०-प्रति में नहीं है।

(१) मो०-उट्ठयो। (२) मो०-समर।
(३) मो०-सफल। (४) मो०-बन्द।
(५) मो०-ठलक्कं। (६) मो०-कज्जलक्कं।

सिनं अद्ध छज्जार विज्जौ नरिंदं। तिनं उप्पमा दिष्पि जंपी सु चंदं ॥छं० ३२॥
सवै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं। मनों पारसं भांन ग्रह्ह एक एकं॥ छं० ॥ ३३ ॥

परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले।

दूहा ॥ करि मंत्रो चढ्ढे नृपति। समर राव चहुवांन ॥
नागोरह्ह आए धरा। महि कहि भेलांन ॥ छं० ॥ ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चितौरपति धन निकालने नागौर आए हैं।

धंमाइन कायथ लभे। परठि दूत पतसाह ॥
दिल्लि वै चित्तौर पति। धन कढ्ढै घरमाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना।

कवित्त ॥ जाइ रूपत्तो समर। चंपि दिल्ली धरवानं ॥
चहुआना रै हथ्थ। दूत दीनौ फुरमानं ॥
असम विषम साहमी। रत्त माया अनुरत्तं ॥
कमल पत्त जल जत्त। मध्य अरु न्यारौ जत्तं ॥
क्रिप्पै न कलक काटन कलक। राज बंध बंध्यौ नहीं ॥
दस कोस कोस दिल्लीय तैं। राज मुक्कि राजन तहीं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर अगवानी करना।

कवित्त ॥ राजं दै दरबार। सुवर आनंद उपन्नौ ॥
पुब्ब पाप कहनह्ह। समर जित समर संपन्नौ ॥
सुवर बीर जोगिंद। चंद विरदावलि दिन्नौ ॥
दिल्ली तें अधकोस। राज अग्गे होइ लिन्नौ ॥

---

* छंद ३४-३५ मो०—प्रति में नहीं हैं और को० प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं।

मंडरी मंडि देषै सु कवि। मति डंमरि लभ्भै न दुइ॥
समरह सु ग्रेह अरु समर अनि। समर सुबय अरु समर जुइ[1]॥ छं०॥ ३७॥

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए।

कवित्त॥ अनँगपाल ग्रह जा सिसान। समर उत्तरिय प्रिथा पति॥
विधि अनेक भोजन सु व्रत। राज उत्तर सु सार भति॥
उभय दिवस बित्तीय। सब्ब सामंत सु पुच्छिय॥
सांम दांन अरु भेद। कंक भजि कट्ठौ लच्छिय॥
कं कहन बंक तुम अनुसरहु। समरसिंघ राजर सुमन॥
उप्पाइ मिहि सोमंत करि। सु बर बीर कट्ठौ सुधन॥ छं०॥ ३८॥

कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन निकाल लिया जाय।

कवित्त॥ मति सुधारु कयमास। द्रव्य कट्ठन उद्धारिय॥
सेन मुष्प सुरतांन। राज दिज्जै प्रथुभारिय॥
चालुक्कां चंपै न सीम। रावल मुष दिज्जै॥
अप्प अप्प मुष रष्पि। कट्ठि लच्छी बर लिज्जै॥
आलाभ जुच्छ[2] पय लाभ तुइ। सु कछु कांम किज्जै नही॥
गोइंदराज पीची सुमति। मिलि विभूति कट्ठु गही॥ छं०॥ ३९॥

रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना।

कवित्त॥ तब चिचंग नरिंद। चंदपुंडीर बरज्जिय॥
तुम कुमंत बल मंत। भंत जांनौ न मरज्जिय॥

(१) मो०—जुअ।
(२) मो०—यष्प।

ते मंची मंचंग। निगम आगम सब बुझ्झैं॥
अंगन कै कुहंत। घरह सुझ्झैं मन बुझ्झैं॥
अरि अरिन मुष्प रुक्कहि सुभर। तब सु द्रव्य मिलि कढ्ढियै॥
सुरतान भीर भंजै समर। सुमन मंत करि चढ्ढियै॥ छं०॥ ४०॥

नागौर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के रुख़ पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना।

कवित्त॥ जाइ संपतौ समर। मध्य नागौर प्रमानह॥
सुरताना रै मुष्प। कोट अड्डो चहुआनह॥
धन असंष कढ़ तहां। साह चर बर पगधारय॥
चरचि चित्त सब सरित। वित्त करि हथ्थ दिषारय॥
साहाव सुकर फुरमांन दिय। गांमी छल बल लग्गया॥
कढ्ढी सुलच्छि आइह पति। मुष चहुआन विलग्गया॥ छं०॥ ४१॥

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना।

कवित्त॥ उभय दूत नागौर। दूत चहुआन पास दुअ॥
सब चरित्त धरि चित्त। लषन लष्यौ सुसेन सुअ॥
दै कोसां चहुआंन। कोस चिचंगराज दुअ॥
अवन गवन जानहु सुवत्त। अनुसरहु पंथ जुअ॥
मन मध्य कथ्थ जानहु सकल। चल्लहु कग्गर राज लै॥
धन धंम अर्थ कढ्ढहु चरित। कहौं वत्त दिष्पै सु लै॥ छं० ४२॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए।

दूहा॥ कलि चरित्त नागौर पहु। दूत सपत्ते आइ॥
दिल्ली वै कढ्ढै सुधन। बज्जा बज्जन वाइ॥ छं०॥ ४३॥

नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा ख़ां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ वज्जा बज्जन वाद्द । देषि दैवान दुसंकद्द ॥
चित्रकोट रावर नरिंद । कद्दन भुज अंकद्द ॥
संभरि वै आहुट्ठ । लच्छि वद्दुन बत्तीसद्द ॥
गज्जन वै सुरतांन । दूत लै आइ चरीतद्द ॥
सुनि सच्छ नच्छ नं.सान किय । बोलि उम्मरा पांन सद्द ॥
सज्जौ सुसज्ज संभरि दिसा । चाहुआन किज्जै बसद्द ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन।

कवित्त । साह बद्दो[1] सुरतांन । चक्का व्यूहं रवि चल्लिय ॥
एक एक असवार । विच्च पाइक तिद्द मिल्लिय ॥
ता पच्छै गज पंति । पंति असवार समूहं ॥
जमर जंग अराक । गौर जंबूरति जूहं ॥
ता पच्छ पंति पुरसांन पां । ता पच्छै बंधी अनिय ॥
तत्तार पांन निसुरत्ति पां । हांसिमद्द षोदर पनिय ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला, शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा।

कवित्त ॥ वाम कोद्द प्रथिराज । भुक्कि सुरतान सुचल्लिय ॥
सज्जि सेन चतुरंग । समर दिसि समर सुचल्लिय ॥
भूमि धमिय धम मसिय । सेस कमठम्मि उक्कसिय ॥
कमठ विमठ हुअ पिट्ठ । दट्ठ कूरंभ करसिय ॥
रिंगदो मचल पुरसान दल । करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
नुर अद्ध कोस नागौर तें । सज्जि बाज चंप्यौ सु जोइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रखकर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना।

(१) मा० ग०—साहाबदी।

कवित्त ॥ समर सिंघ सुनि श्रवन । बीर नीसान दिपंदे ॥
सज्जि सेन चतुरंग । तरकि[1] तोषार चढंदे ॥
थिर थप्पौ कैमास । लच्छि उप्पर गहि रप्पिय ॥
तरकि तोन सजि द्रोन । बलिय पारथ सम दिप्पिय ॥
भारथ्थ कथ्थ कवि चंद कहि । समर सार वर चम्मवै ॥
उक्कारि सेन सुरतान कौ । चय ऋतुनि करि चम्मवै ॥ छं० ॥ ४७ ॥

जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया ।

* दूहा ॥ माहम्म कर पत्तिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
उतरि सेन सुरतांन तँह । सह आई समरंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सवेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।

प्रात उदित रवि रत्त रँग । समर समर दिसि जग्गि ॥
तब लगि दल सुलतान के । पेच सु उडुन लग्गि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गईं, दोनों दलों का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त ॥ पच्च सुपेच्च डंमरिय । दिसा धुंधरी सुराजै ॥
अग्ग मग्ग उक्कैरै । चित्त उक्कैरै पराजै ॥
पवन बेग संजुरै । श्रवन लग्गा असि मंचं ॥
रथ कुवेर चढ्ढये । बांन बढ्ढये सुमंतं ॥
दोउ दीन कर दुंद दल । लरन लोह सज्जे सु बर ॥
चंप्पौ नरिंद आहुठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ॥ ५० ॥

लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त ॥ धन नरिंद सुरतान । पांन दोइ बीच समाहिय ॥
दोइ मुष्प अरि रुक्कि । सिंघ बन की गति साहिय ॥

---

(१) ए· को· छ·—तरिक ।
* यह दूहा (छन्द) मो· प्रति में नहीं है ।

धार धार बज्जै प्रहार। नह लग्गे[1] नीसानं॥
संभरि वै सुरतान। मीर उट्ठे झुकि षानं॥
घरि च्यारि लग्गि तरवार झर। बहु उझार लग्गिय फरन[2]॥
दोउ दीन भीन घट घुम्मि घन। उक्करि सेन लग्गे लरन॥ छं०॥५१॥

युद्ध का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बलवंत सबल पाषार पुंज। कर धरै षग्ग धायौ सु नंज॥
लै पच चली कालिका नारि। पर बत्त गहै गय दंत भार॥ छं०॥५२॥
सिर नीर बुंद बरषंत वारि। सिर नषै छंद अप्पित अपार॥
षग्ग सेां षग्ग बज्जै करार। घन टहै घाइ जनु मत्त वार॥ छं०॥५३॥
मस्संद मीर मद्दुवत्त षांन। ढाहनह धीर धायौ परांन॥
प्राचार कुंत किय पुंज राज। समसेल चलै धनि षग्ग गाज॥ छं०॥५४॥
तुट्यौ सु रीस संमेत पांनि। ढाहे कमंध मद्दुबत्ति षांन॥
लघु बंधु रुस्तमा धनिय सूर। बर माल बरैं ले चलीं दूर॥ छं०॥५५॥
जै जैत सबद जंपै जगत्त। पाषार करी अविगत्त वत्त॥
पाषार पुंज रुस्तम्म षांन। मुष जुरे मरद्द हूये उतांन॥ छं०॥५६॥
दै दयौ षग्ग रुस्तम मरद्द। बाचयौं षग्ग पुंजा दरद्द॥
तुट्टयौ सीस सा पुंज राज। अच्छरी वरै करि उद्ध काज॥ छं०॥५७॥
नारद्द नद्द ग्रद्ध छंद मद्द। पलचरी कालिका करै नद्द॥
प्राक्रम सूर देषै पधार। धनि धन्नि कहै भर सकल सार॥ ५८॥
ब्रह्म पूरि भेदि गय सूर सार। अति उंच क्रंम पामेव वार॥ छं०॥५९॥

कवित्त॥ बलिय फौज पाषार। दुतिय भारथ जिन मंड्यौ॥
अरि अक्कूरि बर लीम। धार धारहु तन षंड्यौ॥
ईश सीस संग्रह्यौ। दुक्क तें छथ्य न मुक्यौ॥
सुर सुरीय कँध जांनि। सरस सिंगारहु चुक्यौ॥
जानयौ गवरि कह मानि किय। कहा जानि नंदी चस्यौ॥
जांनयै चंद दय कब्ब करि। चंद लिलाटहतें धस्यौ॥ छं०॥ ६०॥

(१) ए. क्र. को.—भग्गे।
(२) मो. प्रति में "बल उझारिय षग भरन" पाठ है।

कवित्त ॥ मुत्ति लच्छन सामंत । सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
चुकि समाधि जगि सिंभ । बंभ आराधन भग्गा ॥
* आपुतुचा तजि सूर । तुचा मृगगन आराधी ॥
तन तुट्टिग अधि[1] धार । मग्ग नहि अक्कुरिवाधी ॥
अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुष[2] ॥
षंषेरि षाल मुक्किय जगत । सुकर किति चक्खिय सुरुष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ षां ततार रुस्तम सुभर । अरु जे मीर समंद ॥
सोइ तत्ते गहि तेग षरि । वर वीरा रस मंद ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ चंद बंध पुंडीर बर । लष्यन लष्पा सार ॥
मिले मीर मरदान मुष । धरि कर षग्ग करार ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवित्त ॥ षां ततार रुस्तम हुजाब । मुस्तफा महंमद ॥
† चै सज्जे बर सार । तष्य आए मीरंबद ॥
मार मार कहि धीर । मिले लष्यन लष्पेसर ॥
सार धार वज्जंत । भिड्यो मुष हमीर गुर ॥
पुण्डीर सुबर साहस बरह्द । करिव षुह षहे सुषल ॥
कैतिग्ग देव देषंत सिर । अरिय भूत नंचे अकल ॥ छं० ॥ ६४ ॥

छंद चनूफाल ॥ आए सुमीर मसंद । बर षग्ग धारिब इंद ॥
हक्कंत हक्क करार । वज्जंत कर करतार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
चिघ्घाय षग्ग चिकूट । बहि सार सामत जूट ॥
पुंडीर लष्यन लोइ । भर मीर आए दोइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
बाहैं दुसार करार । लरि लष्प लष्यन सार ॥
झंडे सु षग्ग उझहि । तुट्टे सु झल्लर तहि ॥
उकि उक्कि ईस रनह[3] । नारह नंचि उमह ॥
भगि मीर षुर षुर तार । जुरवंत मीर जुझार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

---

* "षिति संपुट षलभल्यो । तुचा मृगच आराधी" मो०-प्रति में ऐसा पाठ है।
(१) मो०-असि। (२) मो०-निमष।

† मो०-प्रति में छन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "खां ततार रुस्तम उजाव, खान मुस्तफा मरहंभर, है सज्जे बर सार, तष्य आए सुर सरवर" है।
(३) मो०-सुनह्द। ए०-नरह्द।

भज्जंत सेन सद्दाव। गज्जंत लष्यन गाव॥
तत्तार नूरि हुजाव। रुस्तम मद्दमुद आव॥ छं०॥ ६९॥
बाहै सुलष्यन सार। चिसि टोप छिप्पर लार॥
चौहनी लष्यन धार। परसंसि भीर झुझार॥ छं०॥ ७०॥
गय सूर मंडल भेदि। भल कद्दत अच्छर बेद॥ छं०॥ ७१॥

कवित्त॥ चंद बंध पुंडीर। नाम लष्यन लष्पे सुर॥
दुंद देवि पद्दार। दियौ हुंकार छक्कि गुर॥
ईस सीस आनंद। पिंड गिद्धिन मन भाइय॥
दूर सूर अच्छरि बिमांन। चढ़ि देवन आइय॥
आनंम सोई उतपति चल्यौ। देव धांन विश्रांम भय॥
जम लोक लोपि बसि ब्रह्म पुर। जंपि सेन दोउ सद्द जय॥ छं०॥ ७२॥

छंद दुमिला॥ छद्द गुर लहु पायं अक्खिर दायं विचि विचि रायं इंदोई॥
दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिंदं कद्दि कविचंदं गुनगोई॥
बज्जै रन तालं असि बर भालं भर भर छालं भंभीरं॥
पारस सुविहानं कुट्टिय थांनं चढ़ि मध्यानं कुटि तीरं॥ छं०॥ ७३॥
गंजी जननं जरि भंगै दिक्करि लरि रज उच्छरि गगनेदं॥
धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोरं जरि मेछं॥
किरवांन करक्कै बिज्ज तरक्कै छिच्छ उछक्कै इन भेसं॥
दो उप्पम भासं माधव मासं अति उल्हासं दुति केसं॥ छं०॥ ७४॥
उडि सकै न गिद्धं सरबद्धि बिद्धं हसयति सिद्धं दै तारी॥
पप्पर अधिकारी पंड उकारी जै जै कारी किलकारी॥
गज दंत न बद्धै दै पग चद्धै कुंत सु कद्धै सिर चद्धै॥
कंदल परि उद्धै सीस विकुट्टै धनद्धि न रद्धै भर बद्धै॥ छं०॥ ७५॥

दूहा॥ सस्तन सस्त्र न उब्बरिय। मन बर कुट्टिय नांहि॥
ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि। सेरो सद्दर समांहि॥ ७६॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला॥ रोस राजं भरी। चिचकोटे सुरी[1]॥

(१) मा०—सरी।

ह्थ्य बथ्यं जुरी। जुद्दि सोद्दै पुरी[1] ॥ छं० ॥ ७७ ॥
नीच दौनं परी। बीर हक्कै उरी ॥
कुंत कट्ठै कुरी। ह्थ्य वथ्यं करी ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दंद कट्ठै रुरी। कंध सोभै धरी ॥
लुथि आलुथ्थरी[2]। जंमता विक्कुरी ॥ छं० ॥ ७९ ॥
देवता संभरी। ढिल्ल राजं भरी ॥
जोग मत्ते जुरी। रंभ ढूंढै वरी ॥ छं० ॥ ८० ॥
बीर जा संभरी। कुद्दि कुक्कै करी ॥
मात पित्तं उरी। पत्त कन्है नरी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
स्वामिता सुद्धरी। पुप्फ नंषे सुरी ॥
... ... । कित्ति जुग्गं करी ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ कित्ति जोग करनह समथ। मिले सक्क सामेन ॥
आ० मीर मुकूह करि। परिय सिंह हिर जेन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

अरिल्ल ॥ कोप्यो रावल राज महाभर। सेना साह सहावह लिय पर ॥
हिंदुअ सेन हक्कि भर उठ्ठे। पंच षांन सिर सारह हुठ्ठे ॥ छं० ॥ ८४ ॥

छंद भुजंगो ॥ उठे पंच षांनं बरं आसुरानं। बजे भेरि नप्फेरि चंघे[3] निसानं ॥
धमक्कै धरा नाग गज्जै सुगेनं। चढ़े देव कौतिग्ग देषंत नैनं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
मिली अक्कुरी रथ्थ अप्पार रंजै। नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्जं ॥
करै कूह दौरै भरं आसुरानं। जुटे सूर सामंत लग्गे भरानं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
पगं दूअ वाहै झरै टोप मथ्थै। मनों झल्लरं देवलं वृष्टि हथ्थै ॥
जुरै षांन सामंत दोसार सारं। कहै दीन रामं जपै इष्ट मारं[4] ॥ छं० ॥ ८७ ॥
पडे आइयं अप्प आकूव मीरं। कुटै धंम धीरज्ज कंपै अधीरं ॥
तवै आइ चामंड दाहिम रायं। हयौ सेल मीरं गहक्कै गुरायं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
समं सेल षानं वहै पग्गझट्टं। पर्यो अश्व चामंड भग्गै सुघट्टं ॥
उठे चोंड रायं गहै षांन सारं। तुटै मंडलं तुट्टिहै भाग पारं ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) मो०—खरी। (२) मो०—लोथि लोथं परी।
(३) ए०—क्रो०—अबे।
(४) मो०—चारं।

ढह्यौ षांन ह्रष्यें सु चामंड रायं। इनै देषि मीरं निकट्टं सु तायं॥
वहै षग्ग ढाहै चढ्यौ अप्प सायं। हली फौज साहं चंपे असुरायं॥छं०॥८०॥
तबै केलियं षान षानां कुलाहं। दुअं धारि षग्गं तुहैं हिंदु थांहं॥
तबै आइ अड्डो भरं अत्ततांई। लिए सिप्परं घाव तिच्छे सुनाई॥छं०॥८१॥
वहै दूअ षग्गं करै मार भट्टं। मनों रंभथंभं दुअं सीस कट्टं॥
गुरं गज्जते अत्ततांई अभंगं। भरक्कै सुसेना सबै मीर भग्गं॥छं०॥८२॥
इकं सेर नंमीर साहब्ब षानं। दुअं बंध पुत्तं सु आरब्ब जानं॥
दुअं भ्रंम धारी उरं जागियानं। उभै दौरि बंधं लगे आसमानं॥छं०॥८३॥
चपे मीर मुष्यं चवै मार वानं। लगे दाव घावं करै षग्ग पानं॥
दुयं जुद्ध आनुद्ध देष्यौ अपारं। भरं निडुरं देषि धायौ सुभारं॥छं०॥८४॥
हए निडुरं संगि हय बंध मीरं। मनों सीर[1] दुक्कं धरे दो सरीरं॥
चने तेग तुरियं सुकमधज्जरामं। ढह्यौ अंस ओहंस उड्यौ तिसायं॥छं॥८५॥
उठे निडुरं हक्कि रठौर[2] रानं। सिता[3] बीस चौंडं सुषं मानि भानं॥
इते आइ दीनो तुरंगं अपानं। चाढ्यौ राव हयमीर कमधज्ज मानं॥छ०॥८६॥
धये आइ तत्ते करै अप्प पानं। भगे सेन मीरं ढहै पंच षांनं॥
बढी जैत देषी वरं हिंदुआंनं। ... ...॥८७॥
रिझें नार छंअछरी गिद्ध सिद्धं। मनं बांछि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते। करी कित्ति चंदं गयं गेतं पत्ते॥छं०॥८८॥

पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना।

कवित्त॥ घरिय अद्ध दिन रह्यौ। साह साहब बल भग्गिय॥
गात षंभ निरघात। ह्रष्य सामंतन लग्गिय॥
पस्यौ षांन आकूब। जेन सेना ढंढोरिय॥
केलीषां कुंजर कुलाह। तुहि तिन संग[4] विछोरिय॥
चहुआंन सेन चव दंत चढ़ि। तनु तिन रव रनंपयौ॥
सुरतांन भीच पंचौ परत। जलधि मध्य पत्तगंयौ॥छं०॥८९॥

(१) मो०—शीश। (२) मो०—रत्तोरे।
(३) मो०—रुके। (४) मो०—तंग।

सूर्यास्त होना।

गाथा ॥ अथ वत दीह सुधीरं। साचिव सेरंन हंनि निडुरयं ॥
करि प्राक्रंम अपारं। जलनिधि मद्धि गत पतंगं ॥ छं० ॥ १०० ॥

रात होना। सेना का डेरे में आना।

कवित्त ॥ जल निधि मध्य पतंग। पत्त[1] दिष्पिय तम ग्रासिय ॥
कायर पंकज मुद्दिग। कुमुद उघघरि अलि वासिय ॥
नर को चितव विहंग। वाम विरहनि दुष वड्ढिय ॥
संजोगिनि शृंगार। चित्त कामह रथ चढ्ढिय ॥
चक्रवाक चित चक्रित हुअ। चोर विटप मन उल्लसिय ॥
औसरे सेन तिय उत्तरिय। स्वांमि धंम मन में वसिय ॥ छं० ॥ १०१ ॥

गाथा ॥ निसचर वरचित चित्तं। चितं जाग्रत उभय सयनेयं ॥
जामं सर सरि चित्तं। वामीयं काम सपनायं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

अरिल्ल ॥ पतत पतंग सुदिष्पिय अंबं। मानहु सीय सुद्ध प्रति व्यंबं ॥
नष मयूष वेदह उप्पारै। मानो तिमिर जोग जंभारै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना।

कवित्त ॥ जबहि राज प्रथिराज। सेन उत्तरिय रयन गत ॥
तबहि सुराजन कज्ज। रहे सामंत सु जग्गत ॥
राचां मंड निडुरकमंध। अत ताइय ईस बर ॥
सु गुरु जैत पामार। अरिय भंजन अलष्प भर ॥
अवरें सु सब्ब सामंत भर। चढ़े राज चौकी समथ ॥
गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि। है पष्पर चवरार हथ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अरिल्ल ॥ डेरा करि बर राज महाभर। तुक अंतर मिलि रहै सिंघ गुर ॥
चौकी सेन चढ़े भर सिंघं। एक एक सक सूर अभंगं ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ राम रैंन पावार भर। अरु सु कन्ह भत्तोज ॥
फुनि रघुवंसी राज घर। सब चौको सजि नींज ॥ छं० ॥ १०६ ॥

(१) मो०-पतत।

अरिल्ल ॥ सजि चौकी अप सथ्थ सकल मिलि। चढ़त सूर भर नृप बरज्जि[1] बलि ॥
गुरु सामंत अयति अप्प गढ़ि। रहे सुचारि दुअं चौकी चढ़ि ॥ छं० ॥१०७॥
इक चौकी वर सिंघ राज सज। भर दुअ चढ़े अप्प अप्पन कज ॥
थांन थांन जकि रहे सूर बर। सज्जि सनाह रहे जु हंस नर ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना।

छंद भुजंगी ॥ चढ़ी साह चौकी सुरत्तांन षांनं। दोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥
चमक्कै सनाहं उपंमा सु चंडी। मनो चंदनी रैंन प्रति व्यंब मंडी॥छं०॥१०९॥
फिरै पंति दंती नकी कंति एमं। मनों कज्जलं कूट कंगार हेमं ॥
फिरै पष्यरी पंति कुदंत बाजी। तिनं देखतें बंदरं द्रोन लाजी ॥ छं० ॥ ११० ॥
लगे पारसी बोलनं मेछ सथ्थं। मनो प्रब्बतं बंदरं केलि कथ्थं ॥
इकं एक चित्तं दुअं चित्त नांही। तिनं षंचियै[2] सार स प्रेम सांही॥छं०॥ १११ ॥
षिझै मुष्प बोलै सुरत्तान दोही। करै भूमि दुज्जन पुरं बान कोही ॥
इसी सेन जोरी सु गोरी नरिंदं। मनों बंधियं पारसं नभ चंदं ॥छं०॥११२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन।

अरिल्ल ॥ सिनह सज्जि प्रिथिराज सहाभर सेन सह।
मनों प्रष्पन प्रति व्यंब प्रगटिय जानि ग्रह ॥
दार ओपम और सिंगार लो अष्पियै।
ज्यों बहर में चंद दुरै ककु दिष्पियै ॥ छं० ॥ ११३ ॥
घुरि निसांन घन सद्द स्रवंन न संभरै।
हय गय साजिय साज चक्कतें उभ्भरै[3] ॥
भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नद्दयं।
*एक तबे उत दिष्पि दल बल बद्दयं ॥ छं० ॥ ११४ ॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ षां रुस्तम तत्तार। षांन चौकी बे लग्गा ॥
षां नूरी हुजाब षां। महमद असि जग्गा ॥

---

(१) मो०—बररजि। (२) मो०—षंचियं।
(३) मो०—प्रति में "है गे बाजिय साज फूकतें उभ्भरै" पाठ है।
* मो०—प्रति में ए 'दल बे उत दिष्प' पाठ है।

केली षां भष्षरी। रोम षेावर षां पन्नी॥
बर भट्टी मद्द नंग। स्वामि मंद्यौ सा अन्नी॥
बीरंग बीर बज्जर बिरज। बर चरित्त चिहुं दिसि लगे॥
सुरतांन कांम अरि भंजनौ। सुबर बीर बीरद्द पगे॥ छं०॥ ११५॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन।

कवित्त॥ अगिवांन उजवक्क। धाइ धावड़ सुरतांनी॥
ता पाछै साहाब। षांन बंध्यौ तुल सानी॥
ता पाछै नूरी। षूजाब सेई संचारी॥
केलीषां कुंजर कुलाह। किन्नी कुट वारी॥
बांनिक्क विराह दुल्लाह बर। भाई षा भट्टी सु सिर॥
प्रिथिराज राज आहुठ तें। बर निसान बज्जै दुसर॥ छं०॥ ११६॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना।

कवित्त॥ सुलतानां रै मुष्ष। समर उत्तल्यौ नरिंदं॥
मनों विद्धि विद्दान। मंडि अजाद समुंदं॥
दोऊ सेन उत्तरिय। धंम्म अप्प अप्पन उच्चारिय[1]॥
अरि सन्नह करि प्रांन। जुद्ध बर मंडि उछारिय॥
पहु फट्टि निसा पह फट्टि कर। घरिय बज्जि घरियार घन॥
प्राची सुमंत दिसि वर भिलिय[2]। अमर कित्ति चिंते सुमन॥ छं०॥ ११७॥

प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन।

छंद गोमालची॥ नव नवय प्रायय विरद्द प्रायय[3] संष दिव धुनि बज्जियं।
झलकंत पवनह मधुर गवनह जैसु अस्व उरज्जियं॥
विकुरंत चंद सुमंत दंदं दिवस तां गम जानयं॥
पह फट्टि चीरं परिग पीरं तोरि भूषन नाषयं॥ छं०॥ ११८॥
नव मिलहिं अलिनी चलै नलिनी सद्द मंद प्रकासयं।

(१) मो०—बिच्चारिय। (२) ड०—सिलिय। ए०—मिलिय। (३) मो०—पाटय।

नय[1] मुदिय कुमुदिय अचित प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपत अजयं धरत सजयं चित्त मरन विचारयं ।
सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय तारयं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
घरि अद्ध भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं ।
उभ्भारि बीरय बंधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवित्त ॥ अद्ध सूर उग्गंत । ढ़ाल ढुक्की सुरतानिय ।
ठांम ठांम मधगंध । सज्जि चल्लै अगवांनिय ॥
धर तर गिर धावत समुद्द । जूह चतुरंग जगाइय ॥
ढिल्ली बै सुरतान । धुक्कि नीसान बजाइय ॥
जा छथ्थ छथ्थ कविचंद कहि । अल्लह देइ सुणाइयै ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां । सुबर सेनरि गाइयै[2] ॥ छं० ॥ १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है और डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ प्रात समर रावर नरिंद । साहस गत पुच्छिय ॥
कहै सब्ब सामंत । मत्ति जंपौ मति अच्छिय ॥
कौन धीर को धीर । कौन साहस को कातर ॥
कवन दुत्त अबधूत । जोग कावंध समातर ॥
बंधनह कौंन कौ बंधियै । अरु किन बंधन तन छुट्टयौ ॥
चिचंगराज राजंग गुर । रहसि मंत बर छुट्टयौ[3] ॥ छं० ॥ १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा बीर है।

दूहै बीर अवजोग । प्रांन पति रुथ्थ न छुट्टै ॥
चुक्कै न बीर अवसर प्रमांन । जिहि जोग अहुट्टै ॥
इक बंधन बंधियै । दूहत तन बंधन अग्गै ॥

(१) मो०—नव ।
(२) ए०—को०—ह०—रंगाइए । (३) मो०—जुट्टयौ ।

स्वांमि संकरें छांड़ि। स्वांमि धक्कारनि भग्गै॥
सोई बीर धीर साहस सुई। सुद्द रन बीर सुधीर हुई॥
चिचंग राव रावल चवै। जल बुडतं रन कीर सोद्द॥ छं०॥ १२३॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना।

दूहा॥ उदित अर्क दिसि पुब्ब पहुं। जगे सेन दोइ जंग॥
अस्व अप्प बल बढ्ढए। बल बज्जंगी[1] अंग॥ छं०॥ १२४॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना।

कवित्त॥ तब प्रथिराज नरिंद। समर उत्तरिय चढ़ाइय॥
सुज्जि सेन चतुरंग। बाम कों[2] दाव खसाइय॥
स्यांम सेत धजबंधि। नेत निक्करि निक्काइय॥
बंदि बीर बिभ्भत। लुलिय लिलाट लगाइय॥
नारद दद्द तुंबर सुचिर। सिव समाधि जग्गाय बसि॥
अद्भुत जुद्ध दोउ दीन कौ। अप्प आन दिष्पै रहसि॥ छं०॥ १२५॥

सुलतान का रणसज्जा से सजकर सवार होना।

दूहा॥ सुनि रुख वत्त सुरतांन चढ़ि। सजि नषसिष अपसिष्ष॥
अरुझर सकल सनाह कसि। चढ़ि अवधूत सनद्ध॥ छं०॥ १२६॥

हिन्दुओं के तेज के आगे भीरों का धीर छूटना।

दूहा॥ जब हिंदू दल जोर हुअ। छुहि मीर धर धंस॥
*असमय धार बषांन चलि। करन उद्धसा क्रंम॥ छं०॥ १२७॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह का शत्रुओं पर टूटना।

दूहा॥ इत राजन उत समर बर। दुअ दल सज्जि असंष॥
तन तुरंग तिन बर करन। नमिय तेज चय नंष॥ छं०॥ १२८॥

---

(१) मो॰- बज्जंगिय।
(२) मो॰--कोदं।
* मो॰ प्रति में "अमरस मय साह करि आवखां प्रारंभ" पाठ है।

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना।

छंद भुजंगी ॥ मिले लोह ह्थ्यं सु बथ्यं हकारे। मनों बाहनी मत्त मै गंध भारे ॥
दिठी दिठ्ठ दूनं भरं आसुरानं। पलं कूह कज्जै उभै सिंघ जानं ॥छं०॥१२८॥
जपै इष्ट मंचं मुषं राम नामं। कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुठ्ठि षामं ॥
कुटै तीर भारं द्रुमं कै निसानं। मनों भादवं गज्जियं मघ्घवानं ॥ छं० ॥ १२९॥
वजै भेरि तूरं बजै संष रहं। मनों सज्जई बीर अनहद्द रहं ॥
भिरें मेच्छ हिंदू लरै लोह तत्ते। सचै ईस सीसं षहं देव पत्ते ॥ छं० ॥ १३१॥
हुए षंड षंडं भरं सो अलग्गं। मनों देव दानैं विहथ्थं बिलग्गं ॥
षिजै लोह आरब्ब वाहै कहूरं। चली फौज चहुआंन गय सूर नूरं ॥छं०॥१३२॥
तबैं आइ ठट्ठौ भरं सिंघ रुनं। तनं आवरे वीर रूपं पथेनं ॥
दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षांन षानं। हयंती हयंती मुषं आसुरानं ॥ छं० ॥ १३३ ॥
तुरी छंडि राजं सहे संग पानं। हए सेल सथ्यं फटे षांन थानं ॥
जुटे सेल रुक्कौ बहै पग्ग झट्टं। परै टहरी[1] झट्ट लग्गै सुघट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भई भीर सिंघं अनुट्ठं अपारं। कहै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
रह्यौ आइ अड्डो पतीधार स्रामं। हट्यौ पग्ग षांनं सु दंमार रामं ॥ छं० ॥ १३५ ॥
ढह्यौ आरबं षांन दो दीन साषी। जिने दीन के ध्रंम की लाज राषी ॥छं०॥१३६॥

पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब ख़ां का मारा जाना।

कवित्त ॥ पंच घटी दिन चढ्यौ। उमरि आरब्ब षांन लरि ॥
हिंदुअ सेन समद्द। क्रोध छंड्यौ सुकंक अरि ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन तुट्यौ तन तुट्टिय ॥
अस्त बस्त बज्जो कपाट। दहीचन जुट्टिय ॥
पग पगनि सिंभ पग पग मुगनि। भुगनि भूमि कित्तिय चल्लिय ॥
धनि सेन साह सुरतांन दल। दलिय बीर मुक्ती घुल्लिय ॥ छं० ॥ १३७ ॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध। उमड़ि आरब्ब षांन जुरि ॥

(१) मो०—टट्टरं।

* बल घट्यौ पतिसाह । षबरि षुम्मांन षांन सुनि ॥
परि अरिष्ट सु बिहांन । भए सब रुथ्थ उतारै ॥
अप्प अप्प मुष छंडि । मंडि करि वार करारै ॥
घरियार सघन समघाइ बजि । लरत लोह भए लखरिय ॥
दोइ दीन दुंद दाहन दरिय । करैं बीर गुन गल्हरिय ॥ छं० ॥ १३८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ सुअंत कमंत बढै अनदोस । परै घन षत्त मरोसिय रोस ॥
लठै जनु सांड भयानक भंति । करै घन गज्ज घनं बन कंति ॥ छं० ॥ १३९ ॥
बहै असि अंक निसंक नि नारि । उतारत भाजन सूत कुंभार ॥
तकै सिर छंन तकत्तिय घाउ । बहै करि बार मंनो बहि बाउ ॥ छं० ॥ १४० ॥
जहां तहां धुक्कत उठ्ठत एक । मरफै तरफै रत तच्छिय तेक ॥
हलंमल होत दरभ्भर फीर । बहै असमांन अनुद्दिय तीर ॥ छं० ॥ १४१ ॥
बहै सर पष्पर निक्कारि जात । तकै तन घट्ट करंत निघात ॥
परैं बर बज्ज गुरज्ज सिरंन । बहै सिर रत्त कै पब्ब झिरंन ॥ छं० ॥ १४२ ॥
अदभ्भुत आवध बज्जिय मार । ढहै जिमि वृत्त सुनद्द किनार ॥
हलंमिल है दल पैदल एक । भयं इम युद्ध घरी भर एक ॥ छंद ॥ १४३ ॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना । रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । सबर संघट्ट[1] पंच घटि ॥
बल घट्टिय पतिसाह । पग्ग षरभरिय षांन जुरि ॥
छाड़ छाड़ अरिष्ट । सकल हिंदून सेन करि ॥
समर सिंघ मुष छंडि । जाइ भंज्यौ तिरक्कौ परि ॥
घन घाइ बजाइ सु फौज फिरि । लरन लोह कट्ठै भिरन ॥
दोउ दीन दीन उप्पम बिसल । मद मैगल बुड्डे लरन ॥ छंद ॥ १४४ ॥

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।
(१) मो०—सपत्र ।

युद्ध वर्णन।

छंद चिभंगी॥ मद मोष कि कुहं दो बर जुहं संकर तुहं आ तुहं।
भर भर भू प्रालं बूथर छालं कर बजि तालं तर तुहं॥
करि कर बर कुंतं सजि बलवंतं भिरि गज दंतं चढ़ि दंतं।
करि घन संमानं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं॥ छं०॥ १४५॥
तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमिचं बजि अनुरत्तं उत्तंगे।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लुट्टे छवि बल पट्टे रग रंगे॥
धर धरनि फुरक्कं चलत न दिष्पं अंतर रुष्पं अवरुष्पं॥
बग्गं अघ जानं को किरवानं गिल छित्त षानं जह भष्पं॥ छं०॥ १४६॥
है वै छिंदवानं तजै न थानं द्रोन समानं गुर पिंडं॥
रिप राज बसंतं दीपति चिंतं संकुचि जंतं मिल षंडं॥
नेजे बर षानं बलि लछि ध्यानं मीर धरानं भ्रमि दंदं॥
सब सेन सनाहं सुरपति छाहं को तिग राहं लै चंदं॥ छं०॥ १४७॥

खुरासान ख़ां का घोर युद्ध करना।

कवित्त॥ षां षुरसांन ढहार। षांन षुरसांन गहन पति॥
सत्त दून भर समर। समर आहुल्लि मंडि छिति॥
सेन नवत भ्रित नवत। नवत गजराज साज नव॥
ते रुमस्त नव मंच। यंच नंच नव्वंत सब॥
दिन अदित हंस दुक सथ्य उड़ि। रन आहुहिय बीर बर॥
दिष्पहि सुजथ्य गंधव गुनति। जुधर कित्त चित्तो सुभर॥ छं०॥ १४८॥

समर सिंह की बीरता का वर्णन।

कवित्त॥ पच्यौ समर षावास। समर जित्तै सुरतानी[1]॥
परि भट्टी मह नंग। सस्त्र वाहे सुविधानी॥
पच्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरां सष्पिय[2]॥
स्वामि धरम जस रत्त। कित्ति भारथ भर भष्पिय॥
रघुवंस पंच पंचौं मिले। बर पंचानन नाम कमि॥
चिचंग बीर पंचो परत। चढ्यौ भान मध्यान नमि॥ छं०। १४९॥

(१) मो०—षुरसानी। (२) मो०—रष्पिय।

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डाकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	) ॥
कविवर बिहारीलाल—(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
गद्यकाव्यमीमांसा—(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	) ॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	) ॥
समालोचना—(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
समालोचनादर्श—पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	≡)	) ॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र—(पण्डित नारायणपांडे रचित)	॥)	—)
बिसूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
हरिश्चन्द्र—पद्य—(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
भगवद्गीता—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	।—)	) ॥
उषेला—(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	) ॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ८ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य—प्रति भाग	१)	—)
हिन्दी लेकचर—(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	—)	) ॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	—)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।—)	) ॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	≡)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१)	—)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।≡)	) ॥
प्राचीन—लेख-मणि-माला—१ भाग (बाबू श्यामसुन्दरदास लिखित) ...	१)	—)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	) ॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित) ...	।—)	) ॥
पृथ्वीराजरासो—पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
,, समय १२-२४	२)	≡)
कुमारसम्भवसार—(पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित)	≡)	) ॥
श्रीधर का जंगनामा	॥)	—)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	—)

सभा के पुस्तकालय की सूची	...	...	...		=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)			...		॥)	-)
चन्द्रशेष का हम्मीर हठ	...	...	..	...	॥)	)॥
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)			...	...	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (भौगोलिक परिभाषा)	...		...	...	=)॥	)॥
,, ,, (ज्यौतिषिक परिभाषा)	...		...	...	।)	)॥
,, ,, (अर्थशास्त्र की ,,)	...		...	...	।=)	)॥
,, ,, (रासायनिक ,,)	...		...	...	॥)	)॥
,, ,, (गणितशास्त्र की ,,)	...		...	...	।-)	)॥
नवीन वृष्टि में प्रवीन भारत		...	...	...	१)	-)
गीतावली ...	...	...	...	...	।)	)॥
योगदर्शन ...	...	...	...	...	२)	-)
गुरुगीता ...	...	...	...	...	।)	)॥
रामचरितमानस	...	...	...	...	८)	।।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की १० पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4-7.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÁI,

EDITED

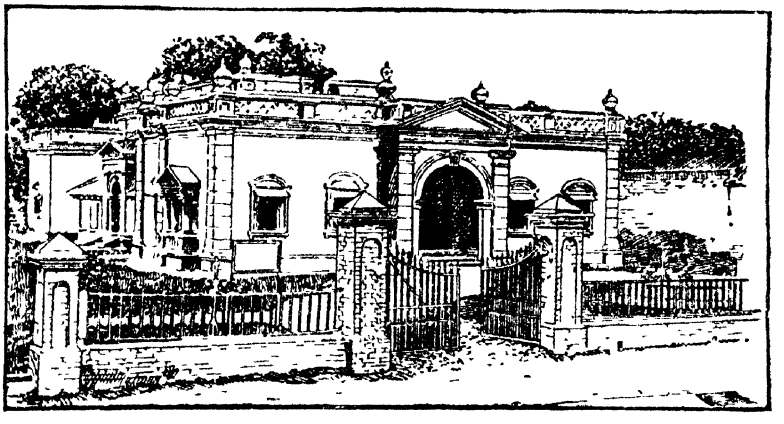
BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIV and XXV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व २४ और २५

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य १)] Issued 31st. October 1906. [*Price Re. 1.*

सूचीपत्र ।

—:o:—

(२४)	धनकथा	....	पृष्ठ ७०५ से ७५८ तक
(२५)	शशिवृता वर्णन (अपूर्ण)		„ ७५९ „ ८३२ „

—·o·—

विशेष सूचना ।

इस ग्रंथ का सारांश गद्य में लिखा जा रहा है, वह आगामी संख्या से इस ग्रन्थ के साथ में छापकर प्रकाशित किया जायगा ।

———

कवित्त ॥ चढ़त भांन मध्यांन । बीर गष्पर उग्गरि घर ॥
सुमरि सेन सामंत । ओट तक्कार घान भर ॥
बज्ज घात आरिष्ट । बीरता रिष्ट गरिष्टिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि । लुथ्थि लुथ्थन पर जुट्टिय ॥
धारंग कुट्टि अन कुट्टिद्दै । डंक बज्जि वज्जी विपल ॥
हरवंत देखि उभ्भै हसब । उघरि सिंभ दिष्पै सुपल ॥ छंद ॥ १५० ॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना।

पल उघघरि दिषि सिंभु । ब्रह्म दिष्यौ ब्रह्मासन ॥
प्रकृति पुरुष दिष्पीन । प्रकृति दिष्यौ गुरु पासन ॥
थान थान जम पुक्किक । रंभ पुच्छै पक्क गृद्ध फिरि ॥
भौ अचंभ कवि चंद । लोक मंगै सु लोग सुरि ॥
लभ्भी जु मुगति षग मग्ग करि । जोग मग्ग जिन मुक्कयौ ॥
सामंत सूर मिलि सूर ग्रह । फिरि न तिनन तन चुक्कयौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥

गष्पर ख़ां और तातार ख़ां दोनों का मारा जाना।

दूहा ॥ उभय सचस गष्पर परिग । थल बिंध्यो सुरतान ॥
समरसिंघ रावर सिमुख । परिग बीर[1] बिय षांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

याकूब ख़ां का घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ पष्यौ षांन आरूब मुष्यं समाहं । बजे टोप टंकार के तार साहं ॥
कटै कंध कामंध नंचे विभंगं । मनों अग्गि लग्गी समीपं न दंगं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
करै बीर भंगं सुभट्टं करं कं । मनो उच्छरै मीन जल मभ्भ पंकं ॥
करे दोच दोही समं चिच कोटं । परे बीर बीरं सुरत्तान जोटं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
मथी सेन दूनं भई थोर थोरी । मनों वारिजं पंति दंती झकोरी ॥
बजै घाइ अघ्घाइ निघ्घाइ घट्टं । पढ़ै वेद विप्रा वकै ज्वान भट्टं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
परै ढाल मालं विराजै कला की । मनों भीति गौषं भिदै नीर जाकी ॥
जिनैं नीर मुष्यं षगं नीर झल्लै । मनों माधवं मास वे वंक फुल्लै ॥ छं० ॥ १५६ ॥
किरव्वान कुंतं झरै वैसु कक्की । मनों बीज खट्टी कुलट्टा मनक्की ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो०—वीय।

जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत ख़ां और तातार ख़ां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया।

दूहा ॥ रहिग जांम तन अद्ध घटि। टरिन बीर जुध धार ॥
षां निसुरत्ति तत्तार षां। लयौ सैन सिर भार ॥ छं० ॥ १५८ ॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना।

छंद भ्रमरावली ॥ जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर। जु अच्छरि पुक्क उच्चारत दूर ॥
चच्चा छुहु गंध सुगंधव गांन[1]। पच्यौ घरि एक उभै रथ भांन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल। भ्रमीय उपावचि ढुंढचि लाल ॥
जु षिभै चहुवांन कृपान कसी। सुमनो दुति दोझर सी निकसी ॥ छं० ॥ १६० ॥
तुटि पहन गौ उपमाहि लच्यौ। सुपच्यौ जनु मेर सुरंग कच्यौ ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्यौ। भमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
नव नंचिय रुंडनि मुंड हस्यौ। तिन ठौर विभक्कक भयानक सौ ॥
परि लुथ्थिअ लुथ्थि तच्चां सरसं। सुभयौ रस शंकर रुद्र रसं[3] ॥ छं० ॥ १६२ ॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै। कवि चंद तच्चां उपमां उचरै ॥
छवि भेा घन स्यांम रुरत्त परी। मनों बिंब बन्नै नदि दै उतरी ॥ छं० ॥ १६३ ॥
उपमा दुसरी रंग देपि कहै। जमुना जल में सरसत्ति बहै ॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै। रस भेद शृंगार पनाच्च चरै ॥ छं० ॥ १६४ ॥
तिन जारन गाड़न को न बचै। रनसं[4] रस तीय सु सत्य नचै ॥
धरकै धर कादर चित्त वियं। करुना रस केलि कुलान कियं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
वर बीरन जुद्ध इतौ सँपज्यौ। तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥

रावल की वीरता का वर्णन।

दूहा ॥ अति प्राक्रम रावर सुभर। कूरँभ नरसिँघ जग्गि ॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर। कथ्थ करन कलि लग्गि ॥ छं० ॥ १६७ ॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना।

गाथा ॥ जब मचि रीठ अपारं। किय अति क्रम्म जवनयं साहं ॥

(१) मो०—जांन। (२) मो०—भवो।
(३) मो०—हसं। (४) को०—क्र०—संसर।

भर हर हिंदुअ भग्गं । कर धरि षग्ग धाय कूरंभं ॥ छं० ॥ १६८ ॥

रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना ।

कवित्त ॥ जबहि सेन चतुरंग । साहि अरि जंग आइ जुरि ॥
तबहि राज रघुवंस । झुकित बर षग्ग अप्प गहि ॥
धनिय मत्त गजराज । सिंघ कर मथ्थ सिघ्र[1] बहि ॥
मनो बसत रंगरेज । मद्द फुट्यौ सुरंग ढहि ॥
दौरे मसंद किलकार करि । धुअ समांन साहस धरै ॥
बज्जे बदून असिवर सबर । सुकवि चंद कीरति करै ॥ छं० ॥ १६९ ॥

दोनों सेनाओं का लथ्थ पथ्थ होकर घोर युद्ध करना ।

छं० विराज। जुरे हिंदु मीरं बद्धे षग्ग तीरं। मुषें मार मारं बद्धै सूर सारं ॥ छं० ॥ १७० ॥
भिरै दूअ भारं तुटै* षग्ग तारं। अकथ्थं करारं कहे देव पारं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
जुटै पंच षानं करक्कै कमानं। रघूवंस रायं धरै षग्ग घायं ॥ छं० ॥ १७२ ॥
नरं सिंघ रूपं जुरै नेक जूपं। महंमद्द षानं रघुवंस रानं ॥ छं० ॥ १७३ ॥
दयौ सेल मीरं पर्‌यौ मथ्थ वीरं। कही फौज साहं बद्धै कक्कवाहं ॥छं०॥१७४ ॥
दुअं तीन षानं दयं तीहि यानं। बद्धै षग्ग झट्टं सुदा हिंम घट्टं ॥ छं०॥१७५॥
बद्धै धार धारं करै मार मारं। चल्लो चल्ल मीरं नयौ नाग पीरं ॥ छं० ॥ १७६ ॥
सिरै तुट्टि तारं मिले षांन सारं। अनुज्जं अपारं ..... ॥ छं० ॥ १७७ ॥
ढहावंत घायं मनो दृष्प वायं। गए सूर भेदं बरी अच्छ मेदं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
दुअं फौज राजं जु साहाब गाजं। रचै दोस सामं करै सामि कामं ॥छं०॥ १७९॥
करै देव साषी सबै कित्ति भाषी। .....॥ छं० ॥ १८० ॥

रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ।

कवित्त ॥ ह्वै तत्तो रघुवंस। भीर भंजन चहुआँनिय ॥
भयौ दुलह तिन बेर। बरन बरनीं सुरतानिय ॥
बीर मंच उच्चार। लोह अक्कित उक्कारै ॥
मिलि अक्करि करि गांन। लोन गिद्धनि उत्तारै ॥
पुज्जंत[2] कलस धपि धवल सिर। कलह केलि भावरि फिरहि ॥
मंडप्प षेत मांनिनि मुगल। सस्त्र कटाक्ष सु झुकि करहि ॥ छं० ॥ १८१ ॥

---

१ मो०—सिंघ । * यह पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है । (२) मो०—पूजंत ।

युद्ध की शोभा का वर्णन।

छंद चोटक॥ दोउ दीन सु दुंदुभि लोह मिले[1]। अँग अंग करक्कत[2] जंग खिले॥
सचलाद्रु नफेरिय नेंक बजं। सु मनों घट भद्दव मास गजं॥ छं० ॥ १८२ ॥
घन टोप सु रंगिय तेज घुले। जनु पंतिय बग्ग घनेक मिले॥
घन पाइक पंति झनंकन यों। मनों मोर कला करि नाचत यों॥छं०॥ १८३ ॥
धुँ धुरी दिस दिस्स* सबंग दिसा। दिग्गि पीत सु पत्तिय अद्ध निसा॥
गज बंधि सनैन चमंकति यौं। सुमनो लगि ऊक परव्वत ज्यौं॥छं०॥१८४॥
किरवान कढंत कला दुसरी। सुमनों झर चौंरिय सी पसरी॥
कटिकंध[3] कमंधन कुद्दि जुरी। मनों बीज कला कुय कूटि परी॥ छं० ॥ १८५ ॥
असवार सु पष्पर कड्ढि तबै। सुमनों घर बंटत[4] बंधव है॥
करि फुद्दि बगत्तर रत्त रयो। मनुं जावक मैं जल बंटत ज्यौ॥ छं०॥ १८६ ॥
भभकंत भसुंडन रुंड परी। बढि पावक ज्वाल मनों निकरी॥
दुहु बीच भसुंडन देव लसै। मनों बाल गनेस हि पूजि हंसै॥ छं० ॥ १८७॥
सिर फूटत भेजिय उड्डि चली। सु मनों दधि मट्ट उपद्दि चली॥
तरफै घन घंटन घट्ट सुधं। सु फिरै जल सुक्कय मीन उधं॥ छं० ॥ १८८ ॥
गज उप्पर ढाल गिरै बर तैं। सु गिरें गिरि केलि मनों जरतें॥
गिरि केलि कमंधन चंत परे। मनों भेष पिसाचन सांच करे॥ छं० ॥ १८९ ॥
† बढ़ि बड्ढि घनं घट्ट सीस जरै। जनु बद्दल बद्दल बीज अरै॥
जु सनाद्दन घाइ सुभै तन में। झर छोरिका सी प्रगटी घन में॥ छं०॥ १९० ॥
चवसट्ठियों तारिय दै किलकी। सु नचै जनु गोपिय पेम छकी॥
घन घाव सु बिद्दल[5] यों घुरकैं। मनों बोलि कबूतर दै सुरकैं॥ छं० ॥ १९१ ॥
दुतियं उपमा कविता सुर कै। मनो पूर नदी द्दय ज्यों फुरकै॥
तरवारनि तेज परै तरसी। घन घुम्मद्दि मध्य मनों झरसी॥ छं० ॥ १९२ ॥
तिन उप्पर पंषिय बंधिय पंति। मनो षद्द इंद्र धनंकिय पंति॥
पिलवान चलै करि पील गिरै। कलसा मनो देवल के बिचरै॥ छं० ॥१९३॥

---

१ मो०—मिले। २ छ०—करक्कत।
* को०—ए०—प्रति में "दिशि जीतिय नीति" पाठ है।
३ छ०—को०—ए०—बंध। ४ मो०—"बंधव बंटत"।
† ये दोनों पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं है। ५ ए०—बद्दिल।

घन छिंक उपंम करै सुरषै। मनो मेघ प्रवालनि कै बरषै॥
घन नाद रही घन घुघ्घरियं। सु नचै मनों बालक विछरियं॥ छं०॥ १८४॥
इक सूरह की उपमा बरनों। दर मध्य गरज्जत सिंघ मनों॥
मुर तीन हजार सु लोह मिलें। तिन में दस तीन कमंध खिलें॥ छं०॥१८५॥
दस रावर हैं वर षेत चह्यौ। टुक की टुकरा नव टूक बह्यौ॥
दोइ दीन रहे इतनै उनमान। मनों तारक प्रात[1] विचंद समान॥ छं०॥ १८६॥

रावल का शत्रु सेना को इतना काटकर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना।

कवित्त॥ दसहै बर कटि समर। छोरि गज गाह छथ्थ लिय॥
छिंक स्रोन सब अंग। पुहप जनु वृष्टि देव किय॥
किल किंचित रस भच्यौ। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुटिय॥
सीस छक्कि धर जुट्टि। कुट्टि अरियन फिर जुट्टिय॥
विडुच्यौ देषि सुरतांन मन। सेन सब्ब मन विडुच्यौ॥
अटि धार कोइ पुज्जै नहीं। बल अभूत आतम कच्यौ॥ छं०॥ १८७॥

पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना।

कवित्त॥ तब पृथिराज नरिंद। साह सम्हौ गज साहिय॥
पंच बान कम्मान। साहि गोरी भुकि बाहिय॥
सरकि सेन सब धरकि। पक्कि जंगल भए ठट्ठै॥
पथ्थ जेम भारथ्थ। कृष्ण सारथ सम[2] गट्ठै॥
बर करकि करकि कंमान कर। पंष तेज कुच्यौ सबल॥
नट डोरि जानि पट्टह चह्यौ। रुधिर कोरि मंडी तिलक[3]॥ छं०॥ १८८॥

सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा।

कुंडलिया॥ तब जंपै सुरतान अप। जीवत जाइ सु जाउ॥

१ ए०—को०—प्रान।
(२) ए०—मन। (३) मो०—तलक।

हूं जीवत रन रुक्किहों। मो मति इच्छै सुभाउ ॥
मो मति इच्छै सुभाउ। ताहि निरषत बल एही ॥
कर तारी घन छांह। तूल अग्गै जिम देही ॥
बीज छटा जिम प्रांन। नई काया मिल ढंपै ॥
ग्रह लोभी ग्रह जाउ। साहि आलम इम जंपै ॥ छं० ॥ १९९ ॥

सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना।

कवित्त ॥ सुबर बीर गजनेस। अंग चौरंग बात सुनि ॥
राज रंक षिल्लै विचार। नर नाग देव मुनि ॥
तुम गज्जन वै साह। दाव दिज्जै नहिं दुज्जन ॥
जस अपजस भै मरन। जद्दु बंधै सज्जन इन ॥
दिसि अदिसि और दुष सुष्प गति। ए सरीर लग्गा रच्चै ॥
उच नीच चंपत चक्क गति। पति विपत्ति जिय सब सच्चै ॥ छं० ॥ २०० ॥

दूहा ॥ का काया मायातिका। का ग्रहनी ग्रह कौन ॥
अप्पन अंषिय मिहचतें। जो देषिये सुलोन ॥ छं० ॥ २०१ ॥

सुलतान का तातार ख़ां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते।

कवित्त ॥ सुनहि षांन तत्तार। अप्प स्वारथ सब लग्गे ॥
पसु पंषी नर जिते। तत्त सोइ तत मग्गे ॥
चियं बंध सेवक सुमंत। तन पें तन चाहै ॥
सुर नर गनधर और। जग्ग जापह अवगाहै ॥
आचेत अवर परवसि परे। भूषन बिन मरदंग कह ॥
जम छष्प जीव पंजर परै। पंच सलाकह तुक्क सह ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ जमर काल सो व्याल भ्रम। पंजर तुट्टत तेम ॥
षां तातार अरदास सुनि। मो आलम मति एम ॥ छं० ॥ २०३ ॥

शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े।

कवित्त ॥ सो सेवक सुनि स्वामि। स्वामि संकटै कुड़ावै ॥

* सो सु मिच अप्पनौ। चित्त मित्तें न दुरावै ॥
* सो बंधव अप्पनौ। दसा अवदसा न कथ्थै ॥
सोइ चिया अप्पनी। आस मुक्कै अंसु सथ्थै ॥
मति सोइ जोइ पग उप्पजै। तत्त सोइ तत्तह मिल्लै ॥
इम परत भिरत सुरतान सुनि। गज्जन वै गज्जन चल्लै ॥ छं० ॥ २०४ ॥

सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना।

कवित्त ॥ तमकि तेज गोरी। नरिंद चित डोल्लै बल[1] साह्यौ ॥
अधम भत्त बिन अब्ब। पुठ्ठि गोरी न समाह्यौ ॥
सुबर बीर सुरतान। सेन चहुआँन ढँढोरिय ॥
पगी जांनि पारथ्थ। जेम दरियाव हिलोरिय ॥
पक्कि किलो बलन सुरतान दिषि। सिंघ लोक अविलरकयौ ॥
मुरि गयो सेन सुरतान कौ। कच सीस तब नंषयौ ॥ छं० ॥ २०५ ॥

पांच ख़ाँ और पांच ख़वासों का घोर युद्ध मचाना।

कवित्त ॥ पंच षान सुरतान। पंच षावास सु चढ्ढिय ॥
पासवान सुरतान। पास बाजू दोइ ठढ्ढिय ॥
रन रुंध्यौ सुरतान। सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
मनु पलथ्यौ नट भेस। बीर करुना रस सज्जिय ॥
भर भीर तीर कुट्टिय दिषिय। तब सु ओट[2] आलम गढ्ढिय ॥
तत्तार षांन घुरसान षां। मंत मंडि सब दिषि कढ्ढिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥

कवित्त ॥ जब सुषान षावास। भरर लग्गिय भय तप्पन ॥
बढ्ढिय सार मुष मार। छंडि गोरिय बल अप्पन ॥
लाल डंड सिर कच। देषि सुरतान साहि पर ॥
तब दौरै भर सुभर। चल्लै चल चक्क धराधर ॥
बिचलिय सुफौज सुरतान लषि। तब कुट्टिय धर धीर सचि ॥
षानह सुपंच षावास भिरि। सिर पर आवध रीठ मचि ॥ छं० ॥ २०७ ॥

(१) मो०—मीचतें।
(२) ए०—क०—ओल।

कवित्त ॥ इत सुथान षावास । उतह सामंत सिंघ भर ॥
रिस रिन मत्ती रीठ । तुट्टि नाइय मसंद घर ॥
गह गहंत उच्चार । कही राजेंद्र राज गुर ॥
नवह षांन रिस ग्रब्ब । छथ्य षाहंत इंस धर ॥
जै जै सुसद्द जुग्गिनि करहि । कर षप्पर उनमंत मत ॥
दुअ लरै दीन वल स्वांम कें । घुरत चंब चंबान घत ॥ छं० ॥ २०८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ हिंदु मेछ्छंभरी । ताल वज्जै हरी ॥
घाय घायं घुरी । मत्त छक्के परी ॥ छं० ॥ २०९ ॥
साहि साहाबरी । षान झुझ्झै परी ॥
राज रावल्लरी । कंध कंधे धरी ॥ छं० ॥ २१० ॥
सीत तुट्टे तुरी । डक्क नद्दं करी ॥
ईस सीसं जुरी । नंचि नारद्दरी ॥ छं० ॥ २११ ॥
थेइ थेई धरी । गिद्ध सिद्धं करी ॥
जस्स जंगल्लरीं । षांन षावासरी ॥ छं० ॥ २१२ ॥
जंग जुद्धं भरी । भीर राजं परी ॥
मार मारुच्चरी । हिंदु सामंतरी ॥ छं० ॥ २१३ ॥
चल्ल चल्लं धरी । मत्त दूहं[1] मुरी ॥
फौज पिक्कं फिरी । राज राजंगरी ॥ छं० ॥ २१४ ॥
धीर कुट्टै धरी । वोलि रावल्लरी ॥
छनौ मीरन्नरी । अस्व छंडे परी ॥ छं० ॥ २१५ ॥
घाय घायं सुरी । वद्धियं बंबरी ॥
काल दिट्ठं सुरी । मद्द घट्टं करी ॥ छं० ॥ २१६ ॥
दिष्पि राजंतरी । छंडि इंसं हरी ॥
कंक बंकं करी । मीरषांनू नरी ॥ छं० ॥ २१७ ॥
ढाल षांनं ढरी । अप्प हेरैं अरी ॥
कट्ठि कीरं मरी । वाहि दूषां नरी ॥ छं ॥ २१८ ॥

सेस विच्छेदरी । रंभ थंभं ढरी ॥
देषि दाहिम्मरी । पीप सा निड्डरी ॥ छं० ॥ २१८ ॥
अल्ह सारौ सरी । दूर गाजं धरी ॥
देषि लोहं जरी । पग्ग पग्गं भरी ॥ छं० ॥ २१९ ॥
जुद्ध भूमं करी । काम सामंतरी ॥
भीर पक्कं परी । चढ्ढि हंसे सुरी ॥ छं० ॥ २२० ॥
भाल भल्लै सुरी । राज कित्तं करी ॥
अट्ठ थानं गिरी । दूअ रावल्लरी ॥ छं० ॥ २२१ ॥
और सब्बं सरी । थांन ढाहे धरी ॥
कित्ति चंदं करी । नाम ले अच्चरी ॥ छं० ॥ २२२ ॥
दीह दस्सं धरी । सेष सेषं परी ॥
संक सुक्कं सुरी । भान थानं परी ॥ छं० ॥ २२४ ॥
भेद चल्लै सुरी । दूर सें अंबरी ॥
बिंद ढुंढै फिरी । जैत राजंगिरी ॥ छं ॥ २२५ ॥
कित्ति देवं करी । फौज चल्लै धुरी ॥
चल्ल विचल्लरी । कुल्ल कुल्लं मरी ॥ छं० ॥ २२६ ॥
..... । देव नंदै धरी ॥ २२७ ॥

कन्ह का खुरासान ख़ां को मारना ।

छंद मोतीदाम ॥ पढ्यौ जबै सेन सुरावर सार । मनों मदमत्त कँडीर गुँजार ॥
नयौ सिर नाग सुमंडिय जंग । घुरैं सुर जोरय[1] चंबक संग ॥ छं० ॥२२८॥
बढै करि बार सु संगिय सूर । परे पर नार असूर पनूर ॥
गढी बर सिद्ध रु सूर समंत । भयौ जनु कांनि कै ईसर अंत ॥छं०॥२२९॥
नवै दय नारिय चौसठि नारि । बरैं बर सूरय देय धमारि ॥
मिले सम कन्ह अनो षुरसान । बकै दुह ईसह आन समान ॥छं०॥ २३०॥
दुअं बर धारिय संग गुमांन । चए चिय कन्ह सुषान उरांन ॥
पढ्यौ षुरसान सु बंधव नेत । बढी अति देषि प्रथी पति जेत ॥ छं० ॥२३१॥

(१) मो०—जोरसु ।

खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज़ होना।

दूहा ॥ परे षेत षुरसान षां। दहि घर घाय अचेत ॥
फिरि दल हिंदू जोर हुअ। बजि घरघाई षेत ॥ छं० ॥ २३३ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावै इसको पकड़ो। सब सरदारों का टूट पड़ना।

छंद मोतीदाम॥ मिले बर हिंदु तुरक्क सुमार। कटक्कट बज्जिय लोह करार ॥
उडै बर षग्ग न टूक निनार। मनों कुटि सूर किरन्न प्रचार॥ छं० ॥ २३३॥
कहै[1] बर कुद्दि सुबोल उचार। जपै उर राम कहै मुष मार ॥
भिरें भर मीर सु सामंत सुद्द[2]। कहै कवि कथ्थ सु अंषिन लुद्द ॥छं०॥ २३४॥
बहै स्वर[3] संग दोऊन अपार। ढहै बर मीर सुअंग अगार ॥
चंपे दल साहि जके चहुआंन। गहै सुरतान घनो षग पान॥ छं० ॥ २३५ ॥
फुले मनो साद्दप भ्रम्म सुरत्त। बढ्यौ मन सांहि गहंन सुवत्त ॥
चवै चहुआन अहो बर सूर। करै सब मीर षरग्गय चूरि ॥ छं० ॥ २३६ ॥
तपे गहि राज सु संग बिभग्ग। कुटे धर मीर सु धीरज नाग ॥
चवै मुष मार सुचावंड राद्द। दलों सुरतान करों इक घाद्द ॥ छं० ॥ २३७॥
सुने बलिभद्रय पीप सु अल्ह। नरां सिर[4] निडुर रष्पन गल्ह ॥
कंपे चव सामंत धाद्द परेस। बहै बर सेल कियौ इह भेस ॥ छं० ॥ २३८ ॥
लगी बर सेल कमद्द निसास। फुले मधु[5]माधुअ केसु पलास ॥
कटे बर षग्ग कमद्द निसार। तुटै बर देवल अंड अधार ॥ छं० ॥ २३९ ॥
धकै बर सामंत जुद्द अनुद्द। परे असि टेकत उट्ठि कमंध ॥
चले बर नाजय रुद्धि प्रनाल। नषै बर सूर अपच्छर माल ॥ छं० ॥ २४० ॥
छुट्यौ धर धीरज मीर अभंग। बढ़ी बर जैत सु दिष्पिय जंग ॥
फटी बर फौज अनंधिय जात। अघाइय गिद्ध रु सिद्ध सुमात ॥ छं० ॥ २४१॥
नचै बर नारद बीर निसान। थेई थेई कहंत वै थिरतान ॥

(१) मो०—कहै। (२) मो०—सुद्ध। (३) ए०—कु०—को०—बर।
(४) ए०—कु०—को०—ढहै बर। (५) मो०—मनु माधव।

रिसै[1] अति ताइ तुतार सुढांन। मिलै मुहु जोर हुए मरदान॥ छं॰ ॥२४३॥
छए छिय नेज ततार सुतंन। पछौ घर मुच्छि कहौ धनि धंनि॥
करै मुष कित्ति नषै वुसमंन। हली वर फौजय साहि सुतंन॥ छं॰॥ २४४॥
ढहै घर मीर मु साहिज मंन। ..... ॥ छं॰ ॥ २४४॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध।

दुहा॥ अति संकर वर जुद्ध हुअ। इत राजन उत साहि॥
दोऊ नैंन अंकुरि परे। बजि बीरा रस ताहि॥ छं॰ ॥ २४५॥

शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना।

उअ रुष आइ सहाबदी। इय रुष आइय राज॥
इय कर षेालै षग्ग वर। उअ कमान वर साज॥ छं॰ ॥ २४६॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन।

कवित्त॥ जबहि साह आलम्म। झुक्कि[2] कम्मान अप्पगहि॥
तबहि राज प्रथिराज। तेग पक्करिय अप्प रहि॥
वह बरषत वर तीर। पंचि वरषंत सार ढहि॥
इहै तेज षग्ग झमहि। करी तुहे कमंध बहि॥
आलम्म राज दुअ जुद्ध हुअ। नह दिष्यो दानव रु सुर॥
वर दाय चंद इम उच्चरें। करत कित्ति गैनह अमर॥ छं॰ ॥ २४७॥

घोर युद्ध वर्णन। शाह की सेना का भागना।

छंद चिभंगी॥ पढ़ मंदह रतनं[3] अट्ठह रतनं[4] पुनि वसु हरनं रस रहनं।
चभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई।
अंतै गुर सोहै महि लय मोहै सिद्ध समोहै यह होई।
विज्जू वर षग्गं असि मर लग्गं भिरि भिरि जग्गं रजि रंघं॥ छं॰॥ २४८॥
बज्जै रिन तालं माहो मालं षग्ग सु घालं भिरि चालं।
राजा प्रथिराजं असवर भालं साहि सु साजं भिरि भाजं।

(१) मो॰-रचै। (२) मो॰-झुकित। (३) ए॰-क्र॰-को॰-हरणं।
(४) ए॰-क्र॰-को॰-हरणं।

किरवान रुकंतं रुजि बलवंतं भिरि भय भंतं कलमंतं।
षप्पर अधिकारी चौसठि नारी दैदै तारी किलकारी ॥ छं० ॥ २४९ ॥
उक ईसर नहं नचि उन महं रजि रज रुहं जुरि जंगं।
अद्भुत रस अंगं षग्ग उनंगं हार सुभंगं परि रंगं ॥
कामंतं सूरं चढ़ि खिन्नूरं बजि रन तूरं असि चूरं।
हुहै धर भीरं साह गुचीरं गजि गंभीरं भिरि बीरं ॥ छं० ॥ २५० ॥
नचि मीर कमंधं हसै कसिद्धं भिरि भिरि जुद्धं षग षद्धं।
नंषै हय हंसं तेज तरंसं सद्धित सरंसं करिगंसं ॥
बुल्लिय सुबिद्धानं हिंदुअ रानं कढ़ि कृपानं गहि पानं ॥
झारे षग झहं विज्जल कुट्टं षाहि बिकहं नचि नहं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
धनि धनि सामंतं जानि जुगंतं भिरि भर जंतं अरि झंतं।
चतुर चहुआनं गह्यौ न बानं साहि सुतानं बलपानं ॥
छंडे सिर छत्तं साहि सु तंतं गोधीरत्तं मनमंतं ॥
बहरी तजि बाजं रुचि गजराजं लरि षग साजं कह काजं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
तत्ते षरि राजं साहि सु साजं जै जुग काजं रस साजं ॥
आलम अरु राजं दुअ दे बाजं[1] धनि धनि बाजं भिर बाजं ॥
दिवरी तहां राजं तजि गज राजं हैंबर साजं गुर गाजं ॥
गहि कर कंमानं तीर सुतानं लगि असमानं बहि बानं ॥ छं० ॥ २५३ ॥
बिस झक्कर टोपं राजन धोपं असि वर जोपं बहु कोपं ॥
है धनि सु बिद्धानं कर अप्पानं अहि सुरतानं बलवानं ॥
उडि दिसि दिसि भाजं मीर अकाजं पष्पि सहाजं गहि बाजं ॥
भग्गी बर फौजं साहि सु जौजं मन करि मौजं धरि धीजं ॥ छं० ॥ २५४ ॥

शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ भगी अनी पुरसान षां। कुहि मीर धर धंम ॥
गह्या साह आलंम कर। बिचलि सुभर तजि श्रंम ॥ छं० ॥ २५५ ॥

सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कुसाहे कुसाहे कहैं पानजाहे।

(१) मो०—राजं।

ग्रह्यौ हथ्थ गोरी अबें साहि बाहे ॥
लग्यौ चिच कोटी सुरत्तांन राह्यौ ।
बजे वे निसानं सजित्यौ सराह्या ॥ छं० ॥ २५६ ॥
गयौ भग्गि कूरंभ मरहट्ठ वालो ।
गयौ हत्त मुक्के नृपं वे पँवाली ॥
सबें सेन बंधी रहे सेन मुक्कै ।
गयौ छब्बसी रोमसा धंम चुक्के ॥ छं० ॥ २५७ ॥
बरा रीत गौरं भगे रुंड मुंडं ।
पर्यो मभ्भ सामंत गोविंद कुंडं ॥
भग्यौ कंनरी हत्त वे हत्त बानं ।
भग्यौ बेदरी बल कही छंडि पानं ॥ छं० ॥ २५८ ॥
बदं वे कुसादी पर्यो कारमीरं ।
सुलत्तान दहू कुर्यो हथ्थ तीरं ॥
भग्यौ प्रच्छनी पलची झारषंडी ।
जिनै भुज्ज गोरी ग्रहं लाज मंडी ॥ छं० ॥ २५९ ॥
भग्यौ वै बंगालो करंनाट वाली ।
भग्यो भागि सांद्रोह कूरंभ वाली ॥
पर्यो भूमि सा बहरी बह तीनौ ।
जिने ठेलि चहुआन सब सह दीनौ ॥ छं० ॥ २६० ॥
बयं विंदु वाली भग्यौ हथ्थ सब्बं ।
जिने लोहची लग्गि अंची[1] न कब्बं ॥
मयं मेछ बड्डे मयं मक्क राया ।
जितें भागतें बार लागी न काया ॥ छं० ॥ २६१ ॥
भग्यौ ब्रह्म जा पुच्च अच्छी कुचीरं ।
जिनें भग्ग तें भग्गि सुरतान धीरं ॥
भग्यौ गज्ज पीरा उसा हत्त नाथं ।
भग्यौ अग्गिवानं सु मानं सु साथं ॥ छं० ॥ २६२ ॥

(१) मो०—चंचन ।

पस्यौ षांन आहुब संसार साषी।
जिने दोन बंदेन को लाज राषी॥ छं०॥ २६३॥

रविवार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना।

कवित्त॥ गहि लीनौ सुरतान। समर लिन्नौ जसु[1] भारी॥
चामर छत्र रथत्त। बथत लुट्टे रन रारा॥
चिच बेाट चव रंग। साहि दिन्नौ चहुआनं॥
चमुर दसी रवि डार। वीर बज्जे परधानं॥
बुल्लयौ बीर कैमास तब। धन बहुत चल्लो समुह॥
आरब्ब राव भीरा सुबर। चंपि जु रथ्यौ गंज उह[2]॥ छं०॥ २६४॥

पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना।

दूहा॥ परे सेन गोरी गरुअ। गहि लीनौ सुरतान॥
सोमेसर नंदन सुकर। जै लिन्नो जय पान॥ छं०॥ २६५

इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना।

कवित्त॥ गह्यौ साहि आलम्म। सुजस लीनौ चहुआनं॥
पलक षांन भगिगय विहाल[3]। परे है गै धर थानं॥
मीर मसंद मसंद। कटे सामंद हथ्थ भर॥
दुअ राजन भर जुरे। सुबर लिन्नौ सु अप्पकर॥
जै जै सबद जुगिनि करै। सीस गहै ईसन समथ॥
कवि कहै चंद भारथ्थ बर। करिय राज्य प्रारंभ कथ॥ छं०॥ २६६॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा।

दूहा॥ करिय जैत राजन सु बर। चलिय लछ्छि बर साज॥
तब बिचार राजंन गुर। कही राज सिरताज॥ छं०॥ २६७॥
तब रावर बर राज गुर। कहिय राज प्रथिराज॥

(१) मो०—नारी।
(२) मो०—वह। (३) ए० ब० को—विहान।

ढिल्ली दिसि ग्रह चल्लियै। फिरि सु मुहरत साज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हो इसका कारण कहो।

फिरि राजन इम उच्चरिय। सुनौ अहुठ नरिंद ॥
का कारन पीछै फिरै। सो कारन कहि नंद ॥ छं० ॥ २६९ ॥

उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चलकर करना चाहिए।

तबै सिंघ फुनि उच्चरिय। अहो समंतन राज ॥
साह गह्यौ तुअ जैत हुअ। ग्रह करि मंगल काज ॥ छं० ॥ २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़कर शुभ काम कीजिए।

रहै अप्प सेना सुसथ। अरु दाहिम सुराज ॥
भट्ट चंद सामंत सथ करि सुभ मंगल काज[1] ॥ छं० ॥ २७१ ॥

वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए।

जतन लछि बर किज्जियौ। रहौ सुभर अप्पानि ॥
जब रह फिर दूरजिंद दूत। तब कढ्ढै लछि आनि[2] ॥ छं० ॥ २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना।

गाथा ॥ कहि प्रथिराज नरिंदं। जु ककु कहै सिंघ दाहिमं ॥
सोइ थप्पिय द्रढ मंतं। चलि राजिंद ढिल्लि मग्गेयं[3] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना।

ढिल्ली मग्ग सु चलयं। फागुन सुदि चयोदसी दिवसं ॥
क्रमे सु दस दिन मग्गं। अवरं रष्पि सब्ब भार तथ्यं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

---

(१) मो०—करि चल दिल्ली साज।
(२) मो० प्रति में "जब आज दिल्ली सुजै तब कढ्ढे लछियांन"।
(३) ए० कृ० को—मगार।

रावल के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना।

दूहा ॥ सकल सथ्थ रावर सुभर। अरु दाहिम गुर राज ॥
भट्ट चंद बर दाइ बर। आनि समंत सकाज ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ बड़ सामंत सु काज। अचल पुंडीर मंच गुर ॥
राम रैन पावार। चंद चाहुलि सेन बर ॥
रष्पि पास नृप सिंघ। रहै थट्ट लष्खि सुभट्टं ॥
और सकल सब रुथ्थ। जुद्ध जस लच्छन सुघट्टं ॥
ता मद्धि राज संबोधि थपि। सु गुर मंच बरदाइ थिर ॥
चढि चल्ले राज दिल्ली दिसा। लै जदू पज्जून भर ॥ छं० ॥ २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले।

दूहा ॥ जाम देव पज्जून नर। बलि भद्र जैत अरु सिंग ॥
कन्ह काय चहुआन बर। चल्ले राज गुर संग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले।

अरिय जीति ग्रह दिसि चले। आइ निकट फूनास ॥
चलत पंथ राजंन नें। पूजा करनह जास ॥ छं० ॥ २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले।

कवित्त ॥ निकट सुदिन फूनास। पूजि बन भंति राज नर ॥
चंदन कुमकुम अगर। मंडि श्रीफल असंष पर ॥
फिरि परदष्पिन राज। मानि बर विप्र बेद धुर ॥
घुरै नह मीसांन। गांन नर तर्क नचैं बर ॥
ज्वालनिय मान तृप्पय नृपति। अति सुदेव नरवेद जुत ॥
दिन बीच चल्ले जोगिन पुरह। ग्रहिय मेर संग्रहनि भंति ॥ छं० ॥ २७९ ॥

कुमार का पैदल आध कोस आगे बढ़कर मिलना।

दूहा ॥ ग्रहिय साहि ग्रेहं गवन। आइ मिले सुकुमार ॥
मधुसाह अध कोस पर। कंडि तुरिय पै पारि ॥ छं० ॥ २८० ॥

राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना।

चढन राज बर हुकुम दिय। रेत सुमंतहु साज॥
जैत हुई आनंद करि। ग्रह जित्तन सुभ काज॥ छं० ॥ २८१॥

चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे।

गाथा॥ ग्रहन जित्त अरि ग्रहियं। चैच बदी सत्तमी दिवसं॥
गुरुवारं सुभ जोगं। राजा संपन्न धवल मन्भहनं॥ छं० ॥ २८२॥

महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया।

आये राज सुधामं। गए ग्रह मंडि साल सुभ तथ्यं॥
बोलि आइ सब वामं। निवछावरं करि गई ग्रेहं॥ २८३॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं। राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए।

गई ग्रेह ते चीयं। राजन सुख बिस्रमियं तथ्यं॥
अति मादक उनमादं। करि सुष सेन रमन रस क्रीडा॥ छं॥ २८४॥
दूहा॥ क्रीड़ि वांम न्रप रंग करि। नेह संपूरन काज॥
दीय बचन रष्यन सुजन। डोली साह सुराज॥ छं० ॥ २८५॥

शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय।

डोली साह सचाब की। दोइ रकेब बर सथ्थ॥
सो डोली कज दस असुर। करि हुकंम मर मथ्थ॥ छं० २८६॥
दस आदम साहाब कज। रषि भोजन न्रप पास॥
सुष सचाब तुम रष्पियो। रहै राज सुभ भास[1]॥ छं० ॥ २८७॥

शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना।

सुनिय बत्त गज्जन पुरह। ग्रहत साह की घत्त॥
अनुचर आतुर अति भयौ। उर जानी अविगत्त॥ छं० ॥ २८८॥

(१) ए०—कृ०—सास।

एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार ख़ां को दिया।

डर जांनी अविगत्त जब। भजि आयौ भट मभिझ॥
कहर हक्कि पार्नाय चढि। कहि ततार अग गुभझ॥ छं० २८८॥

तातार ख़ां ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए।

गाथा॥ सुनिय ततार सु तब्बं। रहनं तुक्क दिल्लीपुर राजं॥
पिची आतुर पटयं। बेगं साहि दंड कज्जेनं॥ छं०॥ २८०॥

दूहा॥ तुम जाहु सु चहुआन प्रति। कहु सलाम सब सथ्थ॥
तुम सु बढे हिंदून में। छुटै साहि सुभ बत्त॥ छं०॥ २८१॥
तब ततार अरदास लिषि। प्रति पठई राजान॥
तुम छंडौ पतिसाह कौं। तुम सुं बडे चहुआन॥ छं०॥ २८२॥

खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना।

पिची चलि चहुआन पै। करिके सबन सलाम॥
पंच सत्त असबार लै। कोस सत्त मुक्कांम॥ छं०॥ २८३॥

खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा।

छंद पद्धरी॥ धर मग्ग चल्यौ पचीस हिंदु। अति चिंत सुरतान बंद॥
द्वादसह कोस प्रति चलै मग्ग। निज मंच दृष्ट चित वन सु लग्ग॥ छं०॥ २८४॥
अपसगुन सगुन चितौ विचार। दिसि बाम सिंघ दिष्यो दचार॥
उल्लूक सबद दिय गिरह सीस। दाहिन सुपत्त मृग मृगी ईस॥ छं०॥ २८५॥
मृतक रथी सनमुषह आइ। फुनि समुष ग्राम लग्गी सु लाइ॥
अति उअर पिचि आनंद जग्ग। आतुरह चल्यौ दिल्ली समग्ग॥ छं०॥ २८६॥

खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना।

कवित्त॥ तब पिची लोरक्क। चले दिल्ली पुर मग्गं॥
पंच सत्त असवार। उर सु चिंता मन भग्गं॥
वामी देव चवंत। तार उक्कव सिर उप्परि॥
मृग समुह दाहिने। चल्यौ पहु पिंगी निक्करि॥

बंदेव चित्त मन मत्त हुअ । चल्यौ कूच पर कूच धरि ॥
आए निकट दिल्ली सु तट । मन चिंता अंदेस हरि ॥ छं० ॥ २९७ ॥

लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाथा ॥ मन चिंता अंदेहं । षिची आइ दिल्ली मझेनं ॥
अहनि सिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्यं ॥ छं० ॥ २९८ ॥
तहां उतरि लोरष्यं । बाग निरष्पि उत्तिमं काहं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तष्याहं ॥ छं० ॥ २९९ ॥

दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा ॥ दोइ घरी दिन पक्कइ रहि । चल्यौ दिली पुर मांहि ॥
अति उज्जल वस्त्रंग वर । प्रावर षिचि उछाह ॥ छं० ॥ ३०० ॥

नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली । यह शुभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेस सगुन्न हुअ । मालनि फूल उछंग ॥
लिए बंदि षिची सुमन । मुक्कि मधुर सुभ नंग ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।

चलि षिची दरबार मग । जहां राज प्रथिराज ॥
अषर सूर सामंत सुभ । बैठे सभा विराज ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा वकील आया है । राजा ने तुरंत सामने लाने की आज्ञा दी । लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ।

कवित्त ॥ गय षिची दरबार । द्वार पालक सम अष्पिय ॥
कूरम केहरि कहीं । साहि उक्कील सुनष्पिय ॥
गय केहरि नृप निकट । कह्यो गज्जन पुर दूतं ॥
पठयो षान ततार । साह छंडावन बत्तं ॥
नृप बोलि कह्यौ हज्जूर तिहि । एका एकी मध्य लिय ॥
सनमुष्य आइ चहुवांन को । सीस नाइ तसलीम किय ॥ ३०३ ॥

सभा में बैठे सामंतों का वर्णन। राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर के बैठना॥

कवित्त॥ सभा विराजत राज। आइ बैठे सुब्बर भर॥
कन्ह काइ चहुवांन। जैत बलिभद्र सिंह नर॥
जांम देव पज्जून। बड़े सामंत लज्जभर॥
और सकल भर राज। बैठि तहां महुल रंग जुरि॥
आए सुतांम लोरक्क तब। मिलि सलाम राजन करिय॥
बैठन्न हुकुम राजांन किय। करि सलांम बैठो नरिय॥ छं०॥ ३०४॥

लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्ज़ी राजा को दी।

दूहा॥ तब षिची प्रथिराज कों। करि सलांम तिय वार॥
लिषि अरदास ततारषां। समपी बीर विचार॥ छं०॥ ३०५॥

मधु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो।

मधू साह परधांन कर। दिय पची षचीस॥
किय हुकम्म बर राज नें। बंचे साह जगीस[1]॥ छं०॥ ३०६॥

तत्तार खां की अर्ज़ी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना।

साटक॥ स्वस्ति श्री राजंग राजन बरं धर्माधि धर्मं गुरं॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्तने॥
अरदासं तत्तार षांन लिषियं सुरतांन मोचं करं॥
तुम बड्डे बड्डाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं॥ छं०॥ ३०७॥

राजा ने अर्ज़ी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया।

दूहा॥ तब षिची अरदास किय। बंचि सुनाइब[2] राज॥
तब राजंन प्रसन्न हुअ। दई सीष यह काज॥ छं०॥ ३०८॥
उठि राजन दीने बहुरि। यह षिची गय अप्प॥
मन चिंता लग्गी घनी। राजन देषत तप्प॥ छं०॥ ३०९॥

(१) ए०—ल०—को०—गुहीर। (२) मो०—ल०—को०—ए०—बर।

दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया।

बहुरि सु आए दिन अवर। मिलि राजन किय बत्त॥
सेंमुष राजन उच्चरिय। मन सु अगोचर तत्त॥ छं०॥ २१०॥

लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना। पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा?

छंद पद्धरी॥ पचीस बेंन सम अष्पि राज। चहुवांन वंस तुम हिंदुलाज॥
चीतौर स्वांमि कै संभरेस। चालुक्क राज जिहि पग्ग पेस॥ छं०॥ २११॥
कमधज्ज मंगि तिहि ब्याहि अप्प। जैचंद उरहि[1] दिय अनुज नप्प[2]॥
कइ वार साहि बंधयौ पांन। दीनो केवार जिहि जीव दांन॥ छं०॥ २१२॥
तब लोरक सम[3] पुछै नरेस। गोरी सु नांम किहि विधि कहेस॥
सम राज अष्पि पची निवार। नृप राज एह अद्भुत विचार॥ छं०॥ २१३॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था। पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निज़ाम की टहल करने लगा।

कवित्त॥ बैठि पाट असुरांन। साह जल्लाल प्रमानं॥
अनँत तेज षग्ग ताप। अनँत दातार दिवानं॥
पंच सत्त दस हरम। साह कामी तप भारी॥
चमल हरम निज जांनि। *छनै कर असि बर नारी॥
सुत ताप राज उरतें गहन। कांम षैर निसि साह मन॥
सुरतांन षैर अग्गै धरिग। सेष निजांम सु हुअ प्रसन॥ छं०॥ २१४॥

शेख़ निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें

(१) को०—ह०—ए०—सुअर। (२) ह०—ए०—नाय।
(३) मो०—समह।
* मो०—प्रति में "छनै कर घर कर नारी" पाठ है।

ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा।

प्रसंन निजांम सुसेष[1]। लेष सांई इमलेषं॥
अहो साह जल्लाल। आनि तुझ समथ सदष्यं॥
महा प्रबल तप तीन। दीन हिंदू दल[2] आलम॥
धरि करिहै निज पांन। जोर जुगिनि पुर जालम॥
अज्जाब नारि तिहि पाप तें। असुध कित्ति दुनियां रहै॥
दस दिसा दष्प असुरांन दल। लिहि लिलाट तित्तौ लहै॥ छं० ॥ ३१५ ॥

शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें। एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया।

छंद विअष्परी॥ आयो निज सुरतानह गेहं। बेन निजाम उचर दुष लेहं॥
जौं मुझ सुत ह्वैहै बल कारो। तौ मुझ मारि लेइ घर सारी॥ छं० ॥ ३१६ ॥
तिनें नारि इक गरभह धरयौ। दासी कांन साह अनुसरयौ॥
ततषिन साह सीस हनि नारी। समह गरभ धर मंड[3] सुधारी॥ छं० ॥ ३१७ ॥
बरष पंच अनि ऊपर बीतं। हुअं साह सुरतान सुअतं॥
सबै षांन मिलि मंच विचारं। कवन सीस अब छच सुधारं॥ छं० ॥ ३१८ ॥
सेष एक मधि गोर निवासी। तिहि अद्भुत रस दिष्पि प्रकासी॥
अष्पय आइ जहां मिलि षानं। कुदरति[4] कथा एक परमानं॥ छं० ॥ ३१९ ॥
झूठौ होइ तौ सजा लहीजै। सची हूअै निवाजस कीजै॥
सबै षांन मिलि पूछै बत्तं। कहिवे सेष सु क्या कुदरत्तं॥ छं० ३२० ॥

[१] मो०—प्रसनि जानि इंसेष। [२] ए०—छ०—को०—अलि।
[३] मो०—मंडह। [४] ए०—छ०—को०—कुटुरति।

बीबी फतेसाह की घरनी । कुदरति गोर मद्धि एक धरनी ॥
गोरि मद्धि इक चेलक वासं । देष सरूप कोटि रवि भासं ॥ छं० ॥३२१॥
सबै पांन मधि गोर सिधाए । करि अंगुरी तिहि सेष दिषाए ॥ छं० ॥३२२॥

उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ।

दूहा ॥ गोरि दिखाई पांन तिहि । तनषिन भंजी पाज ॥
निकस्यौ सूरति सरस कौ । जोति भांन महराज ॥ छं० ॥ ३२३ ॥

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा । इस की जाति गोरी है । यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा ।

कवित्त ॥ जोति रूप महराज । साहतें प्रगट सवायौ ॥
पांना पांन जिहान । बेगि निज्झूमि बुलायौ ॥
लिषिय जनम तिय लेष । सेष तत षिन इम अष्यो ॥
नाम साह साहाब । जाति गोरी तिहि दष्यो ॥
बहुतेज तपत तप जग्गि है । धरा हिंद सम लग्गि है ॥
दस दिसा साह दौही फिरै । घन बीरा रस भुग्गि है ॥ छं० ॥ ३२४ ॥

लोरक ने शाह को पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई ।

दूहा ॥ ज्यौं बहु रिन भग्गि है । फुनि तिहि गद्दि है पांनि ॥
पुब्ब कथा षिची कहै । सुनहु राज चहुआंन ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है । उसको और तीस हज़ार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटे ।

कवित्त ॥ तब सुराज प्रथिराज । कहै षिची सुनि बत्तं ॥
इम आलम गति कहै । सोइ मानै करि सत्तं ॥
गज सु एक सिंघली । नाम शृंगारहार गज ॥
अति पीय साह साहाब । लषै निसि दिन आलम सुज ॥

अप्पौ सु मोचि वच्च डंड करि। तीस सचस दय नेक बल ॥
कुहै जु साचि साहाब तब। छम तुम रहै सु प्रेम भल ॥ छं० ॥ ३२६ ॥

खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए।

दूहा ॥ तब षिची इम उच्चरै। सुनौ राज प्रथुराज ॥
जो मंगो सो देउ तुम। कुटै साचि बर आज ॥ छं० ॥ ३२७ ॥

पत्र लिखकर दूत को दिया कि जो इक़रार हुआ है वह भेजो।

थप्पि वत्त इह पच लिषि। दियौ दूत के हथ्थ ॥
जो कछु कियौ करार कर। सो पठवो तुम अथ्थ ॥ छं० ॥ ३२८ ॥

पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो दस दिन में रात दिन चलकर पहुंचे।

तब ततार षां मुक्कि दिय। रजत हयगय नंग ॥
अचि निस आतुर आइचर। उभय सु दस दिन संग ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना।

कवित्त ॥ दिय सु दंड सुरतांन। गय सु इक्कति पंचच हय ॥
औराकी बर उंच। उभय पष्यैं सु निरम्मय ॥
नाम पद्द शृंगार। षद्द रिति मद्द पद्द झर ॥
अलि गुंजत मकरंद। वास भज्जंत अवर डर ॥
है सचस तीस अनि साज भल। दिय सु दंड सुरतान तय ॥
मुक्यौ सु राज प्रथिराज तब। चल्यौ साह गज्जन पुरय ॥ छं० ॥ ३३० ॥

सुलतान का ग़ज़नी पहुंचकर अपने उमराओं से मिलना।

दूहा ॥ चल्यौ मेच्छ गज्जन पुरय। दै सुदंड प्रति पिथ्थ ॥
मिलिय उमरा अप्पने। करिय बैर सम सथ्थ ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

शाह के महल में आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना।

गयौ साचि आलम महल। करी बैर बर अप्प ॥
मिलि ततार षुरसांन षां। बड़ वषत्त मिलि तप्प ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ वह सु पट्ट शृंगार। मत्त गज राज पटा भर ॥
रहै नरिंद मुष अग्ग। रास रेसंम फंद पर ॥
जब राजन चढ़ि चलै। तबहि मुष अग्ग निरष्पै ॥
जे अनंत गज प्रबल। ते सु प्रंमल सह धष्पै ॥
जब चढ़ै राज टामंक करि। तब अजब्ब सोभा लहै ॥
आतस चरित्त अद्भूत लिषि। दुअ कपोल बूंदन बहै ॥ छं० ॥ ३३३ ॥

हाथी के रूप और गुणों का वर्णन।

कवित्त ॥ सत्त हथ्थ जरद्द। हथ्थ नव देह लँबाइय ॥
दस हथ्थां परिमांन। पीठ छत्ती गिर दाइय ॥
भद्र जात उतपंन दुरद्द छद पाट शृंगारं ॥
जो रावर कहि चंद। कोट गढ़ ढाहन वारं ॥
च्यालीस कोस चालंत मग। लियें लोह च्यालीस मन ॥
दिन प्रति गुलाल थानं करज। पंभारें डारंत घन* ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

सब सामंतों को साथ ले एक दिन शिकार के लिये राजा का जाना। वहां कन्ह चौहान का आना।

एक सुदिन राजन्न। चढिव सिक्कार प्रपत्ते ॥
और सकल सामंत। जाइ सथ पच्छ मिलंते ॥
सत्त सहस असवार। मिले मुष राज सुरत्ते ॥
जांम देव पज्जून। मान मरदन मरदत्ते ॥
सिंघद्द पवार सुभ सथ्थ तहँ। जैत राव बलिभद्र सम ॥
चहुआन कन्ह नर नाह वर। आतुर परि आयेव भ्रम ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

गाथा ॥ परि कर सकल सिकारं। लीने सब राजनं राजं ॥
अवर सूर सामंतं। धरियं साज अप्प सा काजं ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना।

* छन्द ३३४ मो० प्रति में नहीं है।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नारिंद प्रति। कही सु अनुचर एक ॥
सुभ वराह एकल प्रबल। कही षबरि सु बिबेक ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावे।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय। अरे सिकारी साज ॥
मति एकल बन जाइ भजि। करि रोकन को साज ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना।

कवित्त ॥ एक दिसा कूकरह। एक दिसि भ्रलह धारिय ॥
एक दिसा षेदा अनंत। एक दिसि और प्रचारिय ॥
एक दिसा राजंग। एक दिसि अनि अनुचारिय ॥
एक दिसा सामंत। एक बहु भांतिय तारिय ॥
यौं व्यौंत सब्ब राजन करिय। चक्कि सोर उच्छारि भर ॥
निकसंत सु सूकर अप्प रह। हने तीर षंचे सु कर ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

सूअर का मरना सरदारों का राजा की बड़ाई करना।

दूहा ॥ लग्यौ बांन वाराह उर। पर्‌यौ षेत धर मुच्छि ॥
मिले सकल सामंत तब। कही सबन धन[1] अच्छि ॥ छं० ॥ ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शोर निकलने का समाचार दिया।

घन अनँद राजन भरिय। चल्यौ राज चढ़ि बाज ॥
तब सु एक पारधि कही। नाहर घात सु राज ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलेंगे।

तब सुराज से मुष्प कहि। सुनौ सबै प्रति सूर ॥
बिन सुघान अग्यार में। आन राज इँद नूर ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको।

(१) मो०—परिकर।

कवित्त ॥ नदि सु एक जल किंदु । तहं सु एकह सुभ कोहर ॥
बहु तर वर जल छीन । थान सोभंत मनोहर ॥
ता नीचै केहरी । छनिब इक दृषभ अहारै ॥
अति अरिष्ट आभूत । कोइन पग अग संचारै ॥
उचरै राज दिल्ली धनिय । पारद्वी चक्कौ तुमैं ॥
बड़ सुभट आंन सोमेस की । बिन आग्या घातन रमै ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ तब सु राज प्रथिराज । पाट शृंगार मेगि गज ॥
बड पष्पर[1] तन रज्जि । दंति कट्टारि बंधि सज ॥
उभय पष्प असवार । गिरद रष्पे करि राजन ॥
तीरंदाज अभूल । भूल रष्पे करि ताजन ॥
सें मुष्प राज यों उचरे । चक्कारौ केहरि सकल ॥
सा वचन सुनत करि कूह भर । गज्ज सु केहरि अप्प वल ॥ छं० ॥३४४॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना। राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना। कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना। सब का प्रशंसा करना।

निसांनी ॥ सुने गहव्वह केहरी उग्यो चक्कारे ।
कंपि धरद्धर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥
कोइक कान अभूत कैं पचायन भारे ।
गात सु दीरघ छष्प गुर जीहा जक झारे[2] ॥ छं० ॥ ३४५ ॥
नष तिष्पा गिर वज्र कै पुंछन तिष्पारे ।
कंध सु जड़ा केहरी नेनां ज्यों तारे ॥
दिष्पौ मरद महावली कंधा उप्पारे ।
गज्जत गज्जत आइया अरियन कैं थारे ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

(१) ए० क्र० को०—घत । (२) मो०—जीहा झक कारे ।

सिंह सु सन्हा चल्लिया गजराज संभारे।
तब राजन गज चंपिया हैंवर ठट टारे॥
तीर सनंमुष नंषिया कोइ लग्गै न्यारे।
नेरां आयां जैत राव सिंगनि उभ्भारे॥ छं० ॥ ३४७॥
छोड़े मोह सु चल्लिया नाचर ललकारे।
पारधि एकें चंपिया हथ्थल पक्कारे॥
राज कमान सु षंचि कर तरीन तिष्पारे।
फूटि दुवा सूवार पार गज्जन जिभ्भारे॥ छं० ॥ ३४८॥
करिचै तत्ता कूरंभ झुक्या असि झारे।
बाहे बब्बर वीचह्वै दै टूक निनारे॥
मनों सबन बिच सुभ्भि थावहि तंतू सारे।
भल भल सब सेना कहै कूरंभ करारे॥ छं० ॥ ३४९॥
धनि माता अरु धनि पिता पज्जून पचारे॥ छं० ॥ ३५०॥

राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे।

दूहा॥ घन सिकार राजन करिय। हनि बराह अनि अट्ठ॥
बाजे बज्जन सुबर[1] बजि। करि राजन पहु पट्ठ॥ छं० ॥ ३५१॥

सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया।

हनि सिकार बाराह बर। दीए सब सामंत॥
बंटि सु दीनौ अबर भर। करि उच्छाह अनंत॥ छं० ॥ ३५२॥

राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना।

कवित्त॥ तब प्रथिराज नरिंद। आइ दिल्ली पुर मझ्झं॥
अप्प चिंत बर अवर। बैठि सिंहासन रज्जं॥
अवर सूर सामंत। सकल सभ्भा भर मंडे॥
तब सु चंद बरदाइ। आइ कुसुमावलि छंडे॥
बैठे सु सबनि उचार करि। सुनिय गान गायन सकल॥
दिल्लीय नैर दिल्लीय पनि। करि अनंद दंडे सुषल॥ छं० ॥ ३५३॥

(१) मो०-सुरस।

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना।

दूहा ॥ एक सुदिन देवंग सों। बोलिय राज नरिंद ॥
देउ मुहूरत दुज सु गुर। तिहि छम करैं अनंद ॥ छं० ॥ ३५४ ॥

राजगुरु का बैसाष सुदी तीज को मुहूर्त निकालना।

तब दुजराज सु उच्चरिय। सुनि सामंत सु नाथ ॥
सेत चतिय बैसाष दिन। सुभ दिन चल्लौ समाथ ॥ छं० ॥ ३५५ ॥
सुभ सँजोग अंतर घरी। कहत बचन देवग्गि ॥
सोइ सुदिन आनंद करि। चल्लौ सुराज गुरग्गि ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा करना।

कवित्त ॥ चढिय राज सुभ जोग। करि सुमंगल अनंद गुर[1] ॥
दै सु विप्र धन चंड। दीन अनि दान लेक कर ॥
बढि सामंत रु सूर। करै उच्छव उमत्त पर ॥
बजत नद्द नीसांन। चवै जै जया देव नर ॥
सेनच्च सु सथ्थ है पंच सय। नैर निकरि बाहिर चले ॥
मत्तह सुछक्क कुल्लान घर। भरि वाहन मै मग मिले ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना।

दूहा ॥ नैरनाइका एक चलि। तन आभ्रन्न अलंकि ॥
देखि नृपति रह सिर मिले। दुअ आनंद असंकि ॥ छं० ॥ ३५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना।

गज राजन द्वादस रहे। सुभ सँयोग सुभ साथ ॥
करिग कूच उत्तिम प्रचर। षडि लसकर प्रथि माथ ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
कूच कूच राजन चले। सथ सामंत अभंग ॥
पंच सत्त असवार संग। षडि मिलि साँवत संग ॥ छं० ॥ ३६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना।

(१) मो०—वर।

दीह निसा चहुआंन चलि। आइ अचानक राज॥
तब जानी जब दिष्पि नृप। मिलि सब सेन समाज॥ छं० ॥ ३६१ ॥

सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना।

कवित्त॥ मिले सुभर अप्पान। जांनि आतुर षडि राजं॥
चाहुलि रा पुंडीर। अचल चौहान सु साजं॥
राम रैंन पाधार। सु गुर गुरराज समाजं॥
अवर सुभर सामंत। बहुत परिकर सम राजं॥
इत्तने आइ सब बैठि मिलि। तब जानी जब दिष्पि नृप॥
सुनि बेंनि षबरि आतुर तुरत। मन प्रमोद आनंद वप॥ छं० ॥ ३६२ ॥

गाथा॥ आतुर षडि[1] राजानं। मिलियं सेना सु अप्प भर मग्गं॥
हुअ आनंद अपारं। मिलियं सिंघ राज सामंतं॥ छं० ॥ ३६३ ॥

रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना।

कवित्त॥ मिले राज बर सिंघ। प्रेम पूरन राजन भर॥
घरी दोइ बैठे सुनथ। बत्त सिकार कहिय गुर॥
अरु सु दंड पतिसाह। छत्य कारन कहि राजन॥
सुनि दाहिंमरु चंद। सुभट[2] सब कही सभा जन॥
चल राज सिंघ प्रति सब कही। अरु कहुन लछी गहिय॥
आयौ सु राज यह अप्पनै। एक निसा राजन रहिय॥ छं० ॥ ३६४ ॥

शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना।

कवित्त॥ बजि नरिंद जय पत्त। बीय बज्जा घन बज्जै॥
ताइप घर गजराज। राज दरबारन गज्जै॥
चामर छत्र रषत्त। तषत लीनौ सुरतानी॥
उत्तर वै साहाब। गयौ मुलतानह पानी॥
छंडयौ छत्र सुरतांन सिर। राज छत्र सिर मंडयौ॥
बाजंत नद्द नीसान घन। बंधि साह दँडि छंडयौ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

(१) ए० छ० को०—षरि। (२) ए०—सुनि।

गाथा ॥ जित्ते बज्जन वज्जं। सज्जे सेन सब सुभट्टायं ॥
सुद्धे षेत सु सूरं।। उप्पारियं केक सुभट्टायं ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना।

कवित्त ॥ बर बंध्यौ सुरतान। लच्छि कढ्ढन क्रम दिन्ना ॥
भई षबरि कै मास। राज अग्गै होय लिन्ना ॥
सत्त मंत जोतिगी[1]। सब्ब जोतिग उच्चारै ॥
द्रिष्टि राह ग्रह दुष्ट। मंच जंचह बर टारै[2] ॥
पुछ्यौ बीर चहुआंन तब। घन अरिष्ट गुन संभवै ॥
लछिन्न लछि अरु बंचि विधि। तब बचि मंतत सुन्नवै ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का बर है यह निश्चय जानिए। इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे।

कवित्त ॥ धन कढ्ढन चहुआंन। बोलि कैमासह पुछ्यिय ॥
बहु अद्भुत जस सुन्यौ। आइ कढ्ढन बर लच्छिय ॥
पुब्ब कथा चहुआंन। हौं जु आगम सब जानो ॥
देवी सुर बरदाई। कहौं सु उर अंतर आनो ॥
अद्भूत वत्त धन निक्करत। दोइ बीर दानव जगे ॥
सो सूर धीर धीरज्ज जिय। छँडिय सत्त कादूर भगे ॥ छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया।

दूहा ॥ सो षट्टू रहे थांन बर। द्रव्य अजै जै राज ॥
ता देषन चहुआन फिरि। गौ आषेट बिराज ॥ छं० ॥ ३६९ ॥

(१) मो०—जोतिषी। (२) मो०—बर दारै।

उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी।

अति आदर आखेट नृप। पति पुर षट्टू पास॥
पाहन एक पयाल में। संपेष्यो कैमास॥ छं०॥ ३७०॥

कवित्त॥ संपेष्यौ कैमास। आस बंधी मन संतो॥
ज्यौं बाल चंद निसि करक। मकर दिन मास बसंतो॥
यों उद्दिम नृप सेव। सेव नृप सेव सुमंतो॥
ज्यां कन कलंक लगि अंक। सुबर बर बीर अमंतो॥
बच क्रम्म बोध अम्मर अरस। सुमन वास ज्यौं वायदर॥
लछिनह लछि अरु बंचि विच। हुबर छीर तत्तह सुनर॥ छं०॥३७१॥

कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा।

दूहा॥ मंची नृप सामंत सम। पढ़ी सु पाहन पास॥
रास थंभ जनु ग्यान लिखि। लगि बंचन कैमास॥ छं०॥ ३७२॥
जरध अंगुल सठ चिसठ। तीर कहत चवसट्ठि॥
तहां अक्कर निम्यौ सु इम। सरमै द्रव्य अनिट्ठ॥ छं०॥ ३७३॥
भरि प्रसंक अंगुल भरिग। तिय अंगुल सत[1] अंक॥
अंगुल अंगुल अंक में। एकादसौ प्रसंक॥ छं०॥ ३७४॥
भवनत्यच्छ जो दुज लषै। घरी दीह पल मास॥
हृदय क्रोध ज्यों द्रिग लषै। त्यों लष्यौ कैमास॥ छं०॥ ३७५॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया।

बंचि उचारि सुमंत तिहि। सरमय[2] मप्पिय बांह॥
मंडि सु अंगुल विगुलह। द्रव्य निरुत्तिय नाह॥ छं०॥ ३७६॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन। धन अरिष्ट नृप जोइ॥
सोइ पूजा करन चित्त पति। तिन पर वज्जन होय॥ छं०॥ ३७७॥

(१) मो०—छह। (२) मो०—सरमं।

चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नागौर बन के धन को पावेंगे।

पचिन्है अष्पिय चंद बर। कहिय व्यास जग जोति॥
बीर सघन नागौर धन। * सभ अरिष्ट प्रथु होत॥ छं० ॥ ३७८॥

राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं।

कवित्त॥ पुछि राजा गुर सिंघ। सु गुरु देवग्नि सक्ति पति॥
धन अरिष्ट गुन होइ। तास मेटन्न रचौ मति॥
सोइ सुभ काज सु राज। सुजस संग्रहौ सक्र भति॥
सुर सुकाज सुद्धरै। अप्प उद्धरन कज्ज गति॥
बुल्लिय सु राज सम चित्त पति। तुम कारन पुज्जौ सुग्रह॥
अरिष्ट सु गुन दूरी करन। या मंगल कज्जै सुग्रह॥ छं० ॥ ३७९॥

तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है।

गाथा॥ बुल्लिय भट्ट सु चंदं। हो राजन लक्ष्मि कढ्ढिज्जै॥
ज्यों बंध्यौ निरमांन। मेटन कवन सोइ बिधि पथं॥ छं० ॥ ३८०॥

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो।

दूहा॥ थांन निरष्पिय राज बहि। अछिर द्रव्य सु अछ॥
सुबर सूर सामंत मिलि। निसि सथ रष्पा अछ॥ छं० ॥ ३८१॥

कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्त्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा।

कवित्त॥ सथ्थ तथ्थ निसि रष्पि। दोन वासन ग्रह थानह॥
अबर सब्ब सामंत। कोन पारस विश्रामह॥

* प्रो०—प्रति में "लभहिं अरिष्टं होत" पाठ है।

रैनि मध्य विन चंद। जगे सामंत स्वामि तँह॥
नीद सयन हुअ सुथ्थ। धनिय सम द्रव्य राज थह॥
षेदंत पुरष इक्कह प्रगट। सिज्जह धत्त सत्तह सुमय॥
नहि सकय अंक लिष्यौ सुपर। बंचि राज कैमास तथ॥ छं० ॥ ३८२॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा॥ सुनो सूर सामंत सब। सु हृदय सकल रजान॥
जो न हसै मुहि बवर[1] कोइ। तौ दिष्यौ पाषान॥ छं० ॥ ३८३॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे।

न्याय नांम कैमास तुझ। दुज दीनौ सुद्धाइ॥
ज्यों बेली फल भारतें। न्याइन मैं सुभाइ॥ छं० ॥ ३८४॥

शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)

भयौ समय इमरत्तरी। ज्यों वय संधि सुबाल॥
मध्य मुट्ठि कंमांन की। रही रत्ति तिन नाल॥ छं० ॥ ३८५॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे।

सब दिष्यो वह थांन तिन। सस्त्र अनी छिति भंजि॥
अप सु दिष्यो चव सुवल। रहे दूरि सब भज्जि॥ छं० ॥ ३८६॥

विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया।

साक सुविक्रम इक्क दह। तीसरु अट्ठ संपत्त॥
चहुआनां नृप सोम सुअ। लभि वित्त अनमित्त॥ छं० ॥ ३८७॥

चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे।

(१) ए० इ० को०—सकल।

अप्प मंच बंध्यौ सु कवि। द्रव्य निरष्यौ जाइ॥
चिहूं दिसा जौ देखियै। दिष्ट न आवे ठाइ॥ छं० ॥ ३८८ ॥

कवित्त॥ दिष्यौ जीयउ प्रमांन। मध्य राजा रघुवंसिय॥
बाहन सेसत पुत्त। मात अग्यान न गंसिय॥
दुष्ट देइ दिन मान। राज अग्या सुन मांनै॥
सोक अग्नि तन दझ्झ। गयौ सुरलोक निथांनै॥
रचि मंच जंच पुत्तलि करिय। होम दिष्ट दानव जलिय॥
चिंतै सु चित्त कविचंद तहं। करयि बात दुह चम भलिय॥ ३८९ ॥

चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए।

गाथा॥ गृह बरदाइय बत्तं। कहन लक्कि भयं क्रमयं॥
तुक्क अंतर भर सेनं। आए लक्कि ठाइयं राजं॥ छं० ॥ ३९० ॥

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो।

दूहा॥ गच्छ आए बर राज घर। दिय हुक्कम सिल कट्टि॥
हुअ हुक्कम राजंन कौ। कढै सिला सिर कट्टि॥ छं० ॥ ३९१ ॥

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी।

कट्टि सीस सिल कट्ठि करि। दियौ बचन खोदान॥
तब सु कंपि भुअ धर धरिय। धांक सुनी नृप कान॥ छं० ॥ ३९२ ॥

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा तब ख़ज़ाने का मुंह खुल गया।

कवित्त॥ सस्त्र अनी छिति घनी। सेन सुत्तौ चावट्टिसि॥
सपत धात पाषांन। तीस अंगुल दल बल कसि॥
दादस अंगुल उंच। निठ्ठ करि ग्रीवह[1] लाइय॥
उघरि मुष्प वर द्रव्य। कही कवि चंद न जाइय॥

(३) ए० ब्र० को०—गावह।

सिन्न तरति छलंतन्न धम्म चलि। द्रव्य परष्पिय मध्य ग्रसि॥
सामंत सूर इम उच्चरै। भज्जौ बीर कैमास लसि॥ छं० ॥ ३८३ ॥

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला।

सुनिय बत्त चहुआन। भयौ आचिज्ज सब्बघन॥
भूमि किन्ति संजुत्त। ग्रहे आवै अभंग धन॥
पुर सु तिष्प धर मध्य। क्रोध जाजुल्य नैन रत्त॥
मुर लंगर विच बंधि। ग्रीव[1] लीनो उक्कंग तन॥
षोद्दयो भूमि द्वादस सु हथ। हुंकि बीर दानव गजिय॥
कवि चंद दंद मन मद्धि बँध्यौ। चित्त चिंत ब्रंह्मड लगिय॥ छं० ॥ ३८४ ॥

उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया।

छंद भुजंगप्रयात॥ प्रकारे सुचारे भुजंगं प्रयातं। पगप्पत्ति गायं अहप्पत्ति गातं॥
स्वयं वीर दानव्व चक्यो हकारं। बरं बंध रक्की परक्के प्रहारं॥ छं० ॥ ३८५ ॥
बरं व्योम ग्रब्बं षहं पत्ति संक्यौ। करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्यौ॥
पयं पाइ उट्ठै मद्दा रोम[2] झुम्मी। मनों चक्क फेरै कुलालं स भुम्मी॥
छं० ॥ ३८६ ॥

षिनं रत्त दीसै षिनं मत्त माया। षिनं रत्त पीतं षिनं स्याम काया॥
षिनं मेघ रूपं षिनं अग्गि सीसं। षिनं कोटि रूपं षिनं एक दीसं॥
छं० ॥ ३८७ ॥

षिनं बाल वृद्धं षिनं वै किसोरं। भयं भीम भीतं षिनं दिव्य गौरं॥
षिनं मोह माया षिनं दुट्ठ बज्जै। षिनं मोहनी मोह रूपंति सज्जै॥
छं० ॥ ३८८ ॥

षिनं मै विडाली षिनं विघ्र माया। षिनं मेक्ष रूपं षगं छथ्य धाया॥
छयं ग्रीव रूपं षिनं मक्ष दीसै। षिनं गज्जियं सिंघ आहत्त रीसै॥
छं० ॥ ३८९ ॥

(१) ए० फ्र० को०—याव। (२) मो०—सोस।

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले।

कवित्त ॥ तोरि बीर संकर समुच्च। छंडि गजराज थांन गय ॥
भयौ समुच्च अरिष्ट। ढुंढि लभ्भी न मत्ति दय ॥
सत्त मत्त छुडयौ। अप्प अप्पन संभारै ॥
भेा अचिज्ज सामंत। व्यास बचनं न बिचारै ॥
कविचंद मंच आरंभ बर। उमा उमा कहि बंचयौ ॥
अप्पियै बचन मुहि मात इच्छ। तुअ काली कलजचयौ ॥ छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ करि अस्तुति कविचंद बर। अहो मात बरदान ॥
इच्छ माया मैं बहु तन। कढ़ै लच्छि तुअ पान ॥ छं० ॥ ४०१ ॥

देवी की स्तुति।

छंद विराज ॥ सुनी देवि बानी। चढ़ी सिंघ रानी ॥
मयं मत्त माया। तुंही तूं उपाया ॥ छं० ॥ ४०२ ॥
अरी जुद्ध भष्यं। प्रकत्ती पुरष्यं ॥
निराधार बंधी। निसंधे निसंधी ॥ छं० ॥ ४०३ ॥
चिहूं चक्क षंडी। दुकं पाइ मंडी ॥
जपौं तोहि तोही। जगचन्न मोही ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
निसा पत्त मारै। दया वज्ज तारै ॥
तूंही मंच मंची। तनं जा पविची ॥ छं० ॥ ४०५ ॥
तुंही आसमानं। तुंही भूमि थानं ॥
तुंही बाग बानी। कला निद्धि रानी ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
कवी चंद चंदं। करै दूरि दंदं ॥
कलं पग्ग धारै। प्रनेता उचारै ॥ छं० ॥ ४०७ ॥
निसा बीर बज्जौ। इहां आइ ठज्जौ ॥ छं० ॥ ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया।

दूहा ॥ मात प्रसंनन गुन गहिर। दियौ हुंकि हुंकार ॥
दियौ बर सु दानव मलन। कियौ देव जयकार ॥ छं० ॥ ४०९ ॥

वर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया।

कवित्त ॥ तब प्रथि राज नरिंद। बीर दानव चक्कारिय ॥
सबद द्रुग्ग संभच्यौ। पच्छ दीनौ हुंकारिय ॥
दिषत सथ्य सब तथ्य। कथ्य कोइ बैन न मंडै ॥
भीत सीत भय अंग[1]। रंग[2] रस रोस सु चंडै ॥
अरु नाइ प्रान सम ग्रेह तिह। कज्जल कूट समान सुइ ॥
मन चिंत चंद प्रारथ्यनह। जबै देवि डर आन उइ ॥ छं० ॥ ४१० ॥
बल उत्तंग सुमेर। हक्कि संकिन मग मुक्किन ॥
किनक मंत निय संत। तेज आहुटि बल तक्किन ॥
सबर बीर कविचंद। मंच दुरगा तब पक्यौ ॥
करी नवनि कर जोर। जाइ अग्गै भयौ ठढ्ढौ ॥
अस्तुति अनेक उच्चार मुष। चरन चंपि द्रढ कर गहिय ॥
धन जोग कथा पूछी सुहित। उचित चंद अप्पन कहिय ॥ छं० ॥४११॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी।

दूहा ॥ करि अस्तुति द्रढ चरन गहि। पूछी भद्द विगत्ति ॥
जु कछु आदि पुच्छै सहित। कहत सु बीर विमत्ति ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन।

कहै बीर कविचंद तुअ। पूब कथा कहुं मंडि ॥
जिन लच्छी घर मुक्कियै। घर रष्यै धन छंडि ॥ छं० ॥ ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है।

जुग सु आदि हुअ मंच गुर। चेता जुग हुअ सत्त ॥
दापर जुग पूजा प्रसिध। कलि जुग बीरं दत्त ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूं।

(१) ए० ह्व० को०—आग। (२) ए०—सार।

गाथा ॥ हुअ आनंद सु बीरं। बुल्लिय सु प्रसंन चोह कल बानी ॥
सुनि उतपत्ति सु कव्वी। कहि अब रघुबंस आदि संकेतं ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था।

कवित्त ॥ *तिहि तजिय सु रघुबंस। पुत्र मारंत दुह षिज्जि ॥
चित कीनौ चरचित्त। मरन अँग आगम लषिज्ज ॥
जो बरजै बहु बार। धंम मानै न भयंकर ॥
सोक अगिन तिन दभिक्क। प्रान छंडौ रतियंकर[1] ॥
‡ सत बरस राज तय अंत करि। कित्ति धंम संगह्य यहय ॥
आधंम कित्ति ज्यों मंडनह्य। सेा उब्बरि बीरनि रचिय ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा।

कवित्त ॥ तिहि वाहन बल सूर। धरम रष्यो रघुबंसी ॥
वेद धंम उथ्यापि। काल कंटक बल कंसी ॥
सज्जि तेज जाजुल्य। जग्य विधंसिय सब्बल ॥
कमल सम्मह अरिष्ट। जीति दगपाल धंम पल ॥
मारग्ग चक्ति उथ्यापि करि। दिव सराप सब रिष्यि मिलि ॥
जा वीर दांन दानव सु बरि। अमर सिंह बल जीति इलि ॥ छं० ॥ ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा।

मिलि अयास आयास। आप मिलि आप अहुट्टिय ॥
मिलि समीर संमीर। धरा धर धार आहुट्टिय ॥
तेज जोति चहु षीर। सुबर मंगल फिरि आइय ॥
तिहि अधंम जरि तास। मांहि सेा कछु न समाइय ॥

---

* मो०—"तिहि तजिय इर रघुबंस पुत्र मारत्त पुच्छ खिज ।" (१) मो०—अंकर ।

† मो० प्रति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिसमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—"सत्त बरस राजा ने सबल राजंत अंत कर, सब सौरव्य गिह अरि अंत करि कित्त धर्म संचह गहिय ।

आकास मध्य ता मध्यतें। फटिक बीर है चीर हुअ ॥
ते बीर बहुत दानव अतुल। भये काज थानय रचय ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई।

बहु बित्ते बर काल। चंद बरदाइ थान चम ॥
को जीवत देष्यो न। मरत देष्यौ न न जे चम ॥
मान अभ्भ जम निका। राम तामस करि नच्यौ ॥
इल छहै अंगनै। कौंन रुचै को रुच्यौ ॥
जीरन सु जगा संसार भौ। लच्छि न जीरन भइय इह ॥
आयंत जान धंधौ सकल। ग्यानवंत जानहि सु इह ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नरिंद बर। अरु सुमंचि कविचंद ॥
इष्ट बत्त बर संमुहै। ज्यो दानव करै न दंद ॥ छं० ॥ ४२० ॥

इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया।

छंद चोटक ॥ कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन न्रपं। निज मंच बलं कल तच जपं ॥
भुज भान सुरं भज भान दिसं। बर इष्टय चंद कविंद कसं ॥
॥ छं० ॥ ४२१ ॥

सब देष क्रमं क्रम दीन न्रपं। जय जग्यह जाप करंत तपं ॥
घन गंध सुगंधन की चलितं। चलि सीत न तप्प सुभं मरुतं ॥
॥ छं० ॥ ४२२ ॥

घन सार मृगम्मद होम जरैं। तिन उप्पर भौरन भौर परैं ॥
उड़ि धूम चिहूं दिसि छाय घनं। करि मंच सुदेव बलिं बलनं ॥
॥ छं० ॥ ४२३ ॥

देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा।

कवित्त ॥ नृप पूनो रघुवंस। नाम धुम्माधिराज सुअ ॥
बिय बाहन नृप सूर। पुच आनंद चंद दुअ ॥
सब जित्ते द्रगपाल। माल लिज्यौ अधूंम छलि ॥
राज नीति सब मुक्कि। क्रंम बंध्यौ अक्रंम कलि ॥
अद्भूत मरन छिन भंग गति। चित वित्त क्रम अनुमरिय ॥
नप भंग[1] गच्छना जांनि नह। नम बीर दानव धरिय ॥ छं० ॥ ४२४ ॥

बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहां रक्खा था। दैवगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई।

दूहा ॥ कहै बीर सुनि चंद तुअ। अप्प कथा कहौं मंडि ॥
जा मुक्की लच्छी धरनि। सो रष्यों उर संडि ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
हौं रष्यों इन भंति करि। अहो चंद बरदाइ ॥
रघुवंसी अति मोह मय। अवगति कोइ सुभाइ ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
माया काया पुत्तरी। कोधवंत हम बीर ॥
रहे छंडि हैं लच्छि यह। त्रमित तुम इह धीर ॥ छं० ॥ ४२७ ॥

बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ कोध लोभ जानो न। मोह माया न अलंकन ॥
मोह गीत अरु सीत। जगि जा जायय सुक्कृत ॥
बहु विवेक त्रिमांन। राज विसनरहि नीति बहु ॥
सब निवर्त धुनि वेद। कर्म छेदन अभेद लहि ॥
सो बहि सांइ सेसब सुनप। जोवन वै विष अलप मन ॥
रघुवंस इह आवत्त चिय। जोग मग्ग सो छंडि[2] तन ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन।

श्लोक ॥ सत जुगे बंधयो देवो। चेतायां सोम जाधयो[3] ॥
द्वापरे बाहनो सूरो। कलिजुगे बीर भीषम ॥ छं० ॥ ४२९ ॥
सतजुगे ब्रह्मपुर्चस्य। चेतायां बीर भक्षय[4] ॥
द्वापरे विप्र वंशस्य। कलिजुगे सूद्र ग्रहनिका ॥ छं० ॥ ४३० ॥

(१) सो०-भग्ग। (२) सो०-यंडि।
(३) सो०-जोधयो। (४) सो०-भषिय।

बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने सामने धन निकालने को कहना।

कवित्त ॥ हम सु भयंकर बल। भट्ट सुभटन हंकारहि ॥
हम प्रचंड प्रब्बत्त। कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥
सत्तौ समुद्द प्रमान। सु तत छिन निरि दिष्पहि ॥
सुनि न होइ देखी न। तोइ ब्रहमंड सु लष्पहि ॥
दैवान दुसंकद दुष्ट गति। देव जोग को गढ्ढवै ॥
आतम्म मनुच्छन जीव बल। सो देषत धन कढ्ढवै ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे।

अरिल्ल ॥ *बुल्लै चंद सुनौ बर बीरं। तुम चिकाल दरसी अति धीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं। कढ्ढै धन तुम बचन स भूपं ॥ छं० ॥ ४३२ ॥
गाथा ॥ कहै बीर चंदं बर बंदं। हो देवाधि देव बलवंनं ॥
तुम देषत गत पापं। होइ प्रसंन देहु बर बचनं ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

चन्द की सुन्दर बानी सुनकर बीर ने प्रसन्न होकर धन निकालने की आज्ञा दी।

दूहा ॥ सुर बानी सुन भट्ट की। मन प्रमोद बरबीर ॥
दई बाच कढ्ढौ सु धन। प्रसन देव करि धीर ॥ छं० ४३४ ॥

बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो।

अरिल्ल ॥ बीर बचंनति चंद प्रकासिय। कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंच जप। सब प्रसंन हुअ लहैं धन्न नृप ॥ छं० ॥ ४३५ ॥

चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करें।

कवित्त ॥ तुम समान कोइ आन। पान पन दान मान मन ॥
कवन श्रवन रस राग। दैव परंग अंग नन ॥

* मो०—प्रति में "बुल्ले धन चन्द सुनो बर बीरं" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है।

राजस तामस सत्त । मत्त जोगिंद विराजहि ॥
जीव एक गुन कोटि । रत्ति सेा बोलन लाजहि ॥
महदेव[1] सेव तुम चरन रत । पति पवित्र मन मोह धरि ॥
हिंडौ सु बीर उत्तर दिसा । इह पसाव चहुआन करि ॥ छं० ॥ ४३६ ॥

बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो।

दूहा ॥ कहै बीर कविचंद सौं । हौं सु प्रसन्नौं तोहि ॥
तीन लोक में जुगनि बनि । सुभभक्त नाहीं मोहि ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
पंडित बोलि सु जप करौ । होम दान अरु मान ॥
महिष मोहि पूजा करौ । तौ कढ्ढौ पाषान ॥ छं० ४३८ ॥

दानव यह कहकर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो।

कवित्त ॥ सुरग गयौ दानव्व । बत्त बल महिष उचारिय ॥
मंच तंच बंधयौ । बलन अप्पन सम्हारिय ॥
बर गज्जनी नरिंद । बंधि कंध्यौ चहुवानं ॥
धन कढ्ढन[2] तिन थांन । बज्जि निर्घोष निसानं ॥
आनंद मंचि कैमास बल । तिष्यि घरी बल पुच्छिबर ॥
जै जया सिंह आहुट पति । मिलि विभूत कढ्ढौ सुभर ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाय, पंडित ने होम की सामिग्री मँगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया।

छंद चोटक ॥ तब बुल्लिय राजन राज गुरं । सु मनो गुर राजत देव दरं ।
बुलि बेद सु पंडित जोतिगयं । जिन बुद्धि सु ब्रह्मय सुद्ध लयं ॥
छं० ॥ ४४० ॥

(१) मो०— महदेव । (२) मो०—कढ्ढन ।

तिन मंगिय होम प्रकार सयं । रचि जग्ग अकार प्रकार मयं ॥
मिटई[1] जिच दोष[2] सु होइ जयं । ... ... छं० ॥ ४४१ ॥
कढ़ि लच्छि दिसा क्रमि देवि स्रपं । कवि चंद अनंदिय मंच जपं ॥
विधि भांन सुरंभिय भांन दिसे । सब देव क्रमं क्रम होइ रसं ॥ छं० ॥४४२ ॥
जय जग्ग रु जाप करै बलिता । धन गंध सुगंधन की रलिता ॥
सु रची रवनीय सबै अवनी । धज छत्तन बेदिय मंडि फनी ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
झरि चंदन पाटक पाट करी । अनुराग सु कुंकम होम जरी ॥
नव रत्त कला कल सान छुटे । मनु बादस भान इहां प्रगटे ॥
छं० ॥ ४४४ ॥
धुनि सुनिय बेदन होत धुयं । प्रगट्यौ कमलानन तास मुषं ॥
छं० ॥ ४४५ ॥

छः प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया।

कवित्त ॥ कढ़ि बीर पाखान । राज षट रष्पि प्रधानं ॥
चंद भट्ट गुरुराम । कन्ह रष्पिग चहुआनं ॥
रष्पे अत्ता ताइ । दुस लद्धौ बर भारी ॥
दैव बत्त संजोग । भोग लद्धौ रन रारी ॥
रष्पिजै भीम रघुबंस बल । अह रष्पै पुंडीर सचं ॥
जनबत्त अग्य लै स्वांम को । पंच दीच तिन थान रचिं[3] ॥ छं० ॥ ४४६ ॥

जब स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और गाती हुई निकली, उसका गीत देख कर आश्चर्य होने लगा।

षोदि थान पाषान । ग्रेह निकस्यौ अचंभम् ॥
हेम हीर हिंडोल । हेम पुत्तरी सुरंभम् ॥
हेम वीय वाजिच । नृत्य पुत्तरि जरि जैचिय ॥
हुँच अचंभ पुत्तरी । जानि सर जीवन मंचिय ॥

(१) मेटि-लेहिं।

आलिंग नयन करि सिथल गति। तिहि दिष्पत मन रंजन थकि॥
आचंभ चंद देखत भयौ। रंभ कि नृत्यत तार चुकि॥ छं० ॥ ४४७॥

पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य्य करना।

दूहा॥ सुर उद्योत गुरराज तिहि। पुत्तरि दिष्पि अचंभ॥
रति पति मन संमुह धरै। घट सु घटिय आरंभ॥ छं० ॥ ४४८॥

चन्द का कहना कि यह मायारूपी है।

कहै चंद गुर राज सुनि। यह माया बल रूप॥
न करि मोह कर गहि सु दुज। मुर्छि[1] बहोरिय नूप॥ छं० ॥ ४४९॥

रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है?

राज गुरू कहि चंद सों। हो कविराज विचारि॥
कौन रूप अवतार किय। क्यों लच्छिय परे नारि॥ छं० ॥ ४५०॥

चन्द ने कहा कि ठहरिये तब कहूंगा और उसने वीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा।

कवित्त॥ तन सु चंद बर दाइ। राज गुरु बचन अप्प सर॥
छिन इक धरौ विलंब। कहौं बर बीर पुच्छि नर॥
करि अस्तुति कलि बानि। बीर देवाधि देव सुनि॥
छम मनुष्य मय मोह। तास नहिं लहै अंत पुनि[2]॥
पुच्छेइ सु देव आपुव्व कथ। कौन रूप इह पुत्तरिय॥
रह लच्छि थान सुर कौम तन[3]। कौन काज बरे सुइरिय॥ छं० ॥ ४५१॥

देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रामा है।

गाथा॥ सुर बांनीयं चंदं। सुप्रसन्न देव मयं कव्वी॥
इह तेजं रिधि रांनी। संपेषे सु चंद गुरु कव्वी॥ छं० ॥ ४५२॥

यह ऋद्धि सालारी लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बे खटके भोग

(१) मो०—मुरछि। (२) मो०—फुनि।
(३) मो०—तन।

सकते हो। यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा।

कवित्त ॥ इह सु छत्य बल रूप। देव देखहु सु मोह मन ॥
माया छाया सु लच्छि। अनुरूरै सु लच्छि रत ॥
इह लच्छी बर रूप। तेज जाजुल्य प्रमानं ॥
इम वचंन इह रिद्धि। तुमहु सुप्रसंन सुथानं ॥
भोगवन काज संभरि सुपहु[1]। इह बिधिना अप कर गढ़ियं[2] ॥
सुनि चंद बचन आनंद हुअ। राज गुरू संसय मिटिय ॥ छं० ॥ ४५३ ॥

इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए। राजा फिर धन निकालने लगे।

दूहा ॥ हिंडौ नौ बर हेम करि। सिंघासन सुरराज ॥
वह प्रसंन होइ रष्यियौ। पूजन चरि गुर राज ॥ छं० ॥ ४५४ ॥
षिन धरि माया अप्प दुरि। गए सु अंमर देव ॥
फिरि कढ़न लग्गे सु द्रव। लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरंग को देखना।

कवित्त ॥ कलस बंक चंबक्क। लोह संकर बर बंध्यौ ॥
रजत कलस अरु हीर। रत्त अंतर चित संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग। कंति दीपन जनु अग्गी ॥
सुअर कलस पाषान। मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय। ग्रह कुबेर करि लष्यियौ[3] ॥
गुरराज राम भट्टह सहित। फिरि सुरंग सब दिष्यियौ ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना।

कवित्त ॥ ता पच्छै कवि चंद। राज गुर समुह दिष्यौ ॥

(१) मो०—सपहु।
(२) ग० छ० को०—घटिय। (३) मो०—लिष्यियौ।

ब्रह्म थांन शिव थान। थान पति नाक विसष्ठौ॥
नवति बीर अट्ठ जोग। सिद्ध नव निद्ध सु अट्ठौ॥
च्यारि अंग लछी प्रमान। धूम द्वादस अँग दिट्ठा॥
सा अंग बाल पुत्तलि अचँभ। हाइ भाइ विभ्रम वहै॥
लावंनि चिंत उत्तर रहति। इंक कटाछन चित्त है॥ छं० ॥ ४५७॥

चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना। कुछ देर में सँभल कर उठना।

कवित्त॥ मुच्छि पच्यौ कवि चंद। मुच्छि दुजराज पच्यौ कल॥
नाच भंग तन भंग। अंष झल्ल मलिय नैन जल॥
उष्ट कंप तन स्वेद। भेद बल बिन [1]कवि किन्नौ॥
चढ़िय अंग पिंडुरिय। गात सोभन जल भिन्नौ॥
सिथल चरन गति भंग ह्वै। वै विलास अभिलाष गति॥
जग्गेव मुच्छि दुजराज सब। देव एव चिचं सुभति॥ छं० ॥ ४५८॥

उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है।

दूहा॥ मुछि उठ्यौ गुर राज तब। पुछ्यौ संभरि बार।
जु कछु सुघर अज्ञा नृपति। धन निकस्यौ अप्पार॥ छं० ॥ ४५९॥

धन के कलश आदि का वर्णन। रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना।

कवित्त॥ सत्त[2] कलस चंवकिय। सत्त[3] अध मंडि रजक्किय॥
हेम कलस सत पंच। कलस पाषान सतक्किय॥
सत्त अट्ठ बाजिच। सहस अध पग्ग प्रमानं॥
हेम हीर हिंडोल। एक आचंभ सु [1]मानं॥
जान्यो न देव देवाधि गति। दैव जोग सिंहासनह॥
चिचंग राव रावर समर। सम सुराज प्रथु आसनह॥ छं० ॥ ४६०॥

(१) ए० क्र० को०-कठ।
(२) ए० क्र० को०-सित। (३) ए० क्र० को०-सित।

एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए।

एक सुदिन संध्या समय। विंझासनि के थान॥
एक अचंभो देखियै। जो आवै चहुआन॥ छं०॥ ४६१॥

उभय राज बर वत्त करि। चले सुथानक देव॥
निकट देखि देवी सुमट। गए सिंघ बर सेव॥ छं०॥ ४६२॥

आए नृप चिचंग पति। अरु संभरी नरिंद॥
तब लगि राम सु विप्र ने। करिय अचिज्ज सु चंद॥ छं०॥ ४६३॥

पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन।

छंद भुजंगी। समै चक्कियं समर रावर नरिंदं। तिनं वाम भुज्जं सनै सूर नद्दं॥
घनं रुथ्थ मध्यं दोऊ बीर राजं। तिनं देषतें वामता काम लाजं॥ छं०॥ ४६४॥
उठी मुच्छ आनं धुनी लग्गि गेनं। मनों चंद बीयं सियं[1] कीय षेनं॥
दोऊ राज राजन्नता राज सक्की। दोऊ भ्रंम षंडे जमे डंड चक्की॥ छं०॥ ४६५॥
दोऊ रत्त[2] माया ननं अग्ग लग्गै। मनों कंज[3] पत्तं जलं भिटि भग्गै॥
उभै सूर नूरं विराजंत राजं। जिनै सोभियं कंठ रच्चि हुलाजं॥ छं०॥ ४६६॥

वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दश महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

कवित्त। वेद मंच दुज राम। उभय कारन कित कित्तौ॥
समर समरसन कीन। राज उनहार सुलिक्कौ॥
दस महिष्य बल भंजि। चंड मंचं आरंभे॥
नृप आज्ञा नन दीन्ह। सस्त्र मंगै आरंभे॥
आरंभ मंच उवसद्दि जगि। दै हुंकारव सद्द सुअ॥
गन दंद चंद खेहाननहु। मीत प्रसंसन मनों जुअ॥ छं०॥ ४६७॥

---

(१) ए.—सिषंकीं यं। (२) ए.—दत्त।
(३) ए. इ. को.—कंप। (४) मो.—मगं।

राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

दूहा ॥ सिंघासन प्रिथिराज ले। मात वरंनन कीन ॥
मात प्रसन चहुआन कौं। जै हुंकारव दीन ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

देवी पृथ्वीराज को आशिर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई।

कवित्त। हुअ प्रसाद चवसठ्ठि। हथ्थ सिंघासन अप्पिय ॥
बल अप्पौ प्रथिराज। कित्ति कलसां लगि थप्पिय ॥
बिय सपत्त लभै न। पुच्च लभै सु थान तुअ ॥
मन सु बंस जय लभै। सज्ज अनुहत्त पित्त जुअ ॥
पूजनह थान रविवार कहि। आदिष्ट मात अंतर भइय ॥
सुभ लच्छि सुभग्रह आइ तँह। बर सुहेम हत्थां दइय ॥

पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है, तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुवँरि ससिव्रता की सगाई का बिचार ॥

कवित्त। मँगि सिंघासन राज। लच्छि चतुरंग सु अप्पिय ॥
समर सिंघ रावर नरिंद। अग्गै धरि जप्पिय ॥
रंजि राज आहुट्ठ। राज दिल्लिय दिस आइय ॥
बर पट्टन जहां नरिंद। लिखि दूत पठाइय ॥
ओतान राग चहुआन हुअ। कथा जंपि ससिव्रत्त किय ॥
पावस प्रमान कहिय बिकट। सुबर राज यों मत्त किय ॥ छं० ॥ ४७० ॥
गाथा। सिंघासने सुरेसं। अह सु लच्छि सा हयं अप्पियं ॥
सो अग्गै बर सिंघं। मुक्के राज परिकरं सव्वं ॥ छं० ॥ ४७१ ॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इँकार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो।

कवित्त ॥ रंजि राज दच्छिन गिरेस। राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिंद। कहा गुन कहै सु भल्लिय ॥

हम सु तुम्म सगपंन[1] । जानि आए तुम सथ्थं ॥
तुम लहुए लहुआंन । मुष्प कढ्ढौ सु अरथ्थं ॥
तुम कहिय बत्त अब जो हमैं । तुम समान नहिं प्रीति भनि ॥
उच्चरौ बचन तुम राज बर । सेा हम हृदय सुमत्ति गत्ति ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा।

दूहा ॥ अति क्रोधित राजर समर । जब दिष्यौ प्रथिराज ॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय । लेहु लच्छि धरि साज ॥ ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना।

कवित्त ॥ तबहि जुग्गवर समर । राज राजन प्रति बुल्लिय ॥
हम सु सीष संभवैं । चलैं चित्रकोट सु थल्लिय ॥
तब राजन उच्चरिय । रहेा दस दिन सब मिल्लिय ॥
रमैं सरस आषेट । करैं बीना धर दिल्लिय ॥
तब कहत राज आहुट्ठपति । अहेा राज राजंन[2] गुर ॥
हम चलैं राज काजंग गुर । भर सु सब्ब समनेह उर ॥ छं० ॥ ४७४ ॥

प्रेमाश्रु भरकर रावल ने विदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले।

दूहा ॥ भरे सु सकल सनेह करि । राजर मंगिय सीष ॥
तब सुराज राजंन गुर । उठि मिलि सज्जन ईष ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा ऐसा ही स्नेह बनाए रहिएगा।

देत सीष प्रथिराज नृप । इह बुल्लिय गुर राज ॥
हेात सगप्पन नेह रह । रष्पत रहियौ[3] काज ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

(१) ए० ज्ञ० को०—अनपत्त। (२) मो०—राजंम।
(३) मो०—रहिजं

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है।

नृप सन रावर उच्चरिय। तुम सम नेह न कोइ॥
जीव एक पंजर उभय। कहन लोक दै दोइ॥ छं०॥ ४७७॥

रावल समर सिंह गद्गद हो बिदा हुए, और अपने देश की ओर चले।

तब सनेह नृप नैन भरि। अंसुअ आप सु राज॥
समर सिंघ चित्तौर कौं। दिय अग्या सु समाज॥ छं०॥ ४७८॥

रावल को बिदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी आदि भेट भेजा।

जब रावर सीषह सु करि। चढ़ि दष्यिन गिर राह॥
तब सुराज प्रथिराज गुर। बोलि चंद बिरदाह॥ छं०॥ ४७९॥

कवित्त॥ तबहि राज प्रथिराज। बोलि कैमास चंद बर॥
दिय अग्या बर सेव। कीए आएस राव गुर॥
*जुगम सिंघ बर कमिय। लेहु परिकर करि बेसं॥
गय सुरंग मद गंध। सब हय साज सुरेसं॥
लै चले चंद बर दाइ बर। जहां राज रावर सुभर॥
लैधरी बसत अनेक सुर। करि अस्तुति मुष कोटि तर[1]॥ छं०॥ ४८०॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आप चित्तौर को कूच किया॥

दूहा। राजन बर रष्यिय प्रसन। करिय सब्ब सामंत॥
माल मुत्ति दिय चंद कवि। चल्यौ चित्तगढ़ भंति॥ छं०॥ ४८१॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना।

---

* मो०—"मग सिंह सिद्धि कमिय"।

(१) मो०—नर।

अरिल्ल आर ॥ फिरि आये कैमास चंद बर । मिले राज तहं पूर्न प्रेम भर ॥
दिल्ली पुर आवत चहुआनह । अति तोरन उच्छव संमानह ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया। राजा खट्टू बन में शिकार खेलता चला।

कवित्त ॥ बंचि राज कैमास । सोई अंतर सिल लीनह ॥
द्रव्य साम उभरीय । भरिय कर पासे तीनह ॥
एकादस गज पूर । पंथ संभरि पुर थानह ॥
बासुर सत संक्रमे । भरिय भंडार विधानह ॥
संचरिय राज मृगया बहुरि । पुर षट्टू पारस रवन ॥
कर पंच रुद्र जहा[1] सुषह । आइ राज भेंट्या सुजन ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर भाग कर के सब सामंतों को बांट दिया। सरदारों का बांट का वर्णन।

बंटि दियौ प्रथिराज । भाग किन्हे सब अब्बर ॥
एक भाग कैमास । तीय अप्पे नरसिंघ नर ॥
पंच भाग चावंड । भाग अद्धौ बर कन्हं ॥
दादस भाग नरिंद । दियौ परिगह सब धंनं ॥
प्रथिराज दिष्ट आवै नहीं । चिकट कुंभ ज्यां जल अभिद ॥
लग्गै न नीर पचह कमल । भिदै न मति छीवै उछिद ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
दूहा ॥ एक भाग दिय विप्र कर । करै राज सुष कंद ॥
धन लभिय प्रथिराज धन । कथी लष्य कवि चंद ॥ छं० ॥ ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया। बड़ा आनन्द उत्सव हुआ।

कवित्त ॥ अति तोरन उच्छवह । आइ दिल्लीय निकट बर ॥
रैन कुमार सु आइ । सुवर सामंत मधुत्तर ॥
सत्त दूअ असवार । कहत नामी अग्गै भर ॥
छंडि तुरिय पय लग्गि । दीय सा षट्टन सीष गुर ॥

(१) मो०— जटाजूट बह ।

बंदै व चढ़ै तुरियं समय । आए नंद उछाह घर ॥
जित्ते मलेच्छ लभ्यौ सुधन । अति तोरन उच्छव नयर ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

जेठ सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए ।

गाथा ॥ अति तोरन उच्छाहं । आए जेठ सुदि चउदसियं ॥
सुभ जोगं रविवारं । गहनं साह बद्धि जस भारं ॥ छं० ॥ ४८७ ॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया ।

दूहा ॥ ग्रहन साहि जस बढ़िय घर । आइ धवल मधि साल ॥
त्रिया सकल आई सु तहँ । मुजरा करन सु चाल ॥ छं० ॥ ४८८ ॥

दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं ।

गाथा ॥ दाहिमी प्रथु भट्टी । पुंडीरी आइ नृप ढिग्गं ॥
करि न्यौछावरि सकलं । नृप दी सीष गइय ग्रह अप्पं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे । सबेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा ।

राजा धवल संपत्तं । गये ग्रह रति तथ्थ पुंडीरं ॥
करि रस अनंग क्रीडा । बढ़िय सुबेलि सुमन मन मथी ॥ छं० ॥ ४९० ॥
सुमन बेलि मन मथ्थी । करि क्रीडा हुअ बर प्रातं ॥
अंतर साल वयट्टं । मन विचार साहयं दंडं ॥ छं ॥ ४९१ ॥

बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया । अपने पास केवल यश रक्खा ॥

कवित्त ॥ दंड सुवर पतिसाह । दीय हय बंटि राज बर ॥
बीस सुभर हय कन्ह । बीस हय उंचह निठुर ॥
बीस दूअ रघुबंस । बीस उभय दाहिमं ॥
अत्तताइ अल्हन पचाड़ । बीस हय जैत गुरंमं ॥
औरह सु सकल भर बीस अध । बंटि बंटि दिय सबन नर ॥
रष्यन सु गल्ह राजंद गुर । जस रष्यौ निज बर सुकर ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

गाथा ॥ जस रष्यौ नर रूपं । मुक्तिय माल लालयं द्रव्वं ॥
आरोही पुर दत्तं । कवि दीनौ सु अवर कर साहं ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
दूहा ॥ सकल इंड पतिसाह कौ । बंटि दियौ सब सूर ॥
तपत राज अति षचिवर । श्रीषम विक्रिय पूर ॥ छं० ॥ ४८४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पथिराज रासके षट्ट बन मध्ये आखेटक रमन धनसंग्रहन पातिसाहबंधनं धनकथा नाम चौबीसमों प्रस्तावः ॥ २४ ॥



अथ शशिव्रतावर्णनं नाम प्रस्ताव ।

(पचीसवां समय ।)

शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना ।

दूहा ॥ आदि कथा शशिव्रत्त की । कहत अब्ब संभूल ॥
दिल्ली वै पतिसाहि ग्रहि । कछु लच्छि उन मूल ॥ छं० ॥ १ ॥

ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना ।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रुतु क्रीड़त[1] सुराजन । विति उकलंत वेह नभ साजन ॥
विषम वायु तपित[2] तनुभाजन । लगि सीत सम्मीर सुकाजन[3] ॥ छं० ॥ २ ॥
कवित्त ॥ लगि सीत कल मंद । नीर निकटं सु रजत घट[4] ॥
अमिय सुरंग सुर संध । तनह उवटंत रजति पट ॥
मन्य चंद मल्लिका । धाम धारा ग्रह सुच्चर ॥
रंजि विपन वाटिका । तीस द्रुम छांह रजति तह ॥
कुमकुमा अंग उवटंत अति । मधि केसर घनसार घति ॥
कीलंत राज ग्रीषम सुरिति । आगम पावस भइय भति ॥ छं० ॥ ३ ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आरम्भ होना ।

गाथा ॥ ग्रीषम तिक्तिय कालं । आगम पावस दीह मझेनं ॥
दिसि दष्यिन वर देसं । नाइक[5] आइ चंद्रोदयं नामं ॥ छं० ॥ ४ ॥

राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा ।

सभा विराजित राजं । तहां नट आइ पत्त संगीतं ॥
मिलत मान दिय राजं । पुच्छिय विगति देस रह मझझं[6] ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए०—ब्र०—को०—क्रीलंत ।
(२) ए०—ब्र०—को०—तपि तम तन ।
(३) मो०—राजन ।
(४) मो०—घट ।
(५) ए०—ब्र०—को०—नाइक ।
(६) ए०—ब्र०—को०—मध्यं ।

नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ दूह संभरि नृप उच्चरिय। अहो सु नट गुररा ॥
गुन उचार[1] कछु किज्जियै। ज्यौं दिज्जै दानाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं।

गाथा ॥ नाटक्क प्रमान कथयं[2]। सुनि राजन धी ढिल्लीसं ॥
पाचं घर के सब्बं। गुन सुनियै चितयं लायं ॥ छं० ॥ ७ ॥
दूहा ॥ अवसर तत्त प्रगह किय। जंघ मृदंग सुतान ॥
करिय राग श्री उंचकर। करन नृत्य बहु गान ॥ छं० ॥ ८ ॥

देवी की बन्दना करके नृत्य आरम्भ करना।

आदि सकल अस्तुति करिय। पहुपंजलि पटिदेव ॥
कहि मंगल[3] धरनी निरषि। करन नृत्य अति भेव ॥ छं० ॥ ९ ॥
चंद चारु मागध सुअरु[4]। गीत प्रबंध प्रसन्न[5] ॥
उघटि चिघटि सब प्रमुष दै। देषि विगति सुर भिन्न[6] ॥ छं० ॥ १० ॥

नट का नाच के आठ भेद बतलाना।

तब सुनह इम उच्चरिय। हो राजन नर इंद ॥
बहु विवेक संगीत कज। अष्टह नृत्य सुनंद ॥ छं० ॥ ११ ॥

आठों भेदों के नाम।

श्लोक ॥ मृदंगी दंडिका तालो। कहली श्रुत धुर्द्धरी[7] ॥
नृत्य गीत प्रबंधं च। अष्टांगो[8] नृत्य उच्चते ॥ छं० ॥ १२ ॥

नृत्य देख कर बैठने का हुक्म देना।

दूहा ॥ कहिय नृपति अष्टंग सुधि। रंजि राज कल गान ॥
बहुरि हुकंम बैठन दिय। फिरि पुच्छिय यह न्यान ॥ छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए०—उचार। (२) मो०—कथियं।
(३) मो०—धरती। (४) मो०—सुरुअ। (५) मो०—प्रमान। (६) मो०—सान।
(७) मो० धधंरी। (८) ए०—क्र०—को०—अष्टागो।

राजा का नट से उसके निवासस्थान का नाम पूछना।

तब राजन यों उच्चरिय। अहो सु नटवर राय॥
कौन ग्राम ठौरह सु तुम। कहो सु गुन प्रति भाय॥ छं०॥ १४॥

नट का कहना कि देवगिर में मैं रहता हूं वहां का राजा सोम-वंशी जादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई।

तब नट नमि करि उच्चरिय। सुनहु राज दिल्लीस॥
सोम वंश जदव नृपति। देव गिरी वसि जीस॥ छं०॥ १५॥

कवित्त॥ देवगिरी जदव नरेश। अति प्रबल तपत तप॥
संगीतह बर कला। लछन शुभ ग्यान सुभत बय॥
ग्यान[1] तान[2]गुन लछन। भेद सुन ग्यान विचारं॥
तास राज संमीप। रहों नट विद्य उचारं।
ता ग्रह सु पाच अनेक गुन। रहैं सु तहं निशि दीह पर॥
राजंत राज जदव नृपति। ज्यों सुदेव[3] पति नाक गुर॥ छं०॥ १६॥

मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया।

गाथा॥ तिहि ग्रह नट वर रूपं। आए संगेव सीष कुरषेतं॥
तुम गुन अति संभरियं[4]। आवन हूअ एम दिल्लि मझेनं॥ छं०॥ १७॥

राजा का पूछना कि उनकी कन्या का बिवाह किसके साथ निश्चय हुआ है।

कहि संभरि नृप राजं। हो नट राइ सुनहु बर बचनं॥
किहि व्याहन वर संगं। को राजन कवन धर मझ्झं॥ छं०॥ १८॥

नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है।

पर घर उजेन मझ्झं। करि पामरि सगप्पनं राजं॥
शुभ अंत करि आदं। व्याहन मन कीन राइ कमधज्जं*॥ छं०॥ १९॥

(१) मो०—सान। (२) मो०—मान।
(३) ए०—कु०—को०—इंद। (४) ए०—कु०—को०—संभरिय।
* व्याहन कीन कमधज्जं।

दूहा ॥ कै सगपन जद्दव नृपति । करै सु दिसि कमधज्ज ॥
कोई पुच्च अनूप है । तिन गुन व्याहन कज्ज ॥ छं० ॥ २० ॥
व्याहन मन कमधज्ज करि । सगपन राजहोर[1] ॥
पंम्मारी दिय पुच्च पर । तिहि पुची बर टोर ॥ छं० ॥ २१ ॥
पुची वरी उज्जैन दिसि । पठिलै पंग स पुत्त ॥
अवन गवन पुर आदि दै । पठि जद्दव ग्रह तत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है। पर लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया।

गाथा ॥ पठवन किय दुज जद्दों । पुची दीय पुरो[2] उज्जेनं ॥
तिहि पुची नारत्तं । व्याही पंग पुत्त अज इंदं ॥ छं० ॥ २३ ॥

नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना।

दूहा ॥ सुनि राजन कौं करि कहीं । जो शशिव्रत्ता रूप ॥
जीह एक ब्रन्नन न बनि । तिन गुन ब्रन्न अनूप ॥ छं० ॥ २४ ॥

सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना।

तब राजन उठी सभा । फिरि दीनी सब सीष ॥
अंदर नह बुलाइ कौं । पुछिय विगति बिसीष[3] ॥ छं० ॥ २५ ॥

नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना।

कवित्त ॥ कहै सु नट राजिंद । ब्रह्म आमोदक दिन ॥
चंद कला मुष कंज । लच्छि सहजँह सरूपनन ॥
नैंन सु मृग शुक नास । अधर बर बिंब पक्क मति ॥
कंठ कपोत मृनाल भुज्ज । नारंगि उरज सति ॥
कटि संक सिद्ध जुग जंघ रँभ । चलत हंस गति गयँद लजि ॥
सा नृपति काज त्रंभिय तरुनि । मनों मेनिका रूप सजि ॥ छं० ॥ २६ ॥
दोहा ॥ कह गुन बरनौं राज कहि । कुंअरी जद्दव नाथ ॥
विधना रचि पचि कर करी । मनुं मेंनिका समाय ॥ छं० ॥ २७ ॥

(१) मो०—रजहोर । (२) ए०—छ०—को०—पुरि ।
(३) ए०—छ०—को०—विसेष ।

उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो।

अरिल्ल ॥ सुनि राजन लगो श्रोतानं। लगे मीन केतु कत बानं ॥
कहै नट सौं राजंन बर प्रेमं। मह सगान मा करहि सुकेमं ॥ छं० ॥ २८ ॥

नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा। मुझ से इस में जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा।

दूहा ॥ पुनि नट वर यौं उच्चरिय। फिरि कहिहौं राजिंद ॥
जौ मुझ कीयौ होइ है। तौ करि हौं नृप इंद ॥ छं० ॥ २९ ॥

राजा का नट को इनाम देकर विदा करना, नट का कुरुक्षेत्र की ओर जाना।

तब राजन नट सीष दिय। गज सु एक है पंच ॥
चल्यौ दिसि कुरषेत प्रति। परसन हरि चरनंच ॥ छं० ॥ ३० ॥

ग्रीष्म बीतकर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता के ओर लगा रहा।

अरिल्ल ॥ ग्रीषम रिति बित्ती सुभ राजं। पावस आगम भई समाजं ॥
सुनि नट बैन अपुब जदव कथ। मन धीरज्ज हंस आतम पथ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना।

दूहा ॥ हर सेवा राजन करत। ब्रसिय मास जब संग ॥
अद्ध निसा सिव आइ कै। दिय सु बचन मन रंग ॥ छं० ॥ ३२ ॥

शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का बर देना।

जो कामन मन सहई। सो पूरे हर ईस ॥
मन चिंता करि राज पुर। आयौ गुन तुझ दीस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना।

कवित्त ॥ हुअ प्रभात जब राज। सुपन मन महि राज रस ॥
प्रहन सेइ सिव सिवा। काम सीझै सु इंद जस ॥

मन जाने बर अप्प। लग्गि ओसान राज उर॥
चिच मद्दावतगैंद[1]। बहुरि उतरैन अवर पर॥
मन धीर करत पावस सुरिति। छिन छिन जुग जुग जात जिय॥
बर मोर सोर दद्दुर बचन। लग्गि तपत तन असम किय॥ छं०॥ ३४॥

वर्षा की शोभा का वर्णन-राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना।

कवित्त॥ मोर सोर चिहुं ओर। घटा आसाढ़ बंधि नभ॥
बच दादुर झिंगुरम। रटन चातिग[2] रंजत सुभ॥
नील बरन बसुमतिय। पहिर आभ्रंन अलंकिय॥
चंद बधू सिर ब्यंज[3]। धरे बसुमत्ति सु रज्जिय॥
बरषंत बूंद घन मेघ सर। तब सुमरै जदव कुँअरि॥
मन हंस धीर धीरज सुतन। दुष फुट्टे मनमथ्थ करि॥ छं०॥ ३५॥

वर्षा वर्णन-राजा का विरह वर्णन।

छंद पद्धरी॥ घन घटा बंधि नभ मेघ छाय। दामिनिय दमकि जामिनिय जाय॥
बोलंत मोर गिर बर सुहाइ। चातिगग रटत चिहुं ओर नाइ॥ छं०॥ ३६॥
दादुरन सोर दस दिस डराइ। रह पंथ पथिक थकि पाइ साइ॥
बिरहिनी दूरि जिन[4] पंथ नाह। तिहि बुंद लगत जनु ईष जाह॥ छं०॥ ३७॥
दंपती करै क्रीला उमंग[5]। मनमथ्थ रहसि बढि अंग अंग॥
बिरहनी रटत पप्पीह[6] नार। प्रफुलित्त लता लल्लरिय बार॥ छं०॥ ३८॥
घन वृच्छ लता लपिटपुप्फ[7] मंत। सब रंग रंग पावस्स कंत॥
उभ्भरिय चलिय सलिता संजूर। चलि मिलिय संग सायरह नूर॥ छं०॥ ३९
रति करन क्रीलनह[8] राज थाह। मन हंस धीर मन सुष्प नाह॥
नहि सजे सुष्प सषि बिषम बाइ। तन सीत तपति शीतन सुहाइ॥ छं०॥ ४०॥
मन प्रीत सुहथ गय नारि मांहि। अतिताप जंत तन रोम मांहि॥
मन नीदसुष्प[9] मन राज अंग। लग्गेसु बाग मन मथ्थ पंग॥ छं०॥ ४१॥

---

१ ए० ब० सो०—गयंद, गयँद। २ सो०—चातुक। ३ सो०—ब्यंद।
४ ए०—तिन। ५ सो०—ब०—उतंग। ६ शा०—बप्पीह।
७ ए०—पुष्प। ८ ए० ब०—कील। ९ सो०—सुषं।

भेदेव अंग अँग रोम राइ। जांनै न कोइ बर अवर भाइ॥
यों करत गई पावसी विषम्म। किय सुमन[1] दिसा दच्छन करंम॥छं०॥४२॥

वर्षा बीत कर शरद का आगमन।

दूहा॥ गत पावस आगम शरद। गई गुडल नभ मान॥
ज्यों सद गुरु मिलि अंदरद। [2]मिलि प्रगट गुरु आन॥ छं०॥ ४३॥

शरदागमन-शरद वर्णन।

सुक्कि पंक उत्तरि सरित। गय बल्ली[3] कुमिलाइ॥
जलधर बिन यों मेदिनी। ज्यों पति हीन त्रियाइ॥ छं०॥ ४४॥

छंद पद्धरी॥ ब्रम्मलिय[4] कला उग्गयो सोम। कंदर्प प्रगट उद्दित्त[5] व्योम॥
सरिता सुनीर आए निवांन। पंगु रन चरै चिय द्रग लजान॥
मल्लिका फूल सुग्गंध वाय[6]। संजोगि कंत रहिं लप्पटाइ॥
फल फूल सकल लूटंत अंब। जस प्रभा सुभ्भ सुनि राज डंबं॥
देवास पूजि नृप रजि विवेक[7]। सिर छत्र चौंर राजंत[8] नेक॥
आगम्म शरद रितु चलन साज। आनंद उअर उमगे सु राज॥
अति प्रीति सूर सामंत काज। पति नाक सभा हेमंत लाग॥
किय सुमन चलन गिरि दच्छनेस। ओतान राग लग्गो असेस॥ छं०॥४५॥

अरिल्ल॥ पावस रितु कीलंत सु राजन। फिरि आइय दिन सरद समाजन॥
करन राज कीला आषेटं। संकमि देस मद्धि मन भेटं॥ छं०॥ ४६॥

राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना।

कवित्त॥ सम सिकार कजिराज। सबर चतुरंग सु सज्जिय॥
सघन सूर सामंत। अप्प अप्पन भर गज्जिय॥
रंजि राज प्रथिराज। राज कीलन मन लाइय[9]॥
बर पहन जदवन। दूत राज पै पठाइय॥

---

(१) मो॰—दिसा। (२) मो॰—मिले पगट। (३) मो॰—बेली।
(४) मो॰—मिम्मेली। (५) मो॰ छ॰ को॰—उद्दित सु। (६) ए॰ छ॰ को—बाद।
(७) ए॰—छ॰—को॰—विमेक। (८) मो॰—राजत अनेक।

आनंद राग चहुआन हुअ। कथा जंपि संखिप्त किय॥
अब कहत कथ विस्तार किय। जो राजन दूनन करिय॥ छं० ॥ ४७ ॥

राजा का शिकार के लिये सवार होना।

गाथा॥ कछ दिन अन्तर क्रमियं। राज[1] क्रीलंत अप्प घर मझ्झं॥
एक सुदिन राजानं। क्रीलन आषेट अप्प चढ़ि चलियं॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा॥ क्रील राज आषेट चढ़ि। अन्तर दिन हुअ आदि॥
मिलिन जोग विधि लिषियबर। करि सनद्ध चढ़ि सादि॥ छं० ॥ ४९ ॥

माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना।

अरिल्ल॥ क्रीलन राज[2] चढ़े आषेटं। माघ बद्धि दुतिया दिन भेटं॥
दिन सुभवार सु मंगल लहियं। करन सिकार अप्प चढ़ि चलियं॥ छं० ॥ ५० ॥

राजा की धूमधाम का वर्णन।

कवित्त॥ चढ़िय राज प्रथिराज। साज आषेट लिए सजि॥
सथ्थ सुभट सामंत। संग सेना सु तुच्छ रजि॥
जाम देव का कन्ह। अत्त तइ निडुर गुर॥
मति मंची कैमास। राव चामंड जुभ्भ[3] भर॥
परमार सिंघ सूरन समथ। रघुबंसी राजन सुबर॥
इतनें सहित भर सेंन चलि। उडी रेनु आयास पर॥ छं० ॥ ५१ ॥

बन में जानवरों का वर्णन।

बागुर जाल बयल्ल। हिरन चीते सु स्यांन गन॥
कालबूत, मग, बिहंग। विवाह तट्टीय चलत बन॥
सर नावक बंदूक। हरित जन बसन विरज्जिय॥
गै जिमि गिरि करि अग्ग। अप्प बन संपति सज्जिय॥
चै भारि भईय कांनन सकल। मग अमग दल संचरिय॥
षिल्लन सिकार चढ्ढिय नृपति। प्रथियराज मद्दि संभरिय॥ छं० ॥ ५२ ॥

शिकार का वर्णन।

(१) मो०—दसणेश। (२) मो०—भादय। (३) मो०—यद्धान।

इन[1] सु साज मृगया सु। बाज उत्तंग अंग बर॥
निमष निमष संचरहि। निमिष जोजन जोजन सर॥
छित्त लिये जिम पवन। वेग जग्गै जिम अग्गिय॥
घर छुट्टै जिम सद्द। उरह चक्कवाक विसग्गिय[2]॥
यों बंधि राज आषेट बर। वपु सुव सुअ दिष्पे सु चष॥
धह मंडि अंषि मंगल पवन। सबै छोड़ जोजन समष॥ छं०॥ ५३॥
घुर घुरंत घन स्वांन। अप्प पंजर तीतर बर॥
मच्छ जाल बग्गुरि छि। फंद फैदैन सुबर धर॥
धनक बान चक्कां सु। सिंघ पंजर जल रष्पन॥
षांट षैर विसमिल्ल। तार तारक्क चित्र पन॥
सर छह सुरस लग्गै रमन। भुल्लै साथ श्री नथ पति॥
कविचंद विरद वंनन करै। श्रवन सुनै दिल्लिय नृपति॥ छं०॥ ५४॥

शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना।

गाथा॥ जित तित छुट्टे षंषी। थाबर जलह जंगमं जोती॥
रुसि पालं हरि[3] पालं[4]। भूपालं कान प्रति पालं॥ छं०॥ ५५॥

भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना।

भालक आइ सद्दीयं। बाराहं कोस अठ्ठयं पंचं॥
आतुर षरि राजानं। अति अदभूत रूप शूकरयं॥ छं०॥ ५६॥

राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना।

दूहा॥ गये सुवन राजन सुभर। करन घात सु प्रपंच॥
कोलाहल सुनि सूकरह। उठि चय कोस पलंच॥ छं०॥ ५७॥
तिहि को हर इक प्रबल षह। षेदि सुट्टै डर तार॥
पिरि अप्पी राजन्न प्रति। ब्यौरो बोल उचार॥ छं०॥ ५८॥

---

(१) छ०-राजन। (२) ए०-छ०-को०-राजन। (३) ए०-झुझ्झ।
(१) ए०-इन। (२) मो०-विकस्सिय।
(१) मो०-हर। (२) मो०-माल।

सब सरदारों का भी वहां पहुंचना, एक बधिक का आकर शूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना।

और सकल सामंत भर। आइ संपते तथ्थ॥
अरज राज प्रथिराज सम। कही बधिक दूह[1] कथ्थ॥ छं०॥ ५८॥
चय सु दिवस राजन क्रमिय। तीस कोस चै अग्ग॥
जंगल धरनें बेद चय। सिल नाहूर सुरंग॥ छं०॥ ६०॥
बधिक कही दूह राजप्रति। घात करै सुभ संच॥
दल सन्नह तजि चल्लियै। तुबक गही तुर तंच॥ छं०॥ ६१॥

राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना।

तब राजन्न तुरंग तजि। गहि दिढ़ तुबक सुकंध॥
कोहर मध्य बराह बर। करिय चोट सुर संध॥ छं०॥ ६२॥

सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम दे कर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना।

कवित्त॥ हनिग राज बाराह। अप्प बधिक इन्नाम दिय॥
सुभर सकल सामंत। रंजि राजन्न[2] सुभंतिय॥
बारी को सदुआन। तास धरा ग्रह सुब्बर॥
तहं विराम करि राज। अवर सामंत अप्प जुर॥
जब भई गोठि तथ्थह सुबर। तब परिहार सु सद्द किय॥
सामंत सुभर राजंन[3] अप। आहारे बिंजन सुलिय[4]॥ छं०॥ ६३॥

चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना।

दूहा॥ दिल्ली वैहे वैगहन। खना * अषेटक राज॥
चावद्दिसि सुर जंपई। धन चहुआन समाज॥ छं०॥ ६४॥

---

(१) मो०--दुक। (२) मो०--राजनप्रति। (३) मो०--राजान।
(१) मो०--धारी। (२) मो०--राजान। (३) मो०--लय।
* ए०--कृ०--को०--वैगहन बरन अखेटक राज।

कवित्त ॥ उभय सत्त मृग मुदित । बंधि फै दैत रहति बर ॥
यों बंधे मृग बीय । कहै ओपमा चंद बर ॥
मन बंधि कुलटा विटप । ग्यांन बधि मुकलित आवै ॥
दिन बंधि आवै कुमति । काल नर बुद्धि भुलावै ॥
आनई लज्ज गुन जस पकरि । आंनि संचि आवै अजस ॥
आनई क्रोध वर कलह को । यौं आने मृग बीय गस ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नाम स्वान गति सीह । पत्त पर भवत बाय पुर ॥
कल दृढ़ अग्गि सु ज्वाल । जीव पुज्जै न चित्त झुर ॥
दीप नयन प्रज्जरै । कन्न लंबे कँध डारे ॥
कहि ओपम कवि चंद । बीज चंचल गति हारे ॥
अति ज्वाल परिग्रह रोसभर । दुति तरंग छिति जल छलिय ॥
पामर रुषाट पंजर विहर । राज पास दसदिसि चलिय ॥ छं० ॥ ६६ ॥

राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे पीछे चलना।

कवित्त ॥ इक्क समय राजन्न । करन क्रीला धर अप्पं ॥
विपन मध्य संक्रमन । करन आषेट सु तप्पं[1] ॥
ग्रह करि तुपक सु राज । सग्ग छत्ती धर चल्लिय ॥
अवर सूर सामंत । फौज पच्छैं धरि दल्लिय ॥
कर हथ्थ डार दृढ़न सुपर । चले राज तुक्क बधिक सथ ॥
लग्यौ सुरंग आषेट कौ । कम्यौ राज पर भूमि पथ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा।

पुच्छ कथा शुक कहो । समद गंधर्वी सुप्रेमहि ॥
स्रवन मंमि संजोगि । राज समधरी सुनेमहि ॥

(४) उपमा सु। (५) मो०—सु।
(१) आखेटक।

... ... । इम चिंतिय मन मभिक्ख ।
कै करो पति जुग्गनि ईसह । ईस पुज्जै सु जगीसह ॥
शुक चिति बाल अति लघु सुनत । ततविन विस उपजै तिहि ॥
देव सभा न जद्दव नृपति । नाल केर दुज अनुसरहि ॥ छं० ॥ ६८ ॥

ब्राह्मण का जैचन्द के यहां जाकर उसके भतीजे वीरचन्द से ससिव्रता की सगाई का संदेसा देना। एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरंत देवगिरि की ओर चला।

नाल केर दुज गहिय । द्वार जै चंद गयो बपु ॥
करी षबर हे जमह । अप्प अंदर बुलाइ नृप ॥
नाल केर दुज आनि । कह्यो राजन अब धारी ॥
देव सु गिरि नृप भ्रात । पुंज ससि दत्त कुमारी ॥
सो दृढ़य बंध नृप बीर कहु । लगन मास दिन पंच वर ॥
सुनि श्रवन एह गंधर्व कथ । चल्यौ सु दक्कन देव धर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी।

दूहा ॥ चल्यौ सु दक्षिन देव गिरि । जहां शशिदत्त कुमारि ॥
विपन मद्धि क्रीड़ा करन । रुमह बाल चितचारि ॥ छं० ॥ ७० ॥

सोने के हंस का रूप धरकर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उसको पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो। हंस का कहना कि मैं गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूं।

कवित्त ॥ हेम हंस तन धरिय । विपन मद्ध विश्राम लिय ।
दिष्पि तास शशिव्रत्त । अतिहि अचरिज्ज मानि जिय ॥
बल कर गहिय सु तत्व । चत्व लै करि तिहि पुच्छिय ॥
कवन देव तुम थान । कवन माया तन अच्छिय ॥
उच्चयौ हंस ससिव्रत्त सम । मति प्रधान गन्धर्व हम ॥
सुरराज काज आए करन । तीन लोक हम बाल गम ॥ छं० ॥ ७१ ॥

शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थीं और हमारा पति कौन होगा हंस का कहना कि तू चित्ररेषा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई ।

कवित्त ॥ कहै बाल सुनि हंस । कवन हम पुब्ब जम्म कह ॥
कवन पत्ति हम लहँहिं । लेष बिद्दार लहो इह ॥
तबै हंस उच्चरौ । सुनहि ससिव्रत्ता नारी ॥
चित्ररेष अपछरि । सगीन अति रूप धरारी ॥
तिहि गरब इन्द्र सम कलह करि । क्रोध देवबंडी सुरम ॥
दच्छिन नरेस नृप तान बँधु । पुंज ग्रहै अवतार सुम ॥ छं० ॥ ७२ ॥

हंस ने कहा कि पङ्ग अर्थात् कान्यकुब्ज नरेश के भतीजा वीरचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है ।

चौपाई ॥ कहै हंस सुनि बाल बिचारी । पंग बधुर बीर सु पुत्तारी ॥
तिहि तु दई मातु पितु बंधं । सो तुम जोग नहीं बर कंधं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसकी आयु एक ही वर्ष है, इस लिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझको तुम्हारे पास भेजा है ।

तेम रहै बर बरष इक्क महि । छय गय अनत झुझिझ है समतहि ॥
तिहि चार करि तुमहि पै आयौ । करि करुना यह इन्द्र पठायौ ॥ छं० ॥७४॥

शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिससे कहो उसी से मैं ब्याह करूं ॥

तब उच्चरिय बाल सम नेहं । तुम माता सम पिता सनेहं ॥
मुझझ सहाय अवरि को करिहौ । पानि ग्रहन तुम चित अनुहरिहौ ॥
छं० ॥ ७५ ॥

हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है ।

चौपाई ॥ तब बोल्यो दुजराज बिचारं। सुनि ससिव्रत्त कत्थ इक सारं ॥
दिल्ली वै चहुवान महा भर। सो तुम जोग चिन्तयौ हम वर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

उसके सौ सरदार हैं, उसने गजनीपति को पकड़कर दण्ड लेकर छोड़ दिया।

सत सामंत सूर बलकारी। तिन सम जुद्ध सु देव बिचारी ॥
जिन गहियौ सर बर गज्जन वै। छव गय मंडि छंडि फुनि छिय वै।
छं० ॥ ७७ ॥

महा बली चालुक्य भीमदेव को जीता है। यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी।

गुज्जर वै चालुक भीमवर। ते दिन राति डरै जंगल धर ॥
बरन जोग तुम तेह बिचारं। सुनि की सुंदरि हरष अपारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
तहां तुम पिता कृपा करि जाउ। दिल्ली वै अनुराग उपाउ ॥
मांस षटह हों हत्तह मंडों। च्युना आवै तौ तन छंडों ॥ छं० ॥ ७९ ॥

हंस वहां से उड़कर दिल्ली आया।

तब उड़ि चल्यौ देह दिस उत्तरि। ढिग ससिव्रत रष्यि निज सुंदरि ॥
जुग्गिनि पुर आयो दुजराजं। सोवन देह नगं नग साजं ॥ छं० ॥ ८० ॥

बन में शिकार के समय हंस का आना उसे देखकर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना।

कवित्त ॥ बय किसोर प्रथिराज। रम्य हा रम्य प्रकारं ॥
सेत पष्य विय चंद। कला उद्दित तन मारं ॥
विपन मध्य चहुआन। हंस दिष्यौ अप अष्यिय ॥
चरन भग्ग दुति होत। हेम पक्की वियलष्यिय ॥
आचिज्ज देषि प्रथिराज वर। धाइ नृपति वर कर गहिय ॥
आपुब्ब दुज्ज गति दून कथ। रहसि राज सों सब कहिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ विपन मध्य आचिज्ज इह । दिष्पि राज प्रथिराज ॥
धूत दूत कलद्यौत तन । हंस सरूप विराज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

संध्या को हंस रूपी दूत का सबको हटाकर राजा को पत्र देना।

संझ सपत्तौ न्रपति पै । दूत सु जद्दव राइ ॥
बर कग्गद न्रप हथ्थ दै । कहि ओनान बधाइ ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है। इतना कहकर चुप हो जाना।

कह्यो दूत मन अप्पनै । जो व्रंनो विधि जोइ ॥
दोषु[1] जानि नन व्रंन वहि । न्रप ओनान न होइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चौपाई ॥ अति सु मनह चिंते परि मांन । मानहु थके सिंध जल वांन ॥
दाहन अप्प एक सोइ जाइ । चिंतौ कहा सु अंनह पाइ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ इह कहि बत्त ठठुक्कि रहि । उत्तर एक न आइ ॥
मानो उरग छछूंदरी । कंठ लगावहि धाई ॥ छं० ॥ ८६ ॥

गाथा ॥ मुष जंपी मन बत्तं । इतं जे नवाइ चिर पुछं ॥
बर चहुआन कमानं । किम जद्दों नमों नम नाउं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है।

दूहा ॥ इह अष्यो चहुआन सों । नतो मार कहि आइ ॥
सुनिवेकों ससिवत्त गुन । सारदऊ ललचाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानों शृङ्गार का सुमेर हो।

राका अरु सूरज्ज विच । उदै अस्त दुहु बेर ॥
बर ससिवत्ता सोभई । मनों शृङ्गार सुमेर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

शशिव्रता के रूप का वर्णन।

इन कै इन रूपह तरुनि । इन गुन आवै मान ॥
सो बर बर कविचंद कहि । सुनहु तो कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ९० ॥

(१) सो०—देशु ।

छंद चोटक ॥ बय संधिरु बाल प्रमान व्रनं। कहि चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
बय स्यांमरु प्रैग्रव अंकुरयं। अह अंत निसागम संकरयं ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जल सैसव मुद्ध समान भयं। रबि बाल बहिक्रम लै अथयं[1] ॥
बरसै सब जोबन संधि अती। सु मिलें जनु षित्तह बाल जती ॥ छं० ८२ ॥
जुर ही लगि सै सब जुब्बनता*। सुमनों ससि रंतन राज[2] चिता ॥
जु चल्लै मुरि मारुत झंकुरिता। सु मनों मुरवेस मुरी मुरिता ॥ छं० ॥ ८३ ॥
कलकंठ सु कंठय पंष अली। गुन जंपि कवित्त सु चंद बली ॥ छं० ८४ ॥

कवित्त ॥ ससिर अंत आवन बसंत। बालह सैसव गम ॥
अलिन पंष कोकिल सुकंठ। सजि गुंड मिलत भ्रम ॥
मुर मारुत मुरि चले। मुरे मुरि बैस प्रमानं ॥
तुछ कों परसिस फुहि। आन किस्सोर रँगानं ॥
लीनी न अमि नक स्यांम नन। मधुप मधुर धुनि धुनि करिय ॥
जानी न वयन आवन बसत। अग्याता जोबन अरिय ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कवित्त ॥ पत्त पुरातन झरिग। पत्त अंकुरिय उठ्ठ तुछ ॥
ज्यों सैसव उत्तरिय। चढ़िय सैसब किसोर कुछ ॥
शीतल[3] मंद सुगंध। आइ रिति राज अचानं ॥
रोम राइ अंकुच नितंब। तुछ्छं सरसानं ॥
बछै न सीत कटि छीन छ्वै। लज्ज मांन टंकनि फिरै ॥
ढंकै न पत्त ढंकै कछै। बन बसंत मंत जु करै ॥ छं० ॥ ८६ ॥

पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुनकर उसके मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना। सबेरे उठते ही राजा के दूत से पूछना।

दूहा ॥ श्रवनन भव श्रोतान व्रप। मन बंछै चहुआन ॥
मनु ससिवृत्त कुंआरि कौ। पस्यो उर ह्वर बान ॥ छं० ॥ ८७ ॥

---

(१) मो०—अत्यमियं। * मो०—सु लगी जनु शैशव योबनता।
(२) मो०—रोज। (३) मो०—शीत।

कवित्त ॥ निसि नरिंद चहुआन। चित्त मनोरत्थ विचारै ॥
भई दीह सब निशा। निशा सयनंतर धारै ॥
सयनंतर ससिवृत्त। चाटु चटु बैन उचारै[1] ॥
चारु चारु बर बयन। मान माननि संभारै ॥
दैवान मनोरथ चित्त बर। भव भव कन्नन कह करै ॥
भौ प्रात दूत पुच्छै नृपति। जहोवै चित्तै धरै ॥ छं० ॥ ९८ ॥

हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना।

दूहा ॥ बर बंध्यौ ससि वृत्त कौ। अरु नृप भान कुंआर ॥
बेंही दिन कमधज्ज कै। नाम बीरबर भार ॥ छं० ॥ ९९ ॥
ससिवृता वृत आइ है। बरु देख्यौ बर कीन ॥
नृप वै भान स्वयंबरह। एक वृत्त बल लीन ॥ छं० ॥ १०० ॥
जैत षंभ मंड्यौ नृपति। बान हनन वृत लीन ॥
ता काजै दिसि दिसि नृपति। धर धर कागर दीन ॥ छं० ॥ १०१ ॥
दूह अमंत[2] नृप वर जितै। कियौ न मन्नै नाम ॥
दारुन वृत लीजै नहीं। दूह कहि पूरि सु ठाम ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूह सुनंत प्रस्थान दै। बर पंचमि रबि बार[2] ॥
पच्छ चलाइ गवन्न सुनि। कांनन बीरत[3] बार ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दोऊ वाल पावक्क बनि। सुनि परि उठ्ठह गात ॥
मानों घीय चतुर्दशी। कै शशि उठ्ठिय प्रात ॥ छं० ॥ १०४ ॥
सुनि कै आसन उठ्ठि बर। ढुंढत फिरत सु जोइ ॥
कंत कंत के करत ही। कान भनक कछु होई ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बीर चंद जैचंद बंधु। देवरु पुंज कुंअरि ॥
नृप पठये चहुआन पै। दै शशिवृत्ता नारि ॥ छं० ॥ १०६ ॥

शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन।

(१) ए०—कु०—को०—उचारै। (२) को०—अमृत।
(३) कु०—धार।

आगम बीर बसंत कौ। सिसिर संपते अंत ॥
प्रीतम पतन सु प्रीत कौ। दैन बांह सो कंत ॥ छं० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ सिसिर सु विथुरत बन। वियोग विकुरत बन कंते ॥
दुचन आस रचि मास। कंत आवो न बसंते ॥
उपवन पत्त झंझरिय। विरह पंजर संझंझरि ॥
आस अनहिन हुलसि। विपन हुलसै सु सनंझरि ॥
अनमेष जपत इच्छा रुघन। आनँद उर भूषन तजै ॥
दोऊन होइ कवि चंद कहि। असु रष्पिरु धज सम सजै ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शशिव्रता का चित्ररेषा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन।

कवित्त ॥ चित्र रेष बाला विचित्र। चंद्री चन्द्रानन ॥
स्वर्ग मग्ग उत्तरी। चित पुत्तरि परमानन[1] ॥
काम बान सुंजुरी। बाल अंजुरी सु लच्छिय ॥
मार कलच्च उत्तरी। पुच्च अच्छरी सु लच्छिय ॥
लच्छिन बत्तीस लच्छी सहज। रति पति चित्त समंधरै ॥
संग्रहै दृत्त चहुआन कौ। गवरि पुज्ज दिन प्रति करै ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ बरनी जोग बरन्न को। बर भुल्लै करतार ॥
तिहि कारन ढुंढ़त फिरै। सत्त समुद्रह पार ॥ छं० ॥ ११० ॥

वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए।

जा कारन ढुंढ़त फिरत। सो पायौ दीलीस ॥
अब जदव ससिदृत चढ़िय। दीनी ईस जगीस ॥ छं० ॥ १११ ॥

मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं।

सिवा बानि सिव वचन करि। हो येठयो प्रति तुभ्भ ॥
कारन कुंअरि दृत्त कौ। मन कामन भय मुभ्भ ॥ छं० ॥ ११२ ॥

शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन।

(१) मो०—समानन।

सुभ लच्छ जद्दव प्रिया। कचियै का सु विवेक॥
हंस कहै राजन सुनिय। उत्तिम लच्छिन केक॥ छं०॥ ११३॥

काव्य॥ पीनो रूपीन उरजा, सम ग्रग्नि वदना, पद्म पचायतास्त्री॥
व्यंबोष्टी तुंग नासा, गज गति गमना, दत्तना वृत्त नाभी॥
संस्निग्धा चारु केशी, मृदु प्रथु जघ्रा, वाम मध्या सु वेसी॥
हेमागी कंति हेला, वर रुचि दसना, काम बाना कटाक्षी॥ छं०॥११४॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो।

मुरिल्ल॥ सुनि प्रथिराज हंस फिरि पुच्छिय। तुम सब जान सु लच्छिन लच्छिय॥
चारि जुगत्ति चिया परकारं। कहु दुजराज सु लच्छिन सारं॥ छं०॥११५॥

हंस को देर होने के भय से कोई बात अच्छी नहीं लगती।

दूहा॥ कही हंस जद्दो सु कथ। लगि ग्रोतान सुराज॥
छिनन हंस धीरज धरै। लगै बान सम साज॥ छं०॥ ११६॥

हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है।

कहै हंस बर राज सुनि। अति अनेक है जाति॥
पदमनि है जद्दव कुंअरि। ग्रांन तरुनि अनि भांति॥ छं०॥ ११७॥

राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना।

राज कहै दुजराज सुनि। करि बरनन कथि सोइ॥
को लच्छिन उत्तिम चिया। कचियै सो सब जोइ॥ छं०॥ ११८॥

हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, ग्रौर संखिनी इन चारों का नाम गिनाना।

चारि जाति है चीय तन। पदमिनि हस्तिनि चित्र॥
फुनि संषिनिय प्रमान वृह। मन नह रंजिय मित्त॥ छं०॥ ११९॥

राजा जा चारों के लक्षण पूछना।

छंद पद्धरी॥ सुनि हंस बैनं उर लगी बत्त। विधिना लिषंत क्यों मिटै पत्त।
ग्रोतान राग उर लगे राज। तन लगे बान समरच्ह सु साज॥ छं०॥ १२०॥

बुल्लस राज फिरि हंस बत्त। सुनि श्रवन बेंन मन भयौ रत्त॥
पुच्छनह राज सब चिय विवेक। उच्चरयौ* हंस सा बत्त एक॥ छं०॥ १२१॥
तुम देव अंस जानौ सु भेउ। हम कहत परम दुज लहै केउ॥
लच्छिन प्रकार चव चिय विवेक। करि वरन सुनावहु भांति नेक॥ छं०॥१२२॥

हंस का लक्षण वर्णन करना।

गाथा॥ कहै विवेक सुहंसं। चीय प्रकार चार लहि इंदं॥
सुनि राजन सुभ वांनी। आनंदे श्रवन मझ्झनं॥ छं०॥ १२३॥
दूहा॥ तब दुजराज सु उच्चरिय, रे संभरि पुर इंद॥
पदमिनि हस्तिनी चित्रिनी, संषिनि संषन नंद॥ छं०॥ १२४॥

स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन।

अरिल्ल॥ रक्त जीभ मृग अंक सु लच्छिन वान इहि॥
बचन सु अमृत धार रती रति जांनि जिहि॥
इला[1] सील कुल वाल छती छामोदरी॥
इन गुन नृप भय चारु सु चार जु सुंदरी॥ छं०॥ १२५॥

पद्मिनी का वर्णन।

कवित्त॥ कुटिल केस पदमिनी। चक्र हस्तन तन सोभा॥
स्निग्ध दंत सोभा विसाल। गँध पद्म आलोभा॥
सुर सम्मुह हंसी प्रमांन। निंद्रा तुछ जंपै॥
अलप वाद मित काम। रत्त अभया भै कंपै॥
धीरज्ज छिमा लच्छिन सहज। असन बसन चतुरंग गति॥
आवंक लोइ लग्गै सहज। कांम वांन भूलंत रति॥ छं०॥ १२६॥

हस्तिनी का वर्णन।

उड्ढे केस हस्तिनी। वक्र अस्तन दसनं दुति॥
मधुर गंध गरनाट। भुल्लि भ्रम कांम बाम रति॥
गूढ़ सबद मन जा। विषान रंगन छामोदरि॥
चित्र नयन चंचल। विसाल बरनी जंपि[illegible]रि॥

* पा०—बोरि हंस राज यों बत्त एक। (१) छ० ग०—इलो।

छिन रुदय हसय विहसय लहय। वसि चित्तह चित पुत्तलिय[1] ॥
नीवीय मान जानैं बहुत। कंत चित्त जादू न कलिय ॥ छं० ॥ १२७ ॥

चित्रनी का वर्णन।

दीर्घ केस चिचिनी। चित्त हरनी चंद्रानन ॥
गंध मृग चिच निद्र। कोक शब्दन उच्चारन ॥
सील नील लज्जा प्रमांन। रत्ति भै भय घन मारै ॥
अलस नयन रस बलित। कलित कल बोल उचारै ॥
धीरज्ज छिमा छबि लोक करि। अवलोकन गुन औसरै ॥
विस्तीर्ण संच मोहन पढै। चित्त वित्त कंतहु हरै ॥ छं० ॥ १२८ ॥

संषिनी का वर्णन।

अलप केस कुच मूल। थूल दंती उच्चारन ॥
थूल उदर लंकीस। थूल छिस लंगध बारन ॥
घोर निद्र[2] तन तास। अलप रसना रस छंडै ॥
अलप सील गंभीर। सबद कलहंतर मंडै ॥
आचार ध्रंन नहि सुद्ध मन। विधि विचार विभचार घन ॥
आसंष संष संषिनि गुननि। सुष्य नाह पावै न तन ॥ छं० ॥ १२९ ॥

शशिव्रता के रूप तथा नखशिख शोभा का वर्णन।

दूहा ॥ सुनौ श्रवन चहुवांन वर। देवगिरि नृप भान ॥
रूप अनूप अनूप गति। कहि ओपम सुनि कान ॥ छं० ॥ १३० ॥

छंदनाराच ॥ चढंत वेस सामयं। अरंभ ग्रेह कामयं ॥
उठंति एहि छल्लिता। वियद्ध चंद्र चल्लिता ॥ छं० ॥ १३१ ॥
नषं सुरंग रंजनं। तरक्क दर्प्प कंजनं ॥
छलंत पेंड रच्चयौ। अरुन्न नील कच्चयौ ॥ छं० ॥ १३२ ॥
रची सु कंति थावकं[3]। चलंत हंस सावकं ॥
दो हंस अंग अंगुरी। उपंम काक विज्जुरी ॥ छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो०—फुत्तरिय। (२) मो०—नीद्र।
(३) ए० छ० को०—जायकं।

मराल छोड़ मुक्कियं। चरंन चंपि लुक्कियं ॥
सुरेष पिंड सुभ्भियं। अनंग अंग लुभ्भियं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
दीपंत जंघ पिंडुरी। भराइ काम सुंढरी ॥
दुती उपंम जंघ की। किधों उलहि रंभ की ॥ छं० ॥ १३५ ॥
चितिय उपंम जंघरी। पराद काम की करी ॥
कनक्क थंभ रंभ सी। अनंग रंग रंग सी ॥ छं० १३६ ॥
नितंब तुंग मंडली। सयन्न काम की छली ॥
उतंग भाग अग्रता। मनों तुलाकि दंडिता ॥ छं० ॥ १३७ ॥
छकीन छीन लंकयं। कमांन काम अंकयं ॥
सरोम राइ राजई। उपंम कब्बि साजई ॥ छं० ॥ १३८ ॥
सुमेर शृंग कंदकै। चढ़ै पपील चंद कै ॥
उपंम कब्बि ठहई। धनक्क मुट्ठि चट्ठई ॥ छं० ॥ १३९ ॥
थनं विपान थोरयौ। अनंग बान ओरयौ[1] ॥
सुरंग रोम बाल सी। जु केवलं प्रवाल सी ॥ छं० ॥ १४० ॥
उपंम चंद ग्रीव की। मनो अनंग सीव की ॥
दुती उपंम तं लहै। कपोत कंठ कंक है ॥ छं० ॥ १४१ ॥
चिबुक्क चारु बिंद कौ। छयौ कलंक चंद कौ ॥
दसन्न जोति कामिनी। मनों दमक्कि दामिनी ॥ छं० ॥ १४२ ॥

हसंत कब्बि में कही। सु लच्छि रंक ढंकही ॥
सुरंग ओठ अद्ध सी। सु अद्ध रेष चंद्र सी ॥ छं० ॥ १४३ ॥
दसन्न चारु मानयं। प्रभात कै प्रमानयं ॥
दिपंत जोति नासिका। सु गत्ति कीर चासिका ॥ छं० ॥ १४४ ॥
पुभी जराइ राजई। उपंम कब्बि साजई ॥
मनों तरक्क विक्कुरे। मिलंत चंद उक्कुरे ॥ छं० ॥ १४५ ॥
तटंक कन्न राजई। उपंम ता समाजई ॥
सुकांम बाम चाढ़िकै। धरे परास बाढ़िकै ॥ छं० ॥ १४६ ॥

(१) ए० ब्र० को०—आरयौ।

सुमत्ति नास जीपकै । चुनंत कीर सीपकै ॥
सुभाइ बंक नैन की । हरंत चित्त मैंन की ॥ छं० ॥ १४७ ॥
चलंत नेंन भूव ले । धरंत चंद जूव ले ॥
लिलाट आड़ सोभई । अनंग थान लोभई ॥ छं० ॥ १४८ ॥
सुरंग केस पासयं । सु मुत्ति मंडि भासयं ॥
किरंन सूर साजकी । अहार दूध भास की ॥ छं ॥ १४९ ॥
चिषंड मंडयौ गुही । उपंम काक विज्जुही ॥
सोवन्न षंभ दुत्तरी । उरग्ग चीय उत्तरी ॥ छं० ॥ १५० ॥
शृंगार भार भारियं । विलोकि काम पारियं ॥
अवन्न मंडनं धरी । अनंग चित्त चौं हरी ॥ छं० ॥ छं० ॥ १५१ ॥
विसाल बाल विभ्भरी । कविंद बुद्धि विस्तरी ॥ छं० ॥ १५२ ॥

राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ।

दूहा ॥ जंपि राज दुज राज सम । तुम मति रूप अलोइ ॥
कवन काज अवतार इत । सत्य कहौ तुम सोइ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंस का विवरण कहना।

हंस कहै राजन्नसुनि । [1]कहौं उतपत्ति चियेन ॥
सुनहु राज मन प्रसन होइ । विवरि कहौं सब बेंन ॥ छं० १५४ ॥

इन्द्र और चित्ररेषा के झगड़ा तथा शाप का वर्णन।

कवित्त ॥ एक समै सुर ईस । अप्प पुर इन्द थान गय ॥
आगम देव सुनेव । नाग पति अति उछाह भय ॥
अरघ पाद करि धूप । करै मंगल अपुव्व सुर ॥
सुभ आसन रजि रुद्र । करै घर सार बारि तर ॥
अस्तुत्ति करन लग्गौ सुरिंद । तब प्रसन्न भय ईस प्रति ॥
उचरिय कूट जट इंद सों । सुभ दिष्यौ अच्छर नृपति ॥ छं ॥ १५५ ॥

पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना।

रंभ घृताची मैन । मँजुघोषा सुरंग चिय ॥
उरबसि केसी नारि । तुरत तिल्लोत्तमानि पिय ॥

(१) मो०—अए उतपति तिय दौन ।

किय शृंगार सुंदरिय। आइ उभी सुर बामं ॥
देषि चिया मन प्रमुदि। हुओ मन उद्दित कामं ॥
अब सरस नृत्य कारनह कजि। जंच मृदंग [1]उपन्न सजि
अस्तुति अनेक पढि घोष चिय। पहुपंजुलि सुर इंद्र कजि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना।

तब सु कोप धरि ईस। दियौ सुर आप पतन धरि ॥
और रंभ किय नृत्य। सुबर अन्नेक विदि पर ॥
बहु बिबेक कल मान। ताल मंडै चिग्गन सुर ॥
रंजि राज सुर ईस। दीन बर बानि रंभगुर ॥
अति प्रमुदि चित्त कैलास पति। उभय देव आनंद हुअ ॥
सुभ सभा बिराजै राज सुर। सुबर प्रमोदिय मन सँभुअ ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शिवजी का प्रसन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और ब्याह भी छत्रधारी से होगा। पर तेरा हरन होगा और तेरे कारण घोर जुद्ध होगा।

दूहा ॥ करि प्रसंन सुर राज चिय। मुष अस्तुति सुर कीन ॥
बर बानी पुर इंदकै। [2]यह सुवाक्य सिव दीन ॥ छं० ॥ १५८ ॥
परै तुम्भ्ह उत्तिम घरनि। पुत्री भूमि नरिंद ॥
दुअ पष्यां सिर छचहै। करि सेवा चर इंद ॥ छं ॥ १५९ ॥
बचन ईस तें बर लहै। हरन होइ तुअ नारि ॥
कलह केलि भावन भवन। ह्वै है जुद्ध अपार ॥ छं० ॥ १६० ॥

शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है।

कही बांनि कैलास पति। मैनकेस सुनि नारि ॥
परस दोष भरतार सम। करत सु क्रील अपार ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) मो०—उपम्म। (२) किय वधाय दिवसीन।

दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी।

गाथा ॥ तुह्र दिन अंतर क्रमियं। आगम भरतार पांमि उद्ध लोकं ॥
फिरि अच्छरि अवतारं पांमै तुभ्भ ईस बर बांनी ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शाप के पीछे शिव जी कैलस गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति बरन किया है।

कवित्त ॥ दै सराय सुर नारि। अप्प करि ईस थान चलि ॥
घन अस्तुति कर इंद्र। प्रमुदि अति रुद्र वानि फलि ॥
चले थान कैलास। परी अच्छरी [1]हुतं पुर ॥
जदव ग्रह चिय जाइ। उअर उप्पजी कुंअरि बर ॥
देवास थान तपि भान नृप। तिहि पुत्री ससिव्रत कुंअरि ॥
सोई वाच रुद्र देवह सुचिय। तुअ वारन रुाथह उअरि ॥ छं० ॥ १६३ ॥

हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है।

दूहा ॥ और सुवर संकेत [2]सुनि। हंस कहै नर राज ॥
मैंन केस अवतार इह। तुअ कारन [3]कहि साज ॥ छं० ॥ १६४ ॥

हंस कहता है कि राजा जादव ने शशिव्रता को कान्यकुब्जेश्वर को व्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर तुम्हारे पास आया हूं। शीघ्र चलो। राजा का प्रस्तुत होना। दस सहस्र सेना सजना।

(१) मो०—धारा। (२) मो०—ऊह। (३) मो०—करि।

छंदवाघा ॥ हंस कहै नृप राज बिचारं। जो पूछौ कारन छत्यारं ॥
देव गिरि जहां नृप भानं। ता पुची ससिवृत्त सुजानं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सो मंगी कम धज्ज सुराजं। तिहि गुन सुनि चहुवानं सुनाजं ॥
छंडे तमि पिम मान सुथानं। बरन वृत्त लीनै चहुवानं ॥ छं० ॥ १६६ ॥
हर सेवा सुमंडय कलेसं। तप आचरन क्रम्म संदेसं ॥
हौं गुन तास हंस भय रूपं। पुछि चिय कारन सुनिय सु भूपं ॥छं०॥१६७॥
दीछी वै अच्छे दृढ़ नेमं। हौं पठयौ सु तुभ्भ प्रति प्रेमं ॥
प्रसन ईस अंबिका समेतं। बुल्यौ राज सैल संकेतं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
चढ़न कहिय राजन सो हेसं। उडि चलौ दच्छिण तुम देसं ॥
सुनत श्रवन चल्यौ नृप राजं। कहि कहि दूत दुजन सिरताजं॥छं०॥१६९॥
भय अनुराग राज ढिल्ली वै। दस सहस्र सज्जी नृप हेवै ॥ छं० ॥१७०॥

राजा का कहना कि जादव राजा के गुणों का वर्णन करो।

गाथा। जंपै दुज सम राजं। तव गुन वंन कीन अपारं ॥
छम गुन किम संभरियं। लगे श्रोतान राग किम जहां ॥ छं० ॥ १७१ ॥

हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना।

दूहा ॥ हंस कहै राजन्न सुनि। इह उनपति अनुराग ॥
श्रवन सुनौ संभरि सु पहु। कहौं वृत्त संलाग ॥ छं० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ देवगिरि नृपभान। सोम वंसी सुनपै नृप ॥
तिन अनंत बल तेज। बहुल है गै पैदल तप ॥
नयर मध्य कोटीस। बसै बानिक्क अनंत लछि ॥
धर्म तप्पनह पार। न कोऊ दास रहै इकु ॥
सा एक लष्प पयदल पुलत। षग्ग जोर [1]घूंनं बहै ॥
जदव नरिंद सब गुन कुसल। धन प्रताप दिन दिन लहै ॥छं० ॥ १७३ ॥

उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन।

तास पुच नारेन। पुचि ससिवृत्ता प्रमानं ॥
दुअ अनंत सूरत्ति। रूप मकरंद सु जानं ॥

(१) मो०—खूनी।

भगिनि भ्रात दुअ प्रीत। पिता माता प्रिय मानं॥
अति उछाह रंग रमै। असन इक ठाम प्रधानं॥
सबरिष्य भई सचहरु दुअ। अति अभूत लच्छिन प्रबल॥
लालित सरूप पिय चंद सम। राजकुंअरि राजै अतुल॥ छं० ॥१७४॥

एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहिन चन्द्रिका कोट में ब्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया।

तिन राजन कै मंच। नाम आनंद चंद भर॥
तिन भगिनी चंद्रिका। व्याह व्याही सु दूरि धरि॥
नैर कोट हिस्सार। तास पिचीय प्रमथ बर॥
अति सु प्रीति नर नारि। सुष्य अनुभवै दोह पर॥
कोइक दिवस भर तार वहि। तुच्छ दोह परलोक गत॥
आनई बहनि फिर अप्प ग्रह। अति सु दुष्प निसि दिन करत॥ छं०॥१७५॥

वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी।

दूहा॥ अति प्रवीन विद्या लहन। गान तान सुभ साज॥
केइक दिन अंतर वहिग। गइ अंते बर राज॥ छं० ॥ १७६ ॥

उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी।

तिन संगह ससिवृत्त सुअ। पठन विद्य सुभ काज॥
देवि कुंवरि अदभुत अवय। रंजित है अति लाज॥ छं० ॥ १७७ ॥

उसी के मुख से आपकी प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है।

कवित्त॥ जब पिचिन चंद्रिका। कहै गुन नित चहवानं॥
जेस पराक्रम राज। तेइ बरने दिन मानं॥
राजकुंअरि जब सुनै। तबै उभरै रोम तन॥
फिरि पुच्छै ससिवृत्त। सदि एकंत मत्त गुन॥

जे जे सु पराक्रम राज किय। सोइ कहै पिचिन समथ॥
स्रोतान राग लग्यौ उअर। तो इत्त लिनौ सुनौ सुकथ॥ छं०॥ १७८॥

यों ही दो वर्ष बीत गए, बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी।

दूहा॥ यों वरष्प दुअ वित्ति गय। भइय वैस बर उंच॥
तब कामन सु कलेव सुर। करे सेव सुचि संच॥ छं०॥ १७९॥

तभी से नित्य शिव की पूजा कर के वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही।

हर सेवा निस प्रति करै[1]। मन वचा क्रम वंध॥
बर चहुआन सुकामना। सेवा ईस सुगंध॥ १८०॥
कवित्त॥ कहै हंस सुनि राज। करौं ब्रंनन सु कह्यो गुर॥
दिवस च्यार प्रजंत। ओर मो सरन लहो पर॥
सेवत नित प्रति ईस। मास पंचह वित्तिय वर॥
एक सुदिन सिव सिवा। वचन संपुट लग्गी कर॥
देवाधि देव सुनि ईस बर। करि सुचित्त कूंअरि सु व्रत॥
पारथ्थ रुंड माली सरस। पर मंगा गवरी करत॥ छं०॥ १८१॥
दूहा॥ इह सुनि दस दिन गए बहि। सुनि रहि वचन सुईश॥
एक सुदिन ससिइत्त ने। किय द्रढ नेम जगीश॥ छं०॥ १८२॥
बर बरिहौं संभरि सु पहु। वियौ पुरुष मुझ ध्रात॥
मिलन कियो हर मास प्रति। भषिवै संनर घात॥ छं०॥ १८३॥

शिव पार्वती का प्रसन्न हो कर सपने में वर देना।

बचन सिवा सिव वाच दिया। पति पावै चहुआन॥
बर प्रमुदिय प्रथमाधि पति। हुअ सुपनंतर मान॥ छं०॥ १८४॥
कै जानै मन अप्पनौ। कै पिचिन कै ईस॥
और शिवा सुनि ईस प्रति। किय अस्तुति बर दीस॥ छं०॥ १८५॥

(१) गो.—करन।

प्रसन्न हो कर शिव पार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द व्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो।

कवित्त ॥ हुअ प्रसंन सिव सिवा। बोलि हूं पठय तुझ्झ प्रति ॥
इह बरनी तुम जोग। चंद जोसना वान इत ॥
ज्यों रुकमिनि हरि देव। प्रीति अति बढ़ै प्रेम भर ॥
इह गुन हंस सरूप। नाम दुजराज भनिय चर[1] ॥
बुल्लिय सु पिता कमधज्ज नर। ब्याहन पठयौ सु गुर दुज ॥
आवै सु भ्रात जैचंद सुत। कमध पुंज ब्याहन सुकज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा।

दूहा ॥ फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुजान ॥
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जंचा। वहां श्रीफल ले प्रोहित को भेजा।

कवित्त ॥ कहै दुज सकल बांनि। अहो ढिल्ली नरेस सुनि ॥
देवगिरी जदव नरेस। रचि बहु भांति व्याह गुनि ॥
अति रचना विधि करिय। तासु गुन कहि न सकों बर ॥
संपेपक दुज कही। सुनि रु राजंन वहै नर ॥
प्रोहित सुहत्थ जदुनाथ लै। पठइय श्रीफल सुदिन धरि ॥
कनवज्ज दिसा इकमास प्रति। चलि[2] राजन गुर मिलि सुजुरि ॥ छं० ॥ १८८ ॥

प्रोहित ने जयचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया।

मिले राज जयचंद। सु गुर प्रोहित्त समत्थं ॥

(१) मो —वर। (२) मो.—चल्लि राजगुर।

पठए जदव सुनाथ। वस्त श्रीफल सुभ सत्थं ॥
इय साकति सजि पंच। सहस इक वस्त्र पटंबर ॥
मुत्ति माल जुरि पंच। अवर जो वस्त व्याह पर॥
इमंग पंच सत लेइ दुज। सुर राजन अग्गै धरिय ॥
ते बस्त अनेकं बिधि सुबर। रंजि राज अप्पन सु जिय॥ छं० ॥ १८९ ॥

टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोड़ा है सो शीघ्र चलिए।

मिलि प्रोहित जैचंद। दियौ श्रीफल मुविंद कर ॥
जे पठई बर वस्त। अग्ग लै धरिय राज बर ॥
सोइ श्रीफल कमधज्ज। दियौ सुइ अवध पुंज नर ॥
अति उछाह माननिय। मिले रस हास परसपर ॥
बोलयौ तब प्रोहित सुबर। अहो राज पंगुरन सुनि ॥
लै चलै बींद ननकरि [1]बिलंब। दिन तुच्छै साहौ सु पुनि॥ छं०॥१९० ॥

प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तयारी और उत्सव करने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ ह्वै प्रसन्न बहु पंगुरै। दियौ हुकुम सुअ बंध ॥
प्रेरि सथ्थ जब अप्प पर। अति पर घर सुअ नंघ ॥ छं० ॥ १९१ ॥
सज्जि सेन चतुरंग नर। देवगिरि कज व्याह ॥
अति अगनित सथ द्रव्य लिय। नर उच्छव करनाह ॥ छं० ॥१९२॥

हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना लेकर चलना विचारा।

छंद पद्धरी ॥ चढि चलिय सब्ब रठ्ठौर सेन। उडि रेंन रथ्थ रुक्किय मुगेन ॥
दस लष्ष सेन सज्जिय कमंध। वारुनिय गंध दै सजि मदंध ॥छं०॥१९३॥
सा अद्ध लष्ष पै पुलिय नैर। हज्जार सात मैगल सु भैर ॥

(१) मो.- विरम ।

दर कूच परे बल बंस [1]बीर। व्याहनह काज उच्छव सु बीर ॥छं०॥१९४॥
कह हंस राज राजन सु बत्त। चढ़ि चलौ कलू रघ्घन सुकत्थ ॥
तुम योग नारि बरनी [2]कुमारि। हूं पठय ईस तुअ दत्त नारि॥छं०॥१९५॥
उन लियौ दत्त तुअ दृढ़ढ नेम। नन करि विरम्म राजन सु एम ॥
इक मास अवधि दुजकहै वत्त। व्याहन सु काज मन करौ [3]रत्त॥छं०॥१९६॥
बर ईस भयौ अरु सिवा बानि। सुख लहौ बहुत हम दुज बषानि ॥
सुनि सुनि श्रवन अनुराग कौन। तन रोम अंग उभ्भारि चौन्ह॥छं०॥१९७॥
दस सहस सेन सजि पास राज। चढ़नैं सुचित्त करि बाज साज ॥छं०॥१९८॥

पृथ्वीराज का शशिवृता से मिलने के लिये संकेतस्थान पूछना।

दूहा॥ कह संभारि बर हंस सुनि। कह जहौं संकेत ॥
कोन थान हम मिलन है। कहन बीच संमेत ॥ छं० ॥१९९॥

ब्राह्मण का संकेतस्थान बतलाना।

गाथा॥ कह यह दुज संकेतं। हो राज्यंद धीर ढिल्लेसं।
तेरसि उज्जल माघे। ब्याहन बरनीय थान हर सिद्धिं ॥छं०॥२००॥

राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा।

दूहा॥ तब राजन फिरि उच्चरै। हो देवस दुजराज ॥
जो संकेत सु हम कहिय। सो अप्पौ चिय काज॥ छं० ॥ २०१ ॥

हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए।

अरिल्ल॥ सो अप्पिय हम नेम सु दृढ़ढं। तुम अवस्य आवो प्रभु गढ़ढं ॥
सेत माघ चयोदसि सा वहि। हर सुकलेव थांन सुति भावहि॥छं०॥२०२॥

इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना।

दूहा॥ इह कहि हंस सु उड़ि गयौ। लग्यौ राज श्रोतान ॥
छिन न हंस धीरज धरत। सुख जीवन दुख प्रान ॥ छं० ॥ २०३ ॥

(१) मो.—धरि। (२) मो.—कुंआरि। (३) मो.—सत्त।

दस हजार सेना सहित पथ्वीराज का तैयारी करना।

दस सहस्र हेंवर चढ़िय। नृप दिल्ली चहुआन॥
हुकम सद्दि साहन कियौ। दै सूरन विलहान॥ छं० ॥ २०४॥

राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना।

छंद भुजंगी॥ दियौ कन्ह चहुआंन मानिक्क बाजी। जिनैं देषतें चित्त की गत्ति लाजी
मुषं मभ्भ पायं कढ़ै वाज राजं। मनो वग्ग भीषं क्षतं कद्दिढ पाजं॥छं०॥२०५॥
दियौ बाजि इंदं बरं जाम देवं। दिपै तेज ऐसैं चिरं पंष एवं॥
धरै पाइ ऐसे इलं मभ्भ जैसे। सुनै जैन भ्रंमं धरै पाइ तैसे॥ छं० ॥ २०६॥
चढ्यौ राव कैमास चिन्तं तुरंगी। रहै तेज पासं उछल्लंत अंगी॥
[1]चमक्कंत [2]नालं विसालं खुरंगी। मनो बीज छब्बी कि आभा अनंगी छं०॥२०७
उड़ै झार झारं पयं नाल झारी। समं बूंद धावै मनौं चार तारी॥
चढ़े राजहंसं सु चामंड जोटं। मनो तेज बंधी मुनी बाइ मोटं॥छं० ॥२०८॥
डुलै [4]कंन नांहीं सिलौका सुग्रीवं। मनों जोति बंधी [5]सुनूवात दीवं॥
चढ्यौ राज षीची प्रसंगं पहूपा। उड़ै वास ज्यों वाय [6]वग्गै अनूपा॥छं० २०९॥
बंध चौंर चित्तं चमक्कंत चाहं। हरद्वार छुट्टै कि गंगा प्रवाहं॥
चढ्यौ राज पट्टं अजानंत बाहं। कही कव्विराजं उपम्माति चाहं॥ छं० ॥२१०॥
दियै [7]बीच तारी कोई नाहि पुज्जै। बलं ताहि दिप्पै सरित्ता अमुझै॥
दियौ मृग्गराजं चढ्यौ देव राजी। उड़ै पंखि पाजी रही पच्छ लाजी॥छं०॥२११॥
चढ्यौ निड्डुरं राइ अंगं अभंगं। छुटै जानि तारान के व्योम मग्गं॥
चढ्यौ हाहुलौ राइ जंबू नरिंदं। बढ्यौ मांन ज्यों तज कम्मान चंदं॥छं०॥२१२॥
चढ्यौ लंगरी राव लंगा सबीरं। किधौं वाय बढ्यौ बुअं जानि धीरं॥
चढ्यौ राज गोइंद आहुट्ठ राजं। किधौं वाय बुंदं स छुट्टीय साजं॥ छं० ॥२१३॥
चढ्यो राव लष्षं सु लष्षं पवारं। भ्रमें अंग ऐसे उपम्मा विचारं॥
किधौं अग्गि दंडं ब्रजं बाल फेरैं। किधौं भोर हथ्थं किधौं चक्र हरैं॥छं०॥२१४॥

(१) मो.--चमक्कति। (२) मो.--ताल।
(३) ए.--जोतं। (४) ए.--कैन। (५) ए.--सुनि बात।
(६) मो.--वेगै। (७) मो.--वाच।

किधौं राति बोहिथ्थ भ्रमि भोर नारं। कही चंद कवी उपंमाति चारं।
चढ्यौ चंद पुंडीर राजीव नामं। तिनं [1]ओपमा चंद देषी बिरामं॥छं०॥२१५॥
जिनें गत्ति जौती सयन्नं पगारं। चली अंघि के पंघ चित्तं बधारं॥
चढ्यौ अत्त ताई उतंगं तुरंगा। मनों बीज की गत्ति आभा अनंगा॥छं०॥२१६॥
चढ्यौ राव रामं [2]रघूवंस बीरं। गतिं सूर जित्ती मृगं चंद भीरं॥
चढ्यौ दाहिमं देव नर सिंघ कैसे। मनों चित्त की अर्थ की गत्ति जैसे॥छं०॥२१७॥
चढ्यौ भोज राजं पहारं चिनैतं। फुटै मद्द तेजं अवाजं [3]चितेतं॥
चढ्यौ बीर जोड्डं कनक्कं कुमारं। चली कृत्य पूरन्न आचार पारं॥छं०॥२१८॥
चढ्यौ राव पज्जून कूरंभ बीरं। बढ़े लोह अग्गं धनं जैतपूरं॥
चढ्यौ सामलौ सूर सारंग ताजी। गही होड़ बंधी वयं वाम पाजी॥छं०॥२१९॥
चढ्यौ अल्हनं बीर बंधव्व पानं। चढ्यौ दान ज्यों ग्रहंनं जुद्ध वानं॥
चढ्यौ लष्प लष्पी सलष्पं बघेला। बढ्यौ नेत ज्यों देह देपै सु हेला॥छं०॥२२०॥
चढ़े सब्ब सामंत छल बलत बीरं। मनों भान छुट्टी [4]किरन्नी कि तीरं॥
चढ्यौ बाज राजं प्रथीराज राजं। तबै पष्परयो बाज साकत्ति साजं॥छं०॥२२१॥
उड़ैं सूर ज्यों हंस तुट्टै कमंधं। बरं ओपमा चंद जंपी कविंदं॥
द्रुमं ज्यों मरोरै [5]शिरं स्वामि हेतं। मयूरं कला बाज रची बंधि नेतं॥छं०॥२२२॥
चढ़े सब्ब सामंत सामंत बीरं। तबै जग्गियं जानि जोगाधिधीरं॥
जगी जोग माया सु जग्गीय थानं। प्रलीनं प्रलै ज्यों प्रलीनं प्रमानं॥छं०॥२२३॥
जगें बीर बीराधि डोरूं बजावैं। नचै नद्द नंदी चिघाई चिघावैं॥छं०॥२२४॥

माघ वदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज का यात्रा करना।

दूहा॥ [6]आगम निगम जांनि कै। चलि न्रप [7]सुक्रंवार॥
माह वद्दि पंचमि दिवस। चढ़ि चलिये तुर तार॥ छं०॥ २२५॥

चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना।

छंद चोटक॥ कवि चंद सु वंनन राज करं। सोइ चोटक छंद प्रमान धरं॥

(१) मो.-उप्पमा। (२) मो.--रघोवस।
(३) मो.--त्रिनेतं। (४) मो.—किरन्नं।
(५) ए.—सिरं। (६) ए.--अगम निरागम।

जिहि च्यार परे सगना सगनं। सुभ अच्छिर लाइ तजै अगनं॥छं०॥२२६॥
विवहार धरै बरनं सु बरं। पढ़ि पिंगल बाहन केन हरं॥
वर चोजन चारु सुरंग इलं। तहां भौर न मोर सुरंग हुलं॥छं०॥२२७॥
गज उप्पर ढाल ढलक्कि तरं। सुकहों तहां केलि [1]अचिज्ज बरं॥
तहां पल्लव [2]लल्लित रत्त बचं। तहां जे धन दंतिय पंति रचं॥छं०॥२२८॥
झमकैं बर नंग मयूष कमी। निकसी तहां केतक सी बिकसी॥
सु चलें बर मंद सुगंध प्रकार। बढ़ी दिसि दस्स सु उज्जल मार॥छं०॥२२९॥
बजै महु रंग सु गंधन भ्रंग। बजे सहनाइ न फेरि [3]उपंग॥
हल बर लत्त पवन्न झकोर। घरघ्घर होहिं पिलप्पित जोर॥छं०॥२३०॥
बुलै कल कंठ सु कंठह सद्द। तहां चढ़ कब्बि वसीठ उवद्द॥
सकेस कुसंभ रु अंकुस पानि। हने हर काम असो [4]गज जानि॥छं०॥२३१॥
अतसी बर पुप्फ सु वाढ़हि भृंग। बजै गज पांनि सु इंदुब रंग॥
लता ललिताह हलावन ढाल। उतह जम लग्गय रूपतिताल॥छं०॥२३२॥
विकासित केसर [5]कुंकुम कांम। सरोज [6]सुरंभ अनूपम नांम॥
उहां मिटि ताल तरंगिनि कांम। उहां चलितेनिय ना तिहि ठांम॥छं०॥२३३॥
उहां बरहा जनु उप्परि केल। किने तब ढीठ हिया छबि मेल॥
हले जनु नेजे षजूर बसंत। ढली बन राह सुढालह मंत॥छं०॥२३४॥
तजी बर बाल सुरंग सुभेस। चल्यौ प्रथिराज सु दष्यिन देस॥
विरदै चहु विप्र कहै कविचद। सही चहुआन प्रथी पर इंद॥छं०॥२३५॥

दूहा॥ चढ़ढि चलिय प्रथिराज बर। देवग्गिरिधर राज।
तब सुकन्न बरदाय बर। पुच्छिय बिगत सुकाज॥ छं० ॥ २३६ ॥
कहत कन्न बरदाय बर। अहो राज सुभ मांनि॥
कहो पयांन सज्यौ कहां। सोहम कहौं प्रमांन॥ छं० ॥ २३७ ॥

चलने के सयम राजा को भय दिलानेवाले सकुनों का होना।

(१) मो.--अचाज्जि। (२) मो--लालित।
(३) ए.--उतंग। (४) मो.--गिन।
(५) ए.--कुसुम। (६) मो.--सरूप।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज । सगुन भै भीत उपन्नौ ॥
स्यांम अंग तन छिद्र । कलस संमुहं सपन्नौ ॥
रत्त वस्त्र आरुह्य । रत्त तिलकावलि छुट्टिय ॥
मुकत माल छुट्टियं । केस छुट्टिय कस तुट्टिय ॥
लुट्टिय अनंग भय भीत गति । मन अलुभ निद्रा [1]असति ॥
विभ्भाइ भाइ उनमोद पति । मंद मंद सक्रति हसति ॥छं०॥२३८॥

राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना।

अरिल्ल ॥ सो भय भीत देषि कवि पुच्छिय । जंपि कहौ मति मोहि सु अच्छिय ॥
तुम सब जांन त्रिमान प्रमानं । जंपि कहौ कविराज सुजानं ॥छं०॥२३९॥

चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई भारी झगड़ा होगा या ग्रहविच्छेद।

दूहा ॥ पाछे बीर सगुन्न भय । ते कहंत कविचंद ॥
कै दंदग्गनय ऊपजै । कै नवीन ग्रह दंद ॥ छं० ॥ २४० ॥

चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व वैर का स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानों बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है।

कवित्त ॥ सोत डोलि कविचंद । चित्त अंदेह उपन्नौ ॥
पुव्व बैर चहुआन । बैर कमधज्ज दिपन्नौ ॥
सवर जोर संग्राम । निबर अंगम्यौ न जाइय ॥
को जम हत्थ पसारे । लेह [2]ग्रह अप्प बुलाइय ।
[3]मंडाय पेट डंकिन सरसि । कोन बांह सायर तिरै ॥
[4]अपसगुन जानि चहुआन चलि । दै विधान त्रि मित करै ॥छं०॥२४१॥

वय, पराक्रम, राज और काम मद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला।

(१) मो.-अमित (२) मो.-सह। (३) ए. कृ. को.-मैडाय। (४) ए. कृ. को.-असुभ।

कवित्त ॥ बेस मद्द बल मद्द । और बंध्यौ सुरतानी ॥
राज मद्द उनमद्द । काम मद्दह परिमानी ॥
अरु अवनौ औतांन । तौन बंध्यौ चहुआनं ॥
दल बद्दल पावस्स । चल्यौ दछिन धर वानं ॥
[1]छतीस कुली बर वंस विय । चढ़ि प्रथिराज नरिंद चलि ॥
उपवन्न बंब बज्जी बिषम । खान थान द्रिगपाल हलि ॥छं०॥२४२॥

पृथ्वीराज से पहिले जैचन्द का देवगिरि पहुंचना।

दूहा ॥ इन अग्गैं कमधज्ज लै । आइ सँपतौ थान ॥
माघ नवमि चंबक बजै । चहुआना परिमान ॥ छं० ॥ २४३ ॥

जैचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन। जैचन्द का आना सुन शशिवृता का दुखी होना।

कवित्त ॥ [2]एक लष्य दस अग्ग । सेन सज्जे कमधज्जं ॥
बीय सहस बारुन्न । सत्त हज्जार फवज्जं ॥
अद्ध लष्य पैदल्ल । अद्ध साइक वहंतं ॥
सजि समूह चतुरंग । दिसा दछिन [3]परजंतं ॥
सुनि अवन कुंअरि शशिवृत्त लिय । सुनि अवाज बर बीर घन ।
चहुआन वृत्त लीनी अधम । प्रान हीन कद्दढन सुमन ॥छं०॥२४४॥

शशिवृता मन ही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना।

दूहा ॥ मिलि पूजै बर बौर कौ । करी भगति घन भाइ ॥
बाला प्रान [4]सुकद्दढनह । अंतर धम्म न जाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सखी का समझाना कि व्यर्थ प्राण न दे, देख ईश्वर क्या करता है। ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता। सखियों

(१) मो.-छत्रीस। (२) ए.कृ. को.-एह।
(३) ए. कृ. को.-फरजतं। (४) मो.-फद्दढतँह।

का श्रीरामचन्द्र, पाण्डव आदि के प्राचीन इतिहास सुनाकर धीरज धराना।

[1]कहै सषी समझाइ कर। पुत्र कथा कहुं मंडि॥
घरी अद्ध जो सुनिहि तुअ। प्रान बाल नन छंडि॥ छं० ॥ २४६ ॥
छंद पद्धरी॥ मिलि बाल ताहि रचि कहै बत्त। संग्रहन भवन क्यों मिटै पत्त॥
दैवान बत्त जानै न कोइ। लिष्पे जु अंक मिटृय न सोइ॥छं०२४७॥
बल बीर जुद्ध पंडव नरेश। वन ग्रह्यौ राज मुक्क्यौ सुदेश॥
[2]जिप्पनह सत्र दृगपाल जोग। संध्यो सुजोग तजि राज भोग॥छं०॥२४८॥
बलि राइ जग्य आरंभ सत्य। जित्तनह इंद्र आरंभ पत्त॥
मुक्किय सुथान तिन मान षंडि। सेवह सुदेव पाताल मंडि॥छं०॥२४९॥
कट्टन कलंक ससि जग्य कीन। का कुष्ट अंग छिन मान हीन॥
नघु राइ कौन राज सु अनूप। का कुष्ट काल संहर्‌यौ क्रूप॥छं०॥२५०॥
श्रीराम हथ्थ पकर्‌यौ प्रवीन। आरन्य बहुत दुष सीय कीन॥
गुरुदेव चिया तारा प्रमान। झकझोरि परी देवन समान॥छं०॥२५१॥
सिय लई निशाचर रूप चीन्ह। मिलि देव जुद्ध आरंभ कीन॥
आतम्म घात [3]मंडो विशाल। पावै न सुष्य वं भ्रमें काल॥छं०॥२५२॥
तिय मात तात बंधह सु देहि। बाला विचिच ते [4]वृत्त लेहि॥
कुलजाहि भ्रंम ग्रह राजनीति। जे मँडहि बाल गुरजनन जीति॥छं०॥२५३॥
ससिवृत्त जु वत्तिय मत्ति मानि। हित काज मत्ति हम दै प्रमान॥
पंषी न पच्छि को लगै धाइ। आवै न वृत्त पै जंम जाइ॥छं०॥२५४॥
आवै न मेह ग्रह लगै अग्गि। पावै न जीव को दान मग्गि॥
मानै न विनति तिन मंत सुझ्झ। जनु कान हीन गुर कही गुझ्झ॥२५५॥
मंनै न बाल उर मत्त मान। चिंत्यौ सुतात कढ्ढन परान॥छं०॥२५६॥
चौपाई॥ मिलि मिलि बाल रचावैं बाले। तन मन मनै न चित व्रत साले॥
बहुत करे सिंगार सार। मनो मृतक नव रंग न धारे॥छं०॥ २५७॥
छंद पद्धरी॥ राजन अनक पुत्री त्ति व्याह। ससिवृत्त देव कन्या सिवाह॥

(१) मो.-कही। (२) मो.-जिप्पतह।
(३) मो -मंडै। (४) ए. कृ. को.-कृद्द।

चहुआन चिंत जुग्गिन [1]पुरेस। आइत्त बीर जिन करहु भेस॥ छं०॥२५८॥
निब्बरै बाद जो करौ मंच। साध्रम्म वीर कद्दै [2]जु कंत॥छं०॥२५९॥

राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिवृता के प्रेम का समाचार जानकर हंमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा।

दूहा॥ कंति कंति प्रति बद्दई। चढ़ै चाइ चहुआन॥
मो पुच्छै प्रति तान जो। बीर चंद दै दान॥ छं०॥ २६०॥

हंमीर संमीर का मत देना कि वीरचन्द को कन्यादान दीजिए।

गाथा॥ बीरं चंद सुदानं। पानं विधाय नित्तयौ गुरयं॥
बुल्लै नृप हंम्मीरं। साइ संमीरं साइ मंगायं॥ छं॥ २६१॥
दूहा॥ ज हंमीर संमीर गति। समुह सु दुज्जन भेव॥
जिन बड़वानल कुप्पयौ। सार मत्ति प्रति सेव॥ छं०॥२६२॥
सार भार संसार कौ। नव निधि नव प्रति पान॥
व्याह वीर शशिवृत्त कौं। अप दीजैं प्रति दान॥ छं०॥ २६३॥

कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुपचाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा।

बाल प्रान कद्दत सुपुनि। सगुन एक मन मान॥
बढि अवाज चहुआन की। अली सुन्यौ अप कान॥ छं०॥ २६४॥
यों सु सुनिय न्रप भांन नैं। पुचि प्रलय व्रत कीन॥
चर [3]पिष्पिय चहुआन पै। जदव [4]मोकल दीन॥ छं०॥ २६५॥

राजा ने पत्र में लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिवृता मिलेगी।

मुक्काए मति वंतिनी। नृप कग्गद दै हथ्थ॥
पूजा मिसि बाला सुभर। संभु थान मिलि तथ्थ॥ छं०॥ २६६॥

(१) प. कृ. को.- परेस। (२) मो.-सु।
(३) प. कृ. को.-छिप्पाय। (४) मो.-कलि।

इधर पृथ्वीराज के सरदारों का उत्साहित होना।

कवित्त ॥ हय गय दल चतुरंग। कंक मंड्यौति कन्ह सिर ॥
राजहव वग्गरी। रांम रघुवंस जुद्ध जुर ॥
निडुर रा रठौर। सेन सज्जै अत रज्जै ॥
एक एक संपज्ज। एक एकन गुन लज्जै ॥
जुग्गिनि डहकि बंबरि लसथ। जिम जिम शंकर सिर [1]धुनिय ॥
अत ताइ उत उत्तंग बर। बावारो सारह [2]सुनिय ॥ छं० ॥ २६७ ॥

कवि कहता है गन्धर्व व्याह शूरवीर ही करते हैं।

गाथा ॥ सार प्रहारति भेवो। देवो देवत्त जुद्धयौ बलयं
गंधव्वी प्रति ब्याहं। सा ब्याहं सूर कलयामं [3] ॥ छं० ॥ २६८ ॥

पृथ्वीराज का आना सुनकर मन ही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीरचन्द का सशंकित होना।

कवित्त ॥ सन [4]सद्दि संमुहिय। भान आवाज राज सुनि ॥
प्रान लद्दि जो मद्दि। लाज लभ्भी जु सूर धुनि ॥
प्रिय विरहिनि रिधि रंक। कै ध्यांन लभ्भै जोगिंदं ॥
बलह काम कलहंत। कि कह विश्वामत इंदं ॥
संभरिय कान संभरि नृपति। वीर चंद आगम विषम ॥
निह काल काल भंजन गढ़ै। बढ़ै सार सारह विभ्रम ॥छं०॥२६९॥
दूहा ॥ सार धार पूजै नहै। पिति सामंत न नाथ ॥
आवृत बीर क्यों पूजई। देव देवतह साथ ॥ छं० ॥ २७० ॥
गाथा ॥ दुअ वंस अंस सारसं। बज्जं बाह बलयो बलयं ॥
बज्जं दृष्टिति रिष्टं। सानिष्टं अष्टयो किलयं ॥ छं० ॥ २७१ ॥
अरिल्ल ॥ बर बरिष्ट बर लोभ प्रकार। लष्प लष्प सा मंतह सार ॥
तिन बर बर अंगम प्रति जानिय। सो देवत देवत्तह मानिय ॥छं०॥२७२॥
कवित्त ॥ अति प्रचंड बलवंड। बैर [5]बाहरू तत्ताइय।

(१) मो.-धुनय। (२) मो.-सुनय। (३) कलयामि। (४) मो.-मध्य।
(८) मो.-बाहरू तनाइय।

माया हीन मसंद। दंद दारुन डर नाइय॥
दल दुंदन सिंधु रहि। बाहु दंतन उप्पारहि॥
एक एक संग्रहै। एक शस्त्र करि डारहि॥
दैवत्त वाह दैवत्त भर। दवग्गिरि संम्हौ चलिय॥
बर बीर धीर साधन सकल। अकल महूरति मति कलिय॥छं०॥२७३॥

दूहा॥ अकल वीर रस अफल भुज। कलि न जाहि सामंत॥
भीम भयानक बल सु दृत। जे भंजै गज दंत॥ छं०॥२७४॥
[1]लभ्भै जस लिप्पीय बर। दैव जोग नह[2] हथ्थ॥
पुब्ब दई प्रथिराज कौं। सोइ प्रन मन समरथ्थ॥ छं०॥ २७५॥
चाहुआन कै कृत सयन। मरन सरन प्रथिराज॥
उभै सिंघ दुअ बीच पल। उभै सिंघ सिर ताज॥ छं०॥२७६॥

गाथा॥ घटिका उभय सु देवो। रहियं निकट राजनं ग्रामं॥
जानिज्जै नृप नैरं। दिष्प न काजैव सोभियं नैनं॥ छं०॥२७७॥

दूहा॥ रंध्र गवष्पनि नैर मधि। जारि न चिंत प्रमान॥
मानहु नृप प्रथिराज कौ। रंध्र नैन [3]प्रत प्रान॥ छं० २७८॥

पृथ्वीराज का नगर में होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना। शशिव्रता का प्रसन्न होना।

कवित्त॥ दुहूं पास नृप नयर। राज दिष्पै प्रति राजं॥
मनों हथ्थ बर नयर। राज संमुह प्रति साजं॥
कोट कठिन मेखल सु। कटि दिग पलक उघारिय॥
राज कित्ति संभरन। गोष श्रवनन संभारिय॥
किंकिनि सुपाइ घुंघर सु गज। राज निसान सबद प्रति॥
चहुआन राव आगम सुव्रत। कमल हीय बद्दिय मुरति॥छं०॥२७९॥

राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुनकर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ।

(१) मो. लभै सुजस लिक्खंत बर (२) मो.-नन।
(३) मो.--तजि।

दूहा ॥ काम कलह रत बढ्ढि प्रति। सुनिय भान नृप कान ॥
आनंदह दुष उप्पज्यौ। मरन सु निश्चय मान ॥ छं २८० ॥
श्लोक ॥ मंगलस्य सदा व्याहं। अव्याहं सु मंगलं ॥
ब्रह्मा चकितं समो दृष्टे। [1]जेक कंज सु कंजभिः ॥ छं० २८१ ॥

पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना।

कवित्त ॥ फिरिग पंति चिहु पास। सूर उभ्भौ चाव हिसि ॥
अतित जुद्ध आवद्ध। मत्त[2] बरषंत बीर असि ॥
और व्याह मंगलह। व्याह मंगल अधिकारिय ॥
परि पिशाच दानव। सु बुधि मग्गह विच्चारिय ॥
नन करहु तात दुष पुत्त कौ। घर लौनौ जम सट्टकैं ॥
प्रथिराज राज राजन बलिय। को पुज्जै रन बट्टिकैं॥ छं० ॥ २८२ ॥
दूहा ॥ को पुज्जै बट्टत [3]सुरन। बयन सयन प्रथिराज ॥
अट्टत जित्ति जित्तिय सयल। [4]को मंडै कृत काज ॥ छं० ॥ २८३ ॥
गाथा ॥ को मंडै क्रत काजं। साजं जुाइय सूर योवनं ॥
तारिज्जैं सजि राजं। बंकिम भूमायं विषमयं होई ॥ छं० ॥ २८४ ॥

देवालय में शिव पूजा के लिये शशिवृता का जाना। पृथ्वीराज का वहां पहुंचना।

देवालय भगवती। पूजैवं पूजयो बालं ॥
सुबर पुछ्यौ प्रथिराजं। कुज संसा बीरयो हथ्थं ॥ छं० ॥ २८५ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ विषम ठौर बंकम बिषम। कल [5]सोभित वृत कंद ॥
जो प्रथिराजह अंग में। मनों प्रथी पुर इंद ॥ छं० ॥ २८६ ॥
मनों राज पृथ्वी पुरह। धनि सुध्रम्म लवलेश ॥
मानहु बीर नरिंद कौ। रति आयौ अविशेश ॥ २८७ ॥

---

(१) मो.-कंजे कंज सुकं कजसि। (२) ए. कृ. को.--बरषन्न।
(३) ए. कृ. को.-नर। (४) मो.-मंडै को। (५) मो.-सोभत।

सखी का शशिव्रता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती थी वह आ गया, देख।

यों करंत [1]दुत्तिय बियौ। कथा श्रवन सुनि मंत॥
जाकौ तें पतिव्रत्त [2]लिय। सो आयौ अलि कंत॥ छं०॥ २८८॥

शशिव्रता का आँख उठाकर देखना। दोनों की आँखे मिलना।

श्रवन नयन का मेल कै। भय चंचल चल चित्त॥
[1]श्रोताने दिष्टांन अरु। मिलि पुच्छै [3]दोइ मित्त॥ छं०॥ २८९॥

मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई।

चंद्रायना॥ कर्न प्रयंत कटाछ सुरंग विराजही।
कछु पुच्छन कों जाहिपै पुच्छत लाजही॥
नेंन सैन में बात सबनन सों कहै॥
काम किधों प्रथिराज भेद करिना लहै॥ छं०॥ २९०॥

नैन श्रवण का संवाद।

दूहा॥ नेंन श्रवन्नन पूछई। तुम जानें वह भंत॥
मेरे जीय अंदेस है। कही न मैं पिय जंत॥ छं०॥ २९१॥
श्रवनन सन नेंना कही। [4]तुम जानौ चहुआन॥
काम नृपति कौ रूप धारे। आवत है इन थान॥ छं०॥ २९२॥

हंस ने पहुँचकर शशिव्रता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय मे तुझ से मिलने आ गया।

ताम हंस आयौ समपि। कह्यो अहो शशिव्रत्त॥
चाहुआन आयौ प्रछन। मिलन यांन हर मित्त॥ छं०॥ २९३॥
कवित्त॥ [5]घरि गांम जदव नरिंद। उभ्भे चिहु पासं॥

(१) मो.-दुद्दिय। (२) मो.-लियौ।
(३) मो.-दोय। (४) ए. कृ.--जिन। (५) ए.-घोरि

पल नंषिय रंभा सु । करन आरंभ प्रवासं ॥
एक एक गुन करहि । सब्ब फूले सत पचं ॥
तिन मध्यह शशिवृत्त । भई कम्मोदनि मंचं ॥
[1]पित पुच्छि पुच्छि परिवार सब । पुच्छि बंध रज्जन सकल ॥
आवृत्त तात अग्या सुग्रहि । भईय बाल बुध्या विकल ॥ छं० ॥ २९४ ॥
दूहा ॥ बिकल बाल जहं सकल हुअ । बुद्धि विकल प्रति साज ॥
[2]भान वचन सच्चै सुकरि । जिन अप्पी प्रथिराज ॥ छं० ॥ २९५ ॥
गाथा ॥ बीरं चंद सुव्याहं । सो व्याहं जोगिनीपुरयं ॥
संभरि क्रन शशिवृतं । अगम बीराइमं जनंत तयौ ॥ छं० ॥ २९६ ॥

माता पिता की आज्ञा ले शशिवृता का देवालय में जाना।

कवित्त ॥ पुच्छि मात पित पुच्छि । पुच्छि परिवार ग्रेह सब ॥
में वृत लियौ निवड्ड । गवरि पुज्जनं बाल जब ॥
तिन थानक सब देव । नौति आरंभ व्रत लीनौ ॥
तव प्रसाद उप्पनौ । मोहि इच्छा व्रत दीनौ ॥
तिन काल व्रत्त लीनौ सुमैं । गवरि प्रसाद सु पुज्ज फल ॥
बारंज बात तुअ मोह हुअ । कहै और अब लहि [3]अफल ॥ छं० ॥ २९७ ॥
दूहा ॥ दुष देवल कौ छंडनह । उर सिंचन अंकूर ॥
दीह काल बल वीचि बदि । लिय समान संपूर ॥ छं० ॥ २९८ ॥

शशिवृता के रूप का वर्णन।

बाला बेनी छोरि करि । छुट्टे चिहर सुभाइ ॥
कनक थंभ तें जतरी । उरग सुता दरसाइ ॥ छं० ॥ २९९ ॥
कवित्त ॥ तजि भूखन बर बाल । एक आचिज्ज उपन्नौ ॥
लता हेम पर चंद । उभै षंजन ढिग चिन्नौ ॥
श्रीफल उरज विसाल । बाववर भ्रंग सुपत्तौ ॥
सुकि सुत रंग अरन्नि । करी भग्गावल वत्तौ ॥
सोभंत उरगपति भुअ शरन । हंस मुत्ति चर [4]बर करी ॥
सुध काज चढ़ै पप्पील सुत । काम पत्तिनी दुख डरी ॥ छं० ॥ ३०० ॥

(१) मो.-पति। (२) मो.-तान। (३) मो.-नवल। (४) मो.-चर।

दस दासियों के साथ शशिवृता का शिवालय में आना।

दूहा ॥ ते दासी दस बाल ढिग । तिर बरने कवि चंद ॥
तिन में बाल सुसोभियै । मनों प्रथीपुर इंद ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

शशिवृता का रूप वर्णन।

छंद चोटक ॥ मय मंजन मंडित बाल तनं । घनसार सुगंध सुघोरि घनं ॥
नव लोइन अंजित मंजि चली । कि मनो कस कुंदन षंभ हली ॥ छं० ॥ ३०२ ॥
सुभ वस्त्र सुअंग सुरंगनसी । सुहली मनु साष मदन्न कसी ॥
जरि जेहरि पाइ जराइ जरी । सजि भूषन नभ्भ मनौ उतरी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥
सिगरी लट यों बिथरी बिगसें । शशि के मुख तें अहि सें निकसैं ॥
रंग रत्त उवट्टन उज्जल के । तिन में कछु सेत सुधा चलि के ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
नव राजियरोम बिराज इसी । जमना पर गंग सरस्वति सी ॥
परि पान सु कुंकम मज्जन कै । नव नीरज अंजन नैननि कै ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ छुटि म्रग मद कै कांम छुटि । छुटि सुगंध की बास ॥
तुंग मनों दो तन दियौ । कंचन षंभ प्रकास ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

कुंडलिया ॥ धर उप्पर कुच कनि परी । राजस तामस रंग ॥
तीजौ तिहि सत काम मिलि । सो ओपम कवि अंग ॥
सो ओपम कवि अंग । मदिन मिलि काम पतंगी ॥
चढ़त घरं संमूह । करी भइ फेरि पतंगी ॥
* बरं सिर दार बिमार । सेंभु चहुआन नाह नर ॥
गंग यमुन भारत्थ । हत्थ जोरंत सु अद्धर ॥ छं० ॥ ३०७ ॥

दूहा ॥ तिमिर बीर गवनं कुवट । चिगुन तेज रवि चास ॥
चवनित विक्रम परिस कौ । [1]काम ज्वाल बल ह्रास ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कुंडलिया ॥ करि मज्जन सज्जन सुक्रम । आभूषन न समान ॥
केहं काके कोहि दिसि । सजि सषि नैन कमान ॥
सजि सषि नैन कमान । केश वागुरि विस्तारिय ॥

---

* छंद ३०७ के दोनों अंतिम पद अशुद्ध हैं। पाठ चारों प्रतियों में समान है।

(१) मो.-दूल।

हावभाव कटाच्छ । ठुंकि घुट्टी दिय भारिय ॥
बेठि नैन न्रप मूल । पेम [1]देषन गह सज्जन ॥
मन मृग पिय क्षत काज । ताकि बंधन किय मज्जन ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

छंद नाराच ॥ सुगंध केस पासयं । सुलग्गि मुत्ति छंडियं ॥
अनेक पुष्प बीचि गुंथि । भासिता चिषंडियं ॥
मनों सनाग पुष्फ जाति । तीन पंथि मंडियं ॥
दुती कि नाग चंदनं । चढ़ंत दुज्ज पंडियं ॥ छं० ॥ ३१० ॥
सिंदूर मध्य गुच्छता । म्रगंमदं विराजयं ॥
मनो कि सूर उग्गतें । [2]गहे सु पुच्च लाजयं ॥
सु तुच्छ सुच्छ पाट आट । पेम वाट सोभियं ॥
मनो कि चदं राह वान । बे प्रमान लोभयं ॥ छं० ॥ ३११ ॥
कनक्क काम कुंडिलं । हलंत तेज उभ्भरे ॥
ससी सहाइ मान भाइ । सज्जि सूर दो करे ॥
दुती उपम्म बिंद की । किरन्न चंद दिट्ठयं ॥
मनों कि सुर इंद गोदि । अप्प आनि विट्ठयं ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
भुवन्न बंक संक जूअ । नैन म्रग जूवयं ॥
जरइता चपल्ल गत्ति । [3]अच्छ आनि जवयं ॥
कटाक्ष नैन बंक संक । चित्त मान बंकयं ॥
सुछंडि वै सु कुंचितं । अवन्न बान नंषयं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥
सुगंधता अनेक भांति । चीर चारु मंडियं ॥
सु केहरी कटिं प्रमान । बीच बंधि छंडियं ॥
सुरंग [4]अंग कंचुकी । सुभंत गात ता जरी ॥
बनाइ काम पंच बान । ओट जोट लै धरी ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
सुरंग [5]माल लाल बाल । ता विसाल छंडयं ॥
सु पुब्ब बैर जानि काम । अग्गि संभ मंडयं ॥
[6]दुती उपम्म मुत्ति माल । यों विसाल ता कही ॥

(१) मो.-पेदन । (२) मो.-गहंत रहे लाजयं । (३) ए. कृ. को.-अप्प ।
(४) ए. कृ को.-रंग । (५) मो.-लाल माल (६) ए.-उदी

जु भारथी सु [1]गंग लै। सुमेर शृंग तें बही ॥ छं० ॥ ३१५ ॥
जराइ चौकि स्याम पाट। रत्ति पत्ति तें घुली ॥
सुरंग तिथ्थ थान मंडि। ईस शीश तें चली ॥
सुवर्न छुद्रघंटिकादि। षोडसं बधानयं ॥
सु मुत्ति तात मोर तन्न। [2]गोदरं बधानयं ॥ छं० ॥ ३१६ ॥
सुगंध गोप चिन्ह मंडि। पीत रत्त जावकं ॥
अभूषनं धरंत चित्त। मित्त हित्त शावकं ॥
बनाइ कें चौ ँडोल लोल। चढ़्ढिता सु सुंदरी ॥
सुदोषिता सुरंग थान। अस्तु तास उच्चरी ॥ छं ॥ ३१७ ॥

शशिवृता का चंडोल पर चढ़ कर देवी की पूजा को आना।

दूहा ॥ सजि शृंगार शशिवृत्त तन। चढ़ि चौँडोल सुरंग ॥
पूजन कौं बर अंबिका। आई बाल सु अंग ॥ छं० ॥ ३१८ ॥

तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेरकर राजा भानु की सेना का चलना।

सज्जि सेन जद्दव नृपति। दसत तीन चौंडोल ॥
लकरि लाल से पंच अग। दस दिसि [3]लष्पन लोल ॥ छं० ॥ ३१९ ॥

सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना। राजा की सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ अरुनोदय उद्यमह। सुच्छि लिन्नै सु बंध भर ॥
उभय सहस बाजित्त। ढोल चंबकौ सुमत गुर ॥
अड्ड सहस नप्फरि। सहस सहनाइ सुरंगी ॥
सुवर बीर पूजा प्रमांन। कीनी मति चंगी ॥
बिन पुंज संग सेना सकल। अकल अपूरब बत्त बर ॥
चर सकल विकल अलि कुलन कौं। सुचित मित्त इक्कह सु थिर। छं० ॥ ३२० ॥

(१) मो.-मंग (२) ए.-सादरं
(३) मा.-दिप्पन।

गाथा ॥ गुज्जर वै गुज्जर धनी। सथ्थं सेनाह सज्जयौ बीरं ॥
जांनैनि सबर अद्धं। उग्गं वा तिमिर तप हरनं ॥ छं० ॥ ३२१ ॥

मन्दिर के पास पहुंचकर शशिवृता का पैदल चलना।

हरनंत पति तुरंगं। साहस मंचाय गिद्दयो रनयं ॥
देवालयं पासं। सा पासं बालयं चालं ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

शशिवृता के उस समय की शोभा का वर्णन।

छंद नाराच ॥ चली अली घनं बनं। सुभंत सथ्थ संघनं ॥
विहंग भंगयो पुरं। चलंत सोभ नोपुरं ॥ छं० ॥ ३२३ ॥
अलीन जुथ्थ आवरं। मनो विहंग सावरं ॥
चुवंत पत्त रत्त जा। उवंत जानि अंबजा ॥ ३२४ ॥
कलिंद सोभ केसयं। अनंग अंग लोभयं ॥
उठंत कुंभ कुच्चयं। उपंम कब्बि सुच्चयं ॥ छं० ॥ ३२५ ॥
मनों जरंत बाल कौ। धरी सु आनि लालकौ ॥
सुभंत रोमराजयं। [1]प्रपील पंति छाजयं ॥ छं० ॥ ३२६ ॥
मनोज कूप नाभिका। चलंत लोभ आलिका ॥
सुरंग सोभ पिंडुरी। धरादि काम पिंडुरी ॥ छं० ॥ ३२७ ॥
नितंब तुंग सोभए। अनंग अंग लोभए ॥
मनौ कि रथ्थ रंभ के। सुरंभ चक्क संभके ॥ छं० ॥ ३२८ ॥
नषादि आदि अच्छनं। मनों कि इंद्र [2]दृप्पनं ॥
ढरंत रत्त एड़ियं। उपम्म कब्बि टेरियं ॥ छं ॥ ३२९ ॥
मनौ कि रत्त रत्तजा। चिकंत पच अंबुजा ॥ छं० ॥ ३३० ॥
गाथा ॥ [3]मढ़ मे रथ्यत बालं। लग्गा सेनाय पास चिहु बीरं ॥
धरि धीरं तन दुरयं। रोमं राज रोमयं अंचं ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

कान्यकुब्जेश्वर को देख कर शशिवृता का दुखी होना और मन में चिन्ता करना।

दूहा ॥ बाल धरक्कति वचनि गति। ग्यान मोह विष पान ॥
त्यों कमधज्जै देषि कै। बर चिंतै चहुआन ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

(१) मो.-पपील। (२) मो.-दर्प्पनं। (३) को.-पढ़।

एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना।

कवित्त ॥ देषि सुभर [1]लच्छिनति। फौज चतुरंग रिंगावै ॥
अरी सेन सम भार। धार भंजत मग पावै ॥
बहु गिरष्टता रिष्ट। हक्कि अप्पन पर धावहु ॥
सुबर म्यंघ आलस्य। स्याल खूधौ करि पावहु ॥
उट्ठै न बीर बोरहु उठत। सुबर मंच फुनि करिय बर ॥
अभ्भंग सेन भद्दव सरिस। अभँग अंग [2]सज्जे कहर ॥छं०॥३३३॥

पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना।

दूहा ॥ चाहुआन सब सेन जुरि। भिरि रूंधे चहुंपास।
देव दुतिय देवह दरस। बल बढ्ढिय आयास ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना।

कवित्त ॥ असुर सेन कमधज्ज। सु सुर प्रथिराज सेन बर ॥
अमृत कित्ति संग्रह्यौ। मद्दह भौ क्रोध वीर [3]तर ॥
मद्दन मोह रंभनी। तहां शशिवृता समानं ॥
दुहुन बीच सिुभ्भयै। हेत चहुआन सुजानं ॥
अक्कित्त राह पच्छै फिरग। चक्र तेग सज्जिय सुबुधि ॥
अलि सकति सेन माया विषम। सुबर बीर बढ्ढिय सु सुधि ॥छं०॥३३५॥

दोनों सेनाएं तलवार लिए तैयार हैं। जिसने द्रोपती का पण रक्खा वही शशिवृता का पण रक्खेगा।

दूहा ॥ दुहूं तेग तारुन्य तन। सयन सुक्रति प्रतिकाल ॥
जिन रष्यो द्रोपत्त पन। सो [4]रष्यै प्रति बाल ॥ छं० ॥ ३३६ ॥
देह कंचुकि दह दून अलि। विच सुंदरी अमूल।
डोल तौस संयोग भति। भौ भारथ्थ समूल ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

---

(१) मो.-लष्पिन सु। (२) मो.-सज्जै।
(३) ए. कृ. को.-त्रसि। (४) ए. कृ. को-रष्पै।

गाथा ॥ भारथ्थं प्रति राजं। सज्जे सेनाय बीर बीरयं ॥
धीरं धीर सधीरं। अधीरं [1]सब्ब सेनायं ॥ छं० ॥ ३३८ ॥
दूहा ॥ देषि बाल पारस फिरिय। मेर भान प्रति मान ॥
ज्यों शशि पछ पारस सुभति। शंकर सोभत थान ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

मठ को देख कर शशिवृता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया।

शंकर रस आचार किय। मढ़ दिष्यिय प्रति जोइ ॥
मन लग्गिय बंधत सु पय। मन कंद्रप रस भोइ ॥ छं० ॥ ३४० ॥

तीस डोलियों के बीच में शशिवृता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुई थीं। ५००० सवार और ५०००० पैदल सिपाही साथ में थे।

कवित्त ॥ [2]दहति तीन चौंडोल। मध्य चौंडोल बाल भय ॥
भमर टोल झंकार। दासि बिंटिय सु पंच सय ॥
सित्त पंच असवार। पंति मंडिय चावद्दिसि ॥
अद्ध लष्ष पैदल्ल। सथ्थ आयो सुअंग कसि ॥
मंगल विवेक विधि उच्चरे। बंधी बंदन मार करि ॥
उत्तरी बाल देवल सुढिग। लग्गि पाइ परदच्छि फिरि ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

शशिवृता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की।

दूहा ॥ उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीति हेत प्रथिराज ॥
जिन देवत्त जु संपज्यौ। सो मंडन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना।

मंडन रन छंडन कलह। दल दैवत्त सु जुद्ध ॥
बर वज्जे बाजित्र सुनि। भौ सामंत विरुद्ध ॥ छं० ॥ ३४३ ॥

(१) मो.-सर्व, सरब। (२) ए. कृ. को.-दसत।

विरुध जुद्ध बंधन सुदल। स्वामि ध्रंम्म चित पान॥
दुतिय ध्रंम जानै नही। धनि सामंत बषान॥ छं०॥ ३४४॥

गाथा॥ बज्जे दलं समूरं। लष्यं सेनाय अवृतं बलयं॥
ते जग्गे रस बीरं। जानिज्जै जोग जोगायं॥ छं०॥ ३४५॥

सेना में बीर रस का जागृत होना।

छंद भुजंगी॥ जग्यौ बीर बीरं सु डोंरू बजावै।
महा चित्त चित्तं सुमंतं निपावै॥
जग्यौ बीर बीराधि बिराधि रूपं।
मनो ईश शीशं नचै बीर [1]रूपं॥ छं०॥ ३४६॥

दूहा॥ भयौ बीर बीरह तिगुन। नच्यौ रुद्र बहु भेद॥
सो दिष्यौ दिष्यौ [2]नहै। सो देषन गुन छेद॥ छं०॥ ३४७॥

नह तारक्कि सु जुद्ध बर। नह देवा सुर मान॥
सो दिष्यौ कमधज्ज सौ। चाहुआन बलवान॥ छं०॥ ३४८॥

चाहुआन कमधज्ज बर। बरै षटक्क सुबद्द॥
देवगिरि [3]उग्गाहिये। करि भारथ्थ न सद्द॥ छं०॥ ३४९॥

देवालय के पास सब लोगों का चित्रलिखे से खड़े रह जाना।

छंद भुजंगी॥ सुसद्दे विसद्दे विसद्दे निसानं।
[4]रहे देव थांनं [5]बटे देव थानं॥
रहे सब्ब योंही टगी टग्गा लग्गे।
मनो चित्रलिष्पे विचित्रंत ठग्गे॥ छं०॥ ३५०॥

गाथा॥ जो दुज्जै मन चरियं। हरियं एक कग्गयौ सबदं॥
सब सेना कमधज्जं। विंटे वा बाल सर सायं॥ छं०॥ ३५१॥

सखियों का जैचंद के भाई को शशिवृता का बर कहना जो उसे बिष सा लगा।

(१) ए. कृ. को.-सूपं। (२) मो.-नहीं।
(३) मो.-सु उगाहिए। (४) मो.-रहं (५) कृ. को.-वट्टे, ए.-वट्टे

बर जैचंद सुबंधं। प्रोहित पंग रष्पियं [1]आइयं॥
सहचर चारु सुपढ़ियं। हालाहलं बालयं मनयं॥ छं०॥ ३५२॥

अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहाँ आया।

दूहा॥ चढ्यौ पुज नव साज बर। अरु भर लित्रे सथ्थ॥
शंभु थान पूजन मिसह। चलि बर आयौ तथ्थ॥ छं०॥ ३५३॥

तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबंद कपट भेष धारण किए हुए भीड़ में धँस पड़े।

तब लगि दल चहुआन के। ग्रह गुपंति कर आइ॥
रुक्कि सकै नन मथ्थ लिय। बोलै संमुह धाइ॥ छं०॥ ३५४॥

कवित्त॥ सहस सत्त कप्परिय। भेष कीनौ तिन वारं॥
गोय तेग गहि गुपत। कपट कावरि सब भारं॥
किहुन फरस किहुं छुरी। चक्र किन हाथन माही॥
किन चिसूल किन डंड। सिंगि सब सथ्थ समाही॥
सा अंग सिद्ध चहुआन लै। द्रतन द्रत बताइ हरि॥
सा अंग बाल उतकंठ करि। पै लग्गी परदच्छि फिरि॥छं०॥३५५॥

शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की।

अरिल्ल॥ फिरि परदच्छि बाल अपु लग्गी।
सुमन काम कामना सुभग्गी॥
मन मन बंधि [2]कियौ हथ लेवं।
सुमन मंत्र प्रारंभ सुदेवं॥ छं०॥ ३५६॥

* दोहा॥ उतरि बाल चौंडोल तें। प्रीत प्रात छुटि लाज॥
शिवहिं पूजि अस्तुति करी। मिलन करै प्रथुराज॥ छं०॥ ३५७॥

शशिव्रता का शिव जी की स्तुति करना।

(१) ए. कृ. को.-आहि।
(२) कृ.-किए, कियउ, कियव। * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

छंद हनूफाल ॥ प्रारभं मंच सु राम । तिहि जपौ अजपा नाम ॥
हरि हरी बरन विरात्ति । कबि कहौ चंद किरात्ति ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
श्रुत कह्यौ बेद पुरान । ज्यों सुन्यौ श्रवन निश्रान ॥
तन स्याम अम्मर पीत । रघुबंस राजस रीत ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
दृग कमल कमला पान । मधु मधुर मिष्टत बान ॥
जिन नाम [1]जनमह [2]कोट । कंद्रप्प लावन मोट ॥ छं० ॥ ३६० ॥
गंभीर साइर मान । आदिष्टवान प्रमान ॥
नह बाल वृद्ध किशोर । उर वरन स्याम न गौर ॥ छं० ॥ ३६१ ॥
अरि दहन उग्रस कोट । पौवै कि गोपिन [3]पोटि ॥
भ्रम भूलि ब्रह्म भुलाइ । सुरनाथ नाथ नचाइ ॥ छं० ॥ ३६२ ॥
निज पानि पदम कटाच्छ । जिन भ्रमिय भूतल लाछ ॥
आदित्य कोटि प्रकास । सय सक्र कोटि विलास ॥ छं० ॥ ३६३ ॥
आराम कलप निधान । सुर तीन कोट प्रमान ॥
नव रूप रेष अनंग । परकार गर्व विभंग ॥ छं० ॥ ३६४ ॥
पर पाप लिपत इहै न । भुअ भुक्ति मुक्ति सु दैन ॥
काकुस्थ करुना कार । गुन निद्धि सुभ्भर भार ॥ छं० ॥ ३६५ ॥
रन रंग धीर सधीर । भव पार कढ्ढन तीर ॥
सुर सुरी नाथ नचाइ । भ्रम भूल ब्रह्म भ्रमाइ ॥ छं०॥ ३६६ ॥
चतुरान घट्ट सु घूमि । सुरपत्ति फनपति तूमि ॥
तारुन्य रूप प्रकास । सहभूत अंग निवास ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
चय मंच जंपित वार । हर दीन तँह हंकार ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
अरिल्ल ॥ बाल वित्त विषम्म प्रमानं । हय गय दल रुंध्यौ चहुआनं ॥
कुंकुम कलस सलेवर हेमं । देव दैव साधारन नेमं ॥ छं० ३६९ ॥
पंगी पय सतह परिमानं । संमुह दलन रुंध्या चहुआनं ॥
गहह गहह कित्ती अविसेशं । सुवर चित्त चिंते जु नरेशं ॥छं०॥३७०॥
गाथा ॥ बर छित्ती छिति धारी । सारं संग्राम नेहयो बलयं ॥
अग्गैई मृग जूथं । ना झुकै [4]मृग्गयं राजं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनमहि । (२) ए. कृ. को-जोट । (३) मो.-फोटि ।
(४) ए. कृ. को. मृग्गयो ।

उद्धरे सेन सेनो। [1]संग्रामं वीर सुभट्टायं ॥
कालिंदीय सुरंगे। सो अंगो सुद्ध [2]भूतायं ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

पृथ्वीराज सात हजार कपट वेषधारी कामरथी वीरों के साथ देवी के मन्दिर में धँस पड़े।

कवित्त ॥ सहस सत्त कण्परिय। भेष कौनो तिन वारं ॥
कपट कंध कावरिय। धसिय देवी दरबारं ॥
सर्व शस्त्र आरंभ। हस्त आरंभ सुरी सल ॥
धसिय भीर सम्मूह। जूह पाई समंडि कल ॥
दल प्रबल उदधि ज्यों मथन कज। भुज सुकिस्न चहुआन किय ॥
शशिवृत्त बाल रंभह समह। मिलिय गंठि बंधन सुहिय ॥ छं० ॥ ३७३ ॥

पृथ्वीराज और शशिवृता की चार आंखें होते ही लज्जा से शशिवृता की नज़र नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया।

दिट्ठ दिट्ठ लग्गी समूह। उतकंठं सु भग्गिय ॥
निष लज्जानिय नयन। मयन माया रस पग्गिय ॥
छल बल कल चहुआन। बाल कुअंरप्पन भंजे ॥
दोषचौय मिट्टयौ। उभय भारी मन रंजे ॥
चौहान हथ्थ बाला गहिय। सो ओपम कविचंद कहि ॥
मानों कि लता कंचन लहरि। मत्त बीर गजराज गहि ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने गुरुजनों की खबर आगई और इससे आंख में आंसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया।

चंद्रायना ॥ गहत बाल पिय पानि। सु गुर जन संभरे ॥
लोचन [3]मोचि सुरंग। सु अंसु बहे परे ॥

(१) ए. कृ. को.-सग्रामे। (२) ए. कृ. को.-भूताय। (३) मो.-कामुचि।

अपमंगल जिय जानि। सु नेंन मुष बही॥
मनों षंजन मुष मुत्ति। भरक्कत नंषही॥ छं० ॥ ३७५ ॥

दुहु कपोल कल भेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल बिसाल। सु उरज षरक्कही॥
सो ओपम कवि चंद। चित में बस रही।
मनु कनक कसौटी मंडि। म्रग्ग मद [1]कसरही॥ छं० ॥ ३७६ ॥

गाथा॥ म्रग मद कसयति चित्ते। मित्तं पुनरोपि चित्तयं बसयं॥
अजहूं कन्ह वियोगे। कालिंदी कन्हयो नीरं॥ छं० ॥ ३७७ ॥

गहियं गह गह कंठो। बचनं संजनाइं निठ्ठयो कहियं॥
जानिज्जै सत [2]पत्तं। बंधे [3]सदाइ भवरयं गहियं॥ छं० ॥ ३७८ ॥

तप तंदिल में रहियं। अंगं तपताइ उप्परं होइ॥
जानिज्जै कसु लालं। घटनो अंग एकयौ सरिसौ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

अपमंगल अल बाले। नेनं नषाइ नष किं सलयौ॥
जानिज्जै धन छपनं। सपनंतरो दत्तयं धनयं॥ छं० ३८० ॥

जिस समय पृथ्वीराज ने शशिवृता का हाथ पकड़ा पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिवृता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में वीभत्स रस का संचार हुआ।

कवित्त॥ गहि शशिवृत्त नरिंद। सिढी लंघत ढहि थोरी॥
काम लता कल्हरी। पेम मारुत झकझोरी॥
बर लीनौ करि माहि। चंपि उर पुठ्ठि लगाई॥
मन सुरंग सोइ [4]बत्त। कंत लगि कान म्न ई॥
नृप भयौ रुद्र करुना सुचिय। बीर भोग बर सुभर गति।
सगपन सुहास बीभच्छरिन। भय भयान कमधज्ज दुति॥ छं०॥३८१॥

(१) मो.- फरसही। (२) ए. पत्तं। (३) ए. कृ. को. शठदाय।
(४) ए. कृ. को.-बात।

वरिवृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिवृता को साथ ले कर चल दिए।

दोहा ॥ बीर गत्ति संधिय सुमति। वृत्त अवृत्त न जाइ ॥
घरी एक आवृत्त रषि। सुबर बाल अनुराइ ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

शशिवृता के पिता ने कन्या के बैर से और कमधज्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना सजी।

बाल सु बैर स बैर चिय। भान विरुद्ध न कौन ॥
सकल सेन साधन घरी। कलहंकृत गति [1]चौन ॥ छं० ३८३ ॥
अरिल्ल ॥ आवृत्त वृत्त गुन निग्रह राज। देव जुद्ध देवत्तह साज ॥
है गै दल सज्जै तिहि बीर। हरी बाल चहुआन सधीर ॥छं०॥३८४॥

शशिवृता के पिता का कमधज्ज के साथ मिलकर पांच घरी दिन रहे सकट व्यूह रचना।

कवित्त ॥ घरिय पंच दिन रह्यो। मंत जद्दव प्रारंभिय ॥
मिलि कमधज्ज नरिंद। सकट व्यूह आरंभिय ॥
अर्द्ध सथ्थ अप्पनौ। चारन मंडिय बाम दिसि ॥
व्यूह चक्र विय पाइ। मथ्थ उभौ नरिंद कसि ॥
उद्दवन भार अंगत सकट। सबर पुंज अप्पन सजिय ॥
रघुनाथ साथ बलियं बिहसि। हंकि सु लछिमन तहँ रजिय ॥
छं० ॥ ३८५ ॥

कमधज्ज की सेना का वर्णन।

छंद रसावला ॥ भगं भीर भाजी। कहं कूह वाजी ॥
सुने पुंज राजी। मनो मेघ गाजी ॥ छं० ॥ ३८६ ॥
सनाहं सु साजी। चढ़यो बीर वाजी ॥
बगं मेल ताजी। सबें सेन साजी ॥ छं० ॥ ३८७ ॥
करौं काम आजी। मिरं मोहि लाजी ॥

(१) ए. चिन्ह।

उठी मुच्छि एनं। सिरं लग्गि गेनं॥ छं० ॥ ३८८ ॥
कमंद्रं निहारी। सयंनं विहारी॥
कमानै निहारी। तरक्कस्स झारी॥ छं० ३८९ ॥
अरी तुंग तारी। फिरै [1]गज्ज भारी॥
सरोसं विहारी। मया मोह जारी॥ छं० ॥ ३९० ॥
महंतं विडारी। .... ॥
किए नैन रत्तं। रसं रोस पत्तं॥ छं० ॥ ३९१ ॥
मुरं बीन बीरं। करौ आज तीरं॥
परै मोहि गत्तं। हरै श्रश्रिश्रट्तं॥ छं० ॥ ३९२ ॥
असी जा पहारं। चढ्यौ धार धारं॥
लियौ दृत भारी। पगं सीस डारी॥ छं० ॥ ३९३ ॥
परयौ मद्ध धाई। असीजा पुलाई॥
बजौ कूह कूहं। अवाजं सजूहं॥ छं० ॥ ३९४ ॥

घरियाल के बजते ही सब सेना जुट गई।

कवित्त॥ सुनि वज्जी [2]घरियाल। लाग [3]नीसानन बाजिय॥
इक दिन दोऊ सेंन। चंपि चावद्दिसि साजिय॥
महन रंभ सा जग्य। मध्य मोहन श्रश्रिश्रट्तं॥
असुर सु सुर मिलि मथहि। सूर बंसी रजपूतं॥
आरंभ पच मंड्यौ कपट। कपट मुक्कि कद्दिढय लपट॥
दुहूं बीच जद्दों कुंअरि। उभय सिंह सारह झपट॥ छं० ॥ ३९५ ॥

चहुआन और कमधज्ज शस्त्र लेकर मिले।

दूहा॥ चाहुआन कमधज्ज बर। मिले सोद्द जल छोह॥
भर भर टट्टर बज्जही। बंसह जग्गिय कोह॥ छं० ॥ ३९६ ॥

शत्रुता का भाव उच्चारण करके दोनों ने अपने अपने हथियार कसे।

(१) मो.-गज्ज। (२) ए. कृ. को.-घरि, घरी पंच।
(३) मो.-नीसानत।

गाथा ॥ उच्चरियं अरि भायं। सायक कम्मेव अप्प अप्पायं ॥
कढ्ढे लोह करारं। मार मारं जंपि जी हाई ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
दूहा ॥ अट्टत घाइ घट भंग कौ। करन मतह बर बीर ॥
मनहु काल कपि दल निरति। लेन [1]लंक मति धीर ॥ छं० ॥३९८॥
[2]धर धीरत्तन बीर बर। करिय न पंग प्रवाह ॥
चच्चर सीचव रंग गति। विधि बंधन रिन चाह ॥ छं० ॥ ३९९ ॥

दोनों सेनाओं के युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ मिले घाइ [3]न्विघाइ सा पुंज राजै। लगे अंग अंगं सुरंगति छाजै ॥
मिले हथ्थ बथ्थं सु सथ्थं निनारै। मनो वारुनी मत्त [4]मय मत्त भारै ॥
छं० ॥ ४०० ॥
किधौं जुद्ध लग्गे कि मल्लं सवारे ॥ ... ... ॥
उरै लोह पंती परै स्रोन रुद्रं। मनों रत्त धारा बरष्पै समुद्रं ॥
छं० ॥ ४०१ ॥
उड़ै छिंछि इछं सनाहं सुभिज्जै। मनो पुफरत्तं नभं देव पुज्जै ॥
सुनै ईस सद्दं निसानं गहारं। बजै धार धारं घनं कै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०२ ॥
मनो पट्टनं मंभि कंसी डकारं। दुती [5]ओपमा चंद जंपै विचारं ॥
बज झल्लरी देवलं द्वार मारं। उड़ै सार किंची कि रच्चै प्रहारं ॥
छं० ॥ ४०३ ॥
मनो झिंगनं भद्दवं रैनि भारं। .... ॥
*सबै सस्त्र मंचं भरं जम वाहे। षिभै षग्ग कढ्ढै बिहथ्थै समाहे ॥
छं० ॥ ४०४ ॥
करं कंस मत्तं पलं पारि छंडै। रुधं धार हल्लै प्रसादेति मंडै ॥
सिवा लोति सोभै [6]प्रनाली अनेकं। फिरै अच्छरी पंति बिय बार वेकं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-फलक। (२) मो.-धन।
(३) मा.-निघ्घान। (४) में.-मै।
(५) मो.-उप्पमा। (६) ए. कृ. को.-मृनाली।
* ए. कृ. को.-सबै शास्त्र मंत्रं भजैरं समाह। बिजै खग्ग कट्ठै बिबी हथ्थ बाह ॥

बहै नाग मुष्पी सु सोहै बिकंतं । फटै हस्ति कुंभं ठनंकंत घंटं ॥
वियं वांह षंचै गिरै गज्जराजं । मनो द्रोन षंचे कपी काज पाजं ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

षिजै दंत दंती भरं कंध डारै ॥ मनो कोपियं भीम हथ्थी उच्छारै ॥
भरं लाहि गिद्धो भ्रमै भंति छुट्टै । मनो देवलं इष्ट चलि डोरि तुट्टै ॥
छं ॥ ४०७ ॥

लगै लोह हथ्थी सिरं वंबिझारै । तिनं गात तिंदू जरै अग्गि लारै ॥
परै षोपरी तुट्टि भेजी सुभावै । दधी [1]भाजनं जानि वायस्स आवै ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

फटै बीर बीरं सुबीरं सुघट्टं । मनो कर्क करवत्त विहरंत कट्टं ॥
नचैजा कमंधं करै हाक शीशं । चरंमं सुभज्जै हसै देषि ईशं ॥
छं० ॥ ४०९ ॥

युद्ध के समय शूरवीरों की शोभा वर्णन ।

गाथा ॥ मानिक्कं प्रति ताजं । हेमं हेमेल विद्ध साधरियं ॥
जानिज्जै निसि मद्धं । निरमल तारक सोभियं गैनं ॥ छं० ॥ ४१० ॥

मुच्छी उच्चस बंकी । बाल चंद सुभियं [2]नभ्भं ॥
[3]गज गुर घन नीमानं । रीमानं षंग षल्ल याई ॥ छं० ॥ ४११ ॥

अरिल्ल ॥ दहाक बज्जि नीसानति [4]नद्दं । सबै सेन संग्राम बिवद्दं ॥
इक्क अंग चावद्दिसि सेनं । जरै राज रत्ते [5]रस नेनं ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

छंद रसावला ॥ लगी कर कोह । लगें घन लोह ॥
छकै अति छाह । महा तजि मोह ॥ छं० ॥ ४१३ ॥

भरा भर भार । तुटै तरवार ॥
मची घन मार । परंत प्रहार ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

धुकंत धरन्नि । सरोस सरन्नि ॥
निफूटत रुन्नि । बरै सु बरुन्नि ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

---

(१) मो.- भोजनं । (२) मो.-गेनं ।
(३) मो. को.-गत्त, गत । (४) ए. कृ. को.-नद्दै, विषद्दै । ५ मो.-रन ।

करै घन घत्त । महा इत मित्त ॥
लरै बर लत्त । फटै रिन घत्त ॥ छं० ॥ ४१६ ॥
कटारिय एक । लगंत अनेक ॥
सु चंदन साष । संजोइय भाष ॥ छं० ॥ ४१७ ॥
धषै अति धीर । मनों बर बीर ॥ छं० ॥ ४१८ ॥

कमधज्ज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ सबर बीर कमधज्ज । अरघ अप्पिय घग मग्गं ॥
इष [1]अच्छित उच्छरहि । जानि परिमानन मग्गं ॥
सार धार पुंषियै । बीर मंगल उच्चारै ॥
सबै साथ बंदियहि । सकल पूजा संभारै ॥
बर मुक्कि बरन बरनी सुबर । इह अपुन्न पिष्यौ नयन ॥
उप्पनौ बीर सिंगार सँग । रुद्र बीर चौरी नयन ॥ छं० ॥ ४१९ ॥

दूहा ॥ सिर सोहत बर सेहरौ । टोप ओप अति अंग ॥
बगतर बागे केसरे । रुधि भीजत विषमंग ॥ छं० ॥ ४२० ॥
[2]सकट भग्ग लइ बग्ग बर । कमधज बीर विसेज ॥
[3]मिले बीर बीरत्त बर । दोऊ दैवत तज ॥ छं० ॥ ४२१ ॥

शशिवृता का चहुआन प्रति सच्चा अनुराग था।

देव तेज दैवत्त गुन । अद्दत मत्ति गुन कंति ॥
शशिवृत्ता चहुआन सैां । सुद्दत मंत गुन पंति ॥ छं० ॥ ४२२ ॥
सांइ सूर सांई सु गति । दल दंदुभि दैवत्त ॥
विधरं कर वीरह करह । सुबर बीर मारुत्त ॥ छं० ॥ ४२३ ॥
कालकूट कौनौ विषम । कोलाहल घन कौन ॥
अद्दत दत्त अंतह भषै । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
भारथ दिष्पिय तत्त मति । अद्दत चिंत बल छीन ॥
जिन गुन प्रगटित पिंड किय । सो भारथ्थ प्रवीन ॥ छं० ॥ ४२५ ॥

---

(१) मो.-अप्पित । (२) मो.-संगट ।
(३) मो.-मिलें ।

कंठ कील कीली सुदृत। दृतत जुद्ध सम पाइ॥
सुबर बीर भारथ्थ गुन। उठे बीर बिरुझाइ॥ छं० ॥ ४२६॥
षल संकुल अंकुल प्रक्रित। चतुर चित्त विरुझाइ॥
मनु बड़वानल मध्य तें। समुद सत्त गुन भाइ॥ छं० ॥ ४२७॥
वीर थान विश्रम भइय। नयन रत्त सम सार॥
मानहु बर धरि अद्ध में। नाकपत्ति गिरि झार॥ छं० ॥ ४२८॥

पृथ्वीराज की श्री शेषजी से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ नाक पत्ति संभरिय। उभै काया अधिकारिय॥
वह जित्यौ बलि राइ। यहन दुज्जन सम सारिय॥
छित्ति पत्ति अति अभ्भ। दुहुन आभा पति बुद्धं॥
वह गोरी सुरतान। इहति दानवति विरुद्धं॥
षग षुलै दुहुन पुज्जै न को। दोऊ बाउ बर बीर रन॥
लै चल्यौ हरिव श्रुश्रिट्ठत्त को। पहु पंजलि पुज्जै तरुन॥छं०॥४२९॥
दूहा॥ तरुन तेज तम हरन बर। बाल बहिक्रम उच्छि॥
मानों रति आरुढ़ करि। बर बारधि मति लच्छि॥ छं० ॥ ४३० ॥
लच्छि सु लच्छिरु लीन हरि। इह लीनी संग्राम॥
घटि बढ़ि मंचह समन बरि। दोऊ बीर बढ़ि [1]वाम॥ छं० ॥ ४३१ ॥
गाथा॥ चावहिसि न्वप [2]बिंद्यौ। पुंजं सेनायं सेनयौ बीरं॥
धर धरनी आधारं। सा धारं डुलियं शीशं॥ छं० ॥ ४३२ ॥

उस युद्ध में वीरों को आनन्द होता और कायर डरते थे।

[3]मुरिल्ल॥ बढ़ि सस्त्र दुहाइय बीर रसं। दुहु सेन सुधावत अंग कसं॥
मुष वीर विगस्सिय रैन ससी। भय कायर चंद प्रभात दिसी॥
छं० ॥ ४३३ ॥
छंद विराज॥ लगे लोह सारं। दोऊ बीर भारं॥
महा तेज तारं। बरं कंज झारं॥ छं० ॥ ४३४ ॥

---

(१) मो.-काम। (२) मो.-विटं।
(३) मो.-प्रति मे यह छन्द त्रोटक नाम से लिखा है।

घरी थार सारं । परें कै प्रहारं ॥
भए पार पारं । मनों प्रात तारं ॥ छं० ॥ ४३५ ॥
करै मार मारं । बबक्कै बकारं ॥
चलैं रुद्धि धारं । पलं मच्चि गारं ॥ छं० ॥ ४३६ ॥
चरे मंस चारं । दिषै प्रेत दारं ॥
धपैं धार धारं । टलैं जे न टारं ॥ छं० ॥ ४३७ ॥
डकै भूत डारं । ढरै सीस ढारं ॥
उड़ी बीर रैंनी । भ्रमै भैंर सेंनी ॥ छं० ॥ ४३८ ॥
अवध्यं न गोपं । इसे बीर कोपं ॥ छं० ॥ ४३९ ॥

दूहा ॥ कोपि बीर कायर धरकि । परषि पयंपन जोग ॥
यह गति छंडै बीर बर । परै परत्तर भोग ॥ छं० ॥ ४४० ॥

कवित्त ॥ बांन पथ्थ बलभीम । सत्त [1]सिवरी अधिकारी ॥
[2]गंभीरां गुर सिंघ । नेह करनह क्रत [3]धारी ॥
बल सुजग्य सक्रह बिसाल । पुरषारथ सारी ॥
सुर सिधि बुद्धि गनेश । क्रम्मन घुन घू अधिकारी ॥
सामंत सूर सूरह विरुध । बीर बीर पारस फिरिय ॥
बर सिंघ सिंघ रष्पै मरन । बर कोबिद कोबिद डरिय ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

कवि का पृथ्वीराज को कलि में वीरों का सिरताज कहना ।

दुहा ॥ सु रिधि बुद्धि बुध्यां तरन । मिरन सूर दुति राज ॥
चाहुआन प्रथिराज कल । मंडि बीर सिर ताज ॥ छं० ॥ ४४२ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का मुकाबला होना ।

चाहुआन कमधज्ज बर । मिले लोह छुटि छोह ॥
धार मुरै मुष ना मुरै । मरट [4]मुच्छ क्रत जोह ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
चाहुआन कमधज्ज दुति । रति नाइक प्रति धीर ॥
सारंगी सारंग बल । दूह लग्गी अति बीर ॥ छं० ॥ ४४४ ॥

---

(१) मो.-सिवरं । (२) मो.-गंभीरं ।
(३) मो.-भारी । (४) मो.-मूल ।

धन्य है उन शूरवीरों को जो स्वामिकार्य्य के लिये प्राणों का मोह नहीं करते।

अरिल्ल ॥ द्रव्य [1]वस्य नन होइ प्रमानं। अप्पन [2]प्रान स्वांम कृत दानं॥
जिन जग जित्ति कित्ति बसि कीनी। मरन सूर सरहद बर लीनी॥
छं० ॥ ४४५ ॥

दूहा ॥ कहां पंच पंचौ बसत। कहां प्रकृति प्रति अंग॥
कहां हंस हंसह बसै। कौन करै रन जंग॥ छं० ॥ ४४६ ॥

पृथ्वीराज और कमधज्ज का युद्ध।

इह कहि कढ्ढिय सार कर। षोलि षग्ग दोउ पानि॥
मानहु मत्त अनंग द्वै। धृत छुट्टै [3]जम जांनि॥ छं० ॥ ४४७ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

छंद भुजंगी॥ मिले हथ्थ बथ्थं न सथ्थं स धारे। मनौ बारुनी मत्त गज दंत न्यारे॥
उड़ै लोह पंती परै ओन [4]रुंदं। मनौ रुद्धि धारा बरष्षंत बुंदं॥
छं० ॥ ४४८ ॥

घुमे घाय घायं अघायं अघायं। झुमै झार झारं झनक्कै झकायं॥
करैं जोगनी जोग काली करालो। फिरैं पैट धाये महा विक्करालो॥
छं० ॥ ४४९ ॥

परै सूर वाहै बहथ्थी कृपानं। कढ़ी तांत बाढ़ी मलं चारि जानं॥
धमां धम्म मत्ती महो माहि [5]धानों। पिंजारे सतं रुव पीजंत मानों॥
छं० ॥ ४५० ॥

महादेव मालानि में गूथि मथ्थं। [6]कहैं वाह वाहं वहै सुर हथ्थं॥
छं० ॥ ४५१ ॥

मुरिल्ल ॥ [7]हाहरे रूप कायर प्रकार। [8]छंडीति लज्ज अरु बीर मार॥
अभ्यसै सूर जिन सूर रूप। दैवत्त भूप दिष्पै अनूप॥ छं० ॥ ४५२ ॥

---

(१) मो.-बसें। (२) ए. कृ. को.-काम। (३) मो.-यम।
(४) ए. कृ. को.-रुदं। (५) मो.-धानों। (६) मो.-वहै।
(७) मो.-हारे। (८) मो.-छंडी लज भये बासि मार।

युद्ध की यज्ञ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ विषम जग्य आरंभ। वेद प्रारंभ शस्त्र बल ॥
है गै नर होमियै। शीश आहुत्ति [1]स्वस्ति कल ॥
क्रोध कुंड विस्तरिय। कित्ति मंडप करि मंडिय ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। पेषि पल साकृत छंडिय ॥
तुंबर सु नाग किंनर सु चर। अच्छरि अच्छ सु गावहीं ॥
मिलि दान अस्स अप्पन जुगति। भुगति मुगति तत पावहीं ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

दूहा ॥ करि सुचार आचार सब। समद कित्ति फल दीन ॥
गुरुजन मिसि करुना करिय। कायर हाहर कीन ॥ छं० ॥ ४५४ ॥

कमधज्ज का सर्पव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मिलि जद्दव कमधज्ज। अहिर व्यूहं आरंभिय ॥
पुच्छ सु लषि मनि बंध। पांइ गुज्जर पारंभिय ॥
सुधर मंडि वर बीर। पंग बंधह रचि गढ्ढै ॥
फन अप्पन भय पुंज। जीभ कूरंभ सु ठढ्ढै ॥
हथनारि जोरि जंबूर घन। दसन दृढ़ दृग मुष्प करि ॥
मनि भयौ मेर मारूफ़ षां। [2]चचर सौचौ रंग परि ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

गाथा ॥ अप्पं व्यूह अरंभो। प्रारंभो बीर भद्रायं ॥
जानिज्जै चव रंगं। चतुरंग इक्क घंटायं ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

दूहा ॥ घटिय घट्ट अघटन घटिय। पढ़िय सार दुअ सैन ॥
पंगराइ बंध्यौ सु दृत। किये रत्त बर नैन ॥ छं० ॥ ४५७ ॥
रत्त नैन विषम्म गति। दावानल प्रथिराज ॥
बीर चंद घन उन्नयौ। सार सु बुट्टन आज ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पृथ्वीराज का मयूरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोर व्यूह प्रथिराज। सथ्थ [3]सज अप्पन कीनौ ॥
चुंच केश मंडली। कन्ह चहुआन सु दीनौ ॥

(१) ए.-सुस्ति। (२) को.-पचर। (३) मो.-जल।

पांडु पिंड विधि पंष। गरुअ गहिलोत बीर सजि॥
पुंछ राज रघुवंश। चरन पुंडीर चंद रजि॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें। सारधार में अग्नि भर॥
पल पंच तरंगनि रुक्कि जल। जांनि कमोदनि नंचि सर॥छं०॥४५९॥
दिषि वर [1]लष्मिन फवज। चंपि चतुरंग रिँगावहु॥
अरि सयन्न संभार। धोर भंजै मग पावहु॥
बहु गरिष्ट तारिष्ट। हक्कि अप्पन पर धावहिं॥
सु बर सिंघ आलसैं। स्याल सूधौ करि ध्यावहिं॥
उट्ठै न बीर बीरह उठत। सुबर [2]मंत फुनि फुनि करैं॥
वरसै न अंब सर मेघ कौ। जो न [3]समर सरवर भरै॥ छं०॥ ४६०॥
गाथा॥ समर सु मथ्यौ सेनं। तारं झंकार बीर भद्रायं॥
केवल गति कल रूपं। भूयं बीर जुद्धयो समरं॥ छं०॥ ४६१॥

बीररस में शृंगाररस का वर्णन।

दूहा॥ समर जुद्ध मच्चिय समर। हालाहल बर [4]मत्ति॥
कोलाहल पंषिन कियौ। कांम रूप बर जित्त॥ छं०॥ ४६२॥
छंद नाराच॥ बरंत काम रूपयं। असी वहै अनूपयं॥
लगै सु गौरि पासयं। परक्रिया कटाछयं॥ छं०॥ ४६३॥
सरंत तीर सोहयं। उरंद मुट्ठि छोहयं॥
हला हलं हलं मलं। भिलंत अंग संभिलं॥ छं०॥ ४६४॥
[5]कडा कडी कडक्कयं। दडा दडी दडक्कयं॥
पड़ै सिरं पडक्कयं। डकंत बीर डक्कयं॥ छं०॥ ४६५॥
पिसै न ज्यों षडक्कयं। तुटंत तेजि डक्कयं॥
हडा हडी हडक्कयं। ....॥ छं०॥ ४६६॥
निरष्पि पत्ति नाकयं। परंत हीय धाकयं॥
बरंत अच्छरी बरं। भषंत गिद्धनी भरं॥ छं०॥ ४६७॥
लगंत लोह [6]सो लरं। अरिंम मत्त संमरं॥ छं०॥ ४६८॥

---

(१) ए. कृ. को.-लच्छन। (२) ए कृ. को.-मंत्र। (३) मो.-समूर।
(४) को.-सत्ति। (५) ए. कृ. को—कटा कटी। (६) मो.-सौलरं।

अरिल्ल ॥ आरिष्टन सम दिष्टन दिष्पिय । बीर चंद गह गह मुष भष्पिय ॥
यद् भरि होंन न परत सुबंधं । बर भारथ बीर रस संधं ॥
छं० ॥ ४६९ ॥

गाथा ॥ उट्ठहि एक प्रमानो । धावंताय पंचयो सयनं ॥
[1]वाहंतं वर लोहं । साइनं देषयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७० ॥
रुधिरं पच तसतयौ । दो मझ [2]काय हक्कयौ सिरयं ॥
अति गति दुष्ट प्रकारं । अगिनत होंइ बीर सम सेनं ॥ छं ॥ ४७१ ॥
अगनित गने न जानं । ई कोइ कोपि रुद्धयो सहसं ॥
बर बीरार सुभट्टं । दावानलं पंगयौ बीरं ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर कन्ह का क्रुद्ध होकर झपटना।

दूहा ॥ तब चहुआन सु कन्ह वर । ठट्ठौ करि गुरुराज ॥
हुकम नृपति छुट्टौति इम । [3]जनु तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ मुष छुट्टत नृप बैन । नैन दिट्ठौ धावंतौ ॥
क्रंम बंध बल मोह । छोह बंध्यौ सु बरत्तौ ॥
सु बर सेन चहुआन । सिंग जद्दूनं [4]नवाई ॥
जनु मंदिर बिय बार । ढंकि इक बार बनाई ॥
तकसीर करन दोउ अंस बर । कित्ति मग्ग करतव्य कर ॥
अथवंत रविह आदित्य दिन । अगनि सार बुद्धिय कहर ॥
छं० ॥ ४७४ ॥

गाथा ॥ मुष छुट्टा नृप बैनं । कै दिट्ठाय धावता नैनं ॥
बज्जी वाहु सुबारं । धारं ढारि [5]मत्तयौ धरयं ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

कन्ह का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ मत्त ढरहि संमुष भिरहि । स्वामि सनाह सहूर ॥
आज मुष्य चहुआन कन्ह । सिंधु सत्त कौ नूर ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

गाथा ॥ सद्दं सिद्धत नूरं । कारूरं करनयो नथ्थी ॥
एको अंग सुरंगो । दिप्पे वा बीरयं बीरं ॥ छं० ॥ ४७७ ॥

(१) को.-व्याहतं । (२) मो.-काम । (३) मो.-मनु
(४) मो.-नमाई । (५) ए. क्र. को-मत्तयो ।

धनयं लछि नरिंदं। तिहि संचिय सायरो नथ्थी॥
कलहंतं बल विषमं। जुषमं देहीय लज्जतौ सूरं॥ छं० ॥ ४७८ ॥
कट्टै लोह दुहथ्थं। सत घरियाय बज्जयौ अंगं॥
चावद्दिसि चतुरंगी। अनुरंगी सेन सब्बाइं॥ छं० ॥ ४७९ ॥
दूहा ॥ अनुरंगी सेना [1]सकल। सद्द सुरद्ध विरुद्ध॥
अबुध बुद्ध भारथ्थ में। दान मान सु [2]प्रवद्ध॥ छं० ॥ ४८० ॥
गाथा ॥ बर अथवंत सु दीहं। झुझं विन जोतयं कलयं॥
घरिघट्ट अघट नरिंदं। सा बुद्धं बीर भद्रायं॥ छं० ॥ ४८१ ॥

पृथ्वीराज के बीर सामंतों का प्रशंसा।

मुरिल्ल ॥ बीरभद्द अरु रुद्द जलप्पिय। कहौ सत्त संकरषन थप्पिय॥
तुम सकल कलित भारथ फिरि दिष्यौ। इन समान कोइ बीर विसष्यौ॥
छं० ॥ ४८२ ॥
गाथा ॥ को [3]दिठौ सम बीरं। सामंतं स्वामयौ [4]क्रमयं॥
इकं करन प्रमानं। अंगद कामेय रावनो [5]भिरयं॥ छं० ॥ ४८३ ॥
चौपाई ॥ राम कांम अंगद अधिकारी। स्वांमि कांम सामंतव धारी॥
जिन हय गय तन तिन वर जान्यौ। सुमत भ्रंम स्वामित्त पिछान्यौ॥
छं० ॥ ४८४ ॥
[6]सुपति भ्रम्म जिन तंत प्रमानिय। मुकति सुर्ग केवल सुनि बानिय॥
घट्टिय घट्ट विघट्ट सुषंड्यो। सुपथ साथि आपथं सु मंड्यो॥ छं०॥४८५॥
जिन छंडिय मंडिय क्रत धारिय। सार कट्टि हय तज्जि सु धारिय॥
[7]परनि प्रहार सार तजि सारं। जड़ता तज्ज लगत तम तारं॥ छं०॥४८६॥
छंद विराज ॥ लगे बीर सारं। किए मत्त पारं॥
बहथ्थंत धारं। अनुज्ञा प्रहारं॥ छं० ॥ ४८७॥
तुटै धार धारं। मनों मुक्त तारं॥
अवित्तं विहारं। कलिंदी कहारं॥ छं० ॥ ४८८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुबल। (२) ए. कृ. को.-प्रबुद्ध।
(३) मो.-नट्ठौ। (४) कं मो.-कृतयं।
(५) मो.-भरयं। (६) ए.-सुमति। (७) मो.-परति।

मनौं नभभ धारं। सु भारथ्थ सारं ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

* चौपाई ॥ सार धार भारथ प्रहारं। मानहु दुत्तिय अंग बिहारं ॥
धार तिथ्थ कै तिथ्थह राजं। जनक काम कामनि सिरताजं ॥
छं० ॥ ४९० ॥

कवित्त ॥ बर अथवंत सु दीह। झुझिझ [1]लच्छिन जद्दव भर ॥
लोह धार लगि विषम। ईस लीनौं जु शीश कर ॥
रह्यौ न तन दझ्झन सु मंस। पल चरन न पाइय ॥
अश्व शस्त्र पष्षर [2]पलान। ढुढंत नन पाइय ॥
बरि लियन बीर अंतर मिल्यौ। [3]अच्छर [4]सुच्छर ना लियौ ॥
मिलि गय सु भान सुत भान कौ। दिव दुंदुभि बज्जत बियौ ॥ छं० ॥ ४९१ ॥
अगनि झार धर धार। सार वज्जी प्रहार असि ॥
कंक दिष्ट सिंघा सुरारि। भग्गौ नल गंभरि ॥
शस्त्र घात आघात। बथ्थ अन बथ्थ सु लग्गा ॥
सुरत अंतरित सेत। मिले दूती मन भग्गा ॥
सिरदार सैन नृप द्वै करिय। दोऊ घाव घन घुम्मि घट ॥
उबर्‌यौ कन्ह प्रथिराज क्रम। झुझिझ पुंज बंध्यौ सुभट ॥ छं० ॥ ४९२ ॥

इस युद्ध को देख कर देवताओं का प्रसन्न हो कर पुष्पवृष्टि करना।

छंद भुजंगी ॥ बजी दुंदुभी आज आयास थानं। करे लोह लोहं [5]सुलोकंति गानं।
कहै चंद सूरं महाबीर पाई। परै पुप्फ बर विष्ट वज्जै बिधाई ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

सांझ हो गई परंतु कमधज्ज की अनी न मुड़ी।

कवित्त ॥ जोति लियौ जै पत्ति। चारु चतुरंग स मोरी ॥
बर बंध्यौ नृप पुंज। ढाल जद्दव न ढँढोरी ॥
बर [6]लच्छिन परि षेत। कन्ह चहुआन उपारिय ॥

---

* मो.-प्रति में अधिक।
(१) मो. लन।
(२) मो.-प्रमान।
(३) मो. अन्सर।
(४) मो.-सुन्सर।
(५) ए. कृ. को.-लोकेसु।
(६) मो०—लप्पिन।

षेत ढूंढ़ि प्रथिराज। सुभ्रत झोरी करि डारिय॥
इतनें सु भान अस्तमित भये। दोऊ सेन बर उत्तरिय॥
मुकी न बग्ग कमधज्ज की। रोस राह विसरन भरिय॥छं०॥४९४॥
बजी संझ घरियार। सार बज्यौ तन झंझर॥
जनु कि बज्जि झननंक। ठनकि घन टोप स [1]उच्चर॥
अनल अग्गि सम जग्गि। जेन धज बंधि सलग्गा॥
मनु द्रुप्पन में बैठि। नेत बडवा नल जग्गा॥
घन स्यांम पीत रत रंग बर। चिविध बीर गुन बर भरिय॥
हर हार गंठि रुठि उमां। किम उतारि पच्छो धरिय॥छं०॥४९५॥

कमधज्ज का अपने बीरों को उत्साहित करना।

छंद भुजंगी॥ भिर्‌यौ राम रन बीर कमधज्ज बीरं।
करो आज सर्वं [2]सुन्निब्बीर धीरं॥
गुहै माल ईशं नचैं जोग बीरं।
निरं तंत प्रेतं धरं धीर हीरं॥छं०॥४९६॥

सब रन भूमि में तीन हाथ ऊँची लाशें पड़ गईं।

दूहा॥ परि पथ्थर सथ्थर सुरन। गनक गनें नहिं जाइ॥
इथ्थ तीन लुथ्थह चढ़ी। सुरबी [3]मद्ध न माइ॥छं०॥४९७॥
संझ सपत्ते न्वपति बर। नव नव रस अरपंत॥
बर प्रथिराज नरिंद दुति। सो ओपम कविकंत॥छं०॥४९८॥

तीन घड़ी रात्रि होजाने पर युद्ध बंद हुआ।

कवित्त॥ घरिय तीन निसि गइय। बार बर सुक्र सु आगम॥
पंति परी अरिजूह। बीर दिप्पौ अरि जागम॥
कोट पलन सोभै। विसाल सामंत सूर थंभ॥
जस देवल उप्पनौ। बीय गय गिरी सेत रभ॥
प्रथिराज देव दानव दलन। लच्छि रूप जद्दव कुँअरि॥
नव रस विलास पूजा करहि। बर अच्छरि भइ पहुप सरि॥छं०॥४९९॥

(१) ए.—उब्बर। (२) ए०—सन्निवरि। (३) ए०-सद्ध।

पृथ्वीराज की सेना की समुद्र से उपमा वर्णन।

अम सु अंग बिंटयौ। सुधा [1]बिंटयौ जु बाल रस॥
अमिय चंद बिंटयौ। समुद बिंटयौ बडवा तस॥
अरि कैं दिल विष उरग। मंच ससि वृत्त प्रेम झर॥
लहि न सुद्धि सब बसन। आइ लग्गेति रोस भर॥
बजि बीर बार दुज दल सघन। लाग निसानन नृत्य पर॥
प्रथिराज सेन बंधौ स अति। सु कविचंद उच्चारि बर॥ छं०॥ ५००॥

युद्ध में नव रस वर्णन करना।

भान कुंअरि शशिवृत्त। नैन शृंगार सुराजै॥
बीर रूप सामंत। रुद्र प्रथिराज बिराजै॥
चंद अदभ्भुत जानि। भए कातर करुना मय॥
बीभछ अरिन समूह। सात उप्पनौ मरन भय॥
उप्पज्यौ हास अपछरि अमर। भौ भयान भावी बिगति॥
कूरंभराव प्रथिराज [2]बर। लरन लोह चिंते तरनि॥ छं०॥ ५०१॥

राम रघुवंश का कहना कि जिस बीर ने युद्धरूपी काशी क्षेत्र में शरीर त्याग करके इस लोक में यश और अंत में ब्रह्म पद न पाया उसका जीवन वृथा है।

कहै राम रघुवंस। सुनौ सामंत सूर तुम॥
अमर नरन बंछहि सु। जुद्ध किन कथ्थ नरिंद भ्रम॥
धार तिथ्थ बर आदि। तिथ्थ काशी सम भज्जै॥
असि वरुना तिन मध्य। लोह तेजं सम गज्जै॥
सिव सिद्ध जोग सज्जै सकल। अकल अपूरब बत्त इह॥
लभ्यौ न बीर जिन ब्रह्म पद। छिनक मद्धि गति लभिभ इह॥ छं०॥ ५०२॥

गुरुराम का पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच देना।

पढ़ि सुमंच गुर राम। विष्णु पंजर सनाह दिय॥

(१) मो.--बींट्यौ। (२) ए. कृ. को.-छर।

केस कंस मरदन्न । नंद नंदन लिलाट किय ॥
भोह भुअद्धर धरि समुह । नैंन निज्जिय नाराइन ॥
बदन दिट्ठ श्रीकृष्ण । हृदय थप्पौ मथुराइन ॥
कटि जंघ गुविंद रक्षा करन । चरन थप्पि असरन सरन ॥
मुर दुष्ट समरि प्रथिराज कौ । दुह सुदिट्ठ रक्षा करन ॥ छं० ॥ ५०३ ॥

कमधज्ज और जद्दव की मृत फौज की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ परि पारस जद्दव सयन । मिलि कमधज्ज प्रमान ॥
षट बिय ग्रह मनु नछित लै । [1]पंति सु मंडिय भान ॥ छं० ॥ ५०४ ॥

किन किन बीरों का मुकाबला हुआ ।

छंद चोटक ॥ परि पारस पंग नरिंद घनं । मनो भान सुमेर कि पंति बनं ॥
घन सद्द सुरंग निसान धुनं । मनौं बज्जत दुंदुभि देव तनं ॥ ५०५ ॥
चव दून निसान सु कन्ह धनी । जु कियौ सिरदार मु पंग अनी ॥
दिसि पच्छिम बालुकराय अर्‌यौ । तिनके मुख कन्ह पजून लर्‌यौ ॥
छं० ॥ ५०६ ॥

हुअ ईस दिसान दिसा नृप मान । तिन कें मुष भौ रन भाटिय भांन ॥
दिसि पूरब भौ घुरसान षँधार । तिन कै मुष मंडि सलष्प पँवार ॥
छं० ॥ ५०७ ॥

अगिनेव दिसा वन सिंघ अचाइ । तिन के मुष मंडिय निद्दुर राय ॥
दिसा जम लच्छिन बंधिय फौज । तिन के मुष चामंड दाहर कौज ॥
छं० ॥ ५०८ ॥

सुनै रति छच उच्यौ कर बीर । तिन कें मुष मंडिय चंद पुंडीर ॥
जु बायु दिशा दिशि इंद्रयपाल । [2]तिनें मुष भौम भिर रिनमाल ॥
छं० ॥ ५०९ ॥

[3]सु उत्तर दै प्रभु पंग कुँआर । तिनें रघुवंस बजावत सार ॥
बढै गुर जंबुर [4]हथ्थह नार । मनौं गज भद्दव कौ उनिहार ॥
छं० ॥ ५१० ॥

---

(१) ए०-पति ।

(२, ३) पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है । (४) ए. कृ.०को.-हथं हथ ।

छुट्टै गुरजं बवियानन सें। षह तें पलटे मनों तारक सें॥
पति वंधि सनाह सयान करैं। अरि के मुष सामँत सूर लरैं॥
छं० ॥ ५११ ॥

रात्रि व्यतीत हुई और प्रातःकाल हुआ।

भयें प्रात जगंतय सूर घरे। तिन कें लरतें ब्रह्मण्ड डरे॥
गय सब्ब निशा पहु फट्टि ननं। दोउ संगम अंग विछंग घनं॥
छं० ॥ ५१२ ॥

प्रिय प्रातक सौत चलै मधुरं। निशि लीय उसास निसास डरं॥
बर तोरत तारक भूषन सो। मुष मूंदि कमोदनि ना बिगसो॥
छं० ॥ ५१३ ॥

पहु फट्टिय बीर प्रमांन नषै। रवि [1]रत्त सुतत्त वियोग लषै॥
जु भई गति सिथ्थल ता सगरी। सर छिप्पन केलि कला निसरी॥
छं० ॥ ५१४ ॥

[2]बजि दुंदुभि देव निसान धुअं। प्रगटे सत पच सुरंग हुअं॥
बर रंग [3]जवा सन जोति फिरी। घन देहि असीस चकी चतुरी॥
छं० ॥ ५१५ ॥

घन रोर चकोर कमोद भगे। जु गए दुरि चोर सु देव जगे॥
जमुना हुलसी जमराज हंस्यौ। जु गयौ तिमरं भजि तेज सज्यौ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

बर इंद अनंदिय चंद कह्यौ। जु सज्यौ रथ उंच अरुन्न गह्यौ॥
सु चल्यौ चक्र एकहु चक्र कह्यौ। सु गयौ कमलं कर को अकरयौ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

बर उद्वग नीर पवन्न उछं। जु चले सब क्रंमज जग्गि गछं॥
जु भयौ धन भ्रंम मिटी वनिता। वल जाप अजाप न सो जपता॥
छं० ॥ ५१८ ॥

गाथा ॥ गई सर्व्वरी सु संबं। फट्टी पहुवँ नट्ठयौ तिमिरं॥
तम चूरन प्रति किरनं। तरुनं विराइ तरुनयो रचयं॥ छं० ॥ ५१९॥

(१) को.-वृत्त। (२) को.-वट्टि। (३) ए.-जवासनि।

प्रातःकाल होते ही घोड़ों ने ठीं लगाई, शूरबीरों ने तयारी की और दोनों तरफ के फौजी निशान उठे।

कवित्त ॥ [1]सुफट किरनि पहु बीर। परिय आरन्नि निसा गय ॥
उभय षट्ट प्रगटीय। हक्क बोलंत हयनि हय ॥
तिमिर तेज भंजन। प्रमान कमधज्ज नरिंदह ॥
मांन तुंग चहुआन। जग्ग जंपिय कवि चंदह ॥
नव ग्रेह नवम्मिय नव निसा। नव निसान दिग्गि मान धुरि ॥
सामंत सूर भुज उप्परै। रहसि राज प्रथिराज फिरि ॥ छं० ॥ ५२० ॥

शूरबीरों के पराक्रम से और सूर्य्य से उपमा वर्णन।

गाथा ॥ सुघटं किरनं बीरं। पारस मिसह सेन कमधज्जं ॥
उदयं अस्तमि भानो। मेर पच्छि दच्छिनो फिरयं ॥ छं० ॥ ५२१ ॥
दूहा ॥ दच्छिन पत्त सुमेर फिरि। यों पारस पहु पंग ॥
सार धार धारह मिले। सुबर बीर प्रति अंग ॥ छं० ॥ ५२२ ॥
चौपाई ॥ सार धार प्राहार प्रकार। मनौं मत्त घन पंति विभार ॥
उठे बीर सत्तों विरझाइ। भान पयान न मत्त सुचाइ ॥ छं० ॥ ५२३ ॥

पृथ्वीराज का शुद्ध हो कर विष्णु पंजर कवच को धारण करना।

गाथा ॥ ग्रह सुद्धा प्रथिराजं। अष्ट ग्रहं बंकमो विषयं ॥
विष्णुं बीर सुधारं। पंजर भंज राजयो अंगं ॥ छं० ॥ ५२४ ॥

उस पंजर में यह गुण था कि हजार शस्त्र प्रहार होने पर भी शस्त्र नहीं लगता था।

दूहा ॥ सा पंजर दिय राज बर। सस्त्र लगै नहिं चाइ ॥
कोटि अंग घावह घने। भुज प्रमान सो पाइ ॥ छं० ॥ ५२५ ॥

बैकुंठ बासी विष्णु भगवान पृथ्वीराज की रक्षा पर थे।

गाथा ॥ बैकुंठह बर वासी। सासी गहनाय गिरन सा धरियं ॥
सो रक्षा चहुआनं। अनरष्षा मंचयो धरयं ॥ छं० ॥ ५२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-भट।

इधर से पृथ्वीराज उधर से कमधज्ज की सेना की तैयारी होना।

दूहा ॥ बज्जि राग चौहान भर। उत कमधज्ज नरिंद ॥
सार धार बज्जिय विषम। कहि ब्रंनन कविचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

आगे यादवराय की सेना तिस पीछे कमधज्ज की सेना, तिस के पीछे हाथियों की कतार देकर रूमी और अरबी, का सेना सज कर युद्ध के लिये चलना।

छंद चोटक ॥ सुर तौन फवज्ज सु बंध थपी।
अग जद्दव राइ नरिंद रूपी ॥
तिन पच्छ सु बीर सुरंग अनी।
बिच बंधिय हथ्थिय पंति घनी ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
बर हब्बसि किन्नर रूमि बिचै।
झननंकत पाइक पंति नचै ॥
तिन सौर सुगंध बिछाइ घनं।
बहु जुभ्भ कपट्टिय मंडि डनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
हय उच्छरि षेह अयास लगी ॥
नव तुट्टि [1]तिनं बनि बारि भगी ॥
अरची सरसीरुह [2]संकुचिता।
चकई चक मूंकति चूक तता ॥ छं० ॥ ५३० ॥
पवनं गवनं नन पंष वहै।
नव नेज धजा [3]धज लग्गि रहै ॥
फन फूंक फनं पति को बिसरी।
मुदरी दिग अठ्ठ दृगं धुँधरी ॥ छं० ॥ ५३१ ॥
घन बज्जत घंट सघंट घनं।
नव नोरथ नारि निभंग मनं ॥
ढलकै गज ढाल सुनेज बनं।
[4]चमकै बल के मन चौज मनं ॥ छं० ॥ ५३२ ॥

(१) मो. नितम्बनि। (२) ए.-क्र. को.-संकुरित, संकरित।
(३) मो.-धन। (४) मो.--चमकें वलकें यमकें जमनं।

तिन की उपमा कविचंद करी।
मनौं मेघ महेंद्रव बीज झरी॥
घन मन्निय नद्द बिबंक सुरं।
सुभिहै बिब हथ्थ धजा विथुरं॥ छं० ॥ ५३३॥
गज नद्द जंजीरन के घुरयं।
मनौं बंधिय भिंगुर सा सुरयं॥
तिन के कछु दान कपोल झरे।
सु मनौं नभ के वरसे बदरे॥ छं० ॥ ५३४॥
बजि लाग निसान धमंक सजी।
सहनाइन सिधुंअ राग बजी॥
नव नारद सारद ते किलकै।
नब बंदि बिरद्द नदे हलकै॥ छं० ॥ ५३५॥
घन देषि अरिष्ट सुबाल डरी।
मुदरी नव आनद चित्त हरी॥
कमधज्ज कला चढ़ती बर पेषि।
मुंदरी ससिवत्त दइ [1]शशि [2]लेखि॥ छं० ॥ ५३६॥

सेना की सजावट की शोभा वर्णन और उसे देख कर भूत वेताल योगिनी आदि का प्रसन्न हो कर नाचना।

निसाणी॥ फौज रची तिन दोय घन मध्य मसंदा।
जालिम जोध जुवान सेर रस बीर रजिंदा॥
अग्गैं उभ्भा अप्प आइ जादव्व नरिंदा।
मनौ उभ्भै मेर कै अड्डी अग डंदा॥ छं० ॥ ५३७॥
पीछै ठाढ़े राठ बड़ बल जे विचरंदा।
जानकि उत्तर उन्नया घन लोह सहंदा॥
पाइक पंति अपार वर जनु मोर नचंदा।
बाग गहिग्गहि बाज कौन रन बीर नषंदा॥ छं० ॥ ५३८॥

(१) ए. कृ. को.—गति। (२) मो.—पेषि।

सूचना ।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डाक व्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	) ॥
कविवर बिहारीलाल–(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
गद्यकाव्यमीमांसा–(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	) ॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्ण दास रचित)	।)	) ॥
समालोचना–(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
समालोचनादर्श–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	) ॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र– (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	–)
विसूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
हरिश्चन्द्र–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
भगवद्गीता–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।–)	) ॥
उथेलो–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	) ॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) १० भाग छप चुके है (आठवां भाग नहीं है) मूल्य–प्रति भाग	१)	–)
हिन्दी लेकचर–(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	–)	) ॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	–)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।–)	) ॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	–)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	) ॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला–१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	–)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	) ॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।–)	) ॥
पृथ्वीराजरासो–पहिला भाग (समय १–११)	४)	।)
,, समय १२–२५	३)	≡)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	) ॥
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	–)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	–)

सभा के पुस्तकालय की सूची...	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित)	३॥)	=)॥
दादू दयाल की बानी	१॥)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
घनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरुगीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लि

बीरा रस्स उतावल न रहै बरजिंदा।
अलबेला सु उछंछला अनमी अवलंदा॥
गाइड़ मल्ल गुमान गुर गुन गात गुरंदा।
बजे निसान नफेरियान घोर घुरंदा॥ छं० ॥ ५३९॥
तत्त बीर सुनंत तन तामस्स भरंदा।
सुनि चौसट्ठी जुगिन किलकि किलकंदा॥
भूत भयानक भाव भरि भइरें भइरंदा।
थेइ थेई गति पेच पाल किलकार करंदा॥ छं० ॥ ५४० ॥
बावन बीर [1]बलिष्ट बर बल करि बिलसंदा।
देषैं देव विमान चढ़ि कौतिग्ग अनंदा॥
तारी दै दै तान तुट्टि नारद नचंदा॥ छं० ॥ ५४१ ॥
गाथा॥ नंचै नारद सिद्धं। बुद्धे बुद्धिवंत सुभद्दाई॥
बंधे बुधिवर भट्टं। सद्दकारं बीर [2]भट्टायं॥ छं० ॥ ५४२ ॥

सुसज्जित सेना से पावस की उपमा वर्णन।

चौपाई॥ नाम नाम जिम पूरन स्याम। तडित बेन धुक्की धर धाम॥
गर्जित सिंह अपास सबद्द। करनि भज्जि होते जिन मद्द॥छं०॥५४३॥
गाथा॥ मदंक रीति भग्गा। आकास यौ सद्दयौ सद्दं॥
सो क्रमं वर मंचं। फेरे अकुंस सीसए मारं॥ छं० ॥ ५४४ ॥

अंकुस लगा कर हाथी बढ़ाए गए और शस्त्र निकाल कर शूरबीर लोग आगे बढ़े।

दूहा॥ अकुंस मारि प्रहारि गज। बंधन अध पूजान॥
शस्त्र कढ़ि संमुह भिरन। धनि संभरि चहुआन॥ छं० ॥ ५४५ ॥

कमधज्ज के शीश पर छत्र उठा उसकी शोभा।

अरिल्ल॥ उठ्यौ छत्र कमधज्ज नरिंदह सीस पर॥
मनों कनक दंड पर ग्यूं इंदी इंदबर॥

(१) ए० कृ० को०—अरिष्ट। (२) ए. कृ. को.-भइाई।

घोड़ों की टापों से आकाश में धूलि छागई।

हय षुर [1]उच्छरि षेह अयासह धुंधरी।
बान गंग प्रथिराज देषनह उत्तरी॥ छं० ॥ ५४६ ॥

चहुआन का घोड़े पर सवार होना।

दूहा॥ बहकि निरह नष्पर भिदै। यह पारथ पविचान॥
सो प्रति सारह उत्तरन। फिरि चढ्यौ चहुआन॥ छं० ॥ ५४७ ॥

उस दिन तिथि दसमी को युद्ध के समय के तिथि योग नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त॥ देव दसमि दिन दीह। दीह पङ्करौ नरिंदं॥
गुरु पंचम रवि नमो। सुबर ग्यारमो सुचंदं॥
चतिय थान बर भोम। सुक्र सप्तम बर कीनौ॥
नृप सुपनंतर आइ। ईस [2]जीपन बर दीनौ॥
चौसट्ठि पुट्ठि वि पुट्ठियन। अरिन सेन संमुह [3]परे॥
त्रिघोष सह बज्जैत सब। सुवर लोह कट्ठे करे॥ छं० ॥ ५४८ ॥

युद्ध वर्णन।

छंद चिभंगी॥ कविचंद सुबरनं करै सुकरनं सूरह लरनं भर भिरनं॥
तिरभंगी छंदं नाग नरिंदं कथ्थ करिंदं दुष हरनं॥
[4]पढ़ मंदह मत्ता पुनि अठ मत्ता असु वसु मत्ता रस मत्ता॥
घन घाइ सघत्ता सूर सरत्ता में गल मत्ता करि धत्ता॥ छं० ॥ ५४६॥
बज्जै बर कोहं लग्गै लोहं छक्कै छोहं तजि मोहं॥
सूरा तन सोहं स्वामिन दोहं मत्ते ढोहं रिन डोहं॥
बर बान बिछुट्टै बगतर फुट्टै पारन घुट्टै धर तुट्टै॥
तरवारनि तुट्टै धम्भर लुट्टै अंग अहुट्टै गहि झुट्टै॥ छं० ॥ ५५०॥
बीरा रस रज्जं सूरस गज्जं सिंधुअ बज्जं गज गज्जं॥
अच्छरि तन मज्जं बरे बर जंजं चित्ते बज्जं मन मज्जं॥

(१) मो.-उत्सरि। (२) को.-जीपन (३) मो.-परै, करै।
(४) ए. कृ. को.-पर मंदह मन्तापुर नन्दी।

कायर रन भज्जं तजिज सलज्जं स्वामि सु कज्जं भर सज्जं ॥
जम दट्ठ सु सज्जे हथ्थह मज्जे छिन्छन छज्जे रिन रज्जे ॥छं०॥५५१॥

घायल सामंतों की शोभा।

सोरठा ॥ रिन मंते सामंत। घाइ अंग तज्जे घने ॥
मनो मत्त [1]मय मंत। बिना महावत रारि मिलि ॥ छं० ॥ ५५२ ॥

शूरवीरों का क्रोध में आकर युद्ध करना।

छंद भुजंगी ॥ कढै लोह कोहं दुदीनंति बज्जै ।
सजे तामसं राज सा [2]तुक्क तज्जै ॥
[3]कटे कंध सूरं मिले सार कोहं।
सना हंत सूरं फिरैं [4]बेस सोहं ॥ छं० ॥ ५५३ ॥
उड़ै टोप टूकं बजै सार घंटै ।
मनो अग्ग दंगी लगी बंस फुट्टै ॥
मनों मीन माया जलं सब्ब तुट्टै ।
.... ॥ छं० ॥ ५५४ ॥
असी मंस तुट्टै करं कंस हल्लै ॥
मनो कग्गदं काल बूतं सु चल्लै
सु भट्टं सु सूरं कुघट्टं सु कीनं ।
उलट्थं सभेजी घृतं जान थीनं ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
चढ्यौ पावसं जद्दवं संभरेसं ।
दलं बद्दलं सद्दलं तं नरेसं ॥
घनं घोर घंटा निसानं दिसानं ।
तिनं भूलियं सब्ब आषाढ मानं ॥ छं० ॥ ५५६ ॥
झबै दामिनी तेग वेगं प्रमानं ।
पड़ै भट्ट बीरं बुलै मोर बानं ॥
लगै बाइ बुट्ठे सरं सार गोरी ।
रुधिं नार मानो प्रवाहै स [5]जोरी ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-में । (२) मो.-सात्विक्क ।
(३) ए. कृ. को.-कढ़े । (४) ए. कृ. को.-त्रेस । (५) ए.-जारी ।

करैं कायरं चीय करुना प्रमानं।
लगै बाह कालंदि चंपे समानं॥*
जनं चीय जंपी उनं पीय जंप्पौ।
सोई ओपमा चंद बरदाइ थप्पौ॥ छं० ॥ ५५८॥

कवि का कथन कि उन सामंतों की जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

दूहा॥ देवप्पति देवह सु दुति। मति सामंत सधंत॥
जिन अच्छरि सच्छरि कहैं। सो जस बढि बर कंत॥ छं० ॥ ५५९॥
गाथा॥ जस धवली बर बढयं। चय लोकं साध [1]यौ तरयं॥
जानिज्जै परिमानं। सतं समुद्द सींचयो [2]नीरं॥ छं० ॥ ५६०॥
छंद लघुचोटक॥ मिलि जुद्ध मच्यौ। रन षेत रच्यौ॥
सम सार सच्यो। नव एक मुच्यौ॥ छं० ॥ ५६१॥
रस बीर पच्यौ। तन रारि [3]तच्यौ॥
कहँ जाई वच्यौ। .... ॥ छं० ॥ ५६२॥
जुग्गनि जितनी। किलकें तितनी॥
घन घाइ घुरैं। पट सीस परैं॥ छं० ॥ ५६३॥
दोउ वीर बड़े। लगि लोह अड़े॥
घट घाइ पड़े। भुर होइ झड़े॥ ५६४॥
सस केस डफै। तन सों तड़फै॥
फिफरा फड़कै। कढि सों कड़कै॥ छं० ॥ ५६५॥
पग हथ्थ परैं। ढी चाल [4]ढुरैं॥
धक धींग धकें। मुष मार बकें॥ छं० ॥ ५६६॥
रस बीर छकें। हक हूक हकें॥
बहु सूर सरें। नृप भार परें॥ छं० ॥ ५६७॥

---

* ए. कृ. को. प्रतियों में इसके आगे ये दो पंक्तियां हैं।
उनै मैन त्रासं उनै सत्र सारं। लभ्यो काइरं कामनी ना प्रभासं॥

(१) ए. कृ. को.-सो। (२) मो.-नीयं।
(३) ए. कृ. को.-रच्यौ। (४) मो.-ढरे।

कमधज्ज के बीर खवास का युद्ध और पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सुबर बीर षावास भिरि। मुकि सु धाम धमारि ॥
सो ओपम कविचंद कहि। झुकि कट्ठी परिहार ॥ छं० ॥ ५६८ ॥
अरिल्ल ॥ मोह पारि जिन छंडिय सूर। तिरन बीर भारथ्थह पूर ॥
दैव जुद्ध आकृत्ति अबुद्ध। कढ़े लोह दुव कोदह जुद्ध ॥ छं० ॥ ५६६ ॥
छंद विराज ॥ कढ़ै लोह बीरं। महा मल्ल तीरं ॥
हको हक्क वज्जी। गिरं जानि गज्जी ॥ छं० ॥ ५७० ॥
कढें मत्त मंती। अट्टतं न दंती ॥
वहै लोह सारं। प्रहारंत भारं ॥ छं० ॥ ५७१ ॥
झनंके झनंकी। रथं भान थक्की ॥
हलक्कंत सूरं। बजे देव तूरं ॥ छं० ॥ ५७२ ॥
उतं मंग तुट्टै। [1]घरी दोम लुट्टै ॥
घरी इक जानं। सु भारथ्थ मानं ॥ छं० ॥ ५७३ ॥
दूहा ॥ सुबर बीर षावास षिजि। कट्ठी बंकी असि ॥
सोभै सीस गयंद कै। मनुं तेरस कौ ससि ॥ छं० ॥ ५७४ ॥

खवास तो मारा गया परंतु उसका अखंड यश युगान युग चलेगा।

कवित्त ॥ सुबर बीर षावास। षिम्भि कट्ठी सु बंकि असि ॥
सुभै सीस गज राज। अद तेरसि कि बाल ससि ॥
मुट्ठि चंपि द्रग पानि। नीर बानं सुद्धारह ॥
मनु मुत्तिय वारुन्न। बंदु बंधे इन बारह ॥
साम रम देन पावरि धनि। स्वामि सु अंतर फुनि मिलिय ॥
जीरन [2]युमास संदेस सदि। गल्ह एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ ५७५ ॥

खवास के मरने से कमधज्ज को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने मंत्रियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए।

(१) मो.-धरी। (२) ए. कृ. को.-जुगा।

सुबर बीर कमधज्ज। राज संमुह अरि झारिय ॥
मरन षूंज षावास। मरन अप्पनौ विचारिय ॥
सब सु सथ्थ पुच्छयौ। तंत मंतह उच्चारिय ॥
सकल मंत रजपूत। मंत मो देहु सुचारिय ॥
हारिये धूंम जित्त सुसब। ता उप्पर तन रष्पियै ॥
मो मंत्त सुनौ तौहूं कहूं। दुज्जन दल बल भष्पियै ॥ छं० ॥ ५७६ ॥

मंत्रियों का कहना कि समय पड़ने पर सुग्रीव, दुर्योधन, श्री रामचन्द्र, पांडव, अर्जुन इत्यादि सब ने अपनी अपनी स्त्रियों को छोड़ दिया।

एक समै सुग्रीव। चिया रष्पी न अप्प बल ॥
एक समै दुरजोध। क्रन्नि पुक्कार मंडि कल ॥
एक समै श्रीराम। चिया अप्पनी न रष्पी ॥
एक समै पंडवन। चीर कढ्ढत द्रग लष्पी ॥
रष्पिय न गोप पारथ बलिय। ससि सुबैर तारक्क बर ॥
न्निघात वात गोविंद बिना। जीव रषिन सर्बंग गहि ॥छं०॥५७७॥

कमधज्ज के मंत्रियों के मंत्र देने के विषय में कवि की उक्ति।

दूहा ॥ भल भल तुरी चढंत बर। तिन अप्पारन अषार ॥
मरन जानि भूनंग हर। कट्टर चढ़े तुषार ॥ छं० ॥ ५७८ ॥
कवित्त ॥ सु कवि गत्ति ननग्रही। कु कवि गतिय सु क्रम बदन ॥
सलिल बानि बोलै न। कढिन कुव्वचन सु स्वदन ॥
छूटत षोट कवित्त। चित्त लहु गुरन प्रकासं ॥
अघट घाट गुन करै। घाट सुद्धं न प्रगासं ॥
अच्छरि सुरंग जै जै करहि। बेन प्रस्तावन पढ्ढियै ॥
घन घट्ट थट्ट झुझ्यौ करैं। कुकवि जे महि चढ्ढियै ॥छं०॥५७९॥
दूहा ॥ फेरि पंति पारस सु दत। अगति करी नहिं गत्ति ॥
जिन सांई सधनौ कला। बनि सामंति सु मत्ति ॥ छं० ॥ ५८० ॥

मंत्रियों के मंत्र के अनुसार कमधज्ज ने अपनी अनी मोड़ ली।

सुनति मत्ति पारस फिरि। सुभट सेन कमधज्ज॥
एक लष्ष दल लष्ष में। धनि सामंत सु रज्ज॥ छं० ॥ ५८१ ॥

कमधज्ज की सेना के फिरने से सामंतों का दिल बढ़ा।

गाथा॥ लग्गा दल बल कलनं। सिंधुर असमान सीस गोरनयं॥
बल बल्या सामंतं। कायर कर षेव सूर कम[1] छलयं॥ छं० ॥ ५८२ ॥
दूहा॥ [2]बल छचिय मंचिय तरन। भिरि भंजै गज दंत॥
रंभ अरंभन ढूंढए। अच्छे अच्छरि कंत॥ छं० ॥ ५८३ ॥
झुकि भारी भगवान भिरि। राम कुलह कुल चंद॥
सार सार संमुह [3]भिज्यौ। स्वामि सु मेटन दंद॥ छं० ॥ ५८४॥
रघुवंसी कमधज्ज झुकि। बंध सु पंग नरिंद॥
सो ओमें देखो सबर। कहि तत्तौ कविचंद॥ छं० ॥ ५८५ ॥
वसि कीनौ सामंत जुरि। बल अबुद्धि बुद्धि धेन॥
छिति संग्रह संग्राम किय। वल बलिष्ट बल तेन॥ छं० ॥ ५८६ ॥
गाथा॥ डंकौ काल उल्लारे। उल्लारंत मत्त नो हथ्थी॥
मत्तौ मत्त सुमंतं। सो दिट्ठो भारथं नथ्थी॥ छं० ॥ ५८७ ॥
कवित्त॥ कहै मात बड़ कीय। सुरत मत्तौ अप्पारै॥
दुति पहार संभार। बीर बीरह [4]बिचारै॥
रुधिर बूंद कंदल। परत कंदल परि उट्ठै॥
सार धार निरधार। सार धारह असि बुट्ठै॥
चावंड राइ दाहर तनौ। तिन बोहिथ चढ़ि उत्तरै॥
बीजलह दाग तिलकं मिसह। अदग दग्ग नहि विस्तरै॥ छं०॥५८८॥
गाथा॥ सो दग्गंत तिलकानं। सो दिष्टाय सारयो सरयं॥
अपकित्तौ मिस दग्गं। ना लग्गंत तासयं कुसलयं॥ छं० ॥ ५८९ ॥

जिस कुल में चामुंड है उसको दाग नहीं लग सकता।

दूहा॥ तिन कुल दग्ग न लग्ग बर। जिन कुल बल [5]चावंड॥
दोष रहित अच्छरि अमी। किए षंड पाषंड॥ छं० ॥ ५९० ॥

(१) मो. छलनं। (२) ए. कृ को.-छल। (३) ए. कृ. को. पज्यौ।
(४) मो.-सुविचारै। (५) ए. कृ. को.-चामंड।

अरि मंडल षंडल करन। तिरन मोह मति [1]सिंध॥
रस्स बली बीरा विषम। लै भारथ्थ सकंध॥ छं०॥ ५९१॥

दुपहर के समय कमधज्ज की फौज फिर से लौट पड़ी।

कंध बंध संधिय निजर। परी पहर मध्यान॥
तब बहुर्‌यौ पारस फिरिय। फिर्‌यौ [2]भीछ चहुआन॥ छं०॥ ५९२॥

कमधज्ज और चहुआन खड्ग लेकर क्षत्री धर्म्म में प्रवृत्त हुए।

कवित्त॥ छल संज्ज्यौ बल जोग। बुद्धि बलजोग पसारिय॥
चाहुआन कमधज्ज। षग्ग षचीवस डारिय॥
रत्तन जुद्ध विरुद्ध। सद्द सद्दह मति कीनी॥
चावहिसि विढ्ढुरै। बीर बीरं रस पीनी॥
संग्राम धाम धंमार परि। काम धाम धम्मार तजि॥
सामंत सूर सांमत बर। धीर बीर धारहति लजि॥ छं०॥ ५९३॥

शूरवीर हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर पछाड़ने लगे।

दूहा॥ में लज्जानी लज्ज बर। गब्ब दब्ब सामंत॥
अंत अलुभ्भय पंति पय। भिरि भंजै गज दंत॥ छं०॥ ५९४॥
भै दृत्त अदृत्त सरीर गति। सिंध सरोज सु पान॥
सूर बदौं सामंत दुज। जिन अप्पै जिय दान॥ छं०॥ ५९५॥
जीव दान अप्पन सु दृत। दल दंतिय बढ़ि कंत॥
हनूमान जिम द्रोन बर। बारधि मंत [3]सुपंति॥ छं०॥ ५९६॥
चौपाई॥ बार बारधि बर पंति सुमान। सूर धीर सामंत सुजान॥
दल बल बल विछोरहि बीर। षग्ग मुष झलकंतह नीर॥ छं०॥ ५९७॥

महाभारत में अर्जुन के अग्निबाण के युद्ध से इस युद्ध की उपमा देना।

कवित्त॥ षग मुष बर चढ्ढिये। धाइ तुट्टै है राजं॥
बार बार हक्कही। करै अग्या बिन साजं॥

(१) ए. कृ. को.-छंध, छद। (२) मो. भीच। (३) ए. कृ. को.-सुपाति।

[1]बाल स्वामि अग्गा। विभंग चित ओपम चंदं॥
चिय कठौर निर्ब्बन्न। क्रमै अग्गा गुन मंदं॥
करतलह सु कवि कित्तिय सुवर। पथ थक्कै आजान जिम॥
भारथ्थ वीर पारथ्थ जिम। अग्गिवान सामंत [2]भ्रमि॥छं० ॥५९८॥

घोर संग्राम का वर्णन।

छंद हनूफाल॥ इति हनूफालय छंद। कवि पढ़ै भारथ चंद॥
भ्रम भ्रमहि बीर प्रकार। ज्यों चक्र चक्रिय धार॥ छं० ॥ ५९९ ॥
घरि घट्टै एक विघट्ट। बर बीर भंज्या पट्ट॥ छं० ॥ ६०० ॥
दूहा॥ पट्टन भंज्या बीरवर। ज्यों दच्छीच सु अस्ति॥
देवकाज बज्जी लियौ। सोइ बर तत्त सबत्ति॥ छं० ॥ ६०१ ॥
कवित्त॥ बस चत्तीस प्रकार। घाइ बज्जै घट घुम्मै॥
मार मार उच्चार। सार सारहु बर झुम्मै॥
एक मार संमार इक। सु मारति तै मारै॥
एकं झार उझार। एक जारति उझ्झारै॥
घरि एक तरंगनि जक्कि जल। कमल जानि नंचौति सर॥
सामंत सूर सामंत बल। पहरं बज्जि बज्जे पहर॥ छं० ॥ ६०२ ॥
दूहा॥ पहर बज्जि पर पहर बर। पहर पहर आवत्त॥
मत्त दंत मद्दह सुकै। वान राज साहत्त॥ छं० ॥ ६०३ ॥
बान राज साहत्त दुति। छिति छत्री आकार॥
धन्नि सूर जे अंग में। धनि [3]झिल्लै सु दुधार॥ छं० ॥ ६०४ ॥
गाथा॥ दुद्धार सार सहियं। हय गय नर बीर बीरायं॥
जुद्धिय धीमति धीमं। सा बीरं बीरयो राजं॥ छं० ॥ ६०५ ॥
बीरं राजिय बीरं। बीरं बीरं सु बीर मुष बीरं॥
बीरं होइ सबीरं। सो बीरं उव्वियं नथ्थी॥ छं० ॥ ६०६ ॥
दूहा॥ नथ्थह मुच्चौ बीर बर। वल बंकम घट घाइ॥
घरी एक आचिज्ज भौ। जोति मग्ग विरुझाइ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) मो.-ज्यों वाजि। (२) ए. कृ. को.-भरि।
(३) मो.-झेलै।

छंद भुजंगी ॥ विरुझाय उट्ठे रनं रोस बीरं । महा मत्त दंतीन की पंति भीरं ॥
गहै दंत धावै सु वाहै पचारै । महा मत्त बोलै सुवारं अषारै ॥
छं० ॥ ६०८ ॥
कली क्रित्त कूदं करै दूरि दंदं । वजै सार सारं महा काल मंदं ॥
महा ठट्ट घट्टै अहुट्टै जु थट्टं । बजै घाइ ऐसे बकै जानि भट्टं ॥
छं० ॥ ६०९ ॥
रुधिं धार रत्ती सु भत्ती उछारै । इसी बीर बत्ती सु भारथ्थ भारै ॥
छं० ॥ ६१० ॥

दूहा ॥ भारथ्थह नथ्थौ सुहत । अहत दत्त गति देव ॥
जिन सांई दुज्जन हत्यौ । सो सांई प्रति सेव ॥ छं० ॥ ६११ ॥
सेव देव देवन सुबल । रुंधत गिद्ध सु मंस ॥
मोह पान माया सुहत । उडत मुक्कि तिन हंस ॥ छं० ॥ ६१२ ॥
हंसन हंसिय हंस बर । मुगति सरोवर बौय ॥
तनु छंड्यौ उह मंडि कै । निसा भ्रम्म नह नीय ॥ छं० ॥ ६१३ ॥
हू सांई पर हथ्थरें । [1]परम तंत पद पाइ ॥
देवग्गिरि भंजन मती । रा चामंड विरुझाइ ॥ छं० ॥ ६१४ ॥

कवित्त । रा चामंड जैतसी । राम बड़ [2]गुज्जर बुल्लिय ॥
वलियभद्र बलिराम । सार धारह मति घुल्लिय ॥
कलह कित्ती विस्तरै । राइ निड्डुर सम सारं ॥
दुहू बोल दुअ चरन । मरन कित्ती [3]अधिकारं ॥
बैकुंठ लेन लिन्ने सु षग । विहँग मग्ग पंषी सुगति ॥
नरसिंह सिंह छंडै नहै । सार धार मारह दिपति ॥ छं० ॥ ६१५ ॥

गाथा ॥ सारं धार वरदियंति । रुधिरं छंडेव सूरयो अंगं ॥
जानिज्जै मधु मासं । सा फूलेव पष्परो वनयं ॥ छं० ॥ ६१६ ॥

अरिल्ल ॥ रत्त सु रत्त सु बीर उडाइय । घाइ मृदंग उपंग बनाइय ॥
के माया मोह ग्गति छंडै । काल दंड कालह क्रत छंडै ॥ छं० ॥६१७॥

दूहा ॥ काल दंड षंडन करै । भिरै बीर भारथ्थ ॥
सुबर बीर सामंत गति । दै दुवाह पारथ्थ ॥ छं० ॥ ६१८ ॥

(१) मो.-मुगति परम पद पाय । (२) मो.-गूजर । (३) मो.-अवधारे ।

पारथ पारत्थिय सुदत्त । सारथ्थिय चहुआन ॥
मानहु बीर समुद्र गति । तिरन मते भ्रम पान ॥ छं० ॥ ६१९ ॥

प्रातःकाल से युद्ध होते संध्या हो गई और कमधज्ज की सेना मुड़ गई परंतु चौहान की सेना का बल न घटा।

भ्रम्म पार सामंत बर । उदै अस्त भौ भान ॥
बहुरि पंग पारस फिरिय । बल न घट्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६२० ॥

दोनों सेनाओं के बीर युद्ध से संतुष्ट न हुए तब इधर से भीमराय और उधर से मृत षवास के भाई ने क्रुद्ध होकर धावा किया।

कवित्त ॥ बल छंड्यौ न विराज । सूर उभै दुअ पासं ॥
जंघारौ रा भीम । स्वामि सन्नाह सुभासं ॥
दुह वाहां सामंत । दून दह दहु अधिकारिय ॥
अमर बधं षावास । षग्ग षोल्यौ षिझि सारिय ॥
जंघार राव जोगिंद बर । भुगति मुगति अप्पन अनिय ॥
तामस [1]न बुझ्यौ दोउ सेन कौ । वजि निसान आभा धुनिय ॥
छं० ॥ ६२१ ॥

गाथा ॥ आभ सुनिय सु देवो । बज्जे साराइ मुंदरे बज्जे ॥
नीसानं निसि सारं । साहारं [2]पारषं हाई ॥ छं० ॥ ६२२ ॥

दूहा ॥ पर पषत्त पविच्च गति । रा निड्डुर राठौर ॥
बंधु दोष जान्यो नहैं । स्वामि भ्रंम पति मौर ॥ छं० ॥ ६२३ ॥

स्वामिकार्य्य के लिये जो शरीर का मूल्य नहीं करता वही सच्चा स्वामिभक्त सेवक है।

कुंडलिया ॥ तजिय पुंज षावास बर । तिरन तुंग तन अप्प ॥
चरन लग्गि बंछ्यो मरन । सो सांइ भ्रत तप्प ॥
सो सांई भ्रत तप्प । जन्म जानत जंजारे ॥

(१) ए. कृ. को.-तज्यो न। (२) मो.-पारखा।

.... ॥

मयन मत्त विच्छुरिय । मोह पारी तजि पग्गिय ॥
धनि निड्डुर रट्ठौर । स्वामि छल स्वामि सु जग्गिय ॥ छं० ॥ ६२४ ॥
गाथा ॥ जग्गिय स्वामित कामं । भ्रमियं बीर बीर विस्तारं ॥
तिम तिम तामस तेजं । सेनं सज्जि मुक्ति साधीरं ॥ छं० ॥ ६२५ ॥

शशिवृता का व्याह धन्य है जिस में अनन्त वीरों को मुक्ति मिली।

मुक्ती धारन धीरं । पंजर सज्जेव मथ्थनो परयं ॥
बर ससिवृत्त सु व्याहं । दाहं देहाइ दुष्षनो तजयं ॥ छं० ॥ ६२६ ॥

कमधज्ज के दस बड़े बड़े शूरवीर थे वे दसों इस युद्ध में काम आए।

दूहा ॥ देह दुष्ष कट्ठिय सुक्कम । रन जित्तिय सुग पान ॥
पंच दून पंचो परिग । सुनिय बीर रस पान ॥ छं० ॥ ६२७ ॥
गाथा ॥ परियं बीरति नामं । सुरति चौदूह नंदह घट्टी ॥
सजले सूर सुधारी । भारी भरनेव भारथं भिरयं ॥ छं० ॥ ६२८ ॥

कमधज्ज के जो वीर मारे गए उन के नाम।

दूहा ॥ परे सूर तिन नाम कहि । बरनत बनै विसेष ॥
देव देव अस्तुति करहिं । नाग रह्यौ सिर सेष ॥ छं० ॥ ६२९ ॥
छंद भुजंगी ॥ परे बीर बीरं तिनं नाम आनं ।
पर्‌यौ पुंज राजं महा [1]वीर थानं ॥
पर्‌यौ देव सिद्धंत सादुल्ल बंधं ।
मुर्‌यौ पग्ग नाहीं भयो रंध रंधं ॥ छं० ॥ ६३० ॥
पर्‌यौ किल्ह कामं जु जद्दौ जुवानं ।
तिनं कट्ठिया जेन गयदंत मानं ॥
पर्‌यौ बीर भट्टी कियौ अंग घट्टं ।
जिनें मोरिया पंग रा मीच थट्टं ॥ छं० ॥ ६३१ ॥
पर्‌यौ राइ राइं अजम्मेर सूरं ।

(१) ए. कृ. को. वध ।

जिनं स्वामि भ्रंमं तज्यौ सिंध पूरं ॥
पर्‌यौ अंग अंगं सु जर्जोन रायं।
लगे पंच दूनं महा बीर घायं ॥ छं० ॥ ६३२ ॥
परे पंच बंधो बलीभद्र बीरं।
जिनें अंग अंगं कियौ सा सरीरं ॥ छं० ॥ ६३३ ॥

कवित्त ॥ परत देव वर क्रंन। सरन रष्पन सांई बर ॥
परि मुष रन पुंडीर। सार सारंग देव धर ॥
पर्‌यौ बीर बलिभद्र। जात पॅावार पविचं ॥
धार धनी चढि धार। सलष लष्पन दुति मंचं ॥
लाषन्न सिंह भुज पाइ बर। अरिन पाइ उठ्ठाइ लिय ॥
धनि धन्नि सूर सामंत बर। जुग जीरन जीरन सुजिय ॥छं०॥६३४॥

शूरवीरों की प्रशंसा।

दूहा ॥ जुग जीरन जीरन सुबर। चरन कित्ति सा किड्ड ॥
सुबर बीर सामंत बर। गत्ति न पुज्जै सिड्ड ॥ छं० ॥ ६३५ ॥
सिड्ड न पूजै गत्ति तिन। छाया मोहन माय ॥
इन छाया मंडी तहां। भ्रंम छांह रहि छाइ ॥ छं० ॥ ६३६ ॥
भ्रंम छांह रहि छाइ बर। करिय सूर सामंत ॥
सो करनी करिहै न को। करिय बीर गुन मंत ॥ छं० ॥ ६३७ ॥
गुननि मंत गंभीर गुर। जै जै सद्द सु सिड्ड ॥
बरन बिहुसि बरनिय बरहि। रंभ अरंभन सिड्ड ॥ छं० ॥ ६३८ ॥

गाथा ॥ रंभा अरंभ वरयौ। अच्छी अच्छीव अच्छरी सरनौ ॥
केकी गवनी कित्ती। साकित्ती बंधयौ रष्पी ॥ छं० ॥ ६३९ ॥

चौपाई ॥ बड्डि रष्पि कित्तिय परिकार। सार सिंध उत्तर बन पार ॥
जोग सिड्ड जोगाधिय अंत। बजि डक डमरु उमया कंत ॥छं०॥६४० ॥
उमा कंति जोगाधि सु जानै। बीर सगुन बीरा रस मानै ॥
जै जै सद्द भयौ तिन वार। राज द्वार घरियार विभार ॥छं०॥६४१॥

दूहा ॥ राज द्वार घरियार बजि। सार बज्जि रति सार ॥
सूर सुमति सामंत की। बीर उतारन पार ॥ छं० ॥ ६४२ ॥

छंद चोटक ॥ सु उतारन पारति बीर भटं । घटकै घन नह उमह घटं ॥
झननंकत हथ्थत हथ्थ करं । मनु पाइक पंति पुँतार बरं ॥
छं० ॥ ६४३ ॥

किधों केवल की मुगती मति पान । किधों रस [1]बीर विश्रम सु मान ॥
किधों करुना करकै किधु काम । मनों मय मत्त भिरं रस जाम ॥
छं० ॥ ६४४ ॥

किधों विधि बंधन बंधहि जोर । पढ़े दोउ मंच सु बीरह और ॥
करै दोउ बीर दुहाइय मुष्ष । मनो रवि उग्गव मासम पुष्ष ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

दूहा ॥ पुष्ष मास रवि उग्गयौ । भूमि न छिचन सीस ॥
मनहु बुद्ध बंदन सु बुधि । करन काम क्रत ईस ॥ छं० ॥ ६४६ ॥
क्रतन ईस बल बुद्धि बल । बुद्धि पराक्रम संधि ॥
सुबर बीर संग्राम गुन । अति गुन निर्गन बंधि ॥ छं० ॥ ६४७ ॥

गाथा ॥ बंधे बुद्धि सु धारे । प्राहारे बीर सु भहायं ॥
निजतं नेह सुधारी । आहारी अंकुरी बीरं छं० ॥ ६४८ ॥

दूहा ॥ अंकुरि बीर शरीर गति । सुभट सुथट्ट सुभट्ट ॥
अघट घट्ट नह कियो परै । परे बीर दह पट्ट ॥ छं० ॥ ६४९ ॥

कमधज्ज का स्वेत छत्र देख कर चामुंड राय का उसे काट देना और सब सेना का आश्चर्य और कमधज्ज की सेना में हाय हाय मच जाना।

कवित्त ॥ हाइ हाइ आरिट्ठ । दिट्ठ अंबरिय सूर बर ॥
मुकि कर बल चामंड । करहु गोलक उप्पर धर ॥
गोलक तुंबा भग्ग । बंध भग्गै चहुआनं ॥
स्वेत छच दिषि सीस । पर्‌यौ कमधज्ज निधानं ॥
घरी एक विभ्रम भयौ । सार सार प्राहार बर ॥
जानै कि मत्ति दंतिन कला । कूट मंच धारह सुधर ॥ छं० ॥ ६५० ॥

(१) ए. कृ. को.-वीरा रस, वीर रस ।

दूहा ॥ धारा हर बित्यौ सुधर । चर चरिष्ट चतुरंग ॥
रा निड्डुर रट्ठौर बर । रुप्यौ षेत भ्रत भंग ॥ छं० ॥ ६५१ ॥

गाथा ॥ पंगुर पाइ सुधारं । पंगु भयौ चित तिन बीरं ॥
नह पंगुर कर मैंनं । पंगुर नां सूरयौ बैनं ॥ छं० ॥ ६५२ ॥

दूहा ॥ बयन सूर चंचल भइय । निहचल पग सिर नाग ॥
अदग दग्ग भंजै सकल । करत अदग्ग न दाग ॥ छं० ॥ ६५३ ॥
अदग दग्ग मग्गिय सु छत । बर बीरा रस पान ॥
छित्ति छित्ति स्वामित्त गति । सु कति सु अप्पन बान ॥ छं० ६५४ ॥

कवित्त ॥ घरी इक्क इक रंग । रंग सवरथ्थ बिछोरिय ॥
पगी जानि पारष्ष । जेम दरिया हिल्लोरिय ॥
यों [1]षग धपि दोउ सेन । सूर सामंत विलोकिय ॥
मनों मत्त उठि द्रष्टि । पिय बीयोग विसोकिय ॥
झुंम्मयौ धार धारह धनी । सुनिय कित्ति मित्तह पनौ ॥
सामंत सूर सामंत गुन । सु [2]बर बीर सत्तह सुनौ ॥ छं० ॥ ६५५ ॥

छंद रसावला ॥ सार बुट्ठी अनी । मत्त मत्तं धुनी ॥
कूह मच्ची घनी । अंत तुट्टै रनी ॥ छं० ॥ ६५६ ॥
बीर बीरं अनी । देव बज्जी धुनी ॥
नेह भंज्यौ षनी । काल [3]जैसो पनी ॥ ६५७ ॥
बीर बीरं बनी । रत्त रंगं रनी ॥
सार सारं धुनी । जोति मग्गं जनी ॥ छं० ॥ ६५८ ॥
पिंड सारे घनी । कब्बि [4]चंदं तनी ॥
.... । मुक्ति [5]लुट्टै फनी ॥ छं० ॥ ६५९ ॥

दूहा ॥ फनि मनि लुट्टन काज गुर । भौ गुर इत गुर देव ॥
सार सूर संमहौ भिरिय । बरन पष्ष मुष सेव ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कमधज्ज का छत्र गिरने से शूरवीरों को भय न हुआ।

(१) मो.-षग्ग। (२) मो.-बीर, बीर।
(३) मो.-जैसें, जैसे (४) ए. कृ. को.-चित (५) मो.-लुट्टें।

गाथा ॥ लग्गिय चास न सूरं। बीरं सुभटाइ मत्तयो दंती ॥
जानिज्जै परिमानं। भारथ्थं बीरयो कंती ॥ छं० ॥ ६६१ ॥
दूहा ॥ हल देवत विछुरत्त बर। परषिय जंपहि जोग ॥
सुबर सूर सामंत गुन। [1]अग्ग मत्त [2]मति भोग ॥ छं० ॥ ६६२ ॥

स्त्रियों की प्रशंसा।

भोग जोग दुअ बिद्वि बिध। दान भुगति संगाइ ॥
चीय कहै नट्ठै सु चिय। चियन गती मुह पाइ ॥ छं० ॥ ६६३ ॥
चियन गत्ति पावहि पुरुष। धरन धरत्तिय ताम ॥
सूर धीर सूरह भिरत। वर विश्राम तजि जान ॥ छं० ॥ ६६४ ॥
चौपाई ॥ एक एक उट्ठै परिमानं। सुमति मंत मंचिय गुरु दानं ॥
[3]षग्ग टेकि बाहै बर षग्गं। ज्यों बावन छलि भूमि [4]विगंगं ॥ छं० ॥ ६६५ ॥
दूहा ॥ भुमि विभग कीनिय सुहृत। देवत्तह प्रति देव ॥
मद्दन रंभ मच्यौ सु भर। गुन श्रम न ग्रभ भेव ॥ छं० ॥ ६६६ ॥
मरन सीस मुक्यौ सु वसु। रस पारायन देव ॥
दुतिय मुतिय दुति बैर तिन। भ्रम भग्गा जुग भेव ॥ छं० ॥ ६६७ ॥
अहृत वृत्त विभ्रम [5]भइग। हय गय दुल चतुरंग ॥
चाहुआन कमधज्ज सों। भय बीरा रस भंग ॥ छं० ॥ ६६८ ॥
गाथा ॥ भौ बीरा रस भंग। जंग जुग तीय बीर सु [6]भट्टाइं ॥
सद्धिर सुद्धिर सुघटं। साठट्ठई घट्टयौ भंगं ॥ छं० ॥ ६६९ ॥

रात्रि का कुछ अंश बीतने पर चन्द्रमा का उदय हो गया और दोनों सेनाओं के बीर विश्राम के लिये रण से मुक्त हुए।

मुरिल्ल ॥ ठट्ठ सेन [7]भग्गौ चतुरंगह। लुधिय लुधिय आलुधिय विभंगह ॥
कल किंचित किंचित रस भारी। इते अस्तमित भानं [8]सारी ॥ छं० ॥ ६७० ॥
गाथा ॥ अस्तमितं [9]बर भानु। पायानौ परम संतोषं ॥
जानिज्जै जस बंधुअं। नव चंदनं तिलकयौ दीयं ॥ छं० ॥ ६७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-स्वर्ग (२) को.-मनि। (३) मो.-खडग। (४) मो.-वगंगं।
(५) मो.-ए-भइय। (६) ए. कृ. को.-सुहृयं।
(७) ए. कृ. को.-भगौं (८) ए.-सारं। (९) ए. कृ. को.-मांनु सु भानु

चंद्रायना ॥ दुरि निसान गत भान भट्ट्ग बर।
सिंधु संपतौ जाइ तिमिर चढ़े गुर ॥
कुमुद विमुद अंकूर खूरातन धरियं।
मानौ तम को तेज सु तत्त उधरियं ॥ छं० ॥ ६७२ ॥

[1]मुरिल्ल ॥ बर भान संपतौ थान गुरं। [2]सरसीरुह उद्दित मुदित बरं ॥
बर बीर कमोदनि को सु गतौ। सु भए रिसिराज उदोतपतौ ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

सूर्य्योदय से भ्रमर चकवा चकई और शूरवीरों को आनन्द होता है।

दूहा ॥ निसि गत बंछे भान बर। भँवर चक्कि अरु सुर ॥
मंतह मत्त पयान गति। बर भारथ्थ अँकूर ॥ छं० ॥ ६७४ ॥

रात्रि को संयोगिनी स्त्री और रण से श्रमित सेना विश्राम करती है पर कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती।

कवित्त ॥ कुमुद उघरि मूँदिय। सु बंधि सतपच प्रकारय ॥
चकिय चक्क विच्छुरहि। चक्कि ग्रंथिट्टत्त निहारय ॥
जुवती जन चढ़ि काम। जाहि कोतर तर पंथी ॥
अट्टत दृत्त सुंदरिय। काम बट्टिय बर अंथी ॥
नव नित्त हंस हंसह मिलै। विमल चंद उग्यौ सु नभ ॥
सामंत खूर न्वप रषि कै। करहि बीर बीश्राम सभ ॥ छं० ॥ ६७५ ॥

गाथा ॥ विश्रामं वर लैहौ। खूरं खूरयौ धरयं ॥
धायं अंग विअंगं। जानिज्जै [3]कैतु यो लग्गी ॥ छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ तम बट्टिय धुंधर धरा। परष पयं पन मुष्ष ॥
तम्म तेज चावहिसह। जुभ्भनि भग्गि अरुष्ष ॥ छं० ॥ ६७७ ॥
जुभ्भ भग्गि आरुष्ष बर। रोकि रहिग बर स्याम ॥
सुबर खूर सामंत गुन। तम पुच्छे न्वप ताम ॥ छं० ॥ ६७८ ॥

---

(१) मो.-त्रोटक। (२) ए. कृ. को.-सरुही रुह उद्दित जर।
(३) ए. कृ. को.-केन, केत।

सहस्त्रों सेना में भी छिपा हुआ चहुआन का शत्रु बच नहीं सकता।

गाथा ॥ जै जै घर चहुआन । एकं होइ सथ्थयौ सूरं ॥
को रष्पो परमानं । अरि रष्पै कढ्ढयौ मच्छी ॥ छं० ॥ ६७९ ॥
चौपाई ॥ कोटि मझ्झि अरि होइ प्रमान ।
ता भंजै निश्चै चहुआन ॥
हरि शशिवृत्त जाइ पहु इंद ।
रुकमनि ब्याह बरिय गोविंद ॥ छं० ॥ ६८० ॥
गाथा ॥ गोविंदं प्रति ब्याहं । सनमानं सूरयो वृत्तो ॥
अप रष्पै अरि जुद्धं । रष्पै स्वामि मरनयौ अप्पं ॥ छं० ॥ ६८१ ॥

चहुआन के सामंत स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को कुछ वस्तु नहीं समझते और यह स्वभाव चहुआन का स्वयं भी है।

दूहा ॥ अप्प वृत्त इह सूर किय । सूर वृत्त चहुआन ॥
स्वामि रहै लज्जै जलनि । भौ वृत [1]वृत्तिय पान ॥ छं० ॥ ६८२ ॥
गाथा ॥ कालिंदी तन स्यामं । लग्गे नथ्थि अगनतं स्यामं ॥
भय अवि वृत्तिय तामं । अन्यं जानि तत्ततयो सारं ॥ छं० ॥ ६८३ ॥

सामंतों का पृथ्वीराज से कहना कि आप दिल्ली को जांय हम लड़ाई करेंगे।

अरिल्ल ॥ तत्त सार प्रति प्रत्ति प्रमानं । जाहु राज दिल्ली चहुआनं ॥
गुन बढ्ढे हम बढ्ढे सत्वं । दुष्प मानि सुनि सुनिय विरत्तं ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि सूर्य्य बिना चंद्र तथा तारागण से कार्य्य नहीं हो सकता, हनुमान के समुद्र लांघने पर भी रामचंद्र जी के बिना कार्य्य नहीं हो सका। मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जा सकता।

(१) मो.-वृतपौ ।

कवित्त ॥ दुष्य मानि सो रत्त । सुनै सामंत सूर बर ॥
[1]चंद उडग्गन काम । सर्‌यौ कहुं दिष्षि सूर नर ॥
भान काम नन सरें । अरुन जो होइ तेज बर ॥
काम राम [2]नन सरै । हनू [3]कूद्यौति लंक धर ॥
नन सरै काम मंगल सु विधि । जो मंगल आहत्त तप ॥
सामंत सूर इम उच्चरै । कढ्ढि मोहि झुझ्झहुति अप ॥ छं० ॥ ६८५ ॥

तुम्हें रण में छोड़ कर मैं दिल्ली में जाकर आनन्द करूं यह मैंने नहीं पढ़ा है।

दूहा ॥ मुहि कढ्ढिरु तुम रहौ बर । जियत जांहि उन थान ॥
ऐसी रीति अरीत वर । पढ्ढौ नह चहुआन ॥ छं० ॥ ६८६ ॥
गाथा ॥ जम्मन मिच्छि सुरंगं । सो जंपेव सूर तुम तत्तं ॥
दिन भौ रव संग्रामं । [4]सम्मान दारेति एव गसं ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का उत्तर सब को बुरा लगा परंतु किसी ने राजा की बात का उत्तर न दिया।

विष लग्गा नृप बैनं । हासा हलयो तत्तयो सूरं ॥
उत्तर दिय नह राजं । गाम निस भा बुद्धि जन बत्तं ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

कवि चंदादि सब सामंतों ने समझाया पर राजा ने न माना और यही उत्तर दिया कि शत्रु के साम्हने से भागने वाले क्षत्री को धिक्कार है, मैं प्रातः काल भारत मचाऊँगा।

कवित्त ॥ बार बार भर कहिग । राज मानै न तत्त [5]मत ॥
बीर चंद ता अग्ग । चलै प्रथिराज हारि गत ॥
मो भंजै अरि गज्ज । मोहि [6]मंजै अरि भंजै ॥

(१) मो.-चंद उगन काम सर्‌यौ । (२) ए. कृ. को.-तन । (३) मो.-उद्यौत ।
(४) मो.-समान दारें नित्य वगसं । (५) ए. कृ. को.-बत । (६) मो.-गंजै ।

ता छची कुल लज्ज । छच धरि सिर इति [1]लज्जै ॥
जं होइ प्रात दिष्षौ सकल । महन रंभ इत्तौ करौं ॥
चहुआन चिंत चिंतह सुरा। बर भारथ गुन विस्तरौं ॥ छं० ॥ ६८९ ॥

गाथा ॥ विस्तरि गुनयो प्रातं । रत्तं रत्त खूर बीरायं ॥
चावहिसि बर वीरं । सा धीरं मत्तयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९० ॥

सब का यह मत होना कि सूर्योदय से प्रथम ही युद्ध आरंभ हो जाय।

दूहा ॥ मत्ति बीर संमुह [2]भिरत । कठिन शस्त्र अति पान ॥
भान पयानह दीह गुन। लोह पयान पयान ॥ छं० ॥ ६९१ ॥

सूर्योदय से प्रथम ही फौज का तैयार हो जाना।

चोटक ॥ बिन भान पयानति लोह कढ़े ।
जल मत्तिय रत्तिय बीर पढ़े ॥
दोउ बीर दुवं दिशि धूंध धरी ।
कलहं तत केलिय ता उघरी ॥ छं० ॥ ६९२ ॥

रण मदमाते निढ़ढर का घोड़े पर सवार होना और साठ योधाओं को लेकर हेरावल में बढ़ना।

गाथा ॥ अंकुर बीर सुभट्टं । अघटं घट्टाइ क्रोधयो कलहं ॥
इय मुक्या चलि बंधी । निढुर सथ्थव सठयो बीरं ॥ छं० ॥ ६९३ ॥

शूरबीर लोग माया मोह को छोड़ कर आगे बढ़े।

दूहा ॥ बीर बीर बीराधि बर । [3]कढ़े लोह तजि छोह ॥
खूर धीर सामंत गति । नहिं माया नहिं मोह ॥ छं० ॥ ६९४ ॥

तीसरे दिवस का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ जिते खूर पत्ती । लगे लोह तत्ती ॥
नचे खूर छत्ती । उड़े काल पत्ती ॥ छं० ॥ ६९५ ॥

(१) मो.-भज्जै । (२) मो.-भिरन । (३) मो.-कढ़ढि ।

[1] जुटे जोध पत्ती। उडी रेन गत्ती ॥
महा बेन तत्ती। कला कोटि कत्ती ॥ छं० ॥ ६९६ ॥
ग्रवै ग्राव गत्ती। सुरं पंच छत्ती ॥
मचे कूह मत्ती। पचे रोस रत्ती ॥ छं० ॥ ६९७ ॥
करे घाव कत्ती। इसे सूर चित्ती ॥
गिए फल्ल सत्ती। घुमें घाइ घत्ती ॥ छं० ॥ ६९८ ॥
भजै भीम मत्ती। हनूमान जत्ती ॥
अनाभूत अत्ती। दिषे दारु दत्ती ॥ छं० ॥ ६९९ ॥
रुधिं धार [2]रुक्कं। भभक्कै भभक्कं ॥
धका धीग धक्कं। बकै मार बक्कं ॥ छं० ॥ ७०० ॥
इसे चित्त अक्कं। छुटे मत्त छक्कं ॥
डकारंत डक्कं। चिलोकंत हक्कं ॥ छं० ॥ ७०१ ॥
मनो मोह थक्कं। हको हक्क बक्कं ॥ छं० ॥ ७०२ ॥

युद्ध करते हुए बीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ हको हकि बजिय प्रकार। सार बज्जै सु बीर बर ॥
सु बुधि बुद्ध आबुद्ध। मत्त लग्गै असि वर झर ॥
इकत रुद्ध आरुद्ध। नह नारद अधिकारिय ॥
रंभ सिंभ आरंभ। सिद्ध बुद्धं दै तारिय ॥
धनि धनि सूर दिन धनित बल। छल छचिय अंकूर रजि ॥
कलहंत काल कालह विषम। सुबर बीर बीरत्त रजि ॥ छं० ॥ ७०३ ॥
दूहा ॥ बीर रजिज बीराधि भर। बलिय बीर गन सज्जि ॥
सुबर सूर सामंत के। मंत कलह तुटि बज्जि ॥ छं० ॥ ७०४ ॥
मंत कलह बज्जिय तुटहि। घटहि अघट तुटि मंस ॥
सुबर सूर सामंत कौ। बर उड्डै तन अंस ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
हंसति उड्डहि अंस दै। कंसत केसिय प्रान ॥
बर पंषिय पावै न जन। बर छुट्टै किरवान ॥ छं० ॥ ७०६ ॥

(१) यह छंद मो. प्रति में नहीं है। (२) मो.-रूक।

शूरवीर सामंतों का रणमत्त होकर विचित्र कौशल से शास्त्राघात करते हुए युद्ध करना।

रसावला ॥ पंष छुट्टै ननं। सूर मत्ते धनं॥
घाव बज्जै घनं। टूक टूकं तनं॥ छं० ॥ ७०७ ॥
आज इक्कं मनं। बान नंसं [1]धनं।
भीतकं विघ्घनं। कीय लीयं पनं॥ छं० ॥ ७०८ ॥
जच्च झुकझै बनं। जानि कुत्तालनं॥
षोदि कढ्ढै गनं। देव चढ्ढि विमनं॥ छं० ॥ ७०९ ॥
पेषि इक्कं मनं। कुहक बानं घनं॥
नारि छुट्टै पनं। .. ..॥ छं० ॥ ७१० ॥
गज्ज तें गग्गनं। सार वे सग्गनं॥
सिद्धता मग्गनं। लीह ज्यों लग्गनं॥ छं० ॥ ७११ ॥
इक्क इक्कं गनं। कुंभ इथ्थी [2]छिनं॥
रुद्धि धारा घनं। दुद्ध मानों थनं॥ छं० ॥७१२ ॥
दोड पट्टै दनं। ओप इभ्भै इनं॥
इष्प वेसं मनं। मन्न गिज्जं गनं॥ छं० ॥ ७१३ ॥
गोरियं छन छनं। टूक होयं रनं॥
सूर ह्वै तन तनं। नंमतं फन फनं॥ छं० ॥ ७१४ ॥
बार पारं जनं। रोस चट्टे रनं॥
लग्ग गे बंभनं। रुंड केसिं भनं॥ छं० ॥ ७१५ ॥
गिद्ध सिद्धं गनं। टारि रषवै तनं॥
दद्धि ज्यों उप्फनं। असि वाहै बनं॥ छं० ॥ ७१६ ॥
मीन जातं पनं। पिषषनं चिम्मनं॥
कोन को चिम्मनं। भूत प्रेतं धुनं॥ छं० ॥ ७१७ ॥
जुग्गनी जिम्मनं। पत्त भुत्तं तनं॥
नारदं नंचनं। मुत्ति मै मंचनं॥ छं० ॥ ७१८ ॥
अंमरं गंमनं। विष्टता सुंमनं॥ छं० ॥ ७१९ ॥

(१) मो.-घनं। (२) ए. कृ. को.-छिन, बिन।

शूरवीर स्वामिकार्य्य साधन करने के लिये बीरता से रण में प्राण दे कर पूर्व्व कर्म्मों की संधि को लांघ कर स्वर्ग पाते हैं।

कवित्त ॥ सूर संधि विधि करहि । क्रम्म संधौ जस तोरहि ॥
दुक्क लष्प आहुटहि । एक लष्पं रन मोरहि ॥
सुबर बीर मिथ्था । बिवाद भारथ्थह षंडै ॥
[1]बिच्चि बीर गजराज । बाद अंकुस को मंडै ॥
कलहंत केलि कालौ विषम । जुद्ध देह देही सु गति ॥
सामंत सूर भीषम बलह । स्वामि काज लग्गे ति मति ॥ छं० ॥ ७२० ॥

स्वामिकार्य्य में जो वीर रण में मारे जाते हैं उन का शिर श्री महादेव जी की माला (हार) में गुहा जाता है।

दूहा ॥ [2]स्वामि काज लग्गे सुमति । षंड पंड धर धार ॥
हार हार मंडै हियै । गुथ्थि हार [3]हर हार ॥ छं० ॥ ७२१ ॥
गाथा ॥ सिर तुट्टै षुर तारं । [4]लारं तुट्टि बीरयो सिरयं ॥
धर तुट्टै प्राहारं । सा बज्जै तारयं तारं ॥ छं० ॥ ७२२ ॥
तारं तार प्रहारं । देवल दरियाइ झल्लरी बज्जं ॥
बज्जं ते सिर सारं । प्राहारं पंच घट्टि कांई ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

तीसरे दिन एकादशी सोमवार को युद्ध होते होते पांच घड़ी चढ़ आई शूरवीर मार मार कर हाथियों की कला कला को पछलते जाते थे।

कवित्त ॥ घटिय पंच दिन घट्यो । उमरि आरब्ब पुंज घिरि ॥
एक दिना दोउ सेन । मोह छंड्यौ क्रम निक्करि ॥
बान गंग पत्तयौ । बीर ग्यारसि दिन सोमं ॥
सूर धीर सामंत । सूर उड्डे रन रोमं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-वेचि। (२) मो.-पति काज लग्गे तिमत।
(३) मो.-हाथ। (४) को.-लारयं।

क्रत काम काज सांई विभ्रम। दल दंतिय पंतिय[1]गमै ॥
सामंत सूर सांई विभ्रम। रोम रोम राजी [2]भ्रमै ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

इधर पृथ्वीराज ने शशिवृता की उत्कंठा पूर्ण की।

दूहा ॥ रोम राज राजी भ्रमहि। [3]थोर थनी तुंढि बाल ॥
उतकंठा उतकंठ की। ते पुज्जी प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

साटक ॥ साता से उतकंठ रंभति गुना रंभा अरं भावरं ॥
संधं बिद्धि सु सुद्ध कारन मिते देवंगना सुंदरी ॥
जा बंदे मिति चंद कारन मिते निर्भासितं भासितं ॥
पाषंडं तजि लीन सूरति वरं आरंभ पारं भनं ॥ छं० ॥ ७२६ ॥

सम्मिलन के प्रारंभ में पृथ्वीराज ने प्रण किया कि मैं तुझे तीनों पन में एक सा धारण किए रहूंगा।

गाथा ॥ आरंभं प्रारंभौ। उतकंठा किंनयौ हृतयं ॥
साधा धरी सु धरयं। रन छुट्टै तीनयौ पनयं ॥ छं० ॥ ७२७ ॥

यह वर पाने के लिये कवि का शशिवृता को धन्य कहना।

मुरिल्ल ॥ बालप्पन जुव्वन पन बीर। दई बीर बडपन्नह [4]धीर ॥
बडपन्नह मति सु तजि डिढाइ। धंनि लई तिहुं पन्न बड़ाइ ॥छं०॥७२८॥

दूहा ॥ बालप्पन जुवपनह गति। कथ तिय पनहति काज ॥
भर कहै न्रप राज गुन। नह चल्लै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७२९ ॥

पृथ्वीराज का अटल प्रेम देख कर पैर पकड़ कर शशिवृता का कहना कि दिल्ली चलिए।

नह चल्लै पृथिराज रिन। लज्ज लपट्टिय पाइ ॥
चय जोरै कर इथ्थ दो। चलि संभरि वै राइ ॥ छं० ॥ ७३० ॥

---

(१) मो.—गर्से, ग्रसें। (२) मो.-भूसें।
(३) मो.-घोरि। (४) मो.-भीर।

उक्त विषय पर पृथ्वीराज का बिचार में पड़ जाना कि क्या करना चाहिए।

लज्ज परब्बत ह्वै रही। बैन तजै न्रप पास ॥
दुहूं बीर [1]मंडन सु बुधि। अति गत्तिय रति चास ॥ छं ॥ ७३१॥

यह देख शशिवृता का कहना कि मेरी लज्जा रखिए।

फिरि बुल्ली लज्जी सुनहि। हों मंडन तन बीर ॥
मो बिन इक्क काज न्रप। बुद्धि न आवै तीर ॥ छं० ॥ ७३२ ॥

राजा का कहना कि तेरी सब बातें रस कसूम (अफीम के शर्बत) के समान मेरे जीवन भर मेरे साथ हैं।

तूं वै एकह पन रहै। रंग कसूंभ प्रमान ॥
हों नन छंडों पास तुअ। तीनों पनह समान ॥ छं० ॥ ७३३॥
तूं लज्जी मो सथ्थ है। दान पग्ग अरु रूप ॥
मों चल्लै तीनों चलैं। संची चवै न भूप ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
सुन रे वै लज्जी चवै। हूं मंडन नर लोइ ॥
मो बिन अप्पन [2]लद्ध है। नर [3]न्निभासन होइ ॥ छं० ॥ ७३५ ॥

शशिवृता का कहना कि मैं भी क्षण क्षण आपकी प्रसन्नता का यत्न करती रहूंगी।

बै बुल्ली लज्जी कलह। क्रत कै काम सुनंत ॥
इक्क पल पल मंडनौ। हेा रज्जन रजकंत ॥ छं० ॥ ७३६ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि चहुआन का धर्म ही लज्जा का रखना है।

अरिल्ल ॥ [4]लज्जी सुनि सुनि हसी प्रमान। तूं जानै सुनि [5]बैन निधान ॥
लज्ज रूप मंडन चहुआन। सुबर बीर [6]आकास निधान ॥ छं० ॥ ७३७॥

(१) मो.-मंतह। (२) मो.-लद्ध, लम्भ, लभ। (३) मो.-निर्भासन।
(४) मो.-लज्जा सुन रहसी प्रमान। (५) ए.-कृ. को.-वै सुन निधान। (६) मो.-आकार।

तू अपने धर्म अनुसार सत्य कहती है।

दूहा ॥ तूं लज्जी सच्ची चवै। तत लगि भ्रंम प्रकास ॥
आइत्तह गुन भ्रत्त किय। जोग सुंहदा चार ॥ छं० ॥ ७३८ ॥

इस प्रकार शशिवृता और पृथ्वीराज का परामर्श होता रहा, पृथ्वीराज रूप रस में मत्त था और उस के स्वामिधर्म में रत सामंत उस तक कोई बाधा न पहुंचने देते थे।

छंद पद्धरी ॥ निब्बन्यौ बाद वै वर [1]प्रमान।
मानहि न बत्त लज्जी निधान ॥
वै जाहु जाहु तन रूप छंडि।
जिन चलै लज्ज लज्जी चिपंडि ॥ छं० ॥ ७३९ ॥

कहि बीर राज आए स बीर।
मानहु कि छुट्टि धन वर सरीर ॥
आभास भार तुट्टैति अंग।
जोर वरज हर मत्तीत जंग ॥ छं० ॥ ७४० ॥

क्रतत केलि क्रत करहि काम।
सोभहति सूर दक्षिन ति[2]ताम ॥
अति स्वामि भ्रंम नह वाम मग्ग।
लग्यौ न सूर जिम स्वामि दग्ग ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

प्रथिराज दिष्ट दिष्टत प्रमान।
अरि भजत मनहुं तिन अग्गि जान ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

यद्यपि सामंत बड़े बलवान थे किन्तु तब भी पृथ्वीराज का मन युद्ध ही की ओर लगा था।

दूहा ॥ अग्गि पान सामंत बल। भ्रत धीरत्त न जोध ॥
शस्त्र लग्गि लग्गै न मन। तउन पच पति जोध ॥ छं० ७४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रकांम। (२) मो.-नाम।

शशिवृता की आशा पूजी, शिवजी की मुंडमाल पूरी हुई और भगवती रुधिर से तृप्त हुई।

चिय चिघाइ सूरन भए। चिपति उमापति मुंड ॥
उमा चपति रुधिरं भई। धनि सूरन भुज दंड ॥ छं० ॥ ७४४ ॥

शूरवीरों के शौर्य्य और बल की प्रशंसा।

सूर सुधनि भुज दंड बल। बल विक्रम ज्यों [1]पाय ॥
बल किन्नौ छल छंडयौ। बर बीरा रस चाइ ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

कवित्त ॥ बीर घाइ आघाइ। बीर विरुझाइ सेन बर ॥
लष्प लष्प इक मद्धि। लष्प उभ्भिरे लषष झर ॥
दल दंतन विच्छुरै। घाइ है वर किन तंकहि ॥
एक लष्प रुंधियै। षग्ग षग्गनि झननंकहि ॥
ठननंकि घंट घंटिय परहि। कज्जल कूट विवान भ्रम ॥
सामंत सूर सामंत हथ। करहि चंद अस्तुति सु क्रम ॥ छं० ॥ ७४६ ॥

शशिवृता के व्याह की देवासुर संग्राम से उपमा वर्णन।

छंद पद्धरी ॥ आसंभ सेन सेना विरुद्ध। शशिवृत्त व्याह दैवान जुद्ध ॥
नर मथहि मेघ रथ गज मु वादि। होमियै षग्ग रिस अग्ग सादि॥
छं० ॥ ७४७ ॥

उच्चरे बैन बाजंत बीर। सद्धै जु जुद्ध बुद्धं सरीर ॥
दैवत्त दुग्ग छिति मति अकूर। निर्घोष दोष बज्जै सपूर॥ छं०॥७४८।
हय गय गँभीर तन तुंग ताम। सूरह सु बीर विश्राम जाम ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

गाथा ॥ रन घन तन विश्रामं। सँग्रामं इक्क घरी पाइ ॥
दावानल चहुआनं। सा बीरं बीर बीराधं ॥ छं० ॥ ७५० ॥
बीराधं बर बरयौ। सा भज्जै आवनं गवनं ॥
[2]मोहं सलाकं भंजो। नां सज्जं पंजरो दिवो ॥ छं० ॥ ७५१ ॥

(१) ए. कृ. को. आइ। (२) मो. मोहे।

शूरवीरों का कहना कि हमारी जय तो हुई किन्तु जयचंद का भाई कमधज्ज क्यों जीवित जाने पावे।

चौपाई ॥ नह सज्जै पंजर प्रतिमान। कहै सूर निहचै प्रतिमान ॥
बीरचंद बंधव कमधज्ज। जीवत स्वामि जाइ क्यों लज्ज ॥छं०॥७५२ ॥

गाथा ॥ हम बहुलं बेसतयं। बंधे तेग मुक्कि न्रप जायं ॥
जीवत सुनि कमधज्जं। ना मुक्कै लष्षयो बलयं ॥ छं० ॥ ७५३ ॥

मुरिल्ल ॥ लष्ष लष्ष बर सुभट सु भट्टह।
अघट घट्ट सु घटै न घट्टह ॥
सुव्रत बीर छचिय छिति राजै।
मनो इंद घन मद्धि विराजै ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

गाथा ॥ यों रज्जै न्रप भरयौ। सरनं सूर सूर गत्ताइं ॥
उग्गं ती रवि मानं। यों रत्ताइ रत्तयो मुषयं ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

राजा का कहना कि उसे मार कर क्या करोगे।

दूहा ॥ सत्थ सु तुझ कह्यौ सु सब। सुभट भट्ट बड़ भृत्य ॥
क्यौं न जाइ जीवत घरह। कहा करौगे मृत्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

आताताई का कहना कि उसे युद्ध में खंड खंड कर ही दूंगा।

छंद भुजंगी॥ तबै उच्चर्यौ अत्तताइ अभंगं। सज्यौ गैन सीसं जुर्यौ जुद्ध रंगं॥
हनौं याहि भंजौं सु गंजो पलानं। करौं षंड षंडं जु मंडै बलानं॥
छं० ॥ ७५७ ॥

इसी प्रकार गुरुराम की आज्ञा होने से घोर युद्ध का होना।

तबै गज्जि क्रम्यौ गुरं चाहुआनं। अगे जोगिनी जग्गि क्रम्यौ गुरानं॥
क्रम्यौ सथ्थ जद्दो स जामानि तामं। दुअंबद्ध हद्धा चले बंध ठामं॥
छं० ॥ ७५८ ॥

मिली रारि अंकं दुअंकं प्रमानं। परे जादवं राइ अरु चाहुआनं॥
कहै भूलि भारत्थ इत्तें सपूरं। उठे कंदलं हक्कि ते कौन सूरं॥
छं० ॥ ७५९ ॥

नरं रक्त बीजं बिनं केन दिट्ठं। इतें हंकि सामंत की बुंद उट्ठं॥
मिले घाइ घायं असी पंगदायं। मिली रीठ आवट्ठ सावट्ठ घायं॥
छं० ॥ ७६० ॥

परे सीस भारं चहूआन धारं। मनो इभ्भ झंकोर अंबूज झारं॥
गजं वाज तुट्टं परे षंड षंडं। नचंतं पिनाकी करं सज्जि दंडं॥
छं० ॥ ७६१ ॥

कटे तुच्छ हड्डं सु मंसं निमंसं। परे सूर मुझ्झेति मध्यं उतंसं॥
तिनं सत्त नामं जुअं जू वषानं। रठं निढ्ढुरं कन्ह वर वीर जानं॥
छं० ॥ ७६२ ॥

तहां अत्तताई रु गोविंद मानं। उठे हक्कि हाकं सु पज्जून पानं॥
रघूवंस भीमं तिनं नाम जानं। परीहार नन्हं तिनं नाम ठानं॥
छं० ॥ ७६३ ॥

इते उग्गरे कंदलं चंद कब्बी। मनों देषियं जानता जोति हब्बी॥
परे पंच रायं ढहे राज सत्तं। मुरं पंच रा वृत्त मा वेद वृत्तं॥छं०॥७६४॥

दुहूं पष्ष लग्गे तिनं नाम जानं। तिनं जाति चंदं रु सूरं बषानं॥
पय्यौ झूझि रघुबंस परताप राजं। परयौ राव चालुक्क ता जैत लाजं॥
छं०॥ ७६५ ॥

पय्यौ दलपती राउ दल सबब संध्यौ। पय्यौ कन्ह राजा दलं नेत बंध्यौ॥
झँडा गड्डि बीरं पय्यौ राज षीचौ। जिने कित्ति लच्छी तियं लोक सींचौ॥
छं० ॥ ७६६॥

पय्यौ जावलौ राव सारंग सूरं। तिने झग्गरीं अच्छरी छंडि झूरं॥
पय्यौ दाहिमा देव मिलि धार पंती। रुरै अंत कंती विराजै सुंदती॥
छं० ॥ ७६७॥

पय्यौ किल्हनं राव माल्हन हंसं। तुय्यौ सार धारं मिल्यौ हंस बंसं॥
पय्यौ जंगली राव दहिया नरिंदं। नृपं कित्ति भषषी भषी कित्ति चंद॥
॥ छं० ॥ ७६८ ॥

पय्यौ टांक सूरं मिल्यौ सूर मंदे। मिल्यौ सार धारं जमं डंड षंडे॥
चय्यौ धार धारं धनी धार नाथं। मुकी मोह माया लई कित्ति हाथं॥
छं० ॥ ७६९ ॥

पर्‍यौ राव मोरी मुरयौ अ्रव्व सथ्थं। ननं पाइ चल्लै चलै हथ्थ वथ्थं ॥
परे सूर हक्केव धक्के कलेवं। सिरं जुद्ध आनुद्ध देषंत देवं ॥
छं० ॥ ७७० ॥

करे जोगिनी डक्क हक्कं गहक्कं। गजै बीर सूरं सु आवद्ध धक्कं ॥
चलै स्रोन अंमान पूरं प्रनारं। अदभ्भूत माया न रच्यौ सु भारं॥
छं० ॥ ७७१ ॥

तवै अत्तताई लग्यौ लोह रस्सं। भगी फौज कमधज्ज दित्सं विदिस्सं॥
परे सेत सेते न थानं सु दिस्सं। लगै अच्छरी माल नभ्भं सु जिस्सं॥
छं० ॥ ७७२ ॥

अनंछित्त अंगं बरं अत्तताई। भई जीत चहुआन प्रथिराज राई ॥
छं० ॥ ७७३॥

रण में अगनित सेन को मरा देख कर निढ्ढर का कमधज्ज से कहना कि अब तूं किस के भरोसे युद्ध करता है। पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर चला गया।

दूहा ॥ परे सुभर दोऊन दल। निढ्ढुर देष्यौ बंध ॥
कोन भुजा बल जुध करै। सुनि कमधज्ज अमुंद्ध ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
बाला लै प्रथिराज गय। गहिय बग्ग कमधज्ज ॥
रोस रोस बिरसोज भय। रह बाजे अनबज्ज ॥ छं० ॥ ७७५ ॥

पृथ्वीराज शशिवृता को लेकर आध कोस आगे जाकर खड़ा हुआ।

कवित्त ॥ अद्ध कोस नृप अग्ग। बीर ठढ्यौ करि ठढ्ढौ ॥
मद समूह गजराज। छंडि पट्टै बल गढ्ढौ ॥
लाज बंधि संकरिय। बीर बंध्यौ सु अष्ट कसि ॥
अरिन बीर छंडै न। कन्न मंडै दिलीय दिसि ॥
मनमत्थ महावत बंधि अति। मन मत्तौ उन को धरै ॥
घन घाइ रुधिर छुट्टे परे। अमर पुहप पूजा करै ॥
छं० ॥ ७७६ ॥

अपनी और कमधज्ज की सब सेना मरी देख कर यद्दव का हार मानना और सब डोलीं पृथ्वीराज को सौंप देना।

षूब राज प्रथिराज। षूब जैचंद बंध बर॥
षूब सूर सामंत। षूब नृप सेन पंग बर॥
षूब सेन ढंढोरि। षूब झोरी करि डारिय॥
षूब षेत विधि गाम। बानगंगा पथ झारिय॥
आसेर आस छंडिय नृपति। विपति सपति जानीय भर॥
सुठिहार राज प्रथिराज कौ। धरे सबह चौंडोल घर॥छं०॥७७७॥

पृथ्वीराज ने तेंतालीस डोलियों सहित बीच में शशिवृता को ले कर दिल्ली को कूच किया।

चौपाई॥ गौ ढिल्ली ढिल्ली प्रति बीर। सूर घाइ जर्जर किय श्रीर॥
कित्ति सजी चौलोक प्रमानं। अंग कियौ जर्जर चहुआनं॥छं०॥७७८॥
दूहा॥ डोला ग्यारहु दून दस। एकादस तिन मद्धि॥
मद्धि अमोलिक सुंदरी। काम विरामन संधि॥छं०॥७७९॥
डोला घाइन बंधि नृप। वजि निसान त्रिघोष॥
सब सामंत समंध चढ़ि। विच सुंदरी [1]अमोष॥छं०॥७८०॥

शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज तेरस को दिल्ली पहुंचे।

गाथा॥ विच सुंदरी अमोघं। दोषं नैव बालयो मद्धिं॥
तेरसि गुन अधिकारी। संपत्ते राजयो ग्रेहं॥छं०॥७८१॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा वर्णन।

दूहा॥ इन परंत पत्तौ सु ग्रह। सुबर राज प्रथिराज॥
हय गय दल बल मथत बर। रंभ सजीवन काज॥छं०॥७८२॥

चामुंडराय की प्रशंसा।

सह जद्दौ चामंड बर। बर बर जुद्ध विरुद्ध॥
सुद्ध करै सामंत की। बर धीरज्ज सु बुद्ध॥छं० ७८३॥

(१) ए. कृ. को.-अदोष।

युद्ध में कमधज्ज और यद्धव को जीत कर शशिवृता को ले कर पृथ्वीराज दिल्ली जा पहुंचे।

चाहुआन चतुरंग जिति। निगम बोध रहि राज ॥
बर शशिवृत्ता जित्तिगौ। धाम सु ढिल्ली साज ॥ छं० ॥ ७८४ ॥

शशिवृता के साथ विलास करते हुए सब सामंतों सहित पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करने लगे।

गाथा ॥ तपय सु नरपति ढिल्ली। दीह दीहं पञ्चरे राजं ॥
जै मंगै क्रत कामं। सा देवं सोइयं देहिं ॥ छं० ॥ ७८५ ॥
दीहं पासा रूवं। सारूवं भूपयो सब्बं ॥
जे नष्पै ते मंगै। देवानं देवयो दीहं ॥ छं० ॥ ७८६ ॥
दूहा ॥ सारिन सालै पंस बर। सारि पंस बर भोग ॥
सुबर सूर सामंत लै। करि ढिल्ली प्रति जोग ॥ छं० ॥ ७८७॥

इस जय के प्राप्त होने से चहुआन का यश और बादशाह से बैर बढ़ा।

जै जै जस लद्धौ सुबर। बैर नृपति सुरतान ॥
सुबर बैर बर बढ्ढयौ। सुबर जित्ति चहुआन ॥ छं० ॥ ७८८ ॥

पृथ्वीराज शत्रुओं को पराजय कर के अदंड बादशाह को दंड दे कर नीति पूर्वक दिल्ली का राज्य करता था।

कवित्त ॥ भई जीति चहुआन। अरिय भंजे अभंग भर ॥
जै जै सूर बषान। देव नंषैं सुमन्न वर ॥
लै शशिवृत्ता राज। अप्प दिल्लीय सँपत्तौ ॥
अति तोरन आनंद। चित्त रत्तौ मन मत्तौ ॥
अरि अवनि कोन मंडै मनहु। षग्ग दाग अरि षंडइय ॥
कवि चंद दंद दारुन कयहि। इक अडंड करि डंडइय ॥छं०॥७८९॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासक शशिवृता कथा नाम पचीसमो समय संपूर्ण ॥

———:o:———

अथ देवगिरि समयौ लिख्यते ।

(छब्बीसवां समय ।)

जयचन्द की सेना ने देवगिरि गढ़ को घेर रक्खा ।

दूहा ॥ ना चल्लै कमधज्ज ग्रह । गढ़ घेर्‌यौ फिरि भान ॥
मानहु चंद सरह [1]जिम । गिर नछित्र [2]परिमान ॥ छं० ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥ गढ़ घेऱ्यो फिरि भान कौ । दूत सु दिल्लिय मुक्कि ॥
[3]यह [4]अजोग संजोग करि । अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥
अदिन कज्ज हम रुक्कि । प्रान इन कै दुष मुक्कै ॥
इन समान भर सत्त । जीव जावंतै धुक्कै ॥
* प्रथम पुंजा लष्पिन । कुंआरि ससिवृत्त धीर बढ़ ॥
धन भर लज्ज सुबंध । घेरि सह बीर राजगढ़ ॥ छं० ॥ २ ॥

राजा जयचन्द के भाई ने कन्नौज को और देवगिरि के राजा ने पृथ्वीराज के पास सब समाचार भेजा ।

दूहा ॥ इन कागद चहुआन पै । उन मुक्कलि [5]कनवज्ज ॥
दुहूं बीर कविचंद इह । कै बज्जै कै बज्ज ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूत ने लज्जा के साथ जयचन्द को पत्र दिया । जयचन्द के पूछने पर दूत ने युद्ध और पराजय का हाल कहा ।

---

(१) ए. कृ. को.-दिन । (२) ए. कृ. को-परजानि ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रह । (४) ए.कृ.को.-कमधज्ज ।

* छंद २ की अंतिम दोनों पंक्तियों का चारों प्रतियों में समान मूल पाठ इस प्रकार है—"प्रथम पुंज लष्पिन कुँअरि कुँअर ससिवृत सुधीरह । धन भर लज्ज सुबंध राजगढ़ घेरि सबीरह"—यह कुँडलिया छंद के नियम से विरुद्ध पड़ता है परंतु यह कवि की भूल नहीं है, लेखकों की असावधानी या भूल से ऐसा हुआ है क्योंकि उन्हीं शब्दों के हेर फेर से शुद्ध पाठ होगया है और अर्थ में भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हुई ।

कवित्त ॥ सुबर बीर कग्गदह । पंग करि अप्पि सु जंपिय ॥
बहु दुचित्त संजुत्त । लज्ज आजुत्त प्रकंपिय ॥
सुर सुकीय कर पंग । नैन नीचे नृप दिट्ठौ ॥
तब पहु पंग नरिंद । कुशल जानी न गरिट्ठौ ॥
पुच्छी सु बात इह करिय तम । जानि सोक कह उप्पनिय ॥
संग्राम तेज भंजन भिरन । मरन कहौ मारन पुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दुज्जन दवने पीर के । वज्जै पै बर केक ॥
भर भोरी रहि अंक के । मरन सरन के केक ॥ छं० ॥ ५ ॥

कुंडलिया ॥ तब पहु पंग नरिंद प्रति । दूत सु उत्तर जप्पु ॥
इह अपुन्न कथ सुनि नृपति । जीतें हार सु अप्पु ॥
जीतें हारि सु अप्पु । देषि कह्यौ चहुआनं ॥
ढिल्ली वै अधकोस । बीर मुक्यौ तिहि थानं ॥
आइ सेन घन घाइ । अद्ध भर पारि असुर जब ॥
दिषि निढ्ढुर कमधज्ज । वग्ग सेना पंचय तब ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ देवगिरि गढ़ घेरि फिरि । [1]हौं मुक्यौ नृप काज ॥
मतौ मंडि रा पंग पै । वे [2]पुक्करि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ इह कहंत नृप पंग सु अष्यौ । वियौ दूत नृप अंषन दष्यौ ॥
दुचित चित्त मुक्की बर बानी । कुसल बीर कमधज्ज न [3]जानी ॥
छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ भयौ स्वेद सुर भंग भौ । नैन झलक्यौ पानि ॥
कै फिरि दंद सु उप्पनौ । कै वर बंधव हानि ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त । [4]कही कुसल तन दूत । कित्ति कुसलत्तन भग्गिय ॥
जेनि रहे कमधज्ज । रहे सो जम्भह लग्गिय ॥
जे निकलंक ग्रह आदि । कलंक कालंक सु कुप्पै ॥
[5]दे विधान न्विम्मान । कौन मेंटै को थप्पै ॥
भष जोइ सिंघ जम्बक हरै । काकलंब पप्पौल गहि ॥
जहिनह भई भावी विगत । जिम रक्खै तिमि तिमि सुरहि ॥ १० ॥

(१) कृ.-होन । (२) मो.-पुकारि । (३) ए. को.-आनी ।
(४) मो.-कहै । (५) मो.-दो ।

कवित्त। यह कहंत पहु पंग। दूत तिय आन सपत्तौ ॥
वाचा शीतल जंपि। अंग आरम्भ न सत्तौ ॥
चढ़ि नरिन्द कमधज्ज। तौन तन सज्जन वारो ॥
मिलि यदव चहुआन। बीर परिहै ससि भारौ ॥
दाहिम्मराय चामुंड सौं। सब्ब साथ नृप थप्पयौ ॥
ते काज राज सम्हैं सुमति। लिषि कग्गद महिं अप्पयौ ॥ ११ ॥

जयचन्द की महा क्रोध से कहना कि पृथ्वीराज की कितनी सेना है। उसे मेरा एक मीर बंदा जीत कर बांध सकता है।

क्रोध भरिय कमधज्ज। काक बर बोल उचारै ॥
जो भज्जै ग्रह अपन। कौन अप्पनौ विचारै ॥
अरे सुनहु भर सुभर। जुभ्भ भग्गौ पति छंडै ॥
बेचि बीर गजराज। बाद अंकुस कौ मंडै ॥
चहुआन सेन कित्तिक है। एक मीर बंदा बधै ॥
लभ्भयौ राज अप अप्पुनह। लोह धार मो सम सधै ॥ छं० ॥ १२ ॥

जयचन्द ने मंत्रियों से मत करके अपने सेनही राजाओं को सेना सहित आने को पत्र भेजा।

कुंडलिया ॥ सुनि सुमंत्त मंचिय समत। कुमति मंत क्यों मंत ॥
बचन भेद जिहि हम कही। सोइ गही बल तंत ॥
सोइ गहि बल तंत। बल न अप्पन पहिचान्यौ ॥
उदो राग उच्चर्यौ। संच तेता करि मान्यौ ॥
उननें कुंवरी [1]बरी। तिनं कु करै तिन गुन्नी ॥
[2]सु वरि एक वुल्ले दुवान। सो सब सह सुन्नी ॥ छं० ॥ १३ ॥

पत्र भेज कर अपनी तयारी की आज्ञा दी। सवारी के लिये घोड़ा तय्यार कराया।

कवित्त ॥ बर अथवंत सु दीह। आइ चतुरंग सपन्नौ ॥
मभ्भ मइल नृप बोल। बंचि कग्गद कर लिन्नौ ॥

(१) मो.-मुरी। (२) कु-सुबरन।

निसा मंत उप्पाइ। सहस नव लिषि बर पढ़ै ॥
इष्ट भ्रत्त सगपन्न। सु भ्रत बहु फट्टत पढ़े ॥
वज्जित्त न्निघोष अरि घोष पर। छोरि पंग दिष्षे सु हय ॥
रवि रथ्थ तथ्थ आवहि जु सम। [1]गात गिरव्वर नाग सय ॥छं०॥१४॥

घोड़े की प्रशंसा वर्णन।

भुजंगी ॥ [2]तियं फेरियं अग्रव दीसैति पंगा। तिनं देषते छाँह कंपंत अंगा ॥
तिनं ओपमा चंद बरदाइ कैसी। दिषै तीर मानों छुट्टै अंग तैसी॥
छं० ॥ १५ ॥
पयं मभ्भ मंडै तिमं चित्त इष्षं। पयं पातुरं चातुरं तो बिसष्षं ॥
षुरं वज्जतें भुम्मि [3]धुज्जै धसक्कै। फनं फेलि से संमुहं फूंक सक्कै ॥
छं० ॥ १६ ॥
द्रुमं सीस दीसै सु केकी पुछंगी। मनों मंडियं नील [4]कंठं उछंगी ॥
तिनं भाल संमेलयं धाट झुभ्भझै। [5]छिलै पूर ऐसें सरित्तान सुभ्भझै ॥
छं० ॥ १७ ॥
डुलै कंन नाही छुरी कास ग्रीवं। मनो देषियं सीष निर्वात दीवं ॥
दिषै कब्बि चंदं सुरंगं सु सेसी। दुहं पष्ष नाहीं तिनं षोरि कैसी ॥
छं० ॥ १८ ॥
सुभै सालिग्रामं समानंत अंषी। तिनं पूजिवै चित्त चित्तंत नंषी ॥
पियें अंजुली नीर दीसै उपंगा। फिरै कच्छ रच्छीन में रत्त गंगा ॥
छं० ॥ १९ ॥
दिसानं दिसानं सबै जाति राकी। कही चंद कब्बी उपंमा सु ताकी॥
छं० ॥ २० ॥

[6]कवित्त। चत्तिय नयन रुद्र कै। उद्धि घन अग्गि तिनंगा ॥
तास मध्य ते प्रगटि। तेजवंता सु तुरंगा ॥
भुअपत्ती संग्रहे। पीठ मंडै पलानं ॥
अंबर करत बिहार। देषि कोप्पौ मघवानं ॥

(१) ए. जात। (२) ए. तियं।
(३) कु.-धूंजै। (४) मो.-कंठी।
(५) ष.-दिलै। (६) २१ छंद मो. प्रति में नहीं है।

प्रगट्टि नषि दिय वज्ज सों। गयन गवन तब मिट्टि गय॥
कहि चंद मनहु [1]पहुपंग तें। फेरि आज पष्परत हय॥ छं० ॥२१॥

जयचन्द घोडे पर चढ़ा। तीन हजार डंका निशान और तीस लाख पैदल सजकर झट से तय्यार हुआ।

चढ़त पंग हय सज्जि। सज्जि गजराज सज्जि [2]नर॥
यों जानी सुर असुर। करै कमधज्ज बिया पुर॥
बजि त्रिघोष चिय सहस। मीर बंदा दस लष्षिय॥
तीस लष्ष पाइक्क। सुबक्क पारंक विअष्षिय॥
जू सन विराग बल बीर सजि। दल सज्जयौ गंजन अरिन॥
पहु पंग बीर परतष्षि लै। किरन सु सम सज्जी किरन॥छं०॥२२॥

जयचन्द ने प्रतिज्ञा की कि जादव और चौहान दोनों को मार कर तब मैं राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूहा। इह प्रतंग पहुपंग लिय। बधि जदव चहुआन॥
जग्य अरंभ जु मंडिहौं। ता पच्छै परवान॥ छं० ॥ २३॥

सेना की शोभा वर्णन।

कवित्त। चढ़त पंग मिलि सेन। पूर जिम नदिय मिलत घिन॥
बज्जि बीर वा तूल। जत्थ कत्थह उड्डै षिन॥
एकट्ठां फुनि जम्म। तुट्टि जू जू फल लट्ठौ॥
दैव कम्म करि जोग। आइ एकट्ठ अरुट्ठौ॥
बंधेत काल डोरी तनै। छूटि धार घन मिलहि [3]तिम॥
आइत्त कम्म लिष्षे बिना। मिलै न पंचौ [4]पंच [5]जिमि॥छं०॥२४॥

जयचन्द्र की स्त्री का विरह वर्णन।

दूहा। इह अवस्थ पहु पंग की। बाल अवस्था कौन॥
जियन आस नहिं सांस तन। डरहि देषि [6]अलि जौन्ह॥छं०॥२५॥

---

(१) ए.को.-पकु। (२) ए.-हय। (३) ए. कृ.-जिम।
(४) ए. को.-पंप। (५) ए. कृ. को.-जिम। (६) ए. कृ. मो.-अति।

गाथा। बाले मलयं चंपं। दै दै चंपत उरह 'उरहीती॥
तिन बिपरीतं बामं। कामं रस जग्गयौ घनयौ॥ छं० ॥ २६ ॥
भ्रमरावली॥ बढ़ि बाल वियोग सिंगार छुट्यौ।
सुख कौ अभिराम कि काम लुट्यौ॥
घन सार सुगंध सु घोरि घनं।
बनि जानि प्रकीन कृपान बनं॥ छं० ॥ २७ ॥
तल पत्ति तजे तल पत्ति मनों।
बहु बाढ़िहै अंग अनंग घनों॥
नव चंदन अंग अनंग जरै।
दिप दीपक भौन में भान बरै॥ छं० ॥ २८ ॥
लगि मोदक से अन मोदकयं॥
दिसि प्राचिय देषि परी धुकयं॥
प्रति दृत्ति सरत्ति यपी पयनं।
उमगे तहां अंसुअ दै नयनं॥ छं० ॥ २९ ॥
घन ज्यों तन छंडि न उत्तर [२]देइ।
लगि कानन नाम पिया अलि लेइ॥
कछू बर भोंइन उत्तर देत।
मनौं दस [३]वस्थन दंग अचेत॥ छं० ॥ ३० ॥
चषयं सुभि चंचल रंजनयं।
सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं॥
बिय भाव सु अंसु अनंदि लता।
हर नंषिय रष्ष तिगी पतिता॥ छं० ॥ ३१ ॥
तिन अंग अचेतकिता भ्रमयं।
दुष दूषन भूषन से तनयं॥
दिषि दिष्षि अली अलिके जकरें।
लय सास उसासन तानि परे॥ छं० ॥ ३२ ॥
पन प्रान प्रियान प्रयान पुटं।
लगि साइस एक घटी न घटं॥

(१) ए. कृ. को.-उहीति। (२) मो.-देत, लेत। (३) ए. कृ. को.-अपत्थन।

सु[1]थनं सब तैं विमनं मन तैं।
निज निश्चल [2]रैनि गई गिनतैं ॥ छं० ॥ ३३ ॥
चलि सीत सुगंध सुमंदय बात।
मनों लगि पावक अंभन जात ॥
डुलावत अंचल शीतल काज।
लगै मनों तीर [3]तरुन्नियं जाज ॥ छं० ॥ ३४ ॥
भृअंगम भोजन अंगम नारि।
करै करुना रसकी उनिहारि ॥
सबै सु सषी मिलि पूछत ताहि।
मनों जड़ श्रोत सुने रस जाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥
चळ्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाइ।
[4]सु जे मरविंद समादक लाइ ॥
इनं रिति नारि न मुक्कह नाह।
लगे विहजानि कुमुद्दिन राह ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नदीय निवान [5]अपीत सयं।
नव पंथय सुभ्भय बुभ्भ कयं ॥
बजि मारुत तत्त समीत प्रकार।
उड़ै घन भ्रम्म बहै अनिवार ॥ छं० ॥ ३७ ॥
करै तरु तुंग गई सुधि धाम।
तजी पहु पंग नरिंद सु धाम ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जयचन्द की चढ़ाई का वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ पंग कमधज्ज राय। सो छिन्न भिन्न डम्मरित छाइ ॥
पद्धरी छंद बरनो सुरंग। लहु बरन बीच विचि अति सुरंग ॥ छं० ॥ ३९ ॥
ढ़लकंत ढाल तरवर प्रमान। हलके हलंत गज नग समान ॥
अपसुकन सुकन [6]चित्तहि न चित्त। [7]त्रिम्मान वत्त गुन धरत तत्त ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. को.-सुथानं। (२) ए. को.-नैनि। (३) मो.-तरुनित।
(४) ए..सजे। (५) ए. को.-अपीन।
(६) मो.-मन्नहि। (७) ए.-त्रिम्मान, त्रिमान।

कद्दवत्ति सलिल जहां सलिल पंक। चित चित्त बकं जे करें कंक॥
चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव। भुमियां ससंक सब लगत पांव॥छं०॥४१॥

गढ़ घेरि पंग किय अप्रमान। मानों कि मेर पारस्स भान॥
पंगह सुबीर गढ़ करि गिरद्ध। सर्वरी परस चंदा सरद्ध॥छं०॥४२॥

चढ़ अमरसीय चढ़ि अमरसिंघ। गहिलौत स नरवर लहु सु वंध॥
पंगुरा सुभर लगि उंच गत्त। जाने कलंक लंगूर यत्त॥छं०॥४३॥

जयचन्द का दक्षिण की ओर चढ़ चलना।

कबित्त॥ दिशि दष्यिन को बलिय। गयौ कमधज्ज चित्त करि॥
यों फिरंत तहँ सूर। भित्त आगस्ति पान फिरि॥
पंच तत्त बिय बिरह। छुट्टि लगो सु पंच पथ॥
तोइ काज हम करैं। चरन सेवकह जंपि तथ॥
तो अंब प्रपो अब जानि बस। जस क्रीड़ा धर उग्गनह॥
कच्छू सु जोसि बलि जोति तन। हबि सरुक भेदै मनह॥छं०॥४४॥

हाथियों की शोभा वर्णन।

गज्जनेस कमधज्ज। दान बरषंत बीर सजि॥
नव अंगुर इक विहथ। सूर तन इक प्रवाह लजि॥
सिरी सत्त सोभै। बिसाल सिंदूर विराजै॥
मनु कज्जल गिरि शिखर। भूर मंगल तन साजै॥
सज्जिय अनेक नृप पंग ने। गामी तर गोड़न बियौ॥
जाने कि अकासह भान दिग। ऐ वसट्ठ गिर पय दियौ॥छं०॥४५॥

दूहा। रंभ जन तट पंषुरी। लग्गि बधू सित माल॥
भ्रंग सुता की पंति तें। बढ़ी विरह बनमाल॥छं०॥४६॥

राजा भान का यह समाचार पृथ्वीराज को लिखना।

बान पंग पहु पंग परि। मिली क्रंन की कान॥
इह अपुब्ब बर भान सजि। दै कग्गद चहुआन॥छं॥४७॥

उक्त समाचार पाकर काम क्रीड़ा प्रवृत्त पृथ्वीराज का वीरता के जोम में आजाना।

रति पति पत आलुभिभ्भ घन। तिहि कग्गद मुकि दूत॥
तजि सिंगार भौ [1]बीर रस। जिमि आयो बर [2]धूत्त॥छं०॥४८॥

बाल कमोदनि पीय ढिग। समि समान रस पान॥
बर बिलोकि जो देषियै। तौ [3]चहुआनह भान॥छं०॥४९॥

कवित्त॥ लाज सरस चहुआन। जोग उज्जै जुध मुत्तम॥
चियन पाइ दिषि काम। बेर दिष्षे जु बीर सम॥
घरि इक पंग नरिंद। कलंक उननि करि देषै॥
इत्त सु जद्दव राइ। सजन अप्पनौ सु लेषै॥
सुरतंत स्वामि अभिलाष रिन। ग्रव्व राज मद्दह नृपति॥
मार सु नरिंद संकर भयौ। अति निकलंकह चित दिपति॥५०॥

इधर शहाबुद्दीन की चढ़ाई उधर जयचन्द की राजा भान से लड़ाई देखकर पृथ्वीराज ने चित्तौर के रावल समर सिंहजी को सब वृत्तान्त लिख कर सहायता चाही और सम्मति पूछी।

दूहा। घरी एक बंधी सुनी। पै मुक्कलि प्रथिराज॥
बीय सोम अप्पन चढ़न। लै दीनी रस पाज॥छं०॥५१॥

चढ़त राज प्रथिराज को। चढ़ अवाज सुरतान॥
समर सिंघ रावर दिशा। दै कग्गद चहुआन॥छं०॥५२॥

कवित्त॥ दिल्ली धर गोरी नरिंद। बँध पल्हन प्रपत्तौ॥
षां हुसेन कै बैर। अनगपालं सु मिलत्तौ॥
तिर भर जल गंभीर। इसम है गै कमधज्जौ॥
देवगिरि दिसि भान। बीर पावस जिम सज्जौ॥

(१) ए.-बार। (२) ए. को.-धत्त। (३) मो.-चहुआने।

धर लई सब्ब साहिब जुरत। भान न उप्पर मुक्कही ॥
चिचंग राज रावर समर। इह अवसान न चुक्कही ॥ ५३ ॥

समर सिंह ने पत्र पढ़कर कहा इस समय पृथ्वीराज को दिल्ली में अकेले न छोड़ना चाहिए। मेरे साथ अपने सावंत और अपनी सेना दें मैं पंग से लड़ लूंगा।

बंचिय कग्गद समर। समर साहस उच्चारिय ॥
तव सुमंत बर न्रपति। मंत जानै न विचारिय ॥
इम सुमंत जो करै। राज दिल्ली मति छंडौ ॥
इह गौरी सुरतान। अनगपालह फिर मंडौ ॥
सामंत [1]देहु इम संग बर। रन रुंधै पहुपंग नर ॥
आरंभ महन रंभह मतौ। इह [2]सुमंत कुसलंत घर ॥ ५४ ॥

समरसिंह की सलाह मान पृथ्वीराज ने अपने सावंत चामुंडराय और रामराय बड़गूजर के साथ अपनी सेना रवाना की।

कुंडलिया ॥ समुद रूप गोरिय सुबर। पंग ग्रेह भय कौन ॥
चाहुआन तिन बिबध कै। सो ओपम कवि लौन ॥
सो ओपम कवि लौन। समर कग्गद लिय हथ्थं ॥
भिरन पुच्छि बट सुरँग। बंधि चतुरंग रजथ्थं ॥
समर सु मुक्कलि सोर। लोह फुल्यौ जस कुमुदं ॥
रा चावँड जैतसी। रा बड़गुज्जर समुदं ॥ छं० ॥ ५५ ॥

रावल समरसिंह ने अपने भाई अमरसिंह को साथ लिया। ये लोग देवगिरि की ओर चले।

दूहा। अमरसिंघ बंधव समर। समर समोकलि दीन ॥
ते सामंतन संग लै। देवग्गिरि मग लौन ॥ छं० ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-दीहि। (२) ए.-समतं।

इम सु राज चहुआन नें। राषे घेरी राइ॥
पंग [1]औट बर कोट ह्वै। देवग्गिरि गढ़ जाइ॥ छं० ॥ ५७ ॥

जयचन्द को गढ़ घेरे देख चामुंडराय ने चढ़ाई की। इधर राजा भान मिला।

कवित्त॥ देवग्गिरि गढ़ घेरि। ढोह मंड्यौ बर पंगं॥
[2]रन त्रिघोष प्रमान। बीर बाजे रन जंगं॥
चिहुदिसान उड़ि चक्क। उनैभी झंझर लग्गा॥
द्वादस दिन रन मंडि। राव चामंड भिरि भग्गा॥
सामंत पंग वित्ते नृपति। छल सज्जे बलहारियां॥
दाहिम्म राव दाहिर तनय। रत्ति वाह बिचारियां॥ छं० ॥ ५८ ॥
मिलि जद्दव चामंड। रत्ति वाहं संपन्नौ॥
जोइज्जै सथ टारि। साथ टारिजै अपन्नौ॥
अंत साथ सो साथ। और सब साथ [3]सुपन्नौ॥
कै भर तरकस बंध। थान मन [4]आकन्नौ॥
जीवंत दान भोगह समर। मरन तित्थरँभ [5]भिरन गति॥
ए करैं बात उभभैत नर। ता स राज मंडल [6]मिलति॥ छं० ॥ ५९ ॥

राजा भान और चामंडराय की सेना का वर्णन।

हथ्थ हथ्थ सुभ्भभैन। मेघ डंमरि मडि रज्जौ॥
निशि निशीथ अंतरी। भान उत्तरि सथ सज्जौ॥
बिज्ज बीर झलकंत। [7]पवन पच्छिम दिशि वज्जै॥
मोर मोर पप्पीह। अवनि सक्रित घन गज्जै॥
बद्दी जु सिलह निशि सत्त मिलि। [8]धसिय पंग दरबार दिसि॥
चामंड राइ दाहर तनौ। लरन लोह कट्ठेति रिसि॥ छं० ॥ ६० ॥

राजा भान का मिलना देखकर जयचन्द का क्रोध करना।

(१) ए.-ओर। (२) ए.-इन।
(३) ए.-सुपंथं। (४) ए. कृ.को.-आकथ्थ। (५) ए.-निरन।
(६) मो.-मिलनि। (७) ए.-भवन। (८) ए. कृ. को.-सधिय।

धसि नरिंद चामंड। कूह बज्जी रन जंगं॥
भर भग्गी चौकी समूह। लग्गा रन जंगं॥
रन नरिंद [1]वाहन कुआर। सारह हसि भिल्लै॥
पंग टटी बौछार। जितै भिंजे तित मिल्लै॥
आरिष्ट काल बज्जत घरी। उघरि मेह घन सार जल॥
जग्गयौ जोध कमधज्ज अब। मनौं सिंघ जुग्यौ सु हुल॥छं०॥६१॥
तब [2]रावत उच्चरे। राज जोरी बर पंगं॥
जिन [3]चंपे बल पुंछ। रोस जग्यौ नृप [4]दंगं॥
नाग पत्ति कोपत्ति। अप्प बर कन्ह जगायौ॥
राह सुमनि बित्तए। जम्म जुग राज झुकायौ॥
उच्चरे वीर कुट वार रिन। रन रूंधया अप डिंभरू॥
संभरे बीर कमधज्ज कौं। भये रोम गति विभ्भरू॥ छं०॥६२॥

अमरसिंह ने जयचन्द के हाथी को मार गिराया।

अमरसिंह आहुट्ठ। नाग [5]मुष्यौ बर कट्ठी॥
ग्रीश ग्रोभि गजराज। नाग मुष नागिनि चट्ठी॥
हाड हटक्की हथ्थि। बीर पच्यौ कर सद्दे॥
कै हथनापुर चन्द। तीर षंचै बलिभद्दे॥
दंती सुभग्गि धर पर पर्‍यौ। हुल घुच्यौ दत अद्धकबि॥
सिंघ हति भूमि बर सुभ्भई। मिलत भूमि हथ्थह तिरव॥६३॥

हाथी के मारे जाने पर जयचन्द का क्रोध करना और स्वयं टूट पड़ना।

हस्ति काल जम जाल। काल रुध्यौ चामंडह॥
सुनत पंग रस भगं। सीस लग्यौ ब्रह्मंडह॥
रन रूंध्यौ बद्दछद्द। मीन गति [6]नीर प्रमानं॥
जग्गि बीर पहुपंग। तीन पारथ्थ प्रमानं॥

---

(१) कृ.-प्रति में "पंगु पुत्र" भी पाठ ऊपर दिया हुआ है।
(२) ए.-राजन, रावन। (३) ए.-जंपे। (४) ए.-दंसं।
(५) ए.-मुठी मुट्ठी। (६) मो.-हीन।

जग लोह कोह कट्टिय सु असि। भिरत न अपु अरि तक्कए ॥
रहि जाम एक निसि पच्छली। चढ़ि विहूर हय नच्चए ॥छं०॥६४॥

रसावला ॥ पंग जंगं घुलं, कूह मच्छी हुलं। सार तुट्टे पलं, षग्ग मच्चषलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

हाल हाला हलं, सोइ वित्यौ तलं। गिद्ध कोलाहलं, अंत हंती रुलं॥
छं० ॥ ६६ ॥

उड्डपीयं छलं, चर्म अस्तिं तलं। वीर निद्धीचलं, सिद्ध ठट्ठे रुलं ॥
छं० ॥ ६७ ॥

संभु मालं गलं, ब्रह्म चित्ता चलं। भूत वित्ता तलं, पथ्थ पारथ्थलं॥
छं० ॥ ६८ ॥

देव देवा नलं, फट्टि फारक्कलं। घाय छज्जे घलं, सूर घुम्मै रुलं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

तारचौ सट्ठलं, बाइ भूत त्तलं। रीति पछी षिनं, तार आयासनं ॥
छं० ॥ ७० ॥

सूर उग्यो ननं। कोर चहु फनं ॥ ..... छं० ॥ ७१ ॥

लड़ाई खतम होने पर जयचन्द का अपने घायलों को उठवाना।

दूहा ॥ रन मुक्के गो भान चढ़ि। सब सामंतन सथ्थ ॥
भ्रत्त बीर पहु पंग ने। षत सु ढुक्यौ तथ्थ ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इस युद्ध में मारे गए सूर सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ पर्‍यौ बंध गोविंद। नाम हरचन्द प्रमानं ॥
पर्‍यौ बंध नरसिंघ। रेह रघ्घन चहुआनं
पर्‍यौ कन्ह पुंडीर। बीर जैचन्द सु जायौ ॥
पर्‍यौ सूर बाघेल। हक्कि कपि जिम बल धायौ ॥
चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही। असिन ढार बड़गुज्जरै ॥
सामंत हथय बर बज्ज सम। षेत सु ढुंढहि पंगरै ॥ छं० ॥ ७३ ॥

रणभूमि में जयचन्द के घोड़े की चंचलता और तेजी का वर्णन।

रिस छुट्यौ कमधज्ज। बोल बंका बर बोले॥
ज्यों बावन बल रूप। कुहर थानह बल मेलहै॥
रावन पबय समान। काज कैलास झुलावै॥
कै बलि बंधन पाज। द्रोन हनुमंत जु ल्यावै॥
गिरिराज काज साइर मथन। कै अमरस मिल्लिय नहीं॥
[1]नंषयौ अभ्र कमधज्ज नै। सो उप्पम कवि भाषहीं॥
॥ छं० ॥ ७४ ॥

देवगिरि के किले की नाप और जंगी तैयारी का वर्णन।

मापि पंग गढ़ देखि। कोस द्वादस बर ऊँचौ॥
दहति कोस विसतार। कोठ मरहथ्थ चिपुंचौ॥
नारिगोरि सा बन्ति। राज मंडी चावहिसि॥
ढोह मंडि पाषान। तीर बरषंत मंच असि॥
पावस्स मास बीतौ उभै। जुरि कमधज्ज सु छंडयौ॥
मंचौ सुमंच परधान ने। फेरि मंच[2]तब मंडयौ॥ ७५॥

जयचन्द का राजा भान को मिलाने का प्रबंध करना।

बल बंध्यौ कमधज्ज। किल्ह भंजौ भंभानं॥
लग्गि चरन पहु पंग। बंदि लीनौ फुरमानं॥
दूत भेदयौ मंडि। द्रब्ब नंषै चावहिसि॥
कछु सलोभ कछु मोह। मेल्हि पर ध्यान पल्हनिसि॥
अप्पनौ साथ लै सिंघ तब। जियन मरन ते उद्दए॥
जम जीव जार पंजर परै। कोइन कलि महि छुट्टए॥ छं० ॥ ७६॥
संवत ग्यार सँजुत्त। अदिस उन लग्गिय पंचं॥
मरन अग्गि जांनिय न। गोऊ पल्हन जो पंचं॥
दिन नछित्र रोहिनी। समय च्यालीस बिअग्गल॥
मत्त बीर जदव नरिंद। भग्गौ ग्रह भग्गल॥
जग्गयौ धार धारह धनी। भोज कुंअर रन मंड कै॥
सा धम्म धम्म छंडै नहीं। गो अधंम छिति छंडि कै॥ छं० ॥ ७७॥

(१) ए.-अंषयौ। (२) ए.-सब।

इधर अमर सिंह का घोर युद्ध करना।

बज्जि कूह संमूह। अमर[1]उट्ठे समरं भिरि॥
षंड मुष्ष भौ कोट। समर बंध सुद्धे जुरि॥
रा चावँड जैतसी। राव बड़गुज्जर धाए॥
आहुट्ठे कमधज्ज। सार बज्जै सुरझाए॥
बर यंग जंग भज्जी सहर। लुथ्थि लुथ्थि आलुथ्थि परि॥
चढ्ढने अरिय संग्राम भिरि। षट्ट सहस सेना गिरी॥ छं० ॥ ७८॥

जयचन्द का किले पर सुरंग लगाना।

परत पंग आरोहि। सु रँग दीनौ सुभान गढ़॥
नाग[2]समूह ढरी। ढाहि देवल सुरंग मढ़॥
थान थान नर उड़ैं। चंद तस उप्पम पाइय॥
कालबूत [3]कागह। पंग इह काज उड़ाइय॥
अजजै न सधिहिय सेन को। दच्छ देव बर बोलहीं॥
सामंत सूर संग्राम कल। ताप तुरंग न डोलहीं॥ छं० ॥ ७९॥

चौपाई॥ बहु परपंच किए पहुपंगं। गढ़े तूटंत मग्ग मन अंगं॥
गिरि सम्मूह बंक भर ठट्ठं। मंतौ मडि मुक्यौ बर भट्टं॥छं०॥ ८०॥

जयचन्द का किर्तिपाल नामक भाट को भीमदेव और चामंड के पास संधि का संदेसा लेकर भेजना।

कवित्त॥ किर्त्तिपाल बर भट्ट। बंधि[4]फुरमान पंग रन॥
जहँ जहव चामंड। द्रुग्ग दोय छचन जुरन॥
चौज चक्क चहुआन। पर्‍यौ सगपन मिस अट्टौ॥
उह मारन इन मरन। बज्जि बाहं बिन घट्टौ॥
आतुच्छ मिलौ बंधौ जियन। जुद्ध मोहि क्यों पूजिहौ॥
शृंगार भोग आनन्द रस। सबै बीर रस चुक्किहौ॥ छं० ॥ ८१॥

राजा भान को समझा कर जयचन्द के दूत का वश कर लेना।

(१) ए.-ठडे। (२) कृ.-समुह धद्धरी ए.-समुहरद्धी, समूरहधरी।
(३) ए.-कागच्छ.कागछ। (४) ए. कृ. को.-फुरमारस।

तब बसीठ नृप पंग । भान एकत्त मंत करि ॥
मिलौ पंग कमधज्ज । जंम संसार जंम डरि ॥
तमस भेद नृप एह । बाल उत्तर गढ़ भेदं ॥
अरि अमंत जद्दव । नरिंद कौनौ घर छेदं ॥
लगि कान बात मंचो कही । आहुट्ठां बल गट्ठियां ॥
चिय पुत्त हत्त पुची लिये । दुज्जत जनम सुवद्दियां ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ विष धर दुज्जन सिंघ फुनि । अग्गि अनंग अनेह ॥
ए अपना ना लेखिये । ये परि अप्पै छेह ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥ हसि जद्दौं चामंड । पँवार हथ्थें दिय तारौ ॥
सुनि बड़गुज्जर राम । मतौ अप्पौ मो भारी ॥
सामि एक बंदी स । प्रीति जल जंतं तक्की ॥
लियौ अधर सम रस्स । वात सा दोहमन क्की ॥
क्यौं जामन मंत रहंत इत । केह कंत जो मंगयौ ॥
सो मंत पंग कमधज्ज नें । अप्प हेत सो उग्गयौ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दूहा । इह उत्तर नृप पंग सौं । कहै सु जद्दव राय ॥
दूध विनट्ठौं सुद्ध हिय । किन अप्पन मुष पाइ ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥ उठे भट्ट तिहि ठौर विचारी । ज्यों उठि जोगी कंथा झारी ॥
मन कौ मनें रही मन माया । ज्यों तरंग जल जलें समाया ॥ छं० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ मतौ मंडि नृप पंग । गट्ट मुक्के धर लीनी ॥
पट्टन पाट नरिंद । थान थानं रचि दीनी ॥
उभै बीर जौजन प्रमान । भारह रचि गाढ़ी ॥
[1]अप्पनगै कमधज्ज । हाम राजस मन बाढ़ी ॥
कनवज नरिंद अज्जू सामन । जोगी मिसि कर कद्दयौ ॥
दिसि विदिसि पंग जौपन सुबल । रचि चतुरंगी चद्दयौ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

जयचन्द का विचारना कि वह धन छोड़ कर यदि यह धरती मिली भी तो किस काम की।

(१) कृ.-अपनगौ ।

दूहा। कोन हीन कों नीर बिन। को तप भान नरिंद ॥
सह धन धर मुक्की मिलै। लज्ज रह जय चंद ॥ छं० ॥ ८८ ॥

इसके परिणाम में चहुआन और राजा भान को यश मिला और जयचन्द नवमी को कन्नौज को फिर गया।

जस्स तिलक ग्रह भान कौ। जोगिन पुस्तर चिन्ह ॥
मोकलिजै आहुट्ट पति। पग्ग पंग करि हीन ॥ छं० ॥ ८९ ॥
गयौ पंग कनवज्ज दिसि। घन रष्प धन मास ॥
नव नवमी नव सरद निसि। तिन मुक्की अरि चास ॥ छं० ॥ ९० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके देवगिरि युद्ध वर्णनं नाम छाबीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २६ ॥



अथ रेवा तट समयौ लिख्यते ।

(सत्ताइसवां समय ।)

देवगिरि से विजय कर चामंडराय का आना ।

दूहा ॥ देवग्गिरि जीते सुभट । आयौ चामँडराय ॥
जय जय नृप कीरति सकल । कही कब्बिजन आय ॥ छं० ॥ १ ॥

चामंडराय का पृथ्वीराज से रेवा तट के बन की प्रशंसा करके वहां शिकार के लिये चलने की सलाह देना।

मिलत राज प्रथिराज सों । कही राय चामंड ॥
रेवा तट जौ मन करौ । बन अपुब्ब गज झुंड ॥ छं० ॥ २ ॥

उक्त बन के हाथियों की उत्पत्ति और शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ विन्द लिलाट प्रसेद । कर्यो शंकर गज राजं ॥
एरापति धरि नाम । दियौ चढ़नै सुर राजं ॥
दानव दल तिहि गंज । रंजि उमया उर अंदर ॥
होइ क्रपाल हस्तिनी । संग बगसी रचि सुंदर ॥
औलादि तास तनु आय कें । रेवा तट बन विस्तरिय ॥
सामंत नाथ सों मिलत इह । दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

राजा का चन्द से पूछना कि मुख्य चार जाति में से यह किस जाति के हाथी हैं और स्वर्ग से इस लोक में क्यों आए ।

अरिल्ल ॥ च्यारि प्रकार पिछि बन वारुन । भद्र मंद मृग जाति सधारन ॥
पुच्छि चंद कवि को नरपत्तिय । सुरवाहन किम आइ धरत्तिय ॥
छं० ॥ ४ ॥

चन्द का वर्णन करना कि हेमाचल पर एक वृक्ष था जिसकी शाखें सौ सौ योजन तक फैली हुई थीं मतवाले हाथियों ने उन्हें तोड़ दिया इस पर क्रोध करके मुनिवर ने शाप दिया कि तुम मनुष्यों की सवारी के लिये पृथ्वी पर जन्म लो।

कवित्त ॥ हेमाचल उपकंठ। एक वट वृष्ष [1]उसंगं ॥
सौ जोजन परिमान। साष तस भंजि मतंगं ॥
बहुरि दुरद मद अंध। ढाहि मुनि बर आरामं ॥
दीर्घ [2]तपारौ रेषि। आप दीनों कुपि तामं ॥
अंबर बिहार गति [3]मंद हुअ। नर आरूढ़न संग्रहिय ॥
संभरि नरिंद कबि चंद कहि। सुरग इंद इम भुवि रहिय ॥छं०॥५॥

अंग देश के पूर्व एक सुन्दर बनखंड है वहीं वह गजयूथ बिहार करता था। वहां पालकाव्य नामक एक थोडी अवस्था का ऋषीश्वर रहता था उसे इन सभों से बडा स्नेह होगया था परंतु राजा रोमपाद फंदा डालकर हाथियों को चंपापुरी में पकड़ ले गया।

अंग देस पूरब्ब मद्धि। बन षंड गहब्बरि ॥
उत्तंग जग्ग दल कमल। बिपुल लुहिताच्छ सरब्बर ॥
आपति गज को जूथ। करत क्रीड़ा निसि बासर ॥
पालकाव्य लघु देस। रहत एक तहां रुषेसर ॥
तिन प्रीति बंधि अति परसपर। रोमपाद नृप संभरिय ॥
आषेट जाइ फंदनि पकरि। दुरद आनि चंपापुरिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

पालकाव्य मारे बिरह के मरकर हाथी के रूप में जनमा।

(१) कृ.-उतंगं। (२) ए.मो.-तपारी। (३) को.ए.-मंद।

दूहा ॥ पालकाव्य के विरह करि, अंग भए अति षीन ॥
मुनि बर तब तहँ आय कें। गज चिगछग्गुन कीन ॥ छं० ॥ ७ ॥
गाथा ॥ कोपर पराग पचं। [1]छालं डाल फूल फल कंदं ॥
फली कली दै जरियं। कुंजर करि थूलयं तनयं ॥ छं० ॥ ८ ॥

उधर ब्रह्मा के तप को भंग करने के लिये इन्द्र ने रंभा को भेजा था, उसे शापवश हथिनी होना पड़ा वह भी वहीं आई ।

कवित्त ॥ ब्रह्मा रिष तप करत। देषि कंप्पौ मघवानं ॥
छलन काज पहु पठय। रंभ रुचिरा करि मानं ॥
आप दियौ तापसह। अवनि करिनी सु अवत्तरि ॥
क्रम्म बंधि इक जतौ। लषित हूअौ सुपनंतरि ॥
तिहि ठाम आइ उहि हस्तिनी। बोर लियो पोगर सुनमि ॥
उर सुक्र अंस धरि चंद कहि। पालकाव्य मुनिवर जनमि ॥छं०॥८॥

पालकाव्य उस के साथ बिहार करने लगा ।

दोहा ॥ ताथें तिन मुनि करिन सों। बांधि प्रीत अत्यंत ॥
चंद कह्यौ नृप पिथ्थ सम। सकल मंडि बरतंत ॥ छं० ॥ १० ॥

चन्द ने उस बन और जन्तुओं की प्रशंसा करके कहा कि आप अवश्य वहां चलकर शिकार खेलिए ।

कवित्त ॥ सुनहि राज प्रथिराज। विपन रवनीय करिय जुथ ॥
रेवा तट सुंदर समूह। गजवंत चवन रथ ॥
आषेटक आचंभ। पंथ पावर रुकि पिल्लौ ॥
सिंघ वट्ट दिलि समुह। राज पिल्लत दोइ चल्लौ ॥
जल जूह कूह कसतूरि मृग। पहपंगी, अरु पर्वतह ॥
चहुआन मान देषें नृपति। कहिन बनत दच्छिन सुरह ॥छं०॥११॥

---

(१) ए.-ढलं, ढालं, छलं ।

एक तो जयचन्द पर जलन हो रही थी दूसरे अच्छा रमणीक स्थान सुन पृथ्वीराज से न रहा गया।

दूहा ॥ एक ताप पहु पंग कौ। अरु रवनीक [1]जु थान ॥
चावँडराव बचन्न सुनि। चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज धूम से चला। रास्ते के राजा संग हो गए, स्वयं रेवानरेश भी साथ हुआ। इस समय सुलतान के भेदुए (नीतिराय) ने लाहौर से यह समाचार गजनी भेजा।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। बीर अगनेव दिसा कसि ॥
सब्ब भूमि नृप नृपति। चरन चहुआन लग्गि धसि ॥
मिल्यौ भान विस्तरी। मिल्यौ षट्टल गढ़ी नृप ॥
मिल्यौ नंदि पुर राज। मिल्यौ रेवा नरिंद अप ॥
बन जूथ मृग्ग सिंघह रु गज। नृप आषेटक खिल्लई ॥
लाहौर थान सुरतान तप। बर कग्गद लिषि सिल्लई ॥ छं० ॥ १३ ॥

मारू खां और तत्तार खां ने दिल्ली पर आक्रमण करने का * बीड़ा उठाया।

दूहा ॥ षां ततार मारूफ षां। लिये पान कर साहि ॥
धर चहुआनी उप्परै। बज्जा बज्जन बाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

यह समाचार पा शहाबुद्दीन का चढ़ाई की तयारी करना।

साटक ॥ श्रोतं भूपय गोरियं वर भरं, बज्जाइ सज्जाइने।
सा सेना चतुरंग बंधि उललं, तत्तार मारूफयं ॥
तुभ्भी सार स उप्प राव सरसी, पल्लानयं षानयं।
एकं जीव साहाब साहि ननयं, बीयं स्तयं सेनयं ॥ छं० ॥ १५ ॥

---

(१) मो.-सु।

* प्राचीन समय में यह नियम था कि जब कोई कठिन कार्य्य आ उपस्थित होता था तो दरबार में पान का बीड़ा रख कर अपेक्षित कार्य्य की सूचना दी जाती थी अतएव जो सरदार अपने को उस काम के करने योग्य देखता वह बीड़ा उठा लेता।

तातार खां आदि सभों ने कुरान हाथ में लेकर शपथ करके प्रस्थान किया।

दूहा ॥ अहि बेली फल हथ्थ लै। तो ऊपर तत्तार ॥
मेच्छमखूरति सक्ति कैं। बंच कुरानी बार ॥ छं० ॥ १६ ॥

तत्तार खां का कहना कि चन्द पुंड़ीर को मार कर एक दिन में दिल्ली ले लूंगा।

कुंडलिया ॥ बर [1]मुसाफ तत्तार खां। मरन किति [2]नन बान ॥
मैं भंजे लाहौर धर। लैहूं सुनि सु बिहान ॥
लैहैं सुनि सु बिहान। सुनै ढिल्ली सुरतानं ॥
लुथ्थि पार पुंडीर। भीर परि है चहुआनं ॥
दुचित्त चित जिन करहु। राज आषेट [3]उथापं ॥
गज्जनेस आयस्स। चले सब छूप मुसाफं ॥ छं० ॥ १७ ॥

चन्द पुण्डीर ने पृथ्वीराज को समाचार लिखा। पृथ्वीराज का छः कोस लौट कर कूच का मुकाम करना।

दूहा ॥ षट मुर कोस मुकाम करि। चढ़ि चल्यौ चौहान ॥
चंद बीर पुंडीर कौ। कग्गद करि परिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का पंजाब तक सीधे शहाबुद्दीन की सेना के रुख पर जाना और उधर से शहाबुद्दीन की सेना का आना।

गोरी बै दल संमुहौ। गौ पंजाब प्रमान ॥
पुब्ब रू पच्छिम दुहु दिसा। मिलि चुहान सुरतान ॥ छं० ॥ १९ ॥

उसी समय कन्नौज के दूतों का यह समाचार जयचन्द से कहना।

दूत गये कनवज्ज दिसि। ते आए तिन थान ॥
कथा मंड चहुआन की। कहि कमधज्ज प्रमान ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए.-सु साफ। (२) ए. कृ. को.-तन। (३) ए.-उथानं।

पृथ्वीराज का रेवा तट आना सुनकर सुलतान का सेना सजकर चलना ।

रेवा तट आयौ सुन्यौ । बर गोरी चहुआन ॥
बर अवाज सब मिट्टि कै । सजे सेन सुरतान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि बहुत बड़े शत्रुरूपी मृगों का समूह शिकार करने को मिला ।

दूत बचन संभलि न्वपति । बर आषेटक षिल्ल ॥
रेंवातट [1]पद्धर धरा । जूह मृगन बर मिल्लि ॥ छं० ॥ २२ ॥

राज्य मंत्रियों ने यह सम्मति दी कि अपने आप झगड़ा मोल लेना उचित नहीं किसी नीति द्वारा काम लेना ठीक है ।

कवित्त ॥ मिले सब्ब सामंत । मत्त मंद्यौ सु नरेसुर ॥
दह गूना [2]दल साहि । सज्जि चतुरंग सजौ उर ॥
मवन मंत चुक्कौ न । सोइ बर मंत विचारौ ॥
बल घट्यौ अप्पनौ । सोच पछ्छिलौ निहारौ ॥
[3]तन सट्टौ लीजै मुगति । जुगति बंध गोरी दलह ॥
संग्राम भीर प्रथिराज बल । अप्प मत्ति किज्जै कलह ॥ छं० ॥ २३ ॥

यह बात सुन कर सामंतों का मुसका कर कहना कि भारथ का बचन है कि रण में मरने से ही बीर का कल्याण है ।

सुनिय बत्त पज्जून । राव परसंग [4]मुसक्यौ ॥
देव राव वग्गरौ । सेन दे पाव कसक्यौ ॥

---

(१) ए.-धधार । (२) मो.-बल ।
(३) मो.-सैंट्टे लीजे, ए.-सद सटें । (४) मो.-सुसक्यौ ।

तन सट्टै [1]सहि मुकति। बोल भारथ्थौ बोलै ॥
लोह अंच उड्डंत। पत्त तरवर जिम डोलै ॥
सुरतान चंपि मुष्षां लग्यौ। दिल्ली न्रप दल बानिवौ ॥
भर भीर धीर सामंत पुन। अबै पटंतर जानिबौ ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय का कहना कि मैंने सब शत्रुओं को पराजित किया और शहाबुद्दीन को भी पकड़ा। अब भी उस से नहीं डरता।

कहै राव पज्जून। तार कब्यों तत्तारिय ॥
मैं दष्षिन वै दंस। भीर जद्दव पर [2]पारिय ॥
मैं बंध्यो जंगलू। राव चामंड [3]सु सथ्थे ॥
बंभन वास विरास। बीर बड़ गुज्जर तथ्थे ॥
भर विभर सेन चहुआन दल। गोरी दल [4]कित्तक गिनौ ॥
जानै कि [5]भीम कौरव सुबर। जर समूह तरवर किनौ ॥छं०॥२५॥

जैत राव का कहना कि शहाबुद्दीन की सेना से मिलान होना लाहौर के पास अनुमान किया जाता है अत एव अपनी सब तैयारी कर लेनी उचित है आगे जो आप की इच्छा हो।

कहै जैत पंवार। सुनहु प्रथिराज राज मत ॥
जुद्ध साहि गोरी। नरिंद लाहौर कोट गत ॥
सबै सैन अप्पनौ। राज एकट्ठ सु किज्ज ॥
इष्ट भ्रत्य सगपन सु। हित कागद लिषि दिज्जै ॥
सामंत सामि इहि मंत है। [6]अरु जु मंत चित्तै न्रपति ॥
धन रहै धम्म जसु जोग ह्वै। दिपति दीप दिव लोकपति ॥छं०॥२६॥

---

(१) ए.-साटे। (२) मो.-परिहरिय।
(३) मो.-जु। (४) मो.-किन्ती।
(५) ए.-भीम, कौरू, कौरू, कौरौं। (६) ए.-अरु जुद्ध।

रघुबंस राम का कहना कि हम सामंत लोग मंत्र क्या जानें केवल मरना जानते हैं, पहिले शाह को पकड़ा था अब भी पकडेंगे।

वह वह कहि रघुबंश। राम हक्कारि सु उठ्यौ॥
सुनौ सब्ब सामंत। साहि आए बल [1]छुट्यौ॥
गज रु सिंघ सा पुरिष। जहौ रुंधै तहां सुभ्भै॥
[2]असम समौ जानहि न। लज्ज पंकै आलुभ्भै॥
सामंत मंत जानैं नही। मत्त गहैं इक मरन कौ
सुरतान सेन पहिलै बंध्यौ। फिर बंधौं तौ करन कौ॥ छं०॥२७॥

कविचन्द का कहना कि हे गुज्जर गँवारी बातें न कहो इन्हीं बातों से राज्य का नाश होता है। हम सब के मरने पर राजा क्या करेगा।

रे गुज्जर गांवार। राज लै मंत न होई॥
अप मर छिज्जै नृपति। कौन कारज यह जोई॥
सब सेवक चहुआन। देस भग्गै धर घिल्लै॥
पच्छि काम कह करै। स्वामि संग्राम इकल्लै॥
पंडित्त भट्ट कबि गाइना। नृप सौदागिर वार हुअ॥
गजराज [3]सीस सोभा वरन। क्रन उड़ाइ वह सोभ लह॥छं०॥२८॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो बात आगे आई है उस के लिये जुद्ध का सामान करो।

दूहा॥ परी षेार तन दंग [4]गम। अग्ग जुद्ध सुरतान॥
अब इह मंत विचारये। लरन मरन परवान॥ छं०॥२९॥

---

(१) ए.-घटयो, (२) ए. कृ. को.-समौ, असमौ।
(३) सा.-सोस। (४) ए.-मम।

[1]गजत संग प्रथिराज कै। है दिष्पिय परवान॥
बज्जी पष्पर षंड रै। चाहुआन सुरतान॥ छं० ॥ ३० ॥
ग्यारह अषर पंच षट। लहु गुरु होइ समान॥
कंठ सोभ वर छंद कौ। नाम कह्यौ परवान॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के घोड़ों की शोभा वर्णन।

छंद कंठशोभा॥ फिरे हय बष्पर पष्पर से। मने फिर इंदुज पंष कसे॥
सोई उपमा कविचंद कथे। सजे मनों पौंम पवंग रथे॥ छं० ॥ ३२॥
उर पुट्ठिय [2]सुट्ठिय दिट्ठिय ता। वपरी पय लंगत ता धरिता॥
लग्गे उड़ि छित्तिय [3]चौ नलयं। सुने पुर केह अवत्तनयं॥ छं०॥३३॥
अग बंधि सु हेम हमेल घनं। तव चामर जोति पवंन रुनं॥
ग्रह अट्ठस तारक [4]बीत षगे। मनों सुत के उर भान [5]उगे॥ छं०॥३४॥
पय मंडिहि अंसु धरै उलटा। मनौं बिंटय देषि चलै कुलटा॥
मुष कट्टिन घूंघट अस्सु बली। मनों घुंघट दै कुल बहु चली॥
छं० ॥ ३५ ॥
तिनं उपमा बरनो न घनं। पुजे नन बग्ग पवंन मनं॥ छं०॥३६॥

आधी रात को दूत पृथ्वीराज के पास पहुंचा और समाचार दिया कि अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख सेना के साथ सुलतान लाहौर से चौदह कोस पर आ पहुंचा।

कुंडलिया॥ नव बज्जी घरियार घर। राज महल उठि जाइ॥
निसा अद्ध बर उत्तरे। दूत संपते आइ॥
दूत संपते आइ। धाइ चहुआन सु जग्गिय॥
सिंघ विहथ्थें मुक्कि। साहि साहीउर तग्गिय॥
अट्ठ सहस गजराज। लष्ष अट्ठारह [6]ताजिय॥
उभै सत्त वर कोस। साहि गौरी नव बाजिय॥ छं० ॥ ३७॥

---

(१) ए. कृ. को.-गजन सिंग (२) ए. कृ. को.-उर उप्पर पुट्ठिय दिट्ठियत।
(३) ए.-दो, दौ। (४) ए.कृ.को.-पीत पगे। (५) ए.-उडे। (६) ए. कृ. को.-राजिय।

पृथ्वीराज ने दूत से पत्र लेकर पढ़ा—हिन्दुओं के दल में शोर मच गया।

दूहा ॥ बचि कागद चहुआन नें। फिरन चंद [1]सह थान ॥
मनो बीर तनु अंकुरे। मुगति भोग वनि प्रान ॥ छं० ॥ ३८ ॥
मची कूह दल हिंदु के। [2]कसे सनाह सनाह ॥
बर चिराक दस [3]सहस भइ। बजि निसांन अरिदाह ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का दरबार में आकर पृथ्वीराज से कहना कि मुस्लमान सेना चिनाब के पार आगई। चन्द पुंडीर ने उसका रास्ता बांध कर मुझे इधर भेजा है।

*बा बहू नृप मुक्कतें। दूत आइ तिहि वार ॥
सजी सेन गोरी सुभर। उत्तरए नद पार ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंचासज गोरी नृपति। बंध उतरि नहिं पार ॥
चंद बीर पुंडीर नें। [4]थटि मुक्क दरवार ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुलतान का अपने सामंतों के साथ युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ षां मारुफ ततार। षान षिलची बर गढ्ढे ॥
चामर छच मुजक्क। गोल सेना रचि गढ्ढे ॥
नारि गोरि जम्बूर। सुबर कीना गजसार ॥
नूरीं षां हुज्जाव। नूर महमद सिर भार ॥
वज्जोर षान गोरी सुभर। षान षान हजरत्ति षां ॥
बिय सज्जि सैन हरवल करिय। तहां उभौ सजरत्ति षां ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) कृ.-सर। (२) ए. कृ-करै सनाह अनाह। (३) ए. कृ. को.-दस दस।
(४) ए.-उत्तर यौ नदि पार, मो. घट मुक्यौ दरवार।
* यह दोहा ए. को. और कृ. प्रति में नहीं है।

शाहजादे का सरदारों के साथ सेना हरवल रचना और सेना के मुख्य सरदारों के नाम स्थान और उन का पराक्रम वर्णन।

रचि हरवल सुरतान। साहिजादा सुरतानं॥
षां पैंदा महमूद। बीर बंध्यौ सु विहानं॥
षां मंगोल लक्खरी। बीस टंकौ बर षंचै॥
चौ तेगीसह वाज। बान अरि प्रान सु अंचै॥
जँहगीर षान जह गोर बर। षां हिंदू बर बर बिहर॥
पच्छिमी षान पठ्ठान सह। रचि उभ्भै हरवल गहर॥छं०॥४३॥
रचि हरवल पठ्ठांन। षान इसमान रु गष्षर॥
केली षां कुंजरी। साह सारी दल पष्षर॥
षां भट्टी मह नंग। षान षुरसानी बब्बर॥
हवस षान हुज्जाब। ग्रब्ब आलम्म जास बर॥
त्रिन अग्ग अट्ठ गजराज बर। मद सरक्क पट्टे तिना॥
पंच बिन पिंड जो जपजे। जुद्ध होइ लज्जी बिना॥ छं०॥ ४४॥

शहाबुद्दीन का इस पार तीस दूतों को रख कर चिनाब पार करना।

[1]करित माय बहु साहि। तीस तहँ रष्षि फिरस्ते॥
आलम षान गुमान। षान उजबक्क निरस्ते॥
लहु मारूफ गुमस्त। षान दुस्तम बजरंगी॥
हिंदु सेन उप्परें। साहि बज्जै रन जंगी॥
सह सेन टारि सोरा रच्यौ। साहि चिन्नाव सु उत्तर्यौ॥
संभले सूर सामंत नृप। रोस बीर बीरं दुर्यो॥ छं०॥ ४५॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का क्रोध करना और दूत का कहना पुंडीर उसे रोके हुए है।

(१) ए.-करत माइ चौसाहि।

दूहा ॥ तमसि तमसि सामंत सब । रोस भरिग प्रथिराज ॥
जब लगि रुपि पुंडीर नें । रोक्यौ गोरी साज ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जहां पर सुलतान चिनाब उतरने वाला था वहीं पुण्डीर ने रास्ता रोका। घोर युद्ध हुआ। चन्द पुण्डीर घायल हो कर गिरा। सुलतान चिनाब पार होने लगा।

भुजंगी ॥ जहां उतर्‌यौ साहि चिन्हाव मीरं । तहां नेज गड्यौ ठढ्ढके पुडीरं ।
करी आनि साहाब सा बंधि गोरी। धके धींग धींगं धकावै सजोरी ॥
छं० ॥ ४७ ॥

दोऊ दीन दीनं कढ़ी बंकि असी। किधौं मेघ में बीज कोटि विकस्सी ॥
किए सिप्परं कोर ता सेल अग्गी । किधों बद्दरं कोर नागिन्न नग्गी ॥
छं० ॥ ४८ ॥

हबक्के जु मेछं भ्रमंतं जु छुट्टै । मनों घेरनी घुम्मि पारेव तुट्टै ॥
उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी। मनों जाल में मीन अड्डी निकासी ॥
छं० ॥ ४९ ॥

लटक्के जुरंनं उड़ै हंस हल्लै । रसं भीति सूरं चवग्गान छिल्लै ।
लगे सीस नेजा भ्रमें मेजि तथ्थं । भषै वाइसं भात दीपत्ति सथ्थं ॥
छं० ॥ ५० ॥

करै मार मारं महाबीर धीरं । भये मेघ धारा बरष्पंत तीरं ॥
परे पंच पुंडीर सा चंद कय्यौ । तबै साहि गोरी स चन्हाव चय्यौ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

सुलतान का चिनाब उतरना और चन्द पुण्डीर का गिरना देख कर दूत ने बढ़ कर पृथ्वीराज को समाचार दिया।

कवित्त ॥ उतरि साहि चिन्हाव । घाय पुंडीर लुथ्थि पर ॥
उप्पान्यौ बर चंद । पंच बंधव सु पथ्थ धर ॥
दिषि दूत बर चरित । पास आयौ चहुआनं ॥
उप्पर गोरी नरिंद । हास बढ्ढी सुरतानं ॥

बर मीर धीर मारूफ ढुरि। [1]पंच अनी एकठ जुरी ॥
मुर पंच कोस लाहोर तें। मेच्छ मिलानह सो करी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

पृथ्वीराज ने क्रोध के साथ प्रतिज्ञा की कि तब मैं सोमेश्वर का बेटा जो फिर सुलतान को कैद करूं। पृथ्वीराज ने चन्द्र व्यूह की रचना करके चढ़ाई की।

दूहा ॥ बीर रोस बर बैर बर। झुकि लग्गै असमान ॥
तौ नंदन सोमेस कौ। फिरि बंधौ सुरतान ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चन्द्रव्यूह नृप बंधि दल। धनि प्रथिराज नरिंद ॥
साहि बंध सुरतान सौं। सेना बिन विधि कंद ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पञ्चमी मङ्गलवार को पृथ्वीराज ने चढ़ाई की। (कवि ने उस दिन के ग्रह स्थिति योग आदि का वर्णन किया है)

कवित्त ॥ बर मंगल पंचमी। दिन सु दीनौ प्रथिराजं ॥
राह केत जय दीन। दुष्ट टारे सुभ काजं ॥
अष्ट चक्र जोगनी। भोग भरनौ सुधि रारी ॥
गुर पंचम रबि पंच। अष्ट मंगल नृप भारी ॥
कै इंद्र बुद्ध भारथ्थ भल। कर चिह्नल चक्रा बलिय ॥
सुभ घरिय राज बर लौन बर। चढ्यौ उदै क्रूरह बलिय ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ सो रचि उद्ध अवद्ध अध। [2]उग्गि महब विधि [3]कंद ॥
बर निषेद न्वप बंदयौ। को न भाय कबिचंद ॥ छं० ॥ ५६ ॥

जिस प्रकार चक्रवाक, साधु, रोगी, निर्धन, विरह वियोगी लोग रात्रि के अवसान और सूर्य्योदय की इच्छा करते हैं उसी प्रकार पृथ्वीराज भी सूर्य्योदय को चाहता था।

(१) ए.-खंच। (२) ए.-लगी। (३) एं.-मंडि, कृ.-मंदि मंड।

कवित्त ॥ प्रात सूर बंछई । चक्क चक्किय रबि बंछै ॥
प्रात सूर बंछई । सुरह बुद्धि बल सो इंछै ॥
प्रात सूर बंछई । प्रात बर बंछि वियोगी ॥
प्रात सूर बंछई । ज्यौं मु बंछै बर रोगी ॥
बंछयौ प्रात ज्यों त्यों उनन । वंछै रंक करन्न बर ॥
बंछयौ प्रात प्रथिराज नें । सती सत्त बंछैति उर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज की सेना तथा चढ़ाई का वर्णन ।

दंडमाली ॥ भय प्रात रत्तिय, जुरत दीसय चंद मंदय चंद यौ ।
भर तमस तामस, सूर वर भरि, रास तामस छंद यौ ॥
बर बज्जियं नीसान धुनि, घन बीर बरनि अँकूरयं ।
धर धरकि धाइर, करषि काइर, रस मिसूर स कूरयं॥ छं० ॥ ५८ ॥
गज घंट घनकिय, रुद्र [1]भन किय, षनकि संकर उद्दयौ ।
रन मंकि [2]भेरिय, कन्ह होरिय, दंति दान धनं [3]दयौ ॥
सुनि बीर सद्दइ, सबद पद्धइ, सद्द असद्दइ छंडयौ ।
तिह ठौर अद्भुत, होत न्रप दल, बंधि दुज्जन षंडयौ ॥छं०॥५९॥
सन्नाह सूरज सज्जि घाटं, चंद ओपम राजई ।
मुकर में प्रतिब्यंब राजय, सत्त धन ससि साजई ॥
बर फब्बि बंबर, टोप आयो, त रोस सीसत आइए ।
नष्पिच हस्त कि, भान चंपक, कमल सूरहि साइए ॥ छं० ॥ ६० ॥
बर बीर धा जोगिंद पत्तिय, कब्बि ओपम पाइयं ॥
तजि मोह माया, छोह कल बर, धार तित्थह धाइयं ॥
संसार शंकर वंधि, गज जिम, अप्प वंधन हथ्थयं ।
उनमत्त गज जिमि, नंख दीनी, मोह माया सथ्थयं ॥ छं० ॥ ६१ ॥
सो प्रवल मह जुग, बंधि जोगी, मुनी आरम देवयौ ।
सामंत धनि जिम, षित्ति कीनी, पत्त तरु जिम भेवयौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

(१) ए.-भनषिय । (२) ए.-भोरिय ।
(३) ए.-धनंजयौ।

दूहा ॥ क्रंम गाइ इक मुगत कौं। क्यों करिजै बाषान ॥
मन अनंष सामंत नै। [1]कच कर बति पाषान ॥ छं० ॥ ६३ ॥
बाई बिष धंधरि परिय। बहर छाए भान ॥
कुन घर मंगल बज्जही। कै चढ़ि मंगल आन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दोनों ओर की सेनाओं के चमकते हुए अस्त्र शस्त्र और निशानों का वर्णन।

दिष्ट देषि सुरतान दल। लोहा चक्कत बान ॥
षहकि फेरि उड़गन चले। निसि आगम फिरि [2]जान ॥ छं० ॥ ६५ ॥
धजा बाइ बंकुर उड़ति। छबि कबिंद इह आइ ॥
उड़गन चंद नरिंद बिय। लगौ [3]मनों अइ पाइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
से सनि संकहि बजतहि। बाजे कुहक सुरंग ॥
मेटै सह निसान के। सुने न श्रवनति अंग ॥ छं० ॥ ६७ ॥

जब दोनों सेनाएं साम्हने हुईं तब मेवारपति रावल समरासिंह ने आगे बढ़कर युद्ध आरम्भ किया।

अनी दोउ घन घोर ज्यौं। [4]घाय मिले कर घाट ॥
चिचंगी रावर बिना। करै कोन दह वाट ॥ छं० ॥ ६८ ॥
कवित्त ॥ पवन रूप पारचंड। घालि असु असि वर झारै ॥
मार मार सुर बज्जि। पत्त तरू अरि सिर पारै ॥
फहकि सह [5]फेफरा। हड्ड कंकर उप्पारै ॥
कटि भसुंड परि मुंड। भिंड कंटक उप्पारै ॥
बज्जयौ विषम मेवारपति। रज उडाइ सुरतान दल ॥
समरथ्थ समर [6]सम्मर मिलिय। अनी मुष्प पिष्पौ सबल ॥ छं० ॥ ६९ ॥

रावल, जैत पँवार, चामंड राय और हुसैन षां का क्रमानुसार हरावल में आक्रमण करना। पीठि सेना का पीछे से बढ़ना।

(१) मो.-ज्यौं कचकरवर्ता। (२) को.ए.-जाम। (३) ए. मो.-मानों-मानो।
(४) ए. कृ. को.-घाघा मिलेक थाट, कर थाट।
(५) ए. कृ. को.-फीफरा। (६) ए. कृ. को.-मनमथ मिल, मिली, मिल्यौ।

रावर उप्पर धाई। पर्‍यौ पांवार जैत घिभि॥
तिहि उप्पर चांमंड। कर्‍यौ हस्सेन षान सजि॥
धक्काई धक्काइ। दोइ हरबल बर मभभै॥
पच्छ सेन आहुट्टि। अनी बंधी आलुझभै॥
गजराज विय सु सुरतान दल। दह चतुरँग बर बीर बर॥
धनि धार धार धारह धनी। बर भट्टी उप्पारि कर॥ छ०॥ ७०॥

हिन्दू सेना की चन्द्र व्यूह रचना।

छच मु जीक सु अप्पि। जैत दीनौ सिर छचं॥
चन्द्रव्यूह अंकुरिय। राज [1]दुअ इहां इकचं॥
एक अग्र हूसेन। बीय अग्रह पुंडीरं॥
मद्धि भाग रघुवंस। राम उभौ बर बीरं॥
सांघलौ सूर सारंग दे। उररि षान गोरीय मुष॥
हथनारि [2]गोर जंबूर घन। दुहूं बांह उभभंति [3]रष॥ छं०॥७१॥

दो पहर के समय चंद पुंडीर का तिरछा रुख दे कर शत्रु सेना को दबाना।

छुट्टि अद्ध बर घटिय। चढ्यौ मध्यान भान सिर॥
सूर कंध बर कट्ठि। मिले काइर कुरंग बर॥
घरी अद्ध बर अद्ध। लोह सों लोह जु रुक्के॥
मन अग्गै अरि मिले। चित्त में कंक घरक्के॥
पुंडीर भीर भंजन भिरन। लरन तिरच्छौ लग्गयौ॥
नव बधू जेन संका सुबर। उदौ जानि जिम भग्गयौ॥ छं०॥७२॥

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन का सम्मुख घोर युद्ध होना। योगिनी भैरव आदि का आनन्द से नाचना।

भुजंगी॥ मिले चाइ चहुआन सा चंपि गोरी। स्वयं पंच कोरी निसानं अहोरी॥
बजे आवलं संभरे अद्ध कोसं। घने अग्ग नीसान मिलि अद्धकोसं॥
छं०॥ ७३॥

(१) छ. मो.-हुअ। (२) प. कृ. को. जो, जोरो। (३) कृ.-सष।

बरं बंबरं चौर माहीति साई। हलें छत्र पीतं बले यार घाई॥
बुलै सूर हक्के दहक्के पचारं। घलें बथ्थ दोऊ धरं जा [1]अपारं॥
छं० ॥ ७४ ॥

उतंमंग तुट्टै परै श्रोन धारी। मनों दंड सुक्की अगीवाइ वारी॥
नचैं कंध बंधं हकैं सीस भारी। तहां जोग माया [2]जकी सी बिचारी॥
छं० ॥ ७५ ॥

बढ़ी साँग लग्गी बजी धार धारं। तहां सेंन दूनूं करै मार मारं॥
नचै रंग भैरू गहै ताल बीरं। सुरंग अच्छरी बंधि नारद तीरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

इसी जुद्ध बधं उब्बद्धे उभानं। भिरै गोरियं सेन अरु चाहुआनं॥
करै कुंडली तेग बग्गी [3]प्रमानं। मनों मंडली रास तं कन्ह वानं॥
॥ छं० ॥ ७७ ॥

फुठी आवधं माहि सामंत सूरं। बजै गोर ओरं मनों बज्ज झूरं॥
लगै धार धारं तिनै धरह तुट्टै। दुहूं कुंभ भग्गे करं कं अहुट्टै॥
॥ छं० ॥ ७८ ॥

फुटी श्रोन भोमं [4]अपं बिंब राजं। मनों मेघ बुट्ठें प्रथीमी समाजं॥
पराक्रम्म राजं प्रथीपत्ति रह्यौ। रनं रंधि गोरी सहं जंग जुह्यौ॥
छं० ॥ ७९ ॥

सुलतान का घबराना। तातार खां का धैर्य दिलाना।

दूहा॥ तेज छुट्टि गोरी सुबर। दिय धीरज तत्तार॥
मो उभ्भै सुरतान को। [5]भौर परी इन वार॥ छं॥ ८०॥

उक्त युद्ध की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

मोतीदाम॥ रतिराज रु जोवन राजत जोर। चप्पौ ससिरं उर [6]यौवन कोर॥
उनी मधि मधि मधू धुनि होय। तिनं उपमा बरनी कबि [7]जोय॥
छं० ॥ ८१ ॥

---

(१) ए.-भपारं। (२) मो.-जुक्कीयं बिचारी। (३) ए. कृ.-पमानी।
(४) कृ. ए.-अपी। (५) ए.-भरी। (६) ए. कृ. को.-कोह, कोय, होइ।

सुनी बर आगम [1]जुद्धन बैन । नच्यौ कबहूं न सु उहिम मैन ॥
कबहूं दुरि क्रंनन [2]पुच्छत नैन । कहौ किन अब्ब दुरी दुरि बैन ॥
छं० ॥ ८२ ॥

झझि रोर नसै सब दंदभि बज्जि । उभै रतिराज [3]सुजोवन सज्जि ॥
कही बर ओन सुरंगिय रज्जि । चंपे [4]रन दोउ बनं बन भज्जि ॥
छं० ॥ ८३ ॥

दुय मौनन लीन भये रत रज्जि । भम विभ्रम भारु परी गहि नज्जि॥
सुर मारुत फौज प्रथंम चलाइ । गति लज्जि सकुचि कळे मिलि आइ॥
छं ॥ ८४ ॥

दहि सीत मधूप न कंदहि जीव । प्रकटै उर तुच्छ सोज उर भीव॥
बिन पल्लव कोरहि [5]तारहि रंभ । गहना बिन बाल बिराजत अंभ॥
छं० ॥ ८५ ॥

कलि कंठन कंठ सज्यौ अलि पंष । न उड्डिय भ्रंग नवेलिय अंष ॥
सजी चतुरंग सज्यौ बन राइ । बजी इन उप्पर सैसब जाइ ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कवि मत्तिय जूह तिंन बहु घोर । बनं तब संधय चंद कठोर॥
छं० ॥ ८७॥

रसावला ॥ बोल षुच्चै घनं, स्वांमि जंपे मनं । रोस लग्गो तनं, सिंघ मद्दं मनं॥
छं० ॥ ८८ ॥

छोह मोहं षिनं, दांन छुट्टे ननं । नाम राजं घनं, भ्रंम सातुक्कनं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

मेच्छ बाहं बिनं, रत्त कंधं ननं । ढल्ल जा ढाहनं, जीवना सा हनं॥
छं० ॥ ९० ॥

बान जा संधनं, पंषि जा बंधन । स्यांम सेतं अनी, पीत रत्तं घनी॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूह मच्ची षरी, रोस दंती फिरी । फौज फट्टी पुनं, सूर जुभ्भे घनं॥
छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) ए.-जुद्धन । (२) भो. ए. को.-पुच्छन। (३) ए.-सजीवन ।
(४) ए. कृ. को.-नर । (५) ए.-तारै संभ ।

लेहु लेहु करी, लोह कहु अरी। कन्ह जा संभरी, पाइ मंडे फिरी ॥
छं० ॥ ९३ ॥
बीर हक्कं करी, नैन रत्तं बरी। षंड जा षोलियं, बीर सा बोलियं ॥
छं० ॥ ९४ ॥
बीर बज्जे घुरं, दंति पट्टे छुरं। झार सं कोरीयं, फौज बिप्फौरियं ॥
छं० ॥ ९५ ॥
दंत रुद्धी परे, अग्ग फूलं झरे। हेमयं नारियं, जावकं ढारियं ॥
छं० ॥ ९६ ॥
आननं हंकयं, अंग [1]जानंचयं। सत्त सामंतयं, बांन सा पष्ययं ॥
छं० ॥ ९७ ॥
फौज दोऊ फटी, जांनि जूनी टटी। .... ॥ छं० ॥ ९८ ॥

सोलंकी माधव राय से खिलजी खां से तलवार का युद्ध होने लगा। माधव राय की तलवार टूट गई तब वह कटार से लड़ने लगा। शत्रुओं ने अधर्म युद्ध से उसे मार गिराया।

कवित्त ॥ सौलंकी माधव। नरिंद षिलची मुष लग्गा ॥
सुबर बीर रस बीर। बीर बीरा रस पग्गा ॥
दुअन बुद्ध जुध तेग। दुहू हथ्थन उभ्भारिय ॥
तेग तुट्टि चालुक्क। बथ्थ परि कट्टि कटारिय ॥
अग अग रुक्कि ठिल्ले बलन। अधम जुद्ध लग्गे लरन ॥
सारंग बंध घन घाव परि। गोरी बै दिन्नौ मरन ॥ छं० ॥ ९९ ॥

वीर गति से मरने पर मोक्ष पद पाने की प्रशंसा।

षग्ग हटक्कि जुटिक्क। जमन सेना समंद गजि ॥
हय गय बर हिल्लोर। गरुअ गोइंद दिष्षि सजि ॥

---

(१) ए.-जामं।

अनम अठेल अभंग। नीर असि मीर समाहिय॥
अति दल बल आहुट्टि। पच्छ लज्जी पर वाहिय॥
रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ। रज न लगी रज रज भयौ॥
उच्छंगन अच्छर सो लयौ। देव विमानन चढ़ि गयौ॥ छं० ॥१००॥

जै सिंह की वीरता और उसकी वीर मृत्यु की प्रशंसा।

परि पतंग जै सिंघ। पतँग अप्पुन तन दझै॥
नव पतंग गति लीन। करे अरि अरिधज धज्जै॥
तेल ठांम बात्तीय। [1]अगन्नि एकल विरुझाइय॥
पंच अप्प अरि पंच। पंच अरि पंथ लगाइय॥
आरन्नि कूंआरी बर बर्यौ। दै दाहन दुज्जन दवन॥
जीतेव असुर महि मंडलह। और ताहि पुज्जै कवन॥ छं०॥१०१॥

वीर पुंडीर के भाई की वीरता और उस के कमंध का खड़ा होना।

रुप्पौ बीर पुंडरी। फिरी पारस सुरतानी॥
शस्त्र बीर चमकंत। तेज आरुहि सिर [2]ठानी॥
टोप ओप तुटि किरच। सार सारह जरि भारे॥
मिलि नछित्र रोहनी। सीस ससि रुडगन चारे॥
उठि परत भिरत भंजत अरिन। जै जै जै सुर लोक हुअ॥
उठ्यौ कमंध पलपंच चव। कोन भाइ कय्यौ जु धुअ॥ छं०॥ १०२॥

पज्जून राय के भाई पल्हान राय का खुरसान खां के हाथ से मारा जाना।

दुजन सख कूंरंभ। बंध पल्हन सक्कारिय॥
संग्हौ षां षुरसान। तेग लंबी उभ्भारिय॥
टोप टुट्टि बर करी। सीस परि तुट्टि कमंधं॥
मार मार उच्चार। तार तं नंचि कमंधं॥

---

(१) मो.-अगानि। (२) ए.-तानी।

तहँ देषि रुद्र रुद्रह [1]हस्यौ। [2]हय हय हय नंदी कह्यौ॥
कविचंद [3]शैलपुत्री चकित। पिष्षि बीर भारथ नयौ॥छं०॥१०३॥

जै सिंह के भाई का मारा जाना।

सोलंकी सारंग। षान षिलची मुष लग्गा॥
वह पंगानी भृत्त। इते चहुआन दिलग्गा॥
है कंध न दिय पाय। कन्ह उत्तरि बिय बाजिय॥
गज गुंजार हुँकार। धरा गिर कंदर गाजिय॥
जय जयति देव जै जै करहिं। पहुपंजलि पूजत रिनह॥
इक पर्‍यौ षेत सोधै सकल। इक रह्यौ बंधे धुनह॥छं०॥१०४॥

गोइन्द राय का तत्तार खां के हाथी और फीलवान को मार गिराना।

करी मुष्ष आहुट्ठ। बीर गोइंद सु अप्पै॥
कबिल पील जनु कन्ह। दंत दारुन गहि नप्पै॥
सुंड दंडं भये षंड। पीलवानं गज मुक्यौ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। आइ अंषिन पल रुक्यौ॥
बर बीर पर्‍यौ भारथ्थ बर। लोह लहरी लगात झुल्यौ॥
तत्तार षान सम्हौ सु कत। सिंघ हक्कि अंबर डुल्यौ॥छं०॥१०५॥

नरसिंह राय के सिर में घाव लगने से उसके गिर जाने पर चामुंडराय का उस की रक्षा करना।

षोलि षग्ग नरसिंघ। षिप्पिझ षज सीसह झारिय॥
तुटि धर धरनि परंत। परत संभरि कट्टारिय॥
चरन अंत उरझंत। बीर कूरंभ करारौ॥
तेग घाइ चुक्कंत। झरी झर लोह सँभारौ॥
चलि गयौ [4]क्रमन क्रमन चलै। डुल्यौ न [5]डुल्ल तन हथ्थ बर॥
तिन परत बीर दाहर तनौ। चामंडा बज्जी लहर॥छं०॥१०६॥

(१) मो.-भयौ। (२) मो.-हयं हयं। (३) ए.- सवल, कृ. को.- सयल।
(४) मो.-न क्रमन क्रमनत। (५) ए.-नर डुलतन।

रात हो गई दूसरे दिन सबेरे फिर पृथ्वीराज ने शत्रुओं को आ घेरा।

भुजंगी ॥ [1]छुटी छंदनी छंद सीमा प्रमानं। मिली ढालनी माल राही समानं॥
निसा मान नीसान नीसान धूअं। धुअं धूरिनं मूरिनं पूर कुअं॥
छं० ॥ १०७॥

सुरत्तान फौजं तिनें [2]पत्ति फेरी। मुषं लग्गि चहुआन पारस्स घेरी॥
भये प्रात सुज्जात संग्राभ षालं। चहुव्वान उट्ठाय सालोपि थालं॥
छं० ॥ १०८॥

जैत राय के भाई लक्ष्मण राय के मरते समय अप्सराओं का उसके पाने की इच्छा करना परंतु उसका सूर्य्य लोक भेद कर मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ जैत बंध ढहि पर्‌यो। लष्ष लष्षन कौ जायौ॥
तहं झगरी मह माय। देवि हुं कारौ पायौ॥
हुंकारै हुंकार। जूह गिद्धनि उड्डायौ॥
गिद्धिन तें अपछरा। लियौ चाहत नहि पायौ॥
अब तरन सोइ उतपति गयौ। देवथान बिभ्रम [3]बियौ॥
जम लोक न शिवपुर ब्रह्मपुर। भान थान भानै वियौ॥छं०॥१०९॥

तन झंझरि पावार। पर्‌यौ धर मुच्छि [4]घटिय बिय॥
बर अच्छर बिंटयौ। सुरँग मुक्के सुरंग हिय॥
[5]तिहित बाल तत काल। सलष बंधिव ढिग आइय॥
लिषिय अंग बिय अथ्थ। सोई बर बंच दिषाइय॥
जनम मरन सह दुह सुगति। नन मिट्टै भिंटह न तुअ॥
ए वार सुबर बंटहु नहीं। बंधि लेहु सुकौ बधुअ॥ छं० ॥ ११० ॥

महादेव का लक्ष्मण का सिर अपनी माला के लिये लेना।

---

(१) ए.-छंदानं, कृ. मो.—छदनी, छदनीमा। (२) ए. कृ. को.—पंति।
(३) मो.-भयौ। (४) ए.-घटय। (५) मो.-तिहित काल सतबाल।

दूहा ॥ राम बंध कौ सीस बरं । ईस गह्यौ कर चाइ ॥
[1]अथ्थि दरिद्री ज्यौं भयौ । देषि देषि ललचाइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

एक पहर दिन चढ़े जंघा योगी ने त्रिशूल लेकर घोर युद्ध मचाया ।

जाम एक दिन चढ़त बर । जंघारौ झुकि बीर ॥
तीर जेम तत्तौ पर्‌यौ । धर अष्षारे मौर ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ जंघारौ जोगौ । जुगिंद कढ्यौ कट्टारौ ॥
परस पानि तुंगौ । चिसूल मष्षर अधिकारौ ॥
जटत वांन सिंगौ । विभूत हर वर हर सारौ ॥
सबर सद्द बद्दयौ । विषम मद गंधन झारौ ॥
आसन सदिट्ठ निज पत्ति में । लिय सिर चंद अम्मित अमर ॥
मंडलीक राम [2]रावत भिरत । नभौ बीर इत्तौ समर ॥छं०॥११३॥

शस्त्र सजकर सुलतान का युद्ध में टूटना । लंगरी राय का घोर युद्ध मचाना । लंगरी राय की बीरता की प्रशंसा ।

सिलह सज्जि सुरतान । झुक्कि बज्जे रन जंगं ॥
सुनें श्रवन लंगरी । बीर लग्गा अनभंगं ॥
बीर धीर सत मथ्थ । बीर हंकरि रन धायौ ॥
सामंता सत मद्धि । मरन दीनं भय सायौ ॥
पारंत धक्क हक्कंत [3]रन । पग प्रवाह षग षुल्लयौ ॥
बिभ्भूत चंद अंगन तिलक । बद्दसि बीर हकि बुल्लयौ ॥छं०॥११४॥
लंगा लोह उचाइ । पर्‌यौ घुंमर घन मझ्झै ॥
जुरत तेग सम तेग । कोर बद्दर कछु सुझ्झै ॥
यौं लग्गौ सुरतान । अनल दावानल दग्गं ॥
ज्यों लंगूर लग्गया । अगनि अगै आलग्गं ॥
इक मार उझ्झार अषार मल । एक उझ्झार सुझ्झारयौ ॥
इक बार तर्‌यौ दुस्तर रुपे । दूजै तेग उभारयौ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.-अथिर । (२) मो.-रावन । (३) ए.-रिन, तरिन ।

कुंडलिया ॥ तेग झारि उझझारि बर। [1]फिरि उपमा कबि [2]कथ्थ ॥
नैन बान अंकुर [3]बुहुरि। तन तुट्टै बहि हथ्थ ॥
तन तुट्टै बहि हथ्थ। फेरि बर बीर स बीरह ॥
मरन चित्त सिंचयौ। जनम [4]जिन तजौ ज जीरह ॥
[5]हथ्थ वथ्थ आहित्त। फेरि तक्के उर वेगा ॥
लंगा लंगरि राइ। बीर [6]उच्चाइ सु तेगा ॥ छं० ॥ ११६ ॥

लोहाने की वीरता का वर्णन। चौसठ खाँओं का मारा जाना।

कवित्त ॥ लोहानौ मद मुंद। बान मुक्कै बहु भारी ॥
फुट्टि सु ठट्टर ज्वान। पिट्ठ जरद्व निक्कारी ॥
मनों किवारी लागि। पुट्ठि षिरकी उघ्घारिय ॥
बट्टारी बर कट्टि। बीर अवसान संभारिय ॥
एक झर मीर उरझारि [7]झर। करि सुमेर परि अरि सु फिरि ॥
चवसट्ठि षान गोरी परै। तिन [8]रावव इक राज परि ॥ छं० ॥ ११७ ॥

मानि लोह मारूफ। रोस विडुर गाहक्के ॥
मनु पंचानन बाहि। सद्द [9]सिरहद्द हहक्के ॥
दुहूं मीर बर तेज। सीस इक सिंघह बाही ॥
टोप टुट्टि बहकरी। चंद [10]ओपमता पाई ॥
मनु सौस बीय शृंग विज्जुलह। रही हेत तुटि भान हति ॥
उतमंग सुहै बिब टूक ह्वै। मनु उड़गन न्रप तेज मति ॥ छं० ॥ ११८ ॥

चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सरदार मारे गए। हिन्दू सरदारों के नाम तथा उनका किससे युद्ध हुआ इसका वर्णन।

(१) कृ.-फेरि उपम। (२) मो.-तत्थ। (३) मो.-परैं।
(४) ए.-कृ.-को.-तिन (५) ए. उच्चार।
(६) ए.-कर। (७) ए. कृ. को.-राइ। (८) मो.-सिरहस, सिरहसु।
(९) ए. कृ. को.-उपमा सु, उपमा सुइ।

भुजंगी ॥ परे षांन चौसट्ठि गोरी नरिंद । परे सुभर तेरह कहैं नाम चंदं ॥
परे लुथ्थिलुथ्थी जु सेना असुझझै । लिषे कंक अंकं बिना कौन बुझझै॥
छं० ॥ ११९ ॥

पर्‌यौ गोर जैतं मधिं सेस ढारी । जिनं राषियं रेह अजमेर सारी ॥
पर्‌यौ कनक आहुट्ठ गोविंद बंधं । जिने मेछकी पारसं सब्ब षद्धं ॥
छं० ॥ १२० ॥

पर्‌यौ प्रथ्थ बीरं रघूबंस राई । जिनें संधि षंधार गोरी गिराई ॥
पर्‌यौ जैत बंधं सु पावार भानं । जिनें भंजियं मौर बानेति बानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

पर्‌यौ जोध संग्राम सो हंक मोरी । जिनें कट्टियं वैर गोदंत गोरी ॥
पर्‌यौ दाहिमो देव नरसिंघ अंसी । जिनें साहि गोरी मिल्यौ षान गंसी॥
छं० ॥ १२२ ॥

पर्‌यौ बीर बानेत नादंत नादं । जिने साहि गोरी [1]गिल्यौ साहि जादं॥
पर्‌यौ जावलौ जाल्हते सैन भष्षं । हए सार मुष्पं [2]निकस्संत नष्षं ॥
छं० ॥ १२३॥

पर्‌यौ पाल्हनं बंध माल्हन राजी । जिनें अग्ग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥
पर्‌यौ बीर चहुआन सारंग सोरं । बजे दोइ ग्रैहं ज आकास तोरं ॥
छं० ॥ १२४॥

पर्‌यौ राव भट्टी बरं पंच पंचं । जिनें मुक्ति के पंथ चल्लाइ संचं ॥
पर्‌यौ भान पुंडीर ते सोम कंमं । [3]झिले जुझझयं बज्जयौ पंच जंमं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

पर्‌यौ राउ परसंग लहु बंध भाई । तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझि पाई ॥
पर्‌यौ साहि गोरी भिरै चाहुआनं । कुसादे कुसादे चवै मुष्प षानं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूसरे दिन तत्तार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ बढ़ना।

(१) ए.-मिल्यौ। (२) मो.-तिसक्कंत। (१) ए.-जिने जुझ्झतें बज्जयो पंच जंमं।

कवित्त ॥ दस हथ्थी सु बिहान। साहि गोरी मुष किन्नौं ॥
कर अकास बादी। ततार चवकोद स दिन्नौं॥
नारि गोरि जंबूर। कुहक बर बान अघातं ॥
गज्जि भग्ग प्रथिराज। चित्त करयो अकुलातं ॥
सो मोह कोह बर बज्जि कें। ब्रज उन धारय धमसि कैं ॥
सामंत सूर बर बीर बर। उठे बीर बर हमसि कैं ॥ छं० ॥ १२७ ॥
अड्ड अड्ड जोजनह। मीर उड़ि संगा केरी ॥
तब गोरी सुरतान। रोस सामंतह घेरी ॥
चक्क अवन चौंडोल। अग [1]सेषन पंचासौ ॥
सूर कोट ह्वै जोट। मार मारनह हुलासौ॥
बर अगनि बगी [2]हलौ नहीं। पदर कोट सुजोट हुअ ॥
बर बीर रास समरह परिय। सार [3]धार बर कोट [4]हुअ। छं०॥१२८॥
रसावला ॥ मेलि साहं भरं, षग्ग षेालें रुरं। हिंदु मेछं जुरं, मंत जा जंभरं॥
छं० ॥ १२९ ॥
दंत कट्ठे करं, उप्पमा उप्परं। केद भीलं जुरं, कोपि कट्ठे करं ॥
छं० ॥ १३० ॥
कंध ननं धरं, पंष जष्पं फिरं। तीर नंषे करं, मेघ बुट्ठं बरं ॥छं०॥१३१॥
आवधं संभरं, बंक तेगं करं। चंद बीजं बरं, अड्ड अड्डं धरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥
बीय बंधं धरं, किप्ति जपै सरं। अस्सु, ढुंढै फिरं, रंभ बंछै बरं ॥
छं० ॥ १३३ ॥
थान थांनं नरं, धारधारं तुटं। भ्रंम वासं छुटं, ... ॥
छं० ॥ १३४ ॥
साह गोरी बरं, षग्ग षेालें करं। .... ॥ छं० ॥ १३५ ॥

खुरासान खां का सुलतान के बचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना।

(१) ए.-नेषन। (२) मो.-हसौ, हस्यौ। (३) ए.क्र को.-धरि।
(४) ए.-तुव।

कवित्त ॥ षां घुरसान ततार । षिभिभ्भ दुज्जन दल भष्षै ॥
बचन स्वामि उर षटकि । हटकि तसबी कर नंषै ॥
कजल पंति गज विथुरि । मध्य सैनं चहुआनी ॥
अजै मानि जै रारि । बियस तेरह चपि प्रानी ॥
धामंत फिरस्तन कढ़ि असी । दहति पिंड सामंत भजि ॥
बर बीर भीर बाहन [1]कहर । परे धाइ चतुरंग सजि ॥छं० ॥१३६॥

रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन ।

भुजंगी ॥ पर्‍यौ रघुबंसी अरी सेन जाड़ी। हुतौ बाल बेसं संषं लज्ज डाड़ी ॥
बिना लज्ज पष्षै सची ढुंढि पिष्षौ। मनों डिंभरू जानि कै मीन क्रष्षौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

पर्‍यौ रूक रिनवट्ट अरि सेन माही। मनो एक तेगं झरी नीर दाही ॥
फिरैं अड्डबट्टे उपम्मान बट्टे। विश्वंकम्म बंसी कि दारुन्न गट्टे ॥
छं० ॥ १३८ ॥

परे हिंदु मेच्छं [2]उलथ्थी पलथ्थी। करै रंभ भैरं ततथ्थे ततथ्थी ॥
गहे अंत गिद्धं बरं जे करालो। मनों [3]नाल कट्टें कि सोभै रनालो ॥
छं० ॥ १३९ ॥

तुटे एकटं गाढ़ि कै षग्ग धायौ। मनौं विक्रमं राइ गोबिंद पायौ ॥
गहै हिंदु हथ्थं मलेच्छं भ्रमायौ। जनौं भीम हथ्थीन उप्पम्म पायौ ॥
छं० ॥ १४० ॥

ननं मानवं जुद्ध दानव्व ऐसौ। ननं इंद तारक्क भारथ्थ कैसौ ॥
झकं बज्जि झंकारयं झंपि उट्ठै। बरं लोह पंचं बधं पंच छुट्टै ॥
छं० ॥ १४१ ॥

मनों सिंघ उभ्भै अरुभ्भंत छुट्टै। रनं देव सांई सए आव षुट्टै ॥
घनं घोर ढुंढं उतक्कंठ फेरी। लगै झग्गरैं हंस हज्जार एरी ॥छं०॥१४२॥
तुटै रुंड मुंडं बरं जो करेरी। बरद्दाइ रिझें दुहूं दिन्न भेरी ॥छं०॥१४३॥

---

(१) ए.-करह। (२) मो.-उलथ्थी। (३) ए. को.-भाल।

लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तू उदास क्यों है ? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला।

कवित्त ॥ पच्छै भौ संग्राम । अग्ग अप्छर विचारिय ॥
पुछै रंभ मेनिका । अज्ज चित्तं किम भारिय ॥
तब उत्तर दिय फेरि । अज्ज पहुनाई आइय ॥
रथ्थ बैठि औथांन । सोझतह कंत न पाइय ॥
भर सुभर परें भारथ्थ भिरि । ठाम ठाम चुप जीत सथ ॥
उथकौय पंथ हल्लै चल्यौ । सुथिर सभौ देषीय [1]तथ ॥छं० ॥ १४४ ॥

रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए।

कुंडलिया ॥ कहैं रंभ सुनि मेंनकनि । ए रहु जिन मत जुथ्थ ॥
अरिय अनंमति जानि करि । जुति आवें ग्रह रथ्थ ॥
जुति आवें ग्रह रथ्थ । ब्रह्म शिव लोकह छंडी ॥
विश्न लोक ग्रह करै । भान तन सों तन मंडी ॥
रोमंचि तिलक्कं वसि वरी । इंद्र बधू पूजन जही ॥
ओपम्म जोग नन हुअ बहुरि । अब तारन बरहै कही ॥छं०॥१४५॥

हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारूफ खां, तातार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार निकाल कर लड़ने लगा।

कवित्त ॥ षां हुसेन ढरि पर्‌यौ । अस्व फुनि पर्‌यौ सार बहि ॥
झुझ्झ फेरि सति सीव । षान उजबक्क षेत रहि ॥
षां ततार मारूफ । षान षाना घट घुम्मैं ॥
तब गोरी सु बिहान । आइ दुज्जन मुष झुम्मैं ॥

(१) ए.कृ.को.-नथ।

कर तेग झल्लि [1]मुट्ठिय सुबर। नहि सुलतानह पन करी ॥
अदि हार दीह पल्लटे सुबर। तबहि साहि फिरि पुक्करी ॥छं०॥१४६॥

सुलतान ने एक बान से रघुवंस गुसाईं को मारा दूसरे से भीम भट्टी को तीसरा बान हाथ का हाथ ही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे कमान डालकर पकड़ लिया।

तब साहिब गेारी नरिंद। सतबान समाहिय ॥
पहिल बान बर बीर। हने रघुबंस गुसाँइय ॥
दूजै बानत कंठ। भीम भट्टी बर भंजिय ॥
चाहुआन तिय बान। षान अद्धं धरि रज्जिय ॥
चहुआन कमान सु संधि करि। तीय बान हथ हथ रहिय ॥
तब लगि चंपि प्रथिराज नें। गेारी वै गुज्जर गहिय ॥छं० ॥१४७॥

सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तातार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए। चारों ओर जैजैकार हो गया।

गहि गोरी सुरतान। षान हुस्सैन उपाऱ्यौ ॥
षां ततार निसुरत्ति। साहि झारी करि डाऱ्यौ ॥
चामर छत्र रषत्त। बषत लुट्टे सुलतानी ॥
जै जै जै चहुआन। बजी रन जुग जुग बानी ॥
गज बंधि बंधि सुरतान कों। गय ढिल्ली ढिल्लीन्दपति ॥
नर नाग देव अस्तुति करैं। दिपति दीप दिव लोकपति ॥
छं० ॥ १४८॥

एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया।

दूहा ॥ समै एक बत्ती न्दपति। बर छंड्यौ सुरतान ॥
तपै राज चहुआन यौ। ज्यों ग्रीषम मध्यान ॥ छं० ॥ १४९ ॥

---

(१) मो.-पुट्ठिय।

एक महीना तीन दिन क़ैद रखकर नौ हज़ार घोड़े और बहुत से माणिक्य मोती आदि लेकर सुलतान को गज़नी भेज दिया।

मास एक दिन तीन। साह संकट में रुंड्डौ॥
करिय अरज उमराउ। दंड हय मंगिय सुड्डौ॥
हय अमोल नव सहस। सत्त सै दिन ऐराकी॥
उज्जल दंतिय अठ्ठ। बीस सुर ढाल सु जक्की॥
नग मोतिय मानिक नवल। करि सलाह संमेल करि॥
परि राइ राज मनुहार करि। गज्जन वै पठयौ सुघरि॥छं०॥१५०॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके रेवातट पातिसाह ग्रहनं नांम सप्तवीसमो प्रस्ताव संपूरणम्॥ २७॥



अथ अनंगपाल समयौ लिख्यते ।

(अट्ठाइसवां समय ।)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया, इस कथा का वर्णन ।

दूहा ॥ दिय दिल्ली चहुआन कों । तूंअर बद्रौ जाइ ॥
कहौ दंद कौं पुक्करिय । फिरि दिल्ली पुर आइ ॥ छं० ॥ १ ॥

अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वन्द शासन करना ।

रष्पि बीर प्रथिराज कों । गै। तीरथ्थह राज ॥
व्यास बचन आनंद सजि । तिहूँ पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २ ॥
जुग्गिनिपुर प्रथिराज लिय । बज्जि त्रिघोष सुदंद ॥
अनंगपाल तूंअर बरन । किय तीरथ्थ अनंद ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वन्द राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनङ्गपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है ।

पद्धरी ॥ तूअर नरिंद तप तेज जानि । प्रथिराज व्यास बचनह प्रमानि ॥
त्रिमान ग्यान मेटै न कोइ । इंद्रादि अंत कलपंत होइ ॥ छं० ॥४॥
दस दिसा अमिट धरती अकास । [1]चंद्रादि सूर ग्रह ग्रह प्रकास ॥
ब्रह्मा टरंत टारंत काल । राहंत पंच भूते विचाल ॥ छं० ॥ ५ ॥
विख्यात बात दस दिसि कहंत । विथ्थुरी देस देसन तुरंत ॥
अप अप्प आनि दीजै निवास । तूंअर नरिंद परजा निकास ॥छं०॥६॥

---

(१) ए.कृ.को.-चंद्रमा सूर दिन दिन प्रकास ।

निरदै नरिंद इन बिधि विसास। आनंग लोक हिरदै निरास॥
उपगार को न मानै विवेक। संसार माहिं ऐसे अनेक॥ छं० ॥ ७॥

अग्नि, पाहुना, विप्र, तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनङ्गपाल पराए की भांति तप करता है।

कवित्त॥ तसकर चेलक विप्प। बैद [1]दुरजन अति लोभी॥
प्राहुन अहि जल ज्वाल। काल न्रिप इन में मोभी॥
इन परचिंता नाहिँ। बहुत करि जौपै कहिये॥
[2]अप्प सहज चालंत। चित्त की बात न लहिये॥
प्रथिराज लोक तूंअर घरह। अरुचि दिष्ट मंडै तनह॥
भोगवै धरा जीवत धनिय। संक न कोइ मानै मनह॥ छं० ॥ ८॥

सोमेश्वर अजमेर में राज्य करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा।

दूहा॥ संभरि वै सोमेस न्रप। अति उतंग आचार॥
ढिल्ली प्रथि तूंअर दइय। सुन्यौ पिज्यौ महिपार॥ छं० ॥ ९॥

मालवापति ने चारों ओर के राजाओं को पत्र लिख कर बुलाया। गक्खर, गुण्ड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय।

कवित्त॥ चंदेरी चतुरंग। सैन हय गय पल्लानं॥
ठौर ठौर कग्गदह। दए मालव धरवानं॥
गषषड़ गुंड भदौड़। सोरपुर सूर समाहे॥

---

(१) ए.-को. जुरजन।
(२) ए.क.को.-आप।

मिलि आए महिपाल। अप्प बल सेन समाहे॥
एकंत मत्त सोमेस पर। धुर संभरि वै लिज्जिये॥
प्रथिराज तुँअर ढिल्ली दिसा। फिरि कलहंतर किज्जिये॥
छं० ॥ १० ॥

मालवपति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना।

बर मालव महिपाल। चढ्यौ चहुआन [1]सु उप्पर॥
सेन सजी चतुरंग। दियौ मेलानह सो पुर॥
इय गय थट्ट अघट्ट। घाट चंबिल परि आइय॥
घुरि निसान घमसान। थान थानह हल्लाइय॥
जादव नरिंद हरिबंस कुल। अति आतुर अजमेर पर॥
उत्तर्‌यौ सरित [2]संमित सकल। धुंस धरा रावत्त धर॥ छं० ॥ ११ ॥

शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामंतों को इकट्ठा करके बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढ़े हैं, ऐसा न हो कि कायरता का धब्बा लगै और नाम हँसा जाय।

सुनि सोमेसर सूर। चिंति मन मंत उपाइय॥
बर प्रथिराज नरिंद। अनँगपालह बुल्लाइय॥
रज रजवट रषियै। राव रावत्तन कीजै॥
रहै गल्ह संसार। आव जल अंजुल छीजै॥
मो बंस अंस आमल अटल। कोइ न कहो काइर कहिय॥
अप्पान सुभ्भ संबोधि नृप। जुद्ध घात [3]पुव्वत लइय॥ छं०॥१२॥

सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल करके जीतना चाहिए।

(१) ए. रू. को.-जु। (२) ए.-समंत। (३) ए. रू. को.-पुस्तक।

सिंघ पँवार ब्रसिंघ। गौड़ संजम चहुआनं॥
बाहन बीर सधीर। राज गुर राम सुजानं॥
मंत मंति भर अवर। करे समचित्त अनेकं॥
तुम लज्जा धर धीर। बीर बीराधि [1]बिवेकं॥
संभरिय सोम पुच्छत बयन। कहिय बत्त सम तत्तकल॥
छल बल अनेक छचिय करन। तुच्छ सत्थ पुज्जै न [2]षल॥छं०॥१३॥

दूहा॥ चंद चंद निसि दंद मति। [3]चतु सरह गुरवार॥
तेरसि तकि सज्यौ सयन। रचि [4]रति वाह विचार॥ छं०॥ १४॥

सोमेश्वर ने कहा कि तुम ने नीति ठीक कहा पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी।

कवित्त॥ रत्ति वाह छल जुद्ध। अधम [5]षिची परिमानं॥
[6]क्रूड़ कपट मारियै। अधम निद्रा गति जानं॥
मल मोचन रति रवन। सेन पूजन जल न्हानं॥
मंच जाप जप्पंत। करै नह घात सुजानं॥
तुम मंत तंत संचौ कहिय। इह अधम्म धम हारिये॥
जो गिनइ पुरुष निंदा अपर। लछ रति वाह विचारिये॥
छं०॥ १५॥

सामंतों ने कहा कि सेतु बांधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप के मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस के मारने में छल किया, इस में कोई दूषण नहीं है।

छल तक्यौ श्री राम। सेत साइर तब बंध्यौ॥
छल तक्यौ सुग्रीव। बालि जिउ ताड़इ संध्यौ॥
छल तक्यौ लछिमना। सूर मंडल अरि बेध्यौ॥
छल तक्यौ नरसिंघ। ग्रगकुस नष उर छेद्यौ॥

(१) ए.कृ.को.-बिमेकं। (२) ए.कृ.को.-पल। (३) ए.कृ.को.-रित, रति।
(४) मो.-रबि। (५) ए.कृ.को.-छत्रि। (६) ए.कृ.को.-कूड कूड़।

छल बल करंत दूषन न कोइ। किस्न कलह कंसह करिय॥
सोमेस राज तकि अप्प बिधि। रुक्मिवाह छल मन धरिय
छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ ससि निम्मल ससि सूर अप। दिय अस अस्त्र उतान॥
प्रथुक जोग जिन साल [1]धर। संजोजन सव्वान ॥ छं० ॥ १७ ॥

सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तयारी करना।

भुजंगी ॥ ग्रहे सूर सोमेस सा आयुधेसं। इकं सोभई राज जोगिंद भेसं॥
तजे मोह माया ग्रहन्नी कहन्नी। तजे बंध पुत्तं हरिं चित्त मन्नी॥
॥ छं० ॥ १८ ॥

इकं सामि धम्मं ग्रहे अंग लाजं। * तिनं सस्त्र झल्लं जुधं कित्ति काजं॥
न काया न कामं धरे राम राजं। हवैं हाक सूरां कपै काइराजं॥
छं० ॥ १९ ॥

पचं विस्नुकान्ता जलं जान्हबीयं। वपुं उद्धरे कोटि सौ पाप कीयं॥
बरै रंभ वामं दुती साम कामं। मनों दाहिनाइत्त षीरंभ रामं॥
छं० ॥ २० ॥

तिनं सस्त्र हल्लै जुधं क्रित्य काजं। हुवै हाक सूरं कपैं काइराजं॥
मुरं द्वादसं आयुधं दंड धारै। तिनं नाम चंदं मु छंदं उच्चारै॥
छं० ॥ २१ ॥

नसी तन्न चंसं ग्रहे सूल पासं। परस्सं असन्नी सकत्ती बिकासं॥
ग्रहे तून तोमार भल्ली कृपानं। जुधं काज नालीक नाराज जानं॥
छं० ॥ २२ ॥

सरं चक्र सारंग बज्जं गदायं। दंड मुद्गरं भिंडिमालं सधायं॥
हलं मूसलं सेल सावल्ल षग्गं। ग्रहे सूरता अप्प अपपन्न बग्गं॥
छं० ॥ २३ ॥

छुरिका कती कन्न बक्की कुंतायं। [2]फलक्कं कनीका भुसुंडी बतायं॥
लियं संक [3]दुस्फोटकं पारिघायं। पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं॥
छं० ॥ २४ ॥

(१) मो.-जर। * यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को.-पलक्कं। (३) मो.-दुस्पोटं।

पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था।

दूहा ॥ पट्टन जादव आय नृप। किय डेरा बरबान ॥
सुनि सोमेसर दौरि करि। ज्यों निधि रंक प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
अति आतुर अजमेर पहु। आइ कुलिंगन बाज ॥
यों रस रत्ता सूर भर। मुकति त्रिया धरि साज ॥ छं० ॥ २६ ॥

चारों ओर खलबली मच गई। रुद्रगण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे।

कवित्त ॥ अप्प अप्प मुष अरिन। सूर संमुह झल्लारिय ॥
हाइ हाइ उच्चार। धरनि अंबर लुटि डारिय ॥
चमकि चित्त चिपुरारि। अष्ट गन नारद नंचिय ॥
सेस सटप्पटि सलकि। दिसा दंतिन तन अंचिय ॥
मानों कि जलद तुट्टिय तड़ित। बर पट्टन आहुट्ट भर ॥
रति वाह प्रात हूं ते दियौ। अगनि सार बुझ्यो कहर ॥ छं० ॥२७॥

योद्धाओं की तयारी तथा उनके उत्साह का वर्णन।

रसावला॥ कट्टि षग्गं लगं, आइ जुट्टे अगं। जानि सूरं उगं, लग्गि षग्गं बगं॥
छं० ॥ २८ ॥
जानि प्रल्लै जगं, सामि भ्रम्मं मगं। षंड षंडं अगं, ओन [1]तुट्टे रगं॥
छं० ॥ २९ ॥
पानि वाहै षगं, सूर साधें लगं। देबि [2]ताली ठगं, ठाम ठामं ठगं॥
छं० ॥ ३० ॥
डंकनीयं डगं, एक एकं दिगं। सूर रोपे पगं, नग्ग मानों नगं॥
छं० ॥ ३१ ॥
सार धारं तमं, जानि जकं अगं। बसं आलंदगं, फुट्टि [3]घोपं षगं॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ.-बुट्ढे। (२) ए. कृ. को.-लागी।
(३) मो.-षोपे।

दट्ठि मट्ठं भगं, हंस उड्डै मगं। मार मारं रगं, मुष्प बोले दगं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

लट्ठ चट्टं परं, लथ्थ बथ्थं भरं। अंत ओनं झरं, जानि पब्बै सरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कट्टि षंडं गुरं, हथ्थ जंगं जुरं। जानि षिप्पि षलं, चंच गिद्धी पलं॥
छं० ॥ ३५ ॥

ईस सीसं झलं, माल मध्ये [1]घलं। सूर जद्दों बलं, अभ्भ तुद्धौ कलं॥
छं० ॥ ३६ ॥

भूर भूपं मिलं, आयुधं अत्तुलं। .... ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ सार मार मच्ची कहर। दोउ दलनि सिर मंधि ॥
प्रौढ़ा नायक छयल रमि। प्रात न बंछै संधि ॥ छं० ॥ ३८ ॥

सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ सोमेश्वर भजि सूर। सूर उभ्भारिग झरि झरि ॥
सार फुट्टि चहुआन। भिरिय जद्दों भरि लरि लरि ॥
घरी एक तिन रत्त। सार मैगल सिर बुट्ठिय ॥
संभर वैर सु आनि। सार भग्गि जु सिर तुट्ठिय ॥
भग्गइय सूरमा दुहुं सयन। किहि न कोई बर चंपयौ ॥
उप्पारि लियौ अजमेर पहु। दागन [2]किहुं दीयौ गयौ ॥ छं०॥३९॥

हथ्थिय ढाल ढलक्कि। घालि लीनौ अजमेरी ॥
परि लंगा लंगरी। सेन दुज्जन दल फेरी ॥
भाग बीर प्रथिराज। अरिन उप्पारि स लीनौ ॥
इन सोमेसर राव। सत्त हथ्थिन बर कीनौ ॥
जिम तिमर सूर भंजै सुभर। गुरु गरुहान न कवि टरै ॥
जब लगै भूमि साइर [3]सुम्मित। तव लगि कवित सु [4]उच्चरै ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए.-घलं, वलं। (२) मो.-किन। (३) मो.-सुप्रति। (४) मो.-विस्तरै।

संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है।

दूहा ॥ रह्यौ न को रवि मंडलह। रहि कवि मुष्ष सु भस्ह ॥
जीरन जुग पाषान ज्यों। पूर रहंदी गस्ह ॥ छं० ॥ ४१ ॥

यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुंह से बोल न सकता था।

फिरि जद्दव भर देस दिसि। समर घाइ लै सैन ॥
अवर चित्त तें अवर परि। कढ्ढि न सक्कै बैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥

सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना बीस दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया।

ग्रिह सोमेसर आनि तिन। मास एक दिन बीस ॥
रष्षि जतन किय न्हान जब। दियौ दान सु जगीस ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब घात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा।

सुनिय [1]बत्त प्रथिराज नृप। चिंति भविष्षत बत्त ॥
अरियन तौ आहोड़ियै। जो लभ्भीजै घत्त ॥ छं० ॥ ४४ ॥

इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनङ्गपाल के पास जाकर पुकारा कि महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए।

कवित्त ॥ आनँगपाल प्रजा लोक। जाइ बद्री [2]पुकारिय ॥
हम तुम सेवक सामि। छंडि ग्रह राज निकारिय ॥
नहि अदब्ब मन्नयौ। कूर मच्चौ चहुआनं ॥

(१) मो.-षबर। (२) मो.-पुकारय, निकारय।

हो अनगेस नरेस। गई ढिल्ली धर जानं॥
जा जियत राज धर पर बसिय। नीति न्याय न प्रकासियै॥
नर नाग देव निंदैं सकल। न्रिप करंत तहँ बासियै॥ छं०॥ ४५॥

अनङ्गपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा। मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए।

सुनिय तेज जाजुल्य। दूत परधान पठाइय॥
हम भँडार धर धान। द्रव्व सब्बह भरि लाइय॥
व्यास बचन संभारि। कहै तब मंची पुच्छह॥
देस कषी धन आदि। राज ग्रहयो गढ़ सब्बह॥
न्रिप सेव देव दुज्जन उरग। इन ढिल्लै नन मुक्कियै॥
बर बंध पुच अरु तात न्रप। इन बिसास धर चुक्कियै॥ छं०॥ ४६॥

राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतहासिक घटनाओं का वर्णन।

धर काजैं कौरवन। पंड जानिय न [1]बंध गति॥
धर काजैं [2]दसग्रीव। बंध बंध्यौ भभिषन मति॥
धर काजैं नल राइ। बंधवन षेत न अप्पौ॥
धर काजैं बलि राइ। देव देषाधि उथप्पौ॥
धर काज मुंज चिय के कहै। भोज प्रहारन मत कियौ॥
धर काज कन्ह तूंअर अभ्रम। पुत्तह सै मुष [3]बिष दियौ॥छं०॥४७॥

तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिया।

दूहा॥ तुम तूंअर मति चूकना। करि किल्ली ढिल्लीय॥
फुनि मत अप्पन ही करिय। प्रथीराज धर दीय॥ छं०॥ ४८॥

राजा हाथी घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परंतु राज्य की सर्प मणि के समान रक्षा करे।

(१) मो.-वेध। (२) मो.-दशशीश। (३) मो. बसि।

राज दाम गज तुरिय [1]द्रब। देत न लग्गे बार॥
धरतिय रण्यन यौ सुदृढ़। अहि मनि रण्यन हार॥ छं०॥ ४९॥

अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला।

मंत्रि सु मंतह सौष लै। चलि दिल्लिय चहुआन॥
आइस कौं जोइस का हा। [2]इह भ्रत धम्म प्रमान॥ छं०॥ ५०॥

पृथ्वीराज से मिलकर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो।

चंद्रायना॥ मिल्यो न्विपह सोमंत बसीठ जु मुक्कल्यौ॥
सा चहुआनह पास नरिंद सु इक्कल्यौ॥
षिज्यो अनंग नरिंद भूमि हमहीं तजौ॥
कै मिलौ आइ चहुआन सुबुद्धिय मंत जौ॥ छं०॥ ५१॥

इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

बोल्यो हंकि नरिंद बसीठ जु दुब्बल्यौ।
तब कमधज्ज नरिंद म उत्तर संभल्यौ॥
बात अनंक्रन कौन हीन हुइ उठ्ठयौ।
चंपि लुहट्टिय हथ्थ बीर बर टुट्ठयौ॥ छं०॥ ५२॥

बसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं।

दूहा॥ उठ्यौ बीर बसीठ बल। करि जुहार चहुआन॥
धनौ उभै धर लुट्टियै। इह अचिज्ज परिमान॥ छं०॥ ५३॥

पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं।

(१) मो.-बर। (२) मो.-भ्रत्त धम्म सुप्रमान।

कवित्त ॥ रे बसीठ मति [1]ढीठ। बोल बोलै मतिहीना ॥
सनेपात उप्पनं। किनें सक्कर [2]पय दीना ॥
[3]धर कर छुट्टी संगि। हथ्थ चढ्ढें मरदाना ॥
फिरि बंछै जो मूढ़। होइ ताही जिय ज्याना ॥
सट्ठीय बुद्धि नट्ठिय न्रपति। तुम [4]बिमत्ति दिन लहि कहिय ॥
उग्गमै सूर पच्छिम [5]आक। तौ दिल्ली धर तुम नहिय ॥छं०॥५४॥

मंत्री का यह सुनकर उदास मन हो चला आना।

दूहा ॥ सुनि यह बत्त सो दूत चलि। बिन आदर मन मंद ॥
हीन दीन दिष्पत इसौ। मनों कि [6]वासर चंद ॥ छं० ॥ ५५ ॥

मंत्री ने अनङ्गपाल से आकर कहा कि मैंने तो पहिले ही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान कभी राज्य न लौटावेगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए।

कवित्त ॥ [7]तूंअर बीर बसीठ। सामि संदेस सु अष्पिय ॥
तुम दुज्जन कुसल। बत्त पहिलें हम भष्पिय ॥
वह बलिट्ठ दैवान। दैत्यबंसी चहुआनं ॥
सूज अग्ग उप्परै। देय नह तास प्रमानं ॥
तुम दई भूमि निज हथ्थ करि। अथ्थ मित्त नन पोइये ॥
संभरहि देस दैसन न्रपति। तौ दुज्जन बिमोइये ॥ छं० ॥ ५६ ॥

अनङ्गपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कैमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए।

(१) दीठ, ढाठि, धठि। (२) ए.-पर। (३) मो.-धर कर मंगिय बुद्धि।
(४) ए. कृ. को.-बिपति। (५) ए. कृ. को. परक।
(६) ए. कृ. को.-वासुर। (७) मो.-तोअर।

अनगपाल न न मानि। कूंच किन्नौ दिल्लीय दिसि॥
भूत [1]भविष जानौ न। किये रत्तेत नयन [2]रिस॥
अप्प सेन सजि जूह। आइ ढिल्ली धरवानं॥
मात पिता मरजाद। चिंत लग्यो चहुआनं॥
कैमास मंत पुच्छ्यौ नृपति। कहौ कहा अब किज्जिये॥
अहि ग्रहिय छछुंदरि जो तजै। नैन जठर भषि छज्जिये॥छं०॥५७॥

जौं लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लडता हूं और जो छोड देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो।

दूहा॥ जो मारौं तौ मातपित। छंडौ तौ बल हानि॥
कहि मंची मंचं गपति। न्याय रीति विधि जानि॥ छं०॥ ५८॥

कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए, इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानें यहीं आकर भिड़ें तो फिर लड़ना चाहिए।

कवित्त॥ सुनौ नृपति चहुआन। न्याय तौ कलह न किज्जे॥
इन दीनी धर अप्प। अप्प तौ इनह न दिज्जे॥
जो विमान प्रमान। होइहै सोइ नियानं॥
जब लग्गौ गढ़ आइ। जाइ तब जुद्ध जुरानं॥
सजि कोट ओट सामंत सथ। नारि गोर जंबूर वहि॥
लग्गै न जोर छिज्जै सुभर। इत सामंत लगंत नहि॥ छं०॥ ५९॥

अनंगपाल ने धूमधाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लडाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई।

(१) ए. कृ. को.-भवप। (२) मो.-रस।

अनंगपाल बल मंडि। सुभर ढिल्ली गढ़ लग्गा ॥
लेहु लेहु करि दौरि। अण्प बर अण्प बिलग्गा ॥
नारि गोरि आतस्स। कोट पारस भर घाइय ॥
जे भर मंडे आइ। सोर करि मोर उठाइय ॥
लग्गै न घात तूअर नृपति। दिवस च्यार मंडिय रयि ॥
पुज्यौ न प्रान पानप घटत। दिल्ली धर ढिल्ली करिय ॥ छं० ॥ ६० ॥

हार कर अनंगपाल का फिर बद्रीनाथ लौट जाना।

चौपाई ॥ दीह च्यारि ढिल्ली नृप भारी। बर चहुआन संमुहै हारी ॥
गोतं चर फिर रावर छंडिय। बद्री छोर सरन ग्रह मंडिय ॥ छं० ॥ ६१ ॥

आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया।

अनगपाल पंडिय गयौ। सैन सु बंधिय थट्ट ॥
अद्ध सेन अजमेर पर। [1]टारे इथ्थ सुभट्ट ॥ छं० ॥ ६२ ॥

मंत्री सुमन्त की सलाह से अनङ्गपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा।

बीर बसीठ सुमंत मिलि। स्वामि बचन [2]समुझाइ ॥
मतौ मंडि चहुआन कौ। माधो भट्ट चलाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ चला।

माधो भट्ट सु मुक्कल्यौ। मिल्यौ जाइ सुलतान ॥
चढ़्यौ साहि गोरी सुबर। मिलि बंधन चहुआन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
तूअर अरु चहुआन के। [3]घर बज्यौ बहु दंद ॥
माधौ भट्ट सु मुकल्यौ। बर गज्जनै नरिंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) मो.-टारिग। (२) मो.-मम काय। (३) कृ.-धर।

नीतिराव खत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति [1]राव षिची सुबर। तूंअर तिहि परधान ॥
गोरी दिसि दप अप्प दिसि। भेद दियौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥
अनँगपाल मान्यो नहीं। बरजिय पंडि नरिंद ॥
तूंअर अरु चहुआन कै। रहै न एकै बंध ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त। दई भूमि मापित्त। लई हम हथ्थ पसारह ॥
सो पाओ फिर किम सु। बोल बोलहु अविचारह ॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहौ सु करन अब ॥
दयौ राज तुम हमह। कहा उपजौ चित्तह तब ॥
मंगौ जु आइ फिरि भूमि तम। सोब राज पाओ नहीं ॥
जो गयौ जंत चलि ग्रेह जम। कहौ सु फिरि आवै कहीं ॥छं०॥६८॥

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए।

जलद बूंद परि धरनि। कबहुँ जावै न [2]नभ्भ फिर ॥
पवन तुट्टि तरु पच। तरु न लग्गै सु आइ थिर ॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जाअै ॥
सिंघ उलंघि सवजइ। सोइ फुनि हनि नह षाअै ॥

(१) ए.-तत्त। (२) मो. को .-अम्भ।

अप्पिअ सु पहुमि तुम उद्दक सहू। सो पाओ दूजै जनम॥
तप्पौ सु जाइ बद्री तपह। मत विचार राजस मनम॥ छं० ॥ ६९ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह। कहैं जिन [1]मत भरमावहु॥
सत्त भ्रंम साहस्स। काइ पर कहैं गमावहु॥
सामंतनि सुलतान। बार बहु गहि गहि छंड्यौ॥
उन अपत्ति के सथ्थ। सपति तुम मत्त सु मंड्यौ॥
जिम लग्गि जहूँ विधवा चरन। अप समान होवन कहै॥
मंगौ सु द्रव्य कारन स भ्रम। कछू अप्प चित्तह चहै॥ छं० ॥ ७०॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सँदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल॥ सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह। कथ्थि अनग सम सकल विचारह॥
सुनत श्रवन अति रोस [2]झुकित मनु। जिम सु सिंघ चुक्कत कुलिंग जनु॥
छं० ॥ ७१ ॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को ग़ज़नी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त॥ अनँगपाल झुकि आप। दूत ढिँग हुंते साह जे॥
तिनहि कह्यौ तुम जाइ। कहौ साहब लिषयौ ते॥
दिय पत्र [3]तिन हथ्थ। धरा देत न चहुआनह॥
तुम आवहु, चढ़ि अतुर। कूंच पर कूंच मिलानह॥
मिलि अप्प एक एकह सुमंति। लरि सु लेंहि दिल्लिय धरा॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिबर। अब सु पाँइ रुप्पें धरा॥ छं० ॥ ७२॥

---

(१) ए. कृ. को.-मन। (२) ए. कृ. को.-झुकत। (३) ए. कृ. को.-फुनि।

नीतिराव खत्री ने अनङ्गपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया।

नीति [1]राव षिची सुबर। तुंअर तिहि परधान ॥
गोरी दिसि दप अपप दिसि। भेद दियौ चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥
अनँगपाल मान्यो नहीं। बरजिय पंडि नरिंद ॥
तूंअर अह चहुआन कै। रहै न एकै बंध ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आप को पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैलाकर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं?

कवित्त। दई भूमि मापित्त। लई हम हथ्थ पसारह ॥
सो पाओ फिर किम सु। बोल बोलहु अविचारह ॥
तुम बिरद्ध तप जोग। राज चाहौ सु करन अब ॥
दयौ राज तुम हमह। कहा उपजी चित्तह तब ॥
मंगौ जु आइ फिरि भूमि तम। सोब राज पाओ नहीं ॥
जो गयौ जंत चलि ग्रेह जम। कहौ सु फिरि आवै कहीं ॥छं०॥६८॥

जैसे बादल से बूंद गिर कर, हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए।

जलद बूंद परि धरनि। कबहुँ जावै न [2]नभ्भ फिर ॥
पवन तुट्टि तरु पच। तरु न लग्गै सु आइ थिर ॥
तुटि तारक आकास। बहुरि आकास न जाअै ॥
सिंघ उलंघि सवजह। सोइ फुनि हनि नह षाअै ॥

(१) ए.-तत्त। (२) मो. को .-अभ्भ।

अप्पिअ सु पहुमि तुम उद्दक सह्ह। सो पाओ दूजै जनम ॥
तप्पौ सु जाइ बद्रौ तपह। मत विचार राजस मनम॥ छं० ॥ ६९ ॥

आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए, उसे तो हमने कई बार बाँध बाँध कर छोड़ दिया है।

तुम गोरी पतिसाह। कहैं जिन [1]मत भरमावहु ॥
सत्त भ्रंम साहस्स। काइ पर कहैं गमावहु ॥
सामंतनि सुलतान। बार बहु गहि गहि छंड्यौ ॥
उन अपत्ति के सथ्थ। सपति तुम मत्त सु मंड्यौ ॥
जिम लग्गि जल्है विधवा चरन। अप समान होवन कहै ॥
मंगौ सु द्रव्य कारन स भ्रम। कछू अप्प चित्तह चहै ॥ छं० ॥ ७० ॥

हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। सँदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा।

अरिल्ल ॥ सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह। कथ्थि अनग सम सकल विचारह ॥
सुनत श्रवन अति रोस [2]झुकित मनु। जिम सु सिंघ चुक्कत कुलिंग जनु ॥
छं० ॥ ७१ ॥

अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिखकर दूत को ग़ज़नी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए हम और आप मिलकर दिल्ली को विजय करें।

कवित्त ॥ अनँगपाल झुकि आप। दूत ढिंग हुंते साह जे ॥
तिनहि कह्यौ तुम जाइ। कहौ साहब लिषयौ ते ॥
दिय पत्र [3]तिन हथ्थ। धरा देत न चहु आनह ॥
तुम आवहु, चढ़ि अतुर। कूंच पर कूंच मिलानह ॥
मिलि अप्प एक एकह सुमंति। लरि सु लेंहि दिल्लिय धरा ॥
तुम मत्त छंडि तप बद्रिबर। अब सु पाँइ रुप्पें षरा ॥ छं० ॥ ७२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मन। (२) ए. कृ. को.-झुकत। (३) ए. कृ. को.-फुनि।

दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला।

गए दूत गज्जनै । साहि सम बत्त बदै बर ॥
तप सु छंडि तोंवरह । आइ हरदार लियन घर ॥
पहुमि मंडि प्रथिराज । राज अप्पै न इक्क तिल ॥
दैवादर चढ़ि साहि । भूमि लिज्जै सु उभय मिलि ॥
सुनि साह घाव नीसान किय । चक्यौ सेन चतुरंग सजि ॥
हय गय समूह साकति सकल । अनंगपाल साहस्स कज ॥छं०॥७३॥

सुलतान शाहबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सरदारों का वर्णन ।

चढ़त साहि साहाब । चक्यौ तत्तार खान बर ॥
षान षान [1]घुरसान । षान मारुफ महा भर ॥
कालिम षान कमाम । मीर [2]नासेर अभंगह ॥
अलूषान आलील । चढ़िय हय गय चतुरंगह ॥
सथ सयन सकल सारङ्ग [3]लष । उभय सहस मत मत्त इभ ॥
नीसान बज्जि नौबति निहसि । रहे गज्ज धर पुर सु नभ ॥छं०॥७४॥

छंद लघुनाराच ॥ चक्यौ सहाब सज्जियं । निसान जोर बज्जियं ॥
मिले [4]सु साह उम्मरं । सजें अनूप संभरं ॥ छं० ॥ ७५ ॥
गयंद मह गंधयं । सुझै न राह अंधयं ॥
पगं ठिलै पहारयं । नगं परं निहारयं ॥ छं० ॥ ७६ ॥
सकाज बाज साजयं । कुरंग देषि लाजयं ॥
अनूप चाल उज्जवै । सबूर चित्त रिझवै ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए.-घुरसेंम । (२) ए. कृ. को.-नासेंन।
(३) ए.-लष, लष्षि । (४) ए. कृ. को.-नु ।

रजोद मोद उच्चली । सपूर सूर पच्चली ॥
रिधें सु साहि आतुरं । कँपें सु अंग कातरं ॥ छं० ॥ ७८ ॥

लगत्र छीन उल्लहं । षँड़े जु दूरि दुल्लहं ॥
न आन पान जानयं । उड़ान ज्यौं सिँचानयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥

करंत इल्लगारयं । सु आप सिंधु पारयं ॥ छं० ॥ ८० ॥

सिन्धु पार उतरकर, बीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने तातार ख़ां को अनंगपाल को लाने के लिये हरिद्वार भेजा। तातार ख़ां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला।

कवित्त ॥ सिंधु उतरि सुरतान । कह्यो सम षान ततारह ॥
तुम अनगेसह लैन । जाहु जँह तँह हरिद्वारह ॥
सहस बीस लै सेन । अनँग सम मिलिय सोनपुर ॥
बिलम करहु जिन बहुत । अभँग सजि आवहु आतुर ॥
करि नबनि षान तत्तार चलि । पहुँच्यौ हरद्वारह सहर ॥
करि षवरि तब्ब अति प्रीत तन । मिल्यौ राज अनगेस बर ॥
छं० ॥ ८१ ॥

अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिये और सेना भरती करके लड़ाई की तयारी की।

दूहा ॥ तहँ तोंअर अनगेस नृप । लए मोल बहु बाज ॥
उभय सहस सेना सजित । रण्णि सुभर किय साज ॥ छं० ॥ ८२ ॥

तीन सौ वीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने के लिये तयार हुए।

सत्त तीन भर सुभर जे । निज वैराग सरूप ॥
तिन बंधी तरवार फिरि । बदलि भेष बहु रूप ॥ छं० ॥ ८३ ॥

तातार खां ने रात भर रहकर सबेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर आगे से बढ़कर उसने सुलतान को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे।

कवित्त ॥ मिले षान तत्तार । बत्त मत तत्त रत्त बर ॥
दै निसान पहु फटत । चले पुर सोन उभै भर ॥
भए साह दल निकट । रप्पि जोजन जुग अंतर ॥
दई षबरि सुलतान । चल्यौ साहाब समंतर ॥
दस कोस अग्ग अनगेस कहूं । मिल्यौ जाइ साहिब सुहित ॥
बैठे सु उतरि अति प्रीति पर । भनहु उभै जन इक्क चित ॥छं०॥८४॥

अनंगपाल ने सब वृत्तान्त सुनाया, दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप आकर हाजिर हो जाय तो उसे जीव दान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा कि ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करै अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता।

पद्धरी ॥ सुरतान समिलि नृप अन्नगेस । किय अनग समह पतिसाह पेस ॥
गज पंच मत्त पंचास बाज । साकत्ति सज्जि दिय अनगराज ॥
छं० ॥ ८५ ॥
किरवान [1]तीन कम्मान एक । सिरपाव स्वातसुत माल मेक ॥
दै प्रीति चढ़े निस्सान पाव । आए सु सोनपुर उभै ठाव ॥छं०॥८६॥

(१) ए.-तीन, संमान, सामान।

मिलि साह अनग बैठे सुमत्त । तत्तार षानषाना सुचित्त ॥
कहि अनगपाल नृप पुत्त कथ्थ । चहुआन मन न मानै समथ्थ ॥
छं० ॥ ८७ ॥
जंपै सु साह चढ़ि चलौ प्रात । भंजे सु जुग्गनिय पुरह जात ॥
जो मिलिह अप्प चहुआन आनि । दीजै तौ उभय मिलि प्रान दान ॥
छं० ॥ ८८ ॥
मंनी सु राज अनगेस मन्न । उच्चयौ तांम तत्तार पन्न ॥
देषो सु अप्प दूतह पठाइय । लिष्यौ सुवत्त सम विषम दाई ॥
छं० ॥ ८९ ॥
चर चारु चाहि हक्कारि लीन । लिषि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन ॥
अनगेस पुत्रि सुत तुम्म अप्प । तुम समपि राज गय बद्रि तप्प ॥
छं० ॥ ९० ॥
करि तप्प आइ फिरि अन्नगेस । दिज्जै सु इनहि हय गय सु देस ॥
आनौ न चित्त चहुआन और । जग्गै सु सामि न बिरस्स चौर ॥
छं० ॥ ९१ ॥
भुगई न जाइ पर लेइ बस्त । समपौ सुराइ आनग समस्त ॥
गो चार पहर चारै सु गोइ । कबहूं न धेन बर धनी होइ ॥छं०॥९२॥
यनवार अस्व सौंपै सु राज । ना होइ ओय पति तास बाज ॥
कासनी कृष्षि रष्षी सुभाय । तिन भोग सुभर रावर [1]सुभाय ॥
छं० ॥ ९३ ॥
अप्पौ सु देस अनगेस रस्स । जिन करौ अप्प मझ्झह विरस्स ॥
भयें बिरस सुष्ष पावै न कोइ । हम देत सीष तुम हितू होइ ॥
छं० ॥ ९४ ॥
भये बीरस सुष्ष कह भयौ पंड । कुल सकल नास भौ वप्पु षंड ॥
अप्पौं न भूमि जौं जीय सुद्ध । तो सजहु आनि इन समहि जुद्ध ॥
छं० ॥ ९५ ॥
दिय पच दूत प्रथिराज जाइ । सुनि अदन अप्प बहु दुष्ष पाइ ॥
अनगेस राज सुलतान जोर । ऐसे जु सजै कोटिक्क और ॥छं०॥९६॥

(१) मो.-सुजाय ।

पावै न तऊ दिल्ली सु थान। झुकि राव घाव कीनौ निसान ॥
छं० ॥ ९७ ॥

पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट लगा कर सब सरदारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला।

गाथा ॥ झुकि किय घाय निसानं। चढ़ि प्रथिराज बाज साजेयं ॥
सब सामंत समेतं। दिय डेरा सु दोइ जोजनयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा। जो सब सरदार विरक्त हो गए थे वे भी स्वामि के काम के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए।

दूहा ॥ देषि दूत गये साहि ढिग। कही षबरि प्रथिराज ॥
चल्यौ सूर सेंभर धनी। हय गय दल बल साज ॥ छं० ॥ ९९ ॥
सामत सूर समस्त बर। भय संसार विरत्त ॥
स्वामि धर्म्म साधन सु बर। मरन सरन मन रत्त ॥ छं० ॥ १०० ॥

सुलतान ने दूत से समाचार सुन कर चढ़ाई का हुक्म दिया।

अरिल्ल ॥ संभलि बत्त [1]चरं [2]सुलतानं। निहसे [3]बज्जि सु बीर निसानं ॥
भयौ हुकुम साहाब अमानह। सजहु अमीर उम्मरा षानह ॥
छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा।

दूहा ॥ चर सु दिष्पि चहुआन कै। साह षबरि कहि राज ॥
सुनत राज प्रथिराज बर। चल्यौ जुद्ध कज साज ॥ छं० ॥ १०२ ॥

धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला, जब दोनों सेनाएं एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डङ्के पर चोट दी।

(१) ए.-बरं। (२) कृ. ए.-सुरतानह, निसानह। (३) मो.-बज्जे।

चोटक ॥ सजि साज चल्यौ प्रथिराज बरं। सत सामत सूर सपूर भरं॥
विरदैत महाबर बीर बली। तिन सों किन जात न रार कली॥
छं० ॥ १०३ ॥

[1]परसें भिरि भारथ पारथ से। न वदें अप जपर आनन से॥
जुध कों तिनके मुष कोंन जुरे। न मुरें मुष धार अनी सुमुरे॥
छं० ॥ १०४ ॥

सजि साहन सेंन हजार दसं। रह सेर सवान सु बीर रसं॥
गज [2]सत्त दसं मुर मत्त गजै। तिन देषि बंध्याचल पन्न लजै॥छं०॥१०५॥
घमके घन घुग्घर घंट बनं। भननंकत भौरनि झौर भनं॥
गति देषि तुरंग कुरंग दुरें। तिन के उर अट्ठन कोट परें॥छं०॥१०६॥
चहुआन चल्यौ चतुरंग दलं। सजि भैरव भूत विताल बलं॥
चर चौसठ जुग्गिनि सथ्थ चलीं। किलकैं करि भारथ बैर रलीं॥
छं० ॥ १०७ ॥

चमकंत सनाह सु जोति इसी। सु करं मधि मूरति बिंब जिसी॥
सजि टोप रंगावलि [3]हथ्थ लयं। बनि राज सु [4]पग्घर सा [5]वलयं॥
छं० ॥ १०८ ॥

दोइ कोस रह्यौ विच साहि दलं। चहुआन निसान बजे सबलं॥
छं० ॥ १०९ ॥

पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया।

दूहा ॥ सजि आयौ चहुआन जुध। सुन्यौ श्रवन पतिसाहि॥
हुकम षान उमरान हुअ। सज्यौ अंग सन्नाह॥ छं० ॥ ११० ॥

आगे तातार खां को रक्खा, मारूफ खां को बाईं ओर और खुरासान खां को दाहिनी ओर अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया।

(१) मो.-पसरें। (२) ए. कृ. को.-सत्त मुरं मदमत गजै।
(३) ए.-हाथ। (४) मो.-परकर। (५) मो.-बनयं।

गाथा ॥ मुष्ष सु रिष्षी ततारं । बांई दिसा षान मारूफं ॥
दाहिन षां षुरसानं । मद्धि अनगेस पुट्ठि साहाबं ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की। आगे कैमास को और पीछे चावंडराय को कर दिया।

सजि ठट्ठौ सुलतानं । सुनि चहुआन अप्प व्यूहानं ॥
मुष कीनौ कैमासं । चावँडराइ पुच्छ सज्जायं ॥ छं० ॥ ११२ ॥

अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं, जीते ही पकड़ना चाहिए।

दूहा ॥ मद्धि फौज प्रथिराज रचि । कह्यौ सु कर करि उंच ॥
अनंग राज जीवत [1]गहौ । इह सु रचौ परपंच ॥ छं० ॥ ११३ ॥

दोनों दलों का सामना हुआ कैमास ने युद्धारम्भ किया।

जिन सु हनौ अनगेस जिय । गहौ सु जीयत [2]सास ॥
इतें दुदल दिट्ठाल भय । लई बग्ग कैमास ॥ छं० ॥ ११४ ॥

दोनों दल का सामना होते ही घमसान युद्ध होने लगा।

बिह दल बल सिंधू बजै । उपजत सूर उहास ॥
[3]ष्योहनि पर नप्पौ पयंग । करि कलकौ कैमास ॥ छं० ॥ ११५ ॥

कैमास ने शस्त्र संभाल कर युद्धरम्भ किया। युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लई षग्ग कैमास बीरं अमानं । धमंके धरा गोम गज्जे गुमानं ॥
उतें उप्परी बाग तत्तार षानं। मिले हिंदु मीरं दोऊ दीन मानं ॥
छं० ॥ ११६ ॥

[4]वजे राग सिंधू सु मारू अवग्गे । गजे सूर सूरं असूरं सु [5]भग्गे ॥
चढ़े व्योम विम्मान देषंत देवं । वदै स्वामि कज्जै सु सज्जै उमेवं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गहें गहै। (२) मो.-साह। (३) ए. कृ. को.-पोहनि।
(४) ए. कृ. को.- वज्जे। (५) ए. कृ. को.-भज्जे।

छुटे नाल गोला हवाई उछंगं। [1]न पिचं मनों जानि [2]तुट्टे निहंगं॥
करष्यै चलै बान बानं कमानं। भई अँध धुंधं न [3]सुझैति भानं॥
छं० ॥ ११८ ॥

मिले सेल मेलं समेलं अपारं। सनाहं फटें हीय होवत्त पारं॥
मदं मत्त दंतं उषारै मसंदं। मनों भिल्लिया पब्ब उप्पालि कंदं॥
छं० ॥ ११९ ॥

लगै नाग नागं मुषी सूर ऐचै। हथन्नापुरं जानि बलिभद्र पैचै॥
झरं ओझरं झार झारं झनंकै। करै गज्ज चिक्कार [4]ताजी किनंकै॥
छं० ॥ १२० ॥

हूअं पूरनं जाम मध्यान जंचौ। मिले दिट्ठ तत्तार आनंग मंचौ॥
चलै मातुलं ओर हक्कै कमासं। हन्यो पान षग्गं पहुंचे दृहासं॥
छं० ॥ १२१ ॥

तकै तूंबरं पै लयौ गज्ज राजं। धपे दाहिमा पागरा छंडि बाजं॥
जरी सेल गाढ़ी विचं [5]पौलवानं। बियो घाव कीयौ सु कट्टै कृपानं॥
छं० ॥ १२२ ॥

कटी दंत लौ मुंड लोही भभक्कै। मनों सारदा कंदरा थी उबक्कै॥
पर्‌यो कज्जलं कूट ज्यौं तूटि हथ्थी। तजे तूंअरं भज्जिगे सब्ब सथ्थी॥
छं० ॥ १२३ ॥

भगंदंत वालौ किधौं सु प्रतीकं। महा दिघ्घ कायं अरज्जुन्न भीकं॥
दबौ दादसं कोस भू घंट मद्धे। पढ़े बेद बानी पुरानं प्रसिद्धे॥
छं० ॥ १२४ ॥

पर्‌यो दाहिमा भीम ज्यौं गोल कूंडै। घटो कल्ल पथ्थं न सथ्थं उमंडै॥
अलुझ्यो पगं अग्ग में इभ्भ राजं। हरी जेम कूदे करी मथ्थ गाजं॥
छं० ॥ १२५ ॥

किलावा रह्यौ पग्ग में लग्ग पासी। ग्रह्यौ जीवतौ बद्रिकाश्रम्म बासी॥
सनद्धं रहि कट्टियं अद्ध विद्धी। चढ़ी हथ्थ दिल्ली न कारज्ज सिद्धी॥
छं० ॥ १२६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नछत्रं। (२) मो.-छुट्टे। (३) ए. कृ. को.-सुझैसु।
(४) मो.-बाजी (५) सो कृ.को.-पति।

उभै मीत मानै। रहे लग्गि छत्ती। पछें और सामंत की आइ पत्ती ॥
पुरासान मारूफ तत्तार जोरी। करें एक फौजं धप्पो साहि गोरी॥
छं० ॥ १२७॥

इत चहुआनं भुजा के भरोसैं। मनों [1]लंघनो सिंघ तुट्टो सरोसैं॥
[2]गढ़ं इंदपथ्थं सु हायं सु कज्जें। उभै दौन जुट्टे करें पग्ग धज्जें॥
छं० ॥ १२८॥

रसं लूक लग्गै हुए टूक टूकं। रिनं पत्त पट्टैं [3]पुराने अचूकं॥
थटे जाइ आघाट बैकुंठ थानं। मिल्यौ नट्ट गोटा जिसौ आव जानं॥
छं० ॥ १२९॥

बरं चंग चंगे परी छूर छूरं। रचें रुंडमालं महेसं गरूरं॥
सिवा ओन [4]धप्पो सु कोनो डकारं। करें पेचरा भूचरा किल्लकारं॥
छं० ॥ १३०॥

उड़ै रेनं गेनं भयो अंधकारं। पराए न अप्पं न सुझ्झै लगारं॥
इसौ भांति भारथ्थ मंतौ करूरं। धरी च्यार पंचै रह्यौ रथ्थ सूरं॥
छं० ॥ १३१॥

हरद्वार लौं जाइ लायौ सु भग्गौ। सबै सेन भग्गौ तिनं लार लग्गौ॥
रह्यो पातिसाहं भुजं लाज झल्लै। घरं पंचि साइक्क छंडै सु भल्लै॥
छं० ॥ १३२॥

गनें कौन नामं अनेकं फवज्जं। लग्यौ दाहिमा कै तुरंगम्म कज्जं॥
बड़ं गुज्जरं कम्मधज्जं पुंडीरं। छलं पारि दौन्यो करे नाहिं सीरं॥
छं० ॥ १३३॥

धरे सिप्परं अद्ध ह्वै काल मेसं। लियौ संग्रहै चौंडरा गज्जनेसं॥
फटे पारसं सत्त साइस मीरं। परे पंचसै षेत हिंदू सु बीरं॥
छं० ॥ १३४॥

उभै पाहुने कौन चंदं प्रकासे। ढले मुष्ष मंगे प्रथीपत्ति पासे॥
छं० ॥ १३५॥

---

(१) ए.-लंघलं, लंघने, लंघनं। (२) मो.- प्रति "हकं एक एकं सहायं सु कज्जे"।
(२) मो.-सही कें।
(३) ए. कृ. को.-पीनौ।

शहाबुद्दीन को चावंड राय ने पकड़ लिया, पृथ्वीराज की जय हुई सात हज़ार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए।

कवित्त ॥ बंधि साहि साहाब। लियौ चावंड राय बर ॥
हय कंधह लै डारि। गयौ निज सथ्थ सेन नर ॥
भीर उतरि पतिअसुर। षेत छुंट्यौ प्रथिराजं ॥
मुसलमान सत सहस। परे सामथ करि काजं ॥
पंच सै सुभर हिंदू सु परि। उभै सक्ति झोरी सु जगि ॥
जिय्यौ सु राज सोमेस सुअ। [1]घनै जैत बज्जै बजिग ॥ छं० ॥१३६॥

पृथ्वीराज का सुलतान को क़ैद में भेज कर अनंगपाल को आदर सहित दरबार में बुला कर उन के पैर पड़ना।

मुसलमान धर गहि। दाग निज सुभर दिवायौ ॥
लियें जीति प्रथिराज। समह सामंत घर आयौ ॥
सभा बैठ भर सुभर। कह्यौ कैमास राइ गुर ॥
अनगेसह लै आउ। चल्यौ मंचौं सु लेन घर ॥
आन्यौ सु राज अनगेस तं ह। प्रथीराज लग्गौ सु पय ॥
सनमान प्रान अति प्रीति सौं। भाव भगत राजन करय ॥छं० ॥१३७॥

दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बड़े बुद्धिमान हैं आप इस शाह के बहकाने में क्यों आ गए ?

दियौ हुकम दाहिम्म। ल्याउ दीवान साह कह ॥
सब देषें सामंत। मुहि आमन अपत्ति बहु ॥

(१) ए. क. को.-बजै।

आन्यौ साहि हजूर। मिल्यौ प्रथिराज राज बर॥
बैठि साह साहाब। सुष्य देषें जु [1]सुभर भर॥
बोल्यौ जु राज प्रथिराज बर। अनँगराइ तुम अति सुमति॥
भरमौ सु केम कहिं साहि के। इह तौ [2]पति उत्तरि अपति॥
छं० ॥ १३८॥

दूहा॥ कहै राज प्रथिराज गुर। सुभर बोलि बर अग्ग॥
अनँग सीस उंच न करै। नाग इमन सिर नग्ग॥ छं० ॥ १३९॥

सरदार गहलौत ने कहा इसमें महाराज अनंगपाल का दोष नहीं है यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है।

कवित्त॥ कहै [3]गज्जि गहिलौत। कहूं सामंत सुनौ सहु॥
अप्प अभी [4]एकंत। [5]असुर सुरतान बही कहु॥
समुद सजल जल धार। ससी लग्गौ सु कलंकह॥
ह्वर गिलै रस राहु। पंथ लुट्टाइ गोय बहु॥
दसरथ्थ आप काक सु विक्रम। दइ दिवान विपरीत गति॥
पतिसाह कही सुनतें सकल। अनगपाल नट्ठौ सु मति॥छं० ॥१४०॥

चामुंड राय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है।

दूहा॥ बदै राइ चामंड बर। इह अवस्थ होइ अंग॥
जब सु मानसर तजि करै। हंस काग कौ संग॥ छं० ॥ १४१॥

सामंतों ने जितनी बातें कहीं सब अनङ्गपाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला।

जिते वचन सामंत कहे। तिते सहे अनगीस॥
षील चौरह सम सुनि रह्यौ। उठ्यौ न जरध सीस॥ छं० ॥ १४२॥

पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (ख़िल्लत) देकर छोड़ देना।

(१) मो.-सुर सुभर। (२) ए. कृ. को.-पानि (३) कृ.-गाजि। (४) मो.-एकंग
(५) ए. कृ. को.-असुरन नं निबही कहूं।

भाव भगति प्रथिराज ने। कीनी अति महिमान ॥
इक्क बाज सिरपाव दै। छंडि दियौ सुरतान ॥ छं० ॥ १४३ ॥

शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दंड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतों में बांट देना।

कवित्त ॥ छाँड़ि दियौ सुरतान। डंड [1]कब्बूल कियौ सिर ॥
बीस [2]हस्ति सत बाज। [3]उंच जाति गातह गिर ॥
उभै लष्ष बर द्रव्य। दियौ साहाब सु दंडं ॥
सो प्रथिराज नरिंद। अद्ध दीनौ चामंडं ॥
अध दंड सब्ब सामंत कहुं। बंटि दियौ चहुआन बर ॥
दै दंड षत्त नर बर सुभर। प्रथीराज छीवै न कर ॥ छं० ॥ १४४ ॥

म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया।

दूहा ॥ मेच्छ बंध चहुआन ने। लिये हयगय भार ॥
फिरि प्रसन्न प्रथिराज किय। ढिल्ली कोटह बार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
बरष एक पच्छै न्रपति। तब लगि भर सबलान ॥
समौ हयगय दल सजे। चतुरंगी चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥

राजा से राव पज्जून, गोयन्द राय आदि सामंत आकर मिले।

कवित्त ॥ मिल्यौ राव पज्जून। मिल्यौ मोरी महनंसिय ॥
मिले राव पुंडीर। गए [4]दुज्जन वल नंसिय ॥
मिले निडर रघ्घौर। मिल गोइंद गहिलौतं ॥
मिलि षीची पज्जून। जाम जद्दौं पहिलौतं ॥
आरंभ राव कनक्क मिल्यौ। रघुबंसी हय आरही ॥
कविचंद मिल्यौ जयचंद कौं। नाम सभट्ठा भारही ॥ छं० ॥ १४७ ॥

अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है।

(१) मो.-कछू लै। (२) ए.-हस्सि। (३) ए. ऊंच जाति सुताहि गिर।
(४) मो. खल।

अरिल्ल ॥ तब सुमंत परधानह पुच्छिय। कहौ मंत मंची मत अच्छिय ॥
किहिं विधि क्रम्म भ्रम्म जस रष्पै। सुनि परधान एह विधि अष्पै ॥
छं० ॥ १४८ ॥

मंत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को दिल्ली आप दे चुके हैं अब इसका मोह छोड़ कर धर्म कर्म कीजिए।

दूहा ॥ अनगपाल तिन पावि ग्रह। अरु बर बंधव साल ॥
इष्ट जोग वपुजोग धरि। चंपि जरा अरि काल ॥ ॥छं० ॥१४९॥
जोगिनपुर प्रथिराज कौ। दैव दियौ दिन बित्त ॥
मोह बंध बंधन तजे। भ्रम क्रम कीजै चित्त ॥ छं० ॥ १५० ॥

मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं इस की चिन्ता न कीजिए।

कवित्त ॥ न रहै सर वापीय। अनुप गढ़ मँडप बहुज्जं ॥
न रहै धन बन तरुनि। कूप प्रबत फिरि छज्जं ॥
न रहै ससि रबि भोम। जाइ [1]थावर अरु जंगम ॥
न रहै सात समंद। धरै भंजय सोइ अंगम ॥
जानहु न प्रलै चतुरंग तम। प्रलै इहै सो दिष्पियै ॥
राषौ न चिंत आचिंतका। जीमन मरन विसिष्पियै ॥ छं० ॥१५१ ॥

रानी का सलाह देना कि पृथ्वीराज से आधा पंजाब का राज्य ले लो अथवा जो व्यास जी कहैं सो करो।

पुनि बरज्यौ नृप चीय। जीय तिय [2]तीय उतारिय ॥
तजिय मान घरवार। पुच्छयौ व्यास हँकारिय ॥
चाहुआन अरि भज्जि। होइ धर अनग नरेसं ॥
पंच नदी करि अद्ध। बंटि अप्पै अध देसं ॥

(१) ए.-अवर अंवर। (२) मो.-मीस।

तुम कहौ जोति[1]जग जोति बिय। इह अपुब्ब कथ मंडिकैं॥
कै ग्रहौ पंथ बद्री सरन। धरा काम कलि छंडि कैं॥ छं० ॥ १५२ ॥

व्यास जी का कहना कि बलवान पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य करने दीजिए आप गुरु का ध्यान करके तप कीजिए।

कहै व्यास अनगेस। तपै ढिल्ली चहुआनं॥
बहु बर बल छज्जिहै। बंध मीषन सुलतानं॥
तुम बद्री तप जाहु। धरा संदेस न आनहु॥
इह त्रिम्मान प्रमान। पुब्ब संबंधन जानहु॥
त्रिम्मलौ ध्यान गुर ग्यान करि। हरि भजि त्रिम्मल [2]होइहै॥
नन करौ चित्त दुविधा न्रपति। अत्त पुरत्तन षोइहै॥ छं० ॥ १५३॥

राज्य धन सम्मान मांगने से नहीं मिलता और न बल से स्नेह होता है।

न लहै मांग्यौ देस। बेस पुनि मांग्यौ न लहै॥
न लहै मंग्यौ मान। पान फुनि मांग्यौ न लहै॥
न लहै धन मंगत्त। गत्त फुनि रूप [3]बिनानं॥
पुब्ब निबंध्यौ बंध। लहै सोई परिमानं॥
तुम जान ग्यान मतिमान गुर। नेह न लभ्भै जोर बर॥
आतम्म चित्त अनचिंत तजि। इहै मत्त तुम सत्त करि॥ छं०॥ १५४॥

मेरा मत मानो कि बद्रीनाथ जी की शरण में जाकर कन्दमूल फल खाकर तप करो।

अरिल्ल॥ मानि मंत तुम तूंवर छंडिय। जाइ सरन बद्री तप मंडिय॥
कंद मूल आहार अचानिय। कै बन फल तन धारन पानिय॥
छं० ॥ १५५ ॥

(१) ए. तन, कृ. मम (२) गी. षोइये, होइये। (३) ए.-निनानं।

पृथ्वीराज ने अनङ्गपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनङ्गपाल ने दौहित्र (पृथ्वीराज) से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठ कर तप और भगवान का भजन करूं, पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठकर तप भजन कर सकते हैं।

कवित्त ॥ अनगराइ अति सेव। करै प्रथिराज राज अति ॥
मास एक दुष वित्त। बहुरि उपजी सु राज मति ॥
कह्यौ पुचि सुत सभह। मोहिं मुक्कलि बद्री दिस ॥
तहां [1]बपु साधन करौं। धरौं [2]हरि ध्यान अहो निसि ॥
बोल्यौ सु राज चहुआन वर। रहौ इहां साधन करौ ॥
तप तुला दान धर्म ह बिबिध। ध्यान ग्यान हिरदै धरौ ॥

छं० ॥ १५६ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनङ्गपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही। तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रुपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हें बद्रीनाथ पहुंचा दिया। अनङ्गपाल वहां जाकर तपस्या करने लगा।

कहौ सुत्त सोमेस। राज अनगेस न मानौ ॥
बपु साधन तप काज। बद्रि दिसि मनसा ठानौ ॥
तब पुची बर पुच। लष्ष दह द्रव्य सु अप्पौ ॥
सत अनुचर इक जान। बिप्र दस एक समप्पौ ॥

(१) मो.-तप। (२) ए.-अहि।

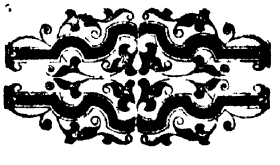
चल्यौ अनंग बद्री सरन। पहुंचायौ प्रथिराज नृप ॥
तहं जाइ राज तोंवर सुवर। तपै राज उग्रह सु तप ॥ छं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और बीरता की प्रशंसा।

धनि सु चित्त प्रथिराज। करुन रस आप उपन्नौ ॥
द्रब्ब दरक सत अट्ठ। पुन्य कारन भरि दिन्नौ ॥
सबै सुभर अनगान। आनि आदर ग्रह बासिय ॥
धनि धनि जंपै लोइ। कित्ति भू मंडल भासिय ॥
आषेट दुष्ट दुज्जन दखन। करै कैलि सामंत सथ ॥
कबि चंद छंद बंधिय कवित। प्रथ्थिराज भारथ्थ कथ ॥ छं० ॥ १५८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके अनंगपाल ढिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन बद्री तप सरन नाम अठाविसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २८ ॥

[दूसरा भाग समाप्त।]



Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

Vol II.

EDITED

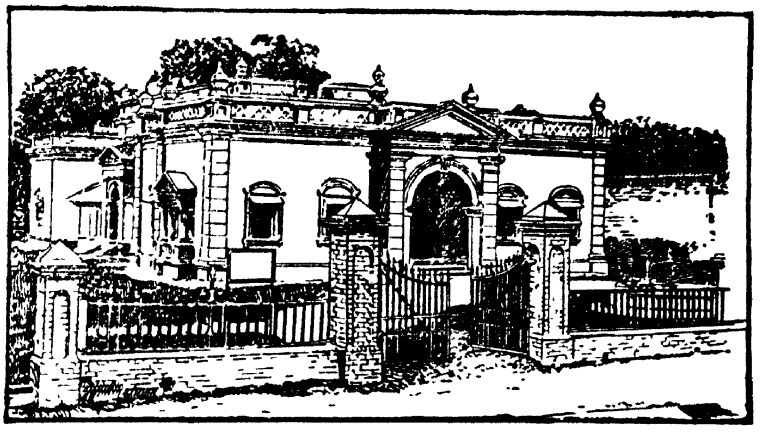
BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XIIto XXVIII.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

दूसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व १२ से २८ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND MEDICAL HALL PRESS AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1906.

मूल्य ४)] [*Price Rs. 4.*

सूचीपत्र ।

(१२) भोलाराय समय ।

(पृष्ट ४४७ से ५१७ तक)

१ भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को सँभरि राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन । ४४७

२ शुकी का शुक से इँच्छिनी के विवाह की सविस्तर कथा पूछना । ,,

३ इधर चहुआन तपता था उधर आबू का राजा सलख पँवार बड़ा प्रतापी था, उसका वर्णन । ,,

४ सलष को एक बेटा जैत नाम का और मंदोदरी और इँच्छिनी नाम की दो बेटियां थीं । ४४८

५ बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदेव के साथ होना । ,,

६ भोला भीमदेव के बल पराक्रम का वर्णन । ,,

७ भीमदेव के मंत्री अमरसिंह सेत्रा का वर्णन । ,,

८ मंत्र बल से अमरसिंह का अमावस को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुँड़ा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना । ४४९

९ इंच्छिनी के रुप की बड़ाई सुन भीम का उस पर आसक्त होना । ,,

१० आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इँच्छिनी की बड़ाई सुन सुन जैन-धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो व्याकुल हुआ । ४५९

११ देखने, सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंच्छिनी के ध्यान में पागल सा हो गया । ४५०

१२ भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंच्छिनी का विवाह मेरे साथ कर दो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा । ,,

१३ सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा सलष से मिलना । ४५१

१४ पँवार सलष की प्रशंसा । ,,

१५ पँवार सलष पर चालुक्य भीमदेव का झँपना और पत्र में लिखना कि मन्दोदरी दिया है अब इँच्छिनी को देओ नहीं तो आबू की गद्दी से हाथ धोओगे । ,,

१६ भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ राजा सलष का रखना, छटें दिन दरबार में आ उसका पत्र और भेंट उपस्थित करना । ४५२

१७ सलष की वीरता की प्रशंसा और उस पर चालुक्य भीमदेव के कमर कसने का वर्णन । ,,

१८ राजा सलष और उसके पुत्र जैतसी की गुणग्राहकता और उदारता का वर्णन । ४५३

१६ चालुक्य को मन्दोदरी देकर नाता किया, परन्तु भीमदेव ने इँच्छिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा। „
२० सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटैगा। ४५३
२१ भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसी का क्रुद्ध होना। „
२२ जैतसिंह का तलवार सँभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाषंड से आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के क्षत्रियों से कभी काम नहीं पड़ा है। ४५४
२३ जैतसी का कहना कि पाषंड से अपना बल बढ़ा कर भीमदेव अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है। „
२४ भीमदेव के प्रधान का भीमदेव के बल की बड़ाई करके कहना कि वह पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा। „
२५ राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण हमारी सहायता करेंगे। ४५५
२६ ऐसे ही वाक्य जैतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर जाना कि सावधान रहना तुम पर हम राजा को लेकर आवेंगे। ४५६
२७ राजा सलष का अपने यहां तय्यारी करना और इँच्छिनी को विवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना। „
२८ भीमदेव का सलष पर चढ़ाई करने के लिये अपने सामंतों से सलाह लेना और उन्हें उत्तेजित करना। ४५७
२९ चालुक्य और चौहान से जो विवाह का झगड़ा पड़ा है उसका वर्णन चन्द करता है। „
३० जैतसिंह का भीमदेव के संदेसे पर महा क्रोध प्रकाश करके पिता से कहना कि यह कभी न होना चाहिए। ४५७
३१ सब की सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय। ४५८
३२ दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना। „
३३ सलष का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना। „
३४ मंत्री को पृथ्वीराज ने पांच हाथी, सौ घोड़े, पांच सो रुपया आदि दिया और आप सलष की राजधानी की ओर गया, यह सुनकर भीमदेव कुढ़ गया। ४५९
३५ इँच्छिनी का पृथ्वीराज से व्याहा जाना सुनकर भीमदेव का सर्दारों से सलाह करना। „
३६ भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत भेजना कि उसे चौहान शरण न रक्खे। „
३७ भीमदेव का चारों ओर मित्र राजाओं की सेना बुलाना और चढ़ाई की तय्यारी करना। ४६०
३८ आबू पर चढ़ाई की तय्यारी। „
३९ भीमदेव की सेना के कूच का धूम का वर्णन। „
४० आबू की शोभा वर्णन। ४६१
४१ भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़ कर जैन धर्म मानना। „
४२ अमरसिंह सेवरा की सिद्धि का वर्णन। „
४३ भीमदेव का रात के समय कूच करना। ४६२
४४ सलष और भीम की सेना से घोर युद्ध। ४६३
४५ सलष का मारा जाना, उसकी वीरता की बड़ाई। ४६४
४६ भीमदेव का आबूगढ़ पर अधिकार करना। „
४७ एक महीना पांच दिन आबू में रह कर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना। ४६५
४८ अपने राज्य में आकर भीमदेव ने

शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आप सारुड आइये हम आप मिलकर पृथ्वीराज को जीतें, पत्र देकर मकवान को भेजना। ४६५
५६ मकवान से कहना कि केवल इंछिनी के ही कारण से मैंने सलष को सकुटुम्ब स्वर्ग लोक को भेजा है। ,,
५० और मेरे मन का दुःख तब दूर होगा कि जब चौहान पर चढ़ाई करूं, सुलतान मुझ से मिल जाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूं। ,,
५१ भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश। ४६६
५२ घोड़े, चमर, पश्मीना आदि भेंट दे कर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना। ,,
५३ पत्र पढ़ कर सुलतान ने कमान खींच कर कहा कि या तो मैं म्लेच्छों को मारूंगा या खुरसान ही में रहूंगा। ,,
५४ सुलतान ने कहा कि दान खड्ग, विद्या और सम्पति ये साझे में नहीं होते। ४६७
५५ पृथ्वी बीर-भोग्या है भीमदेव मुझ से क्या शेखी मारता है मैं उसे भी मारूँगा। ,,
५६ यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव की बड़ाई करना। ,,
५७ शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारूंगा पीछे भीमदेव चालुक को। ४६८
५८ मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का दल जब चलता है तो काल काँपता है ,,
५६ चालुक्य के आगे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, परोट, मरहट्ठे आदि कोई नहीं ठहर सकते। ,,
६० जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा और जादवों को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है। ४६८
६१ सुनकर सुल्तान की आंखें क्रोध से लाल होगईं और वह उस को मारने पर उद्यत हुआ। ४६६
६२ वज़ीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता इसमें बड़ा अपयश होगा। ,,
६३ शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामत ने वज़ीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गँवारों की सी बात करता है। ४७०
६४ यह सुन मकवाना को क्रोध आ गया, उसने सामंत को एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया। ,,
६५ इस पर ऐसा हाहाकार मच गया। ,,
६६ मकवान का अपने चित्त में सुलतान के संदेसा न मानने पर विचार। ४७१
६७ इधर चालुक्य राय का अपनी सेना सजना। ,,
६८ उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुसाब के सिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए। ,,
६६ भीमदेव नें अपने दूत का मारा जाना सुन बड़ा क्रोध किया और गज़नी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा। ४७२
७० सेना सजने पर आग लगने से अपशकुन होना। ४७३
७१ भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो खुरासान के राज्य पर शहाबुद्दीन रहै तो मेरा नाम नहीं। ,,
७२ उधर शहाबुद्दीन ने सेना सजी। ,,
७३ सुलतान और चालुक के अपनी अपनी सेना सजाने पर चहुवान का भी दिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजना। ४७४
७४ कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में

अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है। ४७४
७५ कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिये नागौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतों की सभा होना उस में कैमासादि का अपना अपना विचार प्रकाश करना। ४७५
७६ उसमें चामंडराव और जैतराव की प्रतिज्ञा। ,,
७७ बागरी अर्थात् देवराव बग्गरी का कथन। ४७६
७८ राव बड़ गुज्जर का कथन। ,,
७९ लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चहुआन सेना फेरता था वहां जा मिलना। ,,
८० सामंतों का मत हो जाने पर चहुआन ने अपनी सेना के दो भाग किये, एक चामुंडराव जैतसी के साथ सुलतान पर चढ़ा और दूसरा चालुक्य भीमदेव पर। ४७७
८१ दुओरी चढ़ाइयों की सेना की शोभा का वर्णन। ,,
८२ इधर सुलतान का मुख अर्थात् मोहाना रोकना और उधर भीमदेव से लड़ने के लिये चौहान का नागौर जाना। ४७८
८३ सब सामंतों का गुर्जर नरेश से कहना ४८०
८४ फिर निशान का बजना और अमरसिंह का दाहिम को बांधने का पाषंड करना। ४८१
८५ पाटरिया रान का कहना कि कैमास को छल कर के बांधूँगा। ,,
८६ अमरसीह सेवरा का मंत्र बल से कैमास को वश में करने का निश्चय करना। ४८२
८७ चालुक्यराज की सेना की चढ़ाई और अमरसिंह का मंत्र आरम्भ करना। ,,
८८ अमरसिंह के मंत्र बल की प्रशंसा। ,,
८९ कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया। ४८३
९० चालुक्य राज का पत्र। ४८४
९१ अपनी बड़ाई लिख कर एक स्त्री का चित्र लिखना कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो। चित्र देख कर कैमास का मोहित हो जाना। ४८५
९२ दूत ने लाले नामक एक खत्री की रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया। ,,
९३ दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया। ४८६
९४ उस स्त्री के रूप का वर्णन। ,,
९५ आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मंत्री बाल चरित्र के वश पड़ जाता है। ४८८
९६ अमरसिंह के मंत्र के वश में कैमास ऐसा प्रबल स्वामिभक्त मंत्री फँस गया। ४८९
९७ कैमास ऐसा मंत्र मुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूल कर चालुक्य राज का वशवर्ती हो गया। ,,
९८ कैमास के वश होने से नागौर में भीमराज चालुक्य की आन फिर गई। ,,
९९ चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई। ४९०
१०० यह जान कर चन्द ने देवी का अह्वान और उसकी स्तुति की। ,,
१०१ चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला। ,,
१०२ नागौर पहुँच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखी और घर घर यह चर्चा सुनी। ४९१
१०३ यह देखकर चन्द ने बड़े क्रोध से भैरव तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया। ,,
१०४ चन्द का देवी की स्तुति करना। ४९२
१०५ चन्द का देवी से बर मांगना कि जैन की माया को जीतें। ४९३
१०६ समाचार पाकर चन्द का मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमरसिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना। ४९४
१०७ एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना फिर सम्हल कर अपना अनुष्ठान करना,

देवता आदि का आश्चर्य्य के साथ दोनों का बल देखना। ४६४
१०८ चन्द ने अमरसिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मंत्र आरम्भ किया। ४६५
१०९ अमरसिंह का बहुत पाखण्ड फैलाना। ४६६
११० चन्द का पाखण्ड भंजन में सफल होना। ,,
१११ चालुक्य राज का मंत्र नष्ट होना। ४६७
११२ चन्द का अमरसिंह को वाद में जीतना। ,,
११३ चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगा कर कैमास के पास जाना। ४६८
११४ कैमास को लज्जित होना। ४६६
११५ चन्द का कैमास को आश्वासन देना। ,,
११६ कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामन्तों का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रस्तुत होना। ,,
११७ चालुक्य राज का सेना प्रस्तुत करना। ५००
११८ चालुक्य की सेना का वर्णन। ५०१
११९ चालुक्य राज का धोखा करना। ५०२
१२० युद्ध का वर्णन। ,,
१२१ सप्तमी को घोर युद्ध का आरम्भ होना। ५०३
१२२ युद्ध की तय्यारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना। ५०५
१२३ युद्ध आरम्भ होना। ,,
१२४ वाजिद खां का लड़ना और वीरता से मारा जाना। ५०६
१२५ अष्टमी के युद्ध का वर्णन। ,,
१२६ चामुण्ड राय के युद्ध का वर्णन। ५०७
१२७ यह युद्ध संवत् ११४४ में हुआ। ५०८
१२८ उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे। ,,
१२९ युद्ध का वर्णन। ५१०
१३० स्वयं भोरा राय के युद्ध का वर्णन। ५११
१३१ भोरा राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना। ५१२
१३२ पृथ्वी पर गिरने से भीम राय का महा क्रोध करके कैमास पर टूटना। ,,
१३३ कैमास पर भीड़ देखकर चामुण्ड राय का सहायता पर पहुंचना। ५१३
१३४ घोर युद्ध का वर्णन। ,,
१३५ भोरा राय की सेना का भागना। ५१५
१३६ पृथ्वीराज का राज्य स्थापन होना। ५१७

(१३) सलष युद्ध समय।

(पृष्ठ ५१९ से ५४२ तक)

१ सिंहावलोकन। ५१९
२ उधर भोला भीमदेव से सरदारों की लड़ाई ठनी इधर शहावुद्दीन की ख़बर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना। "
३ दूत का आकर पृथ्वीराज को ख़बर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहावुद्दीन आता है। ५२०
४ दूत का ब्योरे के साथ शहावुद्दीन की सेना का वर्णन करना। ५२१
५ शहावुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना। ५२२
६ लोहाना का क्रोध करके गोरी शाह के नाश करने की प्रतिज्ञा करना। "
७ आबू-पति सलष आदि का अपनी सेना तयार करना। "
८ पुरोहित गुरुराम का आशीर्वाद देना। ५२३
९ थोड़ीसी सेना के साथ शहावुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वीराज का निकलना। "
१० पृथ्वीराज का शहावुद्दीन से लड़ने के लिये सारुंडे पर चढ़ाई करना। "
११ लोहाना अजानवाहु का ५०० सेना के साथ आगे बढ़ना। ५२४
१२ ततारखां का सुलतान से चौहान की सेना पहुँचने का समाचार कहना। "
१३ सुलतान का अपनी सेना को तय्यार करना। "
१४ सुलतान का उमरावों से कहना कि अब

की अवश्य जीतना चाहिए। ५२४
१५ खुरासान खां, तातार खां आदि सरदारों का बादशाह की बात सुन आक्रोश में आना। "
१६ सब सरदारों का सज कर धावा करना। ५२५
१७ सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना। "
१८ चौहान की सेना का पूर्व्व और पच्छिम दोनों ओर से चढ़कर मिलना। ५२६
१९ खुरासानियों का चौहानों पर टूट पड़ना। "
२० शाह की सेना का युद्ध वर्णन। ५२७
२१ दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलष राज का भी आ कर मिलना। "
२२ सलष की प्रशंसा। "
२३ आजानबाहु लोहाना का मार कर भागना। ५२८
२४ सलष राज की वीरता का वर्णन। "
२५ बड़गुज्जर और तातार खां का युद्ध वर्णन। ५२९
२६ दोनों सेनाओं का एक घड़ी तक एक में एक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना। "
२७ कैमास का साथ छोड़ कन्ह चौहान का भी सारूंडे में आ जाना। ५३०
२८ कन्ह का बड़ी वीरता से धावा करना। "
२९ दोनों ओर के सरदारों का महा क्रोध करके युद्ध करना। "
३० आकाश में देवांगनाओं का वीरों का बरन करना। ५३२
३१ गुरुराम का एक मंत्र लिखकर म्लेच्छों की सेना पर डालना। "
३२ मंत्र के बल से शाह की सेना का माया में मोहित हो जाना, इधर से काज़ी खां का मंत्र बल करना और युद्ध होना। "
३३ मारूफ़ खां का शाह से कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन काज़ी खां पर खुरासान का दारमदार था उन्हों ने तसवीह छोड़ दी, हिम्मत हार दी। ५३३
३४ खुरासान खां आदि सरदारों का फिर एकत्र होना और लड़ने को तय्यार होना ५३३
३५ अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन। ५३५
३६ पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बांधा जाना। ५३६
३७ इस युद्ध में सलष राज की वीरता का वर्णन ५३७
३८ सलष राज का घोर युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई। "
३९ पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ५३८
४० पृथ्वीराज की वीरता की प्रशंसा। "
४१ सलष राज के युद्ध की वीरता का वर्णन। "
४२ म्लेच्छों की सेना का मुंह मोड़ना, सुलतान का हाथी छोड़ घोड़े पर चढ़ कर भागना। ५३९
४३ म्लेच्छ सेना और सुलतान की भगेड़ का बर्णन। "
४४ इस युद्ध में सलष राज के यश पाने का बर्णन, सुलतान का बांधा जाना। "
४५ सुलतान को जीत कर सलष राज का लूट मचाना। "
४६ सुलतान की सेना का भागना, चौहान का पीछा करना, पृथ्वीराज की दुहाई फिरना। ५४०
४७ पृथ्वीराज के जीत की बाजे कार मचना "
४८ पृथ्वीराज के सरदारों की वीरता की प्रशंसा। "
४९ पृथ्वीराज का जीतना, तेरह खान सरदारों का पकड़ा जाना, सारूंडे का टूटना। "
५० इधर शहाबुद्दीन को दण्ड देने, उधर कैमास का चालुक्यों को जीतने का वर्णन। ५४१
५१ शाह के बांधने, भीमदेव के जीतने और इच्छिनी के ब्याहने की प्रशंसा। "
५२ संवत ११३९ के माघ सुदी में सुलतान

को बांधना, माघ वदी ३ को इंच्छिनी का पाणिग्रहण करना, दण्ड ले कर सुलतान को छोड़ना और फिर खटूट्ट वन में शिकार को जाना। ५४१
५३ शुकी से शुक ने जो कथा चालुक्यों के जीतने की कही उसे सारूंडे में कवि चन्द ने वर्णन किया। ५४२

(१४) इंच्छिनी समय।

(पृष्ठ ५४३ से ५६६ तक)

१ शुकी के प्रश्न पर शुक चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इँच्छिनी के व्याह का वर्णन करने लगा। ५४३
२ शाह को दण्ड देकर छोड़ने पर राजा सलष ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा। ,,
३ पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इँच्छिनी का रूप नाम आदि पूछना। ५४४
४ इंच्छिनी की सुन्दरता का वर्णन। ,,
५ पृथ्वीराज का व्याहने के लिये यात्रा-करना। ५४५
६ पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन। ,,
७ पृथ्वीराज की बारात की शोभा वर्णन। ,,
८ पृथ्वीराज को आते हुए सुनकर सलष राज का धूमधाम से आगवानी करना। ५४६
९ दोनों राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन। ,,
१० सलषराज की प्रशंसा। ५४७
११ तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मगलाचार होना। ,,
१२ नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना। ,,
१३ सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर आरती उतारना। ५४८
१४ सलष की रानी का दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना। ,,
१५ स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवासे में आना। ५४८
१६ जनवासे की तय्यारी का वर्णन। ,,
१७ जनवासे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लौटना। ५५०
१८ इंच्छिनी का शृंगार आरंभ होना, शृंगार वर्णन। ,,
१९ ब्राह्मण लोग विवाह की विधि करने लगे। ५५२
२० पृथ्वीराज के रहने को जो बाग़ सजा गया था उसकी शोभा का वर्णन। ,,
२१ ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना। ५५४
२२ दूलह का मंडप में आना। ,,
२३ स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना। ,,
२४ स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना। ५५५
२५ दूलह दुलहिन का पट्टे पर बैठकर गँठ जोड़ा होकर गणेशपूजन करना। ,,
२६ नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण की पूजा कर शाखोच्चार होना। ,,
२७ ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना। ,,
२८ सलषराज का कन्यादान देकर विनय करना। ,,
२९ कन्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी। ,,
३० लग्न साधकर तब राजा का ज्योनार करना। ५५९
३१ ज्योनार के पकवानों का वर्णन। ,,
३२ पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बतलाता है। ५५७
३३ नव दुलहिन की शोभा का वर्णन। ,,
३४ प्रथम समागम का वर्णन। ५५८
३५ दुलहिन को लेकर दूलह का जनवासे में आना और हाथी घोड़े धन आदि लुटाना। ,,
३६ दहेज में सलष राज का बहुत कुछ देकर भी सकुंचित होना। ५५९
३७ पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया। ५६०

३८ बारात की विदाई का वर्णन। ५६०
३९ बारात का विदा होकर अजमेर की ओर चलना। ५६१
४० बारात के अजमेर पहुँचने पर मंगलाचार होना '
४१ शुकी के पूछने पर शुक का इंच्छिनी के नखशिख का वर्णन करना। ५६२
४२ शोभा कहते कहते रात बीत गई। ५६९

(१५) मुगलयुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५६७ से ५७२ तक)

१ इंच्छिनी को व्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुदगल का पूर्व वैर निकालने का विचार। ५६७
२ मेवात राज का विचारना कि रास्ते मे पृथ्वीराज को मारना चाहिए। "
३ यमुना की एक घाटी में मुगलराज का छिप रहना। "
४ पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना, कैमास का उल्लू की बोली सुनना। ५६८
५ कैमास का बाई और देवी को देखना। "
६ देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरु राम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चद से पूछिए। "
७ चद का पृथ्वीराज के वश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवातियों के साथ वैर का कारण कहना। ५६९
८ सबेरे उठ कर पृथ्वीराज का अपने सामन्तों के साथ शिकार को निकलना। ५७०
९ मुगलराज का आकर रास्ता रोकना। "
१० तुरंत पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानो बड़वानल समुद्र पीने के लिये धसा हुआ है। "
११ पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन। "
१२ युद्ध का वर्णन। ५७१
१३ मुगलराज को चारों ओर से घेर कर बांध लेना। ५७२
१४ मुगल को कैद करके इंच्छिनी को साथ लिये पृथ्वीराज आनन्द से घर आए।

(१६) पुंडीर दाहिमी विवाह प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५७३ से ५७५ तक)

१ राजा सलप की बेटी के व्याह के वर्ष दिन बड़े सुख के साथ बीते। ५७३
२ चद पुंडीर की कन्या का रुप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उस पर प्रेम होना। ,,
३ चद पुंडीर की कन्या का रुप वर्णन। ,,
४ पुंडीर का कन्या देना स्वीकार करना। ५७४
५ शुभ लग्न विचार कर चद पुडीर का कन्या विवाह देना। ,,
६ पुंडी दाहिनी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनन्द विलास का वर्णन। ,,
७ विवाह का वर्णन। ,,
८ विवाह का फेरा फिरना। ५७५
९ दहेज मे आठ सखी, ६३ दासी, बहुत से घोड़े हाथी देना। ,,
१० पृथ्वीराज और पुगडीरनी की जोडी की शोभा का वर्णन। ५७६

(१७) भूमिसुपन प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५७७ से ५८८ तक)

१ पृथ्वीराज का कुवरपन में शिकार खेलना। ५७७
२ हाथी, घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नही पड़ता। ,,
३ सिंह का क्रोधित होना। ,,
४ सिंह का महाक्रुद्ध होना। ५७८
५ सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना। ,,
६ पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया मे अपने सर्दारों के साथ बैठना। ५७९

७ संजमराय के बेटे का बीरता दिखलाना ५८०
८ पृथ्वीराज का प्रसन्न होना और उसकी पीठ ठोंकना। ५८१
९ सब लोगों का आगे बढ़ना, एक शकुन मिलना। ,,
१० शकुन को देखकर सब को आश्चर्य्य होना। ,,
११ एक सर्प को नाचते हुए देखना। ,,
१२ पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना। ५८२
१३ ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आप को बहुत धन मिलेगा। ,,
१४ पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है, और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारों ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है। ५८३
१५ देवी का इतने में उड़ कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना। ,,
१६ सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़ जाना। ,,
१७ इस शुभ शकुन का फल वर्णन। ५८४
१८ शिकार बद कर बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना। ,,
१९ डेरों की शोभा, बिछौने पलग आदि की तय्यारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठढा होना, भोजन की तय्यारी। ,,
२० सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना। ५८५
२१ सध्या होने पर सब लोग घर लौटे। ,,
२२ पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न मे देखना। ,,
२३ भूमि देवी के रुप सौन्दर्य्य का वर्णन। ,,
२४ पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यो आई हो। ,,
२५ भूमिदेवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब संकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिलै तो मै बहुत रस श्रवती हूं। ५८६
२६ राजा का विचार में मग्न होना। ५८७
२७ पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्टू-बन में अगनित धन है। ,,
२८ अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहा असख्य धन रक्खा है। ,,

(१८) दिल्लीदान प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५८९ से ६०१ तक)

१ अनगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना। ५८६
२ पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मै बृढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हू, मेरा जो कुछ है सब तुम्हे समर्पण करता हू। ,,
३ पत्र पढ़ कर सब का विचार करना कि क्या करना चाहिए। ,,
४ कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुअरि का व्याह रावल समरसिह के साथ करना चाहिए। ,,
५ राजा सोमेश्वर सब सामतों को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुर्डार राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए। ५९०
६ चद बरदाई का मत पूछना। ,,
७ चद ने ध्यान कर देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा। ,,
८ व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा। ,,
९ दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (!) को वैराग्य क्यों हुआ। ५९१

१० दूत का अनंगपाल की प्रशंसा। ५९१
११ अनंगपाल का प्रताप कथन। ,,
१२ अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन। ,,
१३ अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं। ,,
१४ स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना। ५९२
१५ दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुना जी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैर कर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया। ,,
१६ अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुलाकर स्वप्न का प्रश्न करना। ,,
१७ व्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो। ५९३
१८ इस भविष्य बानी को सोच कर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दौहित्र चौहान को देना चाहिए। ५९३
१९ अनंगपाल का मन में यही निश्चय कर-लेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बन बास करना चाहिए। ,,
२० अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना। ,,
२१ मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए। ५९४
२२ मंत्रियों की बात न मान कर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना। ,,
२३ कविचंद का मत सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना। ५९५
२४ कैमास का भी यही मत होना। ,,
२५ दूतने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना। ,,
२६ अनंगपाल ने दौहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया। ,,
२७ पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन। ५९६
२८ शुभ लग्न दिखाकर बड़ी तय्यारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठा कर अपने हाथ से राज्य तिलक करना। ५९७
२९ दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वी-राज को जुहार करना। ५९९
३० बड़ी तय्यारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना। ,,
३१ पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना। ६००
३२ दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थ बास के लिय जाना। ,,
३३ यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना। ,,
३४ पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन। ६०१
३५ आशीर्वाद। ,,

(१९) माधोभाट कथा ।

(पृष्ठ ६०३ से ६३० तक)

१ पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना। ६०३
२ शहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन। ,,
३ माधोभाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना। ,,
४ पृथ्वीराज के इंद्र के समान राज्य करने का वर्णन। ६०५
५ माधोभाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना। ,,

६ धमाइन कायस्थ का माधोभाट को सब भेद देना। ६०४
७ पृथ्वीराज का माधोभाट को बहुत कुछ इनाम देना। ६०५
८ बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधोभाट को दिल्ली में रखना। ,,
९ बहुत सा दान (जितना कभीं नहीं पाया था) लेकर माधोभाट का गज़नी लौट आना। ,,
१० माधोभाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना। ६०६
११ अनंगपाल के बनबास का वर्णन। ,,
१२ यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना। ,,
१३ शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज की शोभा वर्णन। ,,
१४ शहाबुद्दीन का तातारख़ां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना। ६०७
१५ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना। ६०८
१६ तातारख़ां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करनी चाहिए। ,,
१७ तातारख़ां की बात का सब लोगों का सकारना, रुस्तमख़ां का मंत्र देना कि जब तक सेना तय्यार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवे। ,,
१८ माधोभाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना। ६१०
१९ दूतों के लक्षण का वर्णन। ,,
२० दूत भेज कर अपनी सेना की तय्यारी करना। ६११
२१ शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना। ६११
२२ दूत को दिल्ली पहुंच कर अनंगपाल के बन वास और पृथ्वीराज के न्याय-राज का समाचार विदित होना। ६१३
२३ धमाइन कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत को बतलाना। ,,
२४ धमाइन का सब समाचार लिखकर भेजना। ,,
२५ सब समाचार लेकर दूत का लौटना। ,,
२६ दूत ने छः महीने रह कर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाई। ,,
२७ शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावों की तय्यारी का वर्णन। ६१४
२८ दूत का ब्योरे वार दिल्ली का समाचार कहना। ६१५
२९ संवत ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना। ६१६
३० दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासानख़ां आदि से मत पूछना। ,,
३१ तत्तारख़ां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना। ६१७
३२ तत्तारख़ां का मत मानकर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना। ,,
३३ शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना। ६१८
३४ शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना। ६१९
३५ पृथ्वीराज का यह समाचार सुनकर अपने सर्दारों से परामर्श करना। ,,
३६ कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़ कर रोकै। ,,
३७ इस मत को सबका मानना। ६२०
३८ पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना। ,,
३९ पृथ्वीराज की सेना का वर्णन। ६२१

४० युद्धारंभ होना। ,,
४१ युद्ध वर्णन। ,,
४२ घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना। ६२४
४३ फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना। ,,
४४ सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना। ,,
४५ तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय। ६२५
४६ पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना। ६२७
४७ चामंडराय का सुलतान को पकड़ कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना। ६२६
४८ सुतलान को एक महीना दिल्ली में रख कर छोड़ देना। ६३०
४६ इस विजय पर दिल्ली में आनद मनाया जाना, बहुत कुछ दान दिया जाना। ,,

(२०) पद्मावती समय।

(पृष्ठ ६३१ से ६४१ तक)

१ पूर्व दिशा में समुद्र शिपरगढ़ के यादव राजा विजयपाल का वर्णन। ६३१
२ विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन। ,,
३ कुंवर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रुप गुण आदि का वर्णन्। ,,
४ पद्मावती एक दिन खेलने समय एक सुग्गे को देखकर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिंजरे में रक्खा। ६३२
५ पद्मावती कीर के प्रेम मे खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती। ,,
६ पद्मावती के रुप को देखकर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है। ,,
७ पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है। ६३३
८ सुग्गे का उत्तर देना कि मै दिल्ली का हू वहां का राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है। ,,
६ पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना। ,,
१० पृथ्वीराज का रूप, गुण सुनकर पद्मावती का मोहित हो जाना। ६३४
११ कुंवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना। ६३४
१२ राजा का बर ढूढ़ने के लिये पुरोहित को देश देशातर भेजना। ,,
१३ पुरोहित का कमाऊ के राजा कुमोदमनि के यहां पहुचना। ,,
१४ पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कुमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया। ,,
१५ कुमोदमनि का बड़ी धूम से व्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित होकर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना। ,,
१६ सुग्गे से संदेसा कहलाना और चिट्ठी देना कि रुक्मिणी की तरह मेरा उद्धार कीजिए। ६३५
१७ शिवपूजन के समय हरन करने का सकेत लिखना। ,,
१८ सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुचना। ,,
१६ सुग्गे का पृथ्वीराज को पत्र देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना। ६३६
२० चामंडराय को दिल्ली में रखकर और सर्दारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना। ,,
२१ जिस दिन समुद्र शिषरगढ़ में बारात पहुंची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुंच

गया और उसी दिन गजनी में शहाबुद्दीन को भी समाचार मिला। ६३६
२२ यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी। ,,
२३ बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गौर आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना। ६३७
२४ सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिवजी की पूजा को जाना, वहां पृथ्वीराज का उसे उठा कर अपने पीछे घोड़े पर बैठा कर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुंचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना। ,,
२५ पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना। ,,
२६ पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना। ,,
२७ अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना। ,,
२८ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना। ६३६
२९ पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना। ,,
३० दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई। ,,
३१ युद्ध का वर्णन। ,,
३२ पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना। ६४०
३३ पृथ्वीराज को जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना। ६४०
३४ पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान मे पृथ्वीराज का पहुचना। ,,
३५ लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना। ,,
३६ पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के साथ अपने महल में आना। ६४१
३७ महल में पहुचने पर आनन्द मनाया जाना। ,,

(२१) पृथा व्याह वर्णन।

(पृष्ठ ६४३ से ६७० तक)

१ चित्तौर के रावल समर के साथ सोसेश्वर की बेटी के विवाह की सूचना। ६४३
२ सोमेश्वर का अपनी कन्या समरसिंह को देने का विचार कर के पत्र भेजना। ,,
३ समरसिंह के गुणों का वर्णन। ,,
४ पत्र लेकर गुरु राम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना। ६४४
५ पृथाकुँवरि के रुप का वर्णन। ,,
६ पृथाकुँवरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन। ,,
७ लग्न का शोधा जाना। ६४५
८ कविचंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहा तक बनेगा उठा न रक्खूगा। ,,
९ स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन। ,,
१० पृथाकुँवरि के रुप तथा नव यौवना वस्था का वर्णन। ,,
११ रावल समरसिंह का गुण वर्णन। ६४६
१२ श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक

चढ़ाने को भेजना और इस सम्बन्ध से अपने को बड़ भागी मानना। ६४७
१३ पुरोहित का चित्तौर में पहुंच कर बसंत पचमी को तिलक देना। ,,
१४ पृथ्वीराज के विवाह की तय्यारी करने का बर्णन। ,,
१५ पृथ्वीराज ने ऐसी तय्यारी की मानो इन्द्रपुरी है। ६४८
१६ पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तय्यारी होना। ६४६
१७ हाथी घोड़े सेना आदि की तय्यारी का वर्णन। ,,
१८ पृथ्वीराज के सामंतो की तय्यारी का वर्णन। ६५०
१६ रावल समरसिंह का व्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन। ,,
२० नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का बर्णन। ६५१
२१ समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना। ,,
२२ शृंगार का वर्णन। ६५२
२३ पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूम धाम से रावल समरसिंह का मडप में आना। ६५३
२४ विवाह मंडप की शोभा का वर्णन। ,,
२५ कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मंडप में इंद्रादिक देवता जय जय कर रहे है और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है। ६५४
२६ सामंतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन। ,,
२७ पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा। ६५५
२८ पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन। ६५६
२६ विवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दान दहेज देना। "
३० व्याह के पीछे दर्बार में आना। ६६०
३१ पृथ्वीराज की प्रशंसा "
३२ रावल का रनिवास में जाना। "
३३ तिलक होना और भांवरी फिरना। ६६१
३४ ऋषी केश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया तब रावल फेरी फिरे। "
३५ प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना। ६६२
३६ रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन। "
३७ विवाह की शोभा का वर्णन। ६६३
३८ पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन। ६६४
३६ रावल का बारह दिन तक बारह सामन्तों ने अपने अपने यहां नेवता किया। ६६६
४० बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तय्यारी करना। "
४१ बारात लौटने की शोभा का वर्णन ,,
४२ अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना। ६६७
४३ व्यास जग जोति की भविष्यद्वाणी। ६६८
४४ सभों का अपने अपने घर लौटना। ६६६
४५ शाहगोरी का रावल को दहेज देना। "
४६ पृथाव्याह की फल स्तुति। ६७०

(२२) होली कथा प्रस्ताव

(पृष्ठ ६७१ से ६७३ तक)

१ पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़ कर अबोल बकते हैं इसका वृतान्त कहो। ६७१
२ चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढुंढिका थी। ,,

३ ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योही सेवा करते बीता। ६७१

४ तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मै प्रसन्न हूं वर मांग। ६७२

५ ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं। ,,

६ गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सकै। ,,

७ शिव जी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकै, गदहे पर चढ़ें तरह तरह के स्वांग बनावें उनको छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करै। ,,

८ ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते बजाते आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया। ६७३

९ इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीन्ना आया घर घर आनन्द हो गया। ,,

१० जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते है। ,,

(२३) दीपमालिका कथा।

(पृष्ठ ६७९ मे ६७९ तक)

१ पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो। ६७५

२ सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे। ,,

३ उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था उसकी स्त्री छल रहित थी। ६७५

४ स्त्री ने पति से कहा कि धन हीन दशा में जीनां और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो। ,,

५ सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञानध्यान की ओर चित्त दिया। ६७६

६ सत्यश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है। ,,

७ तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए। ,,

८ सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है। ,,

९ ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है। ६७७

१० ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग। ,,

११ ब्राह्मण ने दीपदान वर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जलै। ,,

१२ राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गांव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ। ,,

१३ ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल सवा सेर रुई मंगाई। ,,

१४ कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए। ६७८
१५ राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले। "
१६ लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देख कर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए। ६७८
१७ लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी। "
१८ तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मै तुझे न जाने दूंगा। "
१९ दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा। ६७९
२० उसी घड़ी से उसके यहां आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली। "
२१ चारो दिशा में दीपमालिका का मान्य है। यह कथा कविचन्द ने कह सुनाई। ६७९

(२४) धन कथा।

(पृष्ठ ६८० से ७५८ तक)
१ खट्टू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना। ६८१
२ पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना। "
३ पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इस के अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो। "
४ पुतली के सिर का लेख, "सिर केटव से धन मिले सिर रहने मे धन जाय"। ६८२
५ पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना। "
६ पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तूं निर्वंश मरेगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है। ६८३
७ कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समर सिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचंद, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर है। "
८ पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरो पाव देना और उसकी बड़ाई करना। "
९ पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समर सिंह के पास भेजना। ६८४
१० रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना। "
११ चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर है। "
१२ रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशसा। "
१३ पत्र पढ़ कर समरसिंह ने हँस कर चंद पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैवगति है। ६८५
१४ चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा

रखते हैं सो चलिए। ६८५
१५ शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इसलिये सहायता में आपको चलना चाहिए। ,,
१६ रावल समरसिंह का सेना आदि सज कर चलना, सेना की तय्यारी का वर्णन। ६८६
१७ परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले। ६८७
१८ धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुप चाप दूत भेज कर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चित्तौरपति धन निकालने नागौर आए हैं ,,
१९ समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना। ,,
२० पृथ्वीराज का आध कोस आगे बढ़ कर अगवानी करना। ,,
२१ समरसिंह का अनगपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रह कर सब सामन्तों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए। ६८८
२२ कैसान ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने के रास्ते पर दिल्लिपति रोकै, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समर सिंह रोकैं और तब धन निकाल लिया जाय। ,,
२३ रावल समर सिंह का इस मत को पसन्द करना और मन्त्री की प्रशंसा करना। ,,
२४ नागौर के पास सब का पहुंचना सुलतान के रुख पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना। ६८९
२५ दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना। ,,
२६ दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए। ६८९
२७ नागौर के समाचार पा कर सुल्तान का उमरा खां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना। ,,
२८ शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन। ६९०
२९ पृथ्वीराज को बांई ओर से बचाता सुलतान धूम धाम से चला, शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धँसाता रात दिन चल कर नागौर से आध कोस पर जा पहुँचा। ,,
३० यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मन्त्री कैमास को रख कर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना ,,
३१ जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया। ६९१
३२ सबेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा उस की सेना के चलने से धूल उड़ने लगी। ,,
३३ धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई दोनों दलो का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तय्यार हो जाना। ,,
३४ लड़ाई का आरम्भ होना। ,,
३५ युद्ध का वर्णन। ६९२
३६ रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन। ६९४
३७ पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना। ६९६
३८ सूर्य्यास्त होना। ६९७
३९ रात होना। सेना का डेरे में आना। ,,
४० चामंडराय आदि सर्दारों का रात भर जाग कर चौकसी करना। ,,
४१ शहाबुद्दीन के सर्दारों का रात को चौकी देना। ६९८
४२ पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन ,,
४३ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन। ,,

४४ सुलतान के सर्दारों के क्रम से सज कर खड़े होने का वर्णन। ६९६

४५ घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना। ,,

४६ प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन। ,,

४७ रावल समरसिंह का सब सर्दारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है औरें डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण बीरता का उत्तर देना। ७००

४८ रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़ कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा बीर है। ,,

४९ दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना। ७०१

५० पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना। ,,

५१ सुलतान का रणसज्या से सज कर सवार होना। ,,

५२ हिन्दुओं के तेज के आगे भीरों का धीर छूटना। ,,

५३ एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर रावल समरसिंह का शत्रुओं पर टूटना। ,,

५४ युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खा का मारा जाना। ७०२

५५ पांच घड़ी दिन चढ़े बीरता के साथ लड़ कर अरब खां का मारा जाना। ,,

५६ खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना। ,,

५७ युद्ध का वर्णन। ७०३

५८ ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना। रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना। ,,

५९ युद्ध वर्णन। ७०४

६० खुरसान खां का घोर युद्ध करना। ,,

६१ समरसिंह की बीरता का वर्णन। ,,

६२ बड़े बड़े बीरों का मारा जाना। ७०५

६३ गज्जर खां और तातार खां दोनों का मारा जाना। ७०५

६४ याकूब खां का घोर युद्ध वर्णन। ,,

६५ जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत खां और तातार खां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया। ७०६

६६ घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना। ,,

६७ रावल की वीरता का वर्णन। ,,

६८ शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना। ,,

६९ रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना। ७०७

७० दोनों सेनाओं का लथ्थ पथ्थ होकर घोर युद्ध करना। ,,

७१ रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन। ,,

७२ युद्ध की शोभा का वर्णन। ,,

७३ रावल का शत्रु सेना को इतना काट कर गिराना कि सुलतान और उस के सेनानियों का घबड़ा जाना। ७०९

७४ पृथ्वीराज का अपनी कमान सभालकर शत्रुओं का नाश करना। ,,

७५ सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिस को भागना हो सो भाग जाओ मै तो यहीं प्राण दूँगा। ,,

७६ सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना। ७१०

७७ सुलतान का तातार खां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते। ,,

७८ शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुँह न मोड़े। ,,

७९ सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना। ७११

८० पांच खां और पांच खवासों का घोर युद्ध मचाना। ७११
८१ युद्ध का वर्णन। ७१२
८२ कन्ह का खुरासान खां को मारना। ७१३
८३ खुरासान खां के भाई के गिरते हिन्दूओं की सेना का फिर तेज होना। ७१४
८४ पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावै इस को पकड़ो। सब सर्दारों का टूट पड़ना। ,,
८५ घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध। ७१५
८६ शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना। ,,
८७ दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन। ,,
८८ घोर युद्ध वर्णन। शाह की सेना का भागना। ,,
८९ शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना। ७१६
९० सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन। ,,
९१ रविबार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना। ७१८
९२ पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जय कार होना। ,,
९३ इस विजय पर चारों ओर आनन्दध्वनि होना। ,,
९४ राज गुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बार दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदल कर आइएगा। ,,
९५ राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हौ इसका कारण कहो। ७१९
९६ उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चल कर करना चाहिए। ,,
९७ यहां रात्र दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामन्तों को छोड़ कर शुभ काम कीजिए। ,,
९८ वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए। ७१९
९९ पृथ्वीराज का दाहिम का मत मान कर दिल्ली चलना स्वीकार करना। ,,
१०० फागुन सुदी १३ को दिल्ली यात्रा करना। ,,
१०१ रावल के साथ दाहिम आदि सर्दारों का और सेना को छोड़ कर और कुछ सामन्तों और सेना को ले कर दिल्ली यात्रा करना। २७०
१०२ राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले। ,,
१०३ शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले। ,,
१०४ होलिका की पूजा बिधि से करके शाह को लिये घर की ओर चले। ,,
१०५ कुमार का पैदल आध कोस आगे बढ़ कर मिलना। ,,
१०६ राजा का कुमार को सवार होने की आज्ञा देना। २७१
१०७ चैत बदी सप्तमी को महलों में पहुंचे। ,,
१०८ महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया। ,,
१०९ स्त्रियां अपने अपने घर गईं। राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए। ,,
११० शहाबुद्दीन की डोली मँगा कर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय। ,,
१११ शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना। ,,
११२ एक बीर ने दौड़ कर यह समाचार तातारखां को दिया। ७२२
११३ तातारखां ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा है अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए। ,,

११४ खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना। ७२२

११५ खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा। ,,

११६ खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना। ,,

११७ लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना। ७२३

११८ दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया। ,,

११९ नगर में घुसते हुए फूल की डाली लिए हुऐ मालिन मिली। यह शुभ शकुन हुआ। ,,

१२० खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ,,

१२१ ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातारखां का भेजा वकील आया है। राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी, लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया। ,,

१२२ सभा में बैठे सामन्तों का वर्णन, राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम करके बैठना। ७२४

१२३ लोरक ने तीन सलाम करके तातारखां की अर्जी राजा को दी। ,,

१२४ मध्धुशाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो। ,,

१२५ तातारखां की अर्ज़ी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना। ,,

१२६ राजा ने अर्ज़ी सुन कर हँस दिया और खत्री को बिदा किया। ,,

१२७ दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया। ७२५

१२८ लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना। पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा? ,,

१२९ लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था। पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निज़ाम की टहल करने लगा। ७२५

१३० शेख निज़ामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशीर्बाद दिया कि तुम्हें ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा। ७२६

१३१ शाह घर आया चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का ऐसा प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में एक बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोंका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बिठावें। एक शेख ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया। ,,

१३२ उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया। ७२७

१३३ ज्योतिषी को बुलाकर जन्म पत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़ कर प्रतापी होगा। इसकी जाति गोरी है। यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा। ,,

१३४ लोरक ने शाह की पूर्व कथा कह सुनाई। ,,

१३५ पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है। उसको और ३० हज़ार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटै। ,,

१३६ खत्री ने कहा कि जो आप मागेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए। ७२८

१३७ पत्र लिख कर दूत को दिया कि जो इकार हुआ है वह भेजो। ,,

१३८ पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज

दिए जो दस दिन में रात दिन चल कर पहुंचे। ,,
१३६ दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना। ,,
१४० सुलतान का ग़ज़नी पहुंच कर अपने उमराओं से मिलना। ,,
१४१ शाह के महल मे आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना। ,,
१४२ पृथ्वीराज का शृङ्गार हार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन। ७२६
१४३ हाथी के रूप और गुणों का वर्णन। ,,
१४४ सब सामन्तों को साथ ले एक दिन शिकार के लिये राजा का जाना। वहां कन्ह चौहान का आना। ,,
१४५ एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना। ,,
१४६ राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावे। ७२०
१४७ चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना। ,
१४८ सूअर का मरना सर्दारों का राजा की बड़ाई करना। ,,
१४९ बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया। ,,
१५० राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलेंगे। ,,
१५१ एक नदी के किनारे वृषभ को मार कर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हाको। ,,
१५२ राजा का शृंगारहार गज पर चढ़ कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हँकारने की आज्ञा देना। ७३१
१५३ कोलाहल सुन सिंह का क्रोध करके निकलना। राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना। कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना। सब का प्रशंसा करना। ७३१
१५४ राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे। ७३२
१५५ सब सर्दारों में शिकार बँटवा दिया। ,,
१५६ राजा का दिल्ली लौटना, कविचन्द का आकर फूलों की वर्षा करना। ,,
१५७ राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मूहूर्त पूछना। ७३३
१५८ राज गुरु का बैशाष सुदी तीज को मूहूर्त निकालना। ,,
१५९ पृथ्वीराज का मूहूर्त पर धूम धाम से यात्रा करना। ,,
१६० एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना। ,,
१६१ रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना। ,,
१६२ रावल और सामन्तों तथा सेना का आगे बढ़ कर राजा से मिलना। ,,
१६३ सब सर्दारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना। ७३४
१६४ रावल से मिल कर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना। ,,
१६५ शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तर समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना। ,,
१६६ राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टो का प्रश्न करना। ७३५
१६७ धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुला कर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मै चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का बर है यह निश्च जानिए। इस धन के निकालने के समय देव

प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे। ७३५

१६८ पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले वहां एक पत्थर का शिला लेख कमास को दिखलाई दिया। ,,

१६९ उस शिला लेख को देख कर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी। ७३६

१७० कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा। ,,

१७१ उसे पढ़ कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया। ,,

१७२ दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे। ,,

१७३ चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जग जोति कह गए हैं किए पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर कर के नागौर बन के धन को पावेंगे। ७३७

१७४ राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिमे पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हू। ,,

१७५ चन्द को बुलाया, उस ने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है। ,,

१७६ रात को सब सामन्तों को रख कर रखवाली करो। ,,

१७७ कुछ सर्दार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया वहां एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उन को कैमास ने पढ़ा। ,,

१७८ उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देख कर तुम न हँसो तो पाषाण को देखो?। ७३८

१७९ सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे। ,,

१८० शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)। ,,

१८१ उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे। ७३८

१८२ विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया। ,,

१८३ चन्द्र ने मन्त्र से कील कर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे। ,,

१८४ चन्द्र की बात मान कर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए। ७३९

१८५ राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकालो। ,,

१८६ शिला काट कर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने मे पृथ्वी कांपने लगी। ,,

१८७ शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊंचा खोदा तब खजाने का मुँह खुल गया। ,,

१८८ बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला। ७४०

१८९ उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया। ,,

१९० जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले। ७४१

१९१ देवी की स्तुति। ,,

१९२ देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया। ,,

१९३ बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारागया। ७४२

१९४ चन्द ने स्तुति कर के इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी। ,,

१९५ देवी ने कहा जी लगा कर तू उसकी पूर्व कथा सुन। ,,

१९६ सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है। ,,

१९७ रघुबंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उस की कथा कहती हूं। ७४२
१९८ वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था। ७४३
१९९ यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा। „
२०० उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा। „
२०१ इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई। ७४४
२०२ तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे। „
२०३ इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोद कर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया। „
२०४ देव ने चन्द से कहा कि मेरे पिता रघुबंशी धर्माधिराज थे मैं उन का बेटा आनन्द चन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से ससार को जीता इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पज। „
२०५ बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैं ने ही यहां रक्खा था। दैव गति से इसी को लेकर मेरी यह गति हुई। ७४५
२०६ बीर का अपने पिता रघुबंश राज की प्रशंसा करना। „
२०७ चारों युगों के धर्म का वर्णन। „
२०८ बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने साम्हने धन निकालने को कहना। ७४६
२०९ चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे। „
२१० चन्द की सुन्दर बानी सुन कर बीर ने प्रसन्न हो कर धन निकालने की आज्ञा दी। ७४६
२११ बीर की बात सुन कर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो। „
२१२ चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करें। „
२१३ बीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पण्डित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो। ७४७
२१४ दानव यह कह कर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो। „
२१५ राजा ने रावल को बुला कर ज्योतिषी पण्डित को बुलाया पण्डित ने होम की सामग्री मँगा कर वेदी आदि बनवा कर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया। „
२१६ छः प्रधानों को पास रख कर राजा ने पत्थर खोद कर हटवाया। ७४८
२१७ वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उस में एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली उस का नाच देख कर आश्चर्य्य होने लगा। „
२१८ पुतली को देख कर गुरु राम का आश्चर्य्य करना। ७४९
२१९ चन्द का यह कहना कि यह माया-रूपी है। „
२२० रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किस का अवतार है?। „
२२१ चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण कर के पुतली का भेद पूछा। „

२२२ देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है। ७४६
२२३ यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बेखटके भोग सकते हो। यह देव बानी सुन कर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा। ७५०
२२४ इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कह कर देव अन्तर्ध्यान हो गया। राजा फिर धन निकालने लगे। ,,
२२५ कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य्य होना और तब सुरंग को देखना। ,,
२२६ पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना। ,,
२२७ चन्द और रावल का मूर्छित हो कर गिरना। कुछ देर में सँभल कर उठना। ७५१
२२८ उठने पर राजगुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है। ,,
२२९ धन के कलश आदि का वर्णन। रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना। ,,
२३० एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए। ७५२
२३१ पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का बर्णन। ,,
२३२ वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देबि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया। ,,
२३३ राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया। ७५३
२३४ देवी पृथ्वीराज को आशीर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई। ,,
२३५ पृथ्वीराज ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगा कर रावल के सामने रक्खा। रावल ने कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुँवरि ससिवृता की सगाई का विचार। ७५३
२३६ रावल समरसिंह का धन लेने से इन्कार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो। ,,
२३७ पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन लेने को कहा। ७५४
२३८ पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना। ,,
२३९ प्रेमाश्रु भर कर रावल ने बिदा मागी, पृथ्वीराज उठ कर गले से गले मिले। ,,
२४० पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा इसी तरह स्नेह बनाए रहिएगा। ,,
२४१ रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं हम को तुम से बढ़ कर कोई प्रिय नहीं है। ७५५
२४२ रावल समरसिंह गद्गद हो बिदा हुए, और अपने देश की ओर चले। ,,
२४३ रावल को बिदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी घोड़े आदि भेट भेजा। ,,
२४४ रावल ने चन्द को मोती की माला देकर बिदा किया और आप चित्तौर को कूच किया। ,,
२४५ कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना। ,,
२४६ कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया राजा पट्टू बन में शिकार खेलता चला। ७५६
२४७ पृथ्वीराज ने बहुत से धन को बराबर

भाग कर के सब सामंतों को बाँट दिया, सर्दारों की बाँट का वर्णन। ७५६
२४८ बड़ी धूम धाम से दिल्ली के पास पहुंचे राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया। बड़ा आनन्द उत्सव हुआ। ,,
२४९ जेठ सुदी १३ रविवार को राजा दिल्ली आए। ७५७
२५० महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया। ,,
२५१ दाहिमा आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं ,,
२५२ रात को राजा पुखडीरी के महल में रहे, सवेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा। ,,
२५३ बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सर्दारों में बाँट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा। ,,

(२५) शशिव्रता वर्णन प्रस्ताव।

(पृष्ठ ७५९ से ८६४ तक)

१ शशिव्रता की आदि कथा वर्णन की सूचना। ७५९
२ ग्रीष्म में पृथ्वीराज का विहार करना। ,,
३ ग्रीष्म बीत कर वर्षा का आरम्भ होना। ,,
४ राजा सभा में बैठे थे कि एक नट आया, राजा ने आदर कर उसका परिचय पूछा। ,,
५ नट को गुण दिखलाने की आज्ञा देना। ७६०
६ नट का कहना कि मैं नाटक आदि सब गुण जानता हूं आप देखिए सब दिखाता हूं। ,,
७ देवी की बन्दना कर के नृत्य आरम्भ करना। ,,
८ नट का नाच के आठ भेद बतलाना। ,,
९ आठों भेदों के नाम। ,,
१० नृत्य देखकर बैठने का हुक्म देना। ,,
११ राजा का नट से उसके निवासस्थान का नाम पूछना। ७६१
१२ नट का कहना कि देवगिरि में मैं रहता हूं वहां का राजा सोमवंशी यादव बड़ा प्रतापी है। राजा की बड़ाई। ,,
१३ मैं उनका नट हूं आपका नाम सुन यहां आया। ,,
१४ राजा का पूछना कि उनकी कन्या का विवाह किसके साथ निश्चय हुआ है। ,,
१५ नट का कहना कि उज्जैन के कमधज्ज राजा के यहां सगाई ठहरी है। ,,
१६ यादव राजा ने सगाई के लिये ब्राह्मण उज्जैन भेजा है। लड़की को यह सम्बन्ध नहीं भाया। ७६२
१७ नट का शशिव्रता के रूप की बड़ाई करना। ,,
१८ सभा उठने पर राजा का नट को एकान्त में बुलाना। ,,
१९ नट का शशिव्रता का रूप वर्णन करना। ,,
२० उसका रूप सुन राजा का आसक्त हो जाना और नट से पूछना कि इसकी सगाई मुझ से कैसे हो। ७६३
२१ नट का कहना कि इसका उत्तर पीछे दूंगा। मुझ से इसमें जो हो सकेगा उठा न रक्खूंगा। ,,
२२ राजा का नट को इनाम देकर बिदा करना, नट का कुरु क्षेत्र की ओर जाना। ,,
२३ ग्रीष्म बीत कर वर्षा का आगमन हुआ, राजा का मन शशिव्रता की ओर लगा रहा। ,,
२४ राजा का शिव जी की पूजा करना, शिव जी का प्रसन्न होकर आधी रात के समय दर्शन देना। ७६३
२५ शिव जी का मनोरथ सिद्ध होने का

बर देना। ७६३
२६ राजा का स्वप्न में बर पाकर प्रसन्न होना और किसी तरह वर्षा ऋतु काटना। ,,
२७ वर्षा की शोभा का वर्णन—राजा का शशिव्रता के विरह में व्याकुल होना। ७६४
२८ वर्षा वर्णन—राजा का विरह वर्णन। ,,
२६ वर्षा बीत कर शरद का आगमन। ७६५
३० शरदागमन—शरद वर्णन। ,,
३१ राजा का अपने सरदारों के साथ शिकार के लिये तय्यारी करना। ,,
३२ राजा का शिकार के लिये तय्यार होना। ७६६
३३ माघ बदी मङ्गलवार को शिकार के लिये निकलना। ,,
३४ राजा की धूम धाम का वर्णन। ,,
३५ बन में जानवरों का वर्णन। ,,
३६ शिकार का वर्णन। ,,
३७ शिकार पर जानवरों का छोड़ा जाना। ७६७
३८ भालू, सूअर आदि का आगे होकर निकलना। ,,
३६ राजा के बन में घुसने पर कोलाहल होने से शूकरों का भागना। ,,
४० सब सर्दारों का भी वहा पहुंचना, एक बधिक का आकर शूकर का पता देकर राजा से पैदल चलने के लिये निवेदन करना। ७६८
४१ राजा का तुरंत घोड़ा छोड़ तुबक कन्धे पर रख बाराह की खोज में चलना। ,,
४२ सूअर को राजा ने मार कर बधिक को इनाम देकर सुन्दर बारी में विश्राम किया, समय होने पर भोजन की तय्यारी होना। ,,
४३ चारों ओर राजा के शिकार की बड़ाई होना। ,,
४४ राजा का अकेले बधिक के साथ शिकार के पीछे चलना और सरदारों का राजा के पीछे पीछे चलना। ७६६
४५ शुकी का शुक से पूछना कि दिल्ली के राजा के गन्धर्व विवाह का समाचार कहो शुक ने कहा कि जादव राजा ने नारियल देकर ब्राह्मण को भेजा। ,,
४६ ब्राह्मण का जयचन्द के यहां जाकर उस के भतीजे वीरचन्द से शशिव्रता की सगाई का संदेशा देना। एक गन्धर्व यह सुनता था वह तुरन्त देवगिरि की ओर चला। ७७०
४७ गन्धर्व का शशिव्रता के पास आना, वह बन में विचर रही थी। ,,
४८ सोने के हंस का रूप धर कर गन्धर्व का दिखलाई देना, शशिव्रता का उस को पकड़ना और पूछना कि तुम कौन हो हंस का कहना कि मै गन्धर्व हूं देवराज के काम को आया हूं। ,,
४६ शशिव्रता का पूछना कि हम पहिले कौन थीं और हमारा पति कौन होगा हस का कहना कि तू चित्ररेखा नाम की अप्सरा थी, अपने रूप और गान के गर्व में इन्द्र से लड़ गई इससे दक्षिण के राजा की बेटी हुई। ७७१
५० हंस ने कहा कि षड्ग अर्थात्, कान्य कुब्ज नरेश के भतीजे वीरेचन्द्र के साथ तुम्हारे मा बाप ने सगाई की है पर वह तुम्हारे योग्य बर नहीं है। ,,
५१ उस की आयु एकही वर्ष है, इसलिये दया करके राजा इन्द्र ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। ,,
५२ शशिव्रता ने कहा कि तुमने मा बाप के समान स्नेह किया सो तुम जिस से कहो उसी से मैं व्याह करूं। ,,
५३ हंस का कहना कि दिल्लीपति चौहान तुम्हारे योग्य बर है। ,,

५४ उस के सौ सर्दार हैं, उस ने गजनीपति को पकड़ कर दण्ड लेकर छोड़ दिया। ७७२
५५ महाबली चालुक्य भीमदेव को जीता है यह सुन शशिव्रता का प्रसन्न होकर कहना कि तुम जाओ और उन्हें लाओ जो वह न आवेंगे तो मैं शरीर छोड़ दूंगी। ,,
५६ हंस वहां से उड़ कर दिल्ली आया। ,,
५७ बन में शिकार के समय हस का आना उसे देख कर आश्चर्य में आकर पृथ्वीराज का पकड़ लेना। ,,
५८ सन्ध्या को हंस रूपी दूत का सब को हटा कर राजा को पत्र देना। ७७३
५९ दूत का कहना कि एकान्त में कहने की बात है। इतना कह कर चुप हो जाना। ,,
६० हंस का कहना कि शशिव्रता का गुण कहने को शारदा भी समर्थ नहीं है। ,,
६१ चन्द्र और सूर्य के बीच में शशिव्रता ऐसी सुशोभित है मानो शृङ्गार का सुमेर हो। ,,
६२ शशिव्रता के रूप का वर्णन। ,,
६३ पृथ्वीराज का शशिव्रता का रूप सुन कर उस के मिलने की चिन्ता में रात दिन लगे रहना। सबेरे उठतेही राजा का दूत से पूछना। ७७४
६४ हंस का राजा देवगिरि का जैचन्द के यहां सगाई भेजने और शशिव्रता के पण ठानने का वृतान्त कहना। ७७५
६५ शशिव्रता की विरह जल्पना का वर्णन। ,,
६६ शशिव्रता का चित्ररेखा के अवतार होने तथा पृथ्वीराज के पाने के लिये रात दिन शिव जी की पूजा करने का वर्णन ७७६
६७ वह आप अब मिल गए देर न कीजिए चलिए। ,,
६८ मैं महादेव जी की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूं। ,,
६९ शशिव्रता के रूप गुण का वर्णन। ७७९
७० पृथ्वीराज का पूछना कि तुम सब शास्त्र जानते हो सो चार प्रकार की स्त्रियों के गुणादि का वर्णन करो। ७७७
७१ हंस कहता है कि स्त्रियों की बहुत जाति हैं पर शशिव्रता पद्मिनी है। ,,
७२ राजा का उत्तम स्त्रियों का लक्षण पूछना। ,,
७३ हंस का पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी और संखिनी इन चारों का नाम गिनाना। ,,
७४ राजा का चारों के लक्षण पूछना। ,,
७५ हंस का लक्षण वर्णन करना। ७७८
७६ स्त्रियों के उत्तम गुणों का वर्णन। ,,
७७ पद्मिनी का वर्णन। ,,
७८ हस्तिनी का वर्णन। ,,
७९ चित्रनी का वर्णन। ७७९
८० संखिनी का वर्णन। ,,
८१ शशिव्रता के रूप तथा नख शिख शोभा का वर्णन। ,,
८२ राजा का पूछना कि अप्सरा का अवतार क्यों हुआ। ७८१
८३ हंस का चित्ररेण कहना। ,,
८४ इन्द्र और चित्ररेपा के झगड़े तथा शाप का वर्णन। ,,
८५ पृथ्वी पर जन्म लेने का शाप इन्द्र का देना। ,,
८६ अनेक स्तुति करने पर शिव जी का प्रसन्न होना। ७८२
८७ शिवजी का प्रसन्न होकर बर देना कि तेरा जन्म राजकुल में होगा और व्याह भी छत्रधारी से होगा। पर तेरा हरण होगा और तेरे कारण घोर युद्ध होगा ।,,
८८ शिव की उसी बानी के अनुसार वह अपने समान पति चाहती है। ,,
८९ दिन पूरा होने पर उत्तम पति पाकर फिर अप्सरा योनि पावेगी। ७८३

९० शाप के पीछे शिवजी कैलाश गए अप्सरा मृत्युलोक में गिरी, वही जादव राज की कन्या शशिव्रता है और तुम्हें उसने पति बरन किया है। ७८३

९१ हंस कहता है कि इस अप्सरा का अवतार तुम्हारे ही लिये हुआ है। ,,

९२ हंस कहता है कि राजा जादव ने शशि. व्रता को कान्यकुब्जेश्वर को व्याहना बिचारा है पर शशिव्रता ने तुम्हें मन अर्पण कर शिव की आराधना की। शिव की आज्ञा से मैं हंस रूप धर कर तुम्हारे पास आया हूं। शीघ्र चलो। राजा का प्रस्तुत होना। दस सहस्र सेना सजना। ,,

९३ राजा का कहना कि जादव राज के गुणों का वर्णन करो। ७८४

९४ हंस का राजा भानु जादव के गुण प्रताप का वर्णन करना। ,,

९५ उनके बेटे और बेटी के रूप गुण का वर्णन। ,,

९६ एक आनन्दचन्द खत्री था उसकी बहन चन्द्रिका कोट में व्याही थी, वह विधवा हो गई और भाई उसको अपने यहां ले आया। ७८५

९७ वह गान आदि विद्या में बड़ी प्रवीणा थी। ,,

९८ उसके पास शशिव्रता विद्या पढ़ती थी। ,,

९९ उसी के मुख से आप की प्रशंसा सुन कर वह आप पर मोहित हो गई है। ,,

१०० यों ही दो वर्ष बीत गए। बाल्यावस्था बीतने पर काम की चटपटी लगी। ७८६

१०१ तभी से नित्य शिव की पूजा करके वह तुम्हें मिलने की प्रार्थना करती रही। ,,

१०२ शिवपार्वती का प्रसन्न होकर सपने में बरदेना। ,,

१०३ प्रसन्न होकर शिवपार्वती ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि जयचन्द व्याहने आवेगा सो तुम रुक्मिणी हरण की भांति इसे हरण करो। ७८७

१०४ राजा ने फिर पूछा कि उसके पिता ने क्यों व्याह रचा और क्यों प्रोहित भेजा। ,,

१०५ हंस का कहना कि राजा ने बहुत ढूंढ़ा पर दैव की इच्छा उसे जयचन्द ही जँचा। वहा श्रीफल ले पुरोहित भेजा। ,,

१०६ प्रोहित ने जैचन्द को जाकर श्रीफल और वस्त्राभूषण आदि अर्पण किया। ,,

१०७ टीका देकर प्रोहित ने कहा कि साहे को दिन थोडा है सो शीघ्र चलिए। ७८८

१०८ प्रसन्न होकर जयचन्द का चलने की तय्यारी और उत्सव करने की आज्ञा देना। ,,

१०९ हंस कहता है कि वह पचास सहस्र सेना और सात सहस्र हाथी लेकर आता है अब तुम भी चलो। पृथ्वीराज ने दस सहस्र सेना ले चलना बिचारा। ,,

११० पृथ्वीराज का शशिव्रता से मिलने के लिये संकेत स्थान पूछना। ७८९

१११ ब्राह्मण का संकेत स्थान बतलाना। ,,

११२ राजा का कहना कि मैं अवश्य आऊंगा। ,,

११३ हंस का कहना कि माघ सुदी १३ को आप वहां अवश्य पहुंचिए। ,,

११४ इतनी वार्ता करके हंस का उड़ जाना। ,,

११५ दस हजार सेना सहित पृथ्वीराज का तैयारी करना। ७९०

११६ राजा का सब सामंतों को हाथी घोड़े इत्यादि बाहन देना। ,,

११७ माघ बदी पञ्चमी शुक्रवार को पृथ्वीराज की यात्रा करना। ७९१

११८ चन्द का सेना की शोभा वर्णन करना। ,,

११९ चलने के समय राजा को भय दिलाने

वाले शकुनों का होना। ७६२

१२० राजा का इन शकुनों का फल चन्द से पूछना। ७६३

१२१ चन्द का कहना कि इस शकुन का फल यह होगा कि या तो कोई भारी झगड़ा होगा या गृहविच्छेद। ,,

१२२ चन्द ने राजा को जैचन्द के पूर्व बैर का स्मरण दिलाकर कहा कि इस काम में हाथ देना मानो बैठे बैठाए भारी शत्रु को जगाना है। ,,

१२३ वय, पराक्रम, राज और काममद से मत्त राजा ने कुछ ध्यान न दिया और दक्षिण की ओर शीघ्रता से वह चला। ,,

१२४ पृथ्वीराज से पहिले जयचन्द का देवगिरि पहुंचना। ७६४

१२५ जयचन्द के साथ की एक लाख दस हजार सेना का वर्णन—जयचन्द का आना सुन कर शशिव्रता का दुखी होना। ,,

१२६ शशिव्रता मनही मन देवताओं को मनाती है कि मेरा धर्म न जाय और उसका प्राण देने को प्रस्तुत होना। ,,

१२७ सखी का समझना कि व्यर्थ प्राण न दे देख ईश्वर क्या करता है। ईश्वरी लीला कोई नहीं जानता। सखियों का श्री रामचन्द्र, पाण्डव, आदि के प्राचीन इतिहास सुना कर धीरज धराना। ,,

१२८ राजा का पृथ्वीराज के आने और शशिव्रता के प्रेम का समाचार जान कर हमीर संमीर (?) से मत पूछने लगा। ७६६

१२९ हमीर संमार का मत देना कि वीर चन्द को कन्यादान दीजिए। ,,

१३० कन्या के प्राण देने के विचार और शकुन विचार से राजा भानु ने चुप चाप पृथ्वीराज के पास दूत भेजा। ,,

११ राजा ने पत्र लिखा कि शिव पूजा के बहाने शिवाले में तुम को शशिव्रता मिलेगी। ७६६

१३२ इधर पृथ्वीराज के सर्दारों का उत्सहित होना। ७६७

१३३ कवि कहता है गन्धर्व विवाह शूर बीर ही करते हैं। ,,

१३४ पृथ्वीराज का आना सुन कर मनही मन राजा भान का प्रसन्न होना, परन्तु वीर चन्द का सशंकित होना। ,,

१३५ पृथ्वीराज का नगर मे होकर निकलना, स्त्रियों का झरोखों से देखना। शशिव्रता का प्रसन्न होना। ७६८

१३६ राजा भान के हृदय में पृथ्वीराज का आना सुन कर हर्ष शोक साथ ही उदय हुआ। ,,

१३७ पृथ्वीराज की सेना का उमङ्ग के साथ नगर में घूमना। ७६६

१३८ देवालय में शिव पूजा के लिये शशिव्रता का जाना। पृथ्वीराज का वहा पहुंचना। ,,

१३६ पृथ्वीराज की प्रशंसा। ,,

१४० सखी का शशिव्रता से कहना कि तू जिसका ध्यान करती है वह आगया, देख। ८००

१४१ शशिव्रता का आँख उठा कर देखना। दोनों की आखे मिलना। ,,

१४२ मारे लाज के कुछ बोल न सकी पर नैन की सैन से ही बात हो गई। ,,

१४३ नैन श्रवण का सवाद। ,,

१४४ हंस ने पहुंच कर शशिव्रता से कहा कि ले पृथ्वीराज शिवालय में तुझसे मिलने आगया। ,,

१४५ माता पिता की आज्ञा से शशिव्रता का देवालय में जाना। ८०१

१४६ शशिव्रता के रूप का वर्णन। ,,

१४७ दस दासियों के साथ शशिव्रता का शिवालय में आना। ८०२

१४८ शशिव्रता का रूप वर्णन। ८०२
१४९ शशिव्रता का चंडोल पर चढ़कर देवी की पूजा को आना। ८०४
१५० तेरह चंडोलों को चारों ओर से घेर कर राजा भानु की सेना का चलना। ,,
१५१ सूर्योदय के समय पूजा के लिये आना। राजा की सेना का वर्णन। ,,
१५२ मन्दिर के पास पहुँच कर शशिव्रता का पैदल चलना। ८०५
१५३ शशिव्रता की उस समय की शोभा का वर्णन। ,,
१५४ कान्यकुब्जेश्वर को देखकर शशिव्रता दुखी होना और मन में चिन्ता करना। ,,
१५५ एक ओर कान्यकुब्जेश्वर की सेना का जमाव होना और दूसरी ओर पृथ्वीराज की सेना का घेरना। ८०६
१५६ पृथ्वीराज की सेना का चारों ओर से घेरना। ,,
१५७ जैचन्द और पृथ्वीराज की सेना की तुलना। ,,
१५८ दोनों सेनाएं तलवार लिये तय्यार है। जिसने द्रोपदी का पण रक्खा वही शशिव्रता का पण रक्खेगा। ,,
१५९ मठ को देखकर शशिव्रता के मन में काम उत्पन्न हुआ और उसने मनही मन शिव को प्रणाम किया। ८०७
१६० तीस डोलियों के बीच में शशिव्रता का चौंडोल था जिसको ५०० दासी घेरे हुए थीं। ५००० सवार और ५००००० पैदल सिपाही साथ में थे। ,,
१६१ शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर पृथ्वीराज के कुशल की प्रार्थना की। ,,
१६२ बाजों का शब्द सुनकर सामंतों का चित्त पलट जाना। ,,
१६३ सेना में बीर रस का जागृत होना। ८०८
१६४ देवालय के पास सब लोगों का चित्र लिखे से खड़े रह जाना। ८०८
१६५ सखियां का जैचंद के भाई को शशिव्रता का बर कहना जो उसे विष सा लगा। ,,
१६६ अपनी सेना सहित वह भी शिवपूजन के लिये वहां आया। ८०९
१६७ तब तक पृथ्वीराज के भी ७००० सैनिक हथियारबन्द कपट भेष धारण किए हुए भीड में घँस पड़े। ८०९
१६८ शशिव्रता ने चौंडोल से उतर कर शिव की परिक्रमा की और पृथ्वीराज से मिलन होने की प्रार्थना की। ,,
१६९ शशिव्रता का शिवजी की स्तुति करना। ,,
१७० पृथ्वीराज सात हज़ार कपट वेषधारी कामरथी बीरों के साथ देवी के मंदिर में घँस पडे। ८११
१७१ पृथ्वीराज और शशिव्रता की चार आँखें होतेही लज्जा से शशिव्रता की नज़र नीची हो गई और पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ लिया। ,,
१७२ पृथ्वीराज के हाथ पकड़तेही शशिव्रता को अपने गुरुजनों की खबर आ गई और इस से आंख में आँसू आने लगे पर उन्हें अशुभ जानकर उसने छिपा लिया। ,,
१७३ जिस समय पृथ्वीराज ने शशिव्रता का हाथ पकड़ा, पृथ्वीराज के हृदय में रुद्र, शशिव्रता के हृदय में करुणा और उन शशि के शत्रुओं के हृदय में बीभत्स रस का संचार हुआ। ८१२
१७४ बीर वृत्त से एक घरी ठहर कर पृथ्वीराज शशिव्रता को साथ लेकर चल दिए। ८१३
१७५ शशिव्रता के पिता ने कन्या के बैर से और कमधज्ज ने स्त्री के बैर से लड़ाई का विचार किया और सेना सजी। ,,

खांओं का मारा जाना। ९०६
९५ चौसठ खान मारे गए और तेरह हिन्दू सर्दार मारे गए। हिन्दू सर्दारों के नाम तथा उनका किस से युद्ध हुआ इसका वर्णन। ,,
९६ दूसरे दिन तातार खां का शहाबुद्दीन को विकट व्यूह के मध्य में रख कर युद्ध करना और सामंतों का क्रोध कर के शाह की तरफ़ बढ़ना। ९०७
९७ खुरसान खां का सुलतान के वचन पर तैश में आकर घोर युद्ध मचाना। ९०८
९८ रघुवंसी के घोर युद्ध का वर्णन। ९०९
९९ लड़ाई के पीछे स्वर्ग में रम्भा ने मेनका से पूछा तूं उदास क्यों है? उसने उत्तर दिया कि आज किसी को वरन करने का अवसर नहीं मिला। ९१०
७० रम्भा ने कहा कि इन वीरों ने या तो विष्णु लोक पाया या ये सूर्य में जा समाए। ,,
७१ हुसैन खां घोड़े से गिर पड़ा, उजबक खां खेत रहा, मारुफ़ खां, तत्तार खां सब पस्त हो गए, तब दूसरे दिन सबेरे सुलतान स्वयं तलवार लेकर लड़ने लगा। ,,
७२ सुलतान ने एक बान से रघुवंश गुसाईं को मारा, दूसरे से भीमभट्टी को, तीसरा बान हाथ का हाथही में रहा कि पृथ्वीराज ने उसे कमान डाल कर पकड़ लिया। ७११
७३ सुलतान को पकड़ कर और हुसैन खां तत्तार खां आदि को विजय करके पृथ्वीराज दिल्ली गए, चारों ओर जै जै कार हो गया। ,,
७४ एक समय प्रसन्न होकर पृथ्वीराज ने सुलतान को छोड़ दिया। ,,
७५ एक महीना तीन दिन कैद रख कर नौ हजार घोड़े और बहुत से माणिक्य मोति आदि लेकर सुलतान को गज़नी भेज दिया। ९१२

---

(२८) अनंगपाल समय।

(पृष्ठ ९१३ से ९४३)

अनंगपाल दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को देकर तप करने चला गया था परंतु उसने पृथ्वीराज से फिर विग्रह क्यों किया इस कथा का वर्णन। ९१३
२ अनंगपाल के बद्रिकाश्रम जाने पर पृथ्वीराज का दिल्ली का निर्द्वंद शासन करना। ,,
३ यह समाचार देश देशान्तर में फैल गया कि पृथ्वीराज दिल्ली में निर्द्वंद राज्य करता हुआ स्वजनों को मान देता है और उपकार को न मान कर अनंगपाल की प्रजा को बड़ा दुःख देता है। ,,
४ अग्नि, पाहुना, विप्र तस्कर आदि परदुःख नहीं जानते पृथ्वीराज दिल्ली का राज्य करता है और अनंगपाल पराए की भांति तप करता है। ९१४
५ सोमेश्वर अजमेर में राज करता है और पृथ्वीराज को दिल्ली मिली यह सुनकर मालवापति महिपाल को बड़ा बुरा लगा। ,,
६ मालवापति ने चारों ओर राजाओं को पत्र लिखकर बुलाया। गक्खर, गुरुड, भदौड़ और सोरपुर के राजा आए। सलाह हुई कि पहिले सोमेश्वर को जीत कर तब दिल्ली पर चढ़ाई की जाय। ,,
७ मालवापति का अजमेर पर चढ़ाई करने के लिये सेना सहित चंबल नदी पार होना। ९१५

८ शत्रुओं के आने का समाचार सुन कर सोमेश्वर अपने सामन्तों को इकट्ठा कर के बोला कि पृथ्वीराज को तो अनंगपाल ने बुला लिया इधर शत्रु चढे हैं; ऐसा न हो की कायरता का धब्बा लगे और नाम हँसा जाय। ९१५

९ सामंतों ने सलाह दी कि शत्रु प्रबल हैं इससे इनको रात के समय छल कर के जीतना चाहिए। ,,

१० सोमेश्वर ने कहा कि तुमने नीति ठीक कही पर रात को छापा मारना अधर्म है इसमें बड़ी निन्दा होगी। ९१६

११ सामंतों ने कहा कि सेतु बाँधने में श्रीराम ने, सुग्रीव ने बालि को मारने में, नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को मारने में और श्रीकृष्ण ने कंस को मारने में छल किया, इसमें कोई दूषण नहीं है। ,,

१२ सोमेश्वर के सामंतों का युद्ध के लिये तय्यारी करना। ९१७

१३ पट्टन के यादव राजा ने आकर डेरा डाला। अजमेर जीतने का उत्साह जी में भरा था। ९१८

१४ चारों ओर खलबली मच गई। रुद्र गण तथा नारद आनन्द से नाचने लगे। ,,

१५ योद्धाओं की तय्यारी तथा उनके उत्साह का वर्णन। ,,

१६ सोमेश्वर ने पिछली रात धावा कर दिया शत्रु के पैर उखड़ गए। ९१९

१७ संसार में एक मात्र कविकथित यश के अतिरिक्त और कुछ अमर नहीं है। ९२०

१८ यादव राज ऐसा घायल होकर गिरा कि मुँह से बोल न सकता था। ,,

१९ सोमेश्वर उसे घर उठा लाया बड़ा यत्न किया। एक महीना २० दिन में अच्छे होकर राजा ने आरोग्य स्नान किया। सोमेश्वर ने बहुत दान दिया। ९२०

२० पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना। उसने प्रतिज्ञा की कि जब बात पाऊंगा शत्रुओं को मजा चखाऊंगा। ,,

२१ इधर दिल्ली की प्रजा ने बद्रिकाश्रम में अनंगपाल के पास जाकर पुकारा कि हे महाराज चौहान के अन्याय से हम लोगों को बचाइए। ,,

२२ अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर अपने मंत्री को बुलाकर समाचार कहा। मंत्री ने कहा कि पृथ्वी के विषय में बाप बेटे का विश्वास न करना चाहिए। ९२१

२३ राज्य प्राप्त करने के लिये गत ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन। ,,

२४ तूंअर वंश ने सर्वदा भूल की, पहिले किल्ली को उखाड़ा फिर आपने पृथ्वीराज को राज्य दिया। ,,

२५ राजा, हाथी, घोड़ा स्वर्ण इत्यादि सब दे दे परन्तु राज्य की सर्वमक्ति के समान रक्षा करे। ,,

२६ अनङ्गपाल के आग्रह करने पर मंत्री लाचार होकर दिल्ली की ओर चला। ९२२

२७ पृथ्वीराज से मिल कर मंत्री ने कहा कि अनङ्गपाल आप पर अप्रसन्न हैं उन्होंने आज्ञा दी है कि हमारा राज्य हमें लौटा दो या हम से आकर मिलो। ,,

२८ इस पर पृथ्वीराज का क्रोधित होना। ,,

२९ वसीठ का कहना कि जिस का राज्य लिया आप उसी पर क्रोध करते हैं। ,,

३० पृथ्वीराज का कहना कि पाई हुई पृथ्वी कायर छोड़ते हैं। ,,

३१ मंत्री का यह सुन कर उदास मन हो चला आना। ९२३

३२ मंत्री ने अनंगपाल से आकर कहा कि मैं ने तो पहिलेही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान राज्य कभी न लौटावेगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए। ९२३

३३ अनंगपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कमास को बुला कर पूछा कि मेरी सांप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए। ,,

३४ जो लड़ाई करता हूं तो अपनी मा के पिता (नाना) से लड़ता हूं, और जो छोड़ देता हूं तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो। ९२४

३५ कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानें यहीं आकर भिड़ें तो फिर लड़ना चाहिए। ,,

३६ अनंगपाल ने धूम धाम से युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लड़ाई हुई अन्त में अनंगपाल की हार हुई। ,,

३७ हार कर फिर अनंगपाल का बद्रिकाश्रम लौट जाना। ९२५

३८ आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड़ कर अनंगपाल लौट गया। ,,

३९ मंत्री सुमन्त की सलाह से अनंगपाल ने माधो भाट को सुलतान शाहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा। ,,

४० माधो भाट जाकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ आया। ९२५

४१ नीतीराव खत्री ने अनंगपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया। ९२६

४२ पृथ्वीराज ने अनंगपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आपको पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैला कर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते हैं? ,,

४३ जैसे बादल से बूंद गिर कर हवा से पेड़ के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमें पृथ्वी देकर इस जन्म में आप उलटी नहीं पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या कीजिए। ,,

४४ आप सुलतान गोरी के भरमाने में न आइए उसे तो हमने कई बार बांध बांध कर छोड़ दिया है। ९२७

४५ हरिद्वार में आकर दूत अनंगपाल से मिला। संदेसा सुनते ही अनंगपाल क्रोध से उछल उठा। ,,

४६ अनंगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिख कर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र में लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए, हम और आप मिल कर दिल्ली को विजय करें। ,,

४७ दूत ने आकर अनंगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनंगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला। ९२८

४८ सुलतान शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सर्दारों का वर्णन। ,,

४६ सिन्धु पार उतरकर बीस हज़ार सेना साथ देकर सुलतान ने तत्तार खां को अनंगपाल के लाने के लिये हरिद्वार भेजा। तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला । ६२६

५० अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिए और सेना भरती करके लड़ाई की तैयारी की । ,,

५१ तीन सौ बीर जो अनंगपाल के साथ वैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने को तय्यार हुए । ,,

५२ तत्तार खां ने रात भर रह कर सवेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया। अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर उसने आगे बढ़ कर शाह को समाचार दिया, सुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे । ६३०

५३ अनंगपाल ने सब वृत्तांत सुनाया दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप हाजिर हो जावे तो उसे जीवदान करना चाहिए। सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो। पृथ्वीराज ने कहा ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करे अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता। ६३०

५४ पृथ्वीराज ने डंके पर चोट लगा कर सब सर्दारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला । ६३२

५५ दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सलतान से कहा । जो सब सरदार विरक्त होगए थे वे भी स्वामिकार्य्य के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए। ६३२

५६ सुलतान ने दूत से समाचार सुनकर चढ़ाई का हुक्म दिया । ,,

५७ पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा । ,,

५८ धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डंके पर चोट दी । ,,

५९ पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढने का हुक्म दिया । ६३३

६० आगे तत्तार खां को रक्खा मारूफ खां को बांई ओर खुरासान खां को दीहिनी ओर और अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया । ,,

६१ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की आगे कैमास को और पीछे चामंडराय को कर दिया । ६३४

६२ अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं जीते ही पकड़ना चाहिए । ,,

६३ दोनों दलों का साम्हना हुआ कैमास ने युद्ध आरम्भ किया । ,,

६४ दोनों दलो का साम्हना होते ही घमासान युद्ध होने लगा । ,,

६५ कैमास ने शस्त्र सम्हाल कर युद्ध आरम्भ किया। युद्ध का वर्णन । ,,

६६ शहाबुद्दीन को चामुंडराय ने पकड़ लिया पृथ्वीराज की जै हुई सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए। ६३७

६७ पृथ्वीराज का सुलतान को कैद में भेजकर अनगपाल को साथ दरबार में बुलाकर उनके पैर पड़ना। ६३७

६८ दाहिम राव को हुक्म देकर सुलतान को दरबार में बुलवाना, उसके आने पर पृथ्वीराज का अनंगपाल से कहना कि आप तो बुद्धिमान है आप इस शाह के बहकाने में क्यों आगए। ,,

६९ सरदार गहलौत ने कहा इस में महाराज अनगपाल का कुछ दोष नहीं यह सब प्रपंच दीवान का रचा हुआ है। ६३८

७० चामुंडराय का कहना कि कुसंग का यही फल होता है। ,,

७१ सामतों ने जितनी बातें कहीं सब अनंग पाल नीचा सिर किए सुनता रहा कुछ न बोला। ,,

७२ पृथ्वीराज का शाह को एक घोड़ा और सिरोपाव (खिलत) देकर छोड़ देना। ,,

७३ शहाबुद्दीन का घोड़े हाथी और दो लाख मुद्रा दंड देना और पृथ्वीराज का उसे सामंतो मे बांट देना। ६३९

७४ म्लेच्छ को जीत कर पृथ्वीराज दिल्ली आया। ,,

७५ राजा से राव पज्जून, गोइन्द राव आदि सामन्त आकर मिले। ,,

७६ अनंगपाल का मंत्री से पूछना कि अब मुझे क्या करना उचित है। ,,

७७ मत्री ने कहा कि महाराज आप अब बूढ़े हुए मृत्यु समय निकट है और पृथ्वीराज को आप दिल्ली दे चुके है अब इसका मोह छोड़ कर धर्म्म कर्म कीजिए। ६४०

७८ मंत्री का कहना कि संसार के सब पदार्थ नाशमान है इसकी चिंता न कीजिए। ,,

७९ रानी का सलाह देना कि पंजाब का आधा राज पृथ्वीराज से ले लो अथवा जो व्यास जी कहें सो करो। ,,

८० व्यास जी का कहना कि पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य करने दीजिए आप गुरू का ध्यान करके तप कीजिए। ६४१

८१ राज्य, धन, सम्मान मांगने से नहीं मिलते और न बल से स्नेह होता है। ,,

८२ मेरा मत मानो कि बद्रीनाथ जी की शरण में जाकर और कंद मूल खा कर तप करो। ,,

८३ पृथ्वीराज ने अनंगपाल की बड़ी सेवा की जब तेरह महीने बीत गए तब अनगपाल ने पृथ्वीराज से कहा कि अब मुझे बद्रीनाथ पहुंचा दो वहां बैठ कर तप और भगवान का भजन करूं पृथ्वीराज ने कहा कि आप यहीं बैठ कर भजन कर सकते हैं। ९४२

८४ पृथ्वीराज ने बहुत समझाया पर अनगपाल ने एक न माना उसे बद्रीनाथ जाने की लौ लगी रही। तब पृथ्वीराज ने बड़े आदर के साथ दस लाख रूपया सात नौकर और दस ब्राह्मण साथ देकर उन्हे बद्रीनाथ पहुचा दिया अनगपाल वहां जाकर तप करने लगा। ,,

८५ पृथ्वीराज की सहानुभूति दयालुता और वीरता की प्रशसा। ६४३

रासोसार ।

अर्थात्

पृथ्वीराजरासो का सारांश ।

आदि पर्व ।

[पहिला समय]

महाकवि चन्दबरदाई इस ग्रन्थ के आदि में सर्व-शक्तिमान् जगदीश्वर और अन्य देवताओं की वंदना करता है। वह कहता है कि आदिदेव को प्रणाम कर के मैं गुरू को नमस्कार करता हूं, सरस्वती के चरणों की वंदना करता हूं-आकाश, पाताल और मृत्युलोक की रचना करनेवाले, तथा लक्ष्मी जिनके चरण की सेवा करती हैं ऐसे विष्णु की वंदना करता हू, सृष्टि की रक्षा करनेवाले सदाशिव की वंदना करता हूं। और चराचर के निर्माणकर्ता वरद स्वरूप ब्रह्मा की वंदना करता हूं।

पुनः वह कहता है कि श्रुति, वेद, जिसका मूल है, स्मृति और सत्यरूपी जल से जो सींचा गया है ऐसा धर्म्म-रूपी वृक्ष उत्पन्न हुआ जिसकी तीन शाखाएँ तीनों लोकों में व्याप्त हैं। वर्ण इस वृक्ष के पत्ते हैं, काव्य और उक्ति इसके सुंदर फल और फूल हैं। इस वृक्ष के ऊपर रस की अभिलाषा से कविलोग रमण करते हैं।

पुनः कवि कर्म की स्तुति करता है "कि प्रथम मंगल स्वरूप पूज्यपाद वेद जिसका मूल है; सत, रज तम तीनो गुण जिसकी शाखाएँ है; वर्ण और अक्षर जिसके पत्र हैं; धर्म्म जिसकी छाल है; और जिसका सत्तरूपी फूल चतुर्दिक फूल रहा है; (ऐसे वृक्ष में) कर्म का उदय रूपी मधुर फल लगता है। राजा की नीति से रक्षा किया हुआ वह वृक्ष नहीं हिलता ऐसा इस जीवन में अमृत समान स्वाद मिलता है-अर्थात् उक्त रीति से जीवन व्यतीत करनेवाले पुरुष को किसी भी कलङ्क का भय नहीं, यह निश्चय है।

पुनः कवि मुक्ति के विषय में कहता है कि भोग रूपी भूमि की क्यारी, वेदरूपी जल से सींची गई, जिसमें आयुरूपी बीज बोया गया, और ज्ञानरूपी अकुर उत्पन्न हुआ, तीनों गुण जिसकी शाखा है, अनेक भिन्न भिन्न नाम जिसके पत्र हैं, जिसमें सुकर्मरूपी फूल लगता है, जिसमें मुक्तिरूपी सुन्दर फल लगता है-यह मुक्तिरूपी वृक्ष एक ही है किन्तु इसकी शाखाओं का प्रस्तार तीनों लोक में है।

तदनन्तर कवि चन्द अपने से पूर्व प्रसिद्ध कवियों की स्तुति करता हुआ कहता है कि प्रथम अर्थात् आदि कवि जगदीश्वर को मेरा नमस्कार है जो इस संसार में एक हो कर भी अनेक रूप से व्याप्त है-दूसरे कवि ब्रह्मा हैं जिन्होंने वेद का कथन किया, तीसरे कवि वेदव्यास जिन्होंने भारत बनाया-चौथे श्रीशुक-देव जी जिन्होंने परीक्षित को भागवत् श्रवण कराया, पांचवें मनुष्य तनधारी श्रीहर्ष जी, छठें श्रीकवि कालि-दास जी जिनको सरस्वती जी साक्षात् सिद्ध थी, सातवें कवि दण्डमाली जी, आठवें जयदेव जी जिन्होंने केवल गोविन्द गुण का ही गान किया। उक्त कवियों की

कथन की हुई युक्ति जो मैंने देखी और सुनी उसी के (उच्छिष्ट) प्रसाद से मैं इस ग्रन्थ की रचना करता हूं। कवि चन्द की उपरोक्त उक्ति को सुनकर कविचन्द की स्त्री बोली कि हे पति इस काव्य के शब्द साक्षात ब्रह्म स्वरूप है। इनको उच्छिष्ट ऐसे अनुचित शब्द से सम्बोधन न कीजिए। इस पर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये, तेरा कथन सर्वथा सत्य है। यह वाणी वास्तव में उस ब्रह्म के समान है जिसके कि रूप रेख गुण आकारादि कुछ भी नही है, किन्तु मेरे इस प्रकार कथन का तात्पर्य्य यह है कि मै किसी प्रकार चूक भी जाऊ तो मेरी हँसी कदापि न होगी। यह सुन कवि चन्द की स्त्री पुनः बोली कि हे पति आपको पहिले तो सरस्वती जी का वरदान है इस हेतु आप काव्यकला में भलीभांति निपुण हो, दूसरे राजा पृथ्वीराज संसार में इस समय एक अवतारी नरेश है, तीसरे उनके सामंत भी अद्वितीय वीर हैं, फिर इस में उच्छिष्ट उक्ति कैसी ? यह सुन पुन. कवि चन्द बोला कि हे चन्द्रमुखी यह भी सत्य है, यद्यपि मै काव्यरचना में प्रवीण हूं और यह काव्य रसमय होगा किन्तु उक्ति वही है जो कि मेरे से प्रथम कवि अपने अनेकानेक ग्रन्थों में वर्णन कर चुके है, इसलिये मेरा उच्छिष्ट कहना अयोग्य नही है।

इस प्रकार कवि चन्द स्त्री की शंका का समाधान करके ईश्वर के ऐश्वर्य्य का वर्णन करने लगा। वह कहता है कि हे प्रिये, मैं सब से पहिले अपने उस आदि देव को प्रणाम करता हूं जिससे अक्षय ओंकार शब्द उत्पन्न हुआ है, पुन वह ईश्वर कैसा है कि उसने निराकार से साकार किया अर्थात् उससे प्रथम कुछ भी न था उसने ही अपने इच्छानुसार इस जगत को निर्म्माण किया, उसके तेज से ही सत, रज, तम ये तीनों गुण और इनसे ही स्वर्ग, मृत्यु, और पाताल लोकादि उत्पन्न हुए, पुनः उसने ब्रह्मा का रूप धारण कर वेद का उच्चारण किया जिसमें कि इसी आदि कर्ता का गुणानुवाद वर्णन है कि वह सर्व गुण सम्पन्न इस जगत का कर्ता ईश्वर स्वयं गुणरहित है अर्थात् वह किसी प्रकार के गुण अर्थात् माया के प्रपंच में बद्ध नहीं है, किन्तु तीनों लोक ब्रह्मा, यम, इन्द्र, वरुण, लोकपाल, पवन, अग्नि, जल, आकाश, नदी, नाले, बन, पर्व्वत, समुद्र इत्यादि और ८४ लक्ष योनि ये सब उसी ने बनाए है कि जिनका वर्णन करना कठिन है—उसी ने १८ प्रकार की बेली अलग अलग गुण की बनाई—कोई उसकी आज्ञा को भंग करने मे समर्थ नही है, सब उसकी आज्ञा को शिरोधार्य्य करके सुख दुःख सहन करते हैं, रात दिन सायं प्रात नियमानुसार उसकी आज्ञा से होते है, दिगपाल उसी के आज्ञानुसार भूमि को थाम्हें हुए है, पवन उसी के आज्ञानुसार प्रमाण से परिमाण मात्र भी अधिक संचालन नही हो सकती, इन्द्र उसी के आज्ञानुसार स्वर्ग में बास करता हुआ मेघों को ठीक समय पर वर्षा करने की प्रेरणा करता है, उसी के आज्ञानुसार अथाह समुद्र आकाश तक अपनी लहरों को उठाता है, किन्तु मर्य्यादा को कदापि छोड़ नहीं सकता। तात्पर्य्य यह है कि उसके नियत किए हुए नियमो को उल्लघन करने की किसी में भी सामर्थ्य नही है, उसी के नियमो पर, जिसे 'प्रकृति' कहते है, यह संसार निर्भर है और रहेगा, कोई भी परिमाण को मेट नही सकता, जीव वही कर्म करता है जो कुछ उस आदि देव परमात्मा की आज्ञा होती है।

ब्रह्मा ने वेद वर्णन किया जिसमें जल थल की कोई वस्तु वर्णन करने को शेष न रही—पुन· वेद-व्यास जी ने १८ पुराण बखान किए जिनमें नाना अवतारों की कथाए वर्णित है—फिर वाल्मीकिजी ने सहस्रों ग्रन्थों का मत लेकर रामावतार की कथा वर्णन की—फिर अनेक कवियों ने लोकों का अज्ञान दूर करने के लिये नाना काव्यों की रचना की—किन्तु हे प्रिये, यह सब हुआ पर उस अनन्त जगदीश्वर के गुणानुवाद का वर्णन कोई भी न कर सका और न उसके विषय में कोई भी निश्चय जानकारी प्राप्त कर सका, फिर भला मेरी बातहीं क्या है, यदि इस

विषय में मैं कुछ गर्व करूं तो लोक में मे केवल हँसी का कारण मात्र होऊंगा।

तदनन्तर कवि अपनी लघुता वर्णन करता है कि चौहान पृथ्वीराज की अक्षय कीर्ति इस जुग्गनीं-पुर में अनन्त समय तक फैली रहेगी। मेरी बुद्धि उसे केवल वर्द्धन करनेवाली है। हे! कवियो, मेरी हँसी न कीजिए क्योंकि चौहान का यश राजाओं के भोजन दूध भात दाल और शक्कर के समान है गँवार गूजरी का राधा हुआ महेरा उसकी समता नही कर सकता। पुनः चौहान की कीर्ति सतखंडे महल मे सुन्दर स्त्री के नूपुर की मंद मंद ध्वनि के समान है और मेरी कविता घूघचू की घूघरू सी है फिर भी घूंघचू का रस अमृत की बराबरी कदापि नही कर सकता। भिन्न भिन्न ग्रन्थों में कवियो ने जो युक्तिया कही है उन्ही का सग्रह करके मै इस ग्रन्थ की रचना करता हू अर्थात् उक्त कवियों की वाणी वसत ऋतु मे रसाल के वृक्ष पर बैठी कूजती हुई कोयल के समान और मेरी वाणी बबूर के वृक्ष पर बोलते हुए कपोत की सी वाणी है। पुन. कवियो की वाणी सूर्य्य के समान और मेरा काव्य उस सूर्य्य की किरणों से चमकते हुए पोडर के समान है। पुन उक्त कवियों का काव्य ऐसा है जैसे कस्तूरी पड़ा हुआ राज महिषियों के शृगार करने योग्य उत्तम अंजन और मेरी वाणी कुभकारिणी स्त्रियो के नेत्रो के शृगार योग्य करखे के समान है। पुनः उक्त कवियों की कविता अद्वितीय शिव के शीश मे उत्पन्न हुई गंगधारा के समान है और मेरा काव्य उस धार मे से पूजा के हेतु लिये हुए एक गडुए जल के समान है। अस्तु मै अपनी लघुता का जहां तक वर्णन करू थोड़ा है, मै तो प्राचीन कवियो का एक छोटा सा दास मात्र हूं, उनके ग्रन्थों मे मैने जो कुछ पढ़ा और देखा है उसी का मैं छन्दोवद्ध वर्णन करूंगा।

पुनः कवि कहता है कि मै जो इस उत्तम काव्य की रचना करता हूं तो दुर्जन मूर्ख लोगों का इसे देखकर हँसना संभव है जैसे कि मार्ग में जाते हुए हाथी को देखकर कुत्तों का स्वभाव ही भोंकने का है, परन्तु मै इसका कुछ भी विचार न करके सज्जन पुरुषो के लिये आनन्द पूर्वक यह रचना करता हूं क्योंकि चीलरे के डर वस्त्र को त्याग देना बुद्धिमता नहीं है।

पुनः कवि सरस्वती की स्तुति करता है कि वह अबुधा बुधा गोपिनी है, सुन्दर मोतियों का हार उसके हृदय पर विहार करता है गंभीर स्वच्छ जल के समान श्वेत है शरीर उसका, और उसे गौरी, गिरा योगिनी इत्यादि नामों से संबोधन करते हैं। समुद्र से उत्पन्न हुई सरस्वती के हाथ में सदैव सुन्दर सुरवाली वाणी रहती है और हस पर उसकी सवारी है जानु पर्यन्त लम्बे आजान है बाहु जिसके, वह सरस्वती सब विघ्नों की नाश करने वाली है।

पुनः कवि गणेश की स्तुति करता है कि कैसे वह गणेश है कि मद के सुगन्ध की रुचि के लोभ मे भवरा के समूह जिनके भाल पर छत्राकार आच्छादित है, गले मे जो गुञ्जा का हार धारण किए हुए है, कर्ण के अग्रभाग मे कुंडल शोभायमान है हाथी की सूड़ के समान है भुज जिनके, सोई गणेश मुझे इस पृथ्वीराज का काव्य करने मे निर्विघ्न ग्रन्थ पूर्ति की सफलता देवे।

गणेश की स्तुति करने पर कवि श्रीमहादेवजी की स्तुति करता है। वह कहता है कि द्वितिया का बालचन्द्रमा जिनके मस्तक पर शोभायमान है ऐसे शिव को मै नमस्कार करता हू। वे मेरी बुद्धि को बढ़ावेंगे, साधना और भोग सयोग और भक्ति की मूर्ति, जटाजूट बाधे हुए, पार्वती के हृदय मे वास करन वाले उस अखड शिव को बारंबार मेरा नमस्कार है। वे शिव जटाओं का जूड़ा शीश पर, ललाट में चन्द्रमा, गले मे सर्प तथा नरमुंडमाला धारण किए हुए पार्वती को आनन्द देनेवाले ह, सिंह का चर्म है वस्त्र जिनका, गंगा

जिनके माथे पर विराजमान हैं, तीन हैं नेत्र जिनके, अग्निनेत्र से भस्म किया है कामदेव को जिन्होंने, ऐसे शिव को बारम्बार मेरा नमस्कार है। पुनः कविचन्द कहता है कि हर महादेव और हरि विष्णु की एक भाव से आराधना करनी चाहिए इसके विरुद्ध हरि हर में जो भेद मानता है सो नर्कवासी होता है। यथा नारायण की भक्ति करनेवाले स्वर्ग पाते हैं सो सही है परन्तु जो शिव से द्वेष करने वाले हैं वे कदापि स्वर्ग नहीं पाते क्योंकि शिव गंगाजी को धारण किए हुए हैं और विष्णु भृगुलता को, शिव उमापति हैं और विष्णु लक्ष्मीपति, विष्णु शंख को धारण किए हुए हैं तो शिव विभूति को, विष्णु के हृदय में वैजंतीमाल शोभायमान है तो शिव भी नरमुंडमाला धारण किए हुए हैं, विष्णु पीताम्बर धारण किए हैं तो शिव बागम्बर धारण किए हुए हैं—इस प्रकार दोनों देवता पाप को हरण कर मुक्ति के देनेवाले हैं किसी प्रकार भिन्न भिन्न मानने योग्य नहीं हैं, शिव और विष्णु दोनों समान ही हैं दोनोंही समान पूजनीय हैं।

इस ग्रन्थ में संग्रहीत कथाएं समुद्र के समान, उनकी कीर्ति तरंगों के समान हैं इसमें जो उक्तियां हैं सोई नौकाएं हैं और कवि की आशा मल्लाह स्वरूप है।

यह काव्यसमुद्र कैसा है कि ज्ञान के द्वारा मुक्ति देने वाला और राजनीति रूपी समुद्र में पार उतरने के लिये साक्षात नौका स्वरूप है। इस ग्रन्थ के छन्द, प्रबन्ध, कबित्त, साटक, गाहा, दूहा इत्यादि मात्रा वर्णादि भेदों से परिपूर्ण अमर और भरथ रचित पिंगल के अनुसार हैं। यह कोई ढँकी हुई बात नहीं है। वर्ण, मात्रा, अक्षर, रत्ति, जाति, ध्वनि, स्वर इत्यादि सब वस्तुएं इस ग्रन्थही में स्पष्ट हैं। यदि पढ़नेवाला स्वयं भूलकर शुद्ध शुद्ध न पढ़ सके तो इसमें मेरा दोष नहीं क्योंकि पाठक को भी काव्य सुर इत्यादि का जानकार होना आवश्यक है।

चद कवि ने इस ग्रन्थ में उक्ति, धर्म्म, राजनीति, नवरस का छः भाषाओं में वर्णन किया है अक्षर भेद, लघु गुरु मात्रा उक्ति युक्ति आदि का जिसे भलीभांति ज्ञान हो तथा गान विद्या में निपुण, ताल स्वर का जाननेवाला भी हो वह रसिक पुरुष रासो काव्य का रस पा सकता है। तर्क वितर्क को जानकर राजसभाओं और श्रेष्ठ कवियों की मंडली में जो पुरुष आदरनीय होना चाहे वह रासो को पढ़े और मनन करता हुआ अभ्यास करे।

जो रासो को सुगुरू से पढ़ता है उसे काव्य नीति, धर्म्म, उक्ति, युक्ति का ज्ञान होता है। अधिक कहां तक कहा जाय मनुष्य इसका अभ्यास करने से तीनों काल का जाननेवाला परम बुद्धिमान हो सकता है, जो मनुष्य रासो के क्रम को नहीं जानता उसे यह बुरा मालूम होता है और जो मनुष्य उपरोक्त बातों का ज्ञान रखता हुआ रासो को पढ़ता और सुनता है उसी को वह भला मालूम होता है। कवि कहता है कि इस रासो में मैंने सात हजार छंद मुनियों कथित ग्रन्थों के आश्रय पर वर्णन किए हैं, यदि कोई मात्रा घटा बढ़ा कर पढ़े और छन्द पूरा न बैठे तो कोई मुझे दूषण न दे।

रासो के विषय का संक्षेप वर्णन।

क्षत्रिय वंश में ढूंढा नाम का एक राक्षस था उसकी ज्योति से राजा पृथ्वीराज, जीभ से कविचंद और अन्यान्य अवयवों से सामंत लोगों का जन्म हुआ। उक्त राजा पृथ्वीराज ने बादशाह को कई बार कैद किया और और भी कीर्ति के काम किए उन्हीं का इस ग्रंथ में कविचंद ने वर्णन किया है।

परीक्षित की सर्पदंशन और जन्मेजय की सर्पसत्र कथा।

एक ब्राह्मण ने जो कि छन्द शास्त्र अर्थात् काव्य में परम विद्वान था, शरीर त्याग कर सर्प का

जन्म पाया। जिस समय यह सर्प योनि में था तो गरुड़ ने उसे भक्षण करने का विचार किया किन्तु वह छल कर किसी प्रकार गरुड़ के हाथ से निकल गया। उसी का नाम **तक्षक** भूविख्यात है।

एक समय का वृत्तान्त है कि राजा परीक्षित शिकार खेलने जंगल में गए। वहां पर शृंगी ऋषि को तपस्या करते देख उन्होंने उन से कुछ प्रश्न किए और जब उत्तर न पाया तो क्रुद्ध होकर एक मृतक सर्प ऋषि के गले में डालकर आप महलों को चले आए। किंचित कालोपरान्त शृंगी ऋषि के पुत्र ने आकर जब पिता की उक्त अवस्था देखी तो वह अत्यंत क्रोधित हुआ और तुरन्त हाथ में जल लेकर उसने शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में सर्प डाला हो वह एकही सप्ताह में सर्प के काटने से मृत्यु को प्राप्त होवे। जिस समय शृंगी ऋषि समाधि से जागे और उन्होनें जब यह वृत्तान्त सुना तो योग विद्या से ध्यान करके विचार करने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कर्म तो कलिकाल से भुलावे में पड़े हुए धर्म्म धुरन्धर राजा परीक्षित का है– इसलिये पुत्र को बहुत धिक्कारा और इस विषय की सूचना देने के लिये वे आप स्वयं राजा परीक्षित के पास गए। राजा ने ऋषि का बड़ा आदर सत्कार किया और आगमन का कारण पूछा। तब ऋषि ने अत्यन्त शोक प्रकाश करते हुए उपरोक्त विवरण कह सुनाया जिसे सुनकर राजा ने ऋषि से प्रार्थना की कि स्वामी अब आपही मेरी मुक्ति का उपाय बतलाइए कि मै मोक्ष पाऊं। तब ऋषि ने कहा कि आप व्यास जी के पुत्र श्रीशुकदेव जी से भागवत श्रवण कीजिए—इस पर राजा ने परम आदर पूर्व्वक श्री शुकदेव जी को बुलाकर भागवत की कथा सुननी आरम्भ की। जब सातवां दिन आया तो उपरोक्त तक्षक पुष्पों के हार में छिपकर राजा परीक्षित तक जा पहुंचा और गंगा किनारे ऋषि समाज में बैठे भागवत की कथा सुनते हुए धर्म धुरंधर राजा परीक्षित के अकाल काल का कारण हुआ। जिस समय तक्षक राजा परीक्षित को डसने के लिये चला तो देखता क्या है कि भूविख्यात वैद्य धन्वन्तरि राजा परीक्षित का सर्पाघात द्वारा मरण सुनकर उनकी औषधि करने को हस्तिनापुर जा रहे हैं। यह देखकर तक्षक लकुटाकार होकर रास्ते में जा पड़ा। ज्योंही धन्वन्तरि उसके पास आए तो उन्होंने उस तक्षक को लकड़ी समझ कर उठाकर कन्धे पर रख लिया और तक्षक ने अवसर पाकर ततक्षण धन्वन्तरि की पीठ में डस लिया जिससे धन्वन्तरि ने व्याकुल होकर उसी क्षण प्राण छोड़ दिए।

धर्म्म धुरन्धर राजा परीक्षित का स्वर्गवास होने के पश्चात उनके पुत्र राजा जन्मेजय गद्दी पर बैठे, एक दिन जन्मेजय अपने मन में बिचार करने लगे कि जिस पुत्र ने अपने बाप का बदला न लिया उसका जन्म लेनाही वृथा है, इसलिये अब मुझे चाहिए कि मै पृथ्वी भर के सर्पमात्र का नाश कर दूं। ऐसा विचारकर बड़े पंडितों को बुलाकर उसने यज्ञ करना आरम्भ किया। ब्राह्मण जिन जिन सर्पों का नाम ले ले कर अग्नि कुण्ड में आहुति देते थे वे सर्प सपरिवार आ आकर उस अग्नि में गिरते और भस्म होते जाते थे। यह हाल देख कर तक्षक इन्द्र के सिंहासन में जा लिपटा। इन्द्र ने भी शरणागत की रक्षा करना अपना धर्म्म जान उसे अभय दान दे किसी प्रकार यज्ञ में आहुति होने से उसे बचाया। तदनन्तर वह सर्प आबू राज पर्वत पर रहने लगा।

गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्क का उपाख्यान।

एक समय का वृत्तान्त है कि उतङ्क ऋषि अपने गुरु गालव से विद्या पढ़ कर जब उत्तीर्ण हुए तो वे बड़े विनीत भाव से गुरु से बोले कि हे भगवन् अब आप गुरु दक्षिणा की आज्ञा दीजे। यह सुन गालव ऋषि की स्त्री बोली कि हे पुत्र तू मुझे राजा जन्मेजय के कान के कुण्डल ला दे, मैं इसके लिये आठ दिन पर्य्यन्त प्रतीक्षा करुंगी। गुरुपत्नी के ऐसे बचन

सुन कर वह ऋषिपुत्र जन्मेजय के द्वार पर गया, और उसने राजा से कुण्डल मागे। राजाने भी ब्राह्मण को अपने द्वार पर भिक्षा के लिये आया देख उसे निराश फेरना क्षत्री धर्म्म के विरुद्ध जान अपने कुण्डल उसे दे दिए। उत्तङ्क ऋषि कुण्डल ले कर जिस समय अपने गुरु के पास आ रहा था तक्षक ने किसी प्रकार छल कर उससे वे कुण्डल ले लिये और उसके देखते ही देखते वह पाताल को चला गया।इस पर उत्तङ्क ऋषि को बड़ा संताप हुआ और उसने इन्द्र से प्रार्थना करनी आरम्भ की। तब इन्द्र स्वयं वहा आया और उसने किसी प्रकार उसे पाताल तक इस उपाय से भेज दिया कि जिससे विषैले सर्पों का विष उसके शरीर को न व्याप सके। तब तो उत्तङ्क प्रसन्नता पूर्वक तक्षक के समीप गया और उन कुण्डलों के जोड़े को उससे ले आया और जा कर उसने उन्हें गुरुपत्नी को दिया। उत्तङ्क ऋषि जहां हो कर पाताल को गया था वहा पर एक बड़ा भारी बिल अर्थात् गड़हा हो गया और वह प्रति दिन बड़ा ही होता गया।

एक समय का वर्णन है कि ऋषियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ ऋषि कुछ ऋषियो की समाज सहित उपरोक्त स्थान पर आए और इस स्थान को रमणीक देख कर उन्होने वहा ही कुछ दिन निवास करने का विचार किया। एक दिन ऋषि की गाय उक्त बिल अर्थात् गड़हे मे समा गई। जब ऋषि को यह समाचार ज्ञात हुआ तो उन्हे बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई। वे आप स्वय बिल के पास आए और गौ को निकालने के लिये श्री गङ्गाजी की स्तुति करने लगे। तब माता मन्दाकिनी ने भी प्रसन्न हो कर ऋषि का इच्छा पूर्ण की। बिल से बहुत सा जल उबलने लगा यहा तक कि वह गड़हा जल से भर गया। उसी मे पैरती हुई ऋषि नंदिनी नामक गौ ऊपर आगई। वाशिष्ठ ऋषि ने अपनी गौ तो पा ली परन्तु उन्हें इस बात की चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह बिल बड़ा भयानक है इसमें न जाने कितने जीवों की वृथा मृत्यु होगी, इस लिये इसको पूर देना परम आवश्यक है। इसलिये वसिष्ठ ऋषि हिमालय पर्व्वत के पास गए और उस से उक्त बिल और अपनी गाय की सम्पूर्ण कथा वर्णन कर के उन्होने कहा कि यदि उस बिल को पूरने के लिये आप हमको अपना एक पुत्र देवें तो परम कल्याण हो, अनत जीवों के प्राण बचेंगे और आपका बड़ा यश और कीर्ति संसार में होगी। तब हिमांचल ने उसी समय अपने छओं पुत्रों को बुला कर ऋषि कथित वृत्तांत कह सुनाया और ऋषि के साथ जाने के लिये अपने बड़े पुत्र पर इच्छा प्रगट की किंतु उसने सर्वथा नाहीं कर दी और कहा कि ऐसी निषिद्ध भूमि पर बास करना मुझे स्वीकार नहीं। तब वशिष्ठजी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र यद्यपि तेरा कथन सत्य है किंतु जो उस बिल पर कोई पर्व्वत स्थापित हो जाय तो हम सब ऋषि वहां पर तपस्या करेंगे, नाना प्रकार के उत्तमोत्तम वृक्ष वल्ली फल फूलों से वह स्थान सुशोभित हो जायगा सब देवता गंधर्व मुनि और ब्रह्मा, विष्णु महेश वहां पर निरतर निवास करेंगे और हे पुत्र वह वही स्थान है जहा पर वाल्मीकि को चौर कर्म करते करते ऋषित्व प्राप्त हुआ है। वशिष्ठ ऋषि के ऐसे वचन सुन कर हिमालय का नंद नामक मध्यम पुत्र बोला कि हे ऋषिराज यदि ऐसा है तो मै चलने को प्रस्तुत हू क्योंकि मै लंगड़ा हू इसलिये मै अन्य कोई उपकारक काम करने योग्य नहीं हू किंतु यह ऐसा समय आन लगा है जिसमे पिता के वचन का निर्वाह होना है और मेरी भी मुक्ति होनी सम्भव है। नन्द पर्व्वत का ऐसा वचन सुन कर वशिष्ठ ऋषि ने अर्बुद नाग का आह्वान किया और उससे कहा कि जो तू इस पर्व्वत को अमुक स्थान पर पहुँचा दे तो हमारा बड़ा कार्य्य सिद्ध हो। तब अर्बुद बोला कि हे ऋषि, मै मित्र नंद को ले चलने को प्रस्तुत हूं किंतु वह तीर्थ मेरे नाम से प्रसिद्ध होना चाहिए। यह सुन नंद बोला कि हे मित्र तेरे नाम से अवश्य तीर्थ प्रसिद्ध होगा क्योकि तू ऋषि का कार्य्य साधन करता है और मेरे साथ भी परम उपकार करता है अर्थात् मेरा पितृऋण से उद्धार करता है– तब उस अर्बुद

ने नंद गिर को अपनी पीठ पर रख लिया और वह ऋषि के पीछे हो चला और उक्त स्थान पर पहुँच कर उसने बिल मे पर्वत को स्थापित कर दिया जिसे देख कर अन्य सब ऋषियों ने जय जयकार करके पुष्पवर्षा की। किंतु देखते ही देखते वह बड़ा पर्वत हिलने और शनैः शनैः नीचे को धसने लगा। यह देख कर वशिष्ठ ने अत्यन्त व्याकुल हो श्री महादेव जी का स्मरण और उनकी स्तुति करनी आरम्भ की जिससे प्रसन्न होकर श्री महादेव जी स्वय प्रगट हुए और वशिष्ठ के सिर पर हाथ रखकर बोले कि हे पुत्र वर मांग परन्तु ऋषि शिव का स्वरूप देख कर ऐसे मोहित हुए कि मुँह से कुछ बात न निकली, पुनः नमस्कार कर के रह गए तब शिव ने पुनः कहा कि हे पुत्र वर माँग तब ऋषि ने सावधान होकर प्रार्थना की कि हे देव इस पर्वत को अचल कर दीजिए और आप भी इस पर अचल रूप से विराजमान हूजिए ऋषि का ऐसा बचन सुन कर महादेवजी ने एवमस्तु कह कर तीन बेर "अचल" शब्द का उच्चारण किया और कहा कि जिस प्रकार मै कैलाश और काशी-पुरी मे निवास करता हूं उसी प्रकार इस पर्वत पर भी रहूंगा। जो मनुष्य इस तीर्थ का दर्शन करेगा वह परम पुण्य का भागी हो कर मेरी अचल भक्ति को प्राप्त होगा और इस पर्वत पर कभी किसी प्रकार की बाधा न व्यापेगी तथा स्वर्ग और मुक्ति इसके आसपास निवास करेगे।

महादेव जी का ऐसा बरदान पाकर वशिष्ठ ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुए और उस समय से उस स्थल को परम पवित्र और रमणीक जान विश्वामित्र गौतम, सुमित्र, दालभ्य, अगस्त्य, मारकण्डेय, कौडिन्य, उद्दालक इत्यादि ऋषियों का बडा समाज जोड़ कर वहां निवास करने लगे। श्री शिवजी के वरदान के अनुसार ऋषियों के भोजन योग्य नाना प्रकार के स्वादिष्ट और उत्तम कंद मूलादि भी उस पर्वत पर उगने लगे जिससे वे ऋषि लोग अत्यन्त प्रसन्न चित्त हो कर तपस्या करने लगे। इसी समय उन्हों ने परस्पर मिल कर एक वृहत् यज्ञ करने का विचार किया जिसे सुनकर राक्षसों ने भी यज्ञ विध्वंस करने की इच्छा से अपना दल जोड़ा।

समय आने पर ऋषि लोगों ने आप वेद मंत्रानुसार आठ अंगुल गहरा साढ़े तीन हाथ लम्बा और इतना ही चौडा एक सुंदर चौकोण यज्ञकुण्ड बनाया और नाना प्रकार की यज्ञ की सामिग्री जोड़ कर सब ऋषि एक चित्त होकर आनंद से यज्ञ करने लगे। उधर राक्षसों का समूह जो कि इसकी ही प्रतीक्षा कर रहा था उपद्रव करने मे तत्पर हुआ। जिस समय ऋषि लोग वेद पाठ करते हुए होम करने को उद्यत हुए उस समय राक्षस ऊपर से रक्त मूत्र मांस इत्यादि निषिद्ध पदार्थों को बरसा के भूमि और पर्वत को हिला के अनेक प्रकार के भयानक और मधुर शब्द और सुन्दर, कुरूप, और घृणित नाना प्रकार के भेष धारण कर के यज्ञ विध्वस करने की चेष्टा करने लगे। इस महान उपद्रव से अत्यंत दुखी हो सब ऋषियों ने वसिष्ठ के पास जाकर अपना समस्त दुःख निवेदन किया। तब वशिष्ठ ने स्वयं अग्निकुंड के पास आकर उसमे से परिहार चालुक्य और प्रमार ये तीन क्षत्री उत्पन्न किए और उन्हें राक्षसो को मारने के लिये आज्ञा दी, किंतु जब यथासाध्य चेष्टा करने पर भी इन तीनो क्षत्रियों द्वारा अपेक्षित कार्य्य का संतोषप्रद साधन न हो सका, तब वसिष्ठ जी स्वयं एक नवीन यज्ञकुण्ड की रचना कर श्री चतुरानन ब्रह्मा का ध्यान और जाप करते हुए आहुति देने लगे, जिससे तुरत ही चार बाहुवाला, चारो हाथो में खड्ग धारण किए हुए, रक्त मुख, रक्त वर्ण, एक दीर्घकाय महान तेजस्वी पुरुष उत्पन्न हुआ। उस दीर्घकाय पुरुष के उन्नत कंध और ललाट, विशाल वक्षस्थल, काले घुंघराले केश, रक्त नेत्र, विकट भृकुटि और गुलाब के सदृश मुख का रंग था। वह धनुष, बाँण, ढाल, तलवार इत्यादि शस्त्रों से सुसज्जित था और कवच को धारण किए हुए था। वेदी से निकले हुए उस पुरुष को देखकर वशिष्ठ जी ने उसे चहुवान नाम से संबोधन किया और उसी समय वेद मंत्रो को पढ़ते हुए उसका राज्याभिषेक करके उसे राक्षसों से युद्ध

करने की आज्ञा दी। जब चाहुवान जी ऋषि की आज्ञा मान राक्षसों से युद्ध करने लगे तब वशिष्ठ जी ने इनकी सहायता करने के लिये देवी आशापुरा जी का आह्वान किया और देवी आशापुरा जी ने सिंह पर सवार होकर सब अस्त्रशस्त्रों को धारण किए हुए आकर संग्राम करते हुए चाहुवान जी की सहायता की। यंत्रकेतु नामक राक्षस को चहुवान जी ने मारा और धूम्रकेतु का संहार देवी जी ने स्वयं किया। उक्त दोनों नेताओं के मारे जाने पर समस्त राक्षस दल भाग उठा। तब देवी जी ने प्रसन्न होकर चाहुवान जी से कहा कि—हे पुत्र मेरा नाम आशापुरा है, तू मुझे अपनी कुल देवी मान, मेरे नाम के स्मरण मात्र से मनवांछित फल प्राप्त होता है। इस प्रकार आशीर्वाद देकर देवी तो अंतर्ध्यान होगई, उधर अग्निकुण्ड में से हुंकार शब्द करता हुआ एक चार मुखवाला पुरुष उत्पन्न हुआ जो अपने चारों मुखों से चारों वेदों का उच्चारण कर रहा था, जिसे देख कर सब ऋषियों ने उसकी स्तुति की और उस पुरुष ने सबको आशीर्वाद दिया और चारों अग्नि से उत्पन्न हुए क्षत्रियों का गोत्र, वेद, बता वह अंतर्ध्यान होगया। उसी समय दुर्वासा ऋषि भी वहां आ उपस्थित हुए जिन्हें देख कर वशिष्ठ जी बोले कि यदि अब भी राक्षस उपद्रव करेंगे तो यह अग्निकुलवाले क्षत्री हमारी रक्षा करेंगे, यद्यपि क्षत्रियों की सनातन से छत्तीस वंश चले आते है किंतु ये चार क्षत्री उन सब में श्रेष्ठ हैं।

कवि कहता है कि पृथ्वीराज चाहुवान जिनका यश इस ग्रंथ में वर्णन किया गया है उसी अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुए चाहुवान के वंश में हैं, जिन्हों ने उत्पन्न होते ही ब्राह्मणों की रक्षा की।

चाहुवान जी की कीर्ति चतुर्दिक फैल गई। समय पाकर उनसे सामंत देव नामक उन्हीं के समान प्रतापी पुत्र हुआ उनका पुत्र महादेव हुआ। उसके पश्चात मोहंत, अजय सिंह, रामसिंह, बीरसिंह, विन्दसूर, उदारहार, अशोक, शंकाविडार, वैरसिंह, वीरसिंह, वीरदण्ड, अरिमत, मानिकराय, महासिंह, सग्राम, चंद्रगुप्त, प्रतापसिंह, मोहसिंह, सेनराय, संप्रत्तिराय, नाग हस्त, स्थूलनंद, आनंद राज, लोहधीर, धर्म्मसार, त्रिवुधसिंह, योगसूर, चंदराय, कृष्णराज, हर हर राय, बालन्न राय, प्रथवराय, अनेय और धर्म्माधिराज हुए, धर्म्माधिराज का पुत्र * बीसलदेव अजमेर की गद्दी पर बैठा,—इसने ६४ वर्ष पर्य्यंत बड़े न्याय से राज्य किया किंतु अंतिम समय में शाप वश राक्षस शरीर को पाकर उसने बड़ा उपद्रव किया। बीसल देव जी के सारँग देव और सारँग देव जी के आनल राज नाम से पुत्र हुआ। आना राजा जब अपनी माता गौरी के गर्भ में ही थे तब इनके पिता सारँग देव जी ढुंढा राक्षस के हाथ से मारे गए थे। इसी से इनकी माता ने फिर अजमेर में रहना उचित न जाना और वह अपने पिता के घर रणथंभौर चली गई—वहां (गौरी) उनके गर्भ से आनल देव का जन्म हुआ। आना राजा का पालन पोषण इनके ननिहाल में हुआ, वहां ही ये युवा अवस्था को प्राप्त हो नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने में निपुण हुए। नित नव विकट बन प्रांत में जाकर अहेर करना तथा अन्यान्य बीरता और पौरुष के कार्य्य करना ही इनका व्यवसाय था। इस प्रकार अवस्था के साथ साथ जब इनकी बुद्धि का भी विकास हुआ तो एक दिन ये अपनी माता से बोले कि हे माता मै नहीं जानता कि मेरा जन्म किस वंश में है सो कृपा कर बतलाइए? पुत्र का ऐसा प्रश्न सुन कर गौरी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र इस बात को न पूछ, इसके स्मरण करने मात्र से मेरे चित्त में भय करुणा और दुःख का संचार होता है। यह सुन आन्हल देव जी पुनः बोले कि हे माता क्या मैं ऐसे अप्रसिद्ध वंश में हूं कि न तो बंदीजन मेरे पिता का नाम उच्चारण करते हैं, न मैंने कभी अपने पितरों का श्राद्ध किया, न एक

* चाहुवान जी से बीसल देव जी तक १७३ पीढ़ी होती हैं किन्तु मूल ग्रंथ में केवल १६ पीढ़ी के नाम लिखे पाए जाते हैं और ज्ञात होता है कि शेष नामावली वर्णन के छंद नष्ट हो गए है। उक्त १७३ पीढ़ी के क्रम से नामावली बूंदी राज वंशावली मे दी हुई है।

चिल्लू जल ही उन्हें अर्पण किया, मैं अपने गोत्र और वेद को भी नहीं जानता, मातुल वंश से प्रसिद्ध होना क्या वीरों को शोभा देता है। या तो मै पिता का वैर लूंगा या अपने ही प्राण दूंगा। आप सत्य सत्य क्यों नहीं कहतीं। तब गौरी ने इसके उत्तर में संक्षेप से ढुंढा नामक राक्षस के हाथ से सारँग देव जी के बध की कथा का वर्णन करके कहा कि यह वार्ता किसी से कहना मत, परंतु इससे आना राजा को संतोष न हुआ। इसलिये वे बोले कि हे माता धर्म्म के लिये, बलि, पाण्डव, श्री रामचंद्र, राजा नल, और हरिश्चंद्र इत्यादि राजाओं ने असीम कष्ट सहे पर उसे छोड़ा नहीं। हे माता! पिता का बदला लेना ही पुत्र धर्म्म है सो आप निर्भय हो कर इस कथा को विधि-पूर्वक आद्योपान्त कह डालिए। इसमें मुझे यह एक परम आश्चर्य्यदायक विषय ज्ञात होता है कि बीसल देव जी ने मनुष्य से राक्षस शरीर कैसे पाया। मैं आप से प्रण करके कहता हूं कि यदि आपने मुझसे इस विषय को स्पष्ट करके न कहा तो मैं सर्वथा अपने प्राण दे दूगा। इस पर पुनः आना की माता ने उत्तर दिया कि उस कथा के सुनने से चित्तभंग होने के सिवाय और कुछ लाभ नहीं, जो विषय अपने पराक्रम के बाहर हो उसमें हस्तक्षेप करना केवल हतोत्साह का कारण होता है। तब पुनः आना ने प्रत्युत्तर दिया कि यद्यपि आपका वचन सर्वथा मान्य और उक्तियुक्त है तथापि केवल कथा सुनने में क्या हानि है, यदि कथाओं के सुनने में हानि होती तो यह पुराणादि बनाए ही क्यों जाते। हे माता होनहार अमिट है। आप कहती क्यों नहीं?

इस प्रकार पुत्र के धीर गंभीर वचन सुनकर गौरी बोली कि हे पुत्र यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो इस प्रभावोत्पादक और अजवर्द्धक कथा को सावधान हो कर सुन। आबूराज पर्वत पर वशिष्ठ-ऋषिकृत यज्ञ से उत्पन्न हुए चाहुवान जी से कई एक पीढ़ी पीछे धर्म्माधि नामक राजा हुआ और धर्म्माधि से वीसल देव हुआ। धर्म्माधि का देहान्त होने पीछे उन का पुत्र बीसल देव स० ८२१ वैशाष सुदि १ शुक्रवार को अजमेर के राजसिंहासन पर बैठा। बीसल देव के सिंहासन पर बैठने ही अजमेर नगर की शोभा दूनी हो गई। यह धर्मज्ञ राजा निरंतर अपना धर्म्म धारण किए हुए कभी अधर्म्म कार्य्य को मन में स्थान भी न देता था, नीति और न्याय का पालन करते हुए उचित रीति से प्रजा से धन संचय कर धर्म्म कार्य्यों में व्यय करता और अधर्म्म का निषिद्ध धन कभी खजाने में न आने देता। ऐसे उस न्यायपरायण बीसल देव के राज्य में चारों वर्ण अपने अपने धर्म्म पर आरूढ़ थे और उसके राज्यकर्मचारीगण दत्त-चित्त हो कर स्वामिसेवा करते थे। उक्त बीसल देव जी के पँड़िहारिन पटरानी से सारँग देव नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ परन्तु पुत्र के जन्मते ही जब उसकी माता का देहान्त हो गया तो बीसल देव जी ने एक कन्यावत्सला वणिक स्त्री को सारँग देव जी के पालन पोषण पर नियत किया। निदान उस वणिक स्त्री ने अपनी कन्या नंदनी और सारँग देव जी का पालन पोषण किया। दोनों में जन्म काल से साथ साथ रहने के कारण गाढ़ी प्रीति हो गई थी। जब नन्दिनी की उमर ६ वर्ष की हुई तो बीसल देव जी ने एक सुन्दर वणिक युवा वर के साथ उसका विवाह कर दिया किन्तु दैवयोग से उस युवा को सिंह ने भक्षण कर लिया और वह कन्या विधवा हो गई। इस से सारँग देव जी के हृदय में ऐसा शोक हुआ कि वे शस्त्र बाँधने, अहेर करने इत्यादि समस्त राजकीय व्यवसायों से विरक्त हो बैठे। पुत्र का यह हाल देख कर राजा को बड़ा खेद हुआ और इसलिये उसने अनेक इतिहास पुराणादिकों के प्रमाण देते हुए सारँग देव जी को समझाया कि मरण जीवन तो यह ससार का नियम ही है, इस विषय पर शोकग्रस्त हो अपने व्यवसाय को छोड़ना बुद्धिमानी नहीं है। इस पर जब सारँग देव जी को कुछ चेत हुआ तो बीसल देव जी ने सारँग देव जी के साथ में कृपाल राय कायस्थ मुकुन्द प्रोहित और साँचोर के राजा नरसिंहभान के साथ बहुत सी फौज देकर उन्हे संभर में राज्य करने की आज्ञा दी। सारँग देव जी भी पिता की आज्ञा मान गाजे

बाजे से राह में कई एक मुकाम करते हुए संभर नगर में जा पहुंचे। सारँग देव जी का आगमन सुन वहां के यादव सर्दारों ने अगवानी दे कर सारँग देव जी को बड़े आदर से लिया। नगर के सब लोगों में भी जब यह चर्चा फैल गई तो उन सब लोगों ने आ आ कर नजरें देनी शुरु कीं और यादव वंशीय देवराज के पुत्र देव दत्त ने गौरी नामक अपनी कन्या वीर सारँग देव जी को ब्याह दी।

इधर बीसल देव जी स्वयं शिकार करने पधारे। शिकार से लौटते समय नगर के निकट एक परम रम्य भूमि देख कर मंत्रियों को वहां पर एक तलाब बनवाए जाने की उन्होंने आज्ञा दी। फिर नगर मे आ अपने सब सूर सामंत कार्य्यकर्ता अथवा अन्य महज्जनों को बुला कर उन्होंने एक सभा की। सायंकाल से अर्द्ध रात्रि पर्य्यन्त नाना प्रकार के नृत्य गान वाद्य इत्यादि होते रहे तदनंतर सभा विसर्जित हुई और महाराज बीसल देव जी रनिवास मे पधारे।

महाराज बीसल देव जी की कई रानियाँ थी किंतु महाराज का प्रेम पँवारिन पटरानी पर अधिक था जो वास्तव में रूप लावण्य और गुणों में सब रानियों से अधिक होने के कारण राजा की परम प्यारी थी। इसी से अन्य रानियाँ उससे सवत भाव से डाह करती हुई महाराज की भी शत्रु होगई। इस हेतु उन्होंने परस्पर सम्मति करके एक योगिनी को बुलवाकर उससे अपना दुःख निवेदन किया। तब योगिनी ने उत्तर दिया कि यदि कहिए तो मै तुम्हारी उस सवत की जीवहानि कर दूं, कहिए तो उन दोनों में परस्पर विरोध करवा दूं अथवा राजा को नपुसक कर दूं। निदान योगिनी का अंतिम प्रस्ताव सब रानियों ने स्वीकार किया। योगिनी ने तत्र शास्त्र द्वारा कुछ ऐसा उपाय किया कि बीसल देव जी उसी समय सहसा नपुंसक हो गए।

जब बीसल देव जी को अपने नपुंसकत्व का ज्ञान हुआ तो वे मन मे अत्यंत शोकातुर हो कर ब्रह्मचर्य्य से रहने लगे और पुष्कर जी में कार्तिक स्नान करते हुए गोकर्ण महात्म को श्रवण करनेलगे जिसमे महादेव गोकर्ण जी के पूजने का अनंत महात्म्य जान कर उन्होंने अपने पुनः पुंसकत्व को प्राप्त होने की अभिलाषा से गोकर्ण की यात्रा की। उस स्थान की शोभा देख कर राजा को बड़ा आश्चर्य्य और उत्साह हुआ। उस आनंदमय स्थान में विचरण करते हुए राजा ने देखा कि पर्व्वत की कंदरा में एक योगिराज विराजमान हैं जिन्हें देख कर राजा मे पास जा विनीत भाव से दण्डवत की और अपना नाम ग्राम कह सुनाया जिसे सुन कर योगिराज अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने आशीर्वाद देते हुए बीसल देव जी को आदर से आसन दिया और कहा कि हे राजन् यहाँ पर जो शिव गोकर्ण जी का अन्तःकर्ण से ध्यान कर निराहारवृत करते हुए सेवन करता है वह यथेच्छ फल को पाता है। ऐसा कहकर मुनि तुरत अंतर-ध्यान हो गए। निदान बीसल देव जी ने ऋषि के आज्ञानुसार विधिपूर्वक शिवार्चन कर तीन उप-वास किए। जब तीसरा दिन व्यतीत हुआ तो शिव प्रेरित अप्सराओ ने आकर बीसल देव जी से कहा कि महादेव गोकर्ण जी ने आप पर प्रसन्न हो कर आपको पुनः पुंसकत्व दिया। अब आप उठिए और घर जाइए। उसी समय बीसल देव जी को भी अपने पुरुषत्व प्राप्त होने का ज्ञान हुआ तो वे प्रसन्नता पूर्व्वक अपने शिविर मे आए और अपने मंत्रियों को उसी स्थल पर अनुपम बाग तड़ाग सुशोभित एक नगर बसाने की आज्ञा देकर आप अजमेर पधारे और दो दिन का रास्ता एक दिन मे तै करते हुए अजमेर मे जा पहुंचे और तुरन्त ही पँवारिन रानी के पास जाकर उन्होंने आद्योपान्त सब वृतांत कह सुनाया।

किन्तु उस समय से बीसल देव जी की विषय तृष्णा दिन प्रति दिन इस प्रकार बढ़ने लगी कि उन्हें कभी सतोष न होता और इसलिये यह उप-द्रव करने लगे कि नगर की जिस स्त्री के सौंदर्य्य और यौवन की वार्ता सुनते उसे तुरंत ही अपने पास लाए जाने की कठिन आज्ञा देते और जो इस दुराज्ञा के पालन में क्षणमात्र का विलम्ब होता तो आप स्वयं उसके घर जा उसका सतीत्व नाश

करते और कुटुम्ब के मनुष्यों को प्राण दराड देते जिससे नगर के लोगों ने अति दुखित हो कर प्रधान से पुकार की कि अब हम लोगों को बड़ा कष्ट है इसलिये अब हम अजमेर छोड़ते हैं। तब सब राज्यकर्मचारियों ने मिल कर बीसल देव जी से राजधर्म्म वर्णन करते हुए विनीत भाव से प्रार्थना की कि आप ऐसे यशस्वी पुरुष को यह कर्म शोभा नहीं देता। तब राजा ने उत्तर दिया कि यद्यपि मैं यह सब जानता हूं पर क्या करूं कामाग्नि की बाहुल्यता के कारण मेरा मन मेरे वश में नहीं है। अच्छा अब जो कुछ तुम लोग कहोगे वही मैं करूंगा और तुरंत "प्रधान कर्मचारी" कृपाल को आज्ञा दी कि मेरी इच्छा दिग्विजय करने की है इस हेतु तुम फौज और खजाना लेकर बीसल सरोवर पर चलो पीछे मै भी आना हूं। बीसल देव जी का ऐसा विचार सुन कर उनके सब इष्ट मित्र और आज्ञाकारी शूरवीर पुरुष, मंडोवर का मोहन सिंह पड़िहार, रामगौर तोवर, गहलौत, प्रमार, जैसलमेर के भाटी बघेला जादो और बिलोचिस्तान का बलोच इत्यादि बीसल सरोवर पर आ उपस्थित हुए। केवल गुजरात का चालुक्य अर्थात् सोलकी राजा न आया, इस पर बीसल देव जी ने अत्यन्त कुपित हो कर जैतसिंह गोलवाल को अजमेर की रक्षा करने के लिये छोड़ * गुजरात पर चढ़ाई कर दी और बालुका राय की प्रजा को लूटते हुए वे आगे बढ़ने लगे। यह खबर सुन कर बालुका राय भी लड़ने को तय्यार हो गया और अपने प्रोहित श्रीकण्ठ भट्ट को बीसल देव जी के पास भेज कर कहला भेजा कि आप राजा होकर रय्यत को क्यों दुःख देते है, जो कुछ बात हो तो हमारा और आपका निबटेरा हो जाय, मैं तो अब तक विरोध का कोई कारण नहीं देखता वृथा सैन सहार करने से क्या लाभ है, इसलिये उचित यही है कि आप अजमेर को चले जाइए और यदि हठ वश युद्ध करना ही आपका अभिप्राय है तो हम भी तय्यार हैं। यह सुन कर बीसल देव जी ने अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रच कर बालुका राय पर आक्रमण किया। उधर से बालुका राय ने भी अपनी सेना का सर्पव्यूह रच कर युद्ध आरम्भ किया। दोनों दल में घमासान युद्ध होने लगा। दोनों तरफ के योद्धा प्रचार प्रचार कर एक दूसरे पर आघात करने और शत्रु के कठोर आघातों को सहते प्राणों का मोह छोड़ अपनी बीरता का परिचय देने लगे। क्षण मात्र में रुधिर की नदी बह निकली और उस अखंड बीर भूमि में घायल और मृतकों के कारण करुणा और बीभत्स रस का भी अभाव न रहा। ऐसे ही समय में हाथी पर बैठे हुए चाहुवान और अश्वारूढ़ चालुक्य का साम्हना होगया, जिन्होंने स्वयं परस्पर वीरता से युद्ध करके अपनी अपनी सैन्य का मन द्विगुण उत्तेजित कर दिया। निदान प्रातः काल से युद्ध होते होते जब सायंकाल हो गया तो दोनों सेनाएँ विश्राम करने के लिये अपने अपने डेरों पर आ जमीं; रात को चालुक्य के मन्त्री पावासुर तोंअर (क्षत्री) ने राजा को एक झूठी पत्री[1] दिखा कर महलों को उलटा भेज दिया और आप चाहुवान के मंत्री से मिल कर स्वयं राजा के पास गया और हार मानना स्वीकार कर के उसने दराड देने का भी प्रस्ताव किया। किन्तु बीसल देव जी ने आज्ञा दी कि यहां पर मेरा महल बनवाया जाय और मेरे नाम से एक नगर भी बसाया जाय। निदान बुद्धिमान पावांसुर ने तुरत ही बीसल नगर की नीव डाल दी। बीसल के नगर में पैठते ही दूतनी ने खबर दी कि यहां पर एक वणिक पुत्री अत्यंत रूपवती है इसलिये बीसल देव जी ने तुरन्त ही उसे बुला

* इस गुजरात विजय के सवत् के विषय में रासो में सोल सेत नव सत्त अध, वरस तीस छ अग्ग। पुर पट्टन बीसल नृपति, राजत सयलह जग्ग॥ लिखा है जिससे सवत् ८८६ सिद्ध होता है किन्तु रासो के प्रसिद्ध ज्ञाता पाण्डत मोहनलाल विष्णुलाल पड्या ने अपनी सप्रमाण टिप्पणी द्वारा उसे १०८६ सिद्ध किया है।

१ मूल ग्रन्थ में—मिले सकल चालुक के मंत्रिय। झूठी एक बनाई पत्रिय॥ सो कर आव राज के दिअव। तुम घर जाहु कहा अब थिअम॥ छन्द हैं जिस से पत्री का आशय स्पष्ट तो नहीं है परन्तु इस से ऐसा भासित होता है कि उक्त पत्र में चाहुवान की ओर से सन्धि का प्रस्ताव कल्पित किया गया होगा।

उसके साथ व्याह किया और तब वे अमजेर को आए और पुनः विषयतृप्ति में लिप्त हो कर दिन बिताने लगे। एक दिन उसी वाणिक कन्या ने बीसल जी को प्रसन्न देख कर कहा कि पुष्कर जी में एक बाणिक कन्या तपस्या करती है उसका रूप लावण्य आपके स्वाद लेने योग्य है। तदुपरान्त कुछ दिन पश्चात् दीपमालिका के उपरान्त की एकादशी आई। उस दिन पुष्कर जी के मेले मे बड़ी दूर दूर के यात्री आए थे। निदान बीसलदेव जी भी यहां जा पहुँचे और उक्त वणिक कन्या को देखकर मोहित हो गए। अत्यन्त कामातुर और अधीर हो कर कार्तिक सुदी १२ को तपस्या करती हुई उस गौरी नामक वणिक कन्या का सतीत्व उन्होने नष्ट करही डाला। इससे उसने अत्यन्त क्रुद्ध और विकल हो कर बीसलदेव जी को शाप दिया कि तुमने यह राक्षसी कर्म किया है इसलिये तुम मनुष्य का मॉस भक्षण करने वाले राक्षस हो, किन्तु इस शाप से राजा को अत्यन्त भयभीत देखकर उसने पुनः कहा कि तुम्हारा पोता ही तुम्हारा उद्धार करेगा। ऐसा कह कर उस वणिक कन्या * गौरी ने प्राण त्याग दिया।

इस प्रकार शापित हो कर बीसलदेव जी अजमेर आए और शाप से मोक्ष पाने के लिये उन्होंने गोकर्ण जी की यात्रा की किन्तु कर्म्म का भोग करना यह प्रकृति का नियम है इसलिये बीसल तड़ाग पर जब बिसलदेव वायु सेवन कर रहे थे कि सर्प ने डँस लिया जिससे उसी समय उनका देहान्त हो गया। रानी यह खबर पा उनके उस मृत शरीर के साथ सती हो गई। जिस समय बीसलदेव जी की रथी में आग लगाई गई उसकी अग्नि की लौ के साथ ही एक महा भयानक मूर्ति उत्पन्न होकर उपस्थित मनुष्यों का भक्षण करने लगी। उस राक्षस को जहां जहा मनुष्य मिलते वह ढूँढ ढूँढ कर खा लेता। इसी से लोगों ने उसका नाम ढुंढा रख लिया।

ढुंढा के उपद्रव की खबर पा कर सारँग देव जी ने अपनी रानी गौरी को तो उनके पिता के घर रणथंभौर भेज दिया और आप एक सहस्र सेना लेकर उस दानव से युद्ध करने के लिये अजमेर को चले गए। वहाँ जा कर देखा तो सब अजमेर ऊजाड़ पाई। निदान तीन दिन तक प्रतीक्षा की पर जब ढुंढा का कोई पता न लगा तो सारँगदेव जी निर्भय हो पुनः अजमेर को बसाने लगे किन्तु एकादशी के प्रातः काल ही दानव आन पहुँचा जिसे देख सारँगदेव जी ससैन्य ढुंढा पर अस्त्र शस्त्र की वर्षा करने लगे किन्तु उस पर इन शस्त्रों का कुछ भी असर न होता था, वह बराबर एक एक को पकड़ पकड़ के खाने लगा और अन्त में सारँगदेव जी के भी उसने प्राँण ले लिए।

यह कथा सुन कर आना जी बोले कि हे माता अब आप आज्ञा दें तो मैं जाकर उस राक्षस को मार आऊँ। तब गौरी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र यह तूं क्या कहता है। राक्षस से मनुष्य क्योकर युद्ध कर सकता है।

यह सुन आना जी ने पुनः उत्तर दिया कि यदि मैं युद्ध में नहीं जीत सकता तो उसे सेवा से प्रसन्न करके अजमेर में अपना राज्य जमाऊंगा क्योंकि सेवा सुश्रुषा एक ऐसी वस्तु है कि देव, दानव, राक्षस, ऋषि, मुनि, मनुष्य प्रेतादि जो किसी प्रकार हाथ नहीं आते वे सेवा से वश हो सकते है और मेरा तो यह संकल्प है कि इस सिर पर या तो छत्र धारण करके अजमेर का राज्य करूंगा या उस दानव से लड़कर इसे उसका भक्ष्य बनाकर प्राण दूंगा। निदान माता ने बहुत कुछ समझाया बुझाया परन्तु आना ने एक न मानी और वह उसी क्षण अजमेर को चल दिया।

आना राजा ऊजाड़ अजमेर में पहुँच कर ढुंढा को खोजने लगा। अन्त में उसे नगर के बाहर जंगल में पहाड़ की गुफा में सोते हुए देख निधड़क उसके पास चला गया और बिना कुछ बिचार किए

* यह वणिक कन्या गौरी वही सारंग देव जी की धर्मिन थी जिसका वर्णन प्रथम हो चुका है। जब इसका पति सिंह से मारा गया तो इसने संसार को असार जान अपनी सपत्नि ब्राह्मणों को पुण्य कर दी, और आप ब्रह्मचर्य्यव्रत ले पुष्कर क्षेत्र में तप करने लगी।

हुए उसने उसके सीस पर खड्ग का एक आघात किया जिससे वह तुरंत जम्हाता हुआ उठ बैठा और एक सर्वाङ्ग सुन्दर राजसी लक्षणों संयुक्त एक बालक को अपने सम्मुख खड़ा देखकर वह बोला कि हे बालक तूं कौन है ? तेरे माता पिता का नाम क्या है और तू यहां किस हेतु से आया है ? इसपर आना ने अपने मन में यह बिचार कर कि " जो यह मुझे निगल लेगा तो मै इसका पेट फाड़कर निकल आऊंगा " उत्तर दिया कि मै बीसलदेव जी के पुत्र सारंगदेव जी का पुत्र हूं। मेरी माता का नाम गौरी है और मै यहां आपके दर्शन करने के लिये आया हूं। तब ढुंढा ने पुनः कहा कि क्या तू दरिद्री है अथवा कुष्ठी है या स्त्री का वियोगी है या बड़े का शत्रु है या तेरा मानभंग हुआ है या गुरु द्वारा शापित है या संसार से विरक्त है या तेरी माता मर गई या तेरी स्त्री तुझे आलिंगन नहीं करती जो तू मेरे पास मरने को आया है। तब पुनः आना जी ने उत्तर दिया कि यह कुछ भी नहीं है। मै केवल आपकी सेवा करने के ही अभिप्राय से यहां आया हूं मै तभी तक दीन हीन था जबतक आप के श्री चरणों के दर्शन मुझे नहीं हुए थे। तब पुनः ढुंढा ने कहा कि अब तेरी क्या अभिलाषा है, तू जिसमें प्रसन्न हो सोई मै करूं। तब आना जी ने उत्तर दिया कि मै आपके पास यह निश्चय करके आया हूं कि जो मेरे मन की साधना पूजेगी तो मैं आजन्म आपही की सेवा करूंगा, सो यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह अजमेर की भूमि मुझे दे दीजिए कि मैं इसे फिर से बसा कर अपने पुरुषाओं का नाम चलाऊं।

ढुंढा ने प्रसन्न होकर आना जी को अपने हाथ से तलवार बाँध अजमेर का अक्षय राज करने का आशीर्वाद दिया और रविवार को पूजन करने की आज्ञा दे कर वह आकाश में लोप हो गया।

आकाश मार्ग में जाता हुआ ढुंढा तृषाकुल हो कर गंगा के किनारे जल पीने को उतरा। वहां पर नेम ऋषि जी का स्थान था जिन्होंने देख कर ढुंढा को पूछा कि तु कौन है। तब ढुंढा ने अपना आद्योपान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया जिसे सुन ऋषि ने उसे काशीजी में जाकर तपस्या करने को कहा। ऋषि का उपदेश पाकर ढुंढा ने उसी समय काशी का मार्ग लिया। यमुना के किनारे पहुँच कर पुनः ढुंढा नीचे उतरा और यमुना में पैठ कर जल-क्रीड़ा करने लगा। अर्द्धरात्रि को जल की घरघराहट का शब्द सुन कर किनारे पर वास करते हुए हारिफ ऋषि ने कुटी से निकल कर पूछा कि तू कौन है और यहां क्यों आया ? निदान ढुंढा ने हारिफ ऋषि से भी अपना आद्योपान्त वृत्तांत कह सुनाया और कहा कि हे मुनिवर आप त्रिकालज्ञ हैं सो मुझ पर दया कर के ऐसा उपाय बतलाइए कि जिससे मेरा उद्धार हो जाय। ढुंढा का वचन सुन कर ऋषि जी ने उसे तप करने का उपदेश किया। वह भी ऋषि के वचन को मान कर वहीं तपस्या करने लगा। कुछ काल बीतने पर हारिफ जी तीर्थयात्रा को चले गए और ढुंढा से कह गए कि जब तक मै न आऊ यहां से न जाना। निदान ढुंढा ने उसी स्थान पर ३८० वर्ष पर्य्यन्त तप किया।

किसी समय में हस्तिनापूर में राज्य करते हुए पाण्डव वंशीय किसी एक अनंग नामक राजा ने यमुना के किनारे पर एक गाँव बसाया था। उसी स्थान पर तोंअर वंशीय अनंगपाल जी ने दिल्ली बसाई और वह अपने समस्त राजसी परिकर सहित वहां रहने लगा। अनगपाल जी की एक अष्ट वर्षीया कन्या श्रावण में यमुना में स्नान कर कालिन्दी तटस्थ निगमबोध भवानी की पूजा करने को जाती थी। एक दिन जल वर्षा होने के कारण वह सहेलियों सहित ढुंढा की गुहा में घुस गई और वहां ढुंढा की उस दीर्घकाय मूर्ति को देख वरदान पाने की इच्छा से ढुंढा का पूजन करने लगी। निदान इस प्रकार जब वह राजकुमारी ५ वर्ष २ महीने पूजा कर चुकी तो ढुंढा ने प्रसन्न हो कर कहा कि हे राजकुमारी मैं तुम्हारी सेवा से परम सतुष्ट हुआ और तुम्हे वर देता हूं कि तुम्हारी मनोभिलाषा पूर्ण होगी। यों कहकर वह आप काशीजी को चला गया।

ढुंढा ने काशी में जाकर गंगा के किनारे वेदिका रच कर अपने अंग के सौ टुकड़े करके होम कर दिए जिसकी मूल जोति से पृथ्वीराज, जिन्हा से कविचन्द, नेत्रों से पति और पितृकुल का नाश करने वाली संयोगता और अन्यान्य अंगों से पृथ्वी-राज के १०० सामंत लोग भिन्न भिन्न स्थानों में उत्पन्न हुए।

पृथ्वीराज के सामंतो की नामावली।

नम्बर	नाम सामंत	कौन क्षत्री	जन्मस्थान
१	निभ्भर (निढ्ढुर)	राठौर	कनवज्ज
२	जैतसिंह	सलष	आबूगढ़
३	बलभद्र		नागौर
४	कविचन्द		लाहौर
५	अत्ताताई		दिल्ली
६	राम दे राव		जालौर
७	गोइन्द राव		धामनिगढ़
८	दाहिम्मराय		बयाना
९	हरसिंह	वैश्य	,,
१०	अचलेसभान		जैसलमेर
११	पज्जून राय	,,	चित्तौर
१२	जंघार भीम	,,	कलिकुण्ड
१३	नरसिंह राय		समियान गढ़
१४	देवरा धीर		पीछौरदेश (पेशावर)
१५	रणधीर		,, ,,
१६	भीमंग या जघार भीम		जूनगढ़ या झूनागढ़
१७	सारंग राव	मोरी	
१८	वारडह राय		
१९	सहसकरन		
२०	कन्हराय	चहुवान	अजमेर
२१	तेजल्लराय	,,	जुनौर
२२	कैमास	,,	
२३	नारन्नराय		भटनेर
२४	भोहाराय	चदेल	
२५	अरसी राय	,,	पानीपत
२६	भोरा भुअग	चालुक्य	
२७	जावलाराय		दक्षिणदेश
२८	जल्हनराय		,,
२९	राजा पूरनमल्ल	चहुवान	सूरत
३०	रामराय	बड़गूजर	
३१	हड्डा हम्मीर	,,	
३२	नैनवारिद्ध	,,	
३३			
३४	खेते दोनो भाई	खँगार	
३५	कनकराय	प्रमार	कनवज्ज
३६	सांखलो राय	,,	

नोट—मूलग्रन्थ में इतने ही नाम दिए है। ऐसा अनुमान होता है कि यहां के कुछ छन्द नष्ट होगए हैं जिनमें और नाम थे।

ढुंढा ने बर देते समय राजकुमारी को एक फल भी दिया था जिसे उसने घर पर आकर तेरह हिस्सों में विभाजित करके अपनी सहेलियों को भी दिया जिनसे १३ सामन्त एक साथही उत्पन्न हुए।

यहां से कवि चन्द अब पुनः वंशावली आरम्भ करता है। ढुंढा से बरदान पा कर आना राजा ने आद्योपान्त सब वृत्तान्त माता से कह सुनाया, और वह माता सहित अजमेर में आकर राज महल मे रहने और नगर को बसाने लगा। उस स्थान के निवासी महाजन और व्यापारी लोग जो भाग कर अन्य देशों में रहने लगे थे उन्हें सादर बुला कर उसने रक्खा और बाजार, हाट चौहट्ट, बगीचे आदि जो जैसे प्रथम थे उन्हें उसी प्रकार सज कर उसने बनवाया। नीति और न्याययुत ७१ वर्ष राज्य करके निज महाराज कुमार जैसिंह को राज्य का अधिकार दे वह आप स्वर्ग वासी हुआ।

जैसिंह देव भी अपने पिता की नाईं न्यायशील और धर्म्मरत महाराज हुए। इन्हों ने बीसल तड़ाग में बड़ा भारी धन पाया था परन्तु इसे राज्यकोष में न लाकर वहाँ का वहीं ब्राह्मण और भिक्षुकों को दान कर दिया था। इन्हो ने १०८ वर्ष राज्य किया और वे अपने पुत्र आनन्द देव को राज्य देकर आप तप करने बन में चले गए। आनन्द देव जी को वाराह रूप का दर्शन हुआ था। इन्होंने भी पिता की भांति १०० वर्ष राज्य करके राज्य का भार निज पुत्र सोमेश्वर को दिया और वे आप तप करने चले गए।

सोमेश्वर जी ने भी अपनी सनातन मर्य्यादा का निर्वाह करते हुए, नीति और न्यायपरायणता से राज्य करना आरम्भ किया। इन धर्म्मप्रिय महाराज के समय में अजमेर नगर का वैभव प्रति दिन बढ़ने और इनका उज्वल यश भी चतुर्दिक फैलने लगा। एक समय का वृत्तान्त है कि किसी परस्पर के विरोध के कारणवश कमधज्ज राय जी ने कन्नौज के राजा विजयपाल जी राठौर की सहायता लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की। इस खबर के सुनते ही अनगपाल जी ने अपनी सेना लेकर जमुना पार आकर डेरा डाल दिया और एक चतुर दूत द्वारा अजमेर के राजा सोमेश्वर जी के पास एक पत्र लिख भेजा जिसका आशय यह था कि कमधज्ज और विजयपाल दिल्ली पर आक्रमण करने आते हैं अस्तु मै तो निज धर्म्मानुसार प्राण देने को सन्नद्ध ही हूं किन्तु यदि आप भी इस गाढ़े समय में सहायता दें तो बहुत अच्छा हो। निदान उक्त पत्र के पाते ही वीर सोमेश्वर ने क्षणमात्र का विलंब न करके अपनी चतुरंगिनी सेना सज कर दिल्ली को कूच कर दिया और कमधज्ज के पहुँचने के पहिले ही पहुँचकर रात्रि को अनंगपाल जी से मिलकर परामर्श करके युद्ध के विषय में ठीक ठीक नियम और उपाय निश्चय करके वे तैय्यार हो बैठे और दूसरे दिन युद्ध हुआ जिसमें घोर सग्राम होने पर दोनो ओर के बड़े बड़े वीर पुरुष काम आए। अन्त में कमधज्ज और विजयपाल की सेना के पैर उखड़ गए और अनगपाल जी की जय हुई। अनगपाल सोमेश्वर जी की वीरता पर बहुत ही प्रसन्न हुए। इसलिये कुछ दिन उन्हें अपने पास रख कर उन्होंने अपनी कन्या के साथ विवाह करके बहुत से दास दासी और दहेज देकर उन्हे सादर बिदा किया और अपनी दूसरी पुत्री का विवाह कन्नौज के राजा विजयपाल जी के साथ कर दिया।

कुछ दिन पीछे सोमेश्वर जी की रानी को गर्भ हुआ और समय पूर्ण होने पर ढुंढा के वरदान के अनुसार विक्रमी अनंद १११५ में पृथ्वीराज का जन्म हुआ जिससे अनंगपाल जी ने बड़ा उत्सव मनाया और दान पुण्य किया। इस खबर को सुन कर पृथ्वीराज की मौसी अर्थात् विजयपाल जी की रानी ने भी बड़ा आनन्द मनाया। निदान जब यह खबर सोमेश्वर जी के पास गई तो उन्होंने भी अगनित द्रव्य दान किया और कवि चंद के पिता "राव बेन" को भी बहुत सा धन घोड़े, हाथी आदि बधाई में दिए और अपने मंत्री को भेज कर पृथ्वीराज को मय उनकी माता के दिल्ली से बुला भेजा। जब पृथ्वीराज दिल्ली

पहँच गए तो सोमेश्वर जी ने ज्योतिषियों को बुलवा कर पुत्र का भविष्य पूछा जिसपर उन्होंने उत्तर दिया कि यह आपका पुत्र अद्वितीय पराक्रमी होगा, दिल्ली, अजमेर और सब पंजाब पर राज्य करेगा, किन्तु तेंतालीस वर्ष की अवस्था में गजनी के बादशाह से कैद किया जाकर मारा जायगा। इस बात को सुन कर सोमेश्वर के अवछिन्न आनंद पर शोक आच्छादित हो गया परंतु लोगों ने यह कह कर समझाया कि जो होनहार है सो कभी किसी को नहीं मालूम। आप इसका विचार न कीजिए। सोमेश्वर जी ने पुनः दरबार में बैठ ज्योतिषियों को बुलवाकर पृथ्वीराज जी की सम्पूर्ण जन्मपत्री सुनाने की आज्ञा दी और ज्योतिषियों ने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि जो इस बालक का जन्म संवत् ११११५ वैशाख बदि २ बृहस्पति को सिद्ध योग. चित्रा नक्षत्र गर नाम कर्ण, ऊषा प्रकास में हुआ सो इसकी लग्न कुण्डली में गुरु, बुध, और शुक्र ये तीन ग्रह दसम स्थान में, अष्टम स्थान में शनि पाँचवें में सोम दूसरे में मंगल, ग्यारहवें में राहु और बारहवें स्थान में सूर्य्य विराजमान है। इसका फल यह है कि इसकी अवस्था ४३ वर्ष की होगी और यह दिल्ली का छत्र धारण करके अपना राज्य बहुत बढ़ावेंगे। इसी से इसका नाम पृथ्वीराज होगा। इसको आपसे आप असंख्य धन मिलेगा और यह १० स्त्रियों से व्याह करेगा। इस प्रकार जन्मपत्री का फल सुनकर अजमेर नगर के बाल वृद्ध सब लोग आनंद में मग्न होकर बधाई करने लगे।

जिस दिन पृथ्वीराज का जन्म हुआ बड़े बड़े किलों की चोटियाँ हिलने लगीं। स्थान स्थान पर भूचाल हुआ। शत्रुओं के स्थान पर नाना प्रकार के उपद्रव हुए। बड़ी बड़ी गढ़ी और कोट लोट गए। नादियों में अप्रमाण जल की बाढ़ आई। प्रत्येक नगर में कुछ ऐसा विचित्र चमत्कार हुआ कि जिससे वहां के भूमियाओं की बुद्धि चकित हो गई। खुरासान इत्यादि देशों में खरभर पड़ गया। स्त्रियों का गर्भपात हुआ और जहां तहां भूत बैतालों का प्रचार अधिक हुआ।

प्रायः साधारण बालक दो वर्ष की अवस्था में जितना बड़ा होता है पृथ्वीराज जी वर्ष भर की ही अवस्था में उससे कहीं बड़े थे। दिन प्रति दिन उनकी शोभा बढ़ती जाती थी जिसे देख कर इनके माता पिता और समस्त राज्य के कर्म्मचारी आनन्द में मग्न थे। इसी प्रकार जब पृथ्वीराज जी की अवस्था पाँच सात वर्ष की हुई तो वे अपने आजन्म साथी छोटे छोटे सामन्तों के साथ खेलने लगे। उन्हें साथ में भोजन कराते और खेल में जो अधिक वीरता का कार्य्य करता उसे पारितोषिक देते। निदान जिस प्रकार अवस्था बढ़ती जाती थी उसी प्रकार उनके राजसी गुण और दैवदत्त अलौकिक शक्तियाँ भी प्रति दिन प्रबल होती जातीं थीं। पृथ्वीराज जी १२ वर्ष की अवस्था में ही घोड़े पर सवार होने तथा बाण और बरछा चलाने में निपुण होगए और दिन प्रति दिन बड़े बड़े बाराह और शूकरों का शिकार किया करते। तेरह वर्ष की अवस्था होने पर इन्होंने गुरु राम से अनेक विद्याओं का अध्ययन करना आरम्भ किया और थोड़े ही दिनों में छओं भाषाओं को सीख कर चौदह विद्या और ६४ कलाओं में वे निपुण हो गए।

एक दिन चन्द्र की स्त्री ने अपने घर में अपने पति को प्रसन्न देख कर पूछा कि हे सब शास्त्रों के जानने वाले प्राणपति मुझसे यह कहिए कि कौनसा दानव मानव वा राजा कीर्ति गाने योग्य है। इस पर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये नट का बांस पर चढ़ना, सिपाहियों का युद्ध में प्राण देना इत्यादि नाना प्रकार के कर्म मनुष्य कीर्ति के ही लिये करता है किन्तु जिस प्रकार पति बिना स्त्री, सेनापति बिना सैन्य, दांतो के बिना भोजन, शस्त्र धारण किए बिना कीर्ति, जल बिना मीन, क्षत्री बिना शूरता की शोभा नहीं होती उसी प्रकार हरि की भक्ति किए बिना मानव जन्म वृथा है। यह सुन कर स्त्री ने प्रत्युत्तर दिया कि हे चतुर कवि तो फिर तूं ऐसे पृथ्वीराज का यश गान करने में क्यों वृथा समय नष्ट करता है जो स्वयं साधारण मनुष्यों की नाईं हाड़ मांस का पुतला है और निरन्तर संसार की माया

आशा तृष्णा से पीड़ित रहता है। इसको तू छोड़। उसी जगनियंता परमेश्वर का स्मरण क्यो नही करता। यह सुन कविचन्द बोला कि तेरा कहना सत्य है परन्तु मैं इस रीति से चाहुआन के पूर्व्व ऋण से उऋण होता हूं। इस पर स्त्री ने पुनः उत्तर दिया कि जो तू राजा के ऋण का खटका करता है तो गोविन्द ही का स्मरण क्यो नहीं करता जिसमे ससार के ही बन्धन से मुक्त हो जाय। तब कविचद ने पुनः उत्तर दिया कि हे प्रिये मैं उस सर्व्वव्यापी गोविंद कमलासन को देख कर अकुलाया हुआ हू, अब मुझे केवल भक्ति का विलम्ब है और वह परमपिता परमात्मा सूक्ष्म रूप से संसार की प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि देवता और प्रकृति वा तत्त्व इत्यादि सब उसीकी कलाएँ है और मनुष्यो मे वह राजाओ के अश मे बास करता है। इस पर स्त्री ने पुनः उत्तर दिया कि ब्रह्म को ब्रह्म ही मे देखो। यह आपका कैसा एक अनोखा विचार है कि ब्रह्म को मनुष्य रूप मे देखते हो। तब कविचन्द बोला कि तू नहीं जानती कि ईश्वर रग रग में व्याप्त है। तब स्त्री ने कहा कि अच्छा तो मुझे बतलाइए तब जानू। यह सुन कर कविचन्द बोला कि यदि तू सुनना चाहती है तो ध्यान देकर सुन मै कहता हू।



दशम समय।

[दूसरा समय]

परमात्मा के उस अनुपम स्वरूप को नमस्कार करता हूं जिसका ब्रह्मा, विष्णु, महेश निरंतर आराधन करते है, जो कच्छप रूप से पृथ्वी को अपनी पिष्ट पर धारण किए हुए हैं समुद्र जिसका उदर है अग्नि जिसकी जठराग्नि है और सूर्य्य और चन्द्रमा जिसके क्रम से दक्षिण और वाम नेत्र है और भारी पर्व्वत जिसके बाहु हैं। पुनः वह ईश्वर कैसा है कि जिसने मत्स्य रूप धारण करके शंखासुर का बध कर वेदों की रक्षा की—कच्छप रूप को धारण कर पृथ्वी के बोझ को अपनी पीठ पर रक्खा—वाराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष को मार पृथ्वी का उद्धार किया—नृसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा की और हिरणाकुश का बध किया—देवताओं के हित के लिये बामन रूप धारण कर राजा बलि को छल समस्त भूमण्डल को तीन पद मे नापा—परशुराम अवतार धारण कर पिता की आज्ञा से माता का बध किया, सहस्रबाहु को युद्ध में मार २१ वार क्षत्रियों से भूमि निर्बीज कर दी—मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामावतार हो सूर्य्य कुल में जनम धारण कर जो दशरथ के पुत्र कहलाए, पिता की आज्ञा मान १४ वर्ष बन में रह रावणादि दुष्टों का जिन्हो ने संहार किया—और यदुवंश में कृष्णावतार धारण कर वृज की गोपिकाओं मे बिहार करके कंस को विध्वंश कर, महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की रक्षा की। एक समय ब्रह्मा ने कृष्णावतार का निश्चय तत्व लेने के लिये कुछ माया की, किन्तु जब उसका कुछ परिणाम न हुआ और वे आप स्वयं भगवान कृष्णजी की माया में मोहित हो गए तो स्तुति की कि हे भगवन क्षमा कीजिए मैने भूल की, क्योंकि आपको कोई नहीं जान सकता कि आप कैसे हैं और आपमें क्या क्या चमत्कार है इत्यादि—आप कैसे है? न आपका कोई रूप है, न कोई आकार है, न आपका मूल है, न शाखा है और आप से पूर्व्व सूर्य्य, चन्द्रमा, तारागण, विद्या, अविद्या, सिद्धि, ऋद्धि, पीली पृथ्वी, नीला आकाश, स्वेत जल, हरी वायु और रक्त तेज, छाया, माया, काया, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, बस्ती, जंगल, पहाड़ तीनों लोक, समुद्र और उसकी मर्य्यादा, माया, मोह, शोक, दुःख, सुख इत्यादि कुछ भी नहीं थे अर्थात् यह आपही की इच्छा से प्रगट होते हैं और प्रलय होने पर पुनः आपही में लय हो जाते हैं। इस प्रकार स्तुति कर ब्रह्मा ने सब देवताओं से दशावतार की कथा वर्णन करनी आरम्भ की।

मत्स्यावतार।

समुद्र में रहने वाला शखासुर नामक दैत्य ऐसा बली और पराक्रमी हुआ कि जिसके असाधारण उत्पात मे इन्द्र, सुर, नर, मुनि सब दुखी हो गए, उसने ब्रह्मा मे वेद छीन लिए और उन्हे लेकर वह समुद्र में शंख के भीतर छिप रहा—जब समस्त देवताओ ने भगवान का आराधन किया तो प्रभु ने स्वय प्रगट होकर सबको आश्वासन दिया और वे आप मत्स्यरूप धारण कर समुद्र में पैठे और खोजते खोजते दैत्य के पास जाकर उसे मार उसके उदर में से वेदों को निकाल लाए और उन्हें ब्रह्मा को दिया जिससे सब देवता और प्रजा अत्यंत प्रसन्न हुई।

कच्छावतार।

एक समय सनकादिकों ने इन्द्र से पूछा कि श्रीभगवान ने कच्छरूप क्यों धारण किया? यह सुनकर इन्द्र ने उत्तर दिया कि समय पाकर दैत्य ऐसे बलवान हो उठे कि उनके सम्मुख देवताओं का तेज मलीन पड़ गया। तब सब देवता क्षीर सागर के किनारे जा कर आर्त स्वर से लक्ष्मीनारायण से प्रार्थना करने लगे, तब आकाश वाणी हुई कि तुम सब देवता सेन सज कर दानवों से युद्ध करने की तैयारी करो। इस प्रकार वर पा सब देवताओं ने युद्ध के लिये अपनी सेना सजी। उधर से महा बलवान दैत्य लोग भी अपनी सेना सज कर आ जमे। यद्यपि देवताओं

का न तो समूह दानवों के समान था न उनके अस्त्र शस्त्र ही उनसे बढ़ चढ़ के थे किन्तु वे देवताओं का साम्हना न कर सके और उनसे परस्पर मेल करने लगे। तब तक श्रीपुरुषोत्तम भगवान ने आप आकर समुद्र को मथने का प्रस्ताव किया। इस कार्य्य के लिये मंदिराचल पर्व्वत का मथनिया, शेषनाग का नेता बनाकर सुमेरु पर्व्वत को आपने स्वयं अपनी पीठ पर धारण किया। शेषनाग के मुख की ओर दैत्यों ने पकड़ा और देवताओं ने पूँछ पकड़ कर समुद्र का मथन आरम्भ किया। समुद्र में दधि के समान फेन उठने पर प्रथम लक्ष्मी उत्पन्न हुई, उसके पीछे कौत्सुभ मणि, पारिजात (कल्पवृक्ष), सुरा, चन्द्रमा, धेनु, गज, बाज, धन्वंतरि, विष, अमृत, शंख और रम्भा इत्यादि १४ रत्न क्रम से निकले। रम्भा के देखते ही सब दैत्य मोहित हो गए। शेषनाग के विषज्वाल के फुँफकार से सहस्रों दैत्य भस्म हो गए। अंत मे जब रत्नों के परस्पर बाटने की बारी आई तो नारायण ने प्रथम देवता और दैत्यों को अलग अलग दो पंक्तिओं में बिठा कर दैत्यों को मदिरा और देवताओं को अमृत पिलाना आरम्भ किया। राहु को इस विषय में संदेह हो गया। इससे उसने देवताओं की पंक्ति में छलकर बैठना चाहा किंतु चंद्रमा ने इशारे से श्रीविष्णु भगवान को यह जता दिया। विष्णु भगवान की इच्छा होते ही सुदर्शन चक्र ने उस दैत्य को काट कर दो खण्ड कर दिया—इस पर सब दैत्यों ने अत्यंत क्रोधित होकर समस्त देवताओं का नाश कर देने की प्रतिज्ञा की। उधर से देवता लोग भी श्रीविष्णु भगवान का बल पाकर निर्भय हो कर दैत्यों से जुट पड़े। यही देवासुर संग्राम है जिसमें विष्णु भगवान ने देवताओ पर प्रहार किए हुए दैत्यों के प्रचण्ड अस्त्र शस्त्रों को अपनी पीठ पर सहन कर देवताओं को बचाया और सुदर्शन चक्र से दैत्यों का नाश किया।

वाराह अवतार।

एक समय हिरण्याक्ष नामक दानव ने पृथ्वी को हर लिया जिससे देवताओं ने परम दुखी हो कर क्षीर समुद्र के किनारे जा कर श्री शेषशायी नारायण से अवतार धारण कर उक्त दैत्य को मार पृथ्वी को उबारने की प्रार्थना की। इसे सुनकर विष्णु भगवान विकट वाराह रूप धारण कर देवताओं के सम्मुख प्रगट हुए। उनका प्रचण्ड तेज इस प्रकार जाज्वल्यमान हो रहा था मानो शक्ति की भी शक्ति ने यह अद्भुत रूप धारण किया हो। उस पर्व्वत समान शरीर में कोटर ऐसे मुख से निकले हुए दोनों खीसें साक्षात् वैश्वानर अग्नि स्वरूपवत् प्रतीत होते थे। इस प्रकार विकराल रूप धारण कर भगवान ने देवताओं को अभय वरदान देकर राक्षस को मारने की प्रतिज्ञा की और आप महा भयानक शब्द करते तीनो लोकों को कँपाते हुए दानव की गुहा की ओर चले। यह देख कर पर्व्वताकार शरीर वह राक्षस भी तलवार फटकारता हुआ वाराह जी पर आक्रमण करने को सन्नद्ध हुआ। वाराह जी और उस राक्षस में परस्पर घोर युद्ध होने लगा। हिरण्याक्ष बड़े ही वेग से असि प्रहार करता किंतु वह उसका प्रहार वाराह जी के वज्रवत दातों के ऊपर कुछ भी असर न करता और जब वे दातों पर धर कर उसे फेंक देते तो वह योजनों दूर जा गिरता। इस प्रकार घोर युद्ध होते होते बहुत समय व्यतीत हो गया। अंत में श्री भगवान ने अत्यंत कुपित हो कर उस दुष्ट दैत्य के खण्ड खण्ड कर डाले और पृथ्वी को मुक्त कर पुनः अपने स्थान पर स्थापित किया, जिससे समस्त देवताओं ने प्रसन्न हो कर आनंद ध्वनि करते हुए पुष्पवृष्टि की।

नृसिंहावतार।

एक समय हिरण्यकश्यप नामक राक्षस ने शिव जी की घोर तपस्या की और आशुतोष शिव जी का वरदान पाकर वह ऐसा प्रतापी हुआ कि इन्द्र कुबेरादि देवताओ को जीत कर वह सब देवता और ऋषि मुनियों को कष्ट देने लगा। तब देवताओं ने दुखी हो कर श्री विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि हे देव हिरण्यकश्यप नामक राक्षस ने श्री महादेव जी का इस प्रकार बरदान पाया हुआ है कि ब्रह्मा की सृष्टि में

वह किसी से नहीं मारा जा सकता। इसलिये वह बड़ा ही उपद्रव कर रहा है. सो कृपा पूर्वक आप अवतार धारण कर उसका संहार कीरिए। उधर हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भी अपने दुष्ट पिता की प्रेरणा से दुखित हो विष्णु भगवान से प्रार्थना कर रहा था। निदान समय पाकर भक्तवत्सल श्री विष्णु भगवान नृसिंह रूप धारण कर खम्भ मे से उत्पन्न हुए जिनके उस तेजोमय स्वरूप को देख कर तीनों लोक कांपते थे। नृसिह भगवाग को प्रगट होते देख कर वह दैत्य हाथ मे खड्ग लेकर नृसिंह जी पर बेड़ बेग से झपटा। इस पर जो नृसिंह जी ने वार किया तो वह छटक कर दूर जा खड़ा हुआ और फिर से क्रोधित हो कर झपटा। यह देखकर सब देव शंकित चित्त से हो कर त्राहि त्राहि करने लगे। तब श्री नृसिंह जी ने उसे उछंग पर उठा लिया और अपने जघो पर रख कर विकराल नखों से उसका उदर विदार डाला। उस समय का विकराल रूप देख कर तीनो लोक कॉप रहे थे। लक्ष्मी स्वय भयभीत हो कर श्री विष्णु जी के निकट आने में असमर्थ थी। उसी समय जब हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद सम्मुख आकर हाथ जोड़ खड़ा हो कर स्तुति करने लगा तब श्री नृसिह जी ने उसे बड़े प्रेम से उठा कर गोद में बिठा लिया और पुत्र के समान उस की ऑखें और सीस चूम कर उसे सब भॉति आश्वासन दे कर शान्त किया। भक्तवत्सल श्री विष्णु भगवान की इस लीला पर प्रसन्न हो सब देवताओं ने पुष्पवर्षा की।

वामनावतार।

नृसिंहावतार होने के बहुत काल पीछे उसी हिरण्यकश्यप के वंश में बलि नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ जो सदैव यज्ञ जप तप पूजा होमादि कर के अगनित दान दिया करता था और इस प्रकार ब्रह्मादि देवताओ से बरदान पाकर अत्यन्त बलवान हो दैत्य सेना सज कर नित्त देवताओं को दुःख देने में तत्पर रहता था। एक समय उसने पाताल में यज्ञ किया और यज्ञ की शान्ति में सवा लाख ब्राह्मणों को गौ वस्त्राभुषणादि का दान दे कर तृप्त किया। उसी समय श्री विष्णु भगवान ५२ अंगुल के ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर बलि के यज्ञस्थल में आ पधारे और उन्होंने ३॥ पग पृथ्वी बलि से माँगी। बलि ने भी बड़े आदर से वामन भगवान की पूजा सुश्रुषा कर उन्हें पृथ्वी संकल्प दी, किन्तु पृथ्वी नापते समय श्री वामन भगवान ने अपने स्वरूप को ऐसा बढ़ाया कि सब पाताल लोक उनके तीन ही पैर को हुआ और तब शेष आधे पैर के लिये भूप्रख्यात दानी बलि ने अपना शरीर वामन जी को समर्पण किया जिस से प्रसन्न हो कर भगवान ने उसे बरदान दे कर अभय किया और तब से श्री लक्ष्मी जी का साथ छोड़ कर चार महीने इन्द्र के कोप से बलि की रक्षा करने के लिये वर्षा ऋतु भर भगवान पाताल में रहते है॥

परशुरामावतार।

त्रेता युग में जब कि क्षत्रिय लोग अत्यन्त बलवान होकर नीति त्याग अनीति का आचरण करने लगे और राजश्री के गर्व से उनमत्त होकर न्याय की ओर भी मटियाहट करने लगे तब उनका गर्व हरण करने के लिये ब्राह्मणकुलोत्पन्न श्रीपरशुराम अवतार हुआ।

सुपति नाम एक राजा था जिसकी रेणुका और अनुकम्पा नामक दो पुत्रियां थी। उसने रेणुका का विवाह यमदग्नि ऋषि से कर दिया और दूसरी अद्वितीय बलवान सहस्त्राबाहु नामक क्षत्री राजा को ब्याह दी। महस्त्रबाहु का समग्र शरीर साधारण मनुष्य ही का सा था किन्तु भुज उसके एक हजार थे। एक समय सहस्त्रबाहु शिकार खेलते खेलते गगा किनारे यमदग्नि के कुटी के पास से आ निकला। गंगा में स्नान करती हुई रेणुका अपने बहनोई को देखकर यमदग्नि के पास गई और उसने सविनय निवेदन किया कि मै इस अपने बहनोई का निमंत्रण कर आतिथ्य सम्मान किया चाहती हूं। इस पर पहिले तो ऋषि ने

बहुत समझाया कि वह राजा है और मै योगी हूं मेरा उसका परस्पर व्यवहार साधन क्योकर हो सकता है किन्तु जब रेणुका ने बहुत ही हठ किया तो यमदग्नि सहस्रार्जुन के पास गए और उन्हें सादर बुला कर उन्होने डेरा दिया। इधर योगसिद्धि द्वारा कामधेनु का आह्वान कर उन्होंने राजा का सम्पूर्ण भाँति से सत्कार साधने की प्रार्थना की। तब कामधेनु ने यमदग्नि की वह कुटी सम्पूर्ण भांति के धनधान्य भोजनादि से परिपूर्ण कर दी और मुनि ने उससे ससैन्य राजा सहस्रबाहु का आदर सत्कार साधन किया। सहस्रबाहु यमदग्नि के सत्कार, शिष्टाचार से बहुत ही सतुष्ट हुआ किन्तु उसे आश्चर्य्य इस बात का हुआ कि इस कुटीनिवासी साधू के घर में भोजन, वस्त्र का तो सर्वथा अभाव दीखता है, परन्तु इसने जो हमारा इस प्रकार सत्कार किया सो इसके पास नाना प्रकार के भोज्य पदार्थ और रत्नजटित स्वर्ण रजत पात्र कहां से आए? निदान उसे अनुसधान करने पर ज्ञात हुआ कि यह करामात यमदग्नि की गौ कामधेनु की है। तब राजा ने यमदग्नि से वह गौ मागी किंतु ऋषि ने उसके देने से इकार किया तब तो राजा ने कुपित हो बरबस कामधेनु को ले लिया। तब यमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम का आह्वान किया और उपरोक्त वृत्तान्त यथावत् कह सुनाया। इसे सुनकर क्षत्रिय वश का गर्व दमन करने वाले परशुराम ने आगे बढ़ कर सहस्रबाहु को जा छेड़ा और युद्ध की जिज्ञासा की। परशुराम के कहने पर वीर क्षत्री सहस्रबाहु भी युद्ध करने मे प्रवृत्त हुआ। बहुत समय तक युद्ध होता रहा। अन्त मे परशुराम जी ने उसके सहस्र भुजा अपने कठिन कुठार (फरसी) से काट गिराए। परशुराम ने इसी प्रकार कई बेर अभिमानी क्षत्रियों का संहार कर पृथ्वी ब्राह्मणों को दान कर दी।

रामावतार।

परशुरामावतार के पश्चात सूर्य्य वश मे रघुकुलोत्पन्न अयोध्या के राजा दशरथ के घर श्री रामावतार हुआ। दशरथ जी के राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चार पुत्र थे। ये चारों भाई बाल्यावस्था में अपनी बालक्रीड़ा से माता पिता का चित्त प्रसन्न करते हुए सब परिवार और प्रजा को आनन्द देते रहे। अवस्था प्राप्त होने पर लक्ष्मण राम के और शत्रुघ्न भरत के अनुयायी हुए। रामचन्द्र जी ने मुनि विश्वामित्र के साथ जा उन्हें कष्ट देने वाली राक्षसी ताड़का का बध किया तथा परशुराम को शक्तिहीन कर शिव का धनुष तोड़ सती सीता से ब्याह किया। जब राजा दशरथ ने रामचन्द्र जी को राज्य तिलक देने का विचार किया तो रामचन्द्र जी की विमाता ने अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राज्य मिलना और रामचन्द्र जी को १४ वर्ष का बनवास दशरथ जी से मागा। दशरथ जी को भी वचनबद्ध होने के कारण वज्रहृदय कर के रामचन्द्र जी को बनवास की आज्ञा देनी पड़ी। तब पिता की आज्ञा शिरोधार्य्य कर रामचन्द्र जी अपनी पत्नी सती सीता सहित बन को गए और पंचबटी मे कुटी बना कर रहने लगे। वहा पर सूपनखा नामक राक्षसी राम के सुन्दर स्वरूप पर मोहित होगई। तब लक्ष्मण जी ने उसका नाक कान काट लिया। इस पर वह रावण के पास रोती हुई गई। तब रावण ने आकर सीता जी का हरण किया और रामचन्द्र जी ने हनुमान जी को सीता की खोज करने भेजा। हनुमान जी ने लका में जा सीता जी को ढूंढ उन्हें रामचन्द्र जी का कुशल समाचार सुनाया और आप वे बाग उजाड, अक्षय कुमार को मार, इन्द्रजीत से बाँध जाकर रावण के दरबार में गए। और फिर लंका को जला कर रामचन्द्र जी को सब सँदेसा कह सुनाया। तब श्री रामचन्द्र जी हनुमान, जामवन्त, सुग्रीव, नल, नीलादि कपि सेना सहित समुद्र का पुल बाँध कर लंका मे जा पहुँचे और वहां घोर युद्ध करके लंका के राजा रावण के पुत्र मेघनाद और उसके भाई कुम्भकर्ण को मारा। अन्त में अट्ठारह अक्षौहिणी राक्षस दल का नाश कर रावण को भी मारकर उन्होने लंका का राज्य रावण के छोटे भाई विभीषण को दिया। इस प्रकार चरित करने

वाले मर्य्यादा पुरुषोत्तम भक्तवत्सल श्री भगवान रामचन्द्र जी को प्रणाम करता हूं।

कृष्णावतार।

उस स्नेहमय सौन्दर्य्य को भी सौन्दर्य्य देने वाले त्रिभुवन पुरुष कमलनाभि कमलदृग शंख, चक्र, गदा, पद्म को चारों भुजाओं में और भृगुलता को हृदय में धारण करने वाले मधुर मधुर वंशी ध्वनि अलाप कर संसार को मोहित करने वाले मोर मुकुट धारी घनवत् कान्तिवाले घनश्याम को मै बार बार प्रणाम करता हूं।

द्वापर युग के अन्त मे उस भक्तभयहारी भगवान श्री कृष्ण जी ने ब्रजभूमि में अवतार धारण कर भूमि का भार हरण किया। बालावस्था मे नाना भांति की अद्भुत बाल क्रीड़ाएँ कर नद यशोदा को आनन्द दिया और कालान्तर में वयः प्राप्त होने पर माथे पर मोर मुकुट, हाथों में वंशी और लकुट, कटि में काछनी और पीत पट पहने हुए, हृदय पर वनमाला को धारण किए हुए, गोप और गौवो के साथ साथ उस पवित्र, बृज वन के वनमाली बन, यमुना के कूल कूल ललित कंदवों की शाखाओं मे झूल झूल कर कुछ समय तक बिहार किया। उस त्रैलोक्य मोहिनी मूर्ति की छबि पर बृज की स्त्रिया ऐसी मोहित थीं कि यमुना किनारे श्रीकृष्ण की बंसी की मधुर ध्वनि सुन कर घर बार को छोड़ उनके दर्शन के लिये वहां ही जा पहुँचती थी। शरद की चाँदनी में स्वच्छ जल मे कल्लोल करती हुई यमुना के किनारे रास रचकर सब गोपियों के साथ साथ आप नृत्य करते और उन्हे नचाते, कभी कभी उनके प्रेम की परीक्षा करने के लिये जो उन प्रेम की पूतरी गोपिकाओं के चर्म नेत्रो के सम्मुख से अन्तर्ध्यान हो जाते तो वे ऐसी बेहाल हो जाती जैसे शीतकाल के विषम बयार के झकोर से कोमल लताएँ झुरस जाती है। उस साँवरे सुजान के प्रेम से रंगी हुई वे गोपिकाएँ खान, पान, वसन, भूषण त्याग विरह वेदना से बेहाल हो कर सघन बन में बिचर कर कदम्ब करीलादि के वृक्षों से श्रीकृष्ण का पता पूछती फिरती थीं। उनकी ऐसी करुणामयी दशा देख कर वे आप पुनः प्रगट हो जाते और आनन्दमय रास रचकर उनके दग्ध हृदय को पुनः प्रफुल्लित कर देते। इसी प्रकार लीला बिहार करते हुए मथुरा के राजा कंस के भेज हुए अघासुर, बकासुर, धेनुकासुरादि कई असुरों का उन्होंने संहार किया। एक समय जब कि इन्द्र ने क्रोध कर मूसल धार जल की वर्षा कर बृज भूमि को बहा देना चाहा तो आपने स्वयं गोवर्द्धन पर्व्वत को अपने कर कमलों पर उठा कर सब गोपी ग्वालों पर आच्छादित कर उन्हें इन्द्र के कोप से बचाया।

समय पा काल वश हो कंस ने यज्ञ आरम्भ किया। वहाँ तो मथुरा में घर घर हाट, बाट चौहाटों में साज बाज होने लगे। देश देश के नरेश निमंत्रणपत्र पा, आ आ मथुरापुरी के चतुर्दिक डेरे डालने लगे। इधर कंस ने श्रीकृष्ण बलराम को बुलाने के लिये अपने कुल प्रोहित अक्रूर को भेजा। अक्रूर ने वृन्दावन मे आकर कंस का संदेसा श्रीकृष्ण बलराम से कहा। तब तो दोनो भाई प्रसन्नता पूर्वक मथुरा जा कंस के यज्ञ मे सम्मिलित होने को प्रस्तुत हुए। जिस समय श्रीकृष्ण बलराम अक्रूर के संग रथ पर बैठ मथुरा की ओर पयान करने लगे तब नन्द यशोदा ने मोह से बिकल हो कर आंखों में आँसू भर दिए। प्रेमबाहुल्य के कारण कण्ठ गदगद होने से मुख से वचन भी न निकला और सब ग्वाल गोपी गोपिकाएँ श्री कृष्ण से अन्तिम मिलाप करने आए और होनेवाले आजन्म विछोह की आलोचना में मुग्ध हो कर चित्र लिखे से देखते रह गए। सब के देखते देखते अक्रूर का रथ दृष्टि से छिप गया और वे बिचारी अबलाएँ असह्य शोक से आँसू मोचन करती हुई कलेजा थाम कर रह गईं। बृजचन्द श्रीकृष्ण आनन्दकन्द ने मथुरा में पहुँच कर प्रसन्नतापूर्व्वक कंस की मखशाला में पदार्पण किया। उस अनन्त आनन्दमयी रंगभूमि के द्वार पर जाते ही कंस के आज्ञानुसार

पीलवान ने कुबलियानन्द नामक मदोन्मत्त बलवान हाथी को कृष्ण बलराम के सम्मुख झोंका जिसे उन दोनों भाइयों ने सहज ही में मार डाला और वे स्वच्छन्दतापूर्व्वक आनन्दमय रंगशाला में पैठ पड़े। यह देख कंस ने चानूर नामक मल्ल से श्री कृष्ण बलराम को युद्ध करने की आज्ञा दी। निदान कुछ देर बालकों की तरह खेलाकर उन्होने चानूर को भी मारडाला। यह देख कर कंस का चित्त चञ्चल हो उठा। वह स्नेह मूर्त्ति नेत्र को सुख देने वाली जो अन्य सब प्रजा को प्राण सी प्यारी देख पड़ती थी कंस को तथा उसके दुष्ट दर्बारियों के काल सी दीखने लगी। सब सभा में कोलाहल हो उठा। कंस के योद्धा जहां तहा श्री कृष्ण बलराम को पकड़ने को उठ पड़े। उन सबको बलराम ने मोक्ष मार्ग दिखाया और श्रीकृष्ण जी ने आगे बढ़ कर कंस के राजसिंहासन पर चढ़ कर उसकी चोटी पकड़ कर उसे नीचे गिरा दिया और बिना अस्त्र शस्त्र के ही मुष्टकों से प्राण ले कर उसे यमुना मे बहा दिया और तब दोनों भाई यमुना के किनारे पर बैठ कर श्रम दूर करने लगे। इसी स्थान का नाम विश्राम घाट है।

इस प्रकार कंस को मार उन्होंने उसी से बदी किए गए अपने पिता माता देवकी वसुदेव को बधनमुक्त किया। और कंस के पिता उग्रसेन को मथुरा का राज्य दे कर आप उस राज्य की रक्षा करते हुए संसार की रक्षा करने लगे। वृन्दाबन से आए गोप गोपियों से प्रेम से मिल कर उन्होने उन्हें पुनः वृन्दाबन की ओर जाने को कहा और समझाया कि हे सखाओ यह जो कुछ हुआ सो तो तुम देख ही चुके। कंस केसी इत्यादि राक्षसों के मारे जाने की खबर नन्द यशोदा से कह देना और कहना कि आप किसी प्रकार का दुःख अपने मन मे न लावें हम दोनों भाई दिन दस एक में आवेंगे। श्री कृष्ण बोले कि हे सखाओ मेरी माता यशोदा से कह देना कि मेरी गेंद, हिंगुरी ठिकाने से रक्खें कहीं राधा चुराकर न ले जाय। श्री कृष्ण के मुख से यह बचन सुन कर सब ग्वाल बालों के नेत्रों से आँसु-धार बह निकली। वे गदगद कण्ठ से बोले कि हे प्यारे नदनन्द आप आनन्द करो। जिसमें आप सुखी है प्यारे सोई हमें सुखकर है। हमें बिचार केवल इसी बात का है कि अब जो इन्द्र और यमला-र्जुन कोप करेंगे तो हमारी रक्षा कौन करेगा। इस प्रकार करुणामय बचन कहते हुए सब गोप ग्वाल प्रेम से अंक मिलकर अगम्य बिरह वियोग सागर मे निमग्न हो वृन्दाबन की ओर चले किन्तु दृढ़ प्रेम बंधन के कारण चल नहीं सकते थे बार बार यह कहते हुए कि हे नाथ आज हम आप के विछोह से अनाथ होते है लौट पड़ते थे। जब सब गोप ग्वालों ने यह सँदेसा यशोदा से कहा तो वे मूर्छित हो कर काटे हुए वृक्ष के समान गिर पड़ी। राधिका सहित सब गोपियाँ बौरानी सी बन बन फिरने लगीं किन्तु फिर हरि माया वश हो कर सब अपने अपने ग्रहकार्य्य में लग गई। श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ने कुछ काल मथुरा मे रह कर फिर द्वारिकापुरी को पयान किया और जो कुछ लीलाएँ कीं सो श्रीशुकदेवजी ने भागवत पुराण में वर्णन की हैं।

बौद्धावतार।

कलियुग के आरम्भ में हिंसादि पातक अधिक होने पर कैटक देश मे बौद्धावतार हुआ जिन्होंने अहिंसा का प्रचार कर अगनित जीवों की रक्षा की। ज्ञान का प्रचार किया और वेदों की निन्दा की।

कल्कि अवतार।

जब कलियुग के प्रभाव से ससार में पाप की वृद्धि होगी यज्ञादि शुभ कर्म्मों का लोप हो कर सब लोग धर्माधर्म का विचार न करके परस्पर पशुवत् व्यवहार करने लग जांयगे तब उन असुरों को मारने वाला कल्कि अवतार कलिग देश में होगा।

कल्कि अवतार हृदय में सामवेद का ध्यान

किए हुए श्याम अश्व पर आरुढ़ माथे पर क्रीट धारण किए चार भुज वाला पीत पट कसे हाथ में खड्ग कटार आदि अस्त्र धारण किए दुष्टो का खण्ड खण्ड कर के भूमि पर पुनः सतधर्म्म का प्रचार करने वाला होगा।

उपसंहार।

कवि कहता है कि रामकृष्ण की लीला का यश वर्णन करने को मेरी बुद्धि कहां? उसे तो सनक सनन्दन सनत्कुमार वाल्मीकादि महामुनियों ने भी कह कर पार न पाया, मेरी गिनती क्या है जो मैं कहूं।



दिल्ली किल्ली कथा।

[तीसरा समय।]

कविचन्द ने अपनी स्त्री से कहा कि कल्लोल करती हुई यमुना के किनारे जो सुन्दर दिल्ली नगर सुशोभित है सो पृथ्वीराज के ही भोग करने के लिये है। इस दिल्ली की कथा को मै संक्षेप में पृथ्वीराज की माता को ढुढा का वर मिलने के प्रसंग मे वर्णन कर चुका हूं। अब मैं उसी को विस्तारपूर्वक कहूंगा।

बाल्य अवस्था में एक दिन पृथ्वीराज ने स्वप्न में देखा कि जगन्नि देवि उत्तमोत्तम वस्त्र और आभूषणों को धारण किए हुए पृथ्वीराज के पास आई और उसने इन्हे बड़े प्यार से गोद में बैठा कर दिल्ली का राज्याभिषेक किया। प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज ने अपने स्वप्न का सब हाल अपनी माता से कह सुनाया जिसे सुन कर पृथ्वीराज की माता के चित्त में दुःख सुख आश्चर्य्य इत्यादि का एकत्र आविर्भाव हुआ। अस्तु उसने उसी समय ज्योतिषियों को बुला कर उनसे पुत्र के स्वप्न का वर्णन कर के फल कथन करने का आदेश किया। ज्योतिषियों ने उत्तर दिया कि राजकुमार ने जो कुछ स्वप्न में देखा है वह सत्य ही पाँच दिवस के बीच मे यथावत् होनहार है। शास्त्र का यही बचन है कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा हो। निदान रानी जी ने बहुत कुछ दान देकर ज्योतिषियों को बिदा किया और आप पुत्र सहित एकान्त स्थान में बैठ कर बोली कि हे पुत्र दिल्ली की पूर्व्व कथा जिस प्रकार है सो मैं तुझ से कहती हू सुन। पृथ्वीराज की माता बोली कि मेरे पिता अनंगपाल के पुरुषा राजा कल्हण जो हस्तिनापुर में राज्य करते थे एक समय अपने समस्त सूर सामन्तो को साथ में लिए हुए शिकार खेलने निकले। जब उस स्थान पर पहुँचे कि जहां अब दिल्ली नगर बसा हुआ है तो देखते क्या हैं एक शशा (खरगोश) उनके संग के शिकारी कुत्तो पर आक्रमण करता है। इससे राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ और उस भूमि को वीरभूमि जान कर लग्नशोधन करा कल्हणपुर नाम नगर उन्होने बसाया। उक्त कल्हण जी से कई पीढ़ी पीछे मेरे पिता राजा अनगपाल जी हुए जिन्हो ने अपने कुल प्रोहित से कहा कि मैं अपनी धन सन्तान और यश की इच्छा से एक गढ़ बनवाना चाहता हूं सो कृपा कर आप मुहूर्त शोधन कर दीजिए। निदान कुल प्रोहित व्यास * जी ने भी मुहूर्त साधन कर के वास्तु शास्त्रानुसार शिला-न्यास कर्म्म किया और कहा कि हे राजन् यह जो कीली गाड़ी जाती है उसको पाँच घड़ी तक कोई न छुए और तुरन्त एक ६० अंगुल की कील मगवाकर उसी स्थान में गाड़ी और कहा कि यह कील शेष जी के मस्तक में जा कर लग गई है इसको न उखाड़ने से आपके (तोअर) वंश का राज्य संसार में अचल रहेगा। यो कह कर व्यास तो चले गए परन्तु राजा को इसका विश्वास न हुआ और इसके निश्चय करने के लिये ज्योंही उन्होंने कील उखड़वाई कि नीच से रुधिर की धार निकल पड़ी और कील का कुछ अंश भी लोहू से भरा हुआ निकला जिसे देख कर राजा बहुत दुखी हुआ और अपनी मूर्खता और अविश्वास पर पश्चाताप करने लगा, परन्तु इससे क्या, होनहार कदापि नहीं मिटती। यह समाचार सुन कर व्यासदेव जी भी यहां आए और राजा को समझाने लगे कि हे राजन बीती बात पर पछतावा मत करो, मैने तो आपसे पहिले ही कह दिया था कि जब तक यह किल्ली गड़ी है तब तक आपका राज्य भारतवर्ष में अचल है—परन्तु होनहार प्रबल होती है इसीसे आपने अपने मन मानी की। परतु इसमें आपका भी दोष क्या है। यद्यपि विद्याओं द्वारा भविष्य का ज्ञान हो जाता है और लोग उसका उपाय भी करते हैं किंतु वह सब उपाय उलट कर फल देते हैं और होनहार भावी के ही सहायक बन जाते हैं। रामचन्द्र क्या नहीं

* व्यास शब्द से किसी विशेष व्यक्ति का नाम से संबन्ध नहीं है। व्यास कुल के कुलाचार्य्य की पदवी थी।

जानते थे पर उन्हें होनहार के ही कारण सब दुःख भोगना पड़ा। प्रबल यादव वंश ने स्वयं अपने नाश का कारण रच कर दुर्वासा ऋषि का उपहास करके शाप लिया था। राजन्, संसार में एक से एक बड़े और प्रतापी हो गए हैं, किंतु उनके यश अपयश के सिवाय दूसरा कोई भी चिन्ह अब उनका शेष नहीं है। इस हेतु शोक को छोड़ कर भगवत के भजन में लवलीन हो जाइए। आपके पश्चात् यह राज चहुआनों का होगा। चहुआनों के पीछे मुसल्मानों का राज्य होगा और जब मुसल्मान बहुत उत्पात करेंगे तो संवत १९७७ में पुनः मेवातिपति का जोर बढ़ेगा और यह कुछ थोड़े ही दिनों में पुनः शान्त हो जायगा। हे राजन्! इसके विरुद्ध कदापि न होगा यह व्यास जी का वचन सर्वथा सत्य और होनहार है।

पृथ्वीराज की माता अपने पुत्र से उक्त संवाद कह कर स्वप्न का परिणाम भविष्य में अपने पुत्र को दिल्ली का राज्य सुन कर होम यज्ञ और अनेक प्रकार के दान करने लगी। उधर पृथ्वीराज भी अपना शुभ भविष्य सुनकर फूले न समाते थे। उनका जिस प्रकार प्रति दिन उत्साह लालसा और आनंद बढ़ता जाता था उसी प्रकार अजमेर राज्य के कोष भंडार अन्न इत्यादि प्रति दिन वृद्धि को प्राप्त होते जाते थे और राज्य प्रति दिन सुख और श्रीसम्पन्न होता जाता था। कवि चंद कहता है कि ऐसे अद्वितीय पुरुषसिंह पृथ्वीराज की कांति, श्री, ह्री, धी नित नव और दूनी होती जाती थी। इसके पश्चात लोहाना का किले पर से कूदना और पृथ्वीराज का उसे आजान बाहु का खिताब और कई जागीर देना वर्णन किया जायगा।

लोहाना आजानबाहु समय।

[चौथा समय।]

एक समय का वृत्तांत है कि राजा पृथ्वीराज अपने सब सूर सामंतों सहित चित्रसारी में बैठे हुए प्रकृति का आनंद ले रहे थे। जिस समय का यह वृत्तांत है उस समय एक घड़ी दिन बाकी था। पृथ्वीराज जिस चित्रसारी में बैठे थे उसकी गौख ३२ हाथ ऊँची थी। पृथ्वीराज ने सब सामंतों से कहा कि जो इस गौख पर से कूदे उसे मैं बहुत सा इनाम और जागीर दूंगा। यह सुन कर सब सामंत चुप रह गए। कन्ह बोल उठे कि प्रायः राजाओं के विचार ऐसे अनगढ़ हुआ ही करते हैं। चामुण्ड राय और जैतसिंह को तो इस बात पर कुछ क्रोध भी आगया, परंतु लोहाना नामक एक सामंत एक बेर राजा की ओर देख कर इकबारगी कूद पड़ा। उस स्वामिधर्म्मधारी वीर के कूदने की सब ने प्रशंसा की और राजा पृथ्वीराज तो तुरंत ही आसन छोड़कर दौड़ते हुए स्वयं लोहाना के पास गए और उन्होंने उसे बहुत से प्रशंसा युक्त उत्तेजक शब्दों से संबोधन करते हुए गले लगा लिया और तुरंत राज्यवैद्यों को बुलवा कर आज्ञा दी कि जहां तक जल्दी हो सके लोहाना को अच्छा कर के मेरे पास लाओ। मै बहुत सा इनाम दूगा। अतएव वैद्य लोहाना को अपने घर ले गए और उन्होंने ६ दिन में लोहाना को हृष्ट पुष्ट कर दिया। निदान १३ रविवार को लोहाना पृथ्वीराज जी के सम्मुख आया। ज्योंही उसने दरबार में आकर राजा को प्रणाम किया कि उन्होंने अत्यंत प्रसन्न हो कर उस को रणथंभ, ओरछा और ग्वालेर जागीर में दिए और साथही ५०० गाँव और भी दिए। राजा ने लोहाना को जागीर के साथ १८ हाथी ५०० घोड़े ५०० ऊंट और पांच हजार पैदल दिए और आजानबाहु का खिताब भी दिया। निदान आजानबाहु उक्त सेना को पाकर पृथ्वीराज से पाई हुई जागीर पर दखल करने लगा और सब जागीर पर दखल कर के जब ओरछे आया तो वहां का राजा जसवन्त सिंह लोहाना से युद्ध करने को तय्यार हुआ। लोहाना तो पहिले ही से सन्नद्ध था। दोनों में घोर युद्ध हुआ। अत मे जसवंत सिंह की पराजय हुई और ओरछे पर लोहाना का अधिकार हुआ।



कन्ह पट्टी समय ।

[पांचवां समय ।]

कवि चन्द की स्त्री ने कहा कि हे पति राजा पृथ्वीराज जी का भोरा भीमंग देव से बैर क्यों कर हुआ। यह सुन कर कवि चन्द ने उत्तर दिया कि हे प्रिये सुनो। कुँवर पृथ्वीराज का प्रताप प्रति दिन चन्द्र की कला सा बढ़ने लगा और अनन्त दान और गुणी और कवियों के सम्मान के कारण दसों दिशाओं में उसकी कीर्ति फैलने लगी । जिस समय पृथ्वीराज अजमेर की गद्दी पर थे, गुजरात में भीम देव राज्य करता था । वह भी राजनीति का जानने वाला धर्म्मधुरन्धर स्वयं कीर्तिवान और प्रजाप्रिय था । अत्यन्त प्रजाप्रिय होने से लोगों ने इस का खिताब भोला राय भीम देव रख लिया था । भोला राय भीम देव के भाई सारँग देव के प्रताप सिंह, अरसिंह, बरसिंह, गोकुलदास. गोविन्दराज, हरसिंह, स्यामसिंह, भगवान दास इत्यादि पुत्र थे, जब प्रताप सिंह अपने बाप सारँग सिंह की गद्दी पर बैठा तो वह अभिमान में आकर व्यर्थ प्रजा को दुःख देने लगा और अपने भाइयों सहित भोलाराव भीम से रूठ कर बागी हो गया और उसके राज्य में प्रजा को अत्यन्त कष्ट देने तथा लूटने मारने लगा, जिस से भोला राय अत्यन्त क्रोधित हो कर बड़ी भारी सेना सज कर स्वयं उसको पकड़ने के लिये चला । आगे चल कर जब कि भीम देव की सेना एक नदी के किनारे पड़ी हुई थी, एक फीलवान राजा के निज हाथी को नदी मे नहलाने के लिये लेगया। दैवयोग से ये सातों भाई भी जो कहीं छिपे हुए थे आ पहुँचे और सबने जुड़ कर हाथी और फीलवान को मार डाला। इससे भोला राय भीम देव और भी कुपित हुआ और इन लोगों ने भी उस राज्य में रहना उचित न जान कर पृथ्वीराज की शरण ली । पृथ्वीराज ने इनकी बीरता पर प्रसन्न हो कर उन्हें एक एक घोड़ा सिरोपाव और जागीर दे कर अपने सरदारों में रख लिया। एक दिन पृथ्वीराज ने एक दरबार लगवाया जिसमें पृथ्वीराज के सब सूर सामन्त अपने अपने स्थान पर आकर बैठने लगे। कन्ह के सामने प्रताप सिंह और उसके छओं भाइयों की बैठक थी। बैठे हुए प्रताप सिंह ने भरे दरबार में अपनी मूछ पर हाथ फेरा कि जिसे देख कर कन्ह ने बिना कुछ कहे सुने सहसा प्रताप सिंह पर ऐसा हाथ मारा कि वह दो टूक हो गया। भाई का मारा जाना देख कर अमर सिंह से न रहा गया। उसने झपट कर कन्ह के बाएँ हाथ पर तलवार का वार किया जिससे कन्ह की प्रज्वलित क्रोधाग्नि में मानो घी पड़ गया और कन्ह ने झपट कर जो अमर सिंह का सर पकड़ कर के मसक दिया तो वह बेल सा फूट गया। यह देख कर हरिसिंह झपटा और वह भी मारा गया, नरसिंह लड़ने को झपटा और कन्ह ने उसे भी मार गिराया। यह देख कर पृथ्वीराज तो उठ कर चले गए, उधर घोर घमसान द्वन्द होने लगा। वीर कैमास ने भी कन्ह का साथ दिया । जब वे सातों भाई मारे जा चुके तो उनका एक सेवक माधव नामक खवास (नाई) तलवार निकाल कर कन्ह पर झपटा। पर वह भी मारा गया । इधर महलों के बाहर अजमेर नगर में घर घर इस बात की चर्चा फैल गई कि आज कन्ह ने सातों भाई चालुकों को मार डाला है। यह बात प्रताप सिंह के लशकर तक भी जा पहुची, जिसे सुनते ही वे सब के सब जो जैसे बैठे थे अपने अपने हथियार कस के उठ धाए और बराबर महलों में पैठते ही गए। उधर बीर कन्ह की फौज भी सज कर आ गई और दोनों दलों मे खूब तलवारें चलने लगीं। यद्यपि कन्ह के एक एक वार में कई एक चालुकों का वारा न्यारा होता था परन्तु वे स्वामिधर्म्मरूपी अग्नि में ही पतंग की तरह शरीर को होम देते जाते थे। देखते ही देखते वह आनन्दमयी रंगभूमि करुणामयी रणभूमि देख पड़ने लगी। सायंकाल पर्य्यन्त यही हाल रहा। न चालुक्य के योधा हटे, न बीर कन्ह ही हटा। अन्त में कन्ह

की जय हुई और वह आनन्द में मस्त अपने घर चला गया किन्तु पृथ्वीराज को यह बात बहुत बुरी लगी और कन्ह के इस निष्प्रयोजन बखेड़ा मचाने से पृथ्वीराज का जी बहुत खट्टा हो गया। जब यह बात कन्ह ने सुनी कि पृथ्वीराज मुझ से कुपित हो गया है तो उसने अपना दरबार में आना जाना बन्द कर दिया।

जब सात दिन तक कन्ह दर्बार में न आए तब पृथ्वीराज ने स्वयं प्रधान कर्म्मचारी को भेज कर कन्ह को बुलाया और कहा कि भला बिचारिए तो सही, संसार में लोग क्या कहेंगे कि चहुआनों ने चालुकों को अपने घर में बुला कर के मारा। इसमें सब यश, अपयश आप ही का है, मेरा क्या मै तो लड़का हू। तब कन्ह ने उत्तर दिया कि चाहे कुछ हो परन्तु मेरे देखते कोई मूछ पर हाथ नहीं रख सकता। तब पृथ्वीराज ने कहा कि अच्छा तो अब आप अपनी आखों में पट्टी बँधी रक्खा कीजिए। और उसी समय २५०००) की कीमत की २१ टँक भर तौल मे स्वर्ण की एक जड़ाऊ पट्टी बनवा कर अपने हाथ से कन्ह की आखो पर बाँध दी। वह पट्टी दिन रात बराबर बँधी रहती थी केवल रात के समय सेज पर और युद्ध में खोली जाती थी। कवि कहता है कि पृथ्वीराज के समय में कन्ह ऐसा योधा था, जैसे महाभारत में भीम द्रोणाचार्य्य हुए हैं, और त्रेता में रावण हुआ है। वह युद्ध में शत्रु पर इस प्रकार टूटता था जैसे सिंह सिंहनी पर टूटे—मानो पृथ्वीराज जी की रक्षा के लिये साक्षात् दुर्योधन का उसने अवतार लिया था। जहाँ जहाँ काम पड़ा कन्ह ने वास्तव में अद्वितीय पराक्रम किया।

प्रताप सिंह इत्यादि सातों भाइयों के मारे जाने की खबर जब गुजरात के राजा भोलाराय भीमदेव को लगी तब भ्रातृस्नेह से व्याकुल हो कर उस की क्रोधाग्नि भभक उठी और उसने उसी समय पृथ्वीराज जी को एक पत्र लिखा कि तुमने व्यर्थ मेरे भाइयों को मारा है मैं उनका बदला लेना चाहता हूं। सावधान रहो। इस के उत्तर में पृथ्वीराज ने लिख भेजा कि मैं सदा सन्नद्ध हूं आपकी जब इच्छा हो आइए। इस पत्र के पढ़तेही चालुकराय ने उसी समय अजमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। किन्तु राज्यमंत्रियों ने यह कह कर कि वर्षा काल में चढ़ाई करना ठीक नहीं है राजा की तय्यारी बंद कर दी।

रूप गुण यौवन सम्पन्न राजा पृथ्वीराज श्री कृष्ण की तरह अजमेर में अखण्ड क्रीड़ा और केल करता हुआ प्रति दिन वृद्धि को प्राप्त होने लगा।



आखेटक वीर वरदान।

[छठां समय।]

इस प्रकार पृथ्वीराज की अवस्था १५ वर्ष की हो गई। शैशव का अभाव और यौवन अवस्था का प्रभाव प्रति दिन बढ़ने लगा। प्रशस्त वक्षस्थल वज्र के समान कठोर और शत्रुओं के बल को नाश करने वाले भुजदण्ड प्रति दिन बलवान होने लगे। पृथ्वीराज के साक्षात कामदेव के उमंग से भरे हुए नेत्र कमल के समान प्रकाशमान थे, उज्वलमुखक्रान्ति सूर्य्य के समान प्रदीप्त थे, वाणी भ्रमर की गुंजार के समान भासित होती थी। वह कलियुग में साक्षात् ध्रुव का अवतार मानने योग्य था। जिस प्रकार पृथ्वीराज की आयु बढ़ती जाती थी उसी प्रकार उस के साथी सामंत गण भी क्रमशः शैशव अवस्था को त्यागते हुए यौवन को प्राप्त होते जाते थे। जो भोग विलास पृथ्वीराज स्वयं करता उनसे अपने प्रिय सामंतों को भी कदापि वंचित न रखता। अपने बाल संघाती सामंतों के मध्य में पृथ्वीराज इस प्रकार शोभित होता था जैसे देवताओं में इन्द्र, सर्पों में शेषनाग, हस्तियों में गजराज, नक्षत्रों में चन्द्र, एकादश रूद्रों में महाबीर, नव ग्रहों में सूर्य्य, और अलकापुरी में कुबेर शोभा देते हैं। जो जो विद्याएँ पृथ्वीराज जानता था सामंत भी उनमें दक्ष थे। तात्पर्य यह कि पृथ्वीराज की समस्त मण्डली चौदहों विद्याओं और नाट्य वाद्य सहित चौसठों कलाओं में निपुण थी। पृथ्वीराज का यह नियम था कि सायंकाल के समय वह हथसार घुड़सार इत्यादि सब कारखाने स्वयं देखता। इस के उपरान्त दरबार लगता जिस में विद्वान कवि और पण्डितों की सभा होती। तिस पीछे नाट्य वाद्य की सभा जमती। प्रातः काल शौच क्रिया सन्ध्या वंदनादि से निश्चित हो कर अपने सब साथियों सहित वह अखेट को जाता था।

एक समय का वृत्तान्त है कि पृथ्वीराज एक बड़े दल बल के साथ शिकारी कुत्ते, चीते हरिण और वरही, कुही, बाज इत्यादि शिकारी चिड़ियों को लेकर जंगल में शिकार करने गया। जब एक गहन बन में पहुँच कर सब अपने अपने शिकार के पीछे पड़े तो कविचंद भी अपने शिकार के पीछे हो गया और दैव योग से सब का साथ छूट कर आप एक निर्जन बन में जा पहुँचा। वहां वह देखता क्या है कि उस निर्जन बन में एक ऐसा स्थान है जहां पर नाना प्रकार की सुन्दर लता बेली लहलहाती उतंग वृक्षों से लिपटी हुई हैं। नाना प्रकार के सुन्दर फल फूल लग रहे थे। उन पर नानाप्रकार के शुभ पक्षी कल्लोल करते हुए असीम आनंद की बहार बता रहे थे। उसी स्थान में एक आम के वृक्ष के नीचे एक योगी समाधि में लीन बैठा हुआ था, जिसके हाथ में माला, नीचे मृगछाला, शरीर पर विभूति और हाथ में खप्पर था तथा अष्ट सिद्धि नव निद्धि जिसकी जिव्हा पर बास करती थी। यह देख कर कविचंद ताड़ गया कि यह कोई बड़ा भारी सिद्ध योगिराज है और तब बड़े विनीत भाव से साष्टांग दण्डवत करके बोला कि हे नाथ आज आपका दर्शन होने से मेरा जन्म सफल हुआ। हे! योगिराज संसार के कर्ता धर्ता आपको बारम्बार प्रणाम कर के प्रार्थना करता हूं कि कृपा करके मुझपर प्रसन्न हूजिए। तब योगिराज ने समाधि खोली और बोले, हे जन! तूं कौन है और तूं इस स्थान में क्यों कर आया कि जहां नाना प्रकार के हिंसक पशु रहते हैं और दूसरे जीवों को मार कर ही अपने जीव की रक्षा करना जिनका व्यवसाय है। तब कविचंद ने उत्तर दिया कि हे नाथ मेरा नाम कविचंद है और आखेट में भूल कर इधर आ निकला हूं किंतु आप के दर्शन होने से मुझे भासित होता है कि वास्तव में मेरा परम सौभाग्योदय हुआ है। निदान ऋषि राज ने प्रसन्न होकर कविचंद को एक मंत्र बतलाया और कहा कि इसका जप करने से ५२ बीर तेरे वश होंगे और जिस समय उनसे जो सहायता चाहेगा वे तुझे देंगे। अतएव गुरू से मंत्र लेकर कविचंद उसी समय एकांत में जा मंत्र की परीक्षा

करने के लिये आसन मार कर बैठ गया और उक्त मंत्र का जप करने लगा।

भली बुरी जो कुछ होनहार होती है वह कभी नहीं टलती, इसी से भवतव्य को प्रबल माना है। कहां तो कविचंद पृथ्वीराज के साथ शिकार करने चला था और कहां भाग्यवश भूल कर ऋषि से आ मिला जिस समय धूप दीपादि देकर कविचंद ने उक्त मंत्र का जाप करना आरम्भ किया तो नाना प्रकार के हृदय कँपाने वाले शब्द चतुर्दिक होने लगे और ज्योंही जप खतम हुआ कि ५२ वीर कविचंद के सम्मुख आ उपस्थित हुए। उन वीरों के आते ही उस वन में नाना प्रकार की मन हरण सुगंधि व्याप्त होगई। कोई कोई वीर सिंह व्याघ्र इत्यादि भयंकर हिंसक पशुओं के वेष में थे कोई ऐसे थे जिनको देखते ही भय उत्पन्न होता था। कोई कोई सुन्दर अद्वितीय जगद्वशकर्ता सुन्दर रूप को धारण किए गान वाद्य करते हुए आनन्द में मग्न थे। उन्हें देखकर कविचंद ने साष्टांग दण्डवत करके स्तुति की और हाथ जोड़ कर वह खडा हो गया। तब बीरों ने कहा कि हे कविचंद तू ने किस लिये हम को बुलाया है। इस पर चंद ने विनीत भाव से कहा कि जिस प्रकार देव और दैत्यों के युद्ध में आपने देवताओं की सहायता कर के दुष्टों का पराजय किया उसी प्रकार मेरे स्वामी पृथ्वीराज की संकट में सहायता कीजिए। यह सुन सब बीरों ने प्रसन्न हो कर एवमस्तु कहा और भैरव जी ने एक गण को आज्ञा दी कि वह सब बीरों का पृथक पृथक नाम और गुण कविचंद को कह समझावे।

भैरव जी की इस प्रकार आज्ञा पाकर वज्रपाट नामक एक वीर ने सब वीरों * के नाम और गुण कविचंद से कह सुनाए जिसे सुनकर कविचंद ने पुनः सब को साष्टाङ्ग प्रणाम किया और मन में प्रसन्न होता हुआ पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे चला। उधर पृथ्वीराज भी अपने सब सूर सामंतों से बिछुड़ कर एक ऐसे स्थान में जा पहुँचा था जिसकी आनंदवन से उपमा देना कदापि अत्योक्ति नहीं हो सकता—चतुर्दिक आकाश को छूते हुए उतंग पर्व्वतों से वेष्टित एक परम रमणीक उपवन था जिसमें नाना प्रकार के उत्तमोत्तम वृक्षों और उन में लिपटी हुई सघन लताओं के कारण सूर्य्य का प्रकाश भी न पहुँचता था। उस स्थान में नाना प्रकार के मंगलीक तथा हिंसक पशु पक्षी कल्लोल करते हुए एक अनुपम प्राकृतिक शोभा दिखाते थे। पृथ्वीराज ने वहां पहुँच कर उसी स्थान के बनैले पशुओं का शिकार करना आरम्भ कर दिया। दैवयोग से तब तक कन्ह, गोइन्द राय, चंद पुंडीर इत्यादि सब सामंत लोग भी आ उपस्थित हुए। और और परिकर के लोग भी आगए किन्तु सब की सलाह से राजा एक दिन वहां और ठहरे और तब तक कविचंद भी भूलते भटकते वहीं आन पहुँचे, इन्हें देखते ही पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर कण्ठ से लगा लिया।

दूसरे दिवस भोजन प्रसाद कर के पृथ्वीराज ने दिल्ली को प्रस्थान किया। सब सामंतों को सवारी के लिये एक एक घोड़ा दिया और कविचंद को एक मतवाला हाथी दिया जिसको पाकर कविचंद ने राजा को आशीर्वाद दिया और प्रसन्न होकर वह हाथी पर सवार हुआ और सब के साथ साथ दिल्ली को चला। जिस समय से कविचंद ने वीरों के सिद्ध होने की वार्ता पृथ्वीराज से कही थी तब से पृथ्वीराज

---

* वीरों के नाम (१) आइछ (२) बपुलाइ (३) बुर्वि आइ (४) आनछ प्रहारिय (५) नारीय (६) मूलीय (७) समसान लोटना (८) गढ़ उपडनाइ (९) मछुद्वसरन (१०) सछुद्वसोख (११) लोह भजन (१२) संकला चोट (१३) विषखाय (१४) हुंडमाल (१५) अग्गिया (१६) विषखिया (१७) जमघंट (१८) कालाइ (१९) कुरलाइ (२०) अग्नि कान्ल (२१) विषकल (२२) रगतिया (२३) कोइलाइ (२४) कालक (२५) कालबेलाइ (२६) कालघटाइ (२७) इन्द्रवीर (२८) जमवीर (२९) वेगग्नि (३०) ऊकार (३१) झापटा (३२) मानिक रूद्र (३३) कपडिया (३४) केवाइ राय (३५) नरसिंह (३६) गारिया (३७) घटघंट (३८) कंटेभ्य (३९) वग (४०) महाबल-गाय (४१) संतोसाइ (४२) महासंतोष (४३) अमरकाय (४४) महाअमर काय (४५) सहसाप (४६) सहस्रांग (४७) भेरवपाल (४८) भूतधानइ (४९) साकिनीमार (५०) वेदरीरीत (५१) सालिवाहन (५२) ससिसर

असीम आनंद में मगन होकर नाना प्रकार के उमग और संकल्प विकल्प में मस्त था। दिल्ली पहुंच कर पृथ्वीराज ने रात भर अपने उक्त आनंद की ही आलोचना की, प्रातःकाल शौचादि क्रिया से निश्चित हो संध्या वंदनादि कर नित्त नियमानुसार दस गोदान, दसभार स्वर्ण और अतौल अन्न का विद्वान विप्रों को दान कर उत्तमोत्तम नवीन वस्त्र धारण कर नाना प्रकार के रत्न जटित आभूषण और अस्त्र, शस्त्रों से सुसज्जित होकर वह राजसभा मे पधारा। उधर से कन्ह, कैमास, पज्जून राय, पूरन राय, गोइन्दराज इत्यादि सामत आ आ कर क्रमानुसार यथायोग्य अपने अपने स्थान पर बैठने लगे। उन समस्त शूर सामंतो में गद्दी पर बैठा हुआ पृथ्वीराज ऐसा शोभायमान होता था जैसे तारागण मे चन्द्रमा शोभित होता है। वीरों के वश होने के समाचार से जो प्रसन्नता पृथ्वीराज के हृदय में थी कौमार अवस्था के कारण वह बार बार उसके चन्द्रानन पर झलक कर एक अलौकिक शोभा का भडार होती थी। इसे देख कर बुद्धिमान कैमास ताड़ गया और समय पाकर उसने हाथ जोड़कर विनीत भाव से प्रार्थना की कि हे राजन आज आप का मुखारविंद अत्यंत प्रफुल्लित है जिससे ज्ञात होता है कि आपके हृदय कमल पर किसी प्रचण्ड दीप्तमान आनंद रवि का प्रकाश हो रहा है और श्रीमान उसको प्रगट कर के हम सब को भी उस अलौकिक आनंद का भागी किया चाहते है, किंतु न जाने किस विशेष कारण वश आप स्पष्ट रूप से नहीं कहते। इस बात के सुनते ही पृथ्वीराज ने कहा कि जिस समय कविचद हम लोगों से बिछुड़ कर बन में भूल गया तो वहां उसे एक सिद्ध ने बीरों के सिद्ध का मत्र बतलाया जिसे कविचद ने उसी समय अजमाया और वीरो से गाढ़े समय में मेरी सहायता करने का वरदान पाया। यह बात सुन कर सब सामन्तो ने हँस दिया और कहा कि महाराज आप किस फेर में पड़े हैं। भाट, नट, चारण, आरत (अर्थात् दरिद्री) इन लोगों की बात का विश्वास ही क्या, किन्तु कैमास ने बड़े गम्भीर भाव से कहा कि नहीं आप लोग ऐसा बचन कदापि न कहें। कविचंद साधारण भाट नहीं है। उसे देवी जी ने साक्षात् बरदान दिया है। वह कोई अवतार है। श्रीमान से जो उसने कहा वह सर्वथा माननीय है। यह सुनकर कन्ह बोले कि वास्तव में कविचंद साथ से भटक तो अवश्य गया था, इधर उधर फिरता रहा होगा और उसने यह बात हँसी की तरह पर कही होगी। इस प्रकार भिन्न भिन्न बातें सुनकर पृथ्वीराज के मन में भी उक्त विषय पर सन्देह उत्पन्न हुआ और जब तक वे उक्त विषय के सत्यासत्य पर विचार करें कि कविचंद भी आ उपस्थित हुआ और प्रणाम करके अपने स्थान पर बैठ गया, पृथ्वीराज ने कहा कि कविचंद जो आपने मुझे वीरों के सिद्ध होने की कथा सुनाई थी सो अब इस समय मुझे और इस सामन्त मंडली को बीरों के प्रत्यक्ष दर्शन करवाइए। आप श्रीदेवी जी से वरदान पाए हुए बड़े चतुर और बुद्धिमान पुरुष हो। पृथ्वीराज का ऐसा बचन सुनकर कविचंद ने उसी समय मंत्र जपना आरम्भ किया और तत्काल ही वीरों के आगमन से उस स्थान में महा भयकर शब्द पूरित हो गया। इस शब्द को सुनकर सब डर गए, और विचारने लगे कि हमने बिना प्रयोजन इन वीरों को वृथा कष्ट दिया है। इस घोर धमसान शब्द को सुनकर किल्ले से बँधे हुए दो मतवारे हाथी छूट गए और परस्पर लड़ने लगे, जिसके कारण महल में बड़ा खरभर पड़ गया। यह उपद्रव देख कर दरबारी लोग भी घबड़ाए और सामन्तों ने उनको बाँधने की यथा साध्य चेष्टा की किन्तु सब निष्फल हुई। तब कविचंद ने भैरव जी से उन हाथियों को बाँधने के लिये प्रार्थना की और भैरव ने इस कार्य्य के लिये देवी की आराधना की और तुरंत ही देवी ने दोनों हाथियों के दाँत एक एक हाथ से पकड़ कर उसी समय उन्हें अलग कर दिया और उन्हें उनके पूर्व्व स्थान पर बाँध दिया। इसके पीछे पृथ्वीराज ने सब वीरों को विनीत भाव से प्रणाम किया और कविचंद ने प्रत्येक का प्रथक प्रथक नाम और गुण वर्णन करते

हुए राजा की सब वीरों से पहिचान कराई और तब कहा कि हे राजन् आपने इनको बिना प्रयोजन बुलाया है इसलिये अब इनके लिये ५२ घट मद्य और बावन बकरे मँगवाइए। राजा का हुक्म होते ही मद्य और बकरे आए। तब कविचंद ने सिंदूर तेल पुष्प माला इत्यादि से भैरव सहित सब वीरों का पूजन किया। भैरव ने तृप्त होकर पृथ्वीराज से कहा कि मै प्रसन्न हूं जो वर माँगना हो माँगो। वीरों के यह बचन सुन कर पृथ्वीराज ने विनय की कि कृपापूर्व्वक मुझे युद्ध में सहायता दिया कीजिए। तब भैरव जी ने एवमस्तु कह कर कविचंद से कहा कि जब तुम पर कष्ट पड़े मुझे स्मरण करना। मैं तत्काल ही तुम्हारी सहायता करूंगा किन्तु ध्यान रहे कि जहाँ देवी न होगी वहां मै न आऊंगा। यह कह कर बीर चले गए।

पृथ्वीराज और सब सभा के लोग कविचंद से अत्यन्त प्रसन्न हुए। पृथ्वीराज ने कविचंद से कहा कि यह मंत्र सब सामन्तों को बतला दो और कविचंद ने भी वैसा ही किया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर कविचंद को २० गाँव और एक अति उत्तम घोड़ा इनाम में दिया।



नाहर राय कथा।

(सातवाँ समय।)

संवत ११२६ (आनन्द) फालगुण वदि १४ की शिवरात्रि को समस्त दिन उपवास करने पश्चात रात्रि भर सविधान होमयुत शिवार्चन करके सोमेश्वर जी ने प्रातःकाल पंच गव्य पान करके विधिवत स्नान ध्यान कर उत्तम सिंहासन पर बैठ कर स्वर्ण-तुला करके दरिद्रों को दान दिया, और सब विद्याओं में निपुण शास्त्रादि के जानने वाले विद्वान ब्राह्मणों को षटरस युत स्वच्छ और स्वादिष्ट भोजन करवाए और भी जो याचक और अतिथि आए सब का यथायोग्य सम्मान किया और तब शिवमन्दिर में जा कर आपने चतुर्दशी की पूजा करके शिव की स्तुति की। इसके पीछे वे निज प्रधान मंत्री और बधु बाँधवों सहित भोजन प्रसाद कर के दरबार में आ बिराजे।

राजा सोमेश्वर जी ने एक अति उत्तम विद्वान दूत को नाना प्रकार से समझा बुझा कर एक पत्र देकर मंडोवर के परिहार राजा नाहर राय *के पास पृथ्वीराज के व्याह के लिये भेजा।

एक समय जब कि पृथ्वीराज की अवस्था २ वर्ष की थी और जब कि ये अपने ननिहाल मे राजा अनंगपाल के पास गए थे तो नाहर राय दिल्ली आए और पृथ्वीराज को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। इन्हों ने एक माला अपने हाथो पृथ्वीराज को पहिनाई और कहा कि जब इन की अवस्था १६ वर्ष की हो जायगी तो मै अपनी कन्या इन्हें व्याह दूगा, इसीलिये सोमेश्वर जी ने समय पाकर उक्त दूत भेजा।

किन्तु नाहर राय की इच्छा में कुछ अंतर पड़ गया था इसलिये जब सोमेश्वर जी का दूत उक्त पत्र लेकर नाहर राय के दरबार में पहुँचा तो उन्हों ने व्याह करने से साफ साफ यह कह कर नाहीं कर दी कि अजमेर के चौहानों का कुल हमारे योग्य नहीं है, व्याह प्रीति बैर समान कुल में ही किया जाना चाहिए अतएव मुझे व्याह करना स्वीकार नहीं है। निदान दूत ने अजमेर आकर सभा में बैठे हुए सोमेश्वर के सम्मुख नाहर राय का पत्र देकर समस्त वृत्तांत यथातथ्य निवेदन कर दिया जिसके सुनते ही पृथ्वीराज की क्रोधाग्नि की असीम ज्वाला भभक उठी। सब सामंतो से भी न रहा गया और सब की सम्मति यही ठहरी कि नाहर राय पर चढ़ाई कर के उसे जीत कर बलपूर्व्वक व्याह किया जाय। निदान इसी मत के अनुसार अजमेर के अधीन अन्य राजाओं को सहायता के लिये बुलाया गया। और अपनी चतुरंगिनी सेना सजकर पृथ्वीराज ने निज पिता वीर सोमेश्वर की आज्ञा पा अष्टमी रविवार को मंडोवर पर चढ़ाई करने को कूच किया।

मडोवर राज्य के गुप्तदूतों ने जो राज्य की ओर से केवल समाचार देने ही के लिये हमेशा इधर उधर घूमा करते है आन कर नाहर राय से निवेदन किया कि हे महाराज अजमेर का राजकुमार पृथ्वीराज जो सात दिशाओं को विजय कर चुका, जिसका उदंड पराक्रम ससार में विदित है अपनी विकट सेना को लिए हुए आपकी तरफ आ रहा है। उसकी सेना में १००० बलवान कुत्ते शूरवीरों के समान घी, दूध और मॉस भोजन करने वाले है जिससे उसने शिकार का बहाना किया है। नाहर राय दूत के मुँह से यह बचन सुन कर और पृथ्वीराज का प्रबल प्रताप स्मरण करके मन में बहुत घबड़ाया और उसी समय अपने समस्त राज्यमंत्री और सेनापतियों को बुला कर उसने सब समाचार कह सुनाया और कहा कि यद्यपि प्रथम मुझ में और चौहान मे मित्रता थी किंतु अब कुछ और ही बात होगई है। इसलिये तुम लोग विचार कर कहो कि अब क्या करना चाहिए। राजा की बात सुन कर सब योधाओं ने उत्तर दिया कि गत विषय पर पश्चाताप करना व्यर्थ है, यदि पृथ्वीराज हम पर चढ़ाई करने आता है तो हम भी उससे

* जिस समय का यह वर्णन है उस समय पट्टन में चालुक्य (सोलंकी) भीमदेव, आबू में सलख (जैत) पवाँर, मेवाड मे समर सिंह और मंडोवर मे नाहर राव परिहार राज्य करते थे।

लड़ने को सन्नद्ध हैं और सब की यह सलाह ठहरी कि यदि पृथ्वीराज पट्टन तक आ जायगा तो युद्ध के कारण एक तो प्रजा की बड़ी हानि होगी और दूसरे उसका बल भी बढ़ जायगा इसलिये आगे ही चल कर युद्ध छेड़ना उचित है। ऐसा विचार कर नाहर राय भी अपनी सेना सज कर आगे बढ़ा। यह खबर पा कर पृथ्वीराज ने अपने जोबन राय नामक एक सामंत को नाहर राय का मुहासरा करने की आज्ञा दी। इस पर जोबन राय ने विनीत भाव से निवेदन किया कि लोहाना आजानबाहु ने पहिले से ही उसकी राह रोक रक्खी थी किन्तु वह उस स्थान को तिरछा देकर भाग गया है। निदान पृथ्वीराज और आगे बढ़ा और जहा से नाहर राय भाग गया था सायकाल के समय वहा पर जा पहुँचा और नाहर राय की खोज मे पवृत्त हुआ, एक गुप्तचर ने आकर समाचार दिया कि नाहर राय तीन हजार घुड़सवार सेना सहित चालुक्य के प्रधान मंत्री के यहा छिपा हुआ है। यह खबर पाकर पृथ्वीराज अपनी चतुरंगिनी सेना सहित नदी पार कर के नाहर राय के सिर पर जा पहुँचा। जब नाहर राय को यह खबर लगी कि पृथ्वीराज नदी पार कर चुका है तो उसने मीना लोगो के पहाड़ी सरदार पर्व्वत राय को बुला कर आज्ञा दी कि तुम घाटी का रास्ता रोक कर पृथ्वीराज से युद्ध करो। निदान वीर पर्व्वत राय भी स्वामिकार्य्य करने अथवा देश रक्षा करने को ही अपना मूल कर्तव्य मान कर चार हजार धनुष बाण धारी मीना और भील लोगो को लेकर घाटी के तंग रास्ते मे आ डटा। पर्व्वत राय के रास्ता रोकने की खबर जब पृथ्वीराज को लगी तो उन्हो ने कन्ह राय को पर्व्वत राय का मुकाबिला करने की आज्ञा दी। कन्ह राय हुक्म पाते ही अपनी छोटी सी सेना लेकर उन कठोर भीलों के समूह पर इस प्रकार से टूट पड़ा जैसे मतवाले हाथियों पर सिंह टूटे। उधर से तीरों की बौछार ने कन्ह की समस्त सेना को आच्छादित कर लिया किन्तु बीर कन्ह तनिक भी न हटा और पर्व्वत राय से जा भिड़ा। बहुत समय तक दोनों में द्वंद युद्ध होता रहा। अन्त में कन्ह राय ने पर्व्वत राय को मार डाला और भीलों की सेना को भगा दिया। बीर पर्व्वत राय की मृत्यु का संवाद पाकर नाहर राय स्वयं कन्ह पर चढ़ दौड़ा। उधर से पृथ्वीराज भी लोहाना चामुण्ड राय इत्यादि योधाओं को लेकर कन्ह की पीठ पर आ पहुँचा और घोर घमासान लोहा झरने लगा। हाथी हाथी से, सवार सवार से, पैदल पैदल से जुट गए। सरदार सरदारों का द्वंद युद्ध होने लगा और नाहर राय और पृथ्वीराज का युद्ध छिड़ा। बड़ी देर तक दोनों उस वनप्रान्त में सिंह के समान भिड़ते रहे। अन्त में पृथ्वीराज जी ने नाहरराय के घोडे को मार डाला जिससे वह जमीन पर लवा लोट हो गया किन्तु पृथ्वीराज ने उस पर वार न किया। नाहर राय को गिरते देखकर कनक राय उसका चचेरा भाई पृथ्वीराज जी के साम्हने आया। निदान उसके घोड़े को भी पृथ्वीराज ने दो टूक किया। इस कौतुक से दोनों ओर की सेनाओ मे बहुत जोश बढ़ गया और दोनों ओर के वीर योद्धा गण कुपित होकर वार करने लगे। बह दो पहाड़ों के बीच की खोह रक्त का समुद्र हो गई। पांच दिन घमासान युद्ध रहा। पाचवें दिन नाहर राय भाग निकला। पृथ्वीराज ने पुनः उसका पीछा करना उचित न जानकर पट्टनपुर पर अपना दखल किया। दशमी के दिन पृथ्वीराज का पट्टन मे राज्याभिषेक हुआ।

नाहर राय लड़ाई से भाग कर अपनी ही सीमा के गिरनार नामक एक ग्राम में जा रहा। वहां पर नगर के सब सभ्य महाजन तथा अन्य माननीय कर्म्मचारियो से मंत्र करके पृथ्वीराज जी को अपनी कन्या ब्याह देना स्वीकार करके प्रोहित द्वारा पृथ्वीराज के पास उसने टीका (लग्न) भेजा। पृथ्वीराज ने भी उसे प्रसन्नतापूर्व्वक स्वीकार कर लिया और बड़े गाजे बाजे से अपनी सेना को सज कर वह पंचमी रविवार को गिरनार में जा पहुचा। जिस समय पृथ्वीराज की बारात गिरनार मे पहुंची उस समय नाना प्रकार

के साज बाज से सुसज्जित वह नगर साक्षात कैलाश सा प्रतीत होता था। नगर में प्रवेश करते ही पृथ्वीराज ने ग्राम्यदेवताओं को दण्डवत किया। नाहर राय ने भी बची खुची सेना सज कर बारात की अगवानी करके बारात को डेरा दिया और बड़े उत्साह से अपनी कन्या का विवाह पृथ्वीराज के साथ कर दिया। कन्यादान करके नाहर राय ने बिनीत भाव से पृथ्वीराज जी से विनय की कि वीरबर चहुआन आप मुझ से सब प्रकार बड़े हैं इसलिये मैं कुछ भी नहीं दे सकता केवल यह कन्या अर्पण करते हुए अपना सिर आप की चरणसेवा में सदा के लिये अर्पण करता हूं। इसके उत्तर में पृथ्वीराज ने भी कोमल शब्दों से नाहर राय का चित्त शान्त किया। दोनों स्वसुर दमाद में क्षण क्षण प्रेम बढ़ने लगा। बड़े उत्साह से दोनों ओर के प्रधान और साधारण पुरुषों ने मिलकर आनन्द मनाया। दो दिन पीछे पृथ्वीराज नाहर राय की कन्या जंभावती सहित ११ डोले साथ लेकर सम्हर को लौट आया।

मेवाती मुगल कथा।

[आठवाँ समय]

नीति धर्म्मयुक्त राज्य करते हुए सोमेश्वर ने मंडोवर के अभिमानी पड़िहार राजा पर चढ़ाई करके उसे जीत लिया और मंडोवर पर अपना अधिकार कर लिया और शहर, गढ़मंडोवर की लूट में जो संपत्ति हाथ लगी वह सब सूर बीर योद्धाओं को बाँट दी और आप स्वयं वीरता से अपने राज्य की रक्षा करता हुआ दसो दिशाओं में अपने नीति वैभव और कीर्ति का प्रकाश करते हुए अजमेर का स्वच्छन्द राज्य करने लगा। राजा सोमेश्वर घमंडी शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिये और दुष्टों से प्रजा की रक्षा करने के लिये अपनी विकराल सेना को सदा तैय्यार रखता, राज्यकर्म्मचारियों का भली भाँति मान करता किन्तु इस बात का भी ध्यान रखता कि वे स्वार्थवश कहीं प्रजा को कष्ट तो नहीं देते, कोष की वृद्धि का उपाय करता किन्तु प्रजा को दुःख न देता था, वह सदा अपनी प्रजा के हित के लिये व्यग्र रहता। उस समय का जो गुणज्ञ पुरुष दरबार में आता यथायोग्य सबका मान करता—राजा समस्त दिन राज्यकार्य्य करके रात्रि का समय नाना प्रकार के उत्तमोत्तम गान, वाद्य और आमोद प्रमोद में व्यतीत करता था।

एक दिन सोमेश्वर ने एक चतुर दूत को एक पत्र देकर मेवात के मुगल राजा मुदगल राय के पास भेजा और उससे जबानी कहला भेजा कि जो मुगलराज सुखपूर्व्वक राज्य किया चाहता है तो हमको वार्षिक कर दिया करे जैसे कि हमारे अधीन के अन्यान्य राजा लोग देते हैं और जो मेरी आज्ञा का भंग करेगा तो मै उस पर चढ़ाई करूंगा। निदान उस चतुर दूत ने मेवात में जाकर सोमेश्वर जी के आदेश को यथातत्थ वर्णन कर सुनाया। और वहां से जो उत्तर मिला वह सोमेश्वर जी के सम्मुख उपस्थित किया। जिस समय सोमेश्वर के प्रधान मुंशी प्रमान राय ने मुगल राज का यह पत्र पढ़ कर सुनाया कि मैं कर देने को राजी नहीं युद्ध करने को सन्नद्ध हूं तो चहुआन का मुख लाल होगया, आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं, ओठ और दाँत फड़कने लगे और उसी समय प्रधान राज्यकर्म्मचारियों और सेनानायकों को बुला कर उन्होंने आज्ञा दी कि मै मेवात पर चढ़ाई करूंगा इसकी तैयारी की जाय। उधर ज्योतिषियों को बुला कर शुभ मुहूर्त निश्चय करवाया गया अतएव ज्योतिषियों ने भृगु की दशा में त्रयोदशी पुष्य नक्षत्र का प्रस्थान नियत किया। इधर इतना अवकाश पाकर शूर बीर भी अपनी अपनी अनी कनी सहित तैयार हो बैठे।

सोमेश्वर जी ने पृथ्वीराज को अजमेर की गढ़ रक्षा पर छोड़ कर उक्त नियमित तिथि को आधी रात के समय मेवात की ओर प्रस्थान किया। नगर से निकलते ही नाना प्रकार के शकुन हुए। सोमेश्वर जी ने मेवात के निकट पहुँच कर बाहर अपनी सरहद में डेरा डाल दिया और एक पत्र सहित पुनः दूत को मुदगल राय के पास भेजा कि वह अब भी बात मान लेवे वृथा सहस्रों मनुष्यों के मृत्यु का कारण न बने—इस पत्र का उत्तर मुदगल राय ने इस प्रकार से दिया कि चहुआन आप पिता पुत्र दोनों बलवान है आपको अपने पराक्रम का गर्व भी है इसीसे आपने यहां आने का परिश्रम किया है किन्तु अब क्षमा करने का कष्ट न उठाइए आप पिता पुत्र दोनों से जो बन पड़े कीजिए मै भी आपका सत्कार करने को तैय्यार हूं। इस पत्र को पाकर सोमेश्वर के हृदय पर शोक मोह और भय का विचित्र प्रभाव पड़ा किन्तु क्षण मात्र के ही लिये, उन्होंने सम्हल कर वह पत्र ज्यों का त्यों पृथ्वीराज के पास अजमेर भेज दिया और एक पत्र अपनी ओर से इस प्रकार लिख भेजा कि शत्रु ने संदर्प से जो उत्तर दिया है सो मैं तुम्हारे पास भेजता हूं तुम राजनीति में स्वयं चतुर पुरुषार्थी बलवान हो अब इस समय जैसा आप उचित जानो करो। मैं सबेरे ही चढ़ाई करके लड़ाई छेड़ूंगा।

सोमेश्वर जी का उपरोक्त पत्र पाकर पृथ्वीराज क्रोध से लाल हो गया और बिचारने लगा कि यह पिता को क्या सूझी कि यहां से चढ़ कर लड़ाई करने गए और वहाँ मत्र करने लगे। भला शत्रु से संधि कैसी? वह युद्ध में पराजित हुए बिना कब सेवा स्वीकार करेगा और उसी समय वे अपने वीर सामतों को लेकर मेवात को चल दिए और आधी रात को सोमेश्वर के शिविर में जा पहुँचे। वहां देखते क्या है कि सोमेश्वर पड़े सो रहे हैं। पृथ्वीराज ने पिता से कुछ न पूछा और शत्रु की सेना की गुप्त रीति से जाँच करके एक बारगी उस पर धावा कर दिया पृथ्वीराज अपने थोड़े से सामन्तो सहित मेवातियों पर इस प्रकार टूटा जैसे हाथियो पर सिंह टूटे। मुदगल राय और पृथ्वीराज का युद्ध होने लगा और उसके सामन्त लोग मेवाती अन्य वीरों से भिड़ पड़े। सिंहवत बीर कन्ह के साम्हने जो पड़ता था उसे वह मूली के समान काटता जाता था। कन्ह ने क्षण मात्र में सैकड़ों मुगल सेनापतियों का नाश कर दिया। कैमास और मुदगल राय के बड़े पुत्र सेनानायक वाजीदखां की बरनी हुई। कूरंभराय से रामगूजर का द्वंद युद्ध छिड़ा। पृथ्वीराज को वीरता से युद्ध करता हुआ देखकर उसकी सेना का बल दूना हो गया। उधर से मुदगल सेना भी बड़े जोर से लड़ रही थी। क्षण मात्र में लोहू की नदी बह निकली। सहस्रों हाथी, घोड़े, ऊँट और पैदल सिपाहियों के मृतक और घायल शवों के ढेर लग गए। वह रणभूमि जो युद्धारम्भ के समय कड़खेतों के कड़खे और नाना प्रकार के बीर रसोत्पादक वाद्यो की ध्वनि से परिपूर्ण थी अब घायलो के रुदन और करुणामय शब्दो से प्रतिध्वनित हो उठी। घोर घमासान युद्ध के पश्चात मुगल सेना भाग उठी। मुदगल राय का बड़ा पुत्र वाजीदखां तथा और भी बड़े बड़े सरदार मारे गए। मुदगल राय स्वयं पृथ्वीराज का बंदी हुआ। इस प्रकार मेवात को विजय करके अपने सब मृतक वीरों की दाह क्रिया करवाके और घायलों को उठवा कर उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध करके और उन्हें अपने साथ लेकर पृथ्वीराज अजमेर को लौट आया।

हुसेन कथा।

[नवां समय।]

"इस समय में कविचंद ने पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन के बैर होने का मूल कारण वर्णन किया है।"

शहाबुद्दीन महम्मद गोरी का एक चचेरा भाई मीर हुसेन नाम से था जोकि बल बुद्धि विद्या और नीति में शहाबुद्दीन के सब सर्दारों से बढ़ कर था। उक्त सदगुणों से परिपूर्ण होते हुए वह सौन्दर्य्य में भी अद्वितीय और नाटय और गान विद्या मे भी परम प्रवीण था। शहाबुद्दीन के दरबार में चित्ररेखा नामक एक वेश्या भी थी जिसकी वय १५ वर्ष की थी। ईश्वर ने उसे जैसा जगद्विमोहन अद्वितीय रूप दिया था उसी प्रकार वीणा बजाने और गान विद्या में भी उस समय में वह एकही थी। शहाबुद्दीन उस वेश्या के हावभाव कटाक्ष और गुणो पर ऐसा मोहित था कि अन्तरंग अवस्था में उसका अनुचर या दास हो रहा था। वह वेश्या ही उस यवन राज का इष्ट थी किन्तु चित्ररेखा की शाह की ओर ऐसी प्रीति न थी क्योंकि गुणी पुरुष प्रायः गुणग्राहक होते है, गुण पर अपना तन मन धन न्यौछावर करते है और शाह मे एक राज्यशक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु ऐसी न थी कि जिसपर चित्ररेखा का मन स्थिर हो, किन्तु उक्त मीर हुसेन चित्ररेखा को चाहते थे वे सब गुणसम्पन्न थे इसीसे चित्ररेखा उन पर आशक्त हो गई। वह भी चित्ररेखा के प्रेमपाश मे आप उलझ गए। यद्यपि इस प्रीति को गुप्त रखने की दोनों ने यथासाध्य चेष्टा की किन्तु यह असम्भव था। गुप्त चरों द्वारा यह भेद शहाबुद्दीन पर प्रगट हो गया इसलिये उसने मीर हुसेन से कहला भेजा कि तुम चित्ररेखा से कोई सम्बन्ध न रक्खो, इसमे तुम्हारा भला नहीं है, यदि तुम अपना हठ न छोड़ोगे तो तुमको प्राणदण्ड दिया जायगा, अन्यथा चित्ररेखा का ध्यान छोडकर हमारे देश से निकल जाओ। इस पर मीर हुसेन अपने सपरिवार चित्ररेखा को साथ लेकर गजनी से बाहर हुआ और सीधा सम्हर में आ पहुँचा। उसे वहाँ मालूम हुआ कि पृथ्वीराज शिकार खेलने गया है और उसके डेरे नागौर के पास खट्टूपुर में पड़े है। इसलिये वह भी वहीं चला गया और जंगल में डेरा डाल कर उसने अपने आने की खबर पृथ्वीराज के पास भेजी। वहां से पृथ्वीराज ने अपने एक सुन्दर दास नामक सरदार को मीर हुसेन के पास भेजा और उधर कैमास, चंदपुंडीर, पज्जूनराय, गोइन्दराय, इत्यादि मत्रियों को बुलाकर मीर हुसेन के आने का समाचार कहा और कहा कि मै म्लेच्छ को तो दरबार में रख नहीं सकता, उधर शरणागत को भी त्यागना वीर धर्म्म के विरुद्ध है अब क्या करना उचित है सो मत्र करो। राजा की ऐसी वाणी सुनकर कविचद ने प्रार्थना की कि पृथ्वीनाथ जो वह आप की शरण मे आया है तो उसे रखिए। समर्थ की शोभा दीन की रक्षा करने मे ही है। तब तक सुन्दर दास भी आ पहुँचा और सब ने पूछा कि कहो मीर के यहाँ आने का कारण क्या है। तब सुन्दर दास ने चित्ररेखा और मीर की परस्पर प्रीति और शाह के उस पर कुपित होने का वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि मीर हुसेन आप की शरण में स्थान पाने का प्रार्थी है। इसपर पृथ्वीराज ने अपने एक सामंत द्वारा मीर को बुला भेजा और बड़ी प्रसन्नता से वे उससे मिले। मीर को साथ ले कर पृथ्वीराज जब नागौर में पहुँचे तो अपने मुंशी धर्म्मायन कायस्थ को आज्ञा दी कि मीर को दरबार में दाहिनी बैठक दी जाय और वहाँ पर हुसेन का सत्कार किया और हुसेन ने पाँच तरकस, एक खुरासानी कमान, एक सिंहलद्वीपी मतवाला हाथी, पाँच एराकी घोड़े और एक अमूल्य हीरा और दो माणिक राजा को नजर दिए, जिन्हें राजा ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया और हांसी और हिसार के परगने उसे जागीर मे दिए और नीतराय कोतवाल का मकान सपरिवार मीर के रहने को दिया।

शाहाबुद्दीन के भेजे हुए चार दूत जो गजनी से

मीर हुसेन के पीछे लगे आए थे पृथ्वीराज का मीर प्रति सब व्यवहार देख भाल कर गजनी गए और शहाबुद्दीन से यथातत्थ सब समाचार उन्होंने कह सुनाया जिसे सुनकर शहाबुद्दीन ने तातार खां, संजाब खां और अरब खां को बुला कर दूत कथित सब समाचार कह सुनाया और अरब खां को आज्ञा दी कि तुम खुद नागौर को जाओ और जो हुसेन चित्ररेखा को देना स्वीकार करे तो मीर हुसेन समेत उसे लिवा लाओ, मै उसे क्षमा करूंगा और जो वह इस बात में सहमत न हो तो पृथ्वीराज से कहना कि तुम मेरे शत्रु को न रक्खो। इसे अपने राज्य से निकाल दो और इसी मजमून का एक पत्र भी अजीज खां की सलाह से पृथ्वीराज के नाम लिख दिया। उधर तो अरब खां को ३०० सवारों के साथ उसने नागौर को रवाना किया इधर वह अपनी फौज की तय्यारी करने लगा।

अरब खां गजनी से चलकर एक महीने में नागौर पहुँचा और पहिले हुसेन खां से मिला और साम, दाम, दण्ड, भेद सब प्रकार से हुसेन खां को समझाया कि वह चित्ररेखा को दे दे, परन्तु उसने एक न सुनी। तब अरब खां ने निराश होकर पृथ्वीराज के यहां खबर की। तब पृथ्वीराज ने भी अपने सूर सामन्तों का दरबार जोड़ कर अरब खा को बुलाया और सादर शाह का कुशल प्रश्न पूछ कर उसके आने का कारण पूछा। तब अरब खा ने शहाबुद्दीन का आदेश यथावत कह सुनाया जिसे सुनते ही क्रोध से पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौंहें चढ़ गईं और ओठ फरकने लगे। यह देखकर कैमास ने डपट कर कहा कि शाह आर्य्य लोगों के श्रेष्ठ धर्म्म से अनभिज्ञ है इसी से उसने इस प्रकार कहला भेजा है। हुसेन चहुआन की शरण में है, शरणागत का त्यागना क्षत्रियों का धर्म नही है। अस्तु कन्ह चहुआन, मूरसिंह, गोयन्दराज, चन्द पुंडीर आदि सामन्त भी क्रोध में आकर बोल उठे कि हम लोग शाह का गर्व चूर्ण करने को तय्यार है। मीर हुसेन नहीं दिया जायगा, अपने कर्तव्य के विपरीत प्रभाव देख कर अपने और शाह के मानभंग की आशंका करके अरब खां दरबार से उठकर चल दिया और उसी समय गजनी को चला आया।

अरब खा ने शहाबुद्दीन के पास जाकर विधिवत निज बीती कह सुनाई जिसे सुनकर शहाबुद्दीन ने ततार खां, अरब खां, मीर जमाम. मीर कमाम, खुरासान खां, रहन खां, महन खां, रुस्तमखां, हाजी खां, गाजी खां, जम्मन खां, गजनी खां, मुहब्बत खां, मीर खां इत्यादि सरदारों को तुरंत बुलवा भेजा और अरब खां की बातें विकल ज्यों की त्यों कह सुनाई। इसपर ततार खां ने मंत्र किया कि जो उसे इतना अभिमान है कि उसने आप का अपमान किया तो मेरा मत यही है कि सेना सज कर उस पर चढ़ाई की जाय और उसकी सेना और प्रजा को नष्ट करके ही उसका गर्व्व धूल में मिलाया जाय। तब खुरासान खां बोला कि पहिले पृथ्वीराज के बल पराक्रम की जांच भी तो कर लो तब यह इच्छा करना। यह सुन कर अरब खां बोला कि वास्तव में पृथ्वीराज बड़ा बलवान है। आपने उसकी प्रबल सेना और बुद्धिमान मन्त्रियों को नहीं देखा है, इसी से यह कहते हो। यह सुन कर बादशाह ने पूछा कि अच्छा पृथ्वीराज के पराक्रम का हाल कहो। तब अरब खां बोला कि पृथ्वीराज के मंत्री लोग सदैव उसे उत्तम सलाह देते है। क्रम से २५, २५ सामन्त सदैव पृथ्वीराज की मुसाहिबी में हाजिर रहते है और वे सौ सामंत ऐसे हैं कि एक एक सामंत एक हज़ार सिपाहियों का सामना करने वाला है, वे एक पल में दस सिपाहियों का संहार सहज में कर सकते हैं। यदि उनका सर कट जावे तो धड़ युद्ध करता है, रक्त में लत्थ पत्थ होकर वह रुंड पुनः पुनः उठता और वार करता है। वे लोग तलवार की धार देख कर ही आनन्द में मग्न हो जाते हैं और यही शूरवीर पुरुषों का लक्षण है। इस व्याख्या को सुन कर तातार खां आदि हँस पड़े। तिस पर अरब खां बोला कि आप हँसते क्या हैं उन अतुल बलवान योद्धाओं को आपने देखा नहीं। यद्यपि आप

सूचना

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डांक व्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	=)	) ॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
गद्यकाव्यमीमांसा-(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	) ॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	) ॥
समालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
समालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	) ॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र- (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
बिसूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
हरिश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
भगवद्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	) ॥
उथेलो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	) ॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) १० भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	) ॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	) ॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	२।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी...	।=)	) ॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) .	।)	) ॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	) ॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
दूसरा भाग (समय १२-२८)	४)	।)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) .	≡)	) ॥
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)

सभा के पुस्तकालय की सूची...	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥
महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित)	३॥)	=)॥
दादू दयाल की बानी	१॥)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरुगीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६) रु० है।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-.9

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, Radha Kishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIX and XXXVI.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ३६ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

मूल्य ।।)] Issued 15th March 1907. [*Price Re. 1-4.*

सूचीपत्र ।

—:o:—

(२९) घघर की लड़ाई	....	....	पृष्ठ	९४५	से	९५८	तक
(३०) करनाटी बध	....	....	,,	९५९	,,	९६६	,,
(३१) पीपा युद्ध	....	....	,,	९६७	,,	९९३	,,
(३२) करहे रो जुद्ध	....	....	,,	९९५	,,	१०१३	,,
(३३) इन्द्रावती व्याह	....	....	,,	१०१५	,,	१०२९	,,
(३४) जैतराव जुद्ध	....	....	,,	१०३१	,,	१०४३	,,
(३५) कांगुरा जुद्ध	....	....	,,	१०४५	,,	१०५४	,,
(३६) हंसावती व्याह (अपूर्ण)		....	,,	१०५६	,,	१०७२	,,
रासोसार	....	....	,,	४१	,,	७२	,,

———o———

पृथ्वीराज रासो।

तीसरा भाग।

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते।

(उन्तीसवां समय।)

पृथ्वीराज साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार ग़ज़नी में पहुंचा।

कवित्त ॥ दिल्लियपति प्रथिराज। अवनि आषेटक [1]षिल्लय ॥
साठ सहस असवार। जाइ लग्गा धर ढिल्लय ॥
धूनि धरा पतिसाह। रहे पेसोर [2]सुथनाय ॥
सथ्थ लिये सामंत। दिल्ली कैमास सु [3]जानय ॥
मृगया सु रमय प्रथिराज बर। गज्जन वै धर धूसियै ॥
दूसरौ इंद्र दिल्लेस बर। सुभर सरस ढिग सुभियै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर ग़ज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है।

दूहा ॥ गई षबर भ्रम्मान कौ। उट्ठ चढ़े असवार ॥
ढिल्ली धर लिजै तषत। दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥
प्रथीराज साजत पवँग। है गै नर भर भार ॥
दिल्लीपति आषेट चढ़ि। कुइकवान हथनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
हेरा करि पेसोर नृप। सहस सट्ठि सुभ बाज ॥
सोन [4]पंथ विच पंथ दोइ। गल गज्जै अग्राज ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए.-षिल्लिय, ढिल्लिय। (२) ए. कृ. को.-धरत्तिव (३) ए. कृ. को.-मत्तिय। (४) ए.-पंच।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत । चले च्यारों चतुरन्नर ॥
लीय षवरि प्रथिराज । चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत । तबहि तत्तार सु बुझिझय ॥
कहा करंत दिलेस । चढ़त गिरबर धर धुज्जिय ॥
सँग [1]सत्त षट्ट सामंत चलि । तीन पाव लष्पह तुरी ॥
अनि सूर बीर नरवर सकल । उड़ी षेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आषेटक दिन रमय । संग स्वानं घन चीते ॥
नावक पावक बिपुल । जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बघ्घह सु । संत मेघा कलि कंठिय ॥
सीहगोस पुच्छिय सु । लंब सिरषां सिर [2]पुट्ठिय ॥
जुर्रा [3]ह बाज कूही गुहा । धानुकी दारू धरा ॥
बहु काल भाल वदकं बिला । जम भय तव जित्तिय धरा ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट । सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह । रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजिच । सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब । दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तौंब जब्ब प्रथिराज कों । तब तसबी कर मंडिहौं ॥
टामंक सह नहह करों । जुगति साह तब [4]छंडिहौं ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हबश और बलख़ आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना।

---

(१) कृ. को. ए.-सित्त । (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय ।
(३) ए. कृ. को.-जु । (४) मो.-ठंडिहौं ।

दूहा ॥ देस देस कागद फटे । पेसंगी घुरसान ॥
रोम हबस अरु बलक में । फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जंत । लष्ष पंचह मिलि पष्षर ॥
कूंच कूंच षरि षैर । गुरज धारी लष गष्षर ॥
कोस दहं दह कूच । आइ गिरवान सपत्तौ ॥
दौरि दूत दिल्लेस । जाम कर चय दिन वित्तौ ॥
मुक्काम कियौ प्रथिराज नृप । तहां षबरि कहि दूत सब ॥
गोरी नरिंद है गै सुभर । सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घग्घर नदी पहुंचा ।

चैत मास रवि तीज । सेत पष्षह कल चंदह ॥
भयौ सुदिन मध्यान । चल्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥
कटक सबर हिल्लोर । भार सेसह करि भग्गिय ॥
चढ़ि सामंत सकज्ज । नह सुर [1]अंमर जग्गिय ॥
गज रोर सोर बंधे घटा । सिलह बीज सिलकावलिय ॥
[2]पण्पीह चोह सहनाइ सुर । नदि घग्घर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन ।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह । पैसंगी पतिसाह ॥
[3]पच्छांई बादल प्रबल । भग्गे राह विराह ॥ छं० ॥ ११ ॥
बरन बरन तहां देषिये । घंटा रव गजराज ॥
सन्नाहा सन्नाह रजि । पष्षर सष्षर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥
भई हलोहल सेन सब । पान व्यूह बर षेत ॥
लष्ष एक भर अंग मैं । छच धर्यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

(१) मो.-अमर सु जग्गिय । (२) ए.-पापीह । (३) कृ.-पच्छाहीं ।

हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि। हुअ संनाह सनाह॥
हूअ हलोहल सुभ्भरन। दोज दिन इक राह॥ छं० ॥ १४॥

सेना का वर्णन।

चोटक॥ हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं। घन घेरिक कीय सु फौज वरं॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर भद्दव बाहल संमिलयं॥
छं० ॥ १५

सु अगें हथनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं॥
तिन पिट्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]झरंत करी तिहलें॥
छं० ॥ १६॥

तिन पिट्ठह फौज गहब्बरयं। धरि गोरिय मुट्ठ करं धरियं॥
कमनेंत अभूल सु लष्ष लियं। तिन मध्य ततारह छच दियं॥
छं० ॥ १७॥

लष दीय गुरज्ज स गण्परियं। घुरसान दियं दल पण्षरियं॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं॥
छं० ॥ १८॥

घुरसान तनं दल उप्पटयं। मनु साइर सत्त उलट्ट भयं॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अद्ध सरं। लोहानिय पानिय षेत षरं॥
छं० ॥ १९॥

हबसी उजबक्क हमीर भरं। कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं॥
सरबानि ऐराकि मुगल्ल कती। बहु जाति अनेक अनेक भती॥
छं० ॥ २०॥

मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना।

कवित्त॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गे तत्तारिय॥
मधि नायक सुरतान। नील घुरसान सु भारिय॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलंजर॥
पाचि पीठि रुस्तंम। पना बहु भांति अवर नर॥

(१) ए.-करंत। (२) ए.-जब। (३) ए.-ध्यानिय।

उत्तरिय नद्द गोरीस पहुं। बज्जा दस दिसि बज्जिया॥
मानों कि भद्द उलटी मही। साद्दर [1]अंबु गरज्जिया॥ छं०॥ २१॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्डराव को आगे किया।

दूहा॥ दिल्लीपति फौजह रची। दियौ जैत सिर छत्र॥
चामंड रा अग्गै भयौ। मनों सु गिरवर गत्त॥ छं०॥ २२॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की।

कवित्त॥ फौज रची सामंत। गरुड़व्यूहं रचि गड्डिय॥
पंष भाग प्रथिराज। चंच चावंड सु गड्डिय॥
गाबरि अत्तातादृ। पांदृ गोदृंद सु ठड्डिय॥
पुच्छ कन्ह चौहान। पेट पम्मारह पड्डिय॥
सुंडाल काल अग्गो धरे। [2]कढे दोदृ कलहन्न किय॥
चालंत बान गोरै प्रबल। मानहु अंधकि मार दिय॥ छं०॥ २३॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना। एक हजार मीरों का कैमास को घेरना।

तत्तारह उप्परह। चित्त चावंड चलायौ॥
दुहूं फौज अग्गंज। दुहूं भुज भार भलायौ॥
मीर बान बरषंत। धार धारा हर लग्गौ॥
बाही चामंडरादृ। भूमि तत्तारह भग्गौ॥
उत्तरे मीर सै पंच दुदृ। दाहिम्मै किन्नौ दहन॥
पहिलै जु झुझझ दिन पहिल कै। मच्यौ जुद्ध जानैं महन॥ छं०॥ २४॥

तत्तार खां का घायल होना। मीरों की वीरता।

भूमि पर्‌यौ तत्तार। मारि कमनेत प्रहारै॥
एक घाव दोदृ टूक। परे धारन मुहु धारै॥

---

(१) ए.-अंबर। (२) ए.-कढ्ढे दोई कल कियं।

[1]पुर बज्जै पुरतार। चमकि चामंड चलायौ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ। एक बहु लष्षन धायौ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ। सत्त धरी साहस धरै॥
तिनमा [2]कटक्क चिबिधी घड़ा। एक एक पग अनुसरै॥ छं० ॥ २५ ॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना।

षान षान आषूंद। अट्ठ सहसं बहु गष्षर॥
परिय पंति अवनेस। पारि बहु [3]अष्षर गष्षर॥
[4]हयौ नेज चामंड। बीर दो सहस लरै भर॥
हस्ति एक बिन दंत। तमह तिन मथौ सहस कर॥
दाहिम्मराव मुरछ्यौ पर्‍यौ। दौर्‍यौ जैत महा बलिय॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही। कलि मझ्झे रिन बट कलिय॥
छं० ॥ २६ ॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया।

धपी [5]सेन सुरतान। [6]मुट्ठि छुट्टी चावहिसि॥
मनु कपाट उधर्‍यौ। कूह फुट्टिय दिसि बिहिसि॥
मार मार मुष किन्न। खिन्न चावंड [7]उपारे॥
परे सेन सुरतान। जाम इक्कह परि धारे॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ। जानि सनेही भिंटयौ॥
चामंडराइ करि वर कहर। गोरी दल बल [8]कुट्टयौ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार। लियौ कर दंत मुष्ष कर॥
परे बज्ज सिर धार। मनों सेना सिर उप्पर॥

---

(१) ए.-पुर। (२) ए.-कमंध।
(३) मो.-परिकर, कृ.-पष्षर। (४) कृ.-पयौ, ए.-भयौ। (५) मो.-मुष्ठि।
(६) मो.-तुष्ठि। (७) ए.-उषारे। (८) ए. कृ. को.-छुट्टयौ।

घुरसानी बंगाल। मनहु [1]डंडूर रमावै ॥
भरै पच जोगिनी। डक्क नारद्द बजावै ॥
अपछरा गीत गावत इला। तुंबर तंत बजावहीं ॥
सुरतान सेन दिस्सेस बर। [2]मग्ग मग्ग जस गावहीं ॥ छं० ॥ २८ ॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ।

सिर धुनत पतिसाह। धाइ सुनि सेना सथ्थिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार। परे बथ्थन सों बथ्थिय ॥
जम सों जम आहुरै। सूर जुट्टै दोइ घुट्टै ॥
नई गंठि तन जोग। सूर मुंडावलि घुट्टै ॥
घुरसान जैंत अब्बूधनिय। धार धार मुह कट्टिया ॥
ऐसो न जुद्ध दिष्षौ सुन्यौ। दारुन मेछ दबट्टिया ॥ छं० ॥ २९ ॥
मनु द्वादस सूरज्ज। हथ्थ चंद्रमा महा सर ॥
जिन उप्पर षलमलै। ताहि धर गोरिय सुभ्भर ॥
कटक कूह किलकार। सार परमार बजायौ ॥
भिरि भंज्यौ सुरतान। एक एकह मुष धायौ ॥
सिर सार धार बुझ्यौ प्रहर। तब दौर्‌यौ पज्जून भर ॥
निसुरत्ति षान लष्षह बली। लष्ष एक पाइल सुभर ॥ छं० ॥३०॥

घोर युद्ध हुआ। निसुरत खां मारा गया। दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई।

भुजंगी ॥ मचे [3]कूह कूहं, बहै सार [4]सारं। चमकैं चमकैं, करारं सु [5]धारं ॥
भभकैं भभकैं, बहै रत्त धारं। सनकैं सनकैं, बहै बान [5]भारं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
हबकैं हबकैं, बहैं सेल भेलं। हलकैं हलकैं मची ठेल ठेलं ॥
कुकैं कूक फूटी, सुरत्तान ठानं। बकी जोग माया, सुरं अप्प थानं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दंडूक। (२) ए.-बग्ग।
(३) ए. कृ. को.-हूक हूकं। (४) ए. कृ. को.-धारं। (५) मो.-धारं।

बहै चट्ट पट्टं, उघट्टं उलट्टं। कुलट्टा [1]धरै अप्प, अप्पं उहट्टं॥
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थं सुटट्टं। कडक्कं बजै सैन, सेना सुघट्टं॥
छं० ॥ ३३ ॥

बहै हथ्थ परमार, सिरदार सारं। परे सेन गोरी, बहै रत्त [2]धारं॥
पर्‍यौ षान निसुरत्ति, सेना सहित्तं। हुओ सूर मध्यान, दिल्ली स जित्तं॥
छं० ॥ ३४॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना।

कवित्त ॥ कालंजर इक लष्ष। सार सिंधुरह गुड़ावै॥
मार मार मुष चवै। सिंघ सिंघा मुष धावै॥
दौरि कन्ह नरनाह। पटी छुट्टी [3]अंषिन पर॥
हथ्थ लाइ [4]किरवान। रुंड माला किन्निय हर॥
बिहु बाह लष्ष लोहै परिय। जानि करिब्बर दाह किय॥
उच्छारि पारि धरि उपरें। कलह कियौ कि उघान किय॥
छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं। गिरे काइरं, सूर बड्ढे सनूरं॥
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कपारं। पियै जोगनी पच, कौयैं डकारं॥
छं० ॥ ३६ ॥

बहै अच्छरी हथ्थ, अनेक सथ्थं। करं सूर संम्हालियै, घल्लि बथ्थं॥
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं। लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं॥
छं० ॥ ३७ ॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना। कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय। भगिय सेना पतिसाहिय॥
पंच फौज एकट्ठ। कन्ह करवारि [5]सम्हारिय॥

(१) ए.-धरा। (२) मो.-धारं। (३) ए.-अंषनि।
(४) ए. कृ. को.-करिवार। (५) कृ.-सम्माहिय।

धर पारे बहु मीर। संघ्य अब सेना भग्गिय॥
गर घत्ती कंमान। लियौ गोरीय उलंगिय॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे। हाय हाय मुष हुंक्यौ॥
पज्जून घेलि मुष मीर कौ। कन्ह लेइ गोरी बंध्यौ॥ छं०॥ ३८॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना।

जनु उद्यान हलाइ। पवन चल्लै ज्यौं बांधै॥
त्यों पज्जून नरिंद। मीर जमदट्ठ सांधै॥
परे मीर सै सत्त। बिए रन छंडिव भज्जे॥
चामर छच रषत्त। तषत लुट्टे ज्यों सज्जे॥
कन्हा नरिंद पतिसाह लै। गयौ थान अप्पन बलिय॥
पंमार सिंघ लग्यौ सु पय। चाव भाव कीरति चलिय॥ छं०॥ ३९॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहां किले में रखना।

[1]रहै कन्ह अजमेर। *गयौ चहुआन जैत लिय॥
धरि अग्गोरी नरिंद। दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय॥
गयौ अप्प अजमेर। †लिए पतिसाह नरिंदह॥
दिन किज्जै महिमान। पास ठट्ठा रहै इंदह॥
बैठारि तषत सिर छच दिय। सभा विराजे सु पहुंभर॥
सिर फेरि पैर दिज्जै दुनौ। यौं रष्यै पतिसाह दर॥ छं०॥ ४०॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या।

एक लष्ष बाजिच। सहस तीनह मय मत्तह॥
लष्ष एक तोषार। तेज ऐराकी तत्तह॥

(१) ए. को.-हरै। * ए. कृ. को.-लिए पतिसाह नरिंद दिय।
† ए. कृ. को.-तहां चहुआन जैत लिह।

आराबा हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु भारिय॥
चामर छत्र रषत्त। साहि लिन्निय धर सारिय॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्टे घाव सु बंधियै॥
रन जीत सोधि संभर धनी। बज्जे अनत सु बज्जियै॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[1]रची सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए॥
गोयँद निद्दुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए॥
करौ दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह॥
रा पज्जून प्रसंग। राव हाहुलि हंमीरह॥
इत्तने मत्त मभ्भह मिले। हम मारैं छोरैं न अब॥
छैहै न हास्य अबकें हमैं। फिर न आइहै इह सु कब॥छं०॥४२॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस षंधार। दिए पछिबानं सारं॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं॥
गज्जन रष्षै देस। बियौ समपै प्रथिराजह॥
ना तरु छुट्टै नाहिं। कर हम उप्पर काजह॥
बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि। अबकैं मारै कोइ नह॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जें हमहि॥छं०॥४३॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यौ प्रथिराज। कहै काका त्यौं किज्जिय॥
जेता रंजक होइ। तिता लादा भरि लिज्जिय॥
जग्ग कियौ पंडवन। हेम काचौ [2]उन आन्यौ॥

---

(१) ए. कृ. को. करिब। (२) ए. कृ. कां. तुम।

त्यौं लभ्यौ पतिसाहि । लष्य लोहा हम मान्यौ ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को । लोहानौ सथ्थै दियौ ॥
असवार सहस सथ्थं चलें । कर सिर कन्ह इतौ कियौ ॥छं०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना । शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना ।

करि जुहार तब कन्ह । गयौ अजमेर दुरग्गह ॥
तज्यौ कन्ह पतिसाह । बत्त सब जंपी अप्पह ॥
ह्वै पुसाल गजनेस । दई इक लाल सहित मनि ॥
कन्ह लेइ पतिसाह । गयौ दिल्ली सु ततच्छन ॥
मनुहार करिय सामंत सब । तेग दई दिल्लेस बर ॥
दो अश्व करौ दोइ देय करि । [1]साहि चलायौ अप्प घर ॥
छं० ॥ ४५ ॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा ।

करि सलाम गजनेस । करिय नव निह दिल्लेसर ॥
तम रषियो हम प्रीति । बरष मन सत्तह केसर ॥
येसंगी धर सीम । बीच पौरान कुरानं ॥
जा तक्कौं तुम अवे । तबै तुम कढ़ियौ प्रानं ॥
उत्तरौं अटक तौ मैं अवर । मुसलमान नाही धरौं ॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत । हूंन अबै ऐसौ करौं ॥छं० ॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना ।

पहु चल्यौ सुरतान । दियौ लोहानौ सथ्थै ॥
दूत च्यारि अनुसार । काल छुट्यौ सें हथ्थै ॥
गयौ बीस म्होलान । अटक उत्तरि इन पारं ॥

(१) ए. को.-चाहि, चाह ।

सोवन पथ मेलान। सहस सन्हे असवारं ॥
निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन। आइ कियौ सलाम तहां ॥
आजान बाह महिमान किय। चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल हरी नवट्ट। सहस अट्ठारह सथ्थें ॥
हेरौ करि पतसाह। पुखे लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार। कटक देष्यौ असवारह ॥
कह्यौ चरन सब सथ्थ। सहस दोइ सेना सारह ॥
तिन बार बज्जि चंबाल बहु। सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥
उत्तर्‌यौ कटक छोरिय अटक। नहि हुआ उग्गंत पहु ॥छं० ॥४८॥

गाथा ॥ बज्जै पुठि चंबालं। हथ्थिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं। किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान। कौन बज्जा बज्जाए ॥
दौरि दूत तिन बेर। धनी पछिबानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच। कौन पछिवान धनी कहि ॥
तब जान्यौ रयसल्ल। सेन आजान बन्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं। सहस डेढ़ असवार दिय ॥
बंधेव फौज लोहान बर। दुहूं फौज टामंकं किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा।

अरुन किरन परसंत। आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै बान बिहंग। जानि जुट्टा दोइ मल्लं ॥
संमाही आजान। तेग मानहु हबि दिट्ठिय ॥
जानि सिषर मझि बीज। कंध रैसल्लह बुट्ठिय ॥

लोहान तनी बज्जै लहरि। कोउ इल्लै कोउ उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल। एक घाव एकह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी। लोह बज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक्क तर। लुथ्थें लुथ्थ समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना।

पयौ लुथ्थि रयसल्ल तहं। ढुंढि षेत लोहान ॥
सुबर साह गोरी निभय। गयौ सु गज्जन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना।

कवित्त ॥ तत्तारिय षुरसान। सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्योछावर करि पैर। बहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक असवार। मिल्यौ गोरी दल पष्षर ॥
लष्ष भये दरवेस। आइ पइ लग्गे गष्षर ॥
उच्छाह भयौ गज्जन इला। गयौ मभिभ्भ गोरी धनिय ॥
दरबार भीर भीरन्न घन। मिलत आइ अप अप्पनिय ॥छं०॥५४॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया।

डेरा दिय लोहान। करिय मनुहारि रोज दस ॥
करिय सत्त आजान। तुरिय पंचास अप्प बस ॥
इह दिन्नौ लोहान। बियौ भेजौ नृप राजं ॥
लाष दाइ हजार। सत्त सै तोला साजं॥
इक इक्क तुरी हथ्थी सु इक्क। सामंतन दीनौं सबै ॥
मुह करिय कित्ति अनेक बिधि। सुबर सूर फेरिय जबै ॥छं०॥५५॥

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी।

सीष दई लोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत। कली छत्तीसह दप्पै ॥
मिल्यौ बाह आजान। बत्त सुरतान सु अप्पै ॥
इक इक तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए धरैं ॥
सोवन्न रासि रंजक षहर। मुक्कलियै चिचँगपुरैं ॥ छं० ॥ ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतौड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं ॥
लादे सित्त सुरंग। सित्त लै [3]तुला प्रमानं ॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैबर कुल राकिय ॥
छच लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यो चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरह ॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरह ॥छं०॥५७॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को. दुरग। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोला।

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ [1]कनवज्ज ॥
चढ़त पंग सम्हौ मिल्यौ । सुबर बीर कमधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥
करि षलषट सुरतान सौं । दल भग्गै सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना साहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना।

कवित्त ॥ चल्यौ सुबर चहुआन । बीर कन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव बर सेन । तारि कढ़्यौ सु तुंग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पाच । पठय नाइक घर शाही ॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज करि । भीर भगी बर बीर [2]अचि ॥
तिहि दिनां वीर पज्जून पर । षग्ग मार बोहिथ्थ [3]मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥
जच तच एकठ भये । [4]सबै साज संमाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना।

---

(१) ए.- कसवज्ज । (२) ए. कृ. को.-आगि ।
(३) ए. कृ. को.-मार्ग । (४) मो.-सब कमधजहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस । दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार । आइ अति भ्रम्म ढिल्लि धर ॥
दिय थानक नाइक्क । नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु बिद्य । कला संजुत्त सुनेयं ॥
ता सथ्थ चीय रतिरूव तन । बर चवइ चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति विमल । अति मति अगनित [1]विद्यबल ॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंशा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना।

बाघा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं । अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं । पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं । स्वर जनु पंचम मझ्झ गुंजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं । सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै । बासन महल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि । जग्यौ काम नृपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ । बहुर प्रसंसन साधक कीनौ ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दुहा ॥ संझ समय अंदर महल । किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयट्ठौ राज तहँ । अनत सजग्गित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं । सु धाम तेज तग्गियं ॥
सजे सुभाल आसनं । अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

---

(१) ए.-वैद्य । (२) मो.-अति ।

सु दीप साम सोभयं। सुगंध गंध ओभयं॥
कपूर पूर जंभरं। मृगज्ज बास अंगरं॥ छं० ॥ १२ ॥
सु सज्जि सिंघ आसनं। समोल रोहि वासनं॥
कनक्क छच दंडयं। सु रंग रंग मंडयं॥ छं० ॥ १३ ॥
अबीर [1]जप्प कर्दमं। सरोहि ग्रेह सर्दमं॥
अभूत साध लोभयं। अबीर भूर ओभयं॥ छं० ॥ १४ ॥
अथास धूम धोमरं। प्रसार वास ओमरं॥
प्रसून ब्रन्न वन्नयं। स भूषनं स भ्रम्मयं॥ छं० ॥ १५ ॥
घनं सु सार सम्मरं। अभूत वास अम्मरं॥
भ्रुअं कुसम्म केसरं। सुरं अभूत जे सुरं॥ छं० ॥ १६ ॥
तहां सु राज आसनं। सरोहि सिंघ सासनं॥
सुपाय अंग रष्पियं। कला जु काम लष्पियं॥ छं० ॥ १७ ॥
प्रवीन भाव पायसं। विचिच चिच पासयं॥
भवंति क्रांति भूषनं। सुबुद्धियं विदूषनं॥ छं० ॥ १८ ॥
प्रसून [2]विद्धि बासनं। अभूत [3]सिद्धि आसनं॥
बरष्प षोडसं समं। अदोस रूपयं [4]रमं॥ छं० ॥ १९ ॥
कला विग्यान विद्धयं। सु पास भूप सिद्धयं॥
सिंगार सार सारयं। अभूषनं स धारयं॥ छं० ॥ २० ॥
ग्रहे विदून चामरं। सु विंभ राज सामरं॥
धरंत कब्बि पन्नयं। सु कंठ थान सन्नयं॥ छं० ॥ २१ ॥
सु घन्नसार पानयं। सुगंध विद्ध मानयं॥
करें सु [5]द्रप्पकं करं। सु सष्पि [6]अद्धि संमरं॥ छं० ॥ २२ ॥
सृंगार ग्रेह सोमयं। अभूत दुत्ति ओमयं॥
समोभ धामयं सजं। सुबास वासवं लजं॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम।

(१) कृ. ए.-दंच्छ, जच्छें, जच्छ।
(२) मो.-विद्ध। (३) मो.-मद्धि। (४) को. ए.-सम।
(५) कृ.-दर्प, ए.-दप्प। (६) मो.-अट्ठ।

कवित्त ॥ रच्चि धाम अभिराम। राज हरि थान वयट्ठौ ॥
दिपत [1]दीह सुभ लीह। तेज उभ्भर तप जिट्ठौ ॥
बोलि [2]चंद चंडीस। बोलि जदव रा जामं ॥
निडुर बोलि कमधज्ज। अत्ति जामनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि क्रूरंभ भर। लोहानौ आजानभुअ ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि। ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल ताम नाइक्क। सथ्थ सथ्थह सब साजं ॥
बोलि पाच कर्नाटि। बैठि गानं बर वाजं ॥
नाटक भेद निबंध। बूझि राजन बर बत्तं ॥
कवन कला क्रत पाच। कहौ नाइक निज सत्तं ॥
नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि। एह पाच देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय। कला मनोहर चिंति मय ॥ छं० ॥ २५ ॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निड्डुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चयौ ताम कविचंद बानि। नायक्क अहोमति मरम जानि ॥
सो धरौ कला विच्चार साज। निड्डुरह बयट्ठौ पास राज ॥ छं० ॥ २६ ॥
नाटक्क बिबिध बुझ्झै बिनान। विच्चार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि हो चंद भट्ट। नृप पास बयट्ठौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचंद का निड्डुरराय का इतिहास कहना।

उच्चयौ चंद नायक सरीस। कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव। ता सुअन कमध निड्डुरह एव ॥ छं० ॥ २८ ॥

(१) मो.-देह। (२) कृ.-चंद पुंडिर।

नायक्क कहै हय बत्त सच्च । आवन्न केम हुअ दिल्ली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक्क चिंत । आवन्न क्रित्त करन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
जै सिंघ कियौ तहां उच्च काज । अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु बेस उभय बंधव सरूप । श्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ महल निद्दुर समेक । कहि कुमर राज सद्दौ सु एक ॥
उच्चयौ ताम निद्दुरह देव । कर कुमर हंम मिच्छंत सेव ॥३१॥
जयचंद समुष निरषेत ताम । कल [1]कलिय लग्ग चामट्ठ धाम ॥
करि सभा सु निद्दुर आइ ग्रेह । सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निद्दुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना।

कवित्त॥ समय एक निद्दुर । कमंध आषेट सपत्तौ ॥
बिधि कुरंग दुअ तीन । उभय एकल निज घत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग । सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार । सथ्थ संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि । घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये वाग आगम सकल । लहयौ निद्दुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निद्दुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल ॥ निद्दुर ताम [2]गोठिलिय अप्पं । तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पकवान सरस गति सारं । रच्चे मंस बिबह बिसवारं ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे । [3]चपतौ सथ्थ सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहै । कासमीर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं । मादक आइ अग्गि जहां जग्गं ॥
सुनौ श्रवन सारंग सुवत्तं । आयौ आतुर [5]वग्ग तुरत्तं ॥छं०॥३६॥

(१) ए. कृ. को.-मलिय। (२) ए.-गोगिय। (३) मो.-नृप तौ।
(४) मो.-सुरंगं। (५) मो.-त्रेगि।

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम बाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। लुट्टी बस्त गोठि मनि सावं॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ। फेरे मुष जैचंद बिरत्तौ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि पिथ्थ बधायौ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाटय कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दुहा॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बेंन उचार॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जै जै अर्थ उचार॥ छं० ॥ ४० ॥

गाथा॥ राजनीति गति रुवं। गुन संपूर चीस एकंगं॥
जे रंजे रज ध्यानं। सुनि कविराज सब्ब संपूरं॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन।

साटक॥ विद्या विनय बिबेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा॥
[3]सुबिचारो सु विचक्षणे रु सुमनं सौजन्य सौदंर्य्यता॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला॥ छं० ॥ ४२ ॥
म्रदु तत्वं म्रदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं॥
[5]उद्दायं उदार दाव उछहं एते गुना राजयं॥

---

(१) ए.-कनिक। (२) ए. कृ. को.-मार सलयं, विव्वेक विच्चारयं।
(३) ए. कृ. को.-विचारं ससु तप्प सोष सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं।
(४) ए. कृ. को.-भाग्यं।
(५) ए.-जद्दायं।

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं ॥
सोयं [1]नीति सनीत कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं [2]जोरयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि । अहो चंद बरदाइ ॥
राग विनोदह चौसषट । कहौं सुनौ विधिसाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोदयं । सुरंवंध न्रत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वादयं । अभिलाष अर्थ पदादयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥
[3]बक्कात जग्यपवीतयं । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत पालक तल्पयं । ते पढ़य तर्क विजल्पयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रंमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयंच प्रमोदयं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं ॥
धीरज्ज धीर जुधं वरं । सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ सुनि नायक राजनन मति । जंपहि दिल्ली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना ।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥
पाछें न्रत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजंगी ॥ तबै बोलियं अप्प नाइकअ गं । मुषं पाच आरोह उच्चार जग्गं ॥
धरै आप बीना सुरंसाज सारे । सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥
छं० ॥ ५१ ॥

धुनिं रूप रागं सुहानं उपाए । रचे च्यार राइं सुभा सुभ्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास थानं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो.-तीन । (२) ए.-को.-चोवरं ।
* ए. कृ. को.- में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है ।
(३) कृ. ए.-वक्यत, वक्मत ।

मनं सर्ब मोहे अतिं राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। बयं विस्मयं बेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३॥
दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नषं सिष्प जग्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ी मत्त बेली चितं पच हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं।

तबै बोलि नाइक्क राजन्न तामं। कहा मोल पाचं कहो द्रव्य नामं॥
कहै नाम नाइक्क पाचं सरीसं। कहा मोल पाचं नृपं जोग जीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्पियं अप्प पाचं सुभासं॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पाच तुट्ठे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दुहा ॥ काम कला तुट्ठिय नृपति। सु ग्रह पवारी द्वार॥
तिन अवास दासी सघन। अह निस रह रषवार ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ नृप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठट्ठा दिसि [1]उच्चरिय । राय चामंड बीर बर ॥
बंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावद्दिसि अरि नन्ह । सीम कद्दै नह आजं ॥
कैमास बोलि मंची तहां । मंच लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुभ्भ । पद्धरी छंद बरनैति मभ्भ ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सद्धै सु जुद्ध संग्राम श्रीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बंचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवर्त्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । घुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उत्तरिय । (२) ए. कृ. को.-कोदक ।

चालुक्क बीर गुज्जर नरेस। क्रित करै जुद्ध करनी विसेस॥
थल वटिय वीर मभिभय हुजाव। रष्पंति सूर तिन मध्य आव॥
छं० ॥ ५ ॥
सब सबर अरी चहुँ दिस नरिंद। तिन मध्य दन्द पृथिराज इन्द॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम। महि मंह काल सुभथान ताम॥
छं० ॥ ६ ॥
तिन बरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज मंडन सु बीय॥
बंच्यौ सु राज कागद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल॥
देवास धीय देवास व्याह। मंड्यौ सु राज संभरि उछाह॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल बत्त चलै प्रमान॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती सँसार॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग इह चलै बत्त। संसार सार गल्हां निरत्त॥
इह कच्च पिंड [1]संची सु बत्त। जैहै सुजोग जोगाधि तत्त॥छं०॥१०॥
जैहै सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्टिये मान सो बिनसि सार॥
वापी विरष्प सर मढ प्रमान। मिलिहै सु सर्ब भ्रगतिस्र जान॥
छं० ॥ ११ ॥
छंडो न बीर देवा सु मुष्प। रष्पौ सुमंत गल्हां [2]पुरुष्प॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त॥ गल्हां काज सु देव। अस्ति दद्धीच दीय बर॥
गल्हां काज सरुष्प। बज्र किन्नौ सु इंद्र जुर॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को.-पुरिष्प।

गल्हां काज नरिंद । बंस दुरजोध मान रषि ॥
गल्हां काज सु धात । मान अट्टत्ति भूमि लषि ॥
रष्षिहै नरन गल्हां सुबर । गल्हां रष्यै नृपति उष ॥
जयचंद बंध दल बल सकल्ल । सबर [1]साँइ किज्जै सरुष ॥छं०॥१३॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना।

दूहा ॥ इह [2]परतग्या नरिंद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन।

चोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धरं । दरबार बिराजत राज भरं ॥
चढ़ि चच्चर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनँदियं ॥
छं० ॥ १५ ॥

नृप लज्ज नृपत्तिय सारँगयं । सभ पुज्जिन सामँत ता बरयं ॥
अतताइय अंग उतंग भरं । सिव सेव कियैं तन फेरि धरं ॥
छं० ॥ १६ ॥

नर निढ्ढुर एक नरिंद समं । कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥

छिति रष्षन छित्ति पजून भरं । तिन पुच्च बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्जन सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंचिय राज दरं । अरि अंग [3]उछाहन बीर बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मझझ विराजत पंग भरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

चावंड नरिंद सु षग्ग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उतंग षलं । बय देहिय जानि सुबाहु बलं ॥छं०॥२०॥

---

(१) ए. कृ. को.-साइ। (२) ए. कृ. को.-परतं ग्यान। (३) ए. कृ. को.-उछाहन।

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं । कर पाइ सु अंबय इष्थ तनं ॥
लरि लोह लुहानय किप्ति करं । अरि वाइव धूर ज्यों पत्त [2]ढरं ॥
छं० ॥ २१ ॥

भजि भोंह चंदेल सु षेल षगं । धर धूसन भुंमिय जंपि जगं ॥
दिवराज सु बग्गरि बंध बियं । जिन किप्तिय जिप्ति जगत्त लियं ॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्दिग बाह पगार बली । हरि तेज ज्यों रोर फटंत षली ॥
नरनाह सु कन्ह का किप्ति करौं । भर भीषम भारथ सुद्धि धरौं ॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै । तिहि नाम सुने अरि अंग कपै ॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं । तिन कंकन बंक बियं अमयं ॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं षग धम्म बली । जिन किप्ति दिसा दस बट्टि चली ॥
षड़ गुज्जर राम नरिंद समं । जिन [3]कंदल रुद्धि उठंत भ्रमं ॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग्ग लियौ । भर भट्टिय भान भयंक बियौ ॥
रघुबंसिय राम सुरंग बली । कनकू जिन नाम नरिंद कली ॥
छं० ॥ २६ ॥

बर राम नरिंद नरिंद समं । तिहि कंदल उट्ठि रुधं सु जमं ॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं । घरि ह्वै भर उट्ठिज बूंद भरं ॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवप्ति अराधन न्याय करै । रघुवंसिय किल्ह नरिंद बरै ॥
जिन जिप्तिय जादू पंजाब धरं । .... ॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ । धर मंडव मुंड चका बरत्यौ ॥
पांवार सलष्ष सु पुच्च बली । नृप जैत सजैत कि किप्ति कली ॥
छं० ॥ २९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-इक रंग सुरंग । (२) ए. कृ. को-धरं । (३) कृ.-कंकनि ।
(४) ए.-मंडिय ।

सु चलै बर भाइ [1]दुभाइ भरं । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू नृप [2]धावरयं । जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन [3]तूंअर नेत चिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम धरं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयौ जय सह पुंडीर बली । जिनके भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु पीचिय षग्ग बली । चमरालिय कित्ति नच्यंद हली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अरहनयं । भजि भारथ कुंभज किरहनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति बली । बर चालुक चार नक्षत्र हली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

परि पारथ क्रन्न कुँवार नृपं । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग पंडिय [4]छिचिय छित्त रनं । सब सामँत सूर समोह तनं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दहकारि उभै न्रप पास लिए । समतम्मि सु मंचिय मंच बिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमौ । तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमौ ॥
सिर अंतय आतप छत्र धर्‌यौ । कनकाबलि मंडिय मंडि हर्‌यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोधय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सक्रय बक्रय बुद्धि नरं ॥छं०॥३७॥
तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनों छबि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं । जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

---

(१) मो.-सुभाइ। (२) मो.-धीवरयं। (३) ए. कृ. को.-तूँअर।
(४) ए. कृ. को.-छत्रिय।

जयचंद जँघारय नाहरयं । न्रप राज सु रष्पन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥
छं० ॥ ३९ ॥
कठ हेरिय सारंग सूर बली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुअ राव हमीर बरं । छिति पत्ति कँगूरह सूर गुरं ॥
छं० ॥ ४० ॥
नर रूप नराइन राज भरं । भर भारथ जुग्गिनि पाच करं ।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसौ । मग बेद चलंतह ब्रह्म इसौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥
गुर ग्यारह सै सकसैन बरं । प्रथिराज चढ़ंतह बाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं । बजि बंब कि अंबर घुम्मरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥
अननंकत षग्ग फरी धरयं । भजि डंक ज्यौं डक्कत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं । जनु छुट्टि जलह विहह भ्रमं ॥
छं० ॥ ४३ ॥
चलि मल्लन हल्ल ज्यों रोस रसै । जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे ॥
हथनारि सुधारि कें कंक पगी । धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥
छं० ॥ ४४ ॥
कमनैत बनैत कि नेत धरं । मंडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं । सु मनौं घन फुट्टिय अग्गि झरं ॥
छं ॥ ४५ ॥
सब सेन सभा इह व्रन्न कहै । बरषा रुव संत दै छत्रि लहै ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ।

दूहा ॥ जो बुलै सामंत सथ । तौ [1]चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद कौ । अरि बंधौ सिरताज ॥ छं ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना ।

(१) मो.-भो ।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौ मंचह गुन ग्यान । धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु भ्रम्म [1]उबरत्त । बीर चट्टौ परिमानं ॥
ज्यों गुरु बलहुअ विदुष । तत्त सोई करजानं ॥
सा भ्रम्म चिया अग्या नृपति । मान मोह जानै न अँग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम । सबल बीर चल्लेत सँग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ बल । गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सोइ सज्जिय सूर नरिंद बलं । छिति धारन को छिति छच्च कलं ॥
मति मंच बरष्षय सूर बरं । धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
छं० ॥ ५० ॥

आइत्त अहीर करै बलयं । सुरष्यौ गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै बलबीय अइत्त भरं । न्रप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

हरसिंघ महाबल बंधु बियौ । बरसिंघ बली अरि छच्च लियौ ॥
बर जद्दव जाम जुवान नरं । जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

नर नाहर टांक नरिंद नमं । तिहि कंठ अरी धर भ्रम्म तमं ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज बरं । मद मोष बिछुट्टिय काल झरं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

परषत्त सु पल्हन अल्हनयं । भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं ॥
बर तूंअर रावति बान बली । जिन कित्ति कलाधर भ्रम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो.-उरवत्त। (२) ए. कृ. को.-कंठय। (३) ए. कृ. को.-पंचमुष्षब बार।

बर बीर कँठी घुरसान [1]रनं। इय चीय अहुठ्ठपती सुभनं॥
कंठीर कलंकत जैत बली। जिहि ओटत जंगल देस भली॥छं०॥५५॥

नृप रूप नरिंदति वाहनयं। घुरसान दलंघिति सा हनयं॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। घित की घित कंध परै न धरं॥
छं०॥५६॥

जनएस गुरेस सबंध बली। जिहि निढ्ढुर उप्पर पंष [2]पुली॥
परसंग पविच पविच छती। घुरसान दलं जिन जुद्ध मती॥
छं०॥५७॥

अवनीस उमाह तुरंग [3]तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय घनं॥छं०॥५८॥

महनंग महा मुर नेंन समं। तिन राज सु रष्पिय जित्ति क्रमं॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु मनों कल जोति सरीर बढ़ी॥
छं०॥५९॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन जानत [4]मोद मयं करिकं॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी विरदावलि जंपि फुनं॥
छं०॥६०॥

सत में षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं॥
छं०॥६१॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त॥ निढ्ढुर खूर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं॥
जिपड़ जैत जैसिंघ। सलष पावारति खूरं॥
जामदेव जद्दव जुवान। भारथ्थ पत्ति सिर॥
बर रघुबंसी राम। द्रग्ग महिं कौन तास बर॥
बर बीर्य रक्त [5]पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि॥
मधि मद्धि मुहूरत इक्क बर। अरि बर गन रुंधहि भिरहि॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परै।

उक्त छः सामंतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अंकूर बीर रस॥
सद्धि भली नकपत्त। अंग लग्गे सुभंत तस॥
[2]राजस तम सातुक्क। साथ अग्गै अधिकारिय॥
जथ्थ कथ्थ आरुहिय। रत्ति ढिल्लीपति धारिय॥
जंगलू देस जंगल न्रपति। जग लेबै बर सूर षट॥
षुरसान षान उप्पर चढ़िय। बर बीर रस बीर पट॥ छं० ॥ ६३॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान बीर रस॥
सामंता सतभाव। पंग उप्पर कीजै कस॥
पंच घटी सौ कोस। राज अग्गं ढिल्ली तँह॥
साम दान अरु भेद। दंड निर्नय[3]साधौ जँह॥
मन बच क्रम कह कह कह्यौ। अलप न सुर सहय सुघट॥
दुजराज संधि गुरराज कौ। सद्धि महूरत चट्टिपट॥ छं० ॥ ६४॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

चोटक॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिविबं न्रपं। ससि राज इकं प्रति ब्यंब पथं॥
प्रतिब्यंबह मभ्भ इकंत उभै। चहुआनरु सामंत सूर सुभै॥
छं० ॥ ६५॥
दिस राकय अर्कय थान बियौ। तम भंजित तेज सु राज लियौ॥
सोइ लच्छि हयग्गय मंत षुलौ। रवि कौ किरनावलि तेज डुलौ॥
छं० ॥ ६६॥
पर पष्षर स्याह तुरंग रनं। सु मनों घन सोभत नैर तनं॥
सु विचें विच राजत राज रती। सु मनों प्रतिबिंब किदेव किती॥
छं० ॥ ६७॥

---

(१) ए. कृ. को.-"रौद्र भयानक रस"।
(२) मो.-राजत। (३) मो.-साधै।

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क मुष। न्रप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंच एकह बुले। वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना।

तिते खूर तिहि रत्ति बर। ग्रेह सपत्तें बीर ॥
पंचमि बर बैसाष धुर। लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रहे सखूरं। मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावहिसि रंगं। मनों [1]षलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ॥ ७० ॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना।

दूहा ॥ मेघ पंति वद्दल विषम। बल दंतिय सजि खूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै। धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि बर। लिय कारन परिमान ॥
खूर उगै सत पच ज्यौ। ज्यौं भद्दव बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन।

चोटक ॥ सुअं बर बीर सु चोटक छंद। छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवह। ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥ छं० ॥ ७३ ॥
घनंकिय संकर अंदुन अंद। जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छितौ छितिपूर हयग्गय भार। दिसौ दिसि दिग्घहि ज्यौं जल धार ॥
छं० ॥ ७४ ॥
ढरै दिगपाल सु अठ्ठय मेर। भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छचिय सद्द निसान। दिसा घुरसान सु बद्दय पान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-पहह।

मंडे मय मत्त [1]गहम्मइराज। उठै वर अंकुर मुच्छ विराज॥
कहै कविचंद सु उप्पम ताहि। मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि॥
छं० ॥ ७६ ॥

[2]अपें प्रथिराज समप्पय बाज। तिनें दिषि पंतिय ग्रब्बत लाज॥
दुअं दुअ बंधि रकेवन ओर। चढ़े वर छिछिय सूर झकोर॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयहल पंति सुभंतिय ठांनि। मनों बगपंति घनी घट बांनि॥
मयं मय रुद्र सु रुद्रय सार। भयौ जनु अंत प्रलै दुति वार॥छं०॥७८
डहडुह बज्जय डक्कय मात। डलै तिन बीर गिरव्वर गात॥
सु दिष्पन वांम फुरक्कय नैन। चढ़्यौ जनु बीर परव्वत बैन॥छं०॥७९॥
इसे दोउ बीर विराजत रिंघ। गुफा इक मझ्झ मनों दुअ सिंघ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर। कही कविचंद सु उप्पम पूर॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कंतहि चीर। उठ्यौ तहां जिन्न भयानक बीर॥
लिषी लिष चिचय दंपति बैन। मनों पलटै दिन चाचिग नैन॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान। किधों चकई सुपमुक्कय मान॥
भयौ मन बीरन बीर प्रमान। भयौ करुना रस तीय प्रमान॥छं०॥८२॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल। मनों दुअ पास इलंत हिंडोल॥
दोऊ मझ रग्घय सूर सनूर। भजै करुना रस कादर पूर॥छं०॥८३॥
मिले न्रिप आइ सु ढिल्लिय थान। कहै कविचंद बषान बषान॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन।

दूहा॥ स्वामि ध्रम्म सों [3]सुद्ध मन। ज्यौं [4]बांबी दिसि [5]सप्प॥
ग्रग विषांन ज्यों अरिन बर। जगि बीरा रस जप्प॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंशा वर्णन।

(१) मो.-गहम्मग। (२) कृ. को.-अपं। (३) ए. कृ. को.-जुद्ध।
(४) को.-बाबी। (५) ए. कृ. को.-सर्प।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु बीर । जग्गि चयनेत अग्गि सिव ॥
कै मचकुंद प्रमान । गुफा बारुन सु दैत्य लिव ॥
कै [1]जग्यौ भसमास । दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत । बीर चावहिसि दीसं ॥
दीनी न नृपति किन निरति बर । किहु न सुनी जैचंद क्रम ॥
बग्गं उपारि धाए बलिय । अभिलाषह भारथ्थ श्रम ॥छं०॥८६॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलाषह श्रम गर्व । भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत । सेन सज्जी रन पूरं ॥
भवर सह सम सुमन । प्रेम रस छुट्टिय जंगं ॥
सुबर राज चहुआन । करन उप्पर बर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजी । रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिग । दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन ।

मोतीदाम ॥ दंसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार । चक्यौ जनु इंद्र धनुष्षय धार॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस । षरक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ । कहै कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सुसथ्थय बीर । रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनों कुत कुंतय बारय घुस्सि । गए मनु आरद शंकर भुस्सि ॥
करुना रस केलि क्रमीनह बीर । नच्यौ अदबुद्द स रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर । दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान । सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥
छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जग्या। (२) ए. कृ. को.-छित्त। (३) मो.-छिपग।
(१) ए. कृ. को.-मध्यय।

दया बर हीन सगप्पन नथ्थि । .... ॥
उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि । तज्यो नन मात उरग्गिय लच्छि ॥
छं० ॥ ९२ ॥

षिप्पे सिर ईस पटक्किय जट्ट । भयौ तहां जन्म सु बीरय भट्ट ॥
भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार । पछै दछि दच्छिय दप्षि डचार ॥
छं० ॥ ९३ ॥

इतं मिति मंत सु कंतिय राज । भयौ बर बीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ । बज्यौ रनतूर रवद्दय एछ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

मली जनु जंगम जो गवरीस । दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
तज्यौ जहां मान लगी पिय कंध । नयौ रस संत सु मंतिय संध ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सु जाति जरा नृप हक्कि प्रमान । चढ्यौ तिन बेर बली चहुआन ॥
छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना ।

कवित्त ॥ चाहुआन बर बलिय । भार भारथ रस भिन्नौ ॥
मधुर सुधर सिंधुरस । अंग चावहिसि छिन्नौ ॥
सुबर सेन सामंत । सुबर बल बीर निनारे ॥
मझ मझ्झह आवृत । देव जनु जुद्ध हकारे ॥
कुसमिस्त जुद्ध देवह करन । रथ सुरत्थ हय हयति नर ॥
सामंत सूर पुज्जै नहीं । वर कंदल [1]उट्ठैति धर ॥ छं० ॥ ९७ ॥

सामंतों की वीरता का वर्णन ।

उरग विंद रवि उठै । सीस हक्कै धर नंचै ॥
देवासुर संग्राम । देव पूजा देवंचै ॥
इंद्र जुद्ध तारक्क । सोइ तत्तह अधिकारी ॥
पंच पंच पंडव सु । भीम दुर्जोधन भारी ॥

(१) मो.-उठंति ।

गज मंत दंत कट्टै सु भ्रत। दैवत्त जुध सामंत रन ॥
उद्दयो जुद्ध आहत मिति। नहिन मेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि जाइ मिलै धर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन न्विमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
षिन मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कह निढ्ढुर रट्ठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहौ देव कौ भ्रम्म। कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
बारि बूंद बुदबुद्द। इथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बद्दलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु काम के। अंत चित्त सदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥

अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुव्व भ्रम्म संग्रहै। पुव्व गत्तिय सुद्द गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जंजं बधै। तंतं बुद्धि पुरान बर ॥
न्विघ्घात घात पत्तिय सु वर। सु इत काल निच्चरि सु नर ॥छं०॥१०१॥

स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि वंछौ मरन। भौर संकरैं निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग। छंडि इह मंच सस्सगह ॥
अत्ति काज दड्ढीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बेलि कै। चढ़हु भूमि घर सुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रेहं। के के न काल संग्रहे हंतं ॥
मंची जा प्रथिराजं। रष्षे जा बीर सो सस्त्रं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी ॥
[1]ता भग्गा मन सूर काइर बरं, [2]किल किंचि किंचित रसै ॥
अभिलाषं छिति गर्व तारुन विधे, संसार सहकारयं ॥
वारं जा पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा। तिनै धावतैं होइ मारुत्त पंगा।
भमै भुंम अग्गै सुमं तीन संधै। मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै॥
छं० ॥ १०५ ॥

पुजै पंष अंषी मनं षीन धावै। तिनं उप्पमा कौन कविचंद लावै ॥
किधौं कैसपत्रं चलै चित्त भारी। किधौं चक्करी इथ्थ [3]आवत्त तारी॥
छं० ॥ १०६ ॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै। म्रगंराज कैसे उपम्माति लावै ॥
अगंपाइ दीसे सुषं मेह कारै। मनों दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै ॥
छं० ॥ १०७ ॥

धरे पाइ बाजी दृढ़ंतं निभारै। मनों तार सौं तार बज्जै इकारै॥
तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे। मनों तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥
छं० ॥ १०८ ॥

इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं। दिषै सूर सामंत इथ्थं सुपाजं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

दूहा ॥ बाज राज नृप [4]राज दिय। बिलसि विधान बिधान ॥
तिन उप्पम कविचंद कहि। का दिज्जै धपबान ॥ छं० ॥ ११० ॥

---

(१) मो.-ना। (२) ए. कृ. को.-कल।
(३) ए. कृ. को.-दीसंत। (४) ए.-गज।

घोड़ो की शोभा वर्णन।

रसावला ॥ धपै बान भारै, इकारे निनारै। दुरै अप्प छाया, तते अग्गि ताया॥
छं० ॥ १११ ॥

धवै [1]अंठ भारी, मुकोटं निनारी। बरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥
छं० ॥ ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा। उरं पुट्ठ भारी, [2]सु मासं निनारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं। नषं डंड इट्ठं, मनो डंड सिट्ठं॥
छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर डुल्लैं, कवी कित्ति पुल्लै। मनों वाय कांडं, परी मभ्भ होडं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं। अवत्तें निनारे, मनों स्वामि सारे॥
छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी। सु दै दै रकेबं, चढ़े बीर [3]बेबं ॥
सुरत्तान पासं, चल्यौ बीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त ॥ षस गोरी सुरतान। जाइ रुंध्या रन अग्गै ॥
हय गय रथ नर सज्जि। बीर पावस घट जग्गै ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय ॥
चाहुआन सुरतान। बीर जैपत्त करारिय ॥
डमरू डहक्कि जुग्गिनि हसै। जिम जिम बंबर धज लसै ॥
सामंत खूर चहुआन सौं। बीर बिदुरि सस्सह कसै ॥ छं० ॥ ११९॥

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंसं। (३) ए. कृ. को.-वेबं।

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना।

मेछ मछ्छरति सत्ति। मत्ति कीनौ रत भारी॥
वीरा रस विद्दुरिय। लोह लग्गी अधिकारी॥
छित्ति मित्ति छिति सोभ। अंषि आवै न अंषि षिन॥
ज्यौं नद्दव वन दिट्ठ। चंपि चूवंत मंत घन॥
रन हरषि वरष्षिय मुक्कि जिहि। धप्पि लोह कोहां करांस॥
चावंडराइ दाहर तनौ। न्वप अग्या विन अग्र धंस॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर आक्रमण करना।

रा चावंड जैतसी। लोह आजानबाह बर॥
रष्षे रन सुरतान। [1]मत्त लग्गे सुबीर भर॥
पंच कोस न्वप छंडि। आप रंध्या सुरतानं॥
वज्ज घाट वज्जीय। आइ लग्गा सु विहानं॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर। उरसि लोह लग्गा लरन॥
तत्तार षान षुरसानपति। अप्प मछ्छरति मरन मन॥छं०॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लमानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना।

भुजंगी॥ षुरासान षानं सु तत्तार बीरं। मनों वज्ज देषे सु वज्जं सरीरं॥
महा बाहु बज्जी कढ़े बज्ज हथ्थं। लगे अंग अंगं निरथ्थे निरथ्थें॥
छं०॥१२२॥
छुलिक्का सु बानं कमानेन साही। इसे सूर बेगं षलंलै न्निबाही॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे। मनौं देषियै बीर रत्ते प्रकारे॥
छं०॥१२३॥

(१) मो.-मनह। (२) मो. नैत्रिबाही।

उरं काल काली जमं दंड कट्टी। किधौ दंड्ढ जम दंड्ढु जम कर विड्डी॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती। परें रंग चंगं छके जानि गत्ती॥
छं० ॥ १२४ ॥

दुवं हिंदु मेच्छं तसब्बीति नंघी। सरै सट्ठि हज्जार आहत लग्घी॥
तिनें हथ्थ हथ्थं मुकत्ती प्रमानं। मनों देषि देवंत देवाधि थानं॥
छं० ॥ १२५ ॥

विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे। भए अंग अंगं तही तथ्थ सारे॥
नचै कंध बंधं कबंधं दुरंगी। मनों बीर आहत भारथ्थ रंगी॥
छं० ॥ १२६ ॥

इतौ जुद्ध करि बीर भए दै निनारे। घुमै सार घुम्मैं मनो मत्तवारे॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा ॥ चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जैनिय रंग॥
आइ साहि जग हजूरन। लये सहायक पंग॥ छं० ॥ १२८ ॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्यौ मिच्छ॥
नर चिंतन इच्छै कछू। ईसर औरै इच्छ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै॥
रचे रचन नर कोटि। जोरि जम पाइ बस्त सह॥
छिनक मध्य हर हरै। केल किर तथ्य क्रम्म इह॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडि जिय॥
अनचिंत्ति जग्गि गज्जन बस्सिय। आनि उतंग सु कंक किय॥
छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों बावन बलि पास। आनि अनचिंत्य छलन किय॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय॥
दसों दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु॥
मीर मसंद ससंद। बान बहु बूंद बरषि घन॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन॥
प्रलै काल हाल पिष्षिय निजरि। मनों मिच वृत्ती करन॥
छं० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला॥ कोह लग्गे षलं, सार उड्डै पलं। अंत तुट्टै रुलं, पग्ग बेली तुलं॥
छं० ॥ १३२ ॥
नैन रत्ते झलं, जुट्टि जाल षलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं॥
छं० ॥ १३३ ॥
रुंड नच्चै दलं, मुंड वक्कै वलं। गिद्धि सिद्धी कलं, बज्जि कोलाहलं॥
छं० ॥ १३४ ॥
छिंछ उड्डै ललं, जानि तिंदू झलं। हथ्थ तुट्टै नलं, दृष्ष साषा ढलं॥
छं० ॥ १३५ ॥
पंष पंषी बलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, रुद्धि बुंदै झरं॥
छं० ॥ १३६ ॥
जानि नग्गं परं, चंडि पच्चं [3]भरं। [4]मंति डक्कं डरं, भूत नच्चै षरं॥
छं० ॥ १३७ ॥
उभ्भयं चिक्करं, बक्कि नैरु रुरं। कंपि स्यारं नरं, सूर बड्ढै बरं॥
छं० ॥ १३८ ॥
झझर झारै रूरं, ... छं० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

(१) ए. कृ.को.-दीय। (२) ए. कृ. को.-दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
(३) ए. कृ. को.-वरं। (४) ए. कृ. को.-मन्नि।

दूहा ॥ सार मंत मत्ते सुभट। षग ढिल्लै गज ठट्ट ॥
स्वामि धम्म सद्धै रनह। मुकति सु झारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावहिसि ॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कप्पि जिसि ॥
हय दल बल उछ्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली महि मथ्थ। कट्ठि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं। बहत सूर सामंत रिन ॥
कलि कहर कंक बक्कहि विहसि। गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्पं। कले कंक बक्क हीन जीवं सु लष्पं॥
षलं कंन्ह गोइंद कोका प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [2]थानं ॥
छं० ॥ १४२ ॥

बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै ॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों वीर भारथ्थ आवत्त रंगी ॥
छं० ॥ १४३ ॥

लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंड्यौ षुरासान षानं ॥
उड़ै अत्ततई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षिये पेट पष्षे करेजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥

हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु षोपरि पुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

---

(१) मो--तसब्बीनि। (२) मो.-पानं।

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥
तहन सुष्प दुष्पं निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान । बीर मत्ते चावहिसि ॥
तबल तुंग बजि जंग । बीर लग्गे सु बीर कसि ॥
जा दिष्षै सुरतान । नैन बड़वानल धारी ॥
प्रलय करन करवान । प्रलय इन षग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्त्य रनह ॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर । गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं० ॥ १४७ ॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन।

साहन बाहन बिरद । साह गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विछुरहि । रोस उछरहि वीर भ्रम ॥
बजहि षग्ग आवत्त । जूथ उड्डहि असमानं ॥
मनहु सिंघ गुर गज्ज । हक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरि विहसि साहाब भर । भर भर भिरि असिवर बजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा । निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥
रननंकय नागय बीर सुरं । मनों बीर जगावत बीर उरं ॥
छिति छच दुहाइय छच धरं । सु मनों बरबा हवि वज्ज झरं ॥
छं० ॥ १५० ॥

(१) ए. मो.-लजिय।

छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं॥
दोउ दीन विराजत दीन उभै। रँग रत्त रमै छिति छच सुभै॥
छं० ॥ १५१ ॥

सुमनों मधु माधव रीति इलै। सुजनो हृत कंकर वीर फुलै॥
इक अंग विमंगन हथ्थ चरै। सु मनों कल बीर कला दुसरै॥
छं० ॥ १५२ ॥

मिति मत्त अहत्तन घाइ घटं। सु नचै जनु पारथ बीर भटं॥
छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त॥ बरकि बीर भट सुभट। झुम्मि हकै चावहिसि॥
इक्क इक्क आहत्त। बीर बरषंत मंत असि॥
नचि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि॥
सार ताल वेताल। नंचि रन बीर डकारहि॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि बीर लग्गे सु बर॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर॥छं०॥१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव बाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्र भर।
इन बज्जै असि बरह। सार बज्जै प्रहार धर॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी॥
मनु कढ्ढी जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी॥
चालुक्क चंपि चच्चर कियौ। सार धार सम उत्तर्‌यौ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करौ सु कोगुन विस्तर्‌यौ॥
छं० ॥ १५५ ॥

दूहा॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आहतह तिन नैन॥ छं० ॥ १५६ ॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रसंसा वर्णन।

कवित्त॥ अड्ड कोस नृप अग्ग। सूर रोपे पग गढ्ढै॥
सह मह गजराज। चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै॥

लज्ज बंध संकरिय । बीर अंकुरिय दिष्ट रन ॥
सार धार बज्जी कपाट । न्विघात घुमत रन ॥
कलमलिय कंक इम मिच्छ सह । जनु लुअ लग्गत जेठ महि ॥
जद्दव सु जाम घरि इक्कलों । जनु बडवानल चंद कहि ॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिष्पे मुष्पय मच्छरयं । अरज दुवं सन्नाम अवनयं ॥
अछरि वर कर इच्छं । भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं ॥छं०॥१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज । सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥
चंच पीप परिहार । कन्ह गोइंद नयन सरि ॥
कंठ चंद पुंडीर । पांव जुग जैत सलष सजि ॥
निद्दुर भर बलिभद्र । पंष बजि बाय तेज गति ॥
सम पुंछ और सम पुंछ मन । बरन बरन छबि सिलह तन ॥
रन रोहि रह्यौ प्रथिराज महि । गिलन अप्प सुरतान रिन ॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ मुछछीजं वर मछछरं । तं वटे अछरी अंगं ॥
सोयं साध प्रमानं । सा पूजी सूर सामंतं ॥ छं० ॥ १६० ॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना ।

कवित्त ॥ कर बल षान ततार । षान न्याजी षां गोरी ॥
हरवल [3]पीप नरिंद । साहि बंधी बिय जोरी ॥
मोरव्यूह चहुआन । मार धारह संधारै ॥
गिलन अप्प सुरतान । बोल बड्डा उच्चारै ॥
छत अछत सीस धारन भिरवि । जै जै जै चारन सु धुअ ॥
सुरतान सूर आवृत्त वर । धन्नि सुबर सामंत भुअ ॥ छं० ॥ १६१ ॥

---

(१) ए.-फरत । (२) ए. कृ. को.-गैन । (३) ए. कृ. को.-अप्प ।

तन तरफत धर मिच्छ । वला छबि जानि नटक्कैं ॥
मत्त दन्ति आरुहैं । दंत सौ दंत कटक्कैं ॥
समर अमर करि वंदि । भये विस्मत पल[1]चारिय ॥
जहँ तहँ चंद पुडीर । चंद ज्यौं रेनि उजारिय ॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम । भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल । महन रंभ मच्यौ सु [2]धर ॥ छं० ॥१९२॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना ।

हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद । कल विकल कल छत चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान । चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १९३ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक । मनौं मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १९४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना ।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस । सेन उभ्भै चावहिस ॥
रत्तिवाह सम जुद्ध । बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सस्त्र । रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
सार धार निरधार । बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक करक्के रंक पल । निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरैं । सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० ॥ १९५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना ।

अद्ध होत बर रत्ति । साहि गोरी धररुंध्यौ ॥
तोंअर बर पाहार । कित्ति सा सिंधुह संध्यौ ॥
सेत बंध बंध्यौति । सूर बंध्यौ रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार । धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर । तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि । सुनि जंपै बर हयति हय ॥छं०॥१९६॥

(१) ए. कृ. को. हारिय । (२) ए. कृ. को.-भर ।

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना।

दोत होत मध्यान। पीप नें पन मन मंद्यौ॥
प्रबल पानि परचंड। साहि गोरी गहि बंध्यौ॥
सेत बंधि ज्यौं राम। चंद सुर भान सूर सधि॥
यों लिन्नों परिहार। बालि दस कंध कंध मधि॥
रन छंडि छंडि धर मच्छि हुअ। लाजवंत के फिरि भरिय॥
जय जय सु जपैं मुष धर अमर। सु कविचंद कवितह धरिय॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना।

भुजंगी॥ पर्‍यौ राव तिन वेर खीची प्रसंगं। जिने षंडियं षित्तषल षग्ग अंगं॥
पर्‍यौ राव पज्जून पुत्रंति राजं। गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धक्कै अजंमेर राई। दुअं सेन जंपी मुषं कित्ति चाई॥
बधं जामदेवं बधों बीरभानं। लरी अच्छरी मझझ बीरं बरानं॥
छं० ॥ १६९ ॥

पर्‍यौ घाइ षेतं अतत्ताइ तातं। मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं॥
पर्‍यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं। हयं अट्ठ भग्गै सु उट्ठे कमंधं॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे। दिषे थान थानं मिलं प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा॥ इन परंत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट बीर॥
तिन जस जंपत का कबी। जिन करि जज्जर श्रीर॥छं०॥१७२॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान। पान षग्गह षल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग। जै जै जै जस लद्धयौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उद्धरै। सुनौ मंची अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। इदं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुचछ सोमेस सुअ। भ्रुअ समान संभरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चहुई। धर पद्धर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजोक निसान। जीति लीने सुरतानं ॥
गो धर ढिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा भ्रम्म धारि छची नृपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कों। मुष अयन्न पारथ्थ गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल वित्ते सुभर। कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान। सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान। इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ। इक्क बंधे बस किज्जिय ॥
इक्क अप्प पहराइ। मान भंजि रूमन दिज्जय ॥
आवै [1]न पार लच्छी सहज। षट्ट बरन सुष्षह रुगन ॥
चहुआन खूर संभरि धनी। तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥

अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस वित्ते न्रप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मंडौ न्रपति । आषेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सट्ठि । सूर सामंत [2]सु सथ्थं ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥
बल संमर जो गट्ठ । गाहि चहुआंन [3]जु सीमं ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम बर न्रपति ॥
संभाग समर सुनयौ समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुजर बीर चिंतै न्रपति । बर बरनी दुति काज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छबि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र सुंदरी नाम । बीय इंद्रावति सोहै ॥
बर समुंद पांवार । धरिग अति मम संग लोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद । हाइ करि भाइह गाढ़ी ॥
[1]रूप तरंग झकुरित । तुंग दोऊ करि काढ़ी ॥

---

(१) कृ. ए. को.-कितेक, केतेत, फितेक । (२) मो.-जु ।
(३) मो.-सुसीमं । (४) ए. कृ. को.-रुअत अंग, अँग ।

ज्यों छित्ति काम जंप्यौ परित। अति सुदेह निम्मल भलकि।
संकुच सु काम कर [1]कलिय तिहि। [2]रिपु सुदेखि आयौ ललकि॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा ॥ श्रीफल दुजबर इथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि बर भोम दिन। लगन [3]करै परमान॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर नृपति। किहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [4]विधि। [5]कहि कहि सुमति विचार॥छं०॥६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ बय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न बनै सु बाम॥
सारद मुष उच्चारतौ। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद मुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [6]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
बलि सरूप सज्जौ मदन। सुभ सागर गुर मेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज बलेव॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन। [7]ढुरि ढुरि श्रवन सु हित्त॥
जिम जिम दुजबर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

---

(१) मो.-कर लीय। (२) ए. कृ. को.-फेरिपु देख।
(३) मो.-करइ। (४) ए.-बुध।
(५) ए. को.-किहि किहि। (६) ए. कृ. को.-भरै।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि।

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप। बर बाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि संधि सैसव पाल। अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु सूर समान। वय चंद [2]चढ़न प्रमान ॥
सैसव जोवत एक। ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भौंह भँवर प्रमान। वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग। सावक्क मृग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
बिय द्रिगन ओपम कोड़। सिस भृंग षंजन होड़ ॥
बर बरन नासिक राज। मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिषा पतँग नसाव। ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल। झँप देत षंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
बिय बाल जोवन सेव। ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसंधि संधि अचिंद। ज्यौं मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचंद। .... ॥
तुछ रोम राजि विसाल। मनों अग्गि उग्गिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर। मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह। मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न थक्कत तेह। जा जनक न्रप कर देह ॥
वैसंधि कविवर वंधि। ज्यों दुद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसंधि संधि [3]समान। ज्यौं सूर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि सूर। चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह। सिक्कार काम करेह ॥
लज करे लज लजि छंडि। चित रंक दीन समंडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहौं बर नाइ। तो जंम अंत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान। तप तूंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना।

(१) ए.-रूप। (२) मो.-चढ़त।
* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतरिक्त अन्य किसी प्रति मे नहीं है। (३) ए. कृ. को.-प्रमान।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव । रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी । बीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट । समर कम्मर बर धाइय ॥
बर गुज्जरवै राव । चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा । धर पङ्गर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ बर । गढ़ उत्तरि [1]किरपान लिय ॥छं० ॥२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट बर । गो मेलान नरिंद ॥
छंडि सूर सिंगार रस । मंडि बीर बर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन । सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून । बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन । सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर । सथ्थ दीनौं न्रप हामं ॥
आइत अत्तताई सुबर । रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निद्दुर सुबर । मुक्कलि जैसिंघ पय्यलिय ॥छं० ॥२३॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ । [2]न्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास संग । दाहिम्मों बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥

सब सामंत सुसंग लै । लै चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कबिय [3]बष्यान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

चौटक ॥ प्रथिराज चल्यौ सिर छत्र उपं । ससि कोटि रबी ज्यों नछित्र तपं ॥
गजराज विराजत पंति घनं । घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. बषान। (४) ए. कृ. को.-मनं।

हय पष्षर बष्षर तेज [४]तुनं। किननंकहि [५]धक्कहि सेस धुनं॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं। घुरबान निसानन मेघ [६]भदं॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं। मनु भद्दव बीज उपंम धरं॥
*किरवान कमानन तान करं। हथनारि हवाइ कुहक्क वरं॥
छं०॥२८॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं। दुतियं कहि भारथ पारथ यं॥
छं०॥२९॥

(४) मो.-नुमं। (५) ए.-धर्काहि। (६) मो.-नर्द।
* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है।

मोतीदाम॥ चल्यौ न्रप बीर अनंदिय चंद। सु मुत्तियदाम पयं पय छंद॥
दए न्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट। मिले सब आइस जंग न रिष्ट॥
छं०॥३०॥
उड़ी धुर धूरि अछादिय भान। दिसा धरि अट्ठ न सुझ्झय [१]सान॥
बजे घन सद्द निसान सुद्दद्द। लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द॥
छं०॥३१॥
[२]मुद्दे सतपच कमोदन षेरु। करे चतुरंगय संकिय मेरु॥
द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी। तिनकै बर कन्ह परे धुरसी॥
छं०॥३२॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों। किल कंपहि तुंड जसं बर यों॥
बिफुरै बर सूर चिहूं दिसि यों। डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों॥
छं०॥३३॥
फन फूंक फनंपति को बिसरी। धरकें पय बज्जि धुरं दुसरी॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं। तिनसों बर [३]पांति षगं उरझं॥
छं०॥३४॥
बर बज्जि तंदूर तहां तबलं। निसु नंन नवीनय बंस बलं॥
जु धरैं वर गौर [४]उछंग हरं। सु कहै बर कंतिन कंपि डरं॥
छं०॥३५॥

(१) मो.-भान। (२) ए. कृ. को.-सुदे। (३) ए. कृ. को.-पंषियते।
(४) मो.-उबग्ग।

जु बजावत [1]डोरूअ डक्क सुरं। रन नंकहि जोग जुगाधि हरं॥
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा[1] करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कूशल पूछना।

दूहा ॥ सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन॥
बरद सौर संभय मिल्यौ। चिचंगी परधान॥ छं० ॥ ३७ ॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चिचंगी परधान॥
कहो समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं० ॥ ३८ ॥

कुंडलिया ॥ मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुछि तीर॥
कहां सेन चालुक्क कौ। कहां समरंगी बीर॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं॥
करहेरा चिचंग। राज आहुठ्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरि[3]जंम। हक्क उत्तर पत्तर चलि॥
गढ़ इत्तं दस कोस। समर उभ्भो समरं मिलि॥ छं० ॥ ३९ ॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त ॥ कहि चिचंगिय मंचि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [3]मंडोवर चुक्कह॥
चिचंगी चतुरंग। आइ अड्डो करहेरां॥
जुद्ध रुद्ध चालुक्क। हुए कोऊ दिन भेरां॥
हम दैन षबर तुम मुक्कलिय। कहौं कहौ मुष मुष्प रुष॥
प्रथिराज राज अग्गै विवरि। कहौ वत्त परधान मुष॥ छं०॥४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-मोरे। (२) ए. कृ. को.-मंडहि बर।
(३) मो.-प्रति पतियां। (४) ए. कृ. को.-जंग।

न्रप बुम्भऊ चालुक्क । सेन कित्तक परमानं ॥
आइ अग्यौ चिचंग । निरत दीनी नन आनं ॥
सूर सुवर आइत्त । रीति रष्षी विधि जानं ॥
इन अग्ग चालुक्क । बेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय । कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल । चंपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना।

चौपाई ॥ करि अग्गे लीनो परधानं । आतुर हीं चल्यौ चहुआनं ॥
दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं । समर सजन संमुह उठि धानं ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पावस रन प्रव्वाह । अभ्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिची छित्ति प्रमान । अभ्भ बद्दरं उठि झांइय ॥
आलस [1]नींद्य षीझ । सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन बुठ्ठनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
अंगार रंभ ग्रेहं बसह । औ कुलटा सुकबीय हुव ॥
कारन्न किति औ काल मिसि । द्रवै इंद्र सूरह सुलव ॥छं०॥४३॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन।

ज्यौं गुनाव गारडू । सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकयौ । सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ षग्ग जभ्भारि । सेन सज्जे चतुरंगी ॥
बान मंच मंने न । रसन कुंनन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चल्ले मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन । पुब्ब दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पाराधि से उपमा वर्णन।

यह संभरि चहुआन । बीर पारधि धरि आइय ॥

(१) मो.-नीदरुषीज।

दुहूं निसान बजि समुह। भूमि पुर कंपि हलाइय ॥
बीर सिंघ आहुट्ठ। बीर चालुक मुष साहिय ॥
पुच्छ मग्ग चहुआन। दुहुन बर बीर समाहिय ॥
उत्तरिय मनों सामुह तहि। उदित दीह मंगल अरक ॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि। अष्ट कुली बंछै सुरक ॥ छं० ॥ ४५ ॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ चालुक्कां चहुआन दल। भई सनाह सनाह ॥
दोऊ सेन कविचंद कहि। बरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना।

मोतिदाम ॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ। परे बर बीर निसानन घाइ ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क। मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क ॥
छं० ॥ ४७ ॥

अछादि अरुन्न न सूझत भल्ल। करें किधों सोर कपी बर गल्ल ॥
गहङ्गर बैंन उचारत ओन। दूहै जुधकार प्रकारय द्रोन ॥
छं० ॥ ४८ ॥

धरं गज आगम नीम अउद्ध। छुटे बर पाइक फूलय रुद्ध ॥
सुसील अफूल बन्यो हथवान। विचैं गुथि मोति कुहक्क 'अचान ॥
छं० ॥ ४९ ॥

दुहूं बिच नग्ग मगं नग पंति। परी तहां पट्टनराइ मपंत ॥
जु भाल अंकूर सु सुंदप बिंद। धरी हथनारि छतीसय चंद ॥
छं० ॥ ५० ॥

कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि। तिठौहर बंध नरिंद सु बंध ॥
लरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव। दिसं बुलि भट्टिय दल्लि न काव ॥
छं० ॥ ५१ ॥

दिसि वाम जवाहर मेर अराव। रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव ॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप। तिन में बर छीन सुरंग अनूप ॥
छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो.-अबान।

पसरी बर क्रन्न सनाह न तीर। अचवै उत कालिय के रुचि धीर॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ। चढ़े अरि के उर चालुक राइ॥
छं० ॥ ५३॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना।

दूहा॥ चालुक्कां चिचंगपति। मिले दिष्टि दुअ दौरि॥
मनों पुन्न पच्छिमह तैं। उड़ि डंबर इल सौर॥ छं० ॥ ५४॥
[1]इत चंप्यौ चिचंगपति। उत चुहान प्रथिराव॥
आइ राज उप्पर करन। बज्जि निसानन घाव॥ छं० ॥ ५५॥
कुंडलिया॥ ढाल ढलकि दुअ सेन बर। गज पंती हलि जुथ्थ॥
मनों मल्ल आखूद दीउ। तारी दै दै हथ्थ॥
तारी दै दै हथ्थ। राम अवनी अन पिष्षे॥
दुहुन दिष्ट अंकुरिय। पाज बंधन बल दिष्षे॥
चंपि सेन चालुक्क। बीर भ्रम सों बर मिल्ले॥
चाहुआन [2]बर सेन। ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ले॥ छं० ॥ ५६॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना।

कवित्त॥ [3]सब सामंत रु समर। बीर दच्छिन दिसि हंडिय॥
चाहुआन हूसेन। गज्ज व्यूहं रचि गढ्ढिय॥
एक दंत हूसेन। [4]दंत दच्छिनह ततारी॥
सुंड गरुअ गोयंद। राज कुंभस्थल भारी॥
दिसि वाम सबै आकार गज। महन सीह मोरी सुबर॥
बहुनय अंग आहुठ्ठपति। महन रंभ मच्चौ सुभर॥ छं० ॥ ५७॥

युद्ध वर्णन।

पद्धरी॥ घन घाइ घाइ अघ्घाइ सूर। सिंधु औ राग बज्जै करूर॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क। मुह मार मार [4]बज्जै बबक्क॥ छं०॥५८॥

(१) मो.-इन। (२) मा.-हुसेन। (३) को.-तब। (४) मो.-बुल्लं।

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस। पप्पर उपट्टि घुंटै घुरीस॥
नाचंत नह नारह तुंब। अच्छरी अच्छनद जानि लुंब॥छं०॥५९॥
गिद्धिनी सिद्ध वेताल फाल। षेचर षपाल कूदै कराल॥
ओनिस्त जानि सरिता प्रवाह। कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह॥
छं० ॥ ९० ॥
चमकंत दंत मथ्थै कृपान। मानों कि ऊक लग्यौ गिरान॥
पति चिचकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन॥
छं० ॥ ९१ ॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा॥ चालुक्कां परि सूर रन। सहस एक मुर सत्त॥
चूक चिंत चूकौ चितन। सै अचिज्ज विधि बत्त॥ छं० ॥ ९२ ॥
पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान॥
उभै सत्त रावर [1]समर। प्रथीराज सत आन॥ छं० ॥ ९३ ॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति [1]सत्तरहि। सेष जाम पल नौन॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन॥ छं० ॥ ९४॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चालुक्क बर। चिंपि सुभर प्रथिराज॥
सुभर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज॥ छं० ॥ ९५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ परे धाइ चहुआन चालुक्क मुष्षं। मनों मोघ मद मत्त जुट्टे कुरष्षं॥
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई॥
छं० ॥ ९९ ॥

(१) ए. कृ. को.- मर।

झरै सार अग्गी दझै टोप दझ्झं। मनों तं चनेतं प्रलै अग्गि सज्जं॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि खोही। धसी भारती कासमीरंति सोही॥
छं० ॥ ६७ ॥

दिए नागमुष्यं गजे तं तबानं। ठनक्कंत घंटं फटै पीतवानं॥
बजे बज्ज घाई उकत्तीति चिन्हं। बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं॥
छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत खूरं चढ़ै कुंभ तंती। फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी। मनों राह खूरं बँटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥

रुंधी धार मंती सुमंती उछारै। उतक्कंठ भेली जु रंभा विचारै॥
परैं घुम्मि खूरं महा रोस भीनं। मनों वारुनी मद्द प्रथमं सु पीनं॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छें परे। समर तिरच्छौ आइ॥
मानहुं षल हुत्तेसनी। भई बीभछ निधाइ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन।

चिभंगी ॥ तिय बिय अरि संतं, बहु बलवंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी।
चिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिदं, बर रंगी॥
बिय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर झालं, रन रंगी।
सामत भर खूरं, दिट्ठ करूरं, मिलि [1]अरिपूरं, अनभंगी॥छं०॥७२॥
मनु भान पयानं, चढ़ि बर वानं, मिलि बथ्थानं, असिझारं।
ओडन कर डारं, बेन करारं, तामस भारं, तन तारं॥
जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति दुद्धं, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं।
उर धरि चालुक्कं, खूर जहक्कं, [2]मुर आतक्कं, धक धक्कं॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस वोटं, परि उट्ठं।
दंतं उप्पारं, कंधय मारं, अरि उत्तारं, ध्रत छुट्टं॥

(१) मो.-आसि। (२) ए. कृ. को--मुर।

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी,दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन कालं, परि वेहालं, चालुक झालं, बर सारी ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना।

कवित्त ॥ वीर बीर आरब्ब। चढ़िय बीरं तन हक्के ॥
चावहिसि विढ्ढुरे। मोह माया न कसक्के ॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुद्धं षिति लग्गे ॥
कै छुट्टे मद मोष। जानि बीरन द्रग जग्गे ॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन। मति सुभाइ विभ्भाइ परि ॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुद्ध आदीत टरि ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा ॥ संभ सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस राइ ॥
तिय षवास परिगह न्रपति। सिर घुम्मै घट घाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ पर्‍यो समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय ॥
परि भट्टी महनंग। छच नष्यौ अरि सक्किय ॥
पर्‍यौ गौर केहरी। रेह अजमेरी लग्गिय ॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय ॥
रघुबंस पंच पंचौ मिले। बर पंचानन और कबि ॥
चिचंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रबि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

घरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हसेन षान भ्रम ॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोर्‍यौ तन तोर्‍यौ ॥
अस्त बस्त वज्जी कपाट। दधीच ज्यों जोर्‍यौ ॥

बर रंभ बरन उतकंठती। हूर हूर उत कंठ मिलि ॥
ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं। गल्ह बीर जुग जुग्ग चलि ॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना।

दूहा ॥ निसि दिन घटिय तिमत्त बर। दल चहुआनन चौन्ह ॥
भिरि भोरा रावर रिनह। रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ७९ ॥

गुरजर राय भीम देव का भागना।

भिरि भग्गौ सुत भुअंग कौ। गरुड़ समर गुर राज ॥
फिरि पच्छौ पुंछौ पटकि। बिन सु गरब तजि लाज ॥ छं० ॥ ८० ॥

कवित्त ॥ षेत जीति चिचंग। हथ्थ चढ्यौ चहुआनं॥
के झोरी भर सुभर। लीन अप्पह पर आनं ॥
केक किए परलोक। मुक्ति लभ्भौ [1]जुग जानं ॥
पंच तत्त मिलि पंच। सार धारह लग्गानं ॥
चहुआन समर इकतन्नि मह। तहां सेन उत्तरि सुभर ॥
चालुक्क भीम पट्टन गयौ। करी चंद कित्तिय अमर ॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई।

चौपाई ॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्यी। जा लगि ससि सूरज नभ सष्यी॥
इह काया माया जिन रष्यी। अंत काल सोई जम भष्यी ॥छं०॥८२॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना।

दूहा ॥ निसि सुपनंतर राज पै। कित्ति आइ कर जोर ॥
नौतन अति उज्जल तनह। नीद नृपति मन चोर ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं।

जपि जगाइ सोमेस सुअ। मदन भीम चहुआन ॥
देत रूप छची प्रकृति। दरसन [2]तवही पान ॥ छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-गुर। (२) ए. कृ. को.-छत्री।

कोटि लछन सुंदरि सहज। भय सुंदरि तिन प्रेम॥
खूर सुभर डरपै रनह। तौ सुधीर कहि केम॥ छं०॥ ८५॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त॥ तो कित्ती चहुआन। निदरि संसारह चल्लों॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौ उर सल्लों॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावहिसि रुंध्यो॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुज्जन सिर षुंदो॥
हूं सार अडर डोरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी॥ छं०॥ ८६॥

दूहा॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नव निद्ध॥ छं०॥ ८७॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह॥ छं०॥ ८८॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त॥ जु कछु लिष्यौ लिलाट। सुष्ष अरु दुःष समंतह॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह॥
कलप कोटि टर जाहि। मिटै नन घटै प्रमानह॥
जतन जोर जो करै। रंच नन मिटै विनानह॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुझिझ चंद गुरराम तह॥
बरनी विचिच राजन बरहि। कही सत्ति मत्ती सु अह॥ छं०॥ ८९॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देव जिम कीम॥
रत्ति वाह बर नरिंद सों। दीनों भोरा भीम॥ छं०॥ ९०॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलष नंदन रचि गट्ठौ ॥
ता सत्थह चामंड । भीम भट्टौ रचि ठट्ठौ ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात षिभ्भिक्ष्य बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कैं । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अग्गि तिनक्का झरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग कट्ठी घनं । रत्ति अद्धी मनं, बीज कुद्दी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं । हक्क मच्ची रनं, बाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ९२ ॥
रुंड मुंड घनं, ईस इच्छै चुनं । षग्ग भग्गं तनं, प्राह गंगं जनं ॥
संभ रुट्ठी मनं, तार चौसट्ठिनं । भूत प्रेतं तनं, भष्य दिन्नौं घनं ॥छं०॥९३॥
जानि सीलं रुधी, कव्वि ओपम सुधी । मंन भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पर्‍यौ पांवार रूपघन ॥
पर्‍यौ किल्ह चालुक्क । संधि चालुक्क हजूरन ॥
पर्‍यौ वीर बग्गरी । भयौ अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ । सिंघ रष्पी षिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अंधार पष । चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥छं०॥९५॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल । लुथ्थि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल [1]होंड़े परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-दौड़े ।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [1]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। षिभ्भिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक्क न पायौ ॥
[2]कंन्ह बैन [3]संभलियं। फेर बर भीम धसायौ ॥
उछ्छरिय पानि बर मह भिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारत्थ कहुं ॥छं०॥९७॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात बन होत। छोड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक षत षग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर विरुझत [4]वथ गत्तां ॥
बर सूर दिष्पि काइर विडुरि। ठठुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्पनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्पन गौ सूर तन ॥छं० ॥९८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीम भिरि चिचकोटं। परे मार ओटे चहूआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥
किए सूर कोटं न हल्लैं हलाए। अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छच बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
छं० ॥ १०० ॥
भज्यौ चित्त [5]वाहं लजे सूर दिष्पं। तहां चंद कब्बी सु ओपम्म पिष्पं ॥
पियं चास पिष्पं सषी पास लग्गी। मनों बाल बडू परे [6]पाइ अग्गी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए.-दंढन। (२) मो.-कैन वैनै संभलिय फेरि बर नीम धसायौ।
(३) ए.-सभंरिलिय। (४) ए. कृ. को.-वग रत्तां। (५) मो.-चाह। (६) को.-आइ।

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं। मनों [1]बीय सौकी इषी भाग वट्टं ॥
उड़ै काइरं इक्क इरि जीव चासं। उपंमा करुरं फुटै नैन पासं ॥
छं० ॥ १०२ ॥

मनों पुत्तली कंठ [2]गढ़ि चित्र लाही। करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही ॥
फुटै फेफरं पेट तारंग झुल्लै। मनौं नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥
छं० ॥ १०३ ॥

दिए नाग मुष्पी गजं हथ्थ षग्गी। षितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी ॥
उपंमा न पाई उपंमा न बंची। मनौं इंद्र इथ्थं करं राम षंची ॥
छं० ॥ १०४ ॥

[3]करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं। जकै सिंधु भारं जुरै जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसै प्रतंगं चलाथ्यौ। भगंदत्त [4]छब्बी तहां सूर पायौ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै। उपंमा तिनं की न ओपंम चारै ॥
इकै सीस नीचं धरं उंच धायौ। मनो भंगुरी रूप न्हपती दिषायौ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

समं पाज घट्टै कितं साम काजं। तिते [5]ऊपरे सूर चढ़ि कित्ति पाजं ॥
बड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी। म्रिगं षल्ल की भंति ज्यों षाल ओगी ॥
छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त ॥ चढ़त दीह विप्पहर। परिग इज्जार पंच लुथि ॥
बान बचन भरि नरिंद। झारि उच्चारि देव धपि ॥
षट लष बर इज्जार। रुकि मंझे चहुआंनं ॥
बर कहुन चालुक्क। मत्ति कीनी [6]परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुठि तहां। तौ पट्टनवै कहुयौ ॥
उच्चयौ बंभ भट्टी विहर। धार धार अपु चहुयौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए. कृ. को.-वियं पियं,। (२) मो.-गहि। (३) ए. कृ. को.-गजं।
(४) ए. कृ. को.-छब्बं। (५) ए. कृ. को.-उत्तरे। (६) मो.-परित्रानं।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निंगर राव। झुझझ धर रावर मंडिय॥
रुक्कि सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय॥
परिगहिय सब सथ्थ। गयौ चालुक्क बजाइय॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि निय विप्पहर॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन वर कुसर॥ छं० ॥१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा॥ तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि॥
तिन में कोइ न ग्रह गयौ। सार धार तन षंडि॥ छं० ॥ ११० ॥

बाव सूर कोइ न भयौ। धनि चालुक्की सेन॥
सामि काज तन तुंग सौ। चिन करि जान्यौ जेन॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त॥ षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में॥
है गै बर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रब्बत [1]मुक्की॥
दिन अट्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी॥
जोगिनी न्रपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर बर धरी॥छं०॥११२॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा॥ ढिल्ली न्रप ढिल्ली गयौ। बजि न्रिघात सुदंद॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद॥छं०॥११३॥

जस धवलौ मन उज्जलौ। न्रिबी पहुमि न होइ॥
भूत भविच्छति न्रित्त मन। चिचनहार न कोइ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-सुक्की। (२) ए. कृ. को.-सचित।

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना।

षंडौ सुनि पठयौ सु न्रप। बंज्जि निसानन घाइ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। बिय बर करि परनाइ॥ छं० ॥ ११५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम बत्तीसमो प्रस्तावः ॥३२॥

अथ इन्द्रावती व्याह ।

(तेंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट । हूर बंध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति । सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अम्रत रत्त विष होत । अम्रत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति । सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कट्ठ सों कट्ठ बर बंधियै । नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यों बरनी बर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमंग पँवार । चढ़े प्रथिराज प्रपत्ते ॥
समर दिसा चालुक्क । [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद । दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ [7]घर जाइ तौ । न्रप बर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए । लज्ज बंधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

---

(१) ए. कृ. को.-तत । (२) ए. कृ. को.-तदिनां । (३) ए. कृ. को.-मति ।
(४) ए. कृ. को.-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै । (५) मो.-कंठ ।
(६) मो.-सुजो । (७) ए. कृ. को.-पर । (८) ए. कृ. को.-दिप ।

कहै जोइ वरदाइ। मंत कविचंद सु आमन ॥
मन वासौं मन मिलत। जियत कै कंठ सामन ॥
जो वासुर मुर पंच। [1]पग्ग मंडै चहुआनं ॥
तौ भाविक जिह लेष। तिही ह्वैहै परिमानं ॥
भावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न। दइय दुसंकह जानि गति ॥
लिषि बाल सीस दुष सुष्प दुइ। सत्य होइ परमान मति ॥छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा ॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ ॥
कै धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ॥ ४ ॥
इन भव न्रप सोमेस सुअ। जुध बंधन सुरतान ॥
कै जलद्धि वूड़वि मरै। अवर न [3]वंछौं प्रान ॥ छं० ॥ ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त ॥ सषी कहै सुनि बत्त। सुतौ दानव कुल कहियै ॥
अवर जाति अनेक। राइ [4]गुर परनह लहियै ॥
करे कोन परसंग। पाइ म्रगमद घनसारं ॥
कोन करै कुष्टीन। संग लहि कामवतारं ॥
तो पित्त अवर बर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच ॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरचैं रचैं न सुच ॥ छं० ॥ ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा ॥ तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुचीय ॥
बोलि विंन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

(१) ए. कृ. को.-मद्धि आयौ। (२) ए. कृ. को.-भंजी।
(३) ए. कृ. को. छंडौ। (४) ए. कृ. को.-गुन।

कहै भीम कविचंद [1]सुन। स्वामि काम तुम अग्ग ॥
सेन सगप्पन रीत नह। तुम दानव कुल चग्ग ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ हौं सु भीम मालव नरिंद। मोहि घर बर अच्छिय ॥
सवा लाष मो ग्राम। ठाम संपति बहु लच्छिय ॥
विधि विधान न्निम्मान। कौन मिट्टै इह बत्तिय ॥
होनहार होइहै पुरुष। जंपै गति मत्तिय ॥
तुम कहो नाम बरदाइ बर। गुरूराज बंदे चरन ॥
ओछी सु बत्त कहौ कथन। एह सगप्पन विधि बरन ॥ छं० ॥ ९ ॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है।

दूहा ॥ अग्गे भीम [2]सत्तह सुमति। तुम मतिमान प्रमान ॥
औसर तकि कीजै [3]जुगत। औसर लहिजै दान ॥ छं० ॥ १० ॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरबीर ही नहीं जानते।

कवित्त ॥ कहै भीम पज्जून। सुनौ पामर मतिहीना ॥
[4]अमत कियौ तुम मंत। बरन बरनी षग लीना ॥
तुम सहाब बलि बंधि। गर्व सिर उप्पर लीना ॥
गिनों और तिल मत्त। कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना ॥
छचीन बंस छत्तीस कुल। सम समान गिनियै अवर ॥
घरु जादु राज मुक्कौ बरन। करन ब्याह उछाह नर ॥ छं० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो।

(१) ए. कृ. को.-कहि। (२) ए. कृ. को.-सतिमात्ति।
(३) को. कृ. ए.-जु रन। (४) मो.-अमन।

जैतराव जम जैत। नैन लल्ले करि बोलै ॥
अहो भीम करि नीम। बत्त पहली तुम भोलै ॥
बल बलिष्ट केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्लै ॥
लोक भाष बुझ्झी न। न्योत बैरी को मिल्लै ॥
इम कज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कहुय मुष बत्तरिय ॥
सु विहान बरन थप्पै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय ॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम ॥
अमत मत्त मंडौ मरन। इह सु कोन भ्रम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥

गुरुराम का ऐतिहासक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कबित्त ॥ चिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
[1]कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यौ ग्रब ॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ ॥
अस्ति वस्थ करि सिथल। मृतक सम बर करि छंड्यौ ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिय बान इक मारियौ ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुस्त ॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानौ बस्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव ॥
जैतराव [2]मिलि राम गुरु। लै काने समझाव ॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-बलि।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद। चीय काज राघन पंड्यौ ॥
[1]बैरोचन न्रप नंद। मारि अप्पन भ्रम भंड्यौ ॥
कंस कन्ह सिसुपाल। कज्ज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥
[2]ता बंधव रुकमान। बंध मुंडवि सिर छंड्यौ ॥
सुर असुर नाग नर पंषि पसु। जीव जंत चिय काज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन कौ। ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान [3]भर। कहौ सु कीजै काम ॥
जुद्ध जुरैं चहुआन सौं। ज्यों इल रष्यै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अन्नाम। जेन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग। अगनि दीपक दिष्पाइय ॥
पलहैं ही भज्जियै। होइ दुज्जना हसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी। देहु चहुआन प्रथाई ॥
सुनि भीम राज तत्तौ तमकि। गई बत्त बुझी सु तुम ॥
इक्कारि जैत गुरुराम कवि। षग्ग व्याह न न करैं हम ॥ छं० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना।

दूहा ॥ उठि चल्ले सामंत सब। करन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरैं। न्रपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन।

कवित्त ॥ फिरि जानी पांवार। राम रघुबंस बिचारी ॥
जीवन जो उब्बरैं। मरन केवल संचरी ॥

---

(१) ए.-वैरीचन, बैरीबन। (२) मो.-के वधव रुकमना।
(३) ए. कृ. को. बर। (४) ए. कृ. को.-सन्नाम।

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्धारी॥
स्वामि भ्रम्म तिय तिथ्थ। मुकति संसो न बिचारी॥
पांवार सुबल मालव न्हपति। बर समुंद जिम भारयौ॥
बर नीति किम्मि सुर वर असुर। मुगति मथन संभारयौ॥छं०॥२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ। मत्त को बित्त बिचारिय॥
बर पट्टन दभ्भि है। धेन लैहै हक्कारिय॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि षिभिहै पांवारय॥
बर आतुर धाइहै। अप्प संम्हौं हक्कारिय॥
धर दहै कोस अधकोस बर। फिरि चावहिसि रंधही॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही॥छं०॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा॥ पंच कोस मेलान करि। लिय न्रप पट्टन धेन॥
कूक कहर बज्जिय बिषम। चढ़िय भीम न्रप सेन॥छं०॥२३॥
उंच क्रंन अनमिष नयन। प्रफुलित पुच्छ सिरेन॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन॥छं०॥२४॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त॥ औसरि 'बसि सामंत। धेन लुट्टिय पट्टनवै॥
बर मंडल उज्जेन। धाक बज्जिय बट्टनवै॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। सूर मानव बर बज्जै॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै॥
संभरिय बीर बाहर अवन। बाहर हर बाहर चढ़िय॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। क्रगन हंकि क्रगपति बढ़िय॥छं०॥२५॥

* महंकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना।

इय गय रथ चतुरंग। सज्जि साइक पाइक भर॥
आइ मिले मुषमेल। दुहुन कड्ढिय असि बर बर॥
[1]तेग मार सिर झार। धुंम धुम्मर हर लुक्किय॥
पय्यौ घोर अंधियार। बिछुरि निसि भ्रम चक चक्किय॥
को गिनै अपर पर को गिनै। लोह छोह छक्कै बरन॥
सामंत सूर जैतह बलिय। कहत चंद जुग्गति लरन॥ छं० ॥ २६ ॥

रघुवंसराय का नाका बांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना।

बर सिप्रा नदि तट्ट। धाइ सामंत जु रुक्किय॥
रोकि मुष्प रघुबंस। धेन पज्जून सु हक्किय॥
दुतिय बीर बर टिके। भीस भारथ जिम लग्गिय॥
सूर बिना प्रथिराज। धके जुरि षग्गन षग्गिय॥
मुकि धेन गंठि बंधिय मिलवि। औसर षग कड्ढिय लरन॥
झरि सार तिनंगा तुट्टि बर। तिरदू झर लग्यौ झरन॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन।

मोतीदाम॥ तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ। कला [2]ससि संषि जगन्नय पाउ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम। कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम॥
छं० ॥ २८ ॥

मिले जुध जैतरु भीम नरिंद। मच्यौ जुध जानि हतासुर इंद्र॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड। परे भर बथ्थ मरोरत झुंड॥
छं० ॥ २९ ॥

कटक्कहि हड्डहि गूद करक्क। बिछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक्क। उरझ्झत अंत सु पाइन तक्क॥छं०॥३०॥

---

(१) ए. कृ. को.-"मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय।
(२) मो.-सति।

करक्कस केस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनच्चिय बेस उलथ्थ पलथ्थ। परै धर लुथ्थि उनें उन जथ्थ॥
छं० ॥ ३१ ॥
करें कर आवध दंड छतीस। तकै छल सांइय धम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। इसौ जुध रुद्ध अनुद्ध अपार॥छं०॥३२॥
गए भगि सेन सँग्राम सियार। भिदै रवि मंडल सूर सुबार॥
छं० ॥ ३३ ॥
दूहा॥ आदि सूर पांवार बर। भीम मरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। षग पन मोषन पान॥ छं० ॥ ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं० ॥ ३५ ॥
बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निक्कय्यौ पंचमो भाग भान॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि महत चंद सो भासमान॥
छं० ॥ ३६ ॥
मानों कि राह ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बद्दे बिसाल। मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्र लाल॥
छं० ॥ ३७ ॥
सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्र हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह। मानों दपंति पंषिय सजूह॥छं०॥३८॥
कढ़ि इसी तेग धाइय पहार। मनुं अमं इंद्र सज्जो संभारि॥
विरचै जु सूर बाहै विहथ्थ। दिषि दूर चढ़ि मनमथ्थ रथ्थ॥
छं० ॥ ३९ ॥
भरहरै सब्ब पाइल सुभार। रिन [1]रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तबल आकास तार॥
छं० ॥ ४० ॥

---

* छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।
† यह पंक्ति मो. को.-कृ. इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-सूप राज।

झक झक उझक्क बद्दल दिषीव। ओपम्म चंद तिन कहत हीव॥
कट छित्त सूर जोधाइ मुक्कि। कढ़ंत बाल ज्यों बाल रुक्कि॥छं०॥४१॥
इह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन। जानिये चीय वयसंधि तेन॥
परि सहस सत्त दोउ सेन बीर। रवि गयौ सिंधु तीरह सु[1]तीर॥
छं० ॥ ४२ ॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना।

कवित्त ॥ संझ्झ हेत बहि सार। मार [2]करि तुट्टि सनह रिझ्झ॥
सो ओपम कबिचंद। भ्रंग छुट्टे कि बाल षिझ्झ॥
टोप [3]ओप उत्तरै। परै विपरीत विराजै॥
मनों सु भाजन भोम। हथ्थ जोगिनि रुध काजै॥
यों भय्यौ सेन सम बर सुबर। नन हार्‌यौ जित्यौ न कोइ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी। निस कट्ठी बर बीर होइ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना।

होत प्रात सामंत। पान व्यूहं [4]जुध रच्चिय॥
मोती भर सामंत। पान कूरंभ रा सच्चिय॥
बर हरिन्य उथ्थट्ट। पत्ति मंडी [5]गुन राजै॥
[6]लाल रुप कविचंद। मद्धि कनइक दुति साजै॥
[7]नालौव रुप लीनो बरन। राम सुबर रघुवंस भिरि॥
कोदनि सुरंग पंती करिय। बीय सहस पुंडीर परि॥ छं० ॥ ४४ ॥

युद्ध वर्णन।

मालती ॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे॥
मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरै॥

---

(१) ए. कृ. को.-नीर। (२) मो.-कहि।
(३) मो.-ओट। (४) मो.-सुध। (५) ए. कृ. को.-गुर।
(६) ए. कृ. को.-लाज। (७) मो.-नालीच।

नव सूर सलि खलि, अरिन अल मिलि, लोह झिल मिल, निक्करे ॥
बर सूर तल छुटि, खजन नट्टय, बीर सबद्दन, बर भरे ॥ छं० ॥४५॥
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कवि, मानयौ ॥
मनों बिट्ठ जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
धन सूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निड्डयं ॥
मनुं रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझझयं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त ॥ दिन पल्लट्यौ पांवार । सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ॥
चावद्दिसि सामंत । भीम बीट्यौ सुरंग नर ॥
तन सट्ठ अरि सट्ठ । बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुट्यौ संग्रह्यौ । दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच परि । बाल सुबर सुंदर बरौ ॥
धनि सूर बीर सामंत द्दौ । [3]जुअर जुद्ध इत्तौ करौ ॥ छं० ॥ ४८ ॥

भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा ॥ भीम भयानक भग्रह्यौ । सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) मो. ए. कृ. को.-घट। (२) मो.-सौनयौ।
(३) मो.-सु बर।

जो मति पच्छैं उप्पजै। सो मति पहिले होइ॥
काज न विनसै अप्पनौ। दुज्जन हँसे न कोइ॥ छं० ॥ ५० ॥

आदर करि आने सु ग्रह। भगति जुगति बहु कीन॥
जे भर घाइल उप्परे। जतन जिवाइ सु दीन॥ छं० ॥ ५१ ॥

षग विवाह भीमंग रुचि। बाजे बज्जन लग्गि॥
मंगल मिलि अलि गावहीं। गौष गौष निस जग्गि॥ छं० ॥ ५२ ॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजंगी॥ रची बेदिका बंस सोभन्न सोहै। जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै॥
लगी बेद विप्रान सों [1]गान झांईं। रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांईं॥
छं० ॥ ५३ ॥

हसे तर्क वित्तर्क हासं सुरासं। घसे कुंकमं लाल गुलाल वासं॥
उड़ै बीर [2]गोधूरकं वास रेनं। करे भेरि भुंकार गज्जत्त गेनं॥
छं० ॥ ५४ ॥

चवै छंद बंदी ननं पार जानं। करे दान हेमं सु विद्या बिनानं॥
भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं। तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं॥
छं० ॥ ५५ ॥

दूहा॥ लिषि कग्गद चहुआन दिसि। दिय पुची भीमानि॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी। कलह कुसल बर बानि॥ छं० ॥ ५६ ॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन।

नाराच॥ कर्‌यौ सुन्हांन कामिनी। दिपंत मेघ दामिनी॥
सिंगार षोडसं करे। सु हस्त दर्पनं धरे॥ छं० ॥ ५७ ॥

वसन्न वासि वासनं। तिलक्क भाल [3]भासनं॥
दुनैन ऐन अंजए। चलं चलंत षंजए॥ छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) मो.-मान। (२) गो.-केदासु। (३) मो.-तासने।

सुहंत स्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु मुत्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५९ ॥
अनेक जाति जालितं । धरंत पुप्फ मालितं ॥
झँकार हार नौपुरं । घमंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र घंटि घंट्टिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० । ६१ ॥
कनक्क नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल बानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रुप सारदं । सरन्न रुप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना।

दूहा ॥ करि शृँगार अलि अलिन सँग । रिम झिम झुंडन झंझ ।
बसन रंग नवरँग रँगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चौपाई ॥ कर गहि षग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा ॥ सत हथ्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
हथलेवो चहुआन कौं । दियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ । मुर सत दासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरी । कही बनै बर गथ्थ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा।

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
पति वृत सेवा मुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पति लुप्पै लुप्पै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
इहै सीष हम मन धरी । ज्यौं सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

(१) मो.-छप्प।

पृथ्वीराज का वंदियों को दान देना।

बंदिन दान प्रवाह दिय। लिय सुंदरि जुध जीति॥
दुहु जस न्वमल छंद [1]गुन। पढ़न कविन इह रीति॥ छं०॥ ७०॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त॥ धनि सामंत समथ्थ। जेन न्वप बिन जुध जित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन जस किज्जि विदित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन बरनी बर संध्यौ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन भीमंग [2]रन बंध्यौ॥
सामंतं धन्नि जिन कित्ति बर। ढिल्ली दिस पायान कर॥
बैसाष मास अष्टमि सितह। कित्ति संचरिय देस पर॥छं०॥७१॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन।

ढिल्लिय पति सिनगार। इट्ठ पट्टन की सोभा॥
गौष गौष जारौन। दिष्षि चिय नर सुर लोभा॥
भूंगल [3]भेरि नफेरि। नद्द नीसान मद्दंगा॥
नाना करत संगीत। ताल सों ताल उपंगा॥
गाजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर। न्वप प्रवेस सुंदरि करि॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ। प्रथक प्रथक परसंस करि॥छं०॥७२॥

दहेज वर्णन।

च्यार अग्ग च्यालीस। मत्त अप्पे गजराजिय॥
सौ तुरंग तिय अग्ग। बीस च्यव अप्पि सु पाजिय॥
इक अमोल सुंदरी। सत्त तिय दासिय बिंटिय॥
सबै सथ्थ सामंत। रहे भर करिय अमिंटिय॥
सामंत करी प्रथिराज बिन। करै न को रबि चक्क तर॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै। गए बीर अष्टमि सु घर॥छं०॥७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना।

(१) मो--गुर। (२) ए. कृ. को.-चन्न। (३) ए. कृ को. फेरि न फेरि।

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भौर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति । गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दै कागद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है।

कवित्त ॥ मेषग्गाही सेन । दंड पलयौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगे रा गष्पर ॥
हबस हेल षंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्पर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । बर मंगै मंग्गी सु बर ॥
चहुआन राह मैं [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्‌यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप । न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना।

---

(१) ए. कृ. को.-बीर। (२) ए. कृ. को.-चहुआन।
(३) मो.-निगली।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल। सार घनसार सु रम्मिय ॥
धूप दीप सुग्गंध। दीप दस दिसि दृत [1]जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम मग जरे जरानं ॥
दिए भौम भूपाल। भोग साजं सु सबानं ॥
न्रप देषि अचंभ समानि मन। मुष आतुर देषन महल ॥
आनिय सु सेज चिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७९ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरन। गनि गति मति सारह ॥
रूप देषि भूल्यौ न्रपति। रचिय विरंचि विहह ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्यौ। सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढ़ि हरम। सह कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हंह हंहं मुष रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्रवल। प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
शृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान विभाछ रस ॥
अदभूत संत उपज्यौ सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रब गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेंतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥

(१) ए. कृ. को.-नम्मिय।

अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते।

(चौंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना।

कवित्त ॥ किहि भेषत प्रथिराज। किहित भेषत चिहु पासं ॥
किहि भेषत दिसि विदिसि। कहौ मनया उल्हासं ॥
किहि उमाह उच्छाह। कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचंद। देव गुरुराज विराजै ॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी। कमल गहन सुरतान बर ॥
नव रस विलास जस रस सकल। तपै तुंग चहुआन बर ॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना।

नीतराव षिचीय। भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ [1]गृह भेद। लिष्यौ कग्गद सुरतानं ॥
बरष उभै षट मास। फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्टू बन प्रथिराज। बहुरि आषेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्थहन को। बर बराह बर षिल्लइय ॥
दैवान जाध चहुआन बर। भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज क साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना।

सत चीता हादसति। स्वांन अच्छे सु रंग दह ॥
बीय अग्ग च्यालीस। सोह बर गोस कहंदह ॥
सत्त सत्त मृग अच्छ। सत्त दह अग्गति [2]पाजी ॥
आषेटक प्रथिराज। बीर ओपम अति राजी ॥

---

(१) मो.-बर। (२) ए.-षाजी।

उप्परति राय षट्टूति बर। मिलि बसीठ गोरी सु बर॥
मंगे हुसेन साहाबदी। पंच देस बंटन सु धर॥ छं०॥ ३॥

पृथ्वीराज का सामतों से सलाह लेना।

मुक्कि राज आषेट। सूर सामंत [1]बुलाइय॥
सुबर साह गोरीस। आनि उप्पर धरि आइय॥
मंगे धर पंजाब। षान हूसेन सु मग्गे॥
इष्ट भ्रत्त अवसान। दिए कग्गद लिषि अग्गे॥
संमुहे सूर सामंत बर। दै मिलान संम्हौ धरिय॥
चालंत जेम लग्गत दिवस। झुकि लग्यौ गोरी [2]गुरिय॥ छं०॥ ४॥

दूहा॥ बेगि सूर सामंत सह। मिले जाइ चहुआन॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि। गोरी वै सुरतान॥ छं०॥ ५॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय। बंधव रण सुरतान॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह। बर मंगै चहुआन॥ छं०॥ ६॥

शहाबुद्दीन के दूत का बचन।

कवित्त॥ बर बसीठ उच्चरै। साहि जानौ पहिलौ ना॥
अप्पौ पहु हुस्सेन। साहि [4]जानौ दस गुंना॥
कंक बंक करतें। नरिंद कबहुक घर छिज्जै॥
भिर गोरी तिन भरह। रहट घट्टी घट भज्जै॥
दुप्परह छांह दीसै फिरत। भावी गति दिष्पी किनह॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर। करहु एक बुद्धी सुनह॥ छं०॥ ७॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नहीं जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोडना परे है।

---

(१) मो.-बुलाये। (२) मो.-सुरिय।
(३) मो.-तिनह। (४) मो. जादौ।

अरे ढीठ वस्सीठ। कौन ह्यौ को जित्यौ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ। कौन वित्तग अब वित्यौ॥
पंच तत्त पुत्तरी। पंच हथ्थन कर नच्चै॥
अजै बिजै गुन बंधि। चित्त तामस रस रच्चै॥
बंछै जु मुष्य फल राजगति। वह करतार सु नन करै॥
उच्चरै कित्ति छल ना रहै। तब लग्गै गल बल परै॥ छं० ॥ ८॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और के वार मैंने उसे बंदी किया।

दूहा॥ कै कोसां दिल्ली धरा। कै कोसां गज्जान॥
षंडा सौ [2]कर बंधिया। चहुआना [3]सुरतान॥ छं० ॥ ९॥
मैं रष्यौ *हुस्सेन बर। बर बंध्यौ सुरतान॥
उठ्ठाए बस्सीठ बर। बर बज्जै नीसान॥ छं० ॥ १०॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

मोदक॥ दसमत्त पयो लह, पंच गुरं। षग पन्न हरे विष पत्त [4]बरं॥
बर सुद्ध प्रयान हुलास छबी। कहि मोदक छंद प्रमान कवी॥
छं० ॥ ११॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं। कबि दोउअ सेन उपम्म कियं॥
[5]सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति पढ़ी। सति सीतल [6]बात प्रमान बढ़ी॥
छं० ॥ १२॥
बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं। तिन की छबि पावस सज्जि घनं॥
सु बजे बर बीर निसान बजं। सु मनों घनं पावस सज्जि गजं॥
छं० ॥ १३॥

---

(१) ए. कृ. का.-त्रिन। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को.-पुरसान।
(४) मो.-हरं। (५) मो.-मत। (६) ए. कृ. को.- बाल।

* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसैन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है।

बजावत बीर जंजीरन सूर। कँपै सुर बीर पयालजपूर॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि विथ्थुरियं। सुन्दरी द्रग अद्भुत धुंधरियं॥
छं० ॥ १४ ॥

तिह ठौर रसं अप बंधव से। तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे॥
बर जग्गत नेन सु मेन मुचें। तहां क्रूर नसें नर आइ नचें॥
छं० ॥ १५ ॥

अम सूर तिनं अभिलाष रिनं। बर ग्रब्ब बलं बर बंसु तनं॥
कल किंचिन संकर सूर दियं। बर बीर अजादन लाज लियं॥
छं० ॥ १६ ॥

सहनाइय सिंधुअ अद्दरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिसं बढ़ियं॥
छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा॥ तं बीरं जल गंभीरं। आव यों उप्पटी सेनं॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि॥ छं० ॥ १८॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया॥ इह सु राज आतुर [1]धरिय। सुरतानह प्रथिराज॥
भूमि भार कछु [2]बहुयौ। सो उत्तारन [3]काज॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह॥
तिन अर बस चर परे। को इन [4]छट्टै मति हीनह॥
अप्पन सुसिंह बहुरे [5]सुरह। चक्कई चक मुक्कै नहीं॥
अप्पन सुहथ्थ भरही परै। दया न किज्जै मन इही॥ छं० ॥ १९॥

(१) ए. कृ. को.-धरिय। (२) ए. कृ. को.-छंटयौ।
(३) मो.-पार। (४) मो.-छंडै।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल। दूत सपत्त आइ ॥
बर चरित्त चहुआन दल। कहै माह सों जाइ ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

कवित्त ॥ नहिन इंद्र प्रथिराज। सोभ नंदन सिवरं दिसि ॥
बर इंद्रह दीसै न। महल मंद्यो सु दुहु निसि ॥
जबहीं हम संचरे। काल तबही दिसि पासं ॥
परत बाह लष्यंत। दिष्ट देषन रुष त्रासं ॥
लच्छोन [2]ग्रीव बस बीर रस। दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥
मेलान कोस परपंच को। गौरी पै संम्हौ चलिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरवीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना।

दूहा ॥ इह अवाज चहुआन दल। बंटि सेन सु बिहान ॥
काइर भर सह उच्चरै। कहि बंधन सुरतान ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि। चरनि वरज्जौ सु विहानं ॥
झुझझ रहै कै [3]जाइ। जु कछु पत्तौ चहुआनं ॥
बरन मेच्छ बर हिंदु। सुनत रन पन कर हेरी ॥
जय जानी अन चंप। पंच चतुरंग सु भेरी ॥
भुअ बीर रूप गोरी सु बर। मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम ॥
पलटयौ भेष देषत सयन। बर बज्जै नीसान तिम ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन।

चंद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान. दिसान पयान हुअ।
उड्डि उछंगिय रेन, सु मेरनि भान भय ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पुल। (२) ए. कृ. को.-त्रीय।
(३) मो. नीय। (४) मो.-तट।

गोरी वै भौ राह रयन हर मिग्गई ।
गज असवारन सूर निब्रत्त सु लग्गई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥
सब पाइ पिंगल सावरे लहु, बरन अच्छिर बंधयौ ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
गज मह नद्दय छिरह भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥छं०॥२५॥
घन चढ्यो गिरि जनु चले दिस दिस, वीय बग्ग उरब्बरे ॥
तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥
गजदंत कंतिय झलकि उज्जल, पिष्पि पंतन रा इयं ॥
रबि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं ॥छं०॥२६॥
गज करत दंत सुभंत जारय चंद, उप्पम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड्डगन मोह दिमि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनों मेघ बरषत विज्ज कोंधत, अभ्भ बुद्दि गिरि स्यामयं॥छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरवर बरुन वारुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ पसु पुज्जवै ॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै ॥छं०॥२८॥
चय लष्ष मौरति साह गोरिय, भार झुझ्झ अलुझ्झवै ॥
षुरसान षान अरक्क आरव, सज्जि सेन [5]सझंझवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भ्रमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग । लजै कविचंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चोर गुरै गज गाह । तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-उडन । (२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिद्धता, छविद्ध ।
(३) मो. झलकंत । (४) ए. पुज्जवै । (५) ए. कृ. को.-अवझवै ।

जु सजे हय गोरियसाहि परे। तिन देषि रबी रथ के बिसरे॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी। सु मनों नदि पूर छिली दुसरी॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चंद कविंद इदं कवितं। गुरु बंक पिषं मन कै चढ़तं॥
बजि बाज कुछ धर सद्द षुरं। सु मनों कठतार बजंत तुरं॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुरं सित सोभ षगे। मनों सेत वेउरन भान उगे॥
नभ कै तिमरं जित के समरं। मनु उट्ठि किरन्न सु पाल परं॥
छं० ॥ ३३ ॥

विय ओपम चंद बनी बनिकैं। सु धसें मनु गंग तरंगनि कैं॥
जग हथ्थ बने हय के सिरयं। गलि प्रब्बत हेम द्रुमं बरयं॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर पष्पर सोभ करै तनयं। मनु अर्क अरक्क बिचें घनयं॥
तिनकी हर वाय फुलिंग सजै। सु कहैं कविचंद तुरंग लजै॥
छं० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरयं। [2]मग मत्त मनों बहरें बनयं॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी। हय नष्पत रागन सांस कढ़ी॥
छं० ॥ ३६ ॥

बिय बाय अरक्कन बंध चढ़ै। कविचंद पवन्नन बाद बढ़ै॥
सु उड़ै नन धावत धूरि षुरं। गतिमान सुसील विसाल उरं॥
छं० ॥ ३७ ॥

पय मंझत अश्वत आतुरयं। विरचे नच पातुर चातुरयं॥
दुहु पार अषार अबद्ध षरी। मनुं गावहि इंदुन बंध धरी॥
छं० ॥ ३८ ॥

हय अप्पिय भत्तन साहि बरं। जु गहो चहुआन पयाल पुरं॥
छं० ॥ ३९ ॥

---

(१) मो.-कविचंद। (२) ए. कृ. को.-मन।

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उठ्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल[1]मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ। [2]डम्मरी उट्ठि आकास छाइ ॥
अचरनचरन गोरीस [3]साईं। सेन चहुआन हथ्थें बनाई ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय। चावहिसि अरुनग्ग ॥
मुष गोरो चहुआन भिरि। ज्यों रावन लंग अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥ समह्यो रन चहुआन सपट्ठिय। वजिग वाय सुभिभन [4]नदि उट्ठिय ॥
धुंधर अन बद्दर निसि भद्दों। सुभिभ न अंष कन्न सुनि नद्दों ॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्क सम्हौ सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि बाम। बैर कन्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहक बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों। राह ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य देवी पहकि। गहक मभ्भ घूघू वहक ॥
आकास मंडि गज्जो गयन। परों बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ ज्यों जगदीसह कान दै। तकसी रन किहुं कीन।
मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें। भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

---

(१) मो.-मली। (२) मो.-मम्मरी।
(३) ए..समाई। (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी ॥ परे धाइ धीइ दीन हीनं न जुद्धे। मुषं मार मारं तिनं मान सद्धे॥
परी आवधं होड़ बज्जै निसानं। बजे इक्क सूरं दमामें न जानं॥
छं० ॥ ४६ ॥

बढ़ै आवधं इथ्थ सामंत सूरं। घुरैं वै निसानं बजै जैत [1]पूरं॥
कढ़ै बे सनाहं अनक्के उनंगी। मनों आवधं इथ्थ बज्जै चिनंगी॥
छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवानं मदं [2]मरक दंती। दली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती॥
फुरै इथ्थ जनं मुरक्की उरक्की। मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की॥
छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्परं कोर फूलै समंती। ग्रस्यौ राह सूरं छटै नभ हुंती॥
परै सार तीरं छनक्कंत बज्जै। सदं तीतरं जेम सों पच्छि गज्जै॥
छं० ॥ ४९ ॥

वहै सीर गोरी पछै दै सभानं। भगै पच्छिनी पंति पावै न जानं॥
तुटै सीस जुझझै कमंधंत नच्चैं। चलै रुद्धि धारं चिहूं पास गच्छै॥
छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्थ आई। मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई॥
फुटी वारि धारं चली ईस सीसं। लगे धार धारं रजं रज्जकीसं॥
छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोही परे बूंद पानी। ढुंढी लुथ्थि पावै न नही वहानी॥
मनं मोद लै सोस मुद्राइ कौनी। .... ॥ छं० ॥ ५२॥

(१) मो.-सूरं। (२) ए. कृ. को.-सरक दंती।

उठं उड्ढ सीसं उपंमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धों श्रोन लग्गं॥
दोऊ दीन धाए मनें कोप रीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जबै वै। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चतिय पहर पर पहर। बीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय॥
घरिय इक्क बनि सेन। सूर सामंत परष्पिय॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर सु विहान षरक्किय॥
कर बार धारि सिप्पिर करह। एक होइ [2]उप्पर तरै॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हौ भिरै॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिझि नंष्यौ है नरिंद। भूमि धुज्जिय धुरतारं॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उड्डिय नाल चमंकि। मझझ धुंधर छबि लग्गिय॥
रबि ओपम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्डरिय। परे मध्य सेना घनिय॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाह गहि॥

---

(१) मो.-चक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिष्पर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

इतै दीह अथ्थम्यौ। सूर वर सिंधु [1]सपन्नौ।
मुकत तट्ट मिलि सूर। स्याम रन अप्प अपन्नौ॥
साषला सूर [2]सारंग ढहि। जुरि जुवान पंचाइनौ॥
केहरौ गौर अजमेरपति। पर्‍यौ झुझ्झि रन भाइनौ॥ छं० ॥५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन।

दूहा॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर। दिसि रत्ती धवलाइ॥
सैसव में जुव्वन कछू। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥ छं० ॥ ५८॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना।

कवित्त॥ जाम निसा पाछली। सेन सज्जिय दोउ बीरं॥
सामंता चहुआन। आनि गोरी कछमीरं॥
भान पयानन भयौ। करे द्रिग रत्तह चट्टिय॥
ता पहिले पायान। जोध रन असुरन कट्टिय॥
अदिहार बीर गोरी सुबर। चाहुआन दिन सुदिन घन॥
करतार हथ्थ कित्तौ कला। लरन मरन तकसीर नन॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ पर्‍यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी [3]गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी॥
तहां बाहुर्‍यो बीर बीरं नरिंदं। लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंदं॥
छं० ॥ ६० ॥

अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी। फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दौन बाहै दोऊ हथ्थ लोहं। पर्‍यौ जानि वाराह पारद्धि रोहं॥
छं० ॥ ६१ ॥

कटे कंध बंधं कमंधं निनारे। मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे॥
ननं अश्व चल्लैं चलैं हथ्थ रोजं। ननं चित्त चल्लै रबी रथ्थ दोजं॥
छं० ॥ ६२ ॥

---

(१) मो.-सथत्तौ। (२) मो.-सामंत। (३) ए. कृ. को.-रान।

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं। तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहै ज्यों कुलट्टं। चितं दृष्टि चल्लै अगै स्वामि घट्टं॥
छं० ॥ ६३ ॥

वरं कज्ज माला ग्रहीं रंभ सथ्थं। चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनों पुत्तली कट्ट करसी लगाई॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई। मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि [1]हड्डूड षेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं। करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं॥
जबै विड्डुगी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थानं मनों प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहूं मुक्कती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना।

दूहा॥ परत साहि गोरी सुधर। है गै भूमि भयान॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों। परी बींटि चहुआन॥ छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।

भुजंगी॥ परी बींट गोरी मुरे मौर षानं। तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि वानं॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं। पर्‌यौ धाइ पावार भर सलष दिन्नं॥
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ। तहां मौर मारुफ अग्गैं गुरायौ॥
धरी अद्ध झुझ्यौ करी छच धारं। बहै सब्ब सामंत विचि तौन धारं॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-हड्डुडुड।

तुटै आयधं सब्ब अरि हथ्थ लाजी। तबै आइ सीसं [1]गुरज्जंत वाजी॥
गजं गहन प्राहार निट्ठे ढहायौ। तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान। हथ्थ आप्पौ चहुआनं ॥
चामर छत्त रषत्त। तषत लुट्टे सुरतानं ॥
गोरी वै हुस्सेन। बीर [2]तुट्टे आहट्टिय ॥
मान तुगं चहुआन। साहि मुष के बल घुट्टिय ॥
मध्यान भान प्रथिराज तप। बर समूह दिन दिन [3]चढ़े ॥
जस जोति मंत संभर धनिय। चंद बीज जिम बर बढ़ै ॥छं०॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्यं गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३४ ॥



(१) ए. कृ. को-गुरं गुरज। (२) ए. कृ. को.-घुट्टे। (३) मो.-बढे।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कंगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह में वाचा दष्पिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छैं फिरि अष्पिय ॥
हम्मीर भीर अग्गें करै । दल [2]भज्जै मति सक्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा ॥ चलिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै इम सेव पय । कै जीत्तौं न्रप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उभ्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो षजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इचना अति सूर । तोइ का [7]भाठी कोपै ।

---

(१) मो.-मिस । (२) मो.-भग्गै ।
(३) मो.-दिसौ । (४) ए. कृ. को.-भोट ।
(५) ए. कृ. को.-जौ षजुआ । (६) ए, कृ. को.-जौ इचदा । (७) मो.-भात्री ।

हूं नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर॥
इनि बात मोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिर्‌यौ। कही राज सों बत्त॥
तमकि तोन लीनौ न्वपति। मनों सुजोधन पथ्थ॥ छं० ॥४॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्थ सामंत सूर भर॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो षग बज्यौ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ होइ रज्यौ॥
आवत झरत झारत परत। ओन धार [1]धर पैर चलि॥
इत उत्त सूर देषै लरत। घरी पंच रवि रथ न हलि॥ छं० ॥५॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि॥ छं० ॥६॥
कवित्त॥ षग वाहिय भिरि भान। अरिन अड्डर धर किन्नौ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नौ॥
रिझरु लिंग उत मंग। अमिय विष जंग सु ढरयौ॥
ठंडौ मंडि असंध। नहि भौ अंग जु परयौ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ॥ छं० ॥७॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा ॥ सम भिलाष गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्मर गान ॥
संकर कल किंचित भयौ। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिष्टह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। बरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
कहुं त मंस कहुं अंस। हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान। थान देषिय न जग्ग जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीष चरित प्रथिराज ने। कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना।

इह परंत चहुआन। मोष लभ्यौ सु रथं रवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। मिटे झंकुरन भान छवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। हरह भग्गी [4]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ। [5]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल हलत नीर काइर मुषन। प्रलय सुभर रनरत्त रह
दिन पति पतन्न सह तप्प तन। भान भान भेदंत [6]नह ॥छं० ॥१०॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मैं होनहार नहीं मेट सकती।

तब कंगुर पास्सहंन। चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भर मरन। सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

---

(१) मो.-भय। (२) मो.-नइय
(३) मो.-एक। (४) मो.-उप कंठं। (५) ए. कृ. को.-प्रतियों में "चतुरानन भगिचत टारि रथ मग्ग मुग्गली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है। (६) मो.-सह।

निसि अंतर करि ध्यान। मात कंगुर आराधी ॥
सो आई न्रप सुपन। कहै सुनि बात अगाधी ॥
[1]सोभति अनेक जानै न को। मो सेवा को परि लहै।
भावी विगत्ति हौं प्रकृति हौं। तो प्रधान झूठह कहै ॥ छं० ॥ ११ ॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना।

चौपाई ॥ वचनन मात कही समझाइय। निसि पल भ्रमित गमत बर आइय ॥
भोटी न्रप कन्ना [2]पै आइय। काली कन्ह कि हंकि जगाइय ॥
छं० ॥ १२ ॥
तब कन्ना परधान बुलाइय। मात वचन की जुगति सुनाइय ॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय। करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं० ॥ १३ ॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मै शत्रु का मान मर्दन करूंगा।

अरिल्ल ॥ का चिंता सु विहानं। * कन्ह होइ जाकै परधानं ॥
स्वामि बचन किन्नौ परमानं। लरि भंजौ दुज्जन बहुआनं ॥
छं० ॥ १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त ॥ सो सुपनंतर राज। रैन दिट्ठौ सु कह्यौ रचि ॥
बर बंसी [3]ससिपाल। पल्ह आयौ सु सेन सचि ॥
लष्ष एक असवार। लष्ष दह पाइल भारी ॥
अष्ष सेन उप्परें। जुगं जुग गहि उचारी ॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि। पच्छि उररि दुज्जन परिय ॥
चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा। सामंता कुंडल फिरिय ॥ छं० ॥ १५ ॥

---

(१) ए. कृ. को. मो भति। (२) ए. कृ. को.-पै।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था।
(३) मो.-सिसुपाल।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

बर रघुबंस प्रधान। राज मंत्री विचारिय॥
बोलि बीर हम्मीर। भेद जानै धर सारिय॥
बाट घाट बन जूह। धरा पब्बर नद घाटं॥
अब्ब जान न्विमान। कोन पब्बर [1]बन बाटं॥
अगवान देहु नारेन बर। कछुक मंत जंपौ सु तुम॥
जालंधराज जंबू धनी। स्वामि धम्म [2]मंडहित हम॥ छं० ॥ १६॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरे न्रप अग्गै॥
सकल भूमि कौ भेद। राज जानै ए भग्गै॥
अति सु बिकट बन जूह। चढ़ै संग्राम न होई॥
अस्व पाय गज पाइ। चढ़न किहि ठौर न कोई॥
बन बिकट जूह परबत गुहा। बर बेहर बंकम विषम॥
दारुन्न भयानक अति सरल। बर प्रस्तर नहिं जल सुषम॥
छं० ॥ १७॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकटपन का वर्णन।

भुजंगी॥ बनं जा विषंमं विषं बाज कंटं॥ घनं व्याघ्र आघातता नद्द घंटं॥
घहं जा घजूरी घनं जूथ भोरं। जिनै वास आसं लगे पंक मोरं॥
छं० ॥ १८॥

घनं पामरं जाति बंधै धनंकी। गिरं देखतें गत्ति भाजै मनंकी॥
झरै झरनि झोरं सु आघात सोरं। [3]जितें सद्दया सद्द ता अंग मोरं॥
छं० ॥ १९॥

(१) मो.-बर। (२) मो.-मंडहि न हम। (३) मो.-जिनें।

हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं। इकं इक्क पच्छै बिपं जन्न जोरं॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उट्ठै। सुनै कन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै॥
छं० ॥ २० ॥

इकं छोड़ राजं पथं सत्त [1]रुद्धै। दियै हथ्थ तारी तिनं कोन [2]बद्धै॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं। ननं षग्ग मग्गं सधै इक्क तीरं॥
छं० ॥ २१ ॥

न्रपं काम नाहौ [3]प्रधानं प्रवानं। दोऊ सेन रघुवंस अरिसेन भानं॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा॥ मानि मंत चहुआन कौ। मुकलि दीय दोइ बीर॥
ताजी तुंग समप्पियै। [4]षां हुसेन दिय भीर॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त॥ तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिलिय॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंघि विय॥
ताजी तुंग सु अथ्थि। जेन रुक्के बर बिय करि॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनौ नरिंद बरि॥
बारंग बीर बज्जर बहिर। निधि निसान बज्जे सुभर॥
नेपुरह अप्प बरनौ बरा। जस मुकट्ट प्रथिराज बर॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भरियं बर अप्प। लियौ फुरमान नरिंदं॥
लाज राज विंटयौ। जानि पारस बिच चंदं॥
श्रीय काज श्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे॥

---

(१) ए. कृ, को.-रुंधै। (२) ए. कृ. को.-बंधै।
(३) ए. कृ. को-प्रधानं। (४) ए.-खान।

स्वामि काज सामंत। बियौ धर मभ्भव जैसे ॥
जस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंबुअ घुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जंबु गढ़ चल्यौ काज। बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
दाहिने मग्ग संमुह फुनिंद। नौरूप बोल बोलहित हद्द ॥
छं० ॥ २६ ॥
हंकरै सिंह कोदहति वाम। उत्तरै [1]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक्क केकी पहक्क ॥
छं० ॥ २७ ॥
उत्तरै [2]दार वाराह [3]सथ्थ। डहकरै सांड़ दिसि वाम तथ्थ ॥
[4]बन्नर विरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न क्रन्न नंदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[5]कुरलंत बाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हंसीय बाम आनंद कीन ॥ छं० ॥२९॥
हां कहत हल्ल करि गट्ठ मथ्थ। चहुआन पिथ्थ रिभ्भव तथ्थ ॥
हाहल्लराव दीनौ विरद्द। आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय। हलकारिय अरि मथ्थ ॥
* ताथें विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढ़ि चल्ले बंदन [6]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
बर प्रब्बत बैदेस सधि। बीर बजी रन बाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन।

---

(१) मो.-देव। (२) ए. कृ. को.-डार।
(३) ए. कृ. को.-रत्थ, हथ्थ। (४) ए. कृ. को.-बंदर।
(५) कृ.-कुरलेत। (६) मो.-सगुन।
* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है।

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुथ्थ गौ गंठि थाल। अरि अंग षतंग भै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। अट्ठार टंक पंचै कमान ॥
धज सुरँग रत्त गजराज हालि। जानं कि भमि बहलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति दुत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गढ़ ओछंडि थान ॥छं०॥३५॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो.रथ्थ नारि चकि नय सु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चट्ठि। मंगलिक जानि वन्नौर कट्ठि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार कहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंत मुत्ति पग पगन मान। नंषंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चिचसाल। जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य जाइ रहै पंचि सास। मानहु कि रचि चिचह बिलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतर्‌यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चिचहति साल रथ्थीति बाल। नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
दभभवै [3]वाहि मदिरत्ति रिभिझ। चल्लै न पाइ मानं उलझि ॥
छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेटटे।
(३) मो.-नाहि।

देषंत सुमन गति भई पंग। रुठ्ठई काम रति कोटि रंग॥
नट्ठई उगति तिन देषि बाल। मानो कि रास मभ्भें गुपाल॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना।

दूहा॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि। सब लगि दुजति सपन्न॥
एकल्ल रघुबंस ने। लै गढ़ सबर प्रपन्न॥ छं०॥ ४३॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना।

कवित्त॥ सबै सूर सामंत। पस्ह बंध्यौ गढ़ लिन्नौ॥
थप्यौ राम नरिंद। हथ्थ फुरमान सु [1]दिन्नौ॥
तुम रहियौ इन थान। जाइ कंगुर सँपत्तौ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज। राज सम्हौ प्रापत्तौ॥
आनंद फते तप तुभ्भ बल। धन समूह आइय सु घर॥
सुभ्भर सुघाइ तेरह परे। बिय दाहिम्म नरिंद बर॥ छं०॥ ४४॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना।

सबै भूमि अरि गाहि। आन फेरी चहुआनं॥
पर्‍यौ भान रघुबंस। बीर बंचे फुरमानं॥
माल्हन बास नरिंद। राज रष्यौ तिन थानं॥
बर बंध्या अरि साहि। षून कढ्यौ परवानं॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। बर रघुबंस बुलाइयौ॥
दिन देव दसमि बर भूमि वर। तदिन सु रंगन पाइयौ॥ छं०॥ ४५॥

नियत तिथि पर व्याह होना।

(१) ए. कृ. को.-लिन्नौ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव ब्याह दुज्जन दवन। दिन पंडरौ सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन दत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु षंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिघत।

बर जंघन म्रदु पंथ। कुरँग लज्जे छबि हीनं॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं ॥
वर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुबर।
जंबूअ राव हम्मीर ने। भ्रम्म काज दीनौ [1]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगंमद मधुर। चुम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [2]पिष्पिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिँग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥
दूहा ॥ आयौ न्रप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे न्रिघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कर। (२) ए.-दिर्ष्पा।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना ।

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ । सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था ।

कवित्त ॥ रा जदव रिनथंभ । भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम । हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कीनी ॥
मन मन्नवै विचार । रूप सिंगार स लीनी ।
लष्यन वतीस लच्छी सहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]बक्क बिच । दिष्पि न कहुं चक्कंत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन ।

नाग बेनि सुनि पीन । कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पदम पच मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति । नाभि दछना वृत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु । जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित । चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥
सत पच गंध सुष ससिय सम । नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-अवरि । (२) को.-चक्र । (३) मो.-सोभतं ।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना।

गाथा ॥ बर बंसी [1]ससिपालं। चिंत्तं जस संभलं बालं ॥
मन बयनं तन [2]बट्टै। रिनथंभं [3]मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल ॥ दूत आइ बर बीर सपत्ते। जग्गद इच्छ दिए बर तत्ते ॥
हंसावति अप्पै बर [4]रंभं। तजौ वेग उभ्भौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त ॥ रा जहव रिन भान। तमकि कर चंपि खुहट्टी ॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्सी [5]अहुट्टी ॥
बर कागद [6]कर फेरि। सुभ्रि करियै बर राजन ॥
मतै बैठि कुंडलौ। धम्म छची जिन भाजन ॥
बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साधन मरन ॥
बर बीर जुद्ध चालुक्क रन। हक्कायौ दुज्जन भिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभह वर उप्परै। चढ़ि गट्ठौ करि साहि ॥
हंस मरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई ॥
जोग मग्ग लभ्भनह। षग्ग मग्गह मत होई ॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकह अथंभह ॥
सब्ब जोग सहक्कम्म। सब्ब तीरथ रनथंभह ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.-शिशुपाल। (२) मो.-बट्ठे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उभ्मं।
(५) ए.-उहठी। (६) ए. कृ. को.-बर।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल। बीर पंचाइन कोप्यौ।
सह मद गज जेमि। तमसि धीरज सम लोप्यौ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियौ बर बीर मिलानं॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन बेर प्रमानं॥
बर बीर अग्ग बस्सीठ चलि। राजहौ संमुह दिसा॥
परनाइ कुंअरि हंसावती। सु बर कोपि आयौ निसा॥ छं० ॥ ८॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये।

दूहा ॥ जस बेली रिनथंभ न्रप। फल पच्छै न्रप आइ॥
रा जद्दव सुरतान सौं। कहि बर जाइ सुधाइ॥ छं० ॥ ९॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त ॥ सीय [1]रष्पि रावनह। लंक तोरन कुल षोयौ॥
कपट रष्पि दुरजोध। पग्ग षोहनि दल [2]गोयौ॥
मंतहीन बर चंद। कियौ गुरवार सुहिल्लौ॥
क्रम्म रष्पि रघुराइ। अजै जान्यौ न पहिल्लौ॥
रनथंभ मंडि छंडी [3]सरन। भिरन कहौ बर बीर सब॥
ससिपाल बीर बंसी [4]बिलस। हम देषै आयौ सु अब॥ छं० ॥ १०॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं।

जीवन बलह विनोद। अलह नब्बी घन मंगहि॥
जीवन बलह विनोद। आस आसन्न असुर गहि॥

(१) ए.-रंपी। (२) मो.-पोयौ।
(३) ए. कृ. को.-रसनं। (४) मो.-विमल।

जा जीवन सुंदर। सुगंध बर बंधव लोकै ॥
जा जीवन काजें। कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन कलि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन ॥छं०॥११॥

भानुराय यदुवंश का बसीठ की बात न मानना।

दूहा ॥ रा जदुव बर भान नैं। बहु मंग्यौ बर हट्ट ॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। भानह हल्यौ न हल्ल ॥
तीस कोस सम्हौ मिल्यौ। बर पंचाइन दल्ल ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त ॥ अग्गिवान उजबक। धाइ भाई परवानिय ॥
ता पच्छैं साहाब। षान बंधे तुरकानिय ॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब। सेई संचारिय ॥
केलीषान कुलाह। सब्ब सेनी कुटवारिय ॥
बानिक बीर दुल्लह सुजर। भाइ षान रन अंभ बर ॥
ससिपाल बीर बंसी बिलस। बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पंचाइन बल पष्परै। [1]यह रनथंभह काज ॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यौ रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी ॥ ससीपाल बंसी चल्यौ कोपि रथ्थं। मनौ बंक चक्कं धस्यौ आनि पथ्थं ॥
जलं जुब्बनं जूथ धावै दुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जै तुरंगा ॥छं०॥१६॥

(१) प. कृ. को.-हथ, हथ्थ। (२) मो.-उरज्जै, उरजै।

कहै बत्त रत्ती मुषं रत्त आही। कहैं अश्व आठू रनंथंभ ढाही॥
ससीपाल वंसी चंदेरीय रायं। उथ्यौ छत्र सीसं कबी देषि गायं॥
छं० ॥ १७ ॥

नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी। ग्रहं अट्ठ मानों रुसी मेच्छ मंडी॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेऱ्यौ। मनों भावरी भान सुमेर फेऱ्यौ॥
छं० ॥ १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना।

दूहा ॥ घन घेऱ्यौ रिनथंभ पर। लिषि ढिल्ली परवान॥
तब जदव रा भान ने। दिय कग्गद चहुआन ॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना।

कवित्त ॥ रा जदव बीराधि। बीर गुज्जह अनुसरयौ॥
हयदल पयदल गज। अगोहि रिनथंभ यौं अरयौ॥
धंधेरा धंधेल। चंद ससिपालह वंसिय॥
अध लष दलहि हिलोर। जोर गरुवंतं गंसिय॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी। षीची राव प्रसंग दुह॥
प्रारंभ करै संभरि धनी। जौरै बंध सुमान सह॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना।

दूहा ॥ सुनि कग्गद चर चिंत कैं। तिथि सातें चहुआन॥
समर सिंघ रावर दिसा। गुर जन मुक्यौ कान्ह॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना।

कवित्त ॥ बर पंचाइन सबर। सबर बंसी ससिपालं॥
घेऱ्यौ तिन रनथंभ। सुबर जंपे बर कालं॥
मान बीर पुक्कार। धाइ आई ढिल्लीवै॥
अद्ध अद्ध पहु पंग। सथ्थ अद्धो बर है वै॥

जोगिंदराव जग हथ्थ बर । महन रंभ उप्पर सबर ॥
कालंक राइ कप्पन विरद। [1]तुम आओ रचि सेन बर ॥ छं० ॥ २२ ॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा ॥ चिचंगी चतुरंग सजि । बर रनथंभ सु काज ॥
बर सहेट रावर समर । आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलत कन्ह चहुआन बर । कहि चतुरंगी राज ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं । आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २४ ॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुंचेंगे।

पंच कोस बर सट्ठि अग । चौतीरह रनथंभ ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं । महन रंभ आरंभ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है।

कवित्त ॥ महन रंभ आरंभ । कन्ह चालत मन मंडिय ॥
अट्ठ दोह हम अग्ग । राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥
बर बंसी ससिपाल । गंज लग्गिय न्रप [2]भानं ॥
धरति धवर [3]तह नाम । सेत मिसि देही दानं ॥
अग्रहन ग्रहन रिनथंभ मति । इह सुमिच आयौ पढ़न ॥
कालंक राइ कप्पन विरद । महन रंभ बज्यौ बढ़न ॥ छं० ॥ २६ ॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

---

(१) मो.-तुम आओ सेना बरन ।
(२) ए. रु. को.-मान । (३) ए. रु. को. नहि ।

सुनि कन्ह चहुआन । रीति आहुठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्पि कढ्ढन । मिलै जो कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरषै न । सुबर षची बर धायौ ॥
रन रष्पै रजपूत । छच छल छांड नवायौ ॥
द्रिग रत बल बंसै सुबर । बेद ध्रम्म बंध्यौ चवै ॥
कालंक राइ कप्पन विरद । किम्मि काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना ।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग । हस्त मत्त बर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय माल दस । रष्पे कन्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय । वे सब मनि [1]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्थिय ग्रहन । दीना सब्ब समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा ।

चले कन्ह बर संग नृप । समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंबक बज्झिहै । धरकि बीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन ।

कवित्त ॥ घरी पंच बर सोम । दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि संच । सुगुर पंचमि बुध [2]चारिय ॥
अद्ध चार भय सूर । फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्कयौ । छंड बिय थानति अग्गा ॥
चिचंग राइ रावर समर । महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै । सुबर बीर चतुरंग [3]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्थ । जानै कि सरित सागर समथ्थ ॥

(१) ए. कृ. को.-बर साहि, बर साई ।
(२) ए. कृ. को.-चारिय । (३) ए. कृ. को.-राजि ।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान। मानों समुद्द गिरि [1]गज्जिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुभ्भकै न भान रज [2]मंडि सलीव। चक्कीय चक्कवे चलि सु कीव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग। बहु हल्लि अंभ घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि। जल होइ थलनि थल जलन सूझ्झ
उल्लयौ मेह हय गय प्रमान। मद [3]चलहि गंध गज शिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि। बर बरन बीच सोहंत आहि॥
पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि। चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल। जोगिंद मत्त जग इथ्थ भाल॥
पावस समूह रावर नरिंद। भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चोह। बोलंत सद्द कवि मधुर जोह।
बरषहति दान गज [4]मद्द मान। फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सद्द झिंगुर झँकार। सुभ्भहि भसद्द बदि श्रवन यार॥
पावस समूह करि समर चल्लि। रिनथंभ दिसा मेलान मल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दहिने ओर से समर सिंह जी का आना।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज। छंडि रनथंभ सँपत्तौ॥
बर दच्छिन समरंग। बीर जोगिंद प्रपत्तौ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि। सुकवि ओपम तिन पाई॥

---

(१) ए. कृ. को.-गज्जि। (२) मो.-मधि।
(३) मो.-लीह। (४) मो.-मत्त।

कुंभ अंब डोलंत । इथ्थ वरनै रस माई ॥
चहुआन सैन चिचंगपति । चावहिसि बर बिड्डुरिय ॥
बर ढोह छंडि चंदेर न्रप । जुग्गिनि ह्वै सम्हौ भिरिय ॥ छं० ॥३९॥
दूहा ॥ उत चंपे चहुआन ने । इत चंपे चिचंग ॥
मूंदि सास अरि सम दरी । जनु [1]चंप्यौ सु खदंग ॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त ॥ प्राची दिसि चहुआन । चक्यौ पच्छिम चतुरंगी ॥
दुहूं बीच [2]रिनथंभ । बीच अरि फौज सु रंगी ॥
दुहूं सेन [3]समकंत । [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी ॥
मनु राका रवि उदै । अस्त होते रथभग्गी ॥
ससिपाल बीर बंसी [5]बिमल । दुहुन बीच मन मेर हुअ ॥
षह मिलै षेह षग्गह हन्यौ । चवै चंद रवि दंद दुअ ॥छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पंष अंकुर्यौ । जुद्ध पंचाइन मंड्यौ ॥
इक सपंष षग बीय । पेट रनथंभ सु छंड्यौ ॥
पीठि पंड पावार । सु वर हूओ नष पंषं ॥
एक मुष्प वन बीर । धीर उभ्भौ विय मुष्पं ॥
न्रिभान बंभ बर पुंछ कवि । पुच्छ पाइ साधन समर ॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें । समर मोह भूल्यौ अमर ॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी ॥ मिले आइ [6]धायं सु आहुट्ठ राई । लगे बीर बथ्थै लगे लोह धाई ॥
कढ़ी बंक असी ससी बीय गत्ती । बरै ज्वाल सूरं मनों इन्नि तत्ती ॥
छं० ॥ ४३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चंपी । (२) ए.-चतुरंग । (३) ए. कृ. को.-चमकंत ।
(४) ए. को.-नग, नगा । (५) ए. कृ. को.-बिसल । (६) ए. कृ. को.-धाई ।

करै हक्क सीरं महा मार मारं। धरं किति सीसं तुरं पार पारं॥
बजै सस्त्र बीसं [1]तुरित्तं बषानं। तिनं सद्द आगैं दुरै वै निसानं॥
छं० ॥ ४४ ॥

धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मनों पंग तथ्थं॥
लगै धार धारं धरक्कै विवानं। गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवथानं॥
छं० ॥ ४५ ॥

कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं। मनों झों पुलंदी वकै कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं। मनों दंपती संजुधं की सुरत्तं॥
छं० ॥ ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्पियै बीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़ै छिंछ भारी। झरै फूल तथ्थं सिरं डुंड भारी॥
छं० ॥ ४७ ॥

जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [2]जरूरं। उड़ै रेंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव ओनी पलं भद्द जानं। गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं॥
छं० ॥ ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्ज माला चमक्कंत चंगं॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै दंड दंडं नफेरी सुबद्दं॥छं०॥४९॥
बहै षग्ग बानं मनों बग्ग पानं। रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं। ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं॥
छं० ॥ ५० ॥

[3]इलावार पूरं सरित्तान ओनं। तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं॥
सुषं मेद पाटं सु घाटं षुमानं। भिरे भौर भारी सु ग्रब्बे उमानं॥
छं० ॥ ५१ ॥

गहै नाग मुष्षी अरी जा उठायौ। मनों चंद संदेस पच्छै पठायौ॥
ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं। रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं॥छं०॥५२॥
पर्‌यौ षग्ग षीची भरं चिचकोटं। जलं पष्प मच्छी धरं जानि लोटं॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं। थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो.-तुटितं। (२) ए. कृ. को.-करूरं। (३) मो.-इलाचार।

महादेव जुद्धं दिष्यौ मेस यानं। धनौ चिचकोटं [1]धसी सेन जानं॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना।

कवित्त ॥ उत बंसी ससिपाल। इतै रुस्तम्म दुंद बल ॥
बिचै समर रावर। नरिंद बीरन गाहरमल ॥
उतै तेग उभ्भारि। इतै सिंगनि धरि बानं ॥
छंडि निधक अरियान। उररि पारी परि तानं ॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन। हवि मुष रुष मुक्कै नहीं ॥
भर सुभर दार रष्यन सु बर। समर समर उभ्भौं पही ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना।

सम लरत्त बर समल। दिष्षि चहुआन कियौ बल ॥
बांम मुष्प अरोहि। नीर असि झल्ल मुषह झल ॥
सौ सामंत छै सूर। सथ्थ प्रथुराज सु धायौ ॥
सार कोट अरि जोट। षग्ग घल घंभ हलायौ ॥
जै जैत देत जै करहि। देव बीर आनँद बढ़्यौ ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर। असि पहार धर भर चढ़्यौ ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना।

दूहा ॥ रा जदव रिनथंभ तजि। मिलिय राव प्रति मान ॥
समरसिंह रावर सु प्रति। चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

(१) ए. कृ. को.-मधी। (२) ए. कृ. को.-कीय।

* दिन धवलो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मद्धि फौज प्रथिराज बल। रा जद्दव दिसि बाम ॥
समरसिंघ दच्छिन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद चिभंगी ॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं।
सेंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, मृग रारी ॥
बर टोप सु कंतिय, छूर सुभंतिय, बहर पंतिय, जम रारी ॥छं०॥६०॥
गोरष्पन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, विरुझाई ॥
परि जोगइ सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई ॥
† वीरंग विचारै, डक्क हकारै, मंच मारै, उभ्भारै।
छं० ॥ ६१ ॥
अफ्फार कि फारं, असि बर तारं, बंसेलि मारं, सिर छूरं ॥
बर टोप समेतं, सिप्पर तेतं, असि आलेतं, हँसि छूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, इथ्थ न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥
बर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि बर बालं किल कालं।
‡ नचि नारद पूरं, बजि रन तूरं, बरि बरि छूरं, धरि मालं ॥

---

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिलसिला ठीक जँचता है।

(१) ए.-समनेजरि। † यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

(२) ए. कृ को.-हारी चिर चिन्ह।

‡ यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है।

कर व्रन्न सु तुट्टं, धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं ॥
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

षष छिंछत ओनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई ।
कवि ओपम तासं, खूर विलासं, माधव मासं, फिरि आई ॥छं०॥६४॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना ।

कवित्त ॥ दस क्रम्मन अरि ठेल । मुरिय पंचाइन सेनं ॥
बीर छक्क उत्तरी । मुक्ति भिरि रन रत नैनं ॥
सुरस पियौ प्रथिराज । प्रगटि अंषिन जल झलकिय ॥
पी अधरा रस पीन । प्रातसौ की मुष जक्किय ॥
चहुआन सु बर सोरह परिग । समर सिंघ तेरह चिघट ॥
ससिपाल बीर बंसी सुबर । सहस पंच लुथ्थय सुभट ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ।

दूहा ॥ निग्रह [1]नर बंछत न्रपति । अहि गवन्न सुष वान ॥
पंच अनी करि षेत चढ़ि । षेत अरक चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड । सोई सिंघार खूर बल ॥
मत्त [3]कुलस तन जान । लभ्भ कित्तीति सुभट कल ॥
जिहि मरन्न मन खूर । मरन जेही मन उत्तरि ॥
पंच पंच पथ गोअ । फिर न एकट्ठे नर नर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निग्रह नन्नर ।
(३) ए. कृ. को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है । पाठ भेद कुछ भी नहीं है ।
(४) ए. कृ. को.-कुसल ।

घरियार रूपि सु कुठार घट। तंत मुक्कि लग्गी नदिय॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुअ व्यापं लग्गंन दिय॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]बर छीह॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाहन ढाहै दीह॥ छं०॥ ६८॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया॥ पंच चिराकन मझ्झ नृप। सो सोभित जुग्गिंद॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस [2]थह। लिय पारस मंडि चंद॥
लिय पारस मँडि चंद। सुभित ससिपाल सु बंसिय॥
अप्प सामि बर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बेंन बुल्लियै। घोरि ढंकी अरि रंचै॥
कपट द्रोह करि इक्क। पथ्थ टारै [3]पच पंचै॥ छं०॥ ६९॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल फंद अरि कट्टि॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चकाव्यूह रचि ठट्टि॥ छं०॥ ७०॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय॥
मद सरक्क [5] तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह॥

---

(१) मो.-बर वीह। (२) ए. कृ. को.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-पंच पंच। (४) २. कृ. को.-पंग।
(५) ए.-विन।

गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उदै उदै बर अरुन हुअ। दुहू लोह कट्टी विभर ॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै [1]सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ करं लोह कट्टै, रसं रोस बट्टै। अँगं अंग गट्टै, कथं सूर कट्टै ॥
छं० ॥ ७२ ॥
असी अंच उट्टै, थटं थट्ट गट्टै। इकं सीस रट्टै, षगं सूर कट्टै ॥
छं० ॥ ७३ ॥
गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै। थुती रंभ पट्टै, अँतं तुट्ट जुट्टै ॥
छं० ॥ ७४ ॥
सिरं अंग बट्टै, लोहं पच्छ कट्टै। करं किल्लि मट्टै, वकं बीन नट्टै ॥
छं० ॥ ७५ ॥
मुषं चंद पट्टै, ...। सिँघ सभ्भ रंनी, लुथ्थिं लुथ्थ घन्नी ॥
छं० ॥ ७६ ॥
संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे। ...., ... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ ससरसिंघ दिष्पत सुबर। उप्पारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चंदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई ॥
छं० ॥ ७९ ॥
भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। विरुझझाई धाइ, असी बंक झाई ॥
छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-जु।

कि रच्चं उड़ाई, ससी व्यंव पाई। सुतं [1]राति छाई, कबी कित्ति गाई॥
छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्गि रासी, अबी अब्बि नासी। उपं राज जीतं, सु भारथ्थ बीतं॥
छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [2]जुद्धे ॥
अमर [3]बंध चिचंग। बीर पंचाइन बद्धे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोह्यौ विरुझाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लद्ध नन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगिंद न्रप। दिट्ठ देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन। दिट्ठकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्ठि लच्छि चिचंग। राज रिनथंभ [4]उबारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्सु। घाइ आहुट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि। निसि सपनंतर अद्ध पहि ॥
[5]यागत्ति जागि देषै न्रपति। तबह कन्ह जलयान लहि ॥छं०॥८५॥

---

(१) ए. कृ. को.-राति। (२) मो.-सद्धे।
(३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मत्ति।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्द्रवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

हंस [1]सुगति माननी। चंद जामिनि प्रति घट्टी॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग [2]इथ नयन प्रगट्टी॥
हंस कला अवतरी। कुमुद बर फुल्लि समथ्थै॥
एक चिंत्त सोइ बाल। मौत संकर अस रथ्थै॥
तेहि बाल संग में पूहुय लिय। बरन बीर संगति जुवह॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू। नवह देव नन मान वह॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा॥ * सो सुपनंतर देषि वह। सो तुअ बर बर नारि॥
बे वर गज्जि नरिंद तूं। हसि हसि पुच्छि कुंआरि॥ छं०॥ ८७॥
एन बयन रूपह रवन। इन गुन इन उनमान॥
धीरत्तन पूजंत बर। सुनहु तौ कहूं प्रमान॥ छं०॥ ८८॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल॥ सुनि सुबर बरनी रूप। तिहि चढ़न बै न्रप भूप॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह॥ छं०॥ ८९॥
वय काम दिन पछितान। आवंन दिन सुभ जानि॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान॥छं०॥९०॥

---

(१) मो.-गति। (२) मो.-हथ

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

धन धनक वेदी काम। [1]द्रिग काल गौरभ वाम॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ। देषंत काम बजाइ॥ छं० ॥ ९१ ॥
बरछिन्न उन्नित बाल। बर काम चित चढि साल॥
चित हरुअ गरुअ सुहंत। गुर गरू होत पढ़ंत॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम जिम सु विधा आइ। तुछ भरत तुछ सरसाइ॥
मति लघू अलघु प्रमान। [2]अंब निबंद समान॥ छं० ॥ ९३ ॥
बर मत्त पिछली जीअ। तहां रसन [3]हीनति पीय॥
गति हंस चढ़त सुभाइ। सुत बंटि [4]जसु अभिसाइ॥ छं० ॥ ९४ ॥
सैसब सु सुतन सुषाइ। जोवन्न रस सरसाइ॥
तिसहूंत गजगति जानि। .... ॥ छं० ॥ ९५ ॥
जसु पन्न चित क्रम मान। जिम संधि प्रथम गियान॥
प्राचीय मुष रंग हूर। प्रगट्यौ सु काम करूर॥ छं० ॥ ९६ ॥
बर बाल माहि सरूप। घट धरक कपट अनूप॥
वय बाल [5]जोवत काज। किप कपट उत्तर लाज॥ छं० ॥ ९७ ॥
मधु मधुर [6]अमृत जानि। बेजियन सीषत बानि॥
मति मत्ति बरनी षाइ। तहां बाल बेस [7]छिकाइ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना।

कवित्त॥ कहि सुपनंतर [8]न्हपति। सु वह श्रोतान वढ़ाइय॥
तव लगि [9]भान नरिंद। बीर दुजराज पठाइय॥
[10]वर दुजराज पठाय। रतन उर कीनौ अप्पी॥

(१) ए. कृ. को.-दृग का लगौ सुभ बांम। (२) मो.-अंबं विन्द समान।
(३) मो.-हीनित। (४) मो.-अभि जनु माइ।
(५) ए. कृ. को.-जोबन। (६) ए. कृ. को.-उंतम।
(७) मो.-लुकाय। (८) मो.-उपति।
(९) ए. कृ. को.-मान।
(१०) ए. कृ. को.-"हय हथ्थिय मनि मृत्त रतन उर किन्हे रप्पी"।

के दरबार में बड़े बड़े योधा हैं पर उनके समान एक भी नहीं है।

तब तो शहाबुद्दीन ने क्रोध में आकर ततार खां को लड़ाई के लिये फौज तैयार करने की आज्ञा दी और वह आप अंदर चला गया। उस रात्रि को रात भर शहाबुद्दीन के मन में चहुआन के बैर ने बस कर नींद न आने दी। उसे कभी शेख और कभी पृथ्वीराज आँखों के साम्हने देख पड़ता था। प्रातःकाल होते ही शहाबुद्दीन ने बड़ी भारी सेना सज कर हिन्दुस्तान की तरफ चलने की तैय्यारी की। ज्यों ही शाह सवार हुआ कि बहुत से अपशकुन होने लगे, जिन्हें देख कर अरब खां ने कहा कि अपशकुन हो रहे हैं इससे आज की तैय्यारी बंद कर दी जाय। यह सुन कर सुलतान ने कहा कि तूं कायर है और अपने प्राणों के भय से ऐसा कहता है। यह कह कर उसने कूच कर दिया। जब सुलतान सिंधु नदी तक पहुँच गया तो मीर हुसेन के दूतों ने सुलतान की चढ़ाई की खबर मीर से की। इधर पृथ्वीराज के कान तक भी यह खबर जा पहुँची। तब पृथ्वीराज ने अपने मंत्री कैमास और कन्ह, चन्द, पुंडीरादि सामन्तों को बुला कर उक्त संवाद की सूचना दी। निदान सब की सलाह यही ठहरी कि वह युद्ध द्वारा ही पराजित किया जाय और उसी समय फौज तय्यार की गई। सब सामंत और चतुरंगिनी सेना महल के दरवाजे आ उपस्थित हुई। ज्योंही पृथ्वीराज घोड़े पर सवार हुए गुरुराम राजप्रोहित ने आ कर राजा को तिलक किया और राजा ने पुरष्कार में बहुत सा दान दिया। ईश्वर का स्मरण करता हुआ ज्योंही पृथ्वीराज ससैन्य आगे बढ़ा कि और भी अनेक प्रकार के शुभ शकुन हुए—ज्योंही पृथ्वीराज की सेना दिल्ली से बाहर हुई कि मीर हुसेन भी एक हजार कट्टर सिपाहियों सहित पृथ्वीराज के साथ हो लिया। दस कोस चलने पर फौज का पड़ाव डाल दिया गया।

उधर शहाबुद्दीन के गुप्तचरों ने उसे भी पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर कर दी, जिसे सुनते ही उसने अपनी फौज तैय्यार की और वह बड़े सज धज से आगे बढ़ा और दो दिन की राह एक दिन में तै कर के सारुंडपुर में उसने पड़ाव डाला। इसका समाचार कैमास को एक दूत ने एक घड़ी रात रहे आकर कहा। कैमास ने तुरंत अपने शिविर से निकल कर फौज की तैय्यारी करवाई और आप राजा के पास जाकर शाहके आगे बढ़ने की उसने खबर दी। इधर तो सब सेन पहिले से ही युद्ध पिपासाकुलित होकर तैयार खड़ी थी। पृथ्वीराज स्नानध्यानादि से निश्चिंत होकर शालिग्राम की शिला और तुलसी की माला गले में धारण कर धनुष बाण तलवार नेजा इत्यादि अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो घोड़े पर सवार हुआ और उसने "जै हर" शब्द मुख से उच्चारण कर के घोड़े की गरदन ठोंकी जिसके उत्तर में जयकार के चिन्ह में घोड़े ने भी गरदन उठाई और वह पृथ्वी को खोदता हुआ फड़क उठा। पृथ्वीराज मीर हुसेन के डेरे में गया जो पहिले ही से सन्नद्ध बैठा था। राजा का आगमन सुनते ही घोड़े पर सवार होकर "रहमान" का स्मरण करता हुआ वह पृथ्वीराज के पास आया और उसने झुक कर सलाम किया और राजा ने सादर उसका उत्तर दिया और तब मीर हुसेन को और अपनी सब सेना सहित पृथ्वीराज आगे बढ़ा।

जब शहाबुद्दीन के दूतों ने उसे जाकर खबर दी कि पृथ्वीराज की सेना एक योजन पर आगई है तब शहाबुद्दीन ने फौज तयार कर के पाँच टुकड़ों में विभक्त कर के व्यूहबद्ध की। दक्षिण पक्ष में तत्तार खां; बांए पक्ष में खुरासान खां, हाज़ी खां, गाजी खां और राजी खां को; हरावल में मीर जमाम खां; मीर कमाम खां, और महब्बत खां को पिष्ट में तथा रुस्तम खां को मध्य में रक्खा। अनेक प्रकार के रण वाद्यों को बजाती, रंग बिरंगे निशान उड़ाती हुई सब सेना सहित शहाबुद्दीन सारुंडा के बाँई ओर आन जमा। तब तक पृथ्वीराज भी देखा देखी के पार में पहुँच गए और शहाबुद्दीन की फौज को देख कर पृथ्वीराज ने मीर हुसेन की तरफ देखा, निदान मीर हुसन

ने भी अपनी अनी सहित आगे बढ़ कर पृथ्वीराज को सलाम किया और कहा "कि हे राजन् आपने क्षत्री धर्म्म की निर्वाह कर के मेरी रक्षा की है सो आज मैं भी शहाबुद्दीन का शिर काट कर श्रीमान् के चरणों में समर्पण करता हूं। इसके उत्तर में पृथ्वीराज ने कहा कि वास्तव में ऐसा ही होगा मैं भी आज तुम को गजनी के तख्त पर बैठालूंगा। यह सुन कर मीर ने पृथ्वीराज को पुनः सलाम किया और उसने बाँई तरफ अपनी फौज सम्हाल कर दुरुस्त की। पृथ्वीराज ने जदव राय, महनसी, बड़रामगूजर, मंडलीक, जहिराज आदि सामन्तों को सेना सहित मीर हुसेन की सहायता करने की आज्ञा दी। दाहिनी ओर कैमास, चामुंड राय, चन्द्रसेन चंद पुंडीर, जुल्फ सिंह पम्मार, गहलौत, तुंवरराय परिहार आदि सामन्त ४००० सेना सहित व्यूहबद्ध हुए, बीच में पृथ्वीराज और गोइन्दराय; देवराज, कन्ह, प्रसंग षीची, कनकू बड़गुज्जर आदि अपनी अपनी सेना सहित हरावल अर्थात् साम्हने की पंक्ति में। पृथ्वीराज की सेना इस प्रकार व्यूहबद्ध होकर आगे बढ़ी और बसि हजार सेना के साथ तातार खां से चार हजार सेना सहित मीर हुसेन का साम्हना हुआ। दोनो फौजों के मेल में आते ही दोनों फौजों के घुड़सवारो ने घोडे छोड़ दिए और पैदल हो कर मुकाबिला किया। मीर हुसेन के साथ १००० और तातार खां के साथ ७००० सवार थे। मुठभेड़ होते ही दोनो ओर के बीर सिपाही अपने अपने स्वामियों का हित चाहते हुए हथियार चलाने लगे। जीवन का मोह छोड़ कर बीर सिपाहियो ने ऐसा युद्ध किया कि क्षण मात्र मे लोथ पर लोथ अटै गई और रक्त की नदी बह निकली। अन्त में ततार खां की फौज भाग उठी और उसकी ढाल(निसान) गिर पड़ी। पांच हजार बीरों के साथ ततार खा मारा गया और तीन सौ मुसलमान और दो सौ हिन्दुओं के साथ मीर हुसेन काम आया। इस युद्ध में तीस कमंध उठे। तब अपनी फौज को खुरासान खां ने आगे बढ़ाया और उससे और चामुंड राय से साम्हना हुआ। जब युद्ध होते होते दो पहर हो गया तब वह सरदारों के सहित घोड़े पर से उतरा और इधर से चामुंड राय ने भी घोड़ा छोड़ दिया किन्तु मिलान होते ही चामुंड राय ने खुरासान का काम तमाम किया और खुरासान खां की फौज भाग कर बादशाह की सेवा में जा मिली। बादशाह का दाहिना हाथ तो टूट ही चुका था। निदान खुरासान खां के मरते ही पृथ्वीराज की फौज ने बड़े क्रोध से उमग में आकर आक्रमण किया। यद्यपि शिकस्त खाने से शहाबुद्दीन की सेना का मन उत्साहहीन हो गया था किन्तु अपने स्वामी की उत्तेजना से वे लोग भी डट गए और दोनों ओर से बड़ा घोर घमासान लोहा भरा। मुठभेड़ होते ही पृथ्वीराज का नामी सरदार मंडलीक नामक खीची मारा गया। मडलीक के कमंध ने मुसलमानों के नामी नामी ४० बीरों को मारा। जब उस सेना के बड़े बड़े अमीर उमराव और सेनापति काम आए तो फौज की भी हिम्मत कम हो गई और वह भाग उठी। इधर से पृथ्वीराज की फौज ने पीछा किया। मुसलमान भागते जाते थे और चहुआन की फौज उन्हें मारती हुई आगे बढ़ती जाती थी। शहाबुद्दीन जो अपनी सेना को हिम्मत दिलाने के लिये डटा हुआ था चहुआन के सामन्तों से घेर लिया गया। चामुड राय ने साम्हने से जाकर ललकारा। चन्द्रसेन और पुंडीर ने बाँई तरफ से और कैमास ने दाहिनी तरफ से आकर घेर लिया। और चामुंड राय और पुंडीर ने दोनों तरफ से आनकर बादशाह के दोनो हाथ पकड़ लिए।

सूर्य्योदय से एक घड़ी ५ पल पर लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे शहाबुद्दीन पकड़ गया। सुलतान की तरफ से २० हजार सैनिक न्याजी खां, गाजी खां, मीर खां, मान खां, कम्मान खां आदि सरदार और सात हजार हाथी घोड़े इत्यादि मारे गए। पृथ्वीराज के कुल १३०० सिपाही और मडलीक खीची, टीकम राय, रामराव पमार ये सरदार मारे गए। इस युद्ध में ४० कमंध खड़े हुए। इस प्रकार विजय प्राप्त कर और शहाबुद्दीन को कैद करके

पृथ्वीराज आनन्द मनाता हुआ डेरे पर आया और उसने रण क्षेत्र में से मीर हुसेन का शव खोज किए जाने की आज्ञा दी। जब चित्ररेखा को यह ज्ञान हुआ कि उसका सब गुण आगर नवनागर बीर प्रेमपात्र इस अनित्य शरीर को रणक्षेत्र में त्याग कर सूक्ष्म शरीर से वैकुंठ का आनंद ले रहा है किन्तु वहां भी उसे मेरे मिलने की अभिलाषा कदापि लगी हुई है, तो उसने तुरन्त पृथ्वीराज के सम्मुख आकर प्रणाम किया और वह ईश्वर स्मरण करती हुई मीर हुसेन के शव के साथ जीवित कब्र में गड़ गई।

पृथ्वीराज ने ५ दिन पर्य्यन्त शहाबुद्दीन को अपने एक विशेष मेहमान की तरह बड़े प्रेम से रक्खा। पांचवें दिन मीर हुसेन के पुत्र को उसके हवाले कर दिया और तीन बार सलाम करवा कर और यह सौगंद लेकर कि अब वह पुनः हिन्दुओं पर चढ़ाई करने की चेष्टा न करेगा उसे छोड़ दिया।

इस प्रकार शहाबुद्दीन गज़नी को लौट गया। वहां के अमीर उमरावों ने अपने बादशाह के जीवित कैद से छूट आने की बधाई में बड़े बड़े उत्सव किए और खैरात बांटी और शहर के सब पीर पठानों को चादरें चढ़ाईं और उनकी पूजा की।

आखेटक चूक वर्णन।

[दसवां समय]

शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज की कैद से छूट कर आए हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया किन्तु शहाबुद्दीन को पल भर भी कल नहीं पड़ती थी। उसे उठते बैठते सोते जागते पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला लेने की धुन सवार थी दिल्ली से लौट कर गज़नी पहुँचते ही उसने हुसेन के लड़के को कैद कर दिया और वह एक महीने पांच दिन में वहां से किसी प्रकार निकल कर फिर पृथ्वीराज के पास आ गया और पृथ्वीराज ने भी उसे सादर स्थान दिया। इससे शहाबुद्दीन की कौड़ी और भी जल रही थी। एक दिन शहाबुद्दीन के एक गुप्तचर ने समाचार दिया कि पृथ्वीराज नागौर के खट्टू बन में शिकार खेलने के लिये आने वाला है। यह समाचार उसे नीतिराव नामक एक क्षत्री से मिला था जो कि प्रायः नित्य प्रति दिल्ली के समाचार गज़नी को भेजा करता था। उक्त समाचार पाकर शहाबुद्दीन का कलेजा फूल उठा। उसने तुरंत ही हाज़ी खां, गप्पर शाह, महम्मद गाज़ी आदि सरदारों को बुला कर उक्त समाचार कह सुनाया और खट्टू बन की ओर स्वयं जाने के लिये तैयारी करने का हुक्म दिया और ततार खां और खुरासान खां को आज्ञा दी कि तुम लोग चतुर एयारों को लेकर स्वयं खट्टू बन में जाओ और इस बात का भेद लो कि पृथ्वीराज कितनी सेना के साथ और किस तरह शिकार करने आता है और हम लोग किस तरह अपनी फलसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह भेदिए दूतों को आगे भेज कर शहाबुद्दीन, खुरसान खां, गाजी खां, गप्पर साह, पप्पर साह, मीर मुहम्मद, वाजीद खां, आदि सरदार और आठ हजार घुड़सवार सेना साहित खट्टू बन में आ पहुँचा और उसने छिप कर एक बड़े घेरे में पड़ाव डाल दिया।

पृथ्वीराज भी ५०० पैदल, पांच सौ सवार, एक हजार कुत्ते, ५५ चीते और बहुत से शिकारी पक्षी और परिकर की भीड़ भाड़ साहित निश्चितता पूर्व्वक खट्टू बन में पहुंचा। एक रात विश्राम कर दूसरे दिन प्रातः काल होते ही पृथ्वीराज, कन्ह, सलष, पंवार, रघुवंश चहुआन, कविचंद इन सामन्तों को साथ ले और सारी फौज परिकर को छोड़ कर जंगल में घुस पड़ा। शहाबुद्दीन जो कि पहिले ही से ताक में लगा हुआ था पृथ्वीराज को अपनी सेना के केन्द्र में जानकर उस पर आ टूटा। कविचंद को इस विषय में प्रथम ही से कुछ संदेह था। इसलिये उसने पहिले ही से सामन्तों से सचेत रहने को कह दिया था किन्तु उन लोगों पर इस बात का विशेष प्रभाव न पड़ा। जब एकाएक मुसलमान सेना ने घेर लिया तब उनको चेत हुआ और तुरंत ही चार सरदार तो पृथ्वीराज के चारों तरफ तलवार निकाल कर अटल बीर रूप से डट गए और कन्ह ने आगे बढ़ कर हरावल पर धावा किया। उस आठ हजार मुसलमान सेना में इन पांचों राजपूत बीरों की अनुपम छटा प्रस्फुटित होती थी। क्षण क्षण में उन राजपूत वीरों पर वीर रस और यवन सेना पर करुणा रस का प्रभाव जमता जाता था। शहाबुद्दीन के सरदारों ने अपना सा खूबजोर मारा पर वे पृथ्वीराज की छांई दाबने में भी समर्थ न हो सके जो आगे जाता था वह वहीं टूट कर दो हो जाता था। इस प्रकार केवल उक्त पांच सामन्तों ने ७५५ मुसलमानों को मार डाला और तब तक पृथ्वीराज के शिविर में भी इस बात की चरचा फैल गई। इसलिये उसकी सेना भी सज कर आ पहुची और छली यवनों का नाश करने में तत्पर हुई। भला जो सेना केवल पांच सामन्तों का साम्हना करने में भी समर्थ न हो सकी थी वह अब इस वीर दल के साम्हने कब ठहर सकती थी। निदान मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए और सब लोग तीन तेरह हो गए। शहाबुद्दीन ने भी अपनी पहिली गति का स्मरण कर के इन्हींका साथ देना उचित जाना और सब के साथ साथ जीते जागते गज़नी पहुँच कर उसने ख़ैर मनाई। इधर बीर पृथ्वीराज पुनः आनन्द से खट्टू बन में शिकार करता हुआ निश्चिन्त भाव से विचरने लगा।

चित्ररेखा समय।

[ग्यारहवां समय।]

एक समय कविचन्द ने हुसन ख़ां से चित्ररेखा की उत्पत्ति के विषय में पूछा। तब उसने इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया कि एक समय वीर शहाबुद्दीन ने अपने समस्त शूर वीर मंत्री घुरासान ख़ां, मारूफ़ ख़ां, तत्तार ख़ां, इत्यादि सरदारों को बुलाकर पूछा कि सिंध के किनारे राज्य करने वाला छोटा सा सरदार * अरब खां मेरी सेवा करना स्वीकार नहीं करता इस हेतु उस पर ससैन्य चढ़ाई कर के उसे अपने अधीन करना चाहिए। इस प्रकार शहाबुद्दीन की आज्ञा पाकर मंत्रियों ने ५०० हाथी, एक लाख सवार, काबुली, पंजाबी, रूमी, गोरी, अरब इत्यादि जाति के मुख्य मुख्य एक लाख शूर वीरों की सेना तैयार करके शहाबुद्दीन सहित हमला किया। निदान शहाबुद्दीन भी स्वयं उक्त सेना के साथ हो लिया। जब सिन्धु की सरहद पर पहुँचा तब उसने अपना डेरा वहीं पर डाल दिया और निसुरत्त खां को अरब खां के पास भेजकर कहल भेजा कि यदि वह चित्ररेखा वेश्या को दंड स्वरूप मुझे देना स्वीकार करे और सदैव के लिये मेरी सेवा करना भी स्वीकार करे तो मैं भी उसे क्षमा कर दूंगा। अरब खां शहाबुद्दीन की विकट सेना और उसके बीर बलवान सरदारों के पराक्रम से स्वय डर गया था, निसुरत्त खां से बड़े आदर से मिला और उसने बादशाह की आज्ञा को भी सादर स्वीकार कर लिया। बरन साथही उसके गज़नी के दरबार में उच्चपद पाने की अभिलाषा से सनातन हिन्दू धर्म्म को त्याग करके मुसलमानी मत भी उसने स्वीकार कर लिया जिस पर निसुरत्त खा ने उसकी बड़ी प्रसंशा की और उस समय अद्वितीय रूप लावण्यमई परम सुन्दरी चित्ररेखा को लाकर शहाबुद्दीन को नज़र किया जिसके लिये बादशाह ने उसको बहुत कुछ इनाम दिया और किसी झगड़े झंझट खून बहाव के बिना चित्ररेखा को सहज ही में पाकर मन ही मन आनान्दित होता हुआ वह गज़नी को लौट चला। गज़नी पहुंच कर चित्ररेखा और शहाबुद्दीन की परस्पर दिन प्रति प्रीति बढने लगी। अन्त में यहां तक हो गया कि सुलतान सर्वथा चित्ररेखा के प्रेम के वशीभूत हो गया। एक मात्र उसी के प्रेम में मग्न होकर अपनी सब स्त्रियादि कों भुला कर उसी की प्रसन्नता की चेष्टा में वह मग्न रहता। यह खबर सुन कर कविचद अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

* 'अरब खां' यह मुसलमानी नाम है किन्तु आगे कथा के सम्बन्ध से ज्ञात होता है कि वह कोई हिन्दू क्षत्री राजा था किन्तु उसका असली नाम क्या था सो मालूम नहीं और न कहीं पर लिखा मिलता है।

भोला राय समय।

[बारहवाँ समय।]

संवत ११३६ चैत्र सुदी दुतिया शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र में भोलाराम भीमदेव गुजरात के राजा का शिवपुर अर्थात् आबू के राजा सलष पँवार पर चढ़ाई करने और सोमेश्वर जी का उसको सहायता देने का वर्णन इस समय में है।

शुकी अर्थात् कविचंद की स्त्री का इच्छनी कुमारी के विवाह की कथा पूछना और कविचंद का उसे सविस्तर वर्णन करना।

कविचंद बोला कि जिस समय प्रतापी पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली का स्वतंत्र राज्य करता था उसी समय आबूगढ़ में सलष नामक पँवार राजा नीति धर्म्मयुक्त राज्य करता था, सलष सत्पुरुष साधुओं की रक्षा करता हुआ सदैव दुष्टों को दंड देने में तत्पर रहता था। उसके मंदोदरी और इच्छनी नामक दो कन्याएँ और जैत नामक एक पुत्र था। सलष ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री मंदोदरी का विवाह गुजरात के प्रतापी राजा भोलाराय भीम से कर दिया था और इच्छनी को पृथ्वीराज के साथ विवाह करने का उसका संकल्प था।

भोलाराय भीमदेव का मंत्री अमरसिंह सेवरा नामक एक जैन धर्मावलम्बी ब्राह्मण था जो कि तंत्र और मंत्र शास्त्र में अद्वितीय निपुण और परम शक्तिसंपन्न था। उसने एक समय अमावास्या को चन्द्रमा का दर्शन करा के राज्य के समस्त माननीय प्रसिद्ध पंडितों को मूर्ख और झूठा प्रमाणित करके सब का सिर मुड़वा दिया था। भीमदेव की स्त्री मंदोदरी के साथ जो प्रोहितानी, मालिन, इत्यादि अन्यान्य स्त्रियाँ आबू से आई थीं उन्होंने इच्छनी कुमारी के अद्वितीय रूप लावण्य की अत्यन्त प्रशंसा की जिसे सुनकर भीमदेव का मन कामातुर होकर उसी के ध्यान में मग्न हो गया। अस्तु उस का यह ध्यान यहां तक बढ़ा कि सोते जागते सदैव इच्छनी कुमारी की मनोहर मूर्ति ही उसकी आखों के साम्हने फिरा करती और इस धुन में वह पागल सा हो गया। अंत में उसने प्रधान द्वारा सलष को एक पत्र लिखा भेजा जिस का आशय यह था कि तुम अपनी कनिष्ठा कुमारी इच्छनी का विवाह मेरे साथ कर दो, उसका वाग्दान जो तुम पृथ्वीराज को कर चुके हो उसका ध्यान भी भुला दो, यदि ऐसा न करोगे तो तुम्हें सपरिवार नष्ट भ्रष्ट करके मै आबूगढ़ पर अपना अधिकार करूंगा और बलवत इच्छनी कुमारी को अपनाऊंगा। इस पत्र को लेकर भीमदेव का प्रधान जब आबू पहुँचा तो राजा सलष ने उसे अपने दमाद के यहां से आया जान सादर स्थान दिया और पांच दिन बड़े सम्मान से रक्खा। पाचवें दिन दरबार लगा और प्रधान भी बुलाया गया। कुशल प्रश्न हो जाने पर प्रधान ने उक्त पत्र सलष को समर्पण किया जिसे पढ़ते ही सलष ने कहा कि मैं ने चालुक्य को मंदोदरी ब्याह करके सम्बन्ध किया था किन्तु वह अनीति करता है कि इच्छनी के रूप पर मोहित हो कर अब उसे भी बरा चाहता है। मैं उसे पृथ्वीराज से ब्याहने का संकल्प कर चुका हूं और मै अपने दृढ़ संकल्प को प्राणो के बदले भी कदापि पलटने का नहीं। पत्र का सारांश जान कर जैतसिंह की तो विचित्र ही दशा हो गई। क्रोध से मुख आरक्त हो उठा, ओठ फड़कने लगा, शरीर के रोमांच खड़े हो गए। उसके क्रोध की मात्रा यहां तक बढ़ी कि उसने झिल्लाकर तलवार निकाल ली और वह कहने लगा कि भीमदेव बड़ा पाखडी है उसे आकर्षन, मारन मोहन इत्यादि के मंत्र यंत्रों का बड़ा गर्व है। वह क्षत्री नहीं है और न उसे क्षत्रियों से काम पड़ा है। वह इस प्रकार पाखंड से बल बढ़ा कर अपने को अमर मानता है। यह सर्वथा भूल है। इस पर भीमदेव के मंत्री से न रहा गया और वह कहने लगा कि तुम लड़के हो भीमदेव के आर्थिक और सैनिक बल से परिचित नहीं हो, इससे ऐसा कहते हो। वह क्षणमात्र में पुंगल गढ़, आबू मंडोवर और अजमेर इत्यादि को बिना प्रयास ले सकता है। यदि भीमदेव रूस जावेगा तो सपरिवार आपकी और नौकोटि मारवाड़ की प्रजा की रक्षा करने वाला

मुझे कोई नहीं दीख पड़ता है। यह सुन कर राजा सलष ने गम्भीरतापूर्व्वक उत्तर दिया कि जैसी सहायता गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्णचन्द आनन्द कन्द करेंगे। इस प्रकार पिता पुत्र दोनों का एक मत देख कर प्रधान ने कहा कि अच्छा यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो सावधान रहिए। मैं जाता हूं और अब राजा के सहित शीघ्र ही आकर आपका बल देखूंगा। ज्योंही उधर भीमदेव के मंत्री ने पीठ फेरी कि राजा सलष ने इच्छनी कुमारी के ब्याह की तय्यारी कर दी और उक्त संवाद की स्पष्ट सूचना देते हुए पृथ्वीराज को भी एक पत्र लिख कर उसके पास मंत्री को भेजा जिसको पृथ्वीराज ने बड़े आदर से लिया और उसकी कही हुई सब बातें सुन कर सलष के पत्र को बड़े आदर से पढ़ा। यथासंभव शीघ्र ही इच्छनी से ब्याह करने का समाचार पाकर पृथ्वीराज के आनन्द की सीमा न रही। उसने तुरन्त ही सलष के मंत्री को पांच हाथी १०० घोड़े पांच सौ रुपए और नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण देकर बिदा किया और आप स्वयं बीर सामन्तो सहित सज कर आबू की ओर चला। इस समाचार के पाते ही भीम देव आग बबूला हो गया। उसने एक पत्र लिखकर पृथ्वीराज के पास भेजा कि सलष मेरा शत्रु है तुम्हे उचित है कि तुम कभी भी उसका पक्ष न करो, उसका पक्ष करके मुझ से बैर विसाह लेना भला नहीं है। उसने साथही सिंध, सोरठ, कच्छ इत्यादि अपने अधीन के राजाओं को बुला कर आबू पर चढ़ाई करने की तय्यारी की और अपने परम मित्र मंत्री अमर सिंह की मंत्रणानुसार उसने नियत समय पर ससैन्य आबू की तरफ़ प्रस्थान कर दिया और आबूगढ़ से कुछ दूरी पर पड़ाव डाल दिया। आधी रात के समय जब कि अमर सिंह सेवड़ा के मंत्र बल के कारण वह रात्रि पावस की रात्रि से भी अधिक अंधेरी और भयावनी बन रही थी भोला राय भीम देव ने दक्षिण की तरफ से आबू गढ़ पर आक्रमण किया। पँवार सलष जोकि इस आक्रमण की सम्भावना से प्रथम ही से सदैव सैनसहित सचेत रहा करता था भीमदेव का आक्रमण रोकने में तत्पर हुआ। बड़ी देर तक युद्ध हुआ। दोनों ओर के सहस्रों बीर काम आए। अन्त में खेमकरन खंगार, बीर सिंह, जरासिंह इत्यादि बीरों के सहित सलष पँवार मारा गया और आबू गढ़ पर भोला राय भीमदेव का अधिकार हो गया। आबू गढ़ के सब राज्य भर मे भीमदेव की दुहाई फिर गई। आबू के गढ़ पर भीमदेव का पताका फहराने लगा। इस प्रकार भीमदेव आबू में एक महीवे पांच दिन रह कर गुजरात को चला गया।

भीमदेव ने अपने राज्य पट्टनपुर में आकर शहाबुद्दीन महम्मद गोरी को एक पत्र लिखा कि आप अपने दल बल सहित दिल्ली नगर को घेरिए और मैं नागौर पर आक्रमण करूंगा। इस प्रकार आप और हम दोनो मिलकर के पृथ्वीराज पर जय प्राप्त करें। यह पत्र अपने एक चतुर विश्वास पात्र सभासद मकवान को देकर उसने समझाया कि हे वीरबर मै जो कुछ यह कार्य्य कर रहा हूं वह सब एकमात्र इच्छनी कुमारी के ही लिये है। मैं उस रमणी रत्न के लिये अपना सर्वस्व आहुति करने को प्रस्तुत हूं। उसी के लिये आबूगढ़ की लड़ाई में मेरे परिवार के अनन्त जन संहार हुए है। हे मित्र मेरे मन का तब ही दुःख दूर होगा जब शहाबुद्दीन मेरे इच्छानुसार मेरे मन्तव्य में सहमत हो जाय और मै पृथ्वीराज पर आक्रमण कर के दिल्ली का राज्य स्वयं नष्ट कर डालूं। इस प्रकार समझा कर और बहुत से घोड़े चमर, पश्मीना इत्यादि शहाबुद्दीन को अपनी ओर से भेट देने के लिये देकर उसने मकवान को गज़नी की ओर भेजा। मकवान ने गज़नी पहुँच कर शहाबुद्दीन से साक्षात् किया और भरे दरबार में भीमदेव का पत्र पेश किया और उसका मूल अभिप्राय भी कह सुनाया जिसे सुनते ही शहाबुद्दीन का मुख लाल हो गया, ओष्ठ फड़कने लगे। उसने फड़कती हुई भुजाओं से अपना तीर उठाकर कमान पर चढ़ाया और कहा कि मै स्वयं काफिरो का नाश करूंगा तभी खुरसान में रहूंगा। बादशाह का ऐसा

बचन सुन कर तातार खां, न्याजी खां, फिरोज खां, रुस्तम खां, उजबक खां, निसुरत्त खां इत्यादि सभासदों ने भी हां में हा मिला दी। बादशाह पुनः बोला कि दान खड्ग विद्या और संपति ये वस्तुएं सांझे में नहीं होतीं। रे मूढ़ दूत यह पृथ्वी वीरभोग्या है, तुच्छ भीमदेव मुझ से क्या शेखी मारता है। मैं उसे भी नष्ट भ्रष्ट करने में समर्थ हूं। यह सुनकर मकवाना बोला कि भीमदेव भी ऐसा दुर्बल नहीं है वह भी म्लेच्छों को नीचा दिखा सकता है। तब शहाबुद्दीन फिर बोला कि पहिले पृथ्वीराज को नष्ट कर के तब भोलाराय भीमदेव की भी खबर लूंगा। यह सुनकर मकवाना सगर्व बोला कि हे शाह! जिस समय भीमदेव का दल बल चलता है तब पृथ्वी डोलती है और काल भी भयभीत होता है। चालुक्य राय के सम्मुख जालंधर, वंग, तिलंग, कोंकन, कच्छ, पारेट, मरहट्ट इत्यादि कोई भी ठहर नहीं सकते, सब उसको नवते हैं। यह वही प्रतापी भीमदेव है जिसने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा, और यदुवों को हराया। उसे जीतना सहज नहीं है। ब्रह्मा ने उस अद्वितीय वीर को स्वयं अपने करकमलों से रचा है। मकवाना का यह गर्व शहाबुद्दीन सह न सका और वह उसे मारने पर उद्यत हुआ किन्तु वजीर ने समझाया कि दूत मारा नहीं जाता। ऐसा करने में बड़ा ही कलंक और अपयश होगा। इस पर शहाबुद्दीन तो निस्तब्ध हो रहा किन्तु एक सभासद बोल उठा कि यद्यपि दूत का मारना नीति विरुद्ध है किन्तु यह दूत भी कैसी असभ्य वाणी बोलता है। इस दृश्य को देखकर वीर मकवाना से न रहा गया और उसने उपरोक्त सभासद को एक ऐसा हाथ मारा कि उसका सिर धड़ से पृथक होकर लोटने लगा। अपने प्रिय सभासद को मरा देख कर शहाबुद्दीन से न रहा गया और उसने तुरंत ही मकवाना का हृदय बाण से बेध दिया। वीर मकवाना ने मरने से प्रथम ही हैजम और हुजाब नामक दो सरदारों को और मार डाला और तब वह आप मरा। जब यह समाचार भीमदेव को मिला तो उसके क्रोध और पश्चाताप का ठिकाना न रहा। एक तो आशा के विरुद्ध फल हुआ, दूसरे प्रिय सामन्त मकवाना भी मारा गया। इसलिये भीमदेव को पृथ्वीराज तो भूल गया। उसने गज़नी पर चढ़ाई करने का विचार किया किन्तु ज्योंही इसने राज महल से बाहर प्रस्थान किया कि आग लगने का बड़ा भारी अपशकुन हुआ। उधर से शहाबुद्दीन ने भी हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने को बड़ी भारी सेना एकट्ठी करके प्रस्थान किया, नागौर में पड़े हुए पृथ्वीराज को जब इन तैय्यारियों की सूचना मिली तो उसने भी सब सूर सामन्तों को जिरहबख्तर सम्हालने की आज्ञा दी। उस समय नागौर में उसके पास केवल ८ हजार सेना थी। इसलिये उसने दिल्ली से चार हजार सेना और मंगवाई और १२ हजार सेना को सन्नद्ध करके वह बैठ रहा। पृथ्वीराज की केवल १२ हजार सेना ही भीमदेव और शहाबुद्दीन को धूल चटाने को बहुत थी। जब शहाबुद्दीन का पड़ाव सारुंडा में आन पड़ा और भोलाराय की सेना सोझती में आन पहुँची तब कैमास ने पृथ्वीराज से कहा कि अब यह समय दोनों शत्रुओं को पराजित करने के लिये बहुत ही उपयोगी है। इस समय हम अपनी इतनी ही सेना से बहुत कुछ कर सकते हैं। कैमास का यह प्रस्ताव पृथ्वीराज ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और इसके निश्चय के लिये उसी रात को सब सामन्तों की सभा करके उक्त प्रस्ताव पर विचार किया गया। इसको सब वीर सामन्तों ने भी सादर स्वीकार किया और युद्ध आरम्भ के विषय में अपना अपना मत प्रगट किया। चामुंड राय, जैतराव, देव राव बग्गरी, बड़गुजर इत्यादि वीरों ने प्रतिज्ञाएँ की कि हम लोग दोनों दलों का क्षण मात्र में नाश करेंगे। हम वीर लोगों का जन्म ही स्वामिकार्य्य के लिये है और कैमास का मंत्र सर्वथा माननीय है। दूसरे दिन प्रातःकाल जब कि पृथ्वीराज नगर के बाहर सब सेना की देख भाल कर रहा था उस समय लोहाना आजानबाहु भी पाँच हजार सेना सहित नागौर में आ उपस्थित हुआ।

पृथ्वीराज ने अपनी सेना के दो बराबर भाग किए। एक भाग का सेनापति कैमास और उप-सेनापति चामुंड राय हुआ और दूसरी सेना का सेनापतित्व पृथ्वीराज ने स्वयं अपने ही हाथ में रक्खा। दोनों शत्रुओं की राह रोकने के लिये दोनों सेनाओं की तय्यारी एक ही साथ की गई। पृथ्वीराज ने कैमास को तो भोलाराय भीमदेव के मुकाबिले के लिये नागौर में छोड़ा और आप अपनी अनी लेकर शहाबुद्दीन के मुहासिरे पर सारुंडे की तरफ रवाना हुआ।

उधर भोलाराय भीमदेव एक तो इच्छनी के बिरह वियोग में प्रथमही से खान पान छोड़ बैठा था तिसपर भी शहाबुद्दीन से अपमानित होने पर तो उसके क्रोध और दुःख का ठिकाना न रहा, न तो इच्छनी कुमारी का चित्र उसकी आंखों के साम्हने से टलता था, न पृथ्वीराज और न शहाबुद्दीन का अटल वैर उसे पल भर कल लेने देता था। जब कैमास की चढ़ाई का सँदेसा भोलाराय भीमदेव के कानों तक पहुँचा तो उसने अपने राज्यमंत्री मुख्य मुख्य सभासद और सेनानायकों की एक सभा की जिसमें राम रन प्रमार, गुरगुंठीर झाला, वीरदेव बघेला, गंगडामी राजप्रोहित, धर्मधुर बघेला, अमरसिंह सेवरा, इत्यादि का यह मत हुआ कि दोनों शत्रुओं से युद्ध किया जाय, किन्तु सारंगदेव, पैरंभराय इत्यादि कई सरदारों का यह मत था कि चहुआन से विग्रह न करके संधि कर ली जाय और दोनों मिल कर विदेशी धर्मशत्रु शहाबुद्दीन से युद्ध करें। उन्होंने भीमदेव से कहा कि पृथ्वीराज का केवल इतना अपराध है कि उसने सलख को शरण रक्खा, परन्तु सलख ने यदि मंदोदरी का आपके साथ व्याह करके इच्छनी कुमारी को न ब्याहा तो कोई अपराध नहीं किया। झालाराव तथा कई अन्य अन्य क्षत्री सरदारों ने इसी मत का अनुमोदन किया और कहा कि गत वैर को भुला-कर पृथ्वीराज से संधि कर लेनी ही उत्तम है। ये बचन अमरसिंह सेवरा को बाण से लगे। उसने क्रोधित हो कर कहा कि तुम लोग यह क्या कह रहे हो मैं मंत्र बल से चहुआन के मंत्री कैमास को बश करूंगा और शस्त्रबल से शहाबुद्दीन को जीतूंगा। भैरव भट्ट चरन चन्द्र और पाटरिया रान इत्यादि जैन धर्म्मावलंबी वीरों ने अमरसिंह की बात का अनुमोदन किया। इच्छनी की विरहाग्नि में विह्वल हृदय भीमदेव को भी यही मत भा गया।

उधर नागौर में कैमास अपनी मोरचाबंदी कर रहा था, इधर अमर सिंह उसे मंत्र बल में बंदी करने के लिये नाना प्रकार के यांत्रिक, तांत्रिक प्रयोग में दत्त चित्त था। कैमास नागौर से बढ़ कर भोलाराय भीमदेव की फ़ौज पर छापा मारने के लिये तय्यार हो ही रहा था कि अमर सिंह सेवरा का भेजा हुआ भाट बड़े साज बाज से नागौर में आ पहुँचा। उसने कैमास से मेल कर अमरसिंह की दी हुई एक बहुमूल्य मोतियों की माला नजर की और संधि पत्र पेश किया। उस पत्र में प्रथम परस्पर के शिष्टाचार लिखे थे तिस पीछे बहुत कुछ अपनी बड़ाई लिख कर एक सुन्दरी स्त्री का चित्र लिखा हुआ था और लिखा था कि तुम इस स्त्री को लो और आनन्द करो, जिसके देखतेही कैमास की बुद्धि "किं करतव्य विमूढ़" हो गई। अमरसिंह के मत्र के वशीभूत होकर वह उस चित्र पर ऐसा मोहित हो गया कि उस समय से अमरसिह की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य्य करने की समर्थ्य न रख सका। अमरसिंह सेवरा के मंत्रबल से आकर्षित लाले नामक खत्री की परम स्वरूपवती कन्या के प्रेमपाश में कैमास ऐसा मुग्ध हो गया कि अपने स्वाभाविक स्वामिधर्म्म को बिलकुल ही भूल गया। पृथ्वीराज के नाम को भी भूल गया और भीमदेव की आज्ञा का निपट वशवर्ती बन गया और इसी से समस्त नागौर नगर में भीमदेव की दुहाई फिर गई।

दिल्ली में जब कविचंद को स्वप्न में इस बात का समाचार मिला कि नागौर पर भीमदेव का दखल हो गया है और कैमास अमर सिंह सेवरा के मंत्रबल में ऐसा वशीभूत हो गया है कि वह सब

कार्य्य चालुक्य के इच्छानुसार ही करता है, नागौर नगर में वेदधर्म्म का ह्रास और जैनधर्म्म का प्रकाश हो रहा है, इसी से वहाँ की प्रजा बड़ी ही दुखित है और पृथ्वीराज को इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है, तब तो कविचंद से न रहा गया वह सबेरा होते ही कुछ थोड़ी सी सेना लेकर नागौर की तरफ चल पड़ा। वहाँ पर पहुँच कर देखता क्या है कि जो कुछ स्वप्न में देववाणी द्वारा सुना था वह सब रत्ती रत्ती साचात् पाया। वह सीधा कैमास के पास गया और उसे उसने बहुत कुछ समझाया किन्तु वहाँ सुने कौन। वह तो बेचारा अपने को भी भूला हुआ था—इसलिये चन्द ने योगिनी की आराधना की और उन्हें मंत्र द्वारा प्रसन्न कर के प्रार्थना की कि वह अमर सिंह की इस मंत्रमाया को नष्ट भ्रष्ट कर देवे और मंत्री कैमास को अमर सिंह के मंत्रपाश से मुक्त करे। कविचंद की प्रार्थना स्वीकृत हुई और धीरे धीरे नागौर से मंत्रशक्ति द्वारा आच्छादित अंधकार घटने लगा। जब अमर सिंह को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वह स्वयं नागौर में दौड़ा आया और चंद के साथ तांत्रिक संग्राम करने में प्रवृत्त हुआ। दोनों ने अपने अपने इष्टदेवो की आराधना कर के एक दूसरे की शक्तियों का ह्रास और अपने अपने तेज के प्रकाश करने की चेष्टा आरम्भ की। अन्त में कविचंद की ही जै हुई और अमर सिंह पराजित हो कर अपने साथियों सहित नागौर से भाग निकला। इस प्रकार शत्रुओं को निकाल कर जब कविचंद कैमास के पास गया तो कैमास ने लज्जित हो कर सिर नीचा कर लिया। वह कविचंद के साम्हने भी न देख सका। तब कविचंद ने उसे आश्वासन दे कर कहा कि हे बुद्धिवर कैमास इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, यंत्र मंत्र से देवता भी वशीभूत हो जाते हैं तब मनुष्य की गणना ही क्या है। ऐसे समझा कर उसने कैमास को संतोष दिया और भोलाराय भीम देव पर चढ़ाई करने को उत्साहित किया। कविचंद ने कहा कि हे वीर कैमास अब तुम भीम देव को परास्त करके ही अपना मुख उज्ज्वल करो। उधर दिल्ली में जब कैमास के मंत्रवश होने का समाचार पहुंचा तो सब राज्य में खलबली पड़ गई। कन्ह, चामुंड राय, चंद पुंडीर आदि सब सामन्त पृथ्वीराज को अजमेर में छोड़ कर नागौर की तरफ चल दिए। इन सब के पहुंचने पर कैमास के उत्साह का ठिकाना न रहा। उसने तुरंत ही तय्यारी कर दी और इन वीर सामन्तों की सूक्ष्म परन्तु बलिष्ट सेना लेकर बड़ी सावधानी से भीमदेव के मुकाबिले पर वह जा डटा। भीमदेव तो इस होनहार से प्रथम ही से सचेत था। उसकी चतुरंगिनी सेना आठ प्रहर चौसठ घड़ी सन्नद्ध रहती थी। जब से कविचंद ने कैमास को मंत्र बल से मुक्त कर के अमर सिंह का मान धूलिधूसरित कर दिया था उस समय से भीमदेव का भी दिल दहल गया था और इसीलिये वह सदैव अपनी रक्षा के लिये निकट विश्वास पात्र वीरों की चौकस चौकी रखता था। जब कैमास की यह थोड़ी सी फौज मुठ भेड़ में जा पहुची और एक रात राह की थकावट मिटा कर दूसरे दिन युद्ध करने का विचार करके पड़ाव डाले पड़ी थी तो भीमदेव ने सप्तमी को सात घड़ी रात जाने पर कैमास पर सहसा आक्रमण कर दिया। यद्यपि कैमास की फौज थोड़ी थी भीमदेव के अनन्त दलबल में यह थोड़े से शूर सामन्त आटे में नौन के समान थे किन्तु इनमें खारापन नोन से भी कहीं अधिक था। भीमदेव का आक्रमण होते ही ये लोग भी सम्हल उठे। दोनो ओर से लोहा झरने लगा। तीर, तुबक, तलवार, कटार, बर्छी, बाँक, बिछुए इत्यादि की खचाखच मार होने लगी। दोनों तरफ के शूर वीर असार संसार को छोड़ कर स्वर्ग को जाने लगे, बड़े बड़े मतवाले हाथी सामन्तों की तेज़ तलवार से दो दो टूक हो हो कर नदी की कगारों से गिरते थे, इस युद्ध में वाजी खाँ जो कि भीमदेव का एक सरदार था पाँच हजार वीरों के सहित बड़ी ही वीरता के साथ काम आया।

अनन्द विक्रम सं० ११४४ अष्टमी को चंद्रोदय होने पर आधी रात के समय पुनः युद्ध प्रारंभ हुआ

इधर से कैमास का सैन समूह सज धज कर चला उधर से भीमदेव की प्रचण्ड सेना आई। इस युद्ध में कैमास की सेना का सेनापति चामुण्डराय था जिसने अपने बाहुबल का अद्वितीय पराक्रम प्रगट किया। इकतीस हज़ार भीमदेव की सेना और बीस हज़ार कैमास की सेना इस वीर का अद्वितीय पराक्रम देख कर चकित थी। बड़े बड़े शूरवीर इसकी वीरता की सराहना करते थे, मोहनसिंह परिहार, नाहर राय, निड्डुरराय, पज्जूनराय इत्यादि सामन्त भी शत्रु की सेना को कृषी की भांति काट रहे थे, पृथ्वीराज की तरफ़ से चामुण्डराय जैतसी, बड़ गुज्जर, रामराय, कन्ह चौहान, पज्जूनराय, प्रसंग राय पीची, चंदपुंडीर, महमसीग मारू, देवराज बग्गरी, सलख देवराज का भाई और पुत्र, निड्डर वीरसिंह आदि वीर अपनी अपनी सेना सहित कैमास के साथ में थे। भीमदेव की तरफ के सारंगदेव, नरसिंह, बरसिंह आदि सरदार भीमदेव की तरफ से भी ससैन्य प्रस्तुत थे। उस धूँधली रात में उक्त वीरों की तेज तलवारों की चमक बड़ी ही भली मालूम देती थी। जिस सवार पर उन का हाथ पड़ता था वह घोड़े सहित दो टूक हो जाता था। मतवाले हाथियों के कुंभ को सहज विदीर्ण करने वाली असिधारा से वह वीर अपने अपने शत्रुओं के दलसमूह को काई सा फाड़ रहे थे। दो शत्रुओं से दबाया हुआ भीमदेव यद्यपि बड़े ही सोच बिचार में व्यस्त था पर तौभी अपनी सेना के उत्साह के लिये मतवाले हाथी पर सवार क्रोध से आखें लाल लाल किए हुए युद्ध में प्रस्तुत था। राम राय बड़ गुज्जर की आँख उस पर पड़ गई। वह चालुक्य सेना को काटता हुआ वहां आ पहुँचा और भीमदेव के हाथी को उसने एक ऐसा हाथ मारा कि वह ढोल सा ढलक गया और भीमदेव भी पृथ्वी पर गिर कर लोटपोट होगया जिससे उसकी क्रोधाग्नि बड़े वेग से प्रज्वलित हो उठी और वह तुरंत दूसरे हाथी पर सवार हो कर जीवन की आशा छोड़ कर कैमास का प्राण लेना ठान कर उस पर झपटा। जहां राजा वहां फौज। भीमदेव की फौज भी राजा को कैमास की तरफ बढ़ता देख कर उसी ओर झुक पड़ी। चामुंड राय ने जब कैमास के सिर पर यह आपत्ति देखी तो वह भी अपना मोरचा छोड़ कर कैमास की सहायता के लिये आ पहुँचा। कैमास की मोड़ पर और सब सेना भी मुड़ पड़ी। उधर भीमदेव इधर चामुंड राय और कैमास दोनों अपने अपने स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को तुच्छ जान कर हथियार चलाने लगे। क्षण मात्र में वह वीर रस करुणा रस मिश्रित देख पड़ने लगा। पाँच घड़ी पर्य्यन्त बड़ा ही घोर युद्ध होता रहा। अन्त में भीमदेव की सेना भाग गई। पृथ्वीराज की जै हुई। दोनों तरफ की ११००० फौज मारी गई, तेरह हजार भीमदेव की तरफ़ की, और तीन हजार कैमास की। पृथ्वीराज के तरफ़ के पंथमा राव परिहार मोहल मल्हीन महीराव सहदेव इत्यादि सर्दार काम आए। आबू पर पृथ्वीराज का राज्य स्थापित हुआ और जैतसी प्रमार वहां का सूबेदार नियत किया गया।

सलष युद्ध समय।

(तेरहवां समय)

उधर जब भीमदेव से कैमास का युद्ध आरंभ हो गया तब इधर पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन का भेद लेने के लिये दूत भेजा। वह चतुर दूत शीश पर जटा बनाए शरीर में विभूति रमा कर दंभ, कपट, पाखण्ड, और आडंबर से भरी हुई ज्ञान चरचाओं का उच्चार करता हुआ शहाबुद्दीन के लश्कर में गया और वहां का राई रत्ती सब भेद लेकर पुनः पृथ्वीराज के पास उसी भेष में आया। पृथ्वीराज के सम्मुख आ कर उसने आशीर्वाद और अपना परिचय दिया। तब पृथ्वीराज के पूछने पर उसने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि हे राजन् शहाबुद्दीन के साथ तीन लाख सेना है। जब उस ने सारुंडपुर के बाहर पड़ाव डाला तब मैं इधर को आया हूं। उसकी सेना का विवरण इस प्रकार है कि दस हजार विशालकाय गष्पर, बत्तीस हजार काबुली, सत्तर हजार काश्मीरी, तिरपन हजार हबशी जोकि तलवार के युद्ध में बड़े निपुण हैं, पैंतीस हजार रूमी, तेंतीस हजार फिरंगी अर्थात् गौरांग विलायती, सत्रह हजार पठान, दस हजार पंजाबी जाट, पन्द्रह हजार उसके पासबान के आदमी और पच्चीस हजार सब सागिर्द पेशा परिकर के आदमी हैं। इस प्रकार वर्णन की हुई सेना के तीन लाष मनुष्य सब ही बड़े पराक्रमशाली और बलवान हैं। उनकी विकट विकट मूँछ और भयावनी मुखाकृति देख कर सहज ही भय उत्पन्न होता है। इस प्रकार दूत के वचन सुन कर पृथ्वीराज क्रोध से इस प्रकार फड़क उठा जैसे पूँछ दबाया हुआ काला साँप फुँफकारने लग जाता है। पृथ्वीराज का रुख देख कर लोहाना आजानबाहु बोला कि यदि यह निर्लज्ज यवन अपने हठ से नहीं चूकता, बार बार व्यर्थ सिंह की पूँछ पकड़ने का साहस करता है तो अब की गजनी समेत इसे न लौट दूँ तो मेरा नाम लोहाना आजानबाहु नहीं।

पृथ्वीराज की युद्ध के लिये तैय्यारी जान कर आबूराज सलष पँवार का पुत्र जैतसी भी सेना सहित पृथ्वीराज के दल बल में आ मिला। सेना तय्यार हो कर खड़ी हुई और जब राजा घोड़े पर सवार होने लगा तो गुरुराम प्रोहित ने राजा को तिलक किया और आशीर्वाद दिया कि शीघ्र जाइए और शत्रु अपने राज्य की सीमा न दबाने पावे वहीं परास्त किया जाय। इस प्रकार पृथ्वीराज केवल पन्द्रह हजार सिपाहियों की चुनी हुई सेना लेकर शहाबुद्दीन के तीन लाख दल बल का साम्हना करने के लिये सारुंडपुर की तरफ बढ़ा। पाँच सौ सिपाहियों सहित लोहाना सेना के आगे रहता और पाँच हजार सेना सहित पृथ्वीराज सेना के मध्य में रहता। इस प्रकार से कूच करके वे दिल्ली से तीन दिन में सारुंड पुर के पास जा पहुंचे। यह खबर जब शहाबुद्दीन को लगी तो उसने भी खुरासान खां रुस्तम खां फीरोज खां इत्यादि अपने मुख्य मुख्य सेनापतियों को बुला कर युद्ध के लिये तय्यारी करने की आज्ञा दी और युद्ध के लिये प्रस्तुत फौज के बीच में खड़े हो कर उसने कहना आरम्भ किया कि हे भाइयो बार बार की हार की अबकी बार कसर निकाल लेनी चाहिए। अब की बार तुम्हारी बीरता यही है कि बाजी जाने न पावे। उधर रात व्यतीत होतेही चहुआन भी बढ़ आए। पूरब से चहुआन और पश्चिम से शहाबुद्दीन की सेना की मुठभेड़ हुई। शहाबुद्दीन की तरफ से खुरासानी सेना हरावल में थी। वे लोग पृथ्वीराज की थोड़ी सी सेना देख कर बड़े वेग से झपटे परन्तु लोहाना ने उन्हें सहज ही मार भगाया। सलष पँवार का पुत्र जैतसी चौहान के फौजी निशान की रक्षा पर दृढ़ था। रामराय बड़गुज्जर ततार खां के मुकाबिले पर था। बीर पृथ्वीराज की थोड़ी सी सेना असंख्य यवन दल में धसकर उसी में खिल्लत मिल्लत हो गई और उसने ऐसे विकट पराक्रम से युद्ध किया कि अखंड धूल आच्छादित हो जाने के कारण आकाश नहीं सूझ पड़ता था। जब इस प्रकार बिकट मार हो रही थी तो बीर कन्ह

चौहान भी कैमास का साथ छोड़ कर ससैन्य सारुंड-पुर में आ पहुँचा और उसने युद्ध होता देखकर चढ़ी सवारी धावा कर दिया। अद्वितीय वीर कन्ह चौहान उस अगम्य यवन सेना में इस प्रकार धस पड़ा जैसे सुंदर सुंदर पुरैन से आच्छादित स्वच्छ जलवाले गहरे सरोवर में मतवाला हाथी पैठ पड़े। वह यवन सेना के बड़े बड़े मुख्य सरदार और सूरबीरों को कमल नाल की नाईं तोड़ तोड़ कर डालने लगा। दोनों ओर के सेनापति सरदार स्वामिधर्म्म धारण किए हुए बड़ी वीरता से युद्ध कर रहे थे। आकाश में देवांगनाएँ उन बीरों का पराक्रम देखती थीं। इसी समय पृथ्वीराज के प्रोहित गुरुराम ने यवन सेना पर एक पत्र लिखकर बाण द्वारा चलाया जिसके बल से समस्त यवन सेना मोहित सी होकर युद्ध करने में शिथिलता करने लगी। यह देख कर इधर से मीर हाजी खां काज़ी ने भी अपना मंत्र चलाया जिससे यवन सेना की मोहनिद्रा भंग हो गई और दोनों दल पुनः प्रचार प्रचार कर लड़ने लगे। पृथ्वीराज की सेना बराबर यवन दल को छिन्न भिन्न करती हुई शहाबुद्दीन के संनिकट पहुँचने लगी। यह देख कर शहाबुद्दीन ने घोड़े को छोड़ कर हाथी की सवारी की। तब शहाबुद्दीन का एक पासवान मुसाहिब मारुफ़ खां बोला कि अब क्या किया जाय। जिस पर सेनापति खुरासान खां का सब दारमदार था उस काजी ने भी पराक्रमहीन हो कर तसबी हाथ से छोड़ दी है। यह सुन कर खुरासान खां अन्यान्य सरदारों सहित बादशाह के निकट आगया और चारो ओर से घेर कर उस की रक्षा करने लगा। भगवान चन्द्र देव के समान वीर पृथ्वीराज सेना के मध्य में स्थित नक्षत्रों के समान तेजोमय अपनी वीर सेना सहित बराबर आगे बढ़ता ही जाता था। इस समय पँवार राज सलष का पुत्र जैतसी हरावल में था। पन्द्रह बीस हजार सेना का तीन लाख सेना से मुकाबला करना भी तो सहज नहीं है। इसी से जैतराव के ऊपर बड़ी मार पड़ रही थी परन्तु वीर जैतराव इसकी तनिक भी परवाह न करके अपने धर्मकार्य में तन मन से प्रवृत्त था। जब जैतराव एक बड़े टेढ़े मौके पर फँस गया तब पृथ्वीराज ने स्वयं उस की सहायता की जिस के लिये जैतसिंह बहुत कृतज्ञ हुआ और इस से उस का साहस ऐसा बढ़ा कि उसने अपने अद्वितीय पराक्रम से यवन सेना का मुँह मोड़ दिया। घड़ी भर में बड़े बड़े मीरजादे पीरजादे प्राणों के भय से भाग निकले। शहाबुद्दीन ने हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार हो कर प्राण झोकते हुए अपनी सेना को धैर्य्य दिलाना चाहा किन्तु यह सब चेष्टा निष्फल हुई। समस्त यवन सेना भाग निकली। पृथ्वीराज ने लूट करते हुए उसका पीछा किया और सलष पुत्र जैतराव ने बादशाह को बंदी कर लिया। इस युद्ध में शहाबुद्दीन के एक लाख सैनिक और तेरह नामी नामी सरदार खेत रहे। अंत में संवत ११३६ माघ सुदि ६ को शहाबुद्दीन पकड़ कर बंदी बनाया गया। सारुंडपुर में पृथ्वीराज का दखल हुआ।

शिशिर ऋतु के अन्त में संवत ११३६ अनन्द चैत्र सुदि ६ को इच्छनी कुमारी से पृथ्वीराज ने ब्याह किया और शहाबुद्दीन से दंड लेकर तब उसे पुनः मुक्त कर दिया। इस प्रकार कविचंद ने सारुंडपुर के युद्ध की कथा अपनी स्त्री से वर्णन की॥

इच्छनी व्याह कथा।

(चौदहवाँ समय)

कविचंद की स्त्री ने कहा कि हे पति यह रमणीक कथा सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। रात दिन मुझे वही ध्यान रहता है। अच्छा अब जो मैं पूछती हूं वह बतलाइए। यह सुन कर कविचंद ने अपनी प्रिया का सिर अपनी गोद में रख कर कहा कि अच्छा पूछो मैं कहताहूं। तब शुकी बोली कि हे प्यारे आपने चालुक्य भीमदेव के परास्त होने और शहाबुद्दीन के बंदी किए जाने की कथा तो कही अब इच्छनी व्याह की कथा वर्णन करके मुझे कृतार्थ कीजिए।

यह बात सुन कर कविचंद बोला कि जब उचित दराड देने पर शहाबुद्दीन छोड़ दिया गया तो उस दराड में प्राप्त सब मणिमुद्रा सलष को दिया गया और आबू का राज्य भी सलष को दिया गया और बहुत कुछ भूमि और भी दी गई। तब ग्रीष्म ऋतु के अन्त में, आबूराज सलष ने अपने भानु नामक प्रोहित के हाथ जड़ाऊ नारियल अक्षतादि सहित इच्छनी कुमारी की लग्नपत्रिका पृथ्वीराज के यहां भेजी। जिस दिन श्रीलक्ष्मीजी कुबेर के स्थान गई उसी दिन लग्न हाथ पर रक्खा गया। लग्न का उत्सव हो जाने पर पृथ्वीराज ने आबू से आए हुए मनुष्यों से पूछा कि इच्छनी की अवस्था क्या है, उसके सब रूप गुणों का वर्णन करो। यह सुन कर वे लोग बोले कि हे राजन् इच्छनी कुमारी इस समय बालकपन को त्याग करती और यौवन को प्राप्त होती हुई वयःसंधि नायिका है। उसकी सुकुमार अवस्था इस समय मकर की संक्रान्ति से उपमा देने योग्य है। उसकी बालपन रूपी निशा का दिन प्रति ह्रास होता जाता है और दिवस रूपी यौवन चढ़ता हुआ उसके लावण्य में विलक्षण योग दे रहा है। हे राजन्! उसके अनंग स्थलों पर श्यामता चढ़ रही है, किशोरता के साथ साथ कटि क्षीण होती हुई एक अद्वितीय शोभा का भण्डार होरही है। हे राजन्! हम लोग क्या कहें उसकी उपमा न तो हम विवाहिता दमयन्ती से दे सकते हैं, न हम उसकी उपमा शची से दे सकते है जिसका पति देवपति इन्द्र है, न हम उसे लक्ष्मी कह सकते हैं क्योंकि विष्णु शेष नाग पर विराज मान है, न हम उसको रति कहने में समर्थ हैं जो कि सदैव अपने पति के अतनु होने के दुःख से दुखित होने के कारण क्षण भर कल नहीं पाती, न हम दुष्ट रावण की स्त्री मंदोदरी से ही उसकी उपमा दे सकते हैं। हे पृथ्वीराज! इच्छनी कुमारी की इस समय वह अवस्था है जिस की चाह में सुघर कवि हमेशा रहते हैं और उन्हें वह समय बड़ी कठिनता से प्राप्त हो सकता है।

पृथ्वीराज ने लग्न लेकर आए हुए मनुष्यों को विदा करके बारात की तैयारी की। कुछ थोड़ी सी सेना और कन्ह निद्दुदुर, बली गहलौत, भौहा चंदेल, वीरसिंह परिहार, दाहिम कैमास, चामुंडराय, आजानबाहु लोहामा और गुरू रामप्रोहित को साथ लेकर अषाढ़ वदि ३ को बारात चली। प्रकृति के प्रभाव से बादलों ने उमड़ कर सूर्य्य को आच्छादित कर लिया और मंद मंद सुगंधित वायु बहने लगी जिससे बारात कुशलतापूर्व्वक आनन्दध्वनि करती हुई प्रसन्नतापूर्व्वक आबू के निकट जा पहुंची। बारात के आगमन की खबर जब जैतराव को लगी तो वह भी अपनी चतुरंगिनी सेना सज कर उचित आडंबर के साथ अगवानी करने के लिये आगे बढ़ा और नगर के बाहरही बरात से जा मिला। दोनों सेनाओं का परस्पर मिलाप होते हुए ऐसा ज्ञात होता था मानों श्रावण भादों के गरजते हुए गभीर बादल समुद्र से मिल रहे हों। इस प्रकार मिलाप होकर वह आनन्द उनमत्त दोनों दल आबू नगर में पैठा जहां द्वार द्वार पर बंदनवार, तोरण, कलश, पताकों की छबि अद्वितीय छटा दिखा रही थी। आबू नगर के समस्त हाट बाट चौहटों पर साफ सुथरे सुगंधित जल का छिड़काव था। ऊपर अट्टालिकाओं पर सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित मंगलामुखी महिलाएँ मधुर मधुर गीत गान करती हुई पृथ्वीराज

की छबि देख रही हो थीं और इधर पृथ्वीराज के वीर सामन्त उनके गान की तान में मस्त होकर अपने लालची लोचनों को छबिसुधारस पान कराते चले जाते थे। इस प्रकार मत्त मतंग की मंद मंद चाल से जब बारात राजद्वार पर पहुंची तो वहां के तोरण बंदनवार पताकाओं तथा अन्य मांगलीक वस्तुओं का विस्तार कहना तो व्यर्थही है। द्वार पर सहस्त्रों सुहागिन स्त्रियाँ स्वर्णकलश लिये खड़ी मंगलगान कर रही थीं। दुखहा के द्वार पर पहुंचते ही सबने मोतियो के प्रेमाच्छत छोड़ना आरंभ किया। ब्राह्मणों ने वेदध्वनि आरंभ की, और गान वाद्य होते हुए पृथ्वीराज का टीका होने लगा। पृथ्वीराज की छबि देख कर इच्छनी कुमारी की माता के आनन्द का तो पार ही न था। टीका होजाने पर बारात सादर जनवासे मे पहुंचाई गई।

उस दिन रात भर विश्राम करने पश्चात् दूसरे दिवस प्रातःकाल जैतराव स्वयं जनवासे को गया और विनयपूर्व्वक पृथ्वीराज सहित सब बारात को भोजन के लिये लिवा लाया। सुखपूर्व्वक भोजन हो जाने पश्चात् इधर तो सखियाँ उबटन स्नान करवा कर नाना प्रकार के वस्त्र आभूषणों से इच्छनी कुमारी का शृङ्गार करने लगीं, उधर दूलह का शृङ्गार होने लगा। लग्न आजाने पर दूलह ने मंडप में प्रवेश किया और स्त्रियों ने मंगलगान आरम्भ किया। विवाह की समस्त सामग्री तो पहिले ही से प्रस्तुत करके चौक पूर वेदिकादि रची हुई थी। लग्न का वेध होतेही पंडितो ने दूलह दुलहिन की गांठ जोड़ कर उन्हें पेट पर बैठाकर गणेशपूजन किया। इसके अनन्तर नवग्रह कुलदेवता अग्नि ब्राह्मण आदि का पूजन कर शाखोच्चार किया गया। उस उपस्थित ब्राह्मण मंडली ने वेदमंत्र उच्चारण करते हुए दूलह दुलहिन को आशीर्वाद दिया। अन्त में सलष राज निज रानी सहित गाँठ जोड़े हुए मंडप में आए और वेद विधान युत इच्छनी का कन्यादान करके पृथ्वीराज से बिनीत भाव से बोले कि हे भद्र सोमेससुत! मैं यह कन्या आपकी सेवा में समर्पण करता हूं सो इसे अपनाइए। यह सुन कर कन्ह चौहान आनन्द से बोल उठे कि हे सलषराज यह आनन्दमय दंपति सदैव दिल्ली गढ़ में इस प्रकार शोभित रहेंगे जैसे शिव पार्वती सहित कैलाश की शोभा बढ़ाते हैं।

इस प्रकार लग्न साध कर पृथ्वीराज जनवासे में आए। पीछे से ज्यौनार का बुलावा आया। जिस के साथही सब बारात ज्यौनार को गई। नाना प्रकार के खट्टे, मीठे, मधुर, तीखे, सलोने इत्यादि षट रस व्यंजन परोसे गए। सबमे आनन्दपूर्व्वक भोजन करना आरम्भ किया। उधर स्त्रियो ने गाली गाना आरम्भ किया जिसे सुन कर वीर बारातियों का चित्त द्विगुणित प्रसन्न हो रहा था। इस प्रकार ज्यौनार हो जाने पर दूसरे दिवस पलकाचार हो जाने पर कुमारकलेऊ होकर पृथ्वीराज दुलहिन सहित जनवासे में आए और अगनित द्रव्य कवि, चारण, ब्राह्मण और भिक्षुकों को लुटाया गया। उधर से सलष राज का भेजा हुआ दहेज भी आया जिसमें एक हजार रथ जिसमें मोतियों की झालरें लग रही थीं उनपर एक एक नायिका अपनी दो दो दासियों सहित सवार थी। साथ मे सौ हाथी थे जोकि लक्षों का आभूषण पहने थे। घोड़े ऊँट आभूषण इत्यादि का वर्णन ही क्या करना है। इस प्रकार दहेज देकर भी सलष राज ने संतुष्ट न होकर लज्जा प्रगट की। बारात के चले जाने पर बचा हुआ अन्न पांच दिन पर्य्यन्त आबू की समस्त प्रजा में बाँटा गया।

जिस समय बारात बिदा होने लगी उस समय सलषराज ने एक हाथी सौ घोड़े ऊनी सूती, पश्मी, रेशमी, और जरकसी पांच सिरोपाव दूलह की भेंट किए। साथही इसके इच्छनी कुमारी के जमदार में अकूत बहुमूल्य वस्त्र भर कर दिए गए, गंगाजमनी दस कलश, एक गंगाम, दस सोने के थाल, बीस रत्न जड़ित लोटे और बटलोही इत्यादि दिए गए, एक बीस मन का बड़ा कोपर और १०० मन का हंडा, रेशम की डोरियों से बिने हुए अगनित पलंग पीनसें भी दी गईं, दास, दासी इत्यादि कुमारी की पीनस के इर्दगिर्द चलते थे। इन सब डोलियों के आगे सलष राज के भेजे हुए

अन्यान्य परिकर के लोग चलते थे। पृथ्वीराज के वीर सामंतों को भी सलष राज ने सादर सिरोपाव पहनाए, तथा एक एक अंगूठी और एक एक घोड़ा भेंट दिया। इसके सिवाय बारात के अन्यान्य राज्यकर्म्मचारियों और महाजनों और परिकर के लोगों को यथायोग्य भेंट देकर सानन्द सलषराज ने बिदा किया और आप स्वयं बारात को पांच कोस तक पहुँचाने आए। लौटते समय सलषराज ने पृथ्वीराज से विनीतभाव से निवेदन किया कि हे वीरपति चौहान मुझ से जो अपराध हुआ हो क्षमा करना, मेरे पास आपको देने योग्य कुछ भी नहीं है इससे मैं आप की सेवा में आजन्म के लिये अपना सिर सर्मपण करता हूं। इस प्रकार निर्विघ्नता से इच्छनी कुमारी को व्याह कर सानन्द सकल बारात अजमेर जा पहुंची। बारात के दूलह दुलाहिन सहित सकुशल अजमेर आजाने पर समस्त नगर निवासी आनन्द से उमड़े न समाते थे। बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सब ही आनन्द में मग्न थे।

इस प्रकार कथा सुन कर कविचंद की स्त्री बोली कि हे पति अब कुछ इच्छनी कुमारी के सौन्दर्य्य का वर्णन कीजिए। यह सुन कर कविचंद बोला कि हे प्रिया उस अद्वितीय सुन्दरी इच्छनी कुमारी के सौन्दर्य्य को मैं वर्णन करूं ऐसी सामर्थ्य मेरी जिह्वा में नहीं है, किन्तु सुन प्रिये तेरे चित्तविनोदार्थ कुछ कहता हूं। इस प्रकार प्रेम भरे बचन कह कर कविचंद ने इच्छनी कुमारी का नष सिष, मनोहर शब्दों में वर्णन करना आरम्भ किया और कविचंद की स्त्री को सुनते सुनते प्रातःकाल हो गया।

मुग़ल युद्ध कथा।

[पन्द्रहवां समय।]

वीर पृथ्वीराज चहुआन ने धूमधाम से इच्छनी कुमारी को ब्याह कर जब आबूगढ़ से अजमेर की ओर कूंच किया तो यह समाचार पाकर मेवात के मुगल सरदार को चौहान वंश से निज वंश का पूर्व्व वैर स्मरण हुआ और अपने पूर्वजों का बदला लेने का यही एक अच्छा अवसर जान कर छिपके उसने पृथ्वीराज को मार कर सब साज सामान लूटना चाहा इसलिये मुद्दलराय ससैन्य सन्नद्ध होकर जमुना के किनारे किसी औघट घाट पर पृथ्वीराज की बाट रोक कर डट रहा।

पृथ्वीराज की बरात का पड़ाव जमुना के किनारे बनप्रान्त में पड़ा हुआ था और आधी रात के समय सब लोग पंथ की थकावट से थकित हो कर निद्रा में निमग्न हो रहे थे, केवल कैमास जागते थे। पासही एक वृक्ष पर घुग्घू की बोली सुन कर वे विचारमुग्ध होकर चारो ओर देखने लगे। तो पाते क्या हैं कि निड्डुरादि सब सामन्त पड़े सो रहे हैं, उस बड़े दल बल मे कोई भी सचेत नहीं है, और बाईं ओर साक्षात् भगवती की मूर्ति कुछ कह रही है जिसको कि वे समझ न सके इसलिये उन्होंने प्रोहित गुरूराम को सचेत करके उक्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया और पूछा कि इसका तात्पर्य्य अब आप बतलाइए। तब गुरूराम ने उत्तर दिया कि इस विषय में कविचंद से पूछिए वे इस का यथार्थ उत्तर देंगे। तब कैमास ने कविचंद को सब हाल कह सुनाया जिसे सुन कर कविचंद ने इस प्रकार कहना आरंभ किया कि राजा पृथ्वीराज के पूर्वजों में आना नाम से एक राजा हो गया है जिस के दस पुत्र थे और परस्पर सदैव विरोधी रहते थे। इससे वे इकट्ठे न रह सके और सब तीन तेरह हो गए, केवल बीसल देव जी के पिता यहां अजमेर की गद्दी पर रहे और वे लोग आपस में मिलकर इस राज्य के शत्रु हो गए। जिस समय अजमेर में बीसलेदव जी राज्य करते थे उस समय उस विरुद्ध दल का स्वामी जैसिंह नाम से एक क्षत्री था। इस ने जब बीसलदेवजी के राज्य में उत्पात मचाया तो उन्हों ने इसे मार कर भगा दिया और वह जाकर पर्व्वत में रहने लगा। निदान तब से सोमेश्वरजी के समय तक वे खटपट करते ही रहे। अन्त में सोमेश्वर जी ने उन्हे हार पर हार देकर ऐसा खदेड़ा कि वे जाकर रोमियों की शरण में रहने लगे और वह भूमि आबू के प्रमार राजाओं के हाथ लगी जिस वंश मे कि अब तक आबू का राज्य स्थित है। अब जब सोमेश्वरजी के पुत्र चहुआन-कुल-कमल राजा पृथ्वीराज राजसिंहासन पर विराजमान हुए तब उन दुष्ट मुगलों की होनहार ने उन्हें फिर से उत्तेजित किया है किन्तु यह अवश्य है कि उनका तारागण के समान तेज पृथ्वीराज के प्रताप के सम्मुख मलीन होगा। यह कथा सुन कर प्रसन्न हो सब लोग जहां के तहां निद्रानिमग्न हुए।

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज ने नींद से उठ कर नित्यक्रिया संध्यावंदनादि से निश्चित होकर वस्त्र पहिन शस्त्र लगा घोड़े पर सवार हो कर शिकार खेलने की तय्यारी की। साथ में सात पांच सैनिक और सामंत भी हो लिए। जिस समय पृथ्वीराज निर्जन बन प्रान्त में पहुँचे तो मुगलराज ने रास्ता रोक रक्खा, यह देख कर वीर पृथ्वीराज लवलेश मात्र भी भय न करके शत्रुओं के बीच में धस पड़े और बनैले हिंसक पशुओं का शिकार करने के स्थान में उन पुरातन धर्म्मशत्रु नरपशुओं का शिकार करने में प्रवृत्त हुए। पृथ्वीराज के सामंत सिपाही भी जहां तहां लोहा झाड़ने लगे। इस प्रकार मार होते होते क्षणमात्र में ही पृथ्वीराज रूपी बड़वानल ने उस यवन दल समुद्र को नाश कर दिया। वीर राजपूतों की मार को मुगल के साथी सह न सके। इसलिये जिसे जहां राह मिली सब तीन तेरह होकर भाग निकले।

चहुआन के सामंतों ने मुगलराज को बंदी कर लिया। इस प्रकार मुगलराज को बंदी कर नवल नव बधूटी इच्छनी कुमारी सहित पृथ्वीराज आनन्द से अजमेर में आ पहुंचे।



पुंडीरदाहिमी विवाह कथा।

[सोलहवां समय।]

इच्छनी कुमारी का विवाह हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया पृथ्वीराज का वह वर्ष नवीन मुग्धा नायिका इच्छनी कुमारी के साथ बड़े ही आनन्द प्रमोद में व्यतीत हुआ, किन्तु राजाओं का चित्त स्थिर नहीं रहता। पृथ्वीराज अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित कर ज्यों ज्यों नित प्रति नव कीर्ति प्राप्त करता जाता था त्यों त्यों उसे नित नवयोवनाओं के संग कामक्रीड़ा की इच्छा होती थी। निदान जब पृथ्वीराज ने चन्दपुंडीर की कन्या के रूप गुण और यौवन की प्रशंसा सुनी तो उसका लालची चित्त उस कमलकली का मकरन्द रूप पान करने की लालसा में उनमत्त सा हो उठा और उसने अपनी यह इच्छा चंदपुंडीर पर प्रगट की जिसे सुन कर चंदपुंडीर ने भी प्रसन्नतापूर्वक अपनी सुकुमार कुमारी को पृथ्वीराज के साथ ब्याह देना स्वीकार कर लिया और यथासंभव शीघ्र ही उत्तम लग्न ठहरा कर पृथ्वीराज को लग्न चढ़ा सुख सारे से अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया।

विषयासक्त पुरुष की जितनी इच्छा पूर्ण होती जाती है उतनी ही उसकी विषयवासना और बढ़ती है। नवीन फल, फूल तथा स्त्री को देख कर चित्त में क्षोभ उतपन्न होना तो स्वाभाविक ही है। इधर तो पृथ्वीराज चंदपुंडीर की नवयोवना कन्या के साथ केलक्रीड़ा कर ही रहा था उधर दाहिमी कैमास की बहिन के रूप यौवन की प्रशंसा सुन कर उस से भी ब्याह करने की उसने इच्छा प्रगट की। कैमास के पिता ने भी यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और प्रसन्नतापूर्व्वक अपनी दोनों कन्याएं पृथ्वीराज को ब्याह दी और बरात बिदा होने के समय आठ सखी तिरसठ दासी और बहुत से हाथी घोड़े वस्त्र आभूषणादि दहेज में दिए। पृथ्वीराज इस प्रकार चंदपुंडीर की पुत्री पुंडीरदाहिमी के साथ विवाह कर के इस केलकीड़ा में उनमत्त मतंग की भांति प्रवृत्त हुआ॥



भूमिस्वप्न प्रस्ताव।

(सत्रहवां समय।)

कुँअरपन में पृथ्वीराज को आखेट से बड़ी प्रीति थी। एक समय पृथ्वीराज अजमेर के पश्चिम प्रान्त के रमने में शिकार खेलने गए। इनके साथ में लोहाना, लंगरीराय इत्यादि सब सामन्त और अनगिनत हाथी घोड़े और पदाति सैनकों की भीड़ थी। इस दल बल के विषम कोलाहल से सारा बन गूंज उठा। मेघस्पर्शी पहाडों और उनकी कंदराओं में उस कोलाहल की ध्वनि प्रतिध्वनित हो कर भयानक रूप से गूंज उठी, जिसे सुन कर तद्वनवासी जीव भयभीत हो कर आतुरता और भय से भौचक से भटकने लगे। एक गिरिगुहा में सोता हुआ सिंह उक्त कोलाहल से उकता कर उठ बैठा और अत्यन्त क्रोद्धित हो कर पृथ्वीराज के इस सेनसमूह की ओर बढ़ा। सिंह की विकराल आकृति को देख कर घोड़े आदि पशु झझक उठे और बनरखों ने यह खबर पृथ्वीराज को दी जिसके सुनते ही वीर पृथ्वीराज धनुष पर बाण संधान कर आगे बढ़ा और सिंह सिंहनी दोनों में से सिंह को ही लक्ष कर के उसने बाण छोड़ा किन्तु निशाना खाली गया। तब पृथ्वीराज तलवार लेकर झपटा और उधर से अत्यन्त कुपित होकर साक्षात् कराल काल स्वरूप सा वह सिंह भी पृथ्वीराज पर झपटा किन्तु पृथ्वीराज ने एक ही हाथ में उसे मार गिराया जिसे देखते ही सब सेना में आनन्दध्वनि हो उठी।

सब सेना में जहां तहां पृथ्वीराज की बीरता का बखान होने लगा और पृथ्वीराज अपने सब सामंतों सहित एक वृक्ष की छाया में बैठ कर श्रम दूर करने लगा। शिकार में मारे हुए जानवरों का ढेर भी एक तरफ लगा दिया गया। तब संजमराय का पुत्र पृथ्वीराज को अपने बलवीर्य्य की परीक्षा देने की इच्छा से उठा और एक एक हाथ में भारी भारी गज कुंभ को फाड़ने लगा और एक बाण संधान करके जो उस हन्त पशुओं के ढेर में उसने मारा तो वह बांण बड़े बड़े बराह चीते साबर हिरण हाथी आदि के शरीरों को पार कर वारापार हो गया जिसे देख कर पृथ्वीराज ने बड़ा आदर और अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट करते हुए उस नव युवा कुमार को बहुत से प्रशंसित शब्दों से संबोधन कर के कहा कि मैं तुझ पर बडा प्रसन्न हूं अभी कहना व्यर्थ है मैं तुझे ऐसा पारितोषिक दूंगा कि तूं भी प्रसन्न हो जायगा। इस के पश्चात सब लोग आगे बढ़े तो देखते क्या हैं कि एक सर्प अपनी वामी के द्वार पर एक हाथ ऊंचा फन उठाए खड़ा है और एक देवी * उसके फन पर नृत्य कर रही है। यह देख कर सब ने यह बात राजा से कही जिसे सुन कर पृथ्वीराज ने अत्यन्त आश्चर्यान्वित हो कर अपने दरबार के प्रसिद्ध ज्योतिषी महिर नामक पंडित से इसका फल पूछा, जिस पर महिर ने उत्तर दिया कि इस का परिणाम तो मेरे बिचार में यह आता है कि आप को अनायास कुछ बड़ा धन और भूमि मिलनी चाहिए और आप के शत्रुओं का क्षय हो। इतने में सवारी और आगे बढ़ी तो पृथ्वीराज ने स्वयं उक्त दृश्य अपनी आखें देखा कि उस सर्प के फन पर नाचती हुई देवी राजा को देख कर प्रसन्नता प्रगट करती थी और उस सर्प के फन पर से उड़ कर वह पास वाले एक रसाल वृक्ष पर जा बैठी और चोंच से कतर कर उसने एक फल नीचे डाला। यह देख कर ज्योतिषी महिर आगे बढ़ा और उसने वह फल ला कर राजा को दिया और कहा कि यह शुभ शकुन का प्रसाद लीजिए। इतने में उस सर्प की सर्पनी ने आकर सर्प को कुछ खाद्य पदार्थ अर्पण किया जिसे सर्प ने प्रसन्नतापूर्व्वक खा लिया और तब वह सर्प सर्पिनी दोनों चल दिए। यह देख कर पृथ्वीराज ने फिर महिर से पूछा कि इसका भी फल कहिए तब उसने उत्तर दिया कि इस शकुन का फल यह सिद्ध होता है कि कोई भूम्याधिकारी तुम्हें अपना भूभाग स्वयं समर्पण करके आप तुम्हारी सेवा करे। यह सुन कर

* प्रसंग से मालूम होता है कि देवी लाल की नाईं छोटी खूबसूरत चिड़िया का कहते हैं।

पृथ्वीराज बड़ा प्रसन्न हुआ। कुछ दूर और आगे बढ़ कर सुन्दर जल और छाया से आच्छादित स्थान देख कर पड़ाव डाल दिया गया। उस दिवस मध्यान्ह में उस स्थान पर भोजन पान हुआ और बेला ढलने पर वहां से अजमेर की तरफ सबने कूच किया।

उसी दिन सायंकाल को पृथ्वीराज सेना सहित सानन्द अजमेर पहुँच गया। रात्रि को जब कि पृथ्वीराज अपने राजमहल में सुखशैय्या पर सुसुप्ति अवस्था में बेसुध पड़ा हुआ था तो देखता क्या है कि पीत वस्त्र धारण किए माथे पर लाल तिलक दिए केश बिखराए हुए एक अद्वितीय सुन्दरी स्त्री उस के पास आई। पृथ्वीराज ने उस से पूछा कि तू कौन है? तब वह स्त्री बोली कि हे वीर पृथ्वीराज मैं वीरभोग्या भू देवी हूं। मेरे हृदय में सदैव वीर पुरुष की ही इच्छा रहती है। मैं अपने सूक्ष्म हाव भाव और कटाक्ष से वीर पुरुषों का ही चित्त क्षोभित करती हूं। इस के विरुद्ध कायर पुरुष की ओर मेरी देखने की भी इच्छा नहीं होती और मैं वीर पुरुषों के लिये अनेकानेक कष्ट सह कर भी नाना भांति के उतमोत्तम गुणमय पदार्थ उत्पन्न करती हूं। उस भूदेवी की लावण्यता का मधुर पराग पान करके पृथ्वीराज का मन मकरन्द एक तो प्रथम ही से उन्मत्त सा हो रहा था तिस पर उस के ऐसे बचन सुन कर तो उसके आनन्द का ठिकाना न रहा उस का मन एक बिचित्र भाव से क्षोभित हो उठा। भूदेवी ने पुनः कहना आरंभ किया कि हे पृथ्वीराज खट्टू बन में अगनित धन धरा हुआ है सो वह तुझे प्राप्त होगा और उसने कहा कि अजमेर में अजय पाल नामक एक प्रतापी पुण्यवान राजा राज्य करता था। एक समय प्रातः काल जब कि वह पूजन कर रहा था एक ब्राह्मण ने आकर उससे एक सहस्र मुद्रा दान चाहा। होतव्य बश राजा ने देने से इन्कार कर दिया तब उस दरिद्र ब्राह्मण ने कुपित हो कर शाप दिया कि यदि इस द्रव्य पर इतना स्नेह है तो जा तू जन्मान्तर में भी सर्प होकर इस की रक्षा करता रहे। हे राजा तू नहीं जानता कि धन का संचय करके सत्कार्य्य में व्यय न करना बड़ी भारी मूर्खता है। संचित की हुई माया, मध्य दिन की छाया और विषय का सुख सब क्षणिक होते हैं।



दिल्लीदान प्रस्ताव।

[अट्ठारहवां समय।]

एक समय पृथ्वीराज सभा में विराजमान थे कि दिल्ली से एक दूत आया और उसने एक पत्र कैमास को दिया। कैमास ने वह पत्र पढ़ा तो उसमें अनंगपाल की तरफ़ से लिखा था कि मैं अब वृद्ध हुआ इसलिये तप करने की इच्छा से बदरिकाश्रम को जाना चाहता हूं और अपना यह दिल्ली का राज्य तथा सम्पूर्ण वैभव आपको संकल्प करने की मेरी इच्छा है। पत्र सुन कर सब लोग विचार करने लगे। कोई कहता है कि इसी समय दिल्ली चलाना चाहिए, कोई कहता है कि पृथाकुमारी का विवाह हो जाने पश्चात जाना अच्छा होगा। निदान कैमास ने वह पत्र सोमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किया। तब सोमेश्वर जी ने सब सामन्तों और विचारवान राज्य कर्म्मचारियों को एकत्र करके एक सभा की जिसमें चंदपुंडीर के मत के अनुसार यही निश्चय हुआ कि आता हुआ राज्य छोड़ना भला नहीं। यह निश्चय हो जाने पर सब ने कविचंद से पूछा कि हे बरदाई, अब यह बतलाना आप का काम है कि अनंगपाल अपनी परंपरा संपत्ति पृथ्वीराज को क्यों समर्पण करते हैं? यह सुन कर कविचंद ने देवी का ध्यान किया और अनंगपाल और व्यास का संवाद जो कि दिल्ली किल्ली की कथा में वर्णन किया जा चुका है यथावत कह सुनाया और कहा कि दिल्ली में पृथ्वीराज का राज्य खूब तपेगा। यह सुन कर पृथ्वीराज ने दिल्ली जाना निश्चय कर लिया और दूसरे दिन अपनी अंतरंग सभा में उक्त आगत दूत को बुलाकर पूछा कि हे चतुर दूत! यह तो बतलाओ कि मेरे नाना अनंगपाल जी को सहसा वैराग्य उत्पन्न होने का कारण क्या है? पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर वह दूत अनंगपाल के स्वाभाविक गुणों तथा उसकी नीति निपुणता की प्रशंसा करता हुआ बोला कि अभी किञ्चित ही समय व्यतीत हुआ है कि राजा अनंगपाल जी ने सुसुप्ति अवस्था में एक स्वप्न में देखा कि सम्पूर्ण तोंअर वंश दक्षिण की ओर जा रहा है। ऐसा स्वप्न देख कर राजा की निद्रा भंग होगई उसने शयन से उठते ही ईश्वरस्मरण करके मुख प्रक्षालन किया और अपने इष्टदेव नरसिंह जी का स्मरण करते हुए पुनः वह निद्रा में निमग्न हो गया। प्रातःकाल के समय पुनः वह स्वप्न में क्या देखता है कि जमुना जी के किनारे पर एक सिंह बैठा हुआ है और एक दूसरा सिंह उस ओर से पैर करके गया और उक्त सिंह के सम्मुख बैठ गया। दोनों सिंह परस्पर प्रेम प्रकाश करते हुए प्रेमालाप करने लगे कि इतने में अनंगपाल जी की नींद खुल गई। इस पर राजा ने अत्यन्त आश्चर्य्यान्वित हो जगजोति नामक प्रसिद्ध राज्यज्योतिषी को बुला कर उक्त स्वप्न का ठीक ठीक फल कथन करने की आज्ञा की। अस्तु ज्योतिषी ने धीरभाव से अपनी विद्या द्वारा विचार कर कहा कि हे राजन्! जमुना की कगार पर बैठे हुए सिंह तो आप है और उस पार से आया हुआ सिंह आप का दौहित्र पृथ्वीराज है। अब यहां चौहान वंश का राज्य स्थापित होना संभव है। अतएव आपको भी उचित है कि आप यह राज्यभार पृथ्वीराज के सिर सौंप कर बदरिकाश्रम में जा भगवद्स्मरण कर अपना परलोक सुधारिए। ज्योतिषी की इस भविष्य व्याख्या का प्रभाव महाराज के चित्त पर ऐसा पड़ा कि उन्होंने आप को राज्य दे कर स्वयं बदरिकाश्रम में तप करना ही अपना दृढ़ मन्तव्य निश्चय कर लिया और ज्योतिषी को बिदा कर तुरंत ही राज्यमंत्रियों को बुला कर अपना मन्तव्य कह सुनाया और उन्हें अपना अपना मत प्रकाशित करने की आज्ञा दी। इस पर सब ने नाना प्रकार की नीतियुक्त युक्तियों को दृढ़ प्रमाणों से पुष्ट करते हुए राजा को यही मंत्र दिया कि आप की यह कल्पना उचित नहीं है किन्तु राजा के मन में एक न आई और उन्होंने यह पत्र दे कर मुझे आप की चरण सेवा में भेजा है। यह सुन कर पृथ्वीराज ने दूत को

यह कह कर बिदा किया कि नाना जी को मेरे आने की सूचना दे दो और इधर अपने दिल्ली जाने की उसने तय्यारी कर दी।

पृथ्वीराज ने बड़े ठाट बाट से अपने सूर सामन्त और परिकर सहित उत्तम मुहूर्त में अजमेर से दिल्ली को प्रस्थान किया। पृथ्वीराज के दिल्ली पहुँचते ही सम्पूर्ण दिल्ली नगर में घर घर बधाए होने लगे, दिल्ली के हाट बाट चौहटों और गली कूचों में कदली वृक्ष और पुष्प मालाओं की छटा देख पड़ती थी, घर घर मेघस्पर्शी हवेलियों के गोखों और झरोखों में वरण वरण के वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित मंगलामुखी स्त्रियों की छबि छटा देखते ही मन मुग्ध होता था। निदान अनंगपाल जी ने शुभ लग्न ठीक करा के संवत् ११३८ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरुवार को मृगशिरा नक्षत्र, सिद्धनाम योग में पृथ्वीराज को दिल्ली के पाट पर बैठाया।

दूसरे दिन दिल्ली और अजमेर की सब सेना सहित पृथ्वीराज की सवारी निकली। आनन्दध्वनि होते हुए नाना प्रकार के गान वाद्यों सहित सवारी सब नगर और मुख्य मुख्य देवस्थानों में होकर राजमहल के द्वार पर आई। सायंकाल के समय बड़ा दरबार लगा। पृथ्वीराज राजगद्दी पर विराजमान हुए। दोनों राज्यों के मुख्य मुख्य राज्यकर्म्मचारी और सरदार लोग अपने अपने अदब से आ आ कर पृथ्वीराज को सादर जुहार करते और यथाशक्ति नजरें देते थे। दिल्ली के राज्यकर्म्मचारी परिजन और महाजन लोग दरबार में आए और पृथ्वीराज को नजरें दे दे कर निज निज योग्यतानुसार सब ने आसन ग्रहण किया। सब ने प्रसन्नतापूर्व्वक पृथ्वीराज को दिल्ली का राजा स्वीकार किया और पृथ्वीराज ने भी अंत में सब को पान सिरोपाव इत्यादि देकर बिदा किया। इधर यह शुभ समाचार सोमेश्वर के पास भेजा गया जिसे सुन कर सोमेश्वर तथा उसकी रानी फूली अंग न समाती थी। अजमेर नगर में भी यह बात घर घर फैल गई और वहां के बाल वृद्ध सभी युवा युवती भी आनन्द में मग्न भांति भांति के उत्सव करने लगे। दूसरे दिन अनंगपाल सब से विदा हो कर अपनी धर्म्मपत्नी सहित बदरिकाश्रम को चले गए और पृथ्वीराज नीति न्याय सहित दिल्ली का राज्य शासन करने लगा।



अथ माधो भाट कथा।

[उन्नीसवां प्रस्ताव।]

अनंगपाल के बदरिकाश्रम चले जाने पश्चात् पृथ्वीराज ने दिल्ली नगर की दसों दिशाओं में दस भैसों का बलिदान करवाया और भांति भांति की पूजा होमादि से दिल्ली नगर के ग्राम्य देवताओं तथा निज कुल देवताओं को शान्त कर निश्चिंतता पूर्व्वक दिल्ली का स्वच्छन्द राज्यदंड अपने हाथ में लिया।

उधर शहाबुद्दीन को अहर्निशि इसी बात की चिंता लगी रहती थी कि किसी प्रकार पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला लेना चाहिए। जब उसने यह निश्चय जान लिया कि मैं बल करके पृथ्वीराज को परास्त करने में समर्थ नही हूं तब उसने कूटनीति का आश्रय ग्रहण किया और गज़नी से माधव भाट नामक अपने एक मुसाहिब को पृथ्वीराज का भेद लेने के लिये हिन्दुस्तान में भेजा। माधव भाट ने दिल्ली में आकर अपनी उच्च विद्याओं और बुद्धिविलक्षणता से पृथ्वीराज के सभासदों को प्रसन्न करना आरंभ किया। उसने पृथ्वीराज के खास कलम (पेशकार) धर्मायन कायस्थ पर तो ऐसी मोहनी डाली कि वह तन मन से उसका चेरा हो गया। उसी के द्वारा वह राज्यसभा तक जा पहुंचा। माधव भाट छहो शास्त्र और अट्ठारहो पुराण का मर्म जानने वाला था, ज्योतिष और काव्य शास्त्र में परांगत तथा संस्कृत और पारसी भाषा में विशेष योग्यता रखता था। उसने अपने गुणों से पृथ्वीराज को भी ऐसा मोहित किया कि दरबार में प्रति दिन उसका आदर बढ़ने लगा। राजा की विशेष कृपा होने के कारण अन्यान्य सामन्त भी उस पर प्रेम करने लगे और जब उसने अच्छा अवसर पाकर पृथ्वीराज के राजनैतिक तथा व्यावहारिक चालों की पूर्ण मीमांसा और जांच कर ली और प्रथक प्रथक शूर वीर, सामन्त, राज्यकर्म्मचारी और प्रजा की रीति भांति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। तब एक महीने पश्चात् उसने विदा मांगी। निदान राजा ने भी उसके छद्म वेष की ओर कुछ भी ध्यान न देकर बहुत सा धन रत्न देकर उसे विदा किया।

माधव भाट दिल्ली से चल कर कुछ दिनों में रास्ते का भेद भाद लेता हुआ गजनी जा पहुँचा। उस के आने की खबर पाकर शहाबुद्दीन ने तुरंत ही उसे दरबार में बुलाया और पूछा कि पृथ्वीराज का क्या समाचार लाए सो कहो? तब माधव भाट ने पृथ्वीराज के दिल्ली गोद जाने और अनंगपाल का तप करने के लिये बदरिकाश्रम जाने का समाचार कह कर पृथ्वीराज की समस्त बाह्य और अतरंग नीति रीति का विवरण कह सुनाया, जिसे सुन कर डाह के मारे शहाबुद्दीन का हृदय जल उठा। मित्र की सम्पत्ति देख कर प्रसन्न होने वाले तो थोड़े ही सज्जन होते हैं किन्तु शत्रु के वैभव पर डाह करना तो स्वाभाविक ही है। पृथ्वीराज एक तो प्रथम ही बलवान था अब उसके पास द्विगुण संम्पत्ति और सैन बल हो जाने से वह शहाबुद्दीन को निपट अजेय देख पड़ने लगा किन्तु उसने हिम्मत न हारी। उसने उसी समय तातार खां, खुरसान खां, नशरत खां, ममरेज खां, आजान खां, सुलतान खां, मारूत खा, मीर जम्मन खां, रुस्तम खां, गजनी खां, मीर मुहम्मद, शेख चम्मन खां आदि सरदारों को बुला कर एक अन्तरंग सभा रच कर माधो भाट का कहा हुआ सारा समाचार यथावत् कह सुनाया और पूछा कि अब इस बलवान शत्रु को परास्त करने का शीघ्र यत्न क्या करना चाहिए। जब तक पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला ले लूंगा तब तक मुझे संसार शून्य देख पड़ेगा। शहाबुद्दीन के ऐसे बचन सुन कर सब ने एक मत हो कर उत्तर दिया कि हुजूर की जो ऐसी इच्छा है तो हम लोगों को कोई उज़र नहीं। हम तो उसी प्रसन्न हैं जिस में जहांपनाह की प्रसन्नता हो। इसलिये बड़ी सेना सज कर शत्रु को जीता जाय। पर हम लोगों को माधो भाट की बातों पर विश्वास नहीं होता।

वह आप का नोकर है पर फिर भी हिन्दूही तो है। न जाने उस की बात में क्या भेद हो इसलिये जब तक यहां फौजी तय्यारी की जाय तब तक एक ऐयार उस ओर भेज दिया जाय कि वहां की ठीक ठीक खबर मिल जाय। निदान सर्वसम्मति अनुसार महमूद खां नामक चतुर दूत दिल्ली को भेजा गया और यहां जहां तहां बड़े जोर शोर से फौज की तय्यारी की जाने लगी। वैतनिक फौज के अतिरिक्त अन्यान्य मातहत जागीरदार तथा अन्य मित्र मुसलमानी राज्य की सेना का जोड़ तोड करके बडा भारी दल इकट्ठा किया गया।

इधर महम्मद खां सूफी * वेष बदल कर दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। उसने दिल्ली में पहुँच अपने आचार के करिस्मों से नगर निवासियों का चित्त प्रसन्न करते हुए अपना यथोचित कार्य्यसाधन करना आरम्भ किया। अनगपाल का बनवास करना और दिल्ली में पृथ्वीराज का राज्य स्थापन होना तो उसे सहज ही में मालूम हो गया। तत्पश्चात उसने धर्म्मायन के पास जाकर उसको बादशाह तथा माधो भाट का पत्र दिया। धर्म्मायन ने दूत को सादर स्थान दिया और पृथ्वीराज की राज्य प्रणाली का सब ब्योरा समझा कर कहा कि पृथ्वीराज को यहां बास करते सात पक्ष अर्थात् साढ़े तीन मास हुए हैं, कैमास को पाच पक्ष, चामुण्ड राय को चार पक्ष, लोहाना अजानबाहु को १॥ पक्ष और कन्ह को यहां निवास करते १ पक्ष हुआ है। शनैः शनैः अजमेर से सब सामंत यहां आकर वास करेंगे। शेष गुप्त समाचार पत्र में लिख कर उसने उसे गज़नी को बिदा किया।

महम्मद खां ने उसी अपने पूर्वोक्त सूफी वेष में आकर शहाबुद्दीन को सलाम किया। शहाबुद्दीन ने उसे पहिचान कर बड़े आदर से पूछा कि कहो क्या समाचार हैं। तब उसने दिल्ली में केवल छः दिन रह कर धर्म्मायन की कृपा से जो छ महीने का समाचार पाया था सो सब कह सुनाया और कहा कि दिल्ली की समस्त प्रजा पृथ्वीराज की नीति और उसके व्यावहारिक आचरणों से परम संतुष्ट है। सब सूर वीर सामन्तों का तो यह हाल है कि वे पृथ्वीराज की इच्छा से भी आगे चलने वाले हैं और इसी प्रकार वह भी उनकी मान मर्य्यादा का सदैव ध्यान रखता है। उसकी प्रजा में कोई भी दरिद्र नहीं है सब लोग अपने अपने वर्णाश्रमानुसार कार्य्य करते हुए अपना धर्म्म पालन करते हैं और मुसलमानों के सब परम शत्रु हैं। इसके ऐसे बचन सुन कर शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खां को बुलाया और दूत का आप कथनोपकथन उसे यावत् सुना कर उससे पूछा कि अब क्या करना चाहिए। पृथ्वीराज के प्रबल प्रताप की कथा सुनकर तो मेरा हृदय कंपित होता है। यह सुन कर तत्तार खां बोला कि जिस प्रकार पृथ्वीराज के राज्य शासन का समाचार मिला है वास्तव में वह हम लोगों के लिये भयप्रद है और जो कुछ समाचार है वह सर्वथा ठीक भी है किन्तु इससे हमको हिम्मत न हारनी चाहिए क्योंकि धर्मायन कायस्थ की, जो कि पृथ्वीराज के दरबार का एक प्रधान कर्म्मचारी है और हमारा सच्चा सहायक है, सहायता से हमें अपनी विजय प्राप्त होने की पूर्ण आशा है। अतएव अब बिना बिलंब किए सेना सज कर दिल्ली पर आक्रमंण करना चाहिए। इस प्रकार तत्तार खां की उत्तेजक सलाह से शहाबुद्दीन का दिल भी भर गया और उसने जहां तहां पत्र परवाने भेजने की आज्ञा दे कर अपने लश्कर के तय्यार होने की आज्ञा दी। दूसरे दिवस प्रातःकाल ही गाजे बाजे बजाती हुई शाही सेना राज्य महल के सम्मुख आ उपस्थित हुई। शहाबुद्दीन भी घोड़े पर सवार होकर सेना में आ मिला और हिन्दुस्तान की ओर चल पड़ा। उसने गजनी से बारह कोस चल कर नारौल नामक गांव में पड़ाव डाल दिया और तीन दिन पर्य्यन्त वह वहां ही रहा, जब तक उसके अन्यान्य जागीरदार मैमार लोग अपनी अपनी कनी सेना सहित रंग विरंगे निशानों को फहराते हुए शाही सेना में आ मिले।

* सूफी मुसलमानी फकीरों का एक फिरका होता है जो कि बड़े आचार से रहता है।

शहाबुद्दीन इस प्रकार यहां पर दो लाख फौज इकट्ठी कर के आगे बढ़ा और सिन्ध नदी तक नियमानुसार पड़ाव पर पड़ाव डालता हुआ चला आया। सिंध नदी पार कर के दिन रात लगातार कूंच करने लगा।

शहाबुद्दीन के सिंध पार करने की खबर जब पृथ्वीराज के कान तक पहुँची तो उसने उसी समय राज्यमंत्री कैमास और सिपह-सालार कन्ह को बुला कर शहाबुद्दीन की धृष्टता का समाचार कह सुनाया और उनका स्पष्ट मत पूछा। तब कैमास ने कहा कि अब इस समय यही कर्तव्य है कि वह अपनी सीमा न चापने पावे। आगे ही बढ़ कर उसे दण्ड देना उचित है। कैमास का यह मत अन्य सब सामन्तों ने भी स्वीकार किया और दरबार बरखास्त होने पर शहाबुद्दीन के आक्रमण का समाचार सब सेना में कानों कान फैल गया। तब सब शूरवीर धर्म्मयुद्ध यवनों को दण्ड देने के लिये उत्साहपूर्वक अपने अपने साने बाने सजकर तय्यारी करने लगे। दूसरे दिवस प्रातःकाल ही चतुरंगिनी सेना सज कर प्रस्तुत होगई। पृथ्वीराज सुनहरे आभूषणों से सुसज्जित हाथी पर सवार हो कर उस दल रूपी जल में साक्षात् कमल सा सुशोभित होने लगा एक तरफ से कैमास ने और एक तरफ से कन्ह ने समस्त सेना की जाच की और तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार प्रस्थान का आदेश दिया गया। आज्ञा पाते ही भांति भांति का जुझाऊ बाजा बजने और मारू राग का गान होने लगा जिससे शूरवीरों का मन उन्मत्त और कायरों का कलेजा कापने लगे। इस प्रकार सत्तर हजार सेना सहित अनियम कूच करते हुए शहाबुद्दीन की सेना से ६ कोस की दूरी पर *पानी पत के मैदान में पड़ाव जा पड़ा।

उधर से शहाबुद्दीन भी बराबर बढ़ा चला आता था। जब उसकी फौज मुठभेड़ में आगई तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार * मारू की ध्वनि के सहारे पर सामन्तों ने सेना की मयूर व्यूहाकार रचना प्रारम्भ की। निद्दुदर और कैमास एक पक्ष पर, अत्ताताई और बलिभद्र दूसरे पक्ष पर रहे। कुछ सेना सहित पृथ्वीराज पिंड स्थान पर स्थित रह कर पैर और नख की रक्षा पर रहे, पज्जून राय पूँछ पर, चंद पुंडीर चौंच और महन सिंह पड़िहार कंठस्थान पर रहे। इस मयूर व्यूह की रक्षा के लिये सहायक सेना सहित दाहिनी ओर कैमास, और सकट व्यूह रचकर महन सिंह मारू और भौंहा चंदेल सहित चामुंड राय अग्र भाग में रहे। इसी प्रकार अन्य अठारह सामन्त पीछे पृष्ठ पर सहायता देने को सन्नद्ध रक्खे गए। कन्ह अपने पक्ष पर आठ अन्य सामन्तों को दृढ़ रखकर आप राजा के पास आकर राजा के (छत्र स्थान पर) खवास खाने में बैठे। मुसलमान सेनापति ने अपनी सेना की अर्धचन्द्रकार व्यूह रचना की जिसकी एक अनी पर खुरसान खां और ततार खां थे और एक अनी पर पीरोज खां था और सुलतान स्वयं मध्य-भाग में था। इस प्रकार व्यूह रचना हो जाने पर वीर क्षत्री दल ने यवन सेना रूपी सर्पों के भक्षण करने के लिये उनपर आक्रमण किया। उस समय धौंसों की धुंकार और मारू की हुंकार सुन कर वीर शिरोमणि शूर वीर फूले अंग नहीं समाते थे और कायर पुरुष प्राण के भय से जहां तहां पलायन में तत्पर थे। दोनों ओर के वीर योद्धा लोग अपने अपने स्वामियों की जयप्राप्ति की अभिलाषा से एक दूसरे पर टूट पडे। दोनों ओर के दल बद्दलों से बाण रूपी जल की बौछार पड़ने लगी, घनघोर तुपक और शतघ्नियों की गर्जना से मेदनी कंपायमान होती थी, बीच बीच में चमचमाती हुई तलवारें विद्युत प्रभा को मात करती थीं। उस युद्ध स्थल में अवयव रहित जीव के धड़ धड़ाधड़ मेढ़क से कूदते

* मूल पुस्तक में जलपथ करके लिखा है यथा "अति कूचह कूच एह खरियं। जल पंथह जाब सु उत्तारियं"॥

* मारू एक विशेष बाजे का नाम है। उस समय में इसी मारू के इसारे पर कवायद सिखाई जाती थी जिस तरह कि आज कल बिगुल से काम लिया जाता है। पाठकों को ध्यान रहे कि फौजी कवायद कोई नई चीज नहीं है।

थे। उधर से खुरसान खां ने आगे बढ़कर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना चाहा तो इधर से कन्ह ने बढ़ कर एकही वार में उसे मार भगाया। कन्ह की इस चोट में खुरसान खां अपनी दो हजार सेना के मारे जाने पर पीछे हटा। सब मुसलमानी सेना के पैर उखड़ गए किन्तु बादशाह के क्रुद्ध होकर धैर्य्य देने पर वे लोग फिर से बटुर पड़े और स्वामिधर्म्म रूपी दीपशिखा पर अपना प्राण पतिंगा वारने लगे। शहाबुद्दीन ने इस प्रकार जोर बाँध कर तत्तार खां की सलाह के अनुसार खुरासानखां को फिर से पृथ्वीराज पर धावा करने को कहा कि जिसमें सब का ध्यान उसी ओर जाय और आप तत्तारखां के सहित हरावल तोड़ने पर मुस्तैद हुआ, किन्तु वीर सामन्तों के सम्मुख उसकी एक भी कला न चली। प्रबल राजपूतों की दपेट से वह अर्ध चन्द्राकार यवन सेना पूर्ण चन्द्रमा स्वरूप बन गई और तब चहुआन रूपी राहु ने उसे सहज ही में ग्रस लिया। शहाबुद्दीन तथा अन्य प्रधान यवन सैनिकों ने अपना सा प्रबंध किया किन्तु कुछ भी चारा न चला और यवन सेना भाग उठी। तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार प्रमार जैत ने तत्तार खां की अनी का पीछा किया। पृथ्वीराज कन्ह सहित आप अन्य यवन मुगों का शिकार खेलने लगा और चामुंडराय ने घेर कर शहाबुद्दीन को कैद कर लिया। यह युद्ध वैसाख सुदि १० बृहस्पतिवार ११३८ को हुआ। इस युद्ध में दोनों ओर के निम्न लिखित सरदार काम आए।

पृथ्वीराज की ओर के।

भीम.... ....मान्य सामन्त
भारवरह ....कन्ह का पुत्र
श्यामदास.... .... "
जसधवल .... लोहाना का पुत्र
केसरि सिंह .... " का भाई
रनवीर सोलकी .... विभुराज का पुत्र
सागरह खींची .... प्रसंग राव खींची का पुत्र
महन राय .... " का भाई
हरि प्रमार .... " " "
वीरध्वज " ....सिंध राज का पुत्र
भीमसिंह बघेल .... "
लक्ष्मनसिंह .... रामराव का पुत्र

शहाबुद्दीन की ओर के।

शेर खां, सुलतान खां, मारु मीर, मीर जहान, मीर जुम्मन, गजनी खां, मीर महम्मद, मीर फतेह लंग, (हसन) खां, अनर (अनार) खां ये १० मुख्य सेनापति और अट्ठारह हजार साधारण सैनिक काम आए। उक्त सामन्तों के सिवाय १००० हिन्दू सैनिक और भी मारे गए और दोनों तरफ के ७००० घोड़े मारे गए।

चामुंडराय जब शहाबुद्दीन को बंदी करके उसे पृथ्वीराज के पास लाया, तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार यवन सेना का सब रखत बखत अर्थात डेरा डडा लूट लिया गया। दिल्ली आकर १ महीने पर्य्यन्त बादशाह को कैद रख कर तब बहुत सा दण्ड लेकर पृथ्वीराज उसे छोड़ा और उससे पाए हुए दण्ड की सपत्ति में अपनी तरफ से भी कुछ मिला करके सब सामन्तों को यथायोग्य बाँट दिया।

इसके आगे अब पृथाविवाह वर्णन करके तब फिर पृथ्वीराज को गड़ा हुआ धान प्राप्त होने और फिर से बादशाह को बाँध करके छोड़ने की कथा वर्णन की जायगी।



पद्मावती विवाह कथा।

[बीसवाँ समय।]

पूर्व दिशा में समुद्रशिखर गढ़ नामक एक सुदृढ़ दुर्ग था, जहाँ एक विजयपाल नामक यादववंशी क्षत्री राज्य करता था। उसके राज्य की सीमा पूर्व की ओर समुद्र पर्य्यन्त थी। उसके केवल १०००० जिरहबख्तर वाले सवार थे और सब मिला कर वह बहुत से हाथी और तीन लाख पैदल का स्वामी था। उसके राज्य में प्रजा प्रसन्न और राज्यकोष सब तरह द्रव्य से परिपूर्ण था। उसके दस पुत्र और दस पुत्रियाँ थीं। विजयपाल की पद्मसेना नामक रानी बड़ी ही सुन्दर और राजा को बहुत ही प्यारी थी। उसी के गर्भ से पद्मावती नाम से एक अत्यन्त रूप और गुणवती कन्या उत्पन्न हुई।

पद्मावती जिस प्रकार वयः प्राप्त होती जाती थी उसी प्रकार उसका रूप लावण्य शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान प्रति दिन बढ़ता जाता था। उसका अद्वितीय सौन्दर्य्य कवियों के काव्य का आधार, ब्रह्मचारी, मुनिजन तथा पशु पक्षियों का भी मन हरण करने वाला था। कुछ बड़ी होने पर वह चित्तविनोदार्थ बाग में जाने लगी। एक दिन एक सुग्गे के रंग रूप पर हृदय से मोहित हो गई और उसे पकड़ कर महलों में ले गई। यहां उसे स्वर्ण के पिंजरे में बन्द कर यत्नपूर्व्वक रखने लगी। जिस दिन से वह सुग्गा पद्मावती के हाथ लगा उस दिन से उसे खेल कूद सब भूल गया। वह सब दिन उसी अपने प्यारे सुग्गे की सेवा में रह कर ही अपना चित्तविनोद करती, अहर्निशि उसे राम राम पढ़ाती और उससे वार्तालाप करती हुई दिन व्यतीत करती थी। एक दिन उसने सुग्गे से पूछा कि हे सुग्गे तूं बड़ा चतुर है तुझ से मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न है अब तूं मुझे यह बतला कि तूं कौन से देश का रहने वाला है?। यह सुन कर सुग्गा बोला कि हे सुन्दरी! मैं दिल्ली का रहने वाला हूं जहां का राजा पृथ्वीराज भूप्रख्यात अद्वितीय प्रबल प्रताप वाला और महान बलवान है। उसने तीन बार गज़नी के बादशाह को कैद करके छोड़ दिया है। उसका शारीरिक बल ऐसा है कि उसके धनुष पर लोह शृंखला की प्रत्यंचा चढ़ती है और वह शब्द वेधी बाण मारता है। सुन्दर तो ऐसा है कि मानो साक्षात कामदेव का ही अवतार है। पद्मावती पृथ्वीराज के इस प्रकार रूप गुण की महिमा सुन कर उस पर तन मन से मोहित हो गई और उसी समय से निरन्तर पृथ्वीराज के ध्यान में मग्न रहने लगी।

संवत् ११३९ में जब पद्मावती की अवस्था ब्याह योग्य हुई तब राजा विजयपाल ने अपने कुल प्रोहित को बहुत सा धन रत्न देकर पद्मावती के लिये वर की खोज में भेजा, वह चलते चलाते जब उत्तर की ओर गया तो वहा पहाड़ी राज्यों में कमाऊं के राजा कमोदमणि को पद्मावती के योग्य वर जान कर उसने उसे लग्न चढ़ा दिया और घर पर आकर राजा विजयपाल को उक्त विषय की सूचना दी। इस समाचार को पाकर राजा ने राज्यकर्म्मचारियों को ब्याह की तय्यारी करने की आज्ञा दी। उधर से कमोदमणि भी दस हजार सवार तेतीस हजार पैदल और ८४ हाथी और बहुत से ऊट इत्यादि लेकर बड़ी सज धज की बारात सजकर समुद्रशिखर गढ़ को चल दिया। समुद्रशिखर गढ़ में भी घर घर नित नाना भांति के उत्सव हो रहे थे। यद्यपि यह गान वाद्य और उत्सव सब प्रजा के चित्त को महान आनन्द प्रदायक थे किन्तु पद्मावती इससे इतनी दुखित थी कि मानो यह ब्याह लग्न साक्षात उसकी मृत्यु सा निकट आ रहा था। उसने बहुत कुछ सोच विचार कर पृथ्वीराज को एक पत्र में यह लिखा कि आप यहां आकर राज्यमहल के पश्चिम ओर शिवालय से मुझे हर ले जाइए। जो आप पांच दिन में मुझे संकेत स्थल पर न मिलेंगे तो मैं अपना प्राण त्याग दूंगी। इस प्रकार पत्र लिख कर उसने सुग्गे के गले में बाँध दिया और उसे दिल्ली की ओर जाने की प्रेरणा की। निदान वह सुग्गा एक दिन रात को

दिल्ली जा पहुँचा और उसने वह पत्र पृथ्वीराज को जा दिया। पत्र के पढ़ते ही पृथ्वीराज भी कुछ थोड़े से सामन्तों की सेना साथ लेकर, दिल्ली की गढ़रक्षा चामुण्डराय के सिर सौंप कर समुद्रशिखर गढ़ की ओर चल दिया। जिस दिन कमोदमणि की बारात समुद्रशिखर गढ़ पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी जा पहुँचा और उसी दिन इस विषय का समाचार शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा, जिसके सुनते ही शहाबुद्दीन फूल कर कुप्पा हो गया। उसने इस अवसर पर पृथ्वीराज को धोखे से पकड़ लेने का मन्तव्य मन में ठान लिया और बड़ी भारी सेना सहित पृथ्वीराज की राह रोक कर वह अड़ रहा और कविचन्द ने इस विषय की सूचना पृथ्वीराज को दी।

उधर तो गान वाद्य सहित बड़े गाजे बाजे से बारात नगर में घूम रही थी इधर पद्मावती पृथ्वीराज के रंग में रँगी हुई कंठस्थगत प्राण संकट में पड़ी हुई राजमहल की गोख में बैठी टकटकी लगाए दिल्ली की तरफ देख रही थी कि इतने में सुग्गे ने आकर पृथ्वीराज के आगमन की सूचना दी। शुकदेव अरुण द्वारा चाहुआन सूर्य्य के आगमन की सूचना पाकर पद्मावती का हृदयपद्म प्रफुल्लित हो उठा। उसने ततक्षण ही सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित हो कर सहेलियों सहित शिवार्चन के लिये यात्रा की। शिवालय में पहुँच कर उसने शिवपार्वती की पूजन कर पृथ्वीराज से प्रीति होने का बरदान मागा और ज्योंही वह मन्दिर के बाहर आई कि पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ कर उसे अपने साथ घोड़े पर बिठा लिया। सब सखी सहेली और वाहक जन चित्रलिखे से देखते रह गए। किसी किसी ने यह समाचार कुमोदमणि को दिया तो वह अपनी सेना सज कर पृथ्वीराज के पीछे पड़ा परन्तु चहुआन के वीर सामन्तों ने उसे सेना सहित सहज ही में मार भगाया और पृथ्वीराज पद्मावती सहित दिल्ली की ओर चला। जब यह समाचार शहाबुद्दीन को मिला कि पृथ्वीराज पद्मावती को ब्याह कर इधर ही आ रहा है तो वह भी अपने सामन्तों को सज कर उन से बोला कि इस समय सन्नद्ध रहो, अब की पृथ्वीराज को पकड़ ही लेना है। जब पृथ्वीराज का लश्कर पास आया तो उसने आक्रमण किया। पृथ्वीराज तो प्रथम ही इस घटना की सूचना पाकर सावधान था। उसने यवनसेना का साम्हना किया और पलक मारते लोह की झार झरने लगी और लोहू के कुंड भरने लगे। कन्ह ने झपट कर शहाबुद्दीन के हाथी को घेर लिया और सहज ही उसे पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख ला कर प्रस्तुत किया। इस युद्ध में ५०० मुसलमान और ५० राजपूत योद्धा खेत रहे। वीर पृथ्वीराज इस प्रकार गोरी पद्मावती को प्रेम से और शहाबुद्दीन गोरी को आतंक से गिरफ्तार करके साथ लिए हुए खुशी खुशी दिल्ली जा पहुँचा और ज्योतिषियों से शुभलग्न सुधाय बड़ी धूमधाम से पद्मावती का उसने पाणिग्रहण किया। इसी ब्याह की बधाई में शहाबुद्दीन को उसने छोड़ दिया और आप अन्तःपुर में पद्मावती के छबि मकरन्द में मुग्ध होकर मत्त मलिन्द की भाति कामक्रीड़ा में रत हुआ।



पृथा व्याह कथा।

[इक्कीसवाँ समय।]

सोमेश्वर को पृथ्वीराज के सिवाय पृथाकुमारी नाम की एक कन्या भी थी। जब इसकी बाल्यावस्था का ह्रास और इसके अंग अंग में कामदेव का प्रवास होते हुए यौवन का प्रकाश होने लगा तब सोमेश्वर ने हिन्दूकुल सूर्य्यवंशावतंस चित्तौराधिपति रावल समरसिंह को पृथाकुमारी के योग्य वर जान कर प्रोहित गुरु राम और कन्ह चहुआन को लग्न लेकर रावल जी के पास चित्तौर भेजा। लग्न के साथ में तेरह बलवान और तेज घोड़े, मोतियों की माला और बहुत सा धन रत्न भेजा। कन्ह और गुरु राम ने चित्तौर पहुँच कर जिस समय वस्त्र शस्त्र आभूषणों से सुसज्जित सर्वगुणसंपन्न सिंह समान योगीराज समरसी जी को सभा में बैठा हुआ देखा तो इनका भी चित्त प्रसन्न हो गया। ये लोग मन ही मन कहने लगे कि अद्वितीय सुन्दरी पृथाकुमारी के योग्य यही वर है। धन्य है ईश्वर को जिसने यह रति काम, सिय राम, नल दमयन्ती, अर्जुन द्रोपदी, इन्द्र सची का सा संयोग जोड़ दिया है—गुरु राम ने शुभ मुहूर्त्त साधन कर वैसाख वदी ५ को रावल जी के हाथ पर लग्न रक्खा—लग्न पढ़े जाने पर उक्त तिथि के एक महीने पश्चात् विवाह का दिन नियत हुआ। लग्न चढ़ जाने पर कन्ह और गुरु राम को पाँच दिवस पर्यन्त बड़े आदर भाव से पहुनई में रावल ने रक्खा और चलते समय गुरु राम को बहुत सा धन रत्न और सिरोपाव देना चाहा; किन्तु गुरु राम ने उसे लेना स्वीकार न किया और विनीत-भाव से प्रार्थना की, कि आप का दर्शन पाने से ही हमारे पाप दूर हो गए हमको अब अधिक क्या चाहिए। इस प्रकार लग्न चढ़ाकर कन्ह और गुरु राम अजमेर में आए तो यहा भी विवाह की तय्यारियां होने लगीं— जहां तहां घर घर द्वार द्वार कदली के विटप और वंदन वार की बहार देख पड़ती थी। अजमेर के हाट बाट चौहटे राजपथ पर, सर्वत्र स्वच्छता और सुगंध की छटा छा रही थी। राजमहल में अहिर्निशि प्रसन्नवदना स्त्रियों का गान वाद्य तथा नाना प्रकार का आनन्द नाद हुआ करता था। विवाहोत्सव के आनन्द में उमगे हुए राज्यकर्म्मचारी से लेकर दास दासी पर्य्यन्त अपने अपने कार्य्य को कुशलतापूर्व्वक संपादन करते हुए फूले अंग नहीं समाते थे। *बूतात और †अटाले में षट रस पदार्थों के अटंब लगने लगे तथा दिल्ली और अजमेर की प्रजा के दरिद्र दूर भागने लगे। इधर पृथ्वीराज ने अपने अधीनस्थ तथा समान व्यवहार वाले राजाओं को निमंत्रण भेजे और एक पत्र ऊंचे फरहरे सहित शहाबुद्दीन के पास भेजा।

विवाह की तिथि आते आते सब न्यौतार अजमेर में आ पहुँचे। नियत समय पर बरात भी नगर के निकट आ पहुँची। ऐसा समाचार पाते ही सब सूरबीर सामंत योद्धागण और न्यौतार लोग अपने रथ हाथी घोड़े इत्यादि को स्वर्ण रजत साजों से सज सज कर अपने ठाठबाठ के साथ राज्य महल के द्वार पर आ जमे। पंचाल राज जैतसिंह प्रमार, भौहा चंदेल, नाहनर कन्ह, पज्जून राय सिंह नग और आजानबाहु अजमेर की तरफ के पंच होकर सब दल बद्दल सहित बारात की अगवानी को आगे बढ़े। नगर के बाहर से बारात की अगवानी करके सादर बरात को लिए हुए नगर में से निकले और नगर के दूसरी ओर बारात का पड़ाव दिया गया। लग्न का बेध होने पर जब रावल जी अपने बीर सिसौदिया सरदारों सहित सज धज कर राजद्वार पर आए उस समय की सुखमा अपार थी। जहां तहां अटा अटारी ओख, गोख और झरोखों में झाँकती हुई मृगनयनी पिकबयनी मंगलामुखी स्त्रियाँ कल कंठ से गान करती हुई

---

* वह स्थान जहां पर अन्न, मेवे, मिष्टान्न इत्यादि का भंडार रहता है।

† जहा भोजन पकाया जाता है अथवा परिपक्व भोजन इकट्ठा जमा रहता है।

ऐसी भासित होती थीं मानो इस योगिराज समर सिंह और सती पृथा कुमारी के संबन्ध से प्रसन्न हुए धर्म्मराज की प्रेरणा से इन्द्र की भेजी हुई अप्सराएँ आकाश में आनन्द बधाई दे रही हों। राजद्वार नाना प्रकार के प्रफुल्लित मंगलमय ललित लताओं से आच्छादित हो रहा था। तिस पर लटकती हुई मोतियों की झालरें इस आनन्द से जड़ वृक्षों के सजीव होकर हास्य करने का दृश्य दिखाती थीं। राजद्वार के एक तरफ राव जी के सगे सम्बन्धियों की भीड़ थी और भीतरी तरफ़ स्त्रियां माथे पर स्वर्ण कलश धारण किए हुए रावल जी तथा उनके संबन्धी और सरदारों के नाम से मंगल गान करती थीं। समरसिंह का वीर वेष देखकर पृथाकुमारी की माता तो खुशी के मारे फूली अंग न समाती थी।

गोधूली बेला में रावल समरासिंह जी ने विवाह मंडप में प्रवेश किया। वहां पर पांच सौ वेदज्ञ और दो हजार छंद और तर्क शास्त्र के ज्ञाता पंडित लोग मंत्र पाठ कर रहे थे। एक हजार पौराणिक कथाओं के ज्ञाता चारण लोग विरदावली पढ़ रहे थे। उस मंडप में लटकती हुई मोतियों की झालरें अनुपम शोभा की भंडार थी। चाहुआन के घर में उस विवाह मंडप में होता हुआ यज्ञ इन्द्र सहित आठो देवताओं को भाग देने वाला था। उस समय के दान मान और सम्मान की छटा देख कर कुबेर भी चकित होता था। पाणिग्रहण का लग्न ज्यों ज्यों निकट आता जाता था त्यों त्यों सब का आनन्द बढ़ता जता था। भांवरि पड़ते समय चाहुआन ने रावलजी को पहिली भांवरि में मेवात के ६० गांव दूसरी भांवरि में ११ हाथी, तीसरी भांवरि में कन्यादान किया और चौथी भांवरि में अनन्त हेम रत्नादि दान किया। ततपश्चात् रणथंभ का देश दिया और गुरुराम प्रोहित को पृथा कुमारी के संग चित्तौड़ जाने की आज्ञा दी। साथही इसके ऋषीकेश वैद्य को धन्वन्तरि का पद दे कर और कवि चन्द के पुत्र जल्हण को भी रावलजी को दान किया। उसी समय निमंत्रण में आए पंचाल, कर्नाट, गुजरात भांडर इत्यादि देशों के राजा और एलचियों ने भी नजर दहेज और व्यवहार में असख्य धन दिया। पृथ्वीराज के सामन्तों ने भी व्यवहार में बहुत कुछ दिया।

इस प्रकार सब के व्यवहार को पृथ्वीराज ने आदरपूर्व्वक ग्रहण करके बहुत कुछ अपनी तरफ से भी मिलाकर रावल जी को दे दिया।

इस प्रकार सानन्द विवाह समाप्त हुआ और तब रावल समर सिंह जी दरबार में आकर बैठे। उस समय पृथ्वीराज और समर सिंह बराबर बैठे हुए सूर्य्य और चन्द्रमा की भांति सुशोभित होते थे और दोनों ओर के सामन्त लोग उनके आसपास बैठे हुए साक्षात तेजोमय तारागण से प्रतीत होते थे। पृथाकुमारी का विवाह एक मात्र करुणा रस रहित आठो रसों से परिपूर्ण सानन्द समाप्त हुआ। तब पृथ्वीराज के १२ सामन्तों ने १२ दिन तक बराबर एक एक दिन बारात का न्योता किया। इसलिये रावल जी को १२ दिन तक और अजमेर में रहना पड़ा। बारहवें दिन बहुत सा दान दहेज पृथ्वीराज ने अपनी तरफ से देकर बारात को विदा किया। जिस समय बारात चलने को हुई कि उस के पश्चिम ओर में सूर्य्योदय होते ही स्यार बोला जिसका शब्द सुन कर रावल जी ने जगजोति नामक अपने ज्योतिषी से इसका फल पूछा और उसने इस प्रकार वर्णन किया कि इस जुग्गिनिपुर में चाहुआन के राज्य पर पश्चिम दिशा से बार बार आक्रमण होंगे जिससे यहां की पृथ्वी भरपूर रुधिर से परिपूर्ण होगी और चाहुआनें का यश ससार में विस्त्रित होगा। किन्तु अन्त में आक्रमण कर्ताओं की ही जय होगी और दिल्ली में यवन राज्य स्थापित होगा। चाहुआन और उनके सम्बन्धी और सामन्तों की कीर्तिमात्र शेष रह जायगी। चलते समय सोमेश्वर जी ने ५० हाथी १०० घोड़े १०० दासी और बहुतसा धन रत्न द्रव्यादि रावल जी को दहेज में दिया। रावल जी इस प्रकार प्रसन्नतापूर्व्वक पृथाकुमारी को व्याह कर सानन्द चित्तौड़ में आए।

होली कथा।

[बाइसवां समय।]

एक दिन पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि हे बरदाई फाल्गुण मास में जो लोग छोटे बड़े का कुछ भी विचार न करके पागलों की भाँति अश्लील शब्दों का उच्चारण करते है, खाद्याखाद्य पदार्थों का कुछ भी विचार न करके सब कोई घृणित और निषिद्ध पदार्थों को एक दूसरे के ऊपर डालते हैं इसका क्या कारण है सो मुझ से कहो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुनकर कविचन्द बोला कि चाहुआन कुल मे ढुंढा नामक एक राक्षस था और ढुंढिका नामक उसकी एक बहिन थी। जिस समय ढुढा अजमेर और दिल्ली का सिमाना छोड़कर काशी को चला गया और वहां तप करने लगा तो ढुंढिका भी काशी को गई, किन्तु जब तक यह पहुँचे कि ढुंढा ने अपना शरीर काट काट कर होम कर दिया (जिसके अंश से आप और ये सब सामन्त लोग उत्पन्न हुए है)। यह देखकर ढुंढिका अत्यन्त दुखित होकर भाई के वियोग में स्तब्ध चित्त होकर तपस्या करने लगी। जब उसे निराहार तप करते करते कुछ अधिक काल व्यतीत होगया तब पार्वती जी ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि तूं जो कुछ बर मांगेगी वह पावेगी। पार्वती के ऐसे बचन सुनकर वह आमिषाहारी राक्षसी बोली कि यदि आप प्रसन्न है तो मुझे यह बर दीजिए कि मै आबाल, वृद्ध, युवा जितने मनुष्यों को पाऊं खाती जाऊं। ढुंढिका का यह प्रस्ताव सुनकर पार्वती ने इस धर्म्मसंकट में पड़कर यह समाचार महादेव जी से कहा। तब महादेव जी ने कहा कि उससे यह कह दो कि वह जिस किसी को पागल की भाँति बौराया असभ्य कर्म करते हुए राक्षस स्वरूप पावे उसे सवर्ग भाक्ष मान कर कदापि भक्षण न करे। इसके विरुद्ध जिन्हें सीधा सादा पावे उन्हे सहज ही खा जाय और इधर पवन को आज्ञा दी कि ऐसी धूल उड़ावे कि सर्वत्र अंधकार मच जाय और सब मनुष्य बौरा कर तीन दिन तक असभ्य कर्म करने लग जाय जिसमें ढुढिका मनुष्यों को भक्षण न कर सके। निदान तभी से यह होली का व्यवहार प्रचलित हुआ।

